अनुक्रमणिका,

द्वितीय भाग.

(महाराणा दूसरे प्रतापसिंहसे महाराणा सज्जनसिंह साहिबके अखीर तक मए अहद्नामों मेवाड़के).

महाराणा दूसरे हमीरसिंह,
चौदहवां प्रकरण – १६९१ – १७०२.

महाराणा दूसरे भीमसिंह,
पन्द्रहवां प्रकरण – १७०३ – १७८४.

महाराणा जवानसिंह,

सोलहवां प्रकरण – १७८५ – १८८८.

अनुक्रमणिका

तेरहवां प्रकरण.

महाराणा दूसरे प्रतापसिंह, दूसरे राजसिंह, और तीसरे अरिसिंह.

हमने अवतक इस किताव वीरविनोदके दूसरे भागमें हरएक महाराणाका एक एक प्रकरण अ़लह्दह रक्खा है, परन्तु महाराणा दूसरे प्रतापसिंह और दूसरे राजसिंहका इतिहास वहुत थोड़ा है, और इनके साथ किसी दूसरे इतिहासका सम्वन्ध भी नहीं है, इसलिये इस जगह महाराणा तीसरे अरिसिंहका हाल उसके शामिल किया जाकर तीनोंके इतिहासका एक प्रकरण वनाया गया.

महाराणा दूसरे प्रतापसिंह.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १८०८ आषाढ़ कृष्ण ७ [हि० ११६४ ता० २१ रजव = ई० १७५१ ता० १६ जून] को हुआ. यह लूनावाड़ाके रईस वीरपुरा

सोलंखी नाहरसिंहके दौहित्र थे. इनका हाल बूंदीके मिश्रण सूर्यमल्लने इस तरहपर लिखा है, कि विक्रमी १७९१ माघ शुक्ल ३ [हि० ११५५ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १७२३ ता० २९ जैन्युअरी] को जिन चार सर्दारोंने कुंवर प्रतापसिंहको कैद किया था, उन्होंने याने बागोर महाराज नाथसिंह, देवगढ़ रावत् जशवन्तसिंह, देलवाड़ा राज राघवदेव, और सनवाड़के बाबा भारथसिंहने, जिनकी औलादमें खैराबादके जागीरदार हैं, पांचवें शाहपुरावाले राजा उम्मेदसिंहको अपना शरीक बनाकर सोचा, कि महाराणा जगत्सिंह तो ज़ियादह बीमार हैं, और हम लोगों (१) ने कुंवर प्रतापसिंहको कैद किया था, सो महाराणाके बाद वह गद्दी नशीन होकर हमको बर्बाद करेंगे, इसलिये मुनासिब है, कि कुंवर प्रतापसिंहको ज़हर देकर मारडाला जावे, और नाथसिंहको गद्दीपर बिठादेवें, जो महाराणाके छोटे भाई हैं; लेकिन् यह सलाह ज़ाहिर होकर महाराणाके कानतक पहुंची, जिसपर महाराणाने इन पांचोंको कहलाया, कि अगर हमारा हुक्म मानते हो, तो इसी वक्त अपने अपने ठिकानोंको चलेजाओ. तब लाचार होकर हुक्मके मुवाफ़िक़ वे अपने अपने घरको रवानह होगये.

महाराणा जगत्सिंहका देहान्त होने बाद प्रतापसिंहने गद्दी बैठकर अव्वल इन पांचों सर्दारोंको तसल्लीके साथ अपने पास बुलालिया. फिर अपने खैरख्वाह सर्दार शक्तावत उम्मेदसिंहके बेटे अखैसिंह (अक्षयसिंह) को रावत्का ख़िताब, ताज़ीम और "दारू" का पर्गनह जागीरमें देकर दूसरे दरजेका उमराव बनाया; क्योंकि अखैसिंहका बाप उम्मेदसिंह इनकी गिरिफ़्तारीके वक्त इनकी तरफ़से अपने बाप सूरतसिंहसे लड़कर मारागया था.

अमरचन्द सनाढ्य ब्राह्मणको ठाकुरका ख़िताब और ताज़ीम देकर अपना मुसाहिब बनाया, कि इनकी कैदके समय उसने बड़ी खैरख्वाहीके साथ नोकरी की थी.

एक दिन महाराणा दर्बार किये हुए बैठे थे, कि उन्होंने अपनी पीठपर हाथ लगा कर नाक सिकोड़ी, जिससे सब लोगोंकी उस वक्त उधर तवज्जुह हुई. तब महाराणाने हंसीके तौर कहा, कि काकाजीने गिरिफ़्तार करनेके वक्त मेरी पीठपर गोडेकी जो चोट दी थी, वह अब बादल होनेके समय कसकती है. उस वक्त तो सब लोग

---

(१) उदयपुरकी ख्यातमें महाराज नाथसिंहका ही कुंवर प्रतापसिंहको गिरिफ़्तार करना लिखा है, दूसरे तीन सर्दारोंका ज़िक्र नहीं, जैसा कि महाराणा जगत्सिंहके हालमें लिखागया.

ख़ामोश रहे, लेकिन् दर्बारसे रुख़्सत होकर डेरोंपर आने बाद ऊपर बयान किये हुए पांचों सर्दार रातके वक्त अपने अपने ठिकानोंको चलेगये. महाराणाने अगर्चि वह बात गुस्सेसे नहीं कही थी, मगर इन लोगोंने उन शब्दोंसे अपनी जानका ख़तरा समझ लिया. फिर महाराज नाथसिंह अपने ठिकाने बागोरसे रवानह होकर सादड़ी होता हुआ देवलिया पहुंचा. वहां कुछ दिनों रहकर ऊमटवाड़े (मालवा देशकी पूर्वी हद्द खीचीवाड़ाके पास ऊमट राजपूतोंका मुल्क) में गया, और वहांपर अपना व अपने बेटे भीमसिंहका विवाह करके विक्रमी १८०९ श्रावण [हि० ११६५ शव्वाल = ई० १७५२ ऑगस्ट] में वहांसे बूंदी गया; रावराजा उम्मेद-सिंहने देवपुरा गांवतक पेश्वाई की, और अपने यहां बारह दिनतक रखकर चार सौ रुपया रोज़ानह मिह्मानीका पहुंचाते रहे. फिर वहांसे अपने पुत्र भीम-सिंह सहित जयपुरके महाराजा माधवसिंहके पास पहुंचा. उस समय महाराजा माधवसिंह और जोधपुरके महाराजा बख़्तसिंह, दोनों मालपुरासे एक मन्ज़िल भूपोलाव तालावपर मुक़ीम थे. दोनों महाराजा, नाथसिंहसे पेश्वाई करके मिले. इसी सफ़रमें जोधपुरके महाराजा बख़्तसिंहका इन्तिक़ाल होगया. महाराजा माधवसिंहने नाथसिंहको तसल्ली देकर कहा, कि हम प्रतापसिंहको ख़ारिज करके आपको मेवाड़का महाराणा बनावेंगे. इस बातपर झलायके ठाकुर कुशलसिंहने माधवसिंहको मना किया, लेकिन् उसकी नसीहत कारगर न हुई. वंशभास्करके कर्त्ताने इस बातपर महाराजा माधवसिंहकी बड़ी हिक़ारत की है, कि जिन महाराणा जगत्सिंहने माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेके लिये एक करोड़ रुपया ख़र्च करके बहुत कुछ ताक़त दिखलाई, उस उपकारको भूलकर महाराणाके पुत्रसे विमुख हुआ.

देवगढ़का रावत् जशवन्तसिंह, शाहपुरेका राजा उम्मेदसिंह, देलवाड़ेका राज राघवदेव और सनवाड़का बावा भारथसिंह, महाराज नाथसिंहसे मिलकर मेवाड़के गांव लूटनेलगे. उदयपुरके महाराणा प्रतापसिंह बड़े बहादुर व बुद्धिमान थे, जिनकी कर्त-व्यताका नमूना बतलानेको मेवाड़में एक क़िस्सह मश्हूर है– लोग कहते हैं, कि महाराणाके गद्दी बैठने बाद रावलोंकी रामत (१) करवाई गई, जिसमें एक सिपाही और

(१) रावल एक क़ौम चारणोंकी याचक है; इन लोगोंका यह काम है, कि दस बीस आदमी मिलकर जाड़ेके मौसममें हमेशह देशमें फिरते हैं, और अक्सर चारण व राजपूतोंके साम्हने नाटकके तौर तमाशा करते हैं, यह क़ौम राजपूतानह व गुजरातके सिवा दूसरी जगह कहीं नहीं है. इस नाटकको रामत बोलते हैं.

दूसरा किसानका स्वांग लाया गया. उस बनावटी सिपाहीने अपनी गठड़ी उठाने के लिये किसानको बेगारमें पकड़ा; बेगारीने कहा, कि मैं चूंडावतोंकी रअय्यत हूं, सिपाहीने डरकर उसे छोड़दिया; दूसरी दफ़ा ललकारा, तब उसने शक्तावतोंकी प्रजा होना बयान किया, उसी तरह उसने फिर छुट्टी पाई. ग़रज़ हर एक बार जुदा जुदा चहुवान, झाला, राठौड़ वगैरह राजपूतोंकी हिमायत बतलाकर चलागया; अख़ीरमें कहा कि मैं ख़ालिसेकी रअय्यत हूं. यह सुनते ही सिपाहीको बड़ा जोश आया, और जूतियोंसे मारकर किसानके सिरपर बोझा रखदिया.

यह नाटक देखकर महाराणाको बड़ा अफ्सोस हुआ, और कहा, कि हिमायती लोगोंकी प्रजा निर्भय रहे; और ख़ास हमारे ख़ालिसेकी रिआयापर इस क़द्र ज़ुल्म हो! यह बड़े अनर्थकी बात है. उसी दिनसे यह इरादह करलिया, कि जबतक मैं अपनी ग़रीब रिआयाको ताक़तवर नहीं करूं, तबतक मेरा राज्य करना भी बे फ़ाइदह है. कहते हैं, कि इस बातका महाराणाके दिलपर इतना असर हुआ, कि इनके राज्यके थोड़े अरसेमें ही ख़ालिसेकी प्रजा बहुत आसूदह होगई थी; परन्तु ईश्वरकी इच्छा और ही थी, याने विक्रमी १८१० माघ कृष्ण [हि० ११६७ रबीउल्अव्वल = .ई० १७५४ जैन्युअरी] में उनका देहान्त होगया.

ऐसे नौ जवान महाराणाके दुन्यासे उठजानेपर मेवाड़में एक तहलका मचगया, और ख़ालिसहकी रिआया अपने बापके मरजानेसे भी ज़ियादह रंजीदह होकर रोती थी. इनके एक ही बेटे राजसिंह थे. महाराणा प्रतापसिंहका जन्म विक्रमी १७८१ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ११३६ ता० १७ ज़िल्क़ाद = .ई० १७२४ ता० ८ ऑगस्ट] को हुआ था. वह उन्तीस वर्ष और पांच महीनेकी उम्रमें इन्तिक़ाल करगये. इनका क़द किसी क़द्र लम्बा, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, तमाम बदन पहलवानके मुवाफ़िक़ और महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके मानिन्द रोबदार था. एक पत्थरका मुद्गर, जिसको वह आसानीके साथ घुमाया करते थे, अब तक खीच मन्दिरके पास पड़ा है, इस वक़्त किसी पहलवानकी ताक़त नहीं, कि उसको उठाकर एक चक्कर भी घुमावे. अगर कोई अच्छा ताक़तवर आदमी हो, और उसे दोनों हाथोंसे उठावे, तो बड़ी मिह्नतके साथ सिर्फ़ सिरके बराबर लासक्ता है; हर एक आदमीकी मजाल नहीं, कि इतना भी करसके. इन महाराणाकी तस्वीर देखनेसे मालूम होता है, कि वह बड़े रोबदार और ताक़तवर थे. इन महाराणाके चार राणियां थीं- अव्वल महाराणी राठौड़, जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहकी बेटी, जिनका इन्तिक़ाल पहिले ही होगया था. दूसरी कछवाहा जशवन्तसिंहकी बेटी बनेकुंवर, जो सती हुई. तीसरी भाटी सर्दारसिंहकी

बेटी मयाकुंवर, यह भी महाराणाके साथही सती हुई. और चौथी झाला कर्णसिंहकी बेटी बख़्तावर कुंवर, जिसके गर्भसे महाराणा राजसिंह पैदा हुए.
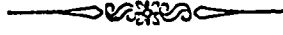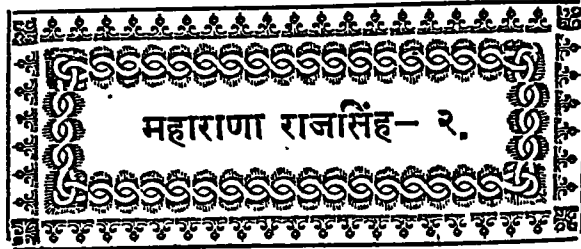
इनका राज्याभिषेक विक्रमी १८१० माघ कृष्ण २ [हि० ११६७ ता० १५ रबीउल्‌-अव्वल = ई० १७५४ ता० १० जैन्युअरी] को हुआ था. गादी बैठनेके वक्त इनकी उम्र केवल दस वर्षकी थी, मुल्कमें उस समय मरहटोंका पूरा ज़ोर शोर था, मेवाड़के सर्दारों व अहलकारोंमें आपसकी फूट और मालिकके कम उम्र होनेसे अन्तरी फैलती जाती थी; मरहटोंने यह हालत देखकर इस राज्यको अपना जेबखर्च समझ लिया. अगर्चि इन लोगोंने राजपूतानहमें क़दम, तो अपना महाराणा संग्रामसिंहके ही समयमें रख दिया था, लेकिन् उस वक्त महाराणाको अपना मालिक जानते रहे, बाद इसके जब कि महाराणा जगत्‌सिंहके ज़मानेमें महाराजा माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेके लिये इनकी मदद लेनी पड़ी, तबसे दिन ब दिन मरहटोंका दबाव बढ़ता गया और महाराणा प्रतापसिंहके वक्तमें भी उसी तरह उनका ज़ोर तरक्कीपर रहा; क्योंकि इस समय, तो उनकी मुठियां गर्म करनेसे ही रियासतका बचाव था. ऐसी छीना झपटीके वक्त रियासतको क़ाइम रखना मुश्किल था, परन्तु महाराणा संग्रामसिंहके समयके बहुतसे आक़िल आदमी मौजूद होनेसे रियासतपर कोई बड़ा ज़वाल न आने पाया.

महाराणा प्रतापसिंहका देहान्त होनेके बाद महाराज नाथसिंह भी उदयपुर चला आया; और जो सर्दार खौफ़ खाकर चले गये थे, वे भी अपने अपने ठिकानोंमें आ बैठे. सलूंबरका रावत् जैतसिंह सबमें अव्वल मुसाहिब था, क्योंकि और सर्दारोंका एतिबार महाराणा और बाईजीराजको न था. चन्द अहल्‌-कार दाना और आक़िल जैतसिंहके शरीक थे. इन्हीं दिनोंमें जया आपा सेंधिया महाराजा रामसिंह अभयसिंहोतकी मददको मारवाड़पर चढ़ा, और नागौरके क़िलेमें महाराजा विजयसिंहको जाघेरा. महाराजा विजयसिंहकी सफ़ाई करानेके लिये रावत् जैतसिंह उदयपुरसे सेंधियाकी फ़ौजमें भेजागया, उस वक्त क़िलेके राजपूतोंमेंसे एक खोखर राजपूतने सेंधियाको दग़ासे मारडाला; इससे मरहटी फ़ौजमें यह शोर मचगया, कि मेवाड़ वालोंने दग़ा की. कुल मरहटी फ़ौजका हमलह जैतसिंहपर हुआ, उस वक्त कोई किसीकी नहीं सुनता था, फ़ौजी गद्रको देखकर रावत् जैतसिंह अपने साथियों सहित तलवार हातमें लेकर बड़ी बहादुरीके साथ काम आया, और चारण आढ़ा पन्ना व आढ़ा पहाड़खान दोनों ज़ख्मी होकर बाक़ी रहे. यह ख़बर सुनकर उदयपुरके लोगोंको बहुत रंज हुआ.

हक़ीक़तमें इस ख़ैरख़्वाह बड़े मुसाहिबके मारेजानेसे रियासतको बड़ा नुक्सान पहुंचा. इस इफ़्रात तफ़्रीतको देखकर शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने राजा सर्दारसिंहसे बनेड़ेका क़िला छीन लिया. सर्दारसिंह उदयपुर आया, क्योंकि महाराणा संग्रामसिंहके समयसे बनेड़ेका ठिकाना फिर उदयपुरके मातह्त होगया था, जो आलमगीरने मेवाड़से जुदा किया था; लेकिन् बादशाहतके बिगड़नेपर भी अजमेरके सूबहदार कभी कभी इसको अपनी मातह्तीमें लानेकी कोशिश करते रहे, मगर उनको कामयाबी नहीं हुई. जब शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने विक्रमी १८१३ [हि० ११६९ = ई० १७५६] में यह ठिकाना छीन लिया, तो राजा सर्दारसिंह भागकर उदयपुर आया, और कुछ अ़र्सेसे बाद गुज़र गया. सर्दारसिंहके मरने बाद महाराणा और उनके मुसाहिबोंने फ़ौज भेजकर सर्दारसिंहके बेटे रायसिंहको बनेड़ा दिला दिया, और उम्मेदसिंह लाचार होकर शाहपुरे चला गया.

महाराणाने सर्कारी तोपख़ानह और कुछ फ़ौज राजा रायसिंहकी मददके लिये बनेड़ेके क़िलेमें रक्खी, लेकिन् कुछ अ़र्सहके बाद फ़ौजी लोग बुला लियेगये, और तोपख़ानह सर्कारी वहीं रखकर राजा रायसिंहसे मुचल्के लिखवाये, जिनकी नक़्लें नीचे लिखी जाती हैं:-

मुचल्केकी नक्ल जो राजा रायसिंहके
फ़ौज्दारने लिखा था.

श्री

लीपतं राठोड़ सीवसीघजी साहिबसीघोत अप्रंच श्री दरबारा तोपषानारा नग ७ बणेड़ा रा गढ़ मांहे अरज करि बलाणां रषाया, सो श्री दरबार सुं मंगावसी, जदी हाजर करावणा. संवत् १८१५ व्रषे वैसाष सुदी १ सुक्रे.

राजा रायसिंहके ख़ास दस्तख़ती
दूसरे मुचल्केकी, नक्ल.

लिषतुं राजाजी रायसीघजी, अप्रंच बणेड़ा रा गढ़में श्री दरबार रा तोपषाना

रा नग सात वलेणा रषाया, सो वषेड़ो मटे ने श्री दरवारमहे पुगावे देणा. मीती वेसाष सुद १ सुक्रे संवत् १८१५ व्रपे.

—⁎—

संवत् १८१७ चैत्र कृष्ण १३ [हि० ११७४ ता० २६ शअ्बान = ई० १७६१ ता० ३ एप्रिल] को महाराणाका इन्तिक़ाल होगया. इनका जन्म विक्रमी १८०० वैशाख शुक्ल १३ [हि० ११५६ ता० ११ रबीउ़ल अव्वल = ई० १७४३ ता० ७ मई] को हुआ था. इनकी चार शादियां हुई थीं; पहिली विक्रमी १८११ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० ११६७ ता० ६ रमज़ान = ई० १७५४ ता० २७ जून] को वेदलाके राव रामचन्द्रकी बेटी गुलाबकुंवरके साथ, और उसके दूसरे ही रोज़ गोगूंदाके झाला राज कान्हसिंहकी पोती व यशवन्तसिंहकी बेटी सरसकुंवरके साथ हुई थी, और इसी लग्नपर एक ही साथ महाराणाके काका अरिसिंहकी शादी राज कान्हसिंहकी छोटी पोती सर्दारकुंवरके साथ हुई. और तीसरी शादी ईडरके राजा अनोपसिंहकी बेटी भवानीसिंहकी पोती सर्दारकुंवरके साथ और चौथी शादी रतलामके राजा पृथ्वीसिंहकी बेटी व मानसिंहकी पोती सर्दारकुंवरके साथ हुई थी. महाराणा राजसिंहका देहान्त होनेपर महाराणी चहुवान और राठौड़ दोनों, जिस वक्त सती होनेको निकलीं, उस वक्त राणी चहुवानने यह बद दुआ दी, कि "कोई बेदलाका राव आइन्दह अपनी बेटीकी शादी उदयपुरके महाराणाके साथ न करे." क्योंकि उक्त महाराणीको उनकी सासने बहुत तक्लीफ़ दी थी. इन महाराणाको लोग ज़ालिम और निर्दई बतलाते हैं.

—⁎—

महाराणा अरिसिंह- ३.
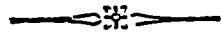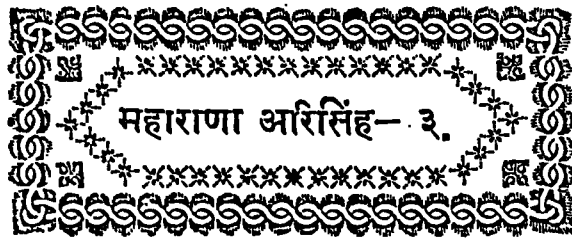
जब महाराणा राजसिंहका देहान्त हुआ, तो एक दम कुल रियासतमें सन्नाटा होगया, और अत्यन्त शोक पैदा हुआ; क्योंकि इनकी उम्र बहुत कम याने सत्तरह वर्षकी थी; और उस ज़मानहमें राजपूतानहपर मरहटोंका ज़ोर शोर बढ़ रहा था, ऐसी हालतमें अचानक मुल्की सहारा नष्ट होगया, सब सर्दार, उमराव, अह्लकार एकट्ठे होकर महाराणाकी उत्तर क्रियाके बाद ज़नानी ड्योढ़ीपर गये, और महाराणा राजसिंहकी माता (बाईजीराज) को कहलाया, कि आपके पुत्रकी बहू झालीजीको गर्भ हो, तो हम सब आपके हुक्ममें रहकर प्रागट्य तक रियासतका काम चलावें. अगर कुंवर हुआ, तो हमारा मालिक है, मेवाड़का राज्य करेगा; और बेटी हुई, तो अच्छे खानदानमें विवाह दी जावेगी. यह निवेदन सुनकर बाईजीराजने कहलाया, कि बहूके गर्भ नहीं है; तुम राजका हक्दार हो, उसे गद्दीपर बिठा (१) दो. उसवक्त महाराणा जगत्सिंह दूसरेके छोटे पुत्र अरिसिंह (२) मौजूद थे, इनको सब लोगोंने मिलकर गद्दीपर बिठादिया, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ नज़्र निछावर वगैरह रस्में अदा कीं.

हरी (३) पूजनेके बाद महाराणा अरिसिंह एकलिंगेश्वरके दर्शनको गये. लौटते वक्त उक्त महाराणा जवानीके नशेमें चूर घोड़ा दौड़ाते हुए उदयपुरकी तरफ़ आरहे थे, चीरवाके घाटेमें सवार और सर्दारोंका बड़ा हुजूम जा रहा था, रास्तह तंग होनेके सबब इधर उधर हटने और बचनेकी जगह नहीं थी. महाराणाने कुछ खयाल न किया, बल्कि छड़ीदार व जलेबदारोंको हुक्म दिया, कि एक दम सबको हटाकर रास्तह साफ़ करो. मालिककी तेज़ मिज़ाजीके खौफ़से उन लोगोंने उमराव व सर्दारोंको ललकारकर कहा, कि रास्तह छोड़ो ! परन्तु पहाड़ी रास्तेकी तंगीसे सब लाचार थे. उन छोटे लोगोंने उमरावोंके घोड़ोंके पुट्ठोंपर दो चार छड़ियां भी मार दीं. इसवक्त तो सब

(१) सुनागया है, कि राणी झालीको गर्भ था, मगर खौफ़से बाईजीराजने इन्कार करदिया.

(२) गद्दी तज्वीज़ होनेके वक्त महाराज अरिसिंहने ज़नानेमें जाकर अर्ज़ किया, कि मुझको राज्यका लोभ नहीं है, अगर झालीजीके गर्भ हो, तो कहना चाहिये, पुत्र हुआ, तो मेरा मालिक होगा और कन्या हुई, तो विवाह करा दियाजायेगा. इसपर भी बाईजीराजने वही जवाब दिया, जो कि सर्दारोंसे कहा था.

(३) महाराणा गद्दी नशीनीके बाद शोक निवृत्यर्थ बड़ी धूम धामसे शहरके बाहर सब्ज़ी (हरियाली) पूजने को किसी जगहपर जाते हैं, जो हरीकी सवारी मश्हूर है.

लोगोंने ख़ामोश होकर उस घाटेको तै किया, लेकिन् पहाड़से निकलकर आमेरीकी बावड़ीपर उतर पड़े, और महाराणा उदयपुर चलेआये. पीछेसे कुल सर्दारोंने मिलकर सलाह की, कि जब शुरूसे ही महाराणामें ऐसी बे मुरव्वती है, तो आगे क्या होगा? अगर ग़म खाकर बे .इज़्ज़तीके साथ भी कोई अपना ठिकाना बचावेगा, तो भी यह उसे आरामसे दम न लेने देंगे. इसपर बेदलाके राव रामचन्द्रने गोगूंदाके राज जशवन्तसिंहसे कहा, कि मेरी बेटी, तो महाराणा राजसिंहके साथ ही सती होगई, वर्नह मैं सब कुछ कर दिखाता. अब तुम्हारी बहिन ज़िन्दह है, अगर हिम्मत हो, तो सब कुछ हो सकेगा. इस तरहपर सलाह करनेके बाद सब सर्दार उदयपुर अपनी अपनी हवेलियोंमें आये, और इसी दिनसे मेवाड़में फ़सादका बीज बोया गया.

महाराणाने अपने ख़ैरस्वाह अमरचन्दसे मुसाहिबीका काम तब्दील करके जशवन्तराय पंचोलीको दिया, और महता अगरचन्द बछावतको अपना सलाहकार मुक़र्रर किया. अगर्चि ये लोग भी बड़े ख़ैरस्वाह थे, लेकिन् अगले ख़ैरस्वाहोंकी तब्दीलातसे लोगोंके दिल बिगड़ गये थे. कुछ अरसह बाद एक लड़का पैदा हुआ, जो ज़नानख़ानहसे खुफ़ियह तौरपर गोगूंदाके राज जशवन्तसिंहके सुपुर्द किया गया; और महाराणा प्रतापसिंह व महाराणा राजसिंहकी राणियोंने कहलाया, कि यह लड़का तुम्हारा मालिक और रियासत मेवाड़का हक्दार है; मर्ज़ी हो, इसकी पर्वरिश करो, चाहे मरवाडालो. जशवन्तसिंह उस लड़केको लेकर गोगूंदेकी तरफ़ रवानह हुआ, और तलावलीके क़िलेमें उसकी पर्वरिश की. यह बात कुछ कुछ मश्हूर होने लगी.

बाज़का यह भी बयान है, कि यह लड़का सलूंबर रावत् जोधसिंहके पास भेजा गया था, जिसको उसने गोगूंदे होकर कुम्भलमेर भेज दिया. ग़रज़ इस तरहकी बातें सुनकर महाराणाने तसल्ली, तो नहीं दी; और सब लोगोंपर अपना रोब जमानेके लिये दबाव डाला, जिससे दिन दिन अब्तरी फैलती गई. महाराणाके दिलसे राजपूतोंका और राजपूतोंके दिलसे महाराणाका एतिबार जाता रहा. इसपर महाराणाने सिन्धी मुसल्मान वग़ैरह सर्बन्दी नौकर बढ़ाये. पहिले देलवाड़ाके राज राघवदेवके मिलानेकी तद्बीर की, फिर शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहको बुलवाया, लेकिन् महाराणाको सर्दारोंका एतिबार न था, और महाराणाकी तरफ़से सर्दारोंकी भी तसल्ली नहीं हुई. अगर्चि जशवन्तराय पंचोली और महता अगरचन्द वग़ैरह ख़ैरस्वाह लोग महाराणाको समझाते थे, लेकिन् वे अपनी जवानी और बहादुरीके नशेमें इनको डरपोक बतलाकर न मानते. सच है, ज़िदकी आदतपर नसीहतका असर, नहीं होता. भैंसरोड़के रावत् लालसिंहको महाराणाने अपनी तरफ़ मिलाकर कहा,

कि काका नाथसिंहको मार डालना चाहिये, क्योंकि महाराणाको उसका बहुत खौफ़ था. इस सबबसे कि अव्वल, तो जयपुरके महाराजा माधवसिंह उसके हिमायती थे, जिन्होंने महाराणा प्रतापसिंह दूसरेके ज़मानहमें भी उसे मदद देना चाहा था; दूसरे मरहटी फ़ौजमें भी नाथसिंहका नाम मश्हूर होगया था; तीसरे नाथसिंह महाराणाकी ज़िद्दी और ज़ालिमानह आदतोंसे नफ़्त करके अपनी जागीर बागोरको चला गया था; इससे महाराणाको और भी ज़ियादह अन्देशह होगया, कि यह कोई नया फ़साद ज़रूर उठावेगा. इन बातोंसे रावत् लालसिंहको उसके मारनेपर तय्यार किया, और उसे अव्वल दरजेके उमरावोंकी बराबर इज़्ज़त मिलनेका उम्मेदवार किया.

लालसिंह उदयपुरसे रुख़्सत होकर अपनी जागीर भैंसरोड़को गया. महाराणाने कई ख़ास रुक़्क़े लिख भेजे, कि जल्दी नाथसिंहका काम तमाम करो. सवा वर्ष तक लालसिंह टालता रहा, लेकिन् जब महाराणाकी ताकीद लगातार पहुंचने लगीं, तो आख़िरकार हुक्मकी तामील करनेपर मुस्तइद हुआ. पाठकोंके अवलोकनार्थ आख़िरी ख़ास रुक़्के की नक़्ल नीचे दर्जकरते हैं, जो महाराणाने लालसिंहको लिखा था :-

ख़ास रुक़्क़ेकी नक़्ल.

सवसती श्री रावतजी राज हजुर म्हारो जुहार मालुम हुवे, अप्रंच॥ अरज आप की आई, जीरो लीपवो तो हुवो न्ही, अ बात जो आपी तीनही ज्णा जाणा हा, दुजो अठ हाजर न्ही हे, सो वाचता रुको डेरा बार करसी ने अो काम वेगो करसी आप लकी, जो अब वक्त आओ हे, सो श्री अेकलीगजी हरामपोराने सजा देवे ईगा, ने म्हारे माथे आपरो आंक हे, आपसु म्हारा बंसको दुजी करेगा, जीने हीदुने सोगन हे, जो सोगन हे. समत १८२० वरके पोस सु० १५ गुरे.
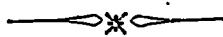
लालसिंह भैंसरोड़ से रवानह होकर बागौर पहुंचा, उस वक़्त नाथसिंह नर्मदेश्वरका पूजन कर रहा था, ख़बर पहुंचनेपर यह कहा, कि भाई लालसिंहसे कुछ पर्हेज़ नहीं है; भीतर चला आवे. लालसिंहने भीतर जाकर दस क़दमसे सलाम किया; नाथसिंहने हंसकर सलामका जवाब दिया, पूजनके वक़्त उठकर ताज़ीम देनेका क़ाइदह नहीं है, इसलिये उसने मुआफ़ी मांगी. लालसिंहने जवाबके एवज़ कमरसे कटार निकालकर नाथसिंहकी छातीमें ज़ोरसे मारा, कि कलेजा फोड़कर पीठकी तरफ़ निकल गया; लालसिंह उसी दम पीछा लौटा और अपने घोड़ेपर सवार होकर भागा. यह वाक़िआ विक्रमी १८२० माघ शुक्ल २ [हि० ११७७ ता० १ शअ्बान

= ई० १७६४ ता० ४ फ़ेब्रुअरी] के फ़ज्रको हुआ. लालसिंहने भैंसरोड़ जाकर महाराणाको नाथसिंहके मारेजानेकी खुश खबरी लिख भेजी, जिसके एवज़ महाराणाने एक खास रुक्का लिखा, उसकी नक्ल नीचे लिखी जाती हैः-

खास रुक्केकी नक्ल.

सवसती श्री रावत लालसीघजी हजुर म्हारो जुहार मालुम हुवे, अप्रच॥ आपने म्हारा हुकम माफीक वागोर तावारी चाकरी करी ने मन राजी होर आपने सोलाम्हे वानसीरी बेठक दीदी, जीमे दुजी होगा न्ही, म्हारो बचन हे. समत १८२० का वरके फा० सु० ३.

इस वारिदातके चन्द महीनों बाद रावत् लालसिंह भी अपनी मौतसे मरगया. महाराज नाथसिंहके क्रमानुयायी बयान करते हैं, कि उक्त महाराजका इरादह महाराणाके बर्खिलाफ़ नहीं था, बल्कि उन्होंने मरते वक्त नर्मदेश्वर पर खून बहाकर यह कहा, कि हमारा इरादह अपने मालिकके बर्खिलाफ़ न था; अगर बद इरादह हो, तो हमने उसका एवज़ पा लिया, और नहीं है, तो इस कामके करने वालोंको बाणनाथ (नर्मदेश्वर) सज़ा देंगे. उनका बयान है, कि इसी अपराधके कारण लालसिंह थोड़े ही दिनों बाद मरगया, और महाराणाने भी उसी तरह इस दुन्याको छोड़ा.

इन्हीं दिनोंमें मलहार राव हुल्करने मेवाड़पर चढ़ाई करनेकी धमकियां लिख भेजीं, और लिखा, कि पर्गनह रामपुरा, बूढ़ा, जारड़ा व कणजेड़ा (१) वगैरहका बक़ाया हासिल और पेश्वाका ख़िराज वगैरह जल्दी भेजदो. महाराणाने खानगी बखेड़े और ख़र्चकी तंगीसे इन रुपयोंके देनेमें देर की, लेकिन् उस लुटेरे बहादुरको कब सब्र होसक्ता था, मेवाड़को लूटता हुआ ऊंटालेतक आपहुंचा; तब कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह और महाराणाका धायभाई रूपा उदयपुरसे भेजे गये. इन लोगोंने मलहार रावको बहुत समझाया, लेकिन् दामोंका लोभी बातोंसे कब राज़ी हो सक्ता है ? उसने साठ लाख रुपया तलब किया. लाचार मुसाहिबोंने इक्यावन लाखपर फ़ैसलह किया, और एक इक़ारनामह लिखा गया, जिसकी नक्ल नीचे दर्ज की जाती हैः-

(१) इसी समयसे हुल्करने उक्त पर्गनोंपर क़ब्ज़ह करलिया, जो अबतक मेवाड़के शामिल नहीं हुए हैं

इक़ारनामहकी नक्ल.

॥ श्री मोरया ॥

करारनामा राज श्री मलारराव होलकर अपरंच श्री राणाजीसुं म्हारो हेत वेहार थेठसुं चाल्या आया हे, जणीमे कीणी वातको तफावत न पडसी. श्रीमंतपंत प्रधानजीरा पटा वावत तथा सींधारा तथा घरु परगणा बुढारा मुकाता वा जोरडा, कणजेरा, जामुन्या, रामपुराके टपे वावत लेपो समत् १८२० वीस रे साल तांइ सुध करे लीधा. वाकीका रुपया तीनो मामलतका निकल्या, जींका लीपतं कराय लीया. अब कोइ अठां पहलीरो लीप्यो पढ्यो नीसरे सो रद, सारो सुलझाडो अठां पहलीरो साफ कीधो, जो कोइ भलो बुरो झुटी सांची मालुम करे सो मंजुर नंही; इणी वातरो करारनामा वेल भंडार करे दीधा. मीती वैशाप वद ५ समत १८२० (१).

* श्री *
मल्हालसाकान्त
चरणी तत्पर खंडो
जी सुत मल्हार-
जी होलकर.
*

मोतंय
शुद.

अब महाराणाको यह फ़िक्र हुई, कि जिस तरह होसके उस तरह, सलूंबरके रावत् जोधसिंहको मारडालना चाहिये, क्योंकि वह मुख़ालिफ़ सर्दारोंको ख़ुफ़ियह तौरपर मदद देता है. और इसी मन्शासे महाराणाने उक्त रावत्के नाम इस मज्मूनका एक ख़ास रुक्का लिखा, कि आप यहां बहुत जल्दी चले आवें. लेकिन् उसे पहिले ही मालूम होगया था, कि मैं उदयपुर जानेमें मारा जाऊंगा, इसलिये टाला टूली करता रहा. आख़िरकार जब महाराणाको यह ख़बर मिली, कि जोधसिंह किसी त्यौहारपर अपनी ससुराल मोही (२) जाता है, तो उदयपुरसे नाहर मगरेको चले गये, जहांसे कि मोहीकी तरफ़ जानेका रास्तह था. जोधसिंहने सोचा, कि महाराणाके लश्करमें होकर बग़ैर सलाम किये चला जाना बेअदबीकी बात है. लाचार वह दर्बारके रूबरू हाज़िर हुआ; महाराणा सलाहके बहानेसे रावत्को एकान्तमें लेगये, और एक पानकी बीड़ी जेबसे निकालकर जोधसिंहसे कहा, कि यह बीड़ी या तो मुझको खिलाइये, अथवा आप खाजाइये. इस इशारेसे रावत्को साफ़ मालूम होगया, कि इसमें ज़हर है; अफ्सोसके साथ उसको महाराणाके हाथसे लेकर खागया, और कहा, कि "आप बहुत वर्षतक जिन्दह रहें, नौकरोंकी जान मालिककी ख़ैरख़्वाहीपर कुर्बान है." थोड़ी देरके बाद महाराणाने अपनी तसल्लीके लाइक़ ज़हरका असर देखकर रावत्को उसके हमराहियोंमें भेजदिया, कि जहां जाकर वह मरगया, जिसकी छत्री नाहर-मगरेकी नदीपर अबतक मौजूद है.

(१) इस काग़ज़में श्रावणी संवत् है, और चैत्रादि हिसाबसे संवत् १८२१ लग गया.

(२) यहांके भाटी जागीरदारकी बेटीके साथ जोधसिंहकी शादी हुई थी.

जोधसिंहके मारनेमें महाराणाकी बड़ी बदनामी हुई, क्योंकि यह सर्दार इनका दिली खैरख्वाह था; सिर्फ़ मालिकसे डरकर सलूंबरमें बैठ रहा था. इस वारिदातसे महाराणा का बिल्कुल एतिबार उठगया, लेकिन् उसके बेटे पहाड़सिंहके दिलमें कोई फ़र्क़ नहीं आया, और वह तन मनसे महाराणाकी ख़िद्मतमें हाज़िर रहा.

इन्हीं दिनोंमें भैंसरोड़का रावत् लालसिंह गुज़रगया. महाराणाने उसके बेटे मानसिंहको उसके पिताकी इज़्ज़त देकर तसल्लीका पर्वानह लिख भेजा, जिसके जवाबमें मानसिंहने नीचे लिखी अर्ज़ी रवानह कीः-

भैंसरोड़के रावत् मानसिंहकी अर्ज़ीकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी १

सध श्री श्री श्री श्री श्री जी हजुर, रावत मांनसीघरी अरज मालम हुवे राज, अपरच घणी मोथी नवाजस मेरवनी करे अमराव पदवी बगसी, ने मोटो कीदो सो मु मारी तरफथी आंतेकरनसु धण्यांरी बदगी मंहे जीव जंमा घर वचे तथा धन माया बचे धणीरो हुकम माथा उपरे राषवा बचे ने धनी जणी बदरि बंदगी भुलावे जणीमाहे मारी आडी थी कदीही कसर पाडु तो मुने श्रीअेकलंगजी पोचे; तथा मु भाइी सगा सनमंदी थी श्री हजुर हुकम करे जणी भेलो वु ने दुजु धण्यांरी मरजी सवाअ मु कणी भेलो हवु, तो मने श्री जीरा पतावा अरुठ होवे ने जो धणी परमेसुर से, सो धणी हुकम करे सो मारा माथा उपरे. असल बाप थी उपनो सु, तो धण्यांरा पैतावा मारा माथा उपर राषसु दुजी कइी वात जंणे नही राज समत १८२१ रा फागुण सद ४.

महाराणाने यह सोचा, कि देलवाड़ेके राज राघवदेवको तसल्ली देकर बुलाया जावे. क्योंकि वह पेश्तरसे नाराज़ था, और इन महाराणाने गद्दी बैठने बाद उसको और भी ज़ियादह भड़का दिया. उसने काशी व गया जानेकी इजाज़त चाही, तब महाराणाने तेवर बदलकर कहा, कि "भलेही द्वारिका जाओ". इस बारेमें कर्नेल टॉडने राघवदेवके काग़ज़ (१) का तर्जमह लिखा है, जो उसने प्रधान जशवन्तरायको लिखा था (२).

---

(१) कर्नेल टॉडने उक्त काग़ज़पर नोट देकर राघवदेवको ग़लतीसे अपनी किताबमें देलवाड़ेके एवज़ सादड़ीका जागीरदार लिखा है.

(२) राज राघवदेवने जशवन्तराय पंचोलीके नाम काग़ज़ लिखा उसका तर्जमह कर्नेल टॉडकी किताब टॉडराजस्थान (कलकत्तेकी छपीहुई) के पृष्ठ ४५३ जिल्द १ के १६ वें प्रकरणसे यहांपर दर्ज किया जाता हैः- राज राणा राघवदेवकी तरफ़से जशवन्तराय पंचोलीके नाम अल्क़ाब आदाब (उपमा) के बाद -

उसमें इसी ऊपर लिखे हुए रंजकी बाबत् शिकायत दर्ज है. उसी अ़रसहमें महाराणाने एक ख़ास रुक़ा उसकी तसल्लीके लाइक़ लिख भेजा, जिसपर राज राघवदेवने एक अ़र्ज़ी महाराणाको लिखी, उसकी नक़्ल नीचे दर्ज की जाती है:-

अ़र्ज़ीकी नक़्ल.

सिद्ध श्री श्री श्री श्री श्री जी हुजूर अरज सेवग राघोदेवरी अरज मालम व्हे राज अप्रचः श्री जी परमेसुर से, अनदाता से राज श्री हजुरसुं षास दसकतां रुको मया हुवो, सेवग माथे चेडे लीदो, राज मेरबानी करे अत्रो बोले यर लषवारो हुकम हुवो, जो मारा मनरो भांत भांत संदेह दुर हुवो. मारे पण श्री जीरा हुकमरी बात से. मुने श्री जी जणी रीतरी बंदगी भलावे, सो हुं मारा जीव बचे धन बचे गर वचे अंतेकरण बचे श्री जी हुकम करे जणी में कुछ राषुं तो श्री जीरा पेतावारी आण. कही भाइी सगा सुमंदी थी श्री जीरा सुदरवामें तो हुकम थी भेलपण राषुं, ने श्री षावंदारा बगाडमें कणी भेलो नहीं. श्री जीरे भलेमें मारे भलां आछा बुरां धणया सामल छुं. अणी लष्यामें कठे ही तफावत राषुं तो श्री एकलींगजी मुने पोचेसी. श्री जीरे ने मारे बचे श्री परमेसुरजी से असल रजपूत वेसी, सो तो वचनमें तफावत नुं पाडसी राज. चेत सुद ५ भोमे संवत् १८२१ (१) वरषे.

अब हम उस संवत्का बयान करते हैं, जिसमें कि मेवाड़की बर्बादीका प्रागट्य हुआ. महाराणाकी तेज़ मिज़ाजी और गद्दी नशीनीसे पहिलेकी ओछी और ख़फ़ीफ़ बातोंकी अ़दावतोंपर हरएकके साथ टेढ़ी निगाह, ख़ैरख़्वाहोंकी सलाहपर बे एतिबारी,

---

आपकी चिट्ठी पहुंची क़दीम ज़मानेसे आप हमारे दोस्त चले आये हो, और हमेशहसे वफ़ादार रहे हो, इसलिये कि मैं हमेशहसे महाराणाके ख़ानदानका नमक हलाल हूं. मैं कोई चीज़ आपसे छिपी नहीं रक्खा चाहता, इसलिये मैं लिखता हूं, कि अब मेरा दिल ख़िद्मत गुज़ारी और नौकरीको नहीं चाहता है; मेरा इरादह गया जानेका है. जब मैंने यह ज़िक्र महाराणासे किया, उन्होंने ताना देकर मुझसे कहा कि, तुम्हें द्वारिका जाना चाहिये. अगर मैं ठहरूं, तो महाराणा मेरे जागीरके ग्राम बहाल करदेंगे, जैसे कि जैतजीके वक़्में थे. मेरे बुज़ुर्गोंने बड़ी बड़ी नौकरी की हैं, और चौदह वर्षकी उ़म्रसे मैं भी ख़िद्मत करता आता हूं; अगर दर्बार मुझपर मिहर्बानी किया चाहते हैं, तो यह ऐन वक़्त है.

(१) इस काग़ज़का संवत् श्रावणादि है, और चैत्रादि हिसाबसे संवत् १८२२ शुरू होगया.

और बदख़्वाहोंकी चिकनी चुपड़ी बातोंपर अमल होनेके बाइस रियासती लोगोंका नाकमें दम होगया. कुल सर्दारोंने एक मत होकर रियासतका एक दूसरा दावेदार मश्हूर किया. विक्रमी १८२२ [हि० ११७८ = ई० १७६५] के शुरू होते ही गोगूंदाके झाला जशवन्तसिंहने रत्नसिंह नामी लड़केको कुम्भलमेर पहुंचाया, और प्रसिद्ध किया, कि "यह महाराणा राजसिंहका फ़र्ज़न्द मेवाड़की गद्दीका वारिस है". मैं (कविराजा श्यामलदास) ने उन लोगोंकी ज़बानी सुना है, कि जिनने उस ज़मानेके आदमियोंसे यह ज़िक्र सुना था. मेरे पिता भी अक्सर कहा करते थे, कि अस्लमें वह लड़का महाराणा राजसिंहका ही फ़र्ज़न्द था, जो महाराणा अरिसिंहके डरसे पोशीदह रक्खा गया; लेकिन् वह सात वर्षकी उम्र पाकर शीतला निकलनेसे कुम्भलमेरमें ही मरगया, और मुख़ालिफ़ सर्दारोंने किसी राजपूतके लड़केको उसके एवज़ खड़ा करदिया. बाज़ोंका यह भी कौल है, कि वह अस्लमें ही बनावटी था; जैसा कि शुरूमें आंमेरीकी बावड़ीपर सलाह होनेका ज़िक्र लिखा है. चाहे यह ग़लत हो या सहीह, लेकिन् हम यह लिख सक्ते हैं, कि महाराणा अरिसिंह और बनावटी रत्नसिंहके मददगार सर्दार मेवाड़ देशको बर्बाद करने वाले थे. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि कुल मेवाड़के सर्दार रत्नसिंहकी तरफ़ होगये, ख़ाली पांच अरिसिंहके ख़ैरख़्वाह रहे, याने सलूंबर, बीझोलियां, बदनौर, आमेट और घाणेराव. इनमेंसे सलूंबर भी पहिले रत्नसिंहके शरीक था, परन्तु फिर आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे अरिसिंहका मददगार होगया. यह कहावत हमने भी सुनी है, कि रावत् पहाड़सिंहको महाराणाने हिक्मत अमलीसे अपनेमें मिलालिया, लेकिन् मेरे (कविराजा श्यामलदासके) पिता हमेशह मुझसे कहा करते थे, कि यह बात ग़लत है. रावत् पहाड़सिंह और उसका चचा भीमसिंह महाराणाके हाथसे जोधसिंहके मरनेको ग़नीमत जानकर यह कहते थे, कि आदमी दुन्यामें हमेशह ज़िन्दह नहीं रह सक्ता. जोधसिंहका अपने मालिकके हाथसे मरना पहाड़सिंहकी ख़ैरख़्वाहीका उम्दह सुबूत होगया, और रावत् पहाड़सिंहके उज्जैनमें मारे जानेसे यह बात बिल्कुल पुख़्तह मालूम होती है; कि पहाड़सिंह महाराणाका ख़ैरख़्वाह था, जिसका बयान आगे लिखा जायेगा.

वसन्तपाल देपुरा रत्नसिंहका प्रधान बनाया गया, जिसने महाराणा रत्नसिंहके नामसे मेवाड़में हुक्म अह्काम जारी किये. वसन्तपाल भी उसी चालपर चला, जिसपर कि उसका बुज़ुर्ग साह आसा देपुरा चला था- (देखो पृष्ठ ६२).

इसी अरसहमें एक शख़्स बड़ा आक़िल और होश्यार महाराणाके हाथ लगा, वह ज़ालिमसिंह झाला था, जिसे कोटाके महारावने निकाल दिया था. यह कोटा और जयपुरकी लड़ाईमें नामवर होगया, इसका ज़िक्र कोटेकी तवारीख़में लिखा

गया है. महाराणाने उसे चीताखेड़ाकी जागीर और राजराणाका ख़िताब दिया. अगर महाराणा इसकी सलाहपर भी चलते, तो ज़रूर कुछ फ़ायदह होता, परन्तु वह अपनी बहादुरीके घमंडमें ज़बर्दस्तीकी कार्रवाईको पसन्द करते थे. इस वक्त ऊपर लिखे हुए सर्दारोंके सिवा कुल मेवाड़के सर्दार रत्नसिंहके तरफ़दार होगये थे. कर्नेल टॉड लिखता है, कि रत्नसिंहके सर्दारोंमें यह आठ सरगिरोह थे :- भींडर, देवगढ़, सादड़ी, गोगूंदा, देलवाड़ा, बेदला, कोठारिया और कान्होड़.

हमने कई बुज़ुर्गोंकी ज़बानी सुना है, कि देलवाड़ेका राज राघवदेव महाराणाका दिली ख़ैरख़्वाह था, जिसका सुबूत उसकी अर्ज़ीसे भी साफ़ ज़ाहिर है; लेकिन् महाराणा को उसका एतिबार न था. महाराणाने शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहको मिलालेनेकी फ़िक्र की, क्योंकि उम्मेदसिंह व उसके पोते रणसिंहमें ना इत्तिफ़ाक़ी होरही थी, और वह अपने छोटे बेटे ज़ालिमसिंहसे खुश था, इस मौक़ेको ग़नीमत जानकर उसके नाम पूरी तसल्लीका एक रुक़ा लिख भेजा; लेकिन् उसने उदयपुर आनेमें उज़्र किया, और कहा, कि मुझे महाराणा जगत्सिंहने, जो जागीर दी थी, वह भी आजतक नहीं मिली. तब महाराणाने काछोलाके पर्गनहकी उठंतरी देकर मन्ना धायभाईको उसके पास भेजा. यह पर्गनह महाराणा जगत्सिंहने राजा उम्मेदसिंहको जागीरमें लिख दिया था, लेकिन् उक्त महाराणाका देहान्त होगया, और उनके पुत्र प्रतापसिंहकी नाराज़गीसे क़ब्ज़ह मुल्तवी रहा; अब मन्ना धायभाईको भेजकर उम्मेदसिंहको दिया गया. उस ज़मानहका एक अस्ली काग़ज़ हमारे पास है, जिसकी नक्ल नीचे दर्ज कीजाती है :-

काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी

मनजीने साहेपुरे रावतजीरी तरफसुं राजाजी तीरे उठंतरी ले मोकल्यो, सो रावत उरजनसिंहजी इतरा समाचार कह्या, सो मनजी पकी करे उठंतरी देसी, जिणीरो आछा बुरारो जमो रावतजी पहाड़सिंहजी उरजणसिंहजीरो है- विगत-

हुकम परमाणे श्री जीरी वंदगी करे, जणी में तफ़ावत न पड़े.

मेवाड़रा पांच सरदारां प्रमाणे देसरे चोथ तियाई दसोद विराड़ भला भुंडामें हुकम प्रमाणे पंचां स्यामल श्री ज़ीरा सुधारामें हजुररा हुकम प्रमाणे वंदगी करे, जतरे तो म्हारो वचन हे; अर श्री जीरा विगाड़ामें धण्यारा हुकम सिवाय राजाजीरी नीतमें कसर पड़े, जठे रावतजीरो वचन न हे, षोलेर कहेदेणी. धण्यारा सुधरवामें तो रावतजी राजाजी भेला श्री जीरो सुधारवारी नीत जाणी वी नहीं स्याम धरमी व्हे सो धण्यां

भेलो होय, धरणयांरा विगाड़ा भेलो नहीं. श्री जीका सुधरवामें भेलप छे, हुकम प्रमाणे बंदगी करे जितरे जायगां कोय हुकम लोपे जठे रावतजी अरज करे, पटो पालसे करावे तथा दरबार थी पालसे करे, वदनीत, तकसीर पडे, तो ओलंभो देवाय.

पटारा गासांमे गडी न बंधे.

श्री जीरा हुकम सिवाय कही ठकाणे कागद पतर सुरका दुरकी हेत वेवहार नही करे.

श्री जीरा परवाना रुका दास हजुर आय अंतकरण चित्त लगाय हुकम प्रमाणे बंदगी करे, बंदगीमें कसर न राषे. भाई सगा भेलपण का फरक देपणो नहीं; लुणकी नीत राषणी और पी मनजीने उपजे सो श्री म्हादेवजीरा देवरामें सोगन सपत्त पकी षवावेगा, सेहर में म्हेलामें चाकरां रो फितुर न वे; रावतजीरा चाकरां प्रमाणे रहे.

राजा उम्मेदसिंहकी अर्ज़ीकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी

स्वस्ती श्री माहाराजा धीराज महाराणा श्री ५ श्री अरसीहजी हजुरी छोरु राजा ऊमेदसीगको पावा मुजरो मालम होवे- अप्ररंच॥ श्री जी मुने महरवान होअे पटो मया कीधो, सो पगे लागी माथे चडाआ लीधो, माहारे तो श्री जी परमेसुर छे; श्री जीरा हुकम परमाणे अतेहेकरणसु श्री दरबारकी वदगीमें धरणयांरो सुधरे जी वातमें कधेही वोछ रापु, तो मने श्री एकलीगजी पोछे धणी हुकम करे ज्या करां; मुरजी हो जणाथी हेत राषा, पातसाहीरो तथा दुजाहीरो तणारो सादन रापु नी और कणीरो सादन करु, तो दरबाररो पटो पाछो श्री हजूर नजर करु. रावत पाड़सीगजी दुजी याददास्ती नीचे माहारा अषर कराया छे, जतरी वातमें तफावत पड़े, तो मने श्री लछमीनाराणजी पोचे. आगली तगसीर धणी मने माफ करी, सौ मामे परमेसुर है, तो हु पण मुजरा सरीकी वंदगी करी वताऊ, तो असली रजपुर अर माहारी तो साहारी-ही सरम धरणयाने हे, सो धणी चंताई करसी राज; मती पोस वीद २ संवत १८२२ वरषे.

वनेड़ेका राजा रायसिंह, तो पेश्तरसे ही महाराणाका फ़र्मांबर्दार था. अब पर्गनह काछोला मिलनेपर राजा उम्मेदसिंह भी महाराणासे आमिला. इन सर्दारोंके एकट्ठा होनेसे महाराणाको बड़ी ताक़त होगई, और मेवाड़से रत्नसिंहका क़ब्ज़ह उठा दिया, जो उदयपुरके गिर्दो नवाह तक आ पहुंचा था. रत्नसिंहकी तरफ़ रावत् जशवन्तसिंह और उसका बेटा राघवदेव दोनों बड़े ताक़तवर व अक्लमन्द सर्दार थे; उन्होंने सोचा, कि अब विदून किसी ज़बर्दस्त शख़्सकी मददके काम्याब होना मुश्किल है. इसलिये वे मरहटोंकी तरफ़ कोशिश करने लगे, अरिसिंह

भी अपनी ताक़त बढ़ा रहे थे. यशवन्तराय कायस्थसे प्रधाना उतारकर महता अगरचन्दको दियागया, और ज़ालिमसिंह झालाकी सलाहपर बन्दोबस्त होने लगा. विक्रमी १८२४ [हि० ११८१ = ई० १७६७] में यह तमाम बद इन्तिज़ामी दूर हुई. इन्हीं दिनोंमें देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहका बेटा राघवदेव माधवराव सेंधियाके पास पहुंचा, और उसको अपना मददगार बनानेके लिये लिखदिया, कि महाराणा अरिसिंहको गद्दीसे उतार देनेके बाद हम तुमको सवा करोड़ रुपया देंगे. सेंधियाने भी लालचमें आकर इक़ार कर लिया. लेकिन् ज़ालिमसिंह झाला और अगरचन्द महताने पेश्वाके फ़ौजी अफ्सर दौला मियां और रघूजी पायग्याकी मारिफ़त पहिले बात चीत कर रक्खी थी. इसलिये उक्त अफ्सरोंने सेंधियाको लालचकी तरफ़ झुकाहुआ देखकर मना किया, परन्तु उसने नहीं माना. इसपर ये दोनों अफ्सर नाराज़ होकर महाराणा अरिसिंहके पास उदयपुर चले आये. रघूजी पायग्याके पास पांच हज़ार और दौला मियांके पास तीन हज़ार सवारोंकी जमइयत थी. इनके आनेसे महाराणा की हिम्मत बढ़गई. और इन लोगोंने कहा, कि माधवराव सेंधियाकी हमारे साम्हने कुछ हक़ीक़त नहीं है; अगर उसने फ़ौजी कार्रवाई की, तो उसे पकड़कर आपके पास ले आवेंगे. महाराणा तो पहिलेसे ही बहादुरीके घमंडमें चूर थे, इन लोगोंकी बातोंसे और भी ज़ियादह जोशमें आये, लेकिन् इनके आक़िल मुसाहिबोंने पेश्वाके सर्दारोंमेंसे बहेरजी ताकपीर व पंडित राघवरामसे मिलावट करके बीस लाख रुपया देनेपर रत्नसिंहको कुम्भलमेरसे निकालदेनेका इक़ार करालिया. उस इक़ारनामहकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

इक़ार नामहकी नक़्ल.

श्रीरामजी.

(मुहर.)

सीध श्री लीषाईतं राज श्री बहेरजी ताकपीर वा पंडत श्री राघोरामजी अपरंच श्री जीरे देसमें ही हरामषोरां राणा राजसींघजीरा बेटारो फतुर झुठो उठाया, जीण बाबत श्री दीवाणजी हजुरमें अतरो करार ठहरायो, सो यो काम कर देणो. बहर रुपीया २०००००० बीस लाष लेणा ठहराया, सो श्री जीरा जतरा मतलब हे, जतरा करदेना. श्री जीरा कामदारारा हाथरा लीष्या प्रमाए ए रुपीया

लेणा, काम करदेणा; तीनही सरकाररो नजराणो चुकाईलीया, सो फतुर बाबत तीन ही सरकाररा बोलवा पावे न्ही मीती भादवा सुध १२ समत १८२५. (मोहर मुद.)

इस इक़ार नामहका हाल सुनकर माधवराव सेंधिया ज़ियादह भड़का, जिससे उसकी तामीलमें देर हुई. यह ख़बर सुनकर शाहपुरेका राजा उम्मेदसिंह, देलवाड़े राज राघवदेव और सलूंबर रावत् पहाड़सिंह तीनों, मरहटे सर्दारोंके पास भेजे गये. इन लोगोंने उनसे बात चीत की. बहेरजी वगैरह सर्दारोंने उनको तसल्ली दी, तो भी वे माधवराव सेंधियाको मिलानेकी कोशिशमें लगे, और जो लोग उदय-पुरमें रत्नसिंहके तरफ़दार थे, उनपर सख़्तियां होने लगीं. इस बारेमें एक अर्ज़ी मरहटी लश्करसे उक्त सर्दारोंने महाराणा अरिसिंहके नाम लिखभेजी, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

अर्ज़ीकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी

मुजरो, मुजरो मालूम, लीजो, राज,
मुजरो, मुजरो मालूम, लीजो, जी,
मुजरो, मुजरो मालूम, लीजो.

सिध श्री श्री श्री श्री श्री जी हजूर, अरज रावत पहाड़सिंह, राणा राघवदेव, राजा ओमेदसिंहरी मालुम होवे राज, अप्रंच: श्री हजूर थी रुको आयो, समाचार वांच्या राज, प्रोहितजीरी हवेली एकलिंगदासजीरा घरांरा समाचार लिख्या, सो जाण्या राज, सो दोही जायगारो घणो जावतो राषेगा राज, साज बाज आगो पाछो जाय नही, ज्युं करेगा राज, ने बाबा बषतसिंहजीरी हवेलीरो जावतो कीदो होवे, तो पको करावेगा राज, ने नही कीदो होवे, तो अब करावेगा राज; नही जा बात पण जाहर नही करेगा. जीन कुंवर जालमसिंहजीरे नाम पंचारा नामरो कागद लषाय मेल्यो, सो वो मान ही लेसी; नही माने तो श्री हजुर सुं पण मुलायजो नहीं करेगा. जिनने राणा राजसिंहजीरी झालींरो घर संबंद मेलगा ने उणीने दुजा चौपाड़ माहे मेले देगा जी, अस्या समाचार पुगा है, सो पांच रुपियांरो माल पुरकस लाग्या, आप

मेल्यो सो निकल्या नही निकल्यारो अटकाव राषेगा नही, नोरा सुदी समाले लीज्यो जी, ने उणांरी छोरयां वासते हुकम कीदो थो, सो जबत करावोगा जी. संवत १८२५ रा आसोज वीद १४.

महाराणा राजसिंहकी राणी झाली और उनके तरफ़दारोंपर उदयपुरमें सख्तियां होनेकी ख़बर रावत् जशवन्तसिंहके बेटे राघवदेवकी मारिफ़त सुनकर माधवराव सेंधिया ज़ियादह भड़का, और उसने कहा, कि हमारी हिमायत जानकर उनपर सख्तियां होती हैं, तो मैं मेवाड़को ज़रूर देखूंगा. इन बातोंसे ना उम्मेद होकर पहाड़सिंह, राघवदेव और उम्मेदसिंह, तीनों उदयपुरको लौट आये. यहां भी कई क़िस्मके आदमी मौजूद थे, और महाराणा दूसरे प्रतापसिंहके समयसे आपसमें अदावत बढ़ती रहनेसे देलवाड़ाके राज राघवदेवका शक तो पहिले ही से था, इस वक्त लोगोंने महाराणाके दिलपर बखूबी नक्श़ कर दिया, कि "यह इक़ार नामह देलवाड़े राजने ही पक्का न होने दिया, क्योंकि यह ख़ानगीमें फ़ुतूर (रत्नसिंह) की तरफ़ मिला हुआ है."

इस वक्त राजा उम्मेदसिंह पहाड़सिंहसे मिलगया, परन्तु राज राघवदेव, जो बड़ा जुर्अतदार और आक़िल सर्दार था, कृष्णावतोंसे नहीं मिला, बल्कि महाराणा अरिसिंहके भरोसेपर मग़रूर रहा. आख़िरकार इस अदावतका नतीजह यह हुआ, कि इन्हीं महाराणाने राघवदेवको मरवाडाला. जिसका हाल इस तरहपर है, कि सिन्धियोंकी बहुतसी तन्ख्वाह चढ़ी हुई थी, और वे लोग तन्ख्वाह न मिलनेके सबब ज़ियादह बे क़रारी ज़ाहिर करते थे; यह मौक़ा पाकर महाराणाके इशारेके मुवाफ़िक़ रावत् पहाड़सिंह वग़ैरहने उनसे कहा, कि अगर तुम राज राघवदेवको मार डालो, तो तुम्हारी चढ़ी हुई तन्ख्वाह हम चुका देंगे; और महाराणाने राज राघवदेवसे कहा, कि तुम जाकर सिपाहियोंको समझा दो. यह इस दग़ाबाज़ीसे वाक़िफ़ न होनेके सबब सिन्धी सिपाहियोंके बीचमें चला गया, कि पीछेसे एक हथमारेने आकर तलवारका वार किया, जिससे राघवदेवके दो टुकड़े होगये.

इस सर्दारके बेगुनाह मारेजानेसे महाराणाकी बहुत शिकायत हुई. इसके बाद फ़ौजकी तय्यारी होने लगी, पांच हज़ार सवार रघूजी पायग्याके साथ, तीन हज़ार दौला मियांके, पांच हज़ारसे कुछ कमो बेश राजा उम्मेदसिंहके, और कुछ रावत् पहाड़सिंहके साथ थे; इसके सिवा चार हज़ार सर्कारी फ़ौज थी. बाज़का क़ौल तो यह है, कि कुल सत्तरह हज़ार फ़ौज थी, और चारण कृष्णा आढ़ाने भीमविलास ग्रन्थमें महाराणाकी फ़ौज पैंतीस हज़ार लिखी है, मगर न मालूम किसका बयान सहीह है; और किसका ग़लत, क्योंकि उक्त शाइरने भी इस मुआमलेके शरीक रहनेवाले लोगोंकीही ज़बानी सुनकर लिखा होगा; इसलिये हम फ़ौजकी ठीक तादाद नहीं बता सक्के. अलबत्तह यह कह सक्के हैं, कि

वह फ़ौज निस्सन्देह मरहटोंसे मुक़ाबलह करनेको काफ़ी थी, परन्तु ग़लती इतनी हुई, कि महाराणाने उसे उज्जैन भेजकर अपनी ताक़त घटादी. अगर इस फ़ौजके साथ रहकर अपने मुल्कमें ही दुश्मनसे लड़ते, तो फ़ायदेकी सूरत थी, क्योंकि इसी फ़ौजके चार पांच टुकड़े बनाकर उदयपुरके क़रीब ही चारों तरफ़से छापा मारते, तो ज़ुरूर कामयाब होते, परन्तु ईश्वरको जो करना मंज़ूर होता है, वैसी ही मनुष्यकी बुद्धि होजाती है.

रावत् पहाड़सिंह, राजा उम्मेदसिंह, प्रधान महता अगरचन्द, राज ज़ालिमसिंह, बनेड़ेके राजा रायसिंह, बीजोलियाके राव शुभकरण, भैंसरोड़के रावत् मानसिंह, बंभोराके रावत् कल्याणसिंह और मंगरोपका बाबा बिशनसिंह बालक होनेके सबब उसके एवज़ पांच सौ आदमियोंकी जमइयत और मरहटा रघूजी पायग्या व दौला मियां वगैरह सर्दारोंको महाराणाने हुक्म दिया, कि तुम उज्जैन जाकर माधवराव सेंधियासे मिलो; और उनसे कहो, कि अगर पेशकश लेना हो, तो हम यहां ही चुका देंगे, और लड़ाई करना हो, तो भी हम तय्यार हैं. इस तरह इन लोगोंको उदयपुरसे रवानह किया. शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने महाराणासे यह दर्ख्वास्त की, कि अगर मैं लड़ाईमें मारा जाऊं, तो मेरे छोटे बेटे ज़ालिमसिंहको शाहपुरेका मालिक बनावें. इसपर महाराणाने कहा, कि अगर हम मेवाड़के मालिक रहे, तो ऐसा ही होगा. अन्तमें सब लोग महाराणासे विदा होकर उज्जैन पहुंचे. वहां क्षिप्रा नदीके किनारे क़ियाम करके माधवराव सेंधियासे बात चीत करने लगे. माधवरावने कहा, कि महाराणा राजसिंहके फ़र्ज़न्द रत्नसिंहकी मौजूदगीमें अरिसिंह राज्यका मालिक नहीं होसक्ता. जिसपर इन सर्दारोंने जवाब दिया, कि यदि वह राजसिंहका अस्ली फ़र्ज़न्द होता, तो बेशक आपका कहना वाजिब था, लेकिन् चन्द बदख्वाह सर्दारोंने यह फ़ितूर खड़ा किया है. अगर महाराणा राजसिंहकी महाराणीको हमल होता, तो गद्दी नशीनीके समय, जब महाराणा अरिसिंह और कुल रियासती लोगोंने दर्याफ़्त किया, उस वक्त इन्कार न होता; लेकिन् सेंधिया सवा करोड़ रुपयेके लोभसे बिल्कुल काठकी पुतली बनरहा था, और उसकी डोरी देवगढ़वाले राघवदेवके हाथमें थी; जिस तरह वह चाहता, नचाता था; उसने इन लोगोंकी बातोंपर कुछ भी ध्यान न दिया.

सेंधियाने कहा, कि मैं एक बार मेवाड़को देखूंगा, तब सर्दारोंको भी लाचार होकर लड़ाईकी तय्यारी करनी पड़ी. विक्रमी १८२५ पौष शुक्ल ६ [हि० ११८२ ता० ५ रमज़ान = ई० १७६९ ता० १३ जैन्युअरी] को दोनों तरफ़से तोप व बन्दूकें चलने लगीं. सेंधियाके पास इस वक्त पैंतीस हज़ार फ़ौज थी, तीन दिनतक बराबर लड़ाई होती रही; आख़िरकार विक्रमी पौष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रमज़ान = ई० ता० १६ जैन्युअरी] की

फ़त्हको मेवाड़की फ़ौजमें सलाह हुई, कि अब हमलह करना चाहिये. सलूंबरके रावत् पहाड़सिंहको राजा उम्मेदसिंहने कहा, कि आप अभी अठारह वर्षके हैं, और शादी किये थोड़े ही दिन हुए हैं, इसलिये मुनासिब है, कि आप महाराणाके पास चले जाइये; फिर कई लड़ाइयोंमें आप को यह मौक़ा हासिल होगा. तब रावत्ने जवाब दिया, कि मेरी कम उम्रको न देखिये, सलूंबरके ठिकानेकी तरफ़ ख़याल करना चाहिये, कि वह कितना पुराना है, जिसकी इज़्ज़त मेरे हाथमें है. अगर एक क़दम भी पीछा हटूं, तो मेरे इज़्ज़तदार ठिकानेकी तमाम लोग हिक़ारत करेंगे; दूसरे लड़ाईका काम जवान आदमियोंके ही हाथमें होना चाहिये; आप दाना और तजिबहकार हैं, उदयपुर चले जाएं; क्यौंकि महाराणाको आपकी सलाहसे बहुत फ़ायदह होगा. राजा उम्मेदसिंहने हंसकर जवाब दिया, कि बेशक आपका जवाब माकूल है, लेकिन् मुझको और आपको जुदी जुदी हालतमें मरनेके लिये ऐसा मौक़ा फिर न मिलेगा. उज्जैनका क्षेत्र, क्षिप्राका किनारा और अपने स्वामीके लिये मुल्की लड़ाईमें माराजाना ग़नीमत है. सब सर्दार केसरिया लिबास करने बाद तुलसीकी मंजरी और रुद्राक्ष पगड़ियोंमें रखकर घोड़ोंपर सवार हुए और सेंधियाकी फ़ौजपर हमलह करदिया. कहते हैं, कि यह मेवाड़ी राजपूतोंकी आख़िरी लड़ाई थी, जिसमें इन सर्दारोंने अपनेको भी बहादुरी और इज़्ज़तमें अपने बुज़ुर्गोंके बराबर कर दिखाया. बयान है, कि तोप और बन्दूक़ की लड़ाई बन्द होकर बर्छा, तलवार और कटार चलानेकी नौबत पहुंची, और एक ही हमलहमें मरहटी फ़ौजको तित्तर बित्तर करदिया; लेकिन् फ़त्हका झन्डा मेवाड़की फ़ौजके हाथमें ईश्वरको रखना मंज़ूर न था, मरहटोंके भागनेसे राजपूत मग़रूर होकर शहरको लूटने लगे.

इसी अ़र्सेमें जयपुरसे देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहके भेजे हुए पन्द्रह हज़ार नागा अतीथ (लड़ाई करने वाले जमाअ़ती फ़क़ीर) जिनको उसने नौकर रखकर अपने बेटे राघवदेवके पास भेजे थे, आपहुंचे; इस आसूदह फ़ौजके मिलनेसे माधवराव सेंधिया व मेवाड़के बाग़ी सर्दारोंको हिम्मत होगई, और उन्होंने अपनी भागी हुई फ़ौजको एकट्ठा करके, उन जमाअ़तियों समेत दोबारह हमलह किया. मेवाड़के लोग उज्जैनकी गलियों में लूट खसोट कर रहे थे, मरहटोंका हमलह रोकनेकी ताब न लासके; लेकिन् सब मुखिया सर्दार मिलकर हमलह करने लगे; और दोनों तरफ़के हज़ारों आदमी मारे गये. राजा उम्मेदसिंह व रावत् पहाड़सिंह बहादुरीके साथ काम आये; जिस वक्त राजा उम्मेदसिंह जांकन्दनीकी हालतमें अपने ख़ून और मृत्तिकासे पिंड बना रहे थे, उस वक्त एक मरहटे सवारने राजाकी छातीमें बांस मारकर कहा, कि इसने बहुत सिपाहियोंकी जान ली है. उसी वक्त मरहटी फ़ौजके एक बड़े अफ़्सरने उस सवारको डांटकर

कहा, कि तेरा बाबा खड़ा था, उस वक़ बांस मारता, तो बहादुरी थी; फिर उस अफ़्सरने राजासे कहा, कि तुम चित्तौड़ गढ़को अपने सिरसे बंधा बतलाते थे; अब वह कहां है ? राजाने जवाब दिया, कि सिरके नीचे देकर सोता हूं; इतना कहनेके बाद उसका दम निकल गया. रावत् मानसिंह, राजा रायसिंह और राव शुभकरण ज़रूमी होकर ज़मीनपर गिरे; रघूजी पायग्या व दौला मियां भी लड़कर मरमिटे; बाक़ी फ़ौज भागकर अलग होगई. फ़त्ह माधवराव सेंधियाको हासिल हुई. देवगढ़ रावत्के पुत्र राघवदेवने राजा उम्मेदसिंह व रावत् पहाड़सिंह वगैरहको दाग़ दिया, और रावत् मानसिंह, राव शुभकरण व राजा रायसिंह व रावत् कल्याणसिंहको, जो ज़रूमोंसे बेहोश पड़े थे, उनकी तरफ़वाले उठाकर मरहटी फ़ौजमें लेगये, और उनका इलाज करवाया. महता अगरचन्द व झाला ज़ालिमसिंहको मरहटोंने क़ैद करलिया. महाराणाके हुक्मसे रूपाहेलीके ठाकुर शिवसिंहने बावरी भेजे, वे महता अगरचन्द और रावत् मानसिंह इन दोनोंको हिकमत अमलीके साथ निकाल लाये. बाक़ी रहे उनको भी कुछ अरसे बाद माधवरावने छोड़ दिया.

इस फ़ौजकी शिकस्तका हाल सुनकर महाराणाको बड़ी फ़िक्र हुई. अगर्चि महाराणा मज़्बूत व बहादुर थे, लेकिन् फ़ौजी ताक़त घटजानेसे, उनके दिलमें घबराहट पैदा होगई. उमराव सर्दारोंमेंसे सिर्फ़ सलूंबरके रावत् भीमसिंह (जिसे महाराणाने पहाड़सिंहकी जगह सलूंबरका रावत् बनाया था) और बदनौरके ठाकुर अक्षयसिंहके सिवा कोई भी महाराणाकी तरफ़ नहीं रहा. महाराणाने मांडलगढ़ जाना चाहा, तब राव भीमसिंह, अर्जुनसिंह, ठाकुर अक्षयसिंह, और महाराणाके चचा बाघसिंहने कहा, कि जबतक हम लोग ज़िन्दह हैं, आप किसी तरहकी फ़िक्र न करें. आपको क़िलेका बन्दोबस्त व सामान और सिपाहकी फ़िक्र करना चाहिये. तब महाराणाने अपने चन्द आदमी भेजकर सिंधसे मुसल्मान सिंधी और गुजरातसे अरब लोगोंको बुलवाया, और शहर पनाहके गिर्द मईले (छोटे क़िले) तय्यार कराकर शहरकोट व खाईको दुरुस्त किया. दुश्मन भंजन तोपको एकलिंगगढ़पर चढ़ानेमें बड़ी दिक़त हुई, बड़वा अमरचन्दकी सलाहसे यह तोप क़िलेपर चढ़ाई गई, लेकिन् सिंधी और अरबोंकी तन्ख़्वाह चढ़जानेसे उन सिपाहियोंने महाराणाको दबाया; इस अन्दरूनी फ़सादसे इनको बहुत फ़िक्र हुई. एक दिन सिपाहियोंने महाराणाका दामन इस ज़ोरसे जा पकड़ा, कि वह फटगया. इस गुस्ताख़ीसे वे बहुत जोशमें आये, लेकिन् क्या करसक्ते थे; हज़ारों सिपाह घेरे हुए थी. रावत् भीमसिंहने कहा, कि अब बड़वा अमरचन्दको बुलाकर काम सुपुर्द करो. महाराणा उसके मकानपर गये, और कुल हक़ीक़त कहकर उसे अपना प्रधान बनाना चाहा. अमरचन्दने जवाब दिया, कि अव्वल तो मेरा मिज़ाज सच्चा, सीधा

और तेज़ है, दूसरे मैंने महाराणा प्रतापसिंह और राजसिंहके ज़मानेमें अपने इख्तियारसे काम किया है, और सिवाय मालिकके दूसरोंकी पर्वा न रक्खी; और आप किसीकी सलाह मानते नहीं, सिपाह मुख़ालिफ़, ख़ज़ानह ख़ाली और रअय्यत मुफ़्लिस, ऐसे नाज़ुक वक्त़में किसतरह काम किया जावे. अगर मुझको पूरा इख्तियार दो और भरोसा रक्खो, तो कुछ तद्बीर हो सक्ती है. महाराणाने एकलिंगजीकी क़स्म खाकर कहा, कि यदि तुम हमारी महाराणियोंका भी ज़ेवर मांगोगे, तो उसी वक्त़ भिजवा दिया जायेगा.

यह बातें होही रही थीं, कि महाराणाके धायभाई कीकाने कहा, कि आप ज़नानह समेत भागकर पहाड़ोंमें चलिये, वहांसे मांडलगढ़में जा छिपेंगे. इसपर अमरचन्दने ग़ुस्से होकर कहा, कि तुम तो मवेशी चराने और दूध बेचनेसे अपना पेट भर लोगे, परन्तु महाराणाके लिये मांडलगढ़में ख़ज़ानह नहीं गड़ा है, कि जिससे वह अपनी इज़्ज़तको बचावेंगे. रावत् भीमसिंह, अर्जुनसिंह व ठाकुर अक्षयसिंहने कहा, कि जबतक हमारे धड़पर सिर है, आप कुछ फ़िक्र न करें. महाराणाने कहा, कि तुम्हारे बुज़ुर्गों (रावत् चूंडा व जयमल्ल मेड़तिया) ने जैसी इस रियासतकी ख़ैरख़्वाही की थी, वैसाही मुझको तुम्हारा भी भरोसा है. महाराणाके चचा बाघसिंह व अर्जुनसिंहने कहा, कि जिस तरह लक्ष्मणने अपने भाई रामचन्द्रकी ख़िद्मत की थी, उसी तरह हम भी आपकी सेवामें मौजूद हैं. इसपर महाराणाने जवाब दिया, कि यह सब रियासत आपकी है, आप मेरे बुज़ुर्ग और मैं आपका फ़र्मांबर्दार हूं. इस तरहकी बातोंसे महाराणाकी हिम्मत बढ़गई; और उसी वक्त़ अमरचन्दने सिंधी सिपाहियोंसे जाकर कहा, कि ऐसे वक्त़में अपने मालिकसे इस तरह गुस्ताख़ी करना ख़ैरख़्वाह और अश्राफ़ आदमियोंका काम नहीं है, मेरे साथ चलो, कल तुम्हारी चढ़ी हुई तन्ख़्वाह दिला दूंगा. चूं कि अमरचन्दके क़ौलका उन लोगोंको एतिबार था, सब उसके साथ होलिये. उस नेक मिज़ाज प्रधानने सब कारख़ानोंके ताले तुड़वाकर सोने चांदीके बर्तन व कुल जवाहिरात अपने पास मंगवा लिये, और रातभरमें सोने चांदीके सिक्के बनवा कर और जवाहिरातको गिर्वी रखकर दूसरे ही दिन तमाम फ़ौजकी तन्ख़्वाह चुका दी.

माधवराव सेंधियाने जर्रार फ़ौजसे उदयपुरको आघेरा. उस समय किसी चारणने मारवाड़ी भाषामें एक गीत कहा, जिसका महाराणाके तरफ़दार सर्दारोंके दिलपर बहुत असर हुआ; उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

गीत.

जिण वेळां जनम जिको कुण जाणै दाई कशी जणाय दियो ॥
शतवादी शापुरशां शूरां कठेफतूरां राज कियो ॥ १ ॥
कूड़ो तोत थयो गढ़ कोटां भाजगया खळ सकळ भणै ॥

माठी बात पंथ मत लागो ताय छल जागो निमख तणै ॥ २ ॥
जिम कृत घणी थयो जैतावत उरजणिये दलथंभ उपाय ॥
जिण अग जीत लिया जोधाणै नारायण रीझे हक न्याय ॥ ३ ॥
हसन हराम हुवो हत हेवै श्रीबर सैदां कंध सँघार ॥
रजवट लूण धरम आराधो सत संधां साधो सर्दार ॥ ४ ॥
क्रामत तखत मलै तप कीधां अवतारी उपजे शिव अंश ॥
हिन्दवा भांण राण कहवाड़े बड़ो विरद सीसोदां वंश ॥ ५ ॥
खाधो निमख उजेलो खत्रियां बाधो जनम मखोवो वाद ॥
शाम धरम राखो सिरदारां ए वातां रहसी जुग याद ॥ ६ ॥
लाखां तणां पटा मल लीधा तसलीमां कर जदी तदी ॥
हो जो निमख हरांम न हो जो बदन तजो सो करे बदी ॥ ७ ॥
जग पतजाम शाम सांचो जुग काचो भड़ां न कीजे कांम ॥
नाम फितूर कहैं जिणनैं नर राणां पणो न देशी रांम ॥ ८ ॥
अड पायतां अचल ऊबरसी सरसी बुध राखो सरदार ॥
अवचल राज भुगतसी अरसी करसी असल न्याव करतार ॥ ९ ॥

प्रधान अमरचन्दने गोला, बारूद, व नाज वगैरह सब सामान एकट्ठा करके, नीचे लिखे मोर्चोंपर सर्दारों व सिपाहियोंको तईनात किया :-

शहर पनाहके दक्षिणी दर्वाजे रमणापोलपर महाराज गुमानसिंह व नीबाहेड़ाका ठाकुर मेड़तिया राठौड़ हमीरसिंह और पांच सौ सिंधी सिपाही. एकलिंगगढ़से दक्षिण ताराबुर्जपर खैराबादका बाबा शक्तिसिंह भारतसिंहोत. एकलिंगगढ़पर महाराज बाघसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत, धायभाई कीका, सात सौ अरब मुसल्मान सिपाही व दुश्मन भंजन तोप. कृष्णपोल दर्वाजेके मोर्चेपर महाराजा अर्जुनसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत, और उनके मातहत जमादार उमर मए तीन हज़ार सिपाहियोंके. इन्द्रगढ़के महलेमें ५०० अरब सिपाही. शहर पनाहके अग्निकोण वाले बुर्जपर दो सौ सिंधी सिपाही महाराजा अर्जुनसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत. कमल्यापोल (१) पर सनाढ्य ब्राह्मण बड़वा अमरचन्द प्रधान

(१) इस दर्वाज़ेका नाम महाराणा सज्जनसिंहने उदयपोल रक्खा है.

मए पांच सौ अरब सिपाहियोंके. कृष्णगढ़के मर्हलेमें गाडरमालाका बाबा मुहब्बतसिंह और जमादार सिंधी कोली एक हज़ार राजपूत व सिपाहियों समेत. कमल्यापोलसे उत्तरी कोणके बुर्जपर दुश्मन भंजन तोपका मुहाफ़िज़ महुवाका बाबा सूरतसिंह रक्खा गया. सूरजपोल दर्वाज़ेपर कुराबड़का रावत् चूंडावत कृष्णावत अर्जुनसिंह केसरीसिंहोत, हमीरगढ़ वाला राणावत धीरतसिंह उम्मेदसिंहोत और कायस्थ सुन्दरनाथ जमइयत समेत तईनात किया गया. सूरजपोलके साम्हने सूरजगढ़के मर्हलेमें रूदका ठाकुर शक्तावत जवानसिंह गोकुलदासोत पांच सौ सिंधी सिपाहियों समेत. सूरजपोलके उत्तर घणबुर्जपर भूणावासका राणावत बाबा शिवसिंह. ईशान कोणके ज्वालामुखी बुर्जपर कायस्थ शम्भुनाथ शम्भुबाण तोप सहित (यह तोप इसी अह्लकारकी निगरानीमें तय्यार हुई थी). दिल्ली दर्वाज़ेके मोर्चेपर सलूंबरका रावत् भीमसिंह चूंडावत कृष्णावत, कायस्थ नाथ, नठाराका रावत् विजयसिंह चूंडावत कृष्णावत, सोलंखी पेमा, साह मौजीराम बोल्या महाजन और सिंधी जमादार लड़ाऊ मए तीन हज़ार सिंधी सिपाहियोंके. मर्हलह दिल्लीगढ़ अथवा सार्णेश्वरगढ़में सियाड़का ठाकुर शक्तावत सूरजमल्ल अपनी जमइयत व आठ सौ सिंधी सिपाहियों सहित. डंडपोलके मोर्चेपर बदनौरका ठाकुर मेड़तिया राठौड़ अक्षयसिंह मए अपने पुत्र ज्ञानसिंह व दो सौ राजपूतोंके. हाथीपोल दर्वाज़े पर रूपाहेलीका ठाकुर शिवसिंह अपने बेटे व पोते सहित, और छोटी रूपाहेलीका ठाकुर ज्ञानसिंह; और दोनों तरफ़की दीवारोंपर पांच सौ सिंधी सिपाही व मूंगाणाके ठाकुर का भाई, मेड़तिया वैरीशाल, जिसके साथ १४० सवार व चार सौ पैदल राजपूत थे, और ईंटालीका मेड़तिया रामसिंह राठौड़, ये कुल तीन हज़ारके क़रीब थे. हाथीपोलके साम्हने शम्शेरगढ़के मर्हलेमें लसाणीका ठाकुर चूंडावत जगावत गजसिंह अपनी जमइयत व दो सौ सिंधियों समेत. हाथीपोल व चांदपोलके बीचकी दीवारपर दो सौ सिंधी सिपाही. अंबावगढ़के मर्हलेमें पासबान गुहिलोत जोरा मए पांच सौ सिंधी सिपाहियोंके. ब्रह्मपोल दर्वाज़ेपर पासबान सोलंखी गजसिंह, पांचसौ सिंधी सिपाहियों सहित. चांदपोल दर्वाज़ेपर सनवाड़का राणावत बाबा शम्भुसिंह मए दो सौ सिंधी सिपाहियोंके. शिताबपोल दर्वाज़ेकी हिफ़ाज़तपर कारोई महाराज दौलतसिंह, और बावल्यासका महाराज अनोपसिंह. नावके कारखानहके मोर्चेपर चारण पन्ना आढ़ा मए पैंतीस बन्दूकचियोंके. और महलोंसे दक्षिण जलबुर्जके मोर्चेपर दौलतगढ़ ठाकुर चूंडावत सांगावत ईशरदास तईनात कियागया था. इस तरहपर मोर्चे बन्दी कीजाने बाद महाराणाने नीचे लिखे हुए सर्दार अपने पास रक्खे:-

दरसोड़ाका चावड़ा नाथसिंह, थांवलाका चहुवान नाथसिंह, बनेड़्याका चहुवान चत्रसिंह, कांसेड़ीका पुंवार सर्दारसिंह, महाराणाका मामा ध्रांगधराका झाला साहिबसिंह व उनका पुत्र सामन्तसिंह, पुरोहित नन्दराम, महता अगरचन्द, ज़नानी ड्योढ़ीका दारोगह महता लक्ष्मीचन्द, साह मोतीराम बोल्या अपने पुत्र एकलिंगदास समेत, भट्ट देवेश्वर, धवा दूसरा नगराज, धायभाई रूपा, धायभाई कीका, धायभाई हट्टू, धायभाई उदयराम, धायभाई रत्ना, धवा चतुर्भुज, धवा कुशला (ये दोनों शरूस कुंवर हमीरसिंह और भीमसिंहके धवा थे.) और कायस्थ प्रताप. इनके सिवा सिंधी और अरब सिपाहियोंके, जो अफ्सर जमादार महाराणाके पास रहे उनके नाम नीचे दर्ज कियेजाते हैं:-

जमादार फ़ीरोज़, जमादार लड़ाऊ, जमादार खगोट, जमादार मलंग, जमादार गुल हाला, जमादार चन्दर, जमादार जादू, जमादार वदयो, जमादार शेरबेग, जमादार खगोट दूसरा, जमादार अहमद, जमादार मुराद वग़ैरह.

अगर्चि अमरचन्द प्रधानने बहुतसा गल्ला एकट्ठा किया था, लेकिन् हज़ारहा आदमी लड़नेवाले राजपूत सिपाहियों, व शहरकी रिआया वग़ैरहके लिये वह काफ़ी न होसका. रसदकी यहांतक कमी हुई, कि कभी कभी फ़ाक़ह कशीकी नौबत पहुंचती थी, परन्तु बाघसिंहसे इस मौक़ेपर लोगोंको बड़ी मदद मिली. वह दिनमें एक ही वक्त खाना खाते थे, और उस वक्त नक्कारह बजाया जाता था, जिसकी आवाज़ सुनकर जो लोग आते, उन्हें खाना खिला देते. इस बातसे बाघसिंहकी बड़ी नामवरी हुई; और दुश्मन भंजन तोप, जो उसके क़ब्ज़हमें थी, उसके सबब शहर पनाहके दक्षिण तरफ़ ग़नीम लोग क़रीब नहीं आसके थे. मरहटोंने पचास ५०००० हज़ार रुपया भेजकर बाघसिंहको कहलाया, कि आप अपनी तोपको बन्द करें, हमारी फ़ौज कृष्णपोलसे हमलह करेगी. बाघसिंहने धोखा देकर रुपया ले लिया, और पश्चिमी पहाड़ोंकी तरफ़से गल्ला मंगाकर अपना काम चलाया. मगर जब शर्तके मुवाफ़िक़ माधवरावकी फ़ौज कृष्णपोलकी तरफ़ बढ़ी, तो पहाड़के निकट आनेपर उसने उनपर अपनी तोपका ऐसा वार किया; कि जिससे ग़नीमको बहुतसा नुक्सान उठानेके बाद महाराज बाघसिंहकी दग़ाबाज़ी समझकर पीछा हटना पड़ा.

छः महीने तक आपसमें लड़ाई होतीरही; आख़िरकार रावत् भीमसिंह व अर्जुनसिंहने माधवरावको कहलाया, कि आप बे फ़ायदह लड़ते हैं, अगर रत्नसिंहको राणा बनाकर मत्लब निकालना हो, तो उनसे रुपया तलब कीजिये, वर्नह हम देनेको तय्यार हैं. माधवरावने देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहके पुत्र राघवदेवसे रुपया तलब किया, तो उसने कहा, कि अभी तो हमारे पास नहीं है, उदयपुरमें क़ब्ज़ह होने बाद बन्दोबस्त करेंगे.

इसपर सेंधियाने गुस्से होकर कहा, कि हमारी फ़ौजको तन्ख़्वाह कहांसे दीजाये? यह सुनकर राघवदेव डरा, कि कहीं यह मुझे गिरिफ़्तार करके महाराणा अरिसिंहके सुपुर्द न करदे, और भागकर देवगढ़ चलागया. उस वक़ महाराणाकी तरफ़से रावत् अर्जुनसिंह सुलहका पैग़ाम लेकर माधवरावके पास भेजा गया, और सत्तर ७०००००० लाख रुपया देनेपर उसे राज़ी किया. लेकिन् माधवरावने शहरमें ग़ल्लेकी कमी होनेके सबब भीतरकी फ़ौजको घबराई हुई सुनकर सोचा, कि अगर इस हालतमें शहरकी लूट कीजायेगी, तो ज़ियादह फ़ायदह होगा. उसने अमरचन्द प्रधानको कहलाया, कि बीस लाख रुपया ज़ियादह देनेपर सुलह क़ाइम रह सक्ती है. अमरचन्दने गुस्सेमें आकर अह्दनामह फाड़ डाला, और सर्कारी कोठार व अह्लकारोंके घरोंमेंसे, जो नाज था, निकलवाकर बाज़ारमें और सिपाहियोंके पास भिजवा दिया; और कुल राजपूत व सिपाहियोंको बुलाकर उनकी तसल्ली की. मिर्ज़ा आदिलबेग वग़ैरह सिंधी सिपाहियोंने महाराणाके पास जाकर क़सम खाई, और अर्ज़ की, कि अब हम लोग आपसे तन्ख़्वाह न लेंगे; उदयपुर हमारा वतन है, जब तक ग़ल्ला मिलेगा, उसे खाकर लड़ेंगे, बाद उसके चौपायोंपर गुज़र करके दुश्मनको अपने हाथ दिखलावेंगे, और अख़ीरमें दुश्मनकी फ़ौजपर बहादुरीसे हमलह करके मरेंगे. इसी तरह राजपूत भी जवांमर्दी दिखलाकर महाराणाको तसल्ली देते थे. उन लोगोंके मुहब्बत आमेज़ कलाम सुनकर महाराणाकी आंखोंसे आंसू टपकने लगे; और राजपूत व सिपाहियोंने एक मत होकर मरहटी फ़ौजपर फिर गोलन्दाज़ी शुरू की.

इन बातोंकी ख़बर माधवरावको मिली, उसने कुछ अरसे बाद अपनी तरफ़से सुलहका पैग़ाम भेजा. जिसपर अमरचन्दने कहलाया, कि हमको ग़ल्ला व मेगज़िन (गोला बारूद) में, जो ज़ियादह ख़र्च हुआ, वह कम करनेपर सुलह होसक्ती है. लाचार सेंधियाको साठ लाख रुपया लेकर सुलह करनी पड़ी. और साढ़े तीन लाख रुपया दफ़्तर ख़र्च यानी अह्लकारोंकी रिश्वतके ठहरे, तब रुपया देनेकी शर्तें पूरी करनेका विचार हुआ. पच्चीस लाख रुपयेमें सोना, चांदी, जवाहिरात व नक़्द, और आठ लाख जागीरदारोंसे वुसूल करके दिया गया. बाक़ी रुपयोंके एवज़में जावद, नीमच, जीरण और मोरवण वग़ैरह पर्गने गिर्वी रक्खे गये, और यह शर्त की गई, कि महाराणाके अह्लकारोंकी शामिलातसे उक्त पर्गनोंकी आमदनी साल दर साल जमा होती रहेगी; और रुपया अदा होजानेके बाद उनकी आमदनी राज्य मेवाड़के शामिल कीजावेगी. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "इस तरह विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = ई० १७६९] में उदयपुरका मुहासरह ख़त्म हुआ, और ये उम्दह ज़िले मेवाड़की रियासतसे निकल गये; लेकिन् तुमको यह याद होगा, कि ये ज़िले सिर्फ़ गिर्वी

रक्खे गये थे. अगर्चि मुल्ककी तबाही और सल्तनतकी तनज़ुलीके सबब गिर्वीसे छूटना मुम्किन न हुआ, लेकिन् ताहम दावा उनपर बना रहा. अह्दनामह ईसवी १८१७ [हि० १२३२ = वि० १८७४] में राणाके एल्चियोंने उन ज़िलोंकी बहाली भी शर्तोंमें दाख़िल करानी चाही, क्योंकि सर्कार इंग्लिशियह उसवक़ उस मुल्कके गुज़श्तह हालातसे बिल्कुल वाक़िफ़ न थी, और सेंधियासे अंग्रेज़ी सर्कारको मुहब्बत थी; इसलिये सर्कार इंग्लिशियहने उस शर्तको मंज़ूर न किया, लेकिन् जबकि सर्कार इंग्लिशियह व सेंधियामें दुश्मनी होगई, और उन ज़िलोंके बचानेका मौक़ा हासिल हुआ, उस वक़ व सबब मस्लिहत, जिसका समझना मुश्किल है, वह हाथसे जाता रहा. उस मस्लिहतके बाबमें, जो उन ज़िलोंके लिये नुक्सानका बाइस हुई, तवारीख़ हिन्दके मुवर्रिख़ोंने नुक़्ह चीनी की है. सर्कार इंग्लिशियह ख़ुद इस बातको सोचे, कि उनको पचास साल तक रिहनसे न छुड़ाना, व शम्शेरके ज़ोरसे हासिल न करना, क्या उनके दावेको झूठा करता है ? ग़रज़ कि इस बातके सुबूतमें बहुतसी सनदें मौजूद हैं, और कोटा वाले ज़ालिमसिंह व लालाजी बलाल (पंडित) जो अब मरे हैं, दोनोंकी ज़बानी यह तस्दीक़के दरजेको पहुंची है. किसी न किसी दिन जब सर्कार इंग्लिशियह उन ज़िलोंको मेवाड़में दोबारह शामिल करना मुनासिब समझेगी, वह शहादतें काम आवेंगी."

इन पर्गनोंके गिर्वी रखनेके बाद एक अह्दनामह माधवराव सेंधिया और महाराणाके दर्मियान हुआ, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है :-

अह्दनामहकी नक्ल.

सिधिं श्री महारांणां श्री अरिसिघजी सूभ्रस्थांन उदैपुकी मामलत ठाहरी, सरकार सुबैदार श्री माघजी सीधें तीनु सरदाराकी मांमलतको करार तीकी कलम.

१- रतनसिंघजी मंदसौर रहै, त्यांनै जागीर रु ७५००० पीचत्र हजारकी देणी, राज पाछे राजको वारस कदाच मंदसौ न रहे नीकलजाय, तौ उणीको पच्य न होसी पटो न पावसी. राजको वारस नही, मंदसौर रहै, तो रावत भीमसीघजीको भाई बेटो उणां तीरे रेहे, और सरदार न रहै.

१- मेवाड मांहै जबतीका थांणां होय. जांकी उठत्री सरकार सूं देणी

१- बावल्या तथा बावल्याकी फोज मेवाडमै रहसी नही.

१- पटायत सलूक सु रहेसी, ज्यांकी मेर मरजाद आगां सु चाली आई ती

माफक राषणी पटो वहाल राषणो दगो फटको न करणो, कदाच परा जाय तो पटो षालसै करनो; स्रकार सु उणां को पष्थ न होसी, अर सरदार सलुक सु रहैसी. पंचां प्रमांणै बीराड देसी.

१– वेगुकी मामलतका रोक रुप्या आवसी सो हाल पचीस लाषका करामै मुजरा पड़सी.

१– दोय हजार फोज राज नषै रहसी, ज्यानै षरची मास ३ री संनद माफक दे अर कवज ल्यागा ती प्रमांणै मांमलतमै मुजरा पडसी. मास ३ उपरात राज फौज राषोगा, ज्याकी षरची राज दोगा, मांमलतमे मुजरा नही

१– मामलतको करार ठाहर्यो, ती परमांणो रुपेयांको फडछो कियां हजुरकी कुमक कीइ जासी

१– हजुरको वकील सरकारमे रहसी, तीकीमैर मरजाद सदामद प्रमांणे चलावणी.

१– रतनस्यंघजीकी त्रफ सरदार है ज्यांनै पटा सीवाय गाम तथा नवैसीर भोम कीवी होसी, सो छूडाय देणी.

१– मैवाडका देसमै जवती सरकारकी तथा वावल्यांरी तथा सदासिव गंगांधर तथा बैहरजी ताकपीररी हुई, तीको वसुल सांवंण वदि ३ मोरचा उठ्या पाछे आयो होय सौ रजु मुकावलासु ठाहरै, सो मांमलतमे भरे लेणो. राघोरामनै कुमक वास्तै ल्याया जानै रुप्या जवाहर तथा सोनो रुपो गेहणो वगैरेह दीयो, सौ हाल मांमलत ठाहरी, तीमे तथा वाकीमे तथा पटामै मुजरा न पड़सी

१– कुमलमेरका कीलासु रुपौ सौनौ जवाहर जीनस गेहणो रुप्या सरकारमै तथा वावल्याकै वा सदासिव गंगाधर वा बैहरजी ताकपीर ईनकी त्रफ मारफत साह वसंतपाल तथा मेघराज तथा श्रीपतीके आयौ होय, सो हाल मांमलत ठाहरी तीमै तथा वाकीमै तथा पटामै मुजरा नही.

१– जौ रुप्या सरकारमे आया, तीकी पोहच श्री मंतकी मौहर सू तीनु सरदाराकी हिसा रसीद होसी.

१– जोगी वगेरहै मेवाडरा देसमै रहै, फीतूर करै ज्यानै सरकाररी ताकीद करै काढे देणां.

जुमले कलम तेरह करार परमांणे ऐवजको ठेराव मांमलतको हुवौ सौ करारको लिखतं जुदौ छे ती परमांणें रुप्याको फडछो करांगा, हाल देवाको हापतौ वा कीसत बंदी परमांणे रुप्याको फडछौ हजुर सु हुवां सरकार सु करार माफक निभावणौ

विक्रमी १८२६ श्रावण कृष्ण ३ [हि० ११८३ ता० १७ रबीउ़लअव्वल = ई० १७६९ ता० २१ जुलाई] को माधवराव सेंधियाने अपनी फ़ौजके मोर्चे उठालिये, और मालवेकी तरफ़ रवानह हुआ. महाराणा प्रधान अमरचन्द और रावत् भीमसिंह व अर्जुनसिंहसे बहुत खुश हुए. और इन्आम इक्राम जागीर वग़ैरह देकर सबकी इ़ज़्ज़त बढ़ाई. सिन्धी सिपाहियोंके अफ्सर मिर्ज़ा आदिल-बेगको जागीर वग़ैरह इ़ज़्ज़त देकर बढ़ाया. इनके एक पर्वानेकी नक़्ल जो कर्नेल टॉडने अपनी किताबमें लिखी है, उसको हम भी यहां दर्ज करते हैं :-

श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु.　　　　श्री एकलिग प्रसादातु.

॥ स्वस्ति श्री उदैपुर सुथांने मेहाराजा धिराज महारांणा श्री अरसिहजी आदेशातु मीरजा अवदुल रहीमबेग आदलबेगोत कस्य

(खास दस्तख़त) प्रवाना मं लिष्यो सु सरब वातें सावत, मारा पगरो वंगा तो प्रवानाने लोपेगो नीं; ष सब धरमासु चाकरी करोगा होज.

१ अप्र मेवाड़रा दोय सीरदारा रतनसीघ नाम देने फीतुर करे बषेडो कीदो, दीषण्यांरी फोज आणे ऊदेपुर मोरछा लगाया, जणीमहे थे आछी रीतसु चाकरी पुगा, ने राज राष्यो, जणीं वावत मेहरवान व्हेने ईत्रो करे दीधो, सो थाहरा बेटा पोतां सुदी षाया जावोगा, ने दरबाररी वदगी करोगा, नें म्हांरा पगरो व्हेने कसर पाडेगा, जणीं हे श्री एकलिंगजीरी आण हे, चीतोड मारयारो पाप है

वीगत

। पटो रुपया २०००० दोय लाषरो, ने रुपया २५००० पचीस हजार रोक साल दरसाल, पटा महे रुपया १०००० दस हजाररी जायगा देवारी बारे बाकी कांठे.

। हवेली बाबा भारतसीघरी रेवाहे.

। वाडी वीगा १० दस

। गाम १ गीरवारो गाम मटुण.

। अजमेरीवेग राड महे काम आयो, जणीरी कवर नषे धरती वीगा १०० सराय वाडी सारु.

। वेठक मेर मरजाद सादडी प्रमांणे करे दीधी, ने नगरारो दुवो वडी पोल तांई एक डंको

विगत

। अमर वलेणो. पान दूजी मोताद सारी.

। दसरावारो सीरपाव सुतरी गाम आहेड सुदी.

। दुजी मेर मरजाद सलुंवर प्रमांणे करे दीधी, ने पीढ्या दरपीढ्या सलुंवरर घर ज्यु करे राष्या, सो पटा प्रमांणे जमीतथी बंदगी करोगा.

। भांजगड मेवाडरी तथा दीषण्यारी सारी रावत भीमसीघने थे भेला व्हे करोगा.

। थांहरो भाई तथा चाकर कोई छांडेने दरबार आवे, तों चाकर राषणो नही, तथा सीरदार भाई बेटा राषे नही.

। चमरी, करण्यो, हजुर री असवारी वीगर एकला व्हेगा, जठे राषवारो हुकम सो राषेगा.

। मनवरवेग, अनवरवेग, चमनवेगरे सामी बेठकरो हुकम, वलेणा घोडा

। सीरपाव, दसरावारो दुवो, ओर भाई बेटा दोय च्याररी बेठकरो हुकम, सो बेठवा सरीषो व्हेगो, सो बेठेगो.

। ऊकील सदामद रहे, जणीरी मेर मरजाद राषणी.

प्रवानगी साह मोतीराम बोल्या - संवत १८२६ व्षें भादवा सुदी ११ सोमे - (मीरजा अबदुलरहीमबेग आदलबेगोत कस्य) (१).

ये सिंधी जमादार बड़े बहादुर सिपाही थे, अगर ये लोग महाराणाके फ़र्मांबर्दार रहकर तन्ख्वाह देरसे मिलनेकी तक्लीफ़को गवारा करते, तो ज़ुरूर इन लोगोंका बड़ा गिरोह मेवाड़के सर्दारोंके मुवाफ़िक़ बड़ी बड़ी जागीरोंपर क़ाबिज़ होजाता, लेकिन् इन्होंने कम अक़्लीसे चन्द रोज़के बादही तन्ख्वाहके लिये महाराणाको उस हालतमें तंग किया, जिसवक़ कि रियासती ख़ज़ानह ख़ाली था. जब विक्रमी १८२६ आश्विन कृष्ण ९ [हि० ११८३ ता० २३ जमादियुल्अव्वल = ई० १७६९ ता० २४ सेप्टेम्बर] को उक्त महाराणाकी शादी कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंहकी बेटीसे हुई, तो उन्होंने कृष्णगढ़से वापस आते वक़ बहादुरसिंहसे कुछ रुपया बतौर मदद लिया, और उदयपुरमें आकर इन लोगोंकी चढ़ी हुई तन्ख्वाह चुका दी. इसी अ़रसहमें देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहका बेटा राघवदेव और भींडर महाराज मुह्कमसिंह वग़ैरह मुख़ालिफ़ सर्दार महापुरुष याने लड़ाई करने वाले गुसाईं फ़क़ीरोंको एकट्ठा करके मेवाड़को लूटनेके लिये रवानह हुए; और महाराणा अरिसिंहके तरफ़दार सर्दारोंको धमकियां देना व ख़ालिसहके गांवोंको लूटना शुरू किया. विक्रमी १८२६ माघ [हि० ११८३ शव्वाल = ई० १७७० जैन्युअरी] में महाराणा यह ख़बर मिलते ही सलूंबरके रावत् भीमसिंह, और कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह वग़ैरहको उदयपुरकी हिफ़ाज़तके लिये छोड़कर ख़ुद मए फ़ौज दुश्मनके मुक़ाबलेको रवानह हुए, और देलवाड़े होकर जीलोला गांवमें पहुंचे. मोकरूंदाके पास मुख़ालिफ़ फ़ौज भी लड़ाई को तय्यार थी, टोपलां गांवमें टोपल मगरीके पास मुक़ाबलह हुआ.

"भीमविलास" में महाराणा भीमसिंहके बयानके मुताबिक़ चारण कृष्णा आढ़ा लिखता है, कि मुख़ालिफ़ फ़ौजमें पन्द्रह हज़ार जोगियोंके सिवा राजपूतोंकी फ़ौजके तीन गिरोह बनाये गये, एकमें साह मेघराज देपुरा, दूसरेमें देवगढ़ रावत्का बेटा राघवदेव और तीसरेमें महाराज मुह्कमसिंह थे. महाराणाने भी अपनी फ़ौज नीचे लिखे मुवाफ़िक़ तय्यार की :-

हरावलमें महता अगरचन्दके साथ मांडलगढ़ और जहाज़पुर ज़िलेके जागीरदार भोमिया मीणा वग़ैरह सोलह सौ आदमियोंमेंसे पांच सौ सवार और ग्यारह सौ पैदल थे. बीचमें ख़ुद महाराणा घोड़ेपर सवार, जिनके पास नीचे लिखे हुए सर्दार व अह्लकार, पासवान वग़ैरह मए अपनी अपनी जमइयतोंके मौजूद थे :-

(१) इस ब्रेकेटके अन्दरकी पंक्ति अस्ल पर्वानेमें सरनामहपर है.

वीजोलियाका राव पुंवार शुभकरण, आमेटका रावत् चूंडावत जगावत प्रतापसिंह, कोठारियाका रावत् चहुवान फ़त्हसिंह, घाणेरावका ठाकुर राठौड़ मेड़तिया वीरमदेव, चाणोदका राठौड़ मेड़तिया विशनसिंह, नाडोलाईका राठौड़ मेड़तिया सूरजमल्ल, खोड़का राठौड़ मेड़तिया शेरसिंह, बसीका राठौड़ कूंपावत चतरसिंह, रूपाहेलीका राठौड़ मेड़तिया शिवसिंह, बदनौरके ठाकुर अक्षयसिंहका छोटा बेटा ज्ञानसिंह, महाराणाके काका अर्जुनसिंह, और काका गुमानसिंह, सनवाड़का बावा राणावत शंभुसिंह, खैराबादका बावा शक्तिसिंह भारतसिंहोत, महुवाका बावा सूरतसिंह, हमीरगढ़का राणावत रावत् धीरतसिंह, बनेड़ियाका चहुवान चत्रसिंह, थांवलाका चहुवान नाथसिंह, गाडरमालाका बावा पूरावत मुह्कमसिंह, दौलतगढ़का चूंडावत सांगावत ईशरदास, लसाणीका चूंडावत जगावत गजसिंह, जीलोलाका चूंडावत जगावत नाथसिंह, कोशीथल का चूंडावत जगावत उम्मेदसिंह, पीथावासका चूंडावत जगावत तख़्तसिंह, रूदका शक्तावत जवानसिंह गोकुलदासोत, सियाड़का शक्तावत सूरजमल्ल, चारण पन्ना आढ़ा, धवा नगराज, धायभाई कीका, प्रधान बड़वा अमरचन्द सनाढ्य और प्रधान कायस्थ जशवन्तराय वगैरह. महाराणाके दाहिनी तरफ़के गिरोहमें जमादार क़ासिमखां अरब, व जमादार आरब अमर मए पांच हज़ार अरब सिपाहियोंके था. महाराणाके बाईं तरफ़ उनके काका बाघसिंह, जमादार मलंग, जमादार लड़ाऊ, जमादार अब्दुर्रज़ाक़, जमादार गुलहाला, और जमादार कोली वगैरह अफ़्सर ८००० सवारों समेत थे.

पेश्तर तरफ़ैनसे तोप, बन्दूक़ जुज़रबा (शुतरनाल) बाण वगैरहकी लड़ाई शुरू हुई; थोड़ी देरके बाद महाराणाने बर्छा हाथमें लिया और " जय एकलिङ्ग " कहकर अपने चेटक नामी घोड़ेको आगे बढ़ाया. यह देखकर महाराज बाघसिंह और उनके हमराही सिंधी जमादारोंने अपने अपने घोड़ोंको एक दम मुख़ालिफ़ की फ़ौजपर जाडाला, और इसी तरह हरावलके बाईं तरफ़ वाले गिरोहने भी एक दम हमलह करदिया. ग़रज़ कि चार घड़ी तक बर्छा, तलवार और कटारियोंसे लड़ाई होती रही, आख़िरकार दुश्मन भाग निकले, और उनमेंसे बहुतसे लोग, जो वारमें आये मारे गये. बाक़ी सर्दारोंने भागकर अपने अपने ठिकानोंमें पनाह ली. महाराणा फ़त्हयाबीके साथ उदयपुर आये. इस लड़ाईसे रत्नसिंहकी बिल्कुल ताक़त कम होगई, और एक सालतक कुछ जुर्अत न हुई, लेकिन् महता सूरतसिंह, साह कुबेरचन्द अमरदार, और ख़ुशहाल देपुरा वगैरहने बेदलाके राव रामचन्दकी मिलावटसे दस हज़ार

जोगियोंको फिर एकट्ठा करके गंगार गांवमें जमाव किया, और चारों तरफ़ मुल्क लूटने लगे.

इस फ़ौजमें देवगढ़का राघवदेव व महाराज मुह्कमसिंह दोनों शरीक नहीं थे. यह ख़बर सुनकर महाराणा अरिसिंहने विक्रमी १८२८ (१) वैशाख [हि० ११८५ मुहर्रम = ई० १७७१ एप्रिल] में रावत् भीमसिंहको उदयपुरकी हिफ़ाज़त पर रखकर काका बाघसिंहको गोड़वाड़के सर्दारोंकी जमइयत समेत गोड़वाड़की तरफ़ भेजा, क्योंकि कुम्भलमेरसे रत्नसिंह उस ज़िलेपर क़ब्ज़ह करना चाहता था, और आप अपनी फ़ौज सहित रवानह होकर गंगारसे डेढ़ कोसपर जा जमे. मुख़ालिफ़ महापुरुषोंने लड़ाईकी तय्यारी की. उनकी फ़ौजमें जो बारह अफ़्सर याने महन्त थे, सब बाण, बन्दूक़, जुज़रबा, व चक्र वग़ैरह हथियारोंसे दुरुस्त होगये. महाराणाने भी अपनी फ़ौजको आरास्तह करके नीचे लिखी तर्तीबके मुवाफ़िक़ जमाया :- दाहिनी तरफ़ जमादार अरब, जमादार सिंधी कोली, और जमादार क़ासिमख़ां, मए चार हज़ार सिपाहियोंके. बाईं तरफ़ जमादार फ़ीरोज़, जमादार मलंग, अब्दुर्रज़ाक़, जमादार लड़ाऊ, और जमादार गुलहाला, सात हज़ार सवारों समेत. और बीचमें ख़ुद महाराणा और उनके साथ कुरावड़का रावत् चूंडावत कृष्णावत अर्जुनसिंह, कोठारियाका रावत् चहुवान फ़तहसिंह, बीझोलियाका पुंवार राव शुभकरण, बदनौरके ठाकुर अखेसिंहका बेटा गजसिंह, काका महाराज अर्जुनसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत, रूपाहेलीका मेड़तिया राठौड़ शिवसिंह, नींबाहेड़ाका मेड़तिया राठौड़ हरिसिंह, दिवालाका मेड़तिया राठौड़ ईसरोद ज़ालिमसिंह, ईंटालीका मेड़तिया राठौड़ रामदास, बराणीका मेड़तिया राठौड़ बैरीशाल, बाजोली ज़िले मारवाड़का मेड़तिया राठौड़ अखेसिंह, खैराबादका राणावत बाबा शक्तिसिंह, हमीरगढ़का राणावत रावत् धीरतसिंह, महुवाका राणावत बाबा सूरतसिंह, सनवाड़का राणावत बाबा शंभुसिंह, लसाणीका चूंडावत जगावत गजसिंह, दौलतगढ़का चूंडावत सांगावत ईशरदास, बनेड़ियाका चहुवान चत्रसाल, थांवलाका चहुवान नाथसिंह, रूद का शक्तावत जवानसिंह गोकुलदासोत, धवा नगराज, धायभाई कीका, धायभाई जोधा, महता अगरचन्द मए पांच सौ सवार व खैराड़के एक हज़ार पैदलोंके, चारण पन्ना आढ़ा, और जमादार क़ासिमख़ां वग़ैरह थे.

सूरज निकलनेसे पहिले काका महाराज अर्जुनसिंहने कहा, कि हम लोग मुख़ालिफ़ोंको साम्हने खड़ा देख रहे हैं, लड़ाईका हुक्म देना चाहिये. महाराणाने रावत्

(१) भीमविलासमें श्रावणादि संवत् १८२७ लिखा है, जो चैत्रादि हिसाबसे १८२८ हुआ.

अर्जुनसिंहको कहलाया, कि घोड़ा उठावे, क्योंकि हरावलमें लड़ना उसका दस्तूर था. चोबदारने जाकर उससे कहा. उसने जवाब दिया, कि थोड़ेसे सर्दारोंको अफ़ीम देनी बाक़ी है, सो देकर चढ़ते हैं; लेकिन् उसके राजपूतोंमेंसे एकने यह ताना मारा, कि हमारे मालिकोंसे महाराणा जल्दी करते हैं, आप घोड़ा क्यों नहीं उठाते; मेवाड़का राज्य उनको करना है. चोबदारने ज्योंका त्यों जा कहा, तब महाराणाने बर्छा हाथमें लेकर घोड़ा बढ़ाया. रावत् अर्जुनसिंहने अफ़ीम हाथमेंसे डालकर ऐसी फुर्ती की, कि अपने दस्तूरके मुवाफ़िक़ सबसे आगे पहुंचकर मुख़ालिफ़ोंपर एकदम जा गिरा. कुछ देरतक मुक़ाबलह होता रहा, जोगियोंके भी ख़ूब हथियार चले; लेकिन् राजपूतोंने उनको ग़ारत करदिया; बहुतसे मारेगये, और जो बाक़ी रहे, भाग निकले. उस वक़्का मारवाड़ी ज़बानमें यह दोहा मश्हूर हैः-

दोहा.

अड़सी सूं अड़िया जिके पड़िया करैं पुकार ॥
महापुरुषांकी मूंडकी गळगी गांव गंगार ॥ १ ॥

बहुतसे जोगियोंने गंगारके क़िलेमें पनाह ली, तब महाराणाकी फ़ौजने क़िलेपर गोलन्दाज़ी शुरू की. भीमविलासमें लिखा है, कि राव रामचन्दका बेटा देवीसिंह एक जतीसे विजय होम करा रहा था, तोपके गोलेसे उस जतीका सर उड़गया, तब घबराकर देवीसिंह महाराणाके पैरोंपर आ गिरा, और साह कुबेरचन्द देपुरा क़िलेमें पेशक़ब्ज़ खाकर मरा. अमरचन्द देपुरा वग़ैरह दूसरे लोग गिरिफ़्तार होकर आये, उनमेंसे अमरचन्दको महता अगरचन्दके सुपुर्द करके मांडलगढ़के क़िलेमें भेज दिया, जो वहीं क़ैदमें मरगया; और बाक़ी जोगियोंके सरगिरोह महन्तोंको छोड़दिया. उन लोगोंने क़सम खाई, कि हम आइन्दह कभी हुज़ूरके बख़िलाफ़ कोई कार्रवाई न करेंगे. इस लड़ाईमें महाराणाके काका महाराज अर्जुनसिंहके बदनमें तलवारके पन्द्रह ज़स्म लगे थे. फ़त्हके बाद महाराणा उदयपुर आये.

महाराणाने महता सूरतसिंहपर, जो रत्नसिंहकी तरफ़से चित्तौड़का क़िलेदार मुक़र्रर किया गया था, रावत् भीमसिंहको फ़ौज देकर भेजा. यह ख़बर सुनकर सूरतसिंह निकल भागा, और उक्त रावत्ने क़िलेपर क़ब्ज़ह कर लिया. इसी अरसहमें काका बाघसिंह भी गोड़वाड़में महाराणाका क़ब्ज़ह जमाकर वापस आया, और महाराणासे अर्ज़ की, कि वहां हमेशह फ़ौज रखनेसे क़ब्ज़ह क़ाइम रह सक्ता है, अगर फ़ौजी इन्तिज़ाम न किया जावेगा, तो रत्नसिंहकी तरफ़से हमेशह लूटमार होती रहेगी; और वह पर्गनह उसके क़ब्ज़हमें जानेसे

उसको किसी क़द्र ताक़त हो जायेगी. इसपर महाराणाने जोधपुरके राजा विजयसिंहको लिख भेजा, कि तुम अपनी तीन हज़ार फ़ौज नाथद्वारेमें रक्खो, और उसकी तन्ख्वाहके लिये गोड़वाड़का पर्गनह अपने क़ब्ज़हमें करलो; इस बारेके चन्द कागृज़ात, जो हमको मिले हैं, उनमेंसे एककी नक्ल नीचे दर्ज कीजाती हैः-

कागृज़की नक्ल.

॥ सीधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा लायक ठाकुरा श्री जसोतराजजी जोग, जोधपुरथी मुथा सरीच्दं ली॰ जुहार वाचसी; अठारा स्माचार भला हे, आपरा सदा भला चाहीजे, मा ऊपर परम सुल करावे अप्रच ॥ अठे गोडवाड तावे रावत उरजणसीगनु कागद आव्यो जणम्हे इसो जुवाब लीष्या आयो, गोडवाडरा सरदार तो श्री दीवाणजीम्हे रेहेसीं, न षालसो व्हेसी सो महाराजनु दीवीजेगो, ओ जुवाव लीष्यो आओ, जद ऊ कागद म्हाराजनुं मालुम कीनो, तीण ऊपरे म्हाराज ओ हुकम कीनो, ठीक हे, सीरदार श्री दीवाणजी राषे, तो भलाइ राषो; अर षालसो आपांनु देवे तो ठीक; पिण ऊतरी जमीअत तो न्ही रे, अर असवार २०० दोअेसे अर पालो ५०० पाचसे श्री दीवाणजी बदगीम्हे हाजर रैसी, ऊपर फ़ोजबदी होसी जण दीन असवार जमीअत हजार ३००० तीन आण सामल होसी. इण मुजब जमीअेत रेसी, ओ हुकम कीनो छे. (१) जिके नीसर जासी, अर उदेपुरका भाजगड वारे तरे तरेका वेम ऊठे, सो अठे तो वेम सरीको कींई हे न्ही; उठाका कामवाला वेम राषे सो थु साब (साफ़) लीषदीजे, सो कण वातनु वेम राषे नही, जेते श्री दीवाणजी आपरी जमीअत राषसी जेते तो गोडवाडरा पर (ग) णां म्हे अमल आपणो रेसी; जण दीन श्री दीवाणजी आपरी जमीअतनु सीष देवे, नराषे, जण दीण गोडवाडरा प (र) गणामे पाछो अमल श्री दीवाणजीनु करावे, सो जाणसी. वेम तो घडी घडीनु ऊठावणो नही, ने जुवाव ठेरावे पाछो लीषसी, सो अठाथी बगसी रामकरणनु मेला. बगसी रामकरणनु तो महाराज कदेकाई मेलीओ वे तो, पीण फेर रावतजीरा कागद इण मुजब लीषो आओ

(१) इस जगहसे कागृज़ फटजानेके सबब कुछ हुरूफ़ जाते रहे हैं.

जीएसु जेज हुई हे, सो पाछो जाव बेगो ल(ष)सी, जेज नही करसी. सं। १८२७ पोस सुद १३.

जबतक कि रत्नसिंह कुम्भलमेरके क़िलेसे न निकला, महाराजाने इस बातको ग़नीमत जानकर नाथद्वारे (१) फ़ौज भेजदी, और गोड़वाड़ अपने क़ब्ज़हमें करलिया; लेकिन् रत्नसिंह को कुम्भलमेरसे निकालनेमें हीला हवाला होता रहा. इसपर महाराणाने पर्गनह गोड़वाड़ छोड़ देनेके लिये महाराजाको लिखा, परन्तु इसकी बाबत भी वहांसे टाला टूलीका जवाब आया. विक्रमी १८२८ माघ [हि० ११८५ ज़िल्क़ाद = ई० १७७२ फ़ेब्रुअरी] में जोधपुरके महाराजा विजयसिंह, बीकानेरके महाराजा गजसिंह और कृष्णगढ़के महाराजा बहादुरसिंह, तीनों नाथद्वारे आये; और विक्रमी चैत्र कृष्ण १३ [हि० ता० २७ ज़िल्हिज = ई० ता० १ एप्रिल] को महाराणा भी वहां पहुंचे. पेश्वाई वग़ैरह रस्में दस्तूरके मुवाफ़िक़ अदा हुईं, और आपसमें दोस्तानह बर्ताव रहा. महाराजा गजसिंहने गोड़वाड़ वग़ैरह पर्गनह छोड़ देनेके बारेमें महाराजा विजयसिंहको बहुत कुछ समझाया, मगर उनके दिलपर गजसिंहके समझानेका कुछ भी असर न हुआ, सिर्फ़ ऊपरी दिलसे इक़ार करते रहे. तब गजसिंहने विजयसिंहको उनके गुरुके हुक्मका पाबन्द होनेके सबब सबको मन्दिरमें एकट्ठा करके गुसाईंकी ज़बानी कहलाया. चूंकि वह गुसांईका कहा मानता था, लाचारीसे उसके कहनेपर अमल करनेका इक़ार किया; और अपने साथी सर्दारोंसे कहा, कि गुरुकी आज्ञासे अब गोड़वाड़ छोड़नी पड़ी. मगर आउवा और खींवसरके ठाकुरोंने बीकानेरके महाराजासे कहा, कि विजयसिंह हमारे सिरोंका मालिक है, मुल्कका मुख़्तार नहीं है; यह पर्गनह हम हर्गिज़ न छोड़ेंगे. इसपर महाराणा अरिसिंहने गुस्से होकर कहा, कि कुछ मुज़ायक़ह नहीं; यह पर्गनह तुम्हारे पास किसी तरह नहीं रह सक्ता; बल्कि पाली और सोजत दोनों व्याजमें लिये जायेंगे. महाराजा गजसिंहने तक़ार बढ़ती देखकर दोनों सर्दारोंको धमकाया, और मीठी बातोंसे महाराणाका गुस्सह दूर किया; लेकिन् इस मुलाक़ातका कुछ नेक नतीजह न निकला. महाराणा वहांसे रवानह होकर उदयपुरमें आये, और दूसरे राजा अपनी अपनी रियासतोंको सिधारे. इस

---

(१) नाथद्वारेमें लालबाग़के क़रीब, जहां मारवाड़की फ़ौज रहती थी, वह जगह अबतक फ़ौजके नामसे मश्हूर है, और उस फ़ौजका मुसाहिब, जो एक सिंघी महाजन था, उसकी औलाद अबतक नाथद्वारेमें मौजूद है.

बारेमें महाराणा भीमसिंह व जवानसिंहके नाम भी कई तह्रीरें हुई, जिनकी नक्लें इसी जगह दर्ज कीजाती हैं:-

॥ श्रीरामजी १

॥ स्वस्ति श्री म्हाराजा धीराज माहाराणाजी श्री भीवसीघजी जोग, राज राजेसुवर माहाराजा धीराज माहाराज श्री मानसीघजी लीषावता मुजरो वांचजो; अठारा समाचार भला हे, आपरा सदा भला चाईजे; सदा हेत इकलास रषावे हे, तीसु वसेक रषावसी, अप्रंच ॥ अठे पाच सीरदार घोडा हे, सु आपराहीज जाणसी. हमार अठे काम पड़ीओ हे, सु ईए बातने बीचारणरी सला हे, सु हमे आपने आबाजीरी फोजरो कुच कराअे सताब गाटे ऊत्रसी; ने अठीसु म्हे आपसु आअे सामल हुसा, ने गोरवाड़ आपनु ले देस्या; अे माहारा वचन हे. आप मासु और त्रे न जाणो, तो मेड़ी ओर त्रे जाणा, तो आपने मा वीचे ईस्टदेव हे. ईणमे दुत्रफो फाअेदो हे, ने जेज करण जु न हे, सु गणी वेगी सला वीचारसी. स्वत १८५४ रा वेसाष बीद १ वार रवी मुकाम गढ जालोर.

॥ श्री परमेस्वरजी सायछे.

॥ स्वसती श्री ऊदेपुर सुथाने स्रब ओपमा वीराजमान म्हाराज धीराज म्हाराणा श्री भीमसीघजी जोग्य, जोधपुरथी म्हाराजा धीराज म्हाराज श्री धोकलसीघजी लीषावत जुहार बाचसी; अठारा स्माचार श्री जीरा तेज प्रतावसु भला छे, राजरा सदा भला चाहीजे, राज बड्डा छो, ठाकुर छो; सदा हेत ईकलास राषो छो, तीणसु वीसेस रषावसो, दुजायगी कणी बातरी न जाणसो, अप्रच ॥ गोढवाड्मे आगे म्हाराजाजी श्री वीजेसीघजी अमल कीअ्रे थो, सु म्हे पाछी मामाजी श्री जगतसीघजी आगे राजरी नीजर कीवी हे, सु हमे गोढवाड्मे राजरो अमल करावसो, अठारो दुसमण सु राजरो दुसमण, ने ऊठारो दुसमण सु म्हारो दुसमण, ने राजरो सेण सु म्हारो सेण; अठा ऊठारो ऐक राह जाणसो; ईणमे कदेई तफावत नपड्सी, श्री हीगलाजजी बीचे छे. संवत् १८६३ रा मीती बेसाष बीद ९ सुकरवार, मुकाम जोधपुर बारला डेरा.

इस बारेमें और भी बहुतसे अस्ल काग़ज़ मौजूद हैं, परन्तु विस्तारके ख़यालसे उनकी नक़्लें नहीं लिखीं; और इस मुआमलेकी बाबत कर्नेल टॉडने अपनी किताबमें जो हाल लिखा है, उसका तर्जमह टॉड राजस्थानकी जिल्द १ प्रकरण १६ के पृष्ठ ४६ से यहांपर दर्ज कियाजाता है:-

"गोड़वाड़का पर्गनह बहुत अच्छा ज़रखेज़ है, जिसमें राठौड़, सोलंखी और राणावतोंकी जागीरें हैं, जो महाराणा साहिबको पैदलोंके सिवा ३००० सवार नौकरीमें देते थे; वह तमाम चूंडावतोंसे ज़ियादह हैं. जोधपुरके आबाद होनेसे पहिले मंडोवरके परिहार राजपूतोंसे राणाईके ख़िताब सहित यह ज़िला हासिल किया गया, जिसकी उत्तरी हद्द चूंडावतोंके खूनसे क़ाइम की थी. वह पर्गनह राणाने राजा विजयसिंहको इस मत्लबसे दिया, कि कुम्भलगढ़में रहनेवाले झूंठे दावेदारके क़ब्ज़ेमें न आवे. अस्ली अह्दनामह अबतक मौजूद है, जिसमें मारवाड़का राजा इक्रार करता है, कि इस जागीरके एवज़ ३००० आदमी राणाकी नौकरीमें दिये जाएंगे. यह पर्गनह पीछा आजाता, लेकिन् राणा अरसीकी कम अक़्ली उसको अहेड़ाके शिकारके लिये हाड़ाके साथ बूंदीकी तरफ़ लेगई."

महाराणाने सोचा, कि अभी जोधपुरसे लड़ाई करना ठीक नहीं, क्योंकि रत्नसिंह उनसे दबा हुआ है; मुनासिब है, कि अव्वल मेवाड़के मुख़ालिफ़ सर्दारोंको सीधा करलें, बाद उसके गोड़वाड़पर क़ब्ज़ह किया जावे. इसलिये उन्होंने पहिले भींडरके ठिकानेको ख़ालिसहमें दाख़िल किया, लेकिन् कुछ अरसह बाद महाराज मुह्कमसिंहको देदिया. इसके बाद बहुत कुछ फ़ौज साथ लेकर महाराणा उदयपुरसे रवानह हुए; और चूंकि आठूंणके जागीरदार बाबा गुमानसिंह पूरावतसे महाराणाकी गद्दीनशीनीसे पहिलेकी अ़दावत थी, इस वास्ते आठूंणके क़िलेको जा घेरा. बाबा गुमानसिंहने भी मरनेका इरादह करलिया, और थोड़ेसे आदमियों समेत क़िलेसे बाहर निकल आया. महाराणाने अपनी फ़ौजको हुक्म दिया, कि उसे ज़िन्दह गिरिफ़्तार करले, लेकिन् उसने क़िलेसे बाहर आनेके वक़्त रूईदार अंगरखे व पाजामेको तेलसे तर करके पहिन लिया; और आग लगाकर नंगी तलवारसे फ़ौजके आदमियोंपर वार करने लगा. यह हाल सुनकर महाराणाने भी उसपर वार करनेका हुक्म दिया, और फ़र्माया, कि अगर वह ज़िन्दह हाथ आता, तो मैं उसकी ज़रूर बे इ़ज़्ज़ती करता, लेकिन् उसकी बहादुरीके सबब मैंने उसके बेटे दौलतसिंहको आठूंणका ठिकाना वापस दिया; और उपरेड़ाके क़िलेको बर्बाद करके जागीरदारको निकाल दिया.

इसके बाद जब कि बरसलियावासमें महाराणा मुक़ीम थे, ख़बर मिली, कि देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहने, जो जयपुरमें था, शिमरू फ़्रेंचमैनको रुपया देना

ठहराकर अपने छोटे बेटे स्वरूपसिंहके साथ मेवाड़की बर्बादीके लिये भेजा है; और वह पांच हज़ार जर्रार फ़ौज व तोपख़ानह समेत अजमेर ज़िलेके देवलिया गांवमें आ पहुंचा है. महाराणाने उसी वक्त नक़ारेका हुक्म दिया, इसपर रावत् अर्जुनसिंहने कहा, कि अभी आधी रात है, हम सबको इस वक्त रवानह करदेवें, और आप फ़ज्रको सवार होकर तश्रीफ़ लावें. महाराणाने उक्त रावतके साथ जमादार मलंग, जमादार फ़ीरोज़, जमादार अब्दुर्रज़ाक़, जमादार लड़ाऊ, जमादार गुलहाला, जमादार कोली, जमादार जुम्मा, और कोशीथलके चूंडावत जगावत उम्मेदसिंहको अपनी अपनी जमइयतों सहित रवानह किया; और आप भी कुछ रात बाक़ी रहे सवार होगये.

जब खारी नदीके इस किनारेपर रावत् अर्जुनसिंह पहुंचा, तो शिमरूने भी दूसरे किनारे पर अपना तोपख़ानह जमाया; और दोनों तरफ़से गोलन्दाज़ी शुरू होगई. महाराणा भी थोड़ी देर बाद अपनी फ़ौजके शामिल होगये. इस वक्त कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंह, जो शिमरूके दोस्त और महाराणाके ससुर थे, आपहुंचे. इन्होंने शिमरूसे कहा, कि तुम किसके कहनेसे यहां चले आये ? यदि महाराणासे वाक़िई मुक़ाबलह हुआ, तो फ़ौज सहित मारे जाओगे; और महाराणासे कहा, कि शिमरूके पास बहुत बड़ा तोपख़ानह है, अगर आपकी फ़त्ह हुई, तो भी अच्छे अच्छे हज़ारों राजपूत मारे जावेंगे. ग़रज़ महाराजाने दोनोंको समझा बुझाकर आपसमें सुलह करवादी, और शिमरूने महाराणाके पास अकेले हाज़िर होकर एक जोड़ी पिस्तौल, एक तलवार और एक घोड़ा उनके नज़ किया; महाराणाने भी उसे ख़िल्अ़त व घोड़ा देकर बिदा किया. उस फ़ान्सीस बहादुरने जशवन्तसिंहके बेटे स्वरूपसिंहसे कहा, कि तुमने मुझे धोखा दिया, कि महाराणा उदयपुरसे बाहर नहीं निकलते, और मेवाड़के कुल सर्दार हमारे मददगार हैं. हमारे दो क़दम भी मेवाड़में न पड़े, कि महाराणा बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ ख़ुद मुक़ाबलहको आगये; ऐसे बहादुर राजाका मुल्क कौन लेसक्ता है !

महाराणाने वहांसे रवानह होकर अमरगढ़के क़िलेको जा घेरा. बूंदीके रावराजा उम्मेदसिंहने राज तर्क करके अपने बेटे अजीतसिंहको रावराजा बना दिया था. वह नौ जवान जवानीके नशेमें चूर था, मेवाड़के बदख़्वाह सर्दारोंके बहकानेमें आगया. लोग कहते हैं, कि उसको ऐसी शर्मिन्दगीकी बात कहलाई, जिससे उसने अपनी जानका भी ख़ौफ़ छोड़ दिया, और दिलमें दग़ाबाज़ी ठानकर महाराणाकी मुलाक़ातको आया. बूंदीकी तवारीख़ वंशप्रकाशमें इस दग़ाबाज़ीका हाल इस तरहपर लिखा है:- सकरगढ़ इलाक़ह मेवाड़के फ़सादी लोग इलाक़ह बूंदीको बर्बाद करते थे, इस वास्ते अजीतसिंहने सकरगढ़पर क़ब्ज़ह कर लिया,

और महाराणासे मिलकर कुछ एवज़में देने बाद वह गांव अपने क़ब्ज़हमें रखना चाहा; लेकिन् महाराणाने न माना, तो गुस्सेकी हालतमें उसने उनको मारा. कर्नेल टॉडने उस ज़मानहमें मौजूद होने वाले तरफ़ैनके आदमियोंकी ज़बानी सुनकर यह लिखा है :-

"कि सर्दार बूंदीको सरहदके झगड़ेमें एक टुकड़े ज़मीनकी बाबत, जिसमें चन्द आमके दरख़्त थे, कुछ बहाना हाथ लग गया; लेकिन् यह बहाना भी उस कामकी बे इन्साफ़ीको, जिसके पूरा करनेमें उससे बुज़ दिलापन अलावह उसकी वह्शतके ज़ुहूरमें आया, कम नहीं करता है. उसके बुज़ दिलेपन और उसकी वह्शतको देखो, कि जब वह राणाके साथ सूअरका शिकार कर रहा था, उसने राणाकी छातीमें बर्छी मारी, और इस तरह उसका काम तमाम किया. यह हर-कत करके क़ातिल बड़ा शर्मिन्दह हुआ. इस नालाइक़ कामके होनेसे लोग उससे नफ़रत करने लगे, उसके बाप और तमाम हाड़ा क़ौमने उसको बड़ी लानत मलामत की."

मेवाड़में बाज़ बाज़ लोग, जिन्होंने इस मुआमलेको देखने वालोंकी ज़बानी सुना है, अबतक मौजूद हैं; वे इस तरह बयान करते हैं- कि अजीतसिंह महाराणाकी मुलाक़ातको आये, महाराणाने मुहब्बतके साथ उनकी ख़ातिर की. और यह भी सुना गया है, कि अजीतसिंहके पिता उम्मेदसिंहने, जो बूंदीसे कुछ फ़ासिलेपर फ़क़ीरी हालतमें रहता था, महाराणाको एक काग़ज़ इस मत्लबसे लिख भेजा, कि आप मेरे लड़केका हर्गिज़ एतिबार न करें; लेकिन् वह काग़ज़ महाराणाकी फ़ौजमें मुख़ालिफ़ोंने दबालिया. अमरगढ़के रावत् जवानसिंहकी ज़बानी, जो अस्सी वर्षसे ज़ियादह उम्रमें अभी तक ज़िन्दह है, इस ग्रन्थकर्ता (कविराजा श्यामलदास) ने सुना है, कि मेरे दादाको इस दग़ाबाज़ीका हाल मालूम होगया, तब उन्होंने एक अर्ज़ी महाराणाके नाम लिख भेजी, कि हमको तो आप बेशक क़त्ल कीजिये, परन्तु आप अपनी हिफ़ाज़त अच्छी तरह करलें, अजीतसिंह आपको मारनेके लिये आया है; मगर महाराणाने कुछ ख़याल न किया; और उस अर्ज़ीको फाड़कर कहा, कि अब मरनेके ख़ौफ़से ख़ैरख़्वाह बनना चाहता है. लोगोंका बयान है, कि बक़रईदके मौक़ेपर शुक्रवारके दिन तमाम सिंधी जमादार अपनी दावतमें चले गये, विक्रमी १८२९ चैत्र कृष्ण १ [हि० ११८७ ता० १४ ज़िल्हिज = ई० १७७३ ता० ९ मार्च] को यह मौक़ा ग़नीमत जानकर अजीतसिंह महाराणाके डेरेमें आया, और कहने लगा, कि मैं जंगलमें एक ख़रगोश (१) देख आया हूं; आप चलें, तो घोड़े

(१) कर्नेल टॉडने सूअर लिखा है.

पर सवार होकर बर्छेसे उसका शिकार करें. महाराणा बे सोचे विचारे एक छोटे घोड़ेपर सवार होकर उनके साथ होलिये. महाराणाके हम्राही लोग, जो क़रीब दो सौ के वहां मौजूद थे, साथ चलनेको तय्यार हुए; मगर अजीतसिंहने उनको यह कहकर रोक दिया, कि ज़ियादह हुजूमसे ख़र्गोश भाग जावेगा; इसलिये सिर्फ़ तीन सर्दार और चौथा चारण पन्ना साथ आये. सनवाड़का बाबा शंभुसिंह, बावलासका बाबा दौलतसिंह, उसका छोटा भाई अनूपसिंह और चारण आढ़ा पन्ना, मना करनेपर भी साथ गये, और इनके अलावह दस बीस आदमी छड़ीबर्दार, हरकारे, जलेबदार वग़ैरह हम्राह थे.

फ़ौजसे बहुत दूर निकल जाने बाद राव राजाने चारण आढ़ा पन्नासे कहा, कि मैं तुम्हारे घोड़ेकी खुरी (दौड़) देखना चाहता हूं. इसके जवाबमें उसने कहा, कि यहां दोनों बाजू और साम्हनेको पत्थर बहुत हैं. तब महाराणाने तेज़ होकर कहा, कि फ़ौजकी तरफ़ साफ़ रास्तह है, राव राजाको क्यों नहीं खुरी दिखलाता. उसने अपने घोड़ेको ललकारकर चाबुक मारा, और तुन्द किया; अब महाराणाके पास तीन ही सर्दार रहगये. इस समय मौक़ा पाकर अजीतसिंहने महाराणाकी छातीमें बर्छा मारा, और उनके साथ, जो चार पांच सर्दार थे, उन्होंने भी उसी दम महाराणाके तीनों सर्दारोंपर वार किया. रूपा नामी एक छड़ीदारने राव राजाके सिरमें ऐसे ज़ोरसे छड़ी मारी, कि वह मूर्छित होकर ज़ीनपर झुक गया, और उसके साथके सर्दार भाग निकले. राव राजाका घोड़ा भी अपने बेहोश सवारको लिये हुए भागा. बूंदी वाले अपनी तवारीख़में राव-राजाके हाथपर छड़ी लगना क़बूल करते हैं; लेकिन् हमने रूपा छड़ीदारके बेटे दलसिंह से जैसा सुना, लिखा है. वृद्ध जन यह भी कहते हैं, कि उसी छड़ीके सद्मेसे छः महीने बाद राव राजा मरगये, और बूंदी वाले शीतलाकी बीमारीसे उनका मरना बयान करते हैं. ग़रज़ कि ऊपर लिखी मितीको तीसरे पहर यह मारिका हुआ. महाराणा मए बाबा दौलतसिंह व शंभुसिंहके मारे गये, और बाबा अनूपसिंह सख़्त ज़ख़्मी होकर ज़िन्दह रहा, जो बावलासका मालिक हुआ.

दूसरे दिन महाराणाका दाह कर्म किया गया, उनके साथ मनभावन पासवान सती हुई. यह दग्ध स्थान अमरगढ़के नज़्दीक अबतक मौजूद है. बाबा दौलत-सिंह व शंभुसिंह भी महाराणाकी चिताके क़रीब ही जलाये गये. अजीतसिंह तो जान लेकर भागा, और मेवाड़की फ़ौजने उसी वक़्त उनका अस्बाब व तोप-ख़ानह लूट लिया (१). उदयपुर ख़बर आनेपर महाराणी राठौड़ व पासवान

---

(१) ऐसा भी सुना है, कि चन्द तोपें बूंदीकी अमरगढ़ वालोंके हाथ लगीं, जो वहांके क़िलेमें मौजूद हैं.

सज्जनराय, कमलराय और व्रजकुंवरराय सती हुईं, और एक महाराणी भटियाणी, जो अपने पीहर मोहीमें थी, वहीं सती हुई. फ़ौजके मुसाहिबोंमें सलाह हुई, कि बूंदीपर घेरा डालकर बदला लिया जावे, लेकिन् कई मुसाहिबोंने, जो महाराणाकी क्रूरतासे नाराज़ थे, कहा, कि कुम्भलमेरमें रत्नसिंह मौजूद है, वह महाराणाके कुंवर हमीरसिंह व भीमसिंहको बालक जानकर उदयपुरमें क़ब्ज़ह करलेगा. इस नाक़िस सलाहसे कुल फ़ौज उदयपुर चली आई. इन महाराणाके दो कुंवर बड़े हमीरसिंह व छोटे भीमसिंहके सिवा दो राजकुमारी थीं, बड़ी चन्द्रकुंवर, जिसका जन्म विक्रमी १८२० श्रावण शुक्ल १३ रविवार [हि० ११७७ ता० १२ सफ़र = .ई० १७६३ ता० २२ ऑगस्ट] को हुआ, और दूसरी अनूपकुंवर, जो विक्रमी १८२१ फाल्गुन् शुक्ल २ गुरुवार [हि० ११७८ ता० १ रमज़ान = .ई० १७६५ ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को पैदा हुई. ख़वासके पुत्र १ गोपालदास, २ देवीदास, ३ भगवानदास, ४ मनोहरदास, ५ चैनदास, ६ मोहनदास और ७ जवानदास थे; पासवानोंकी कन्या १ पेमवतां, २ फूलवतां, ३ चद्रमतां, ४ इन्द्रमतां और ५ सूरजमतां हुईं.

इन महाराणाकी महाराणियों व ख़वासोंके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

१- महाराणी झाली सर्दारकुंवर, गोगूंदाके राज कान्हसिंहकी बेटी (१); २- महाराणी देवड़ी अमृतकुंवर, नाथसिंहकी बेटी; ३- महाराणी राठौड़ सर्दारकुंवर, रतलामके राजा पृथ्वीसिंहकी बेटी; ४- महाराणी राठौड़ ईडरेची गेंदकुंवर, भोपतसिंहकी बेटी; ५- महाराणी राठौड़ छप्पनी सरसकुंवर, चन्द्रसेनकी बेटी; ६- महाराणी सोलंखणी कुंवरांबाई, वीरपुरा अभयसिंहकी बेटी; ७- महाराणी भटियाणी गुमानकुंवर, मोहींके जागीरदार पृथ्वीसिंहकी बेटी; और ८- महाराणी चहुवान राधाकुंवर, उदयभानकी बेटी.

१- ख़वास गुलाबराय, २- ख़वास रूपराय, ३- ख़वास कुशालराय, ४- ख़वास देवड़ी, ५- ख़वास मनभावन, ६- ख़वास गणेशराय, ७- ख़वास सज्जनराय, ८- ख़वास सुखवालेसी, ९- ख़वास कमलराय, १०- ख़वास चैनकुंवरराय, ११- ख़वास व्रजकुंवरराय, और १२- ख़वास पेमराय थी.

---

(१) बड़वा भाटोंने महाराणा राजसिंहकी महाराणी झालीको राज जशवन्तसिंहकी बेटी और कान्हसिंहकी पोती गुलाबकुंवर लिखा है, और गोगूंदासे हमारे पास जो ख्यात आई, उसमें महाराणा अरिसिंहकी जिसके साथ शादी हुई, उसको राज कान्हसिंहकी बेटी, सर्दारकुंवर, और जिसके साथ महाराणा राजसिंहकी शादी हुई, उसको भी राज कान्हसिंहकी बेटी सरसकुंवर लिखी है; मश्हूर भी यही है; लेकिन् हमको इस इख़्तिलाफ़के मिटानेके लिये तीसरा कोई मज़्बूत सुबूत नहीं मिला.

इन महाराणाका मझोला क़द, गेहुवां रंग, पतला और भरा हुआ बदन था. यह ईर्षा, गुस्सह, ज़िद व खुद पसन्दी रखनेके सिवा कानके कच्चे, लेकिन् अव्वल दरजेके बहादुर, मिह्नती, घोड़ेकी सवारी और शस्त्र विद्यामें प्रवीण और फ़य्याज़ थे. इनके पास खैर-ख्वाह आदमी भी मौजूद थे, लेकिन् बे क़द्री व शक्किया मिज़ाजीसे वे लोग दिलशिकस्तह होकर अपने अपने घरोंमें बैठ रहे, जिससे रियासतको नुक्सानके साथ बहुत बड़ा सद्मह उठाना पड़ा.

मरहटोंकी तवारीख़.
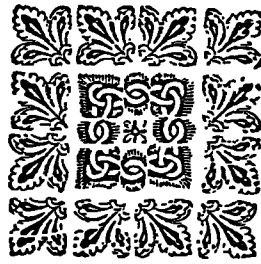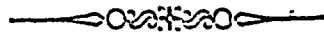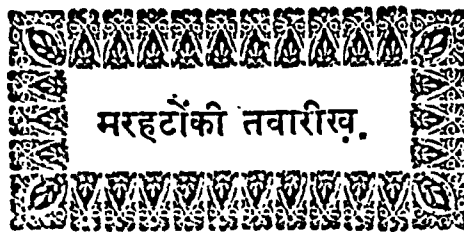
इस क़ौमका बयान बहुतसे फ़ार्सी तवारीख़ वालों और ग्रैंटडफ़ वग़ैरह अंग्रेज़ी मुवर्रिख़ोंने किया है, लेकिन् हम यहांपर बहुतसी ग़ैर ज़ुरूरी तवालतको छोड़कर उनका मुख़्तसर अह्वाल पाठकोंकी वाक़िफ़ियतके लिये लिखते हैं; जो कि महाराणा अरिसिंह ३ के समय इन लोगोंसे बड़े बड़े मारिके पेश आये थे, इसलिये उक्त महाराणाके हालमें ही इनका भी ज़िक्र करना मुनासिब समझा.

शुरूमें यह लोग दक्षिणी हिन्दुस्तानमें क़ियाम रखते थे, लेकिन् कुछ अरसह बाद बढ़ते बढ़ते बंगाला, पंजाब और हिन्दुस्तानके उत्तरी भागमें हिमालय तक फैल गये, और ऐसा रोब जमाया, कि अगर इन्होंने मुल्कपर बादशाहत करनेका ढंग डाला होता, तो इनको कुल हिन्दुस्तानका बादशाह बननेमें कोई रोक टोक न थी; परन्तु उनमें अक्सर लुटेरापनकी आदतें थीं, इस कारण बर्साती पानीके तौर, जिस तरह एक दम फैले, उसी तरह उतर गये; अब उनके नौकरोंमेंसे बड़ौदा, ग्वालियर, इन्दौर, धार और देवास वग़ैरह रियासतोंपर इस वक्त क़ाबिज़ रहे हैं. इस गिरोहके अस्ली मालिक सितारा व नागपुर वालोंमेंसे ग़ारत होकर कोल्हापुर, सावन्तवाड़ी व तंजावर वग़ैरह अभी नाम व निशानके लिये मौजूद हैं. अस्लमें मरहटोंके सरगिरोह सीसोदिया राजपूत गिनेजाते हैं, जिनके मेवाड़से जुदा होनेकी तवारीख़ सहीह सहीह लिखना मुश्किल है. ख़फ़ीख़ां अपनी तवारीख़ मुन्तख़बुल्लुबाबमें इनको चित्तौड़के राजाओंकी शाख़ बयान करके पैवन्दी ख़ानदान लिखता है; और मुहम्मद ग़ुलाम हुसैनने भी अपनी बनाई हुई किताब सैरुल्मुतअख़्ख़िरीन में ख़फ़ीख़ांके मुवाफ़िक़ बयान किया है; ग्रैंटडफ़ साहिब अपनी किताबमें पुराना हाल छोड़कर मालूजी, शाहजी घोंसलासे उनका तारीख़ी हाल लिखना शुरू करते हैं; मगर पुराने नसबनामहका किसीसे पूरा पूरा ठीक पता न मिलनेके सबब हम एक कुर्सी नामह सिताराके मोतबर पंडित शिवानन्द शास्त्रीका लिखाया हुआ, जो वहांके आख़िरी राजा प्रतापसिंह छत्रपतिका भेजा हुआ उदयपुर आया था, और जो हमको पुरोहित पद्मनाथने दिया, उसकी नक़्ल नीचे दर्ज करते हैं:-

१ महाराणा अजयसिंह, २ सज्जनसिंह, ३ दूलीसिंह, ४ सिंह, ५ घोंसला, ६ देवराज, ७ इन्द्रसेन, ८ शुभकृष्ण, ९ रूपसिंह, १० भूमीन्द्र, ११ रापा, १२ बरहट, १३ खेलो, १४ कर्णसिंह, १५ शंभा, १६ बाबा, १७ मालू, १८ शाहजी, १९ शिवा, २० शंभा दूसरा, २१ साहू, २२ रामराज दत्तक, २३ साहू दूसरा दत्तक, और २४ प्रतापसिंह.

इसी नसबनामहके मुताबिक़ राजपूतानहमें भी मश्हूर है, कि महाराणा अजयसिंहसे घोंसला (१) ख़ानदानकी शाख़ पैदा हुई.

मार्शमेन् साहिबका बयान है, कि मालू घोंसला, जो सवारोंका एक बहुत अच्छा अफ़्सर था, विक्रमी १६५७ [हि० १००९ = ई० १६००] में अहमद-नगरके बादशाहका नौकर हुआ. चूंकि उसके कोई औलाद नहीं थी, इस सबबसे उसकी स्त्रीने शाह सेफ़र नामी एक मुसलमान पीरकी मन्नत मानी. जब पीरकी बरकतसे उसके एक लड़का पैदा हुआ, तो उसका नाम उक्त पीरके नामपर शाहजी रक्खा. उसका जन्म विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] में हुआ. मालू ने इस लड़के (शाहजी) का सम्बन्ध जादूरावके घरानेमें (जो शायद उस ज़मानहमें एक ख़ानदानी सर्दार होगा) करना चाहा; परन्तु उस वक्त जादूरावने इसको रुत्बेमें अपनेसे छोटा जानकर सम्बन्ध करनेसे इन्कार किया. मालूने थोड़े ही दिनोंमें लूट मार करके बहुतसा धन एकट्ठा करलिया, और अहमदनगरके बादशाहने पूना और सोपा वग़ैरह पर्गने उसे जागीरमें दिये; तब जादूरावने भी रज़ामन्द होकर अपनी बेटीका विवाह शाहजीके साथ करदिया.

विक्रमी १६७६ [हि० १०२८ = ई० १६१९] में मालूका इन्तिक़ाल होगया, और शाहजी अपने पिताकी जगहपर क़ाइम होकर फ़ौजको बढ़ाने लगा. अव्वल उसने ख़ानिजहां लोदीसे मिलावट करके दिल्लीके बादशाह शाहजहां से बख़िलाफ़ी इख़्तियार की, लेकिन् कुछ अर्सेके बाद उसी बादशाह (शाहजहां) का नौकर बनगया. मार्शमेन् साहिबने उसको बादशाहकी तरफ़से पंज हज़ारी मन्सब मिलना लिखा है, लेकिन् थोड़े ही दिनोंके बाद वह दिल्ली वालोंसे बख़िलाफ़ होकर दौलताबादकी तरफ़ चलागया. विक्रमी १६९० प्रथम वैशाख शुक्ल १३ [हि० १०४२ ता० १२ शव्वाल = ई० १६३३ ता० २२ एप्रिल] को जब कि शाहजहां बादशाहकी फ़ौज बीजापुरके मुहासरेको गई, आधी रातके वक्त साहू घोंसला और रन्दौलहने ख़ानिजहांके डेरोंपर हमलह किया; ख़ानिजहां उस समय वहां मौजूद न था, लेकिन् बूंदी वाले शत्रुशाल हाड़ाने उनका खूब मुक़ाबलह किया. शाहजीने

(१) बाज़ बाज़ तवारीख़ोंमें भोंसला लिखा है.

९००० सवार लेकर खिड़की मक़ामपर दूसरा हमलह किया. इस वक्त रामपुरेका राव दूदा चन्द्रावत बादशाही फ़ौजका सर्दार बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारागया. इन दिनों अह्मदनगरकी सल्तनतमें ख़लल आजानेके सबब शाहजी बीजापुरका नौकर होगया था. जब पहिला निज़ामुल्मुल्क बादशाह अक्बरकी क़ैदमें आगया, तो शाहजीने एक दूसरा निज़ाम उसकी जगह क़ाइम किया, उसको भी ख़ानिजहांने गिरिफ़्तार करके दिल्ली भेजदिया; तब शाहजीने फिर तीसरा निज़ाम खड़ा करके अह्मदनगरमें लड़ाईकी तय्यारीके साथ बीजापुर वालोंसे मिलकर शाहजहांकी फ़ौजपर कई हमले किये, जिससे बादशाही नौकर भागकर बुर्हानपुरमें चलेआये, और शाहजीनें निज़ामके मुल्कपर क़बज़ह बढ़ाया. यह बखेड़ा सुनकर विक्रमी १६९२ आश्विन कृष्ण ४ [हि० १०४५ ता० १८ रबीउस्सानी = ई० १६३५ ता० १ ऑक्टोबर] को बादशाह ख़ुद आगरेसे दक्षिणकी तरफ़ रवानह हुआ. बुर्हानपुरसे आगे बढ़कर बीजापुर व गोलकुंडाके बादशाहोंको उसने अपने एल्ची भेजकर धमकी व नसीहतोंसे रोका, और आप दौलताबाद पहुंच गया. इसके बाद अह्मदनगरके इलाक़ेपर क़बज़ह करनेके लिये फ़ौजें भेजीं; तब शाहजीने कई मक़ामोंपर लड़ाइयां कीं; आख़िरकार शाहजहांने अह्मदनगरके मुल्कको फ़त्ह करके बीजापुर पर दबाव डाला, क्योंकि वहांका बादशाह ख़ानगी तौरपर शाहजीका मददगार हो रहा था. जब बीजापुरके बादशाह मुहम्मद आदिलख़ांने फ़ौजोंका ज़ियादह दबाव देखा, तो २०००००० बीस लाख रुपया शाहजहांके पास भेजकर सुलह चाही, और यह भी कहलाया, कि अगर शाहजी घोंसला अह्मदनगरके इलाक़ोंसे कुछ भी छेड़ छाड़ करे, तो हम उसको नौकर न रक्खेंगे.

विक्रमी १६९३ श्रावण कृष्ण ३ [हि० १०४६ ता० १७ सफ़र = ई० १६३६ ता० २१ जुलाई] को शाहजहां दौलताबादसे आगरेकी तरफ़ रवानह होगया, और दक्षिणकी सूबेदारी शाहज़ादह औरंगज़ेबके सुपुर्द की; शाहजी घोंसला लाचार होकर बीजापुर चलागया. मुरारि पंडितने पूना और सोपाके पर्गने शाहजीको जागीरमें पक्के लिखवादिये, जो उसके बाप मालूजीके वक्तसे क़बज़ेमें थे, और बीचमें बीजापुरके बादशाहने छीन लिये थे. जब नीरा और भीमा नदीके दर्मियान मुरारि पंडितने बन्दोबस्त किया, उस मौक़ेपर शाहजीने अच्छी मदद दी, इससे बीजापुरके शाहने कर्नाटककी चढ़ाईके वक्त रन्दौलह और शाहजीको फ़ौजका अफ़्सर बनाया; और उस मुल्कके फ़त्ह होने बाद शाहजीको कर्नाटकमें कोल्हार, बंगलोर, उसकट, बालापुर और सेरा वग़ैरहकी जागीर दी; इसके सिवा सितारेसे दक्षिण ज़िले कराड़में इन्होंने २२ गांवोंकी "देशमुखी" पाई. शाहजीके चार लड़के थे, जिनमेंसे बड़ा

शंभा और छोटा शिवा एक स्त्रीसे पैदा हुए थे, तीसरा व्यंका दूसरी स्त्री से और चौथा सन्ता एक पासवानसे पैदा हुआ था. शिवाका जन्म विक्रमी १६८४ ज्येष्ठ [हि० १०३६ रमज़ान = ई० १६२७ मई] में शिवानेरके क़िलेमें हुआ. जब शिवा बच्चा था, उसकी माता शाहजहांकी फ़ौजमें पकड़ी आई, और उसके पीहर वालोंने छुड़ाया, जो उस समय बादशाही नौकर थे. विक्रमी १६८७ [हि० १०३९ = ई० १६३०] से विक्रमी १६९३ [हि० १०४५ = ई० १६३६] तक शिवा और उसकी माता जीजाबाई दोनों, शाहजीसे जुदा रहे, लेकिन् छः सालके बाद वे उसके पास बीजापुरमें चले गये. शिवाकी शादी निंबालकरकी बेटीके साथ हुई. शाहजी तो कर्नाटककी तरफ़ गया, और शिवा व उसकी माको पूना भेजदिया; और दादा कोणदेव पंडितको शिवाका शिक्षक और पूनाकी जागीरका मुहाफ़िज़ बनाया. नरू पंडित हनमतेको कर्नाटक की जागीरका मुख़्तार किया. दादा कोणदेवने पूनाके ज़िलोंमें बहुत उम्दह बन्दोबस्त किया; और मावली क़ौमको, जो पहिले बहुत मुफ़्लिस और जंगली थी, आराम देकर दुरुस्त किया.

शिवा कुछ लिखने पढ़नेमें होशियार न था, लेकिन् सिपाहगरीके फ़नमें चालाक होनेके सबब वह १६ वर्षकी उम्रसे लुटेरे लोगोंकी सुहबतमें रहने लगा, और उसकी यह ख़्वाहिश हुई, कि आज़ाद राजा बनजावे. दादा कोणदेवने उसको इन आदतोंसे बहुत कुछ रोका, लेकिन् वह नहीं मानता था; विक्रमी १७०३ [हि० १०५६ = ई० १६४६] में उसने मावली लोगोंकी मददसे क़िले तोरणाको अपने क़बज़हमें किया, और बीजापुर वाले बादशाहके नाम इस मज़्मूनकी एक अर्ज़ी लिख भेजी, कि इस क़िलेमें मेरा क़बज़ह रखनेसे बादशाही तह्सीलमें बहुत फ़ायदह होगा; और बड़ा ख़िराज देनेके मत्लबसे कई अर्ज़ियां लिख भेजीं; लेकिन् उनका जवाब जल्दी नहीं मिला. इसमें देरी होना शिवाके हक़में ज़ियादह मुफ़ीद था, उसने मौक़ा पाकर बीजापुरके अहलकारोंको भी मिला लिया, कि जल्दी जवाब न देवें. शिवाके वकील तो, बीजापुरमें यह कार्रवाई कर रहे थे, और शिवा क़िले तोरणामें मावली लोगोंको एकट्ठा करनेमें मश्गूल था. वहां पर उसको पुरानी इमारतें तोड़नेसे बहुतसी दौलत हाथ लगगई; इस क़ुद्रती मददके मिलनेपर उसने मेगज़िन वग़ैरह ख़रीदकर विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में क़िले तोरणासे डेढ़ कोस अग्नि कोणकी तरफ़ मोरबंद पहाड़पर एक नया क़िला बनवाया, और उसका नाम राजगढ़ रक्खा. जब ये ख़बरें बीजापुरमें पहुंचीं,

तो उन लोगोंने शाहजीको दबाया, और उसने शिवाको नसीहतके तौरपर लिखा; मगर शिवाके दिलपर अपने पिताकी तह्रीरका कुछ असर न हुआ, क्योंकि वह मुसल्मानोंकी तावेदारीसे नफ़रत करता था. इसी अ़र्सेमें दादा कोण्देव भी मरगया. अब शिवा अपने बाप शाहजीसे भी आज़ाद होकर इन ज़िलों और क़िलोंका ख़ुद मुख़्तार हाकिम बना. एक मोहिता रूपाका क़िलेदार उसका फ़र्मांबर्दार न बना, जिसको उसने गिरिफ़्तार करके अपने बाप शाहजीके पास कर्नाटक भेजदिया. इसके बाद उसने पुरन्दरके क़िलेपर क़बज़ह किया, और इसी तरह चाकना तथा नीराके दर्मियानका .इलाक़ह भी दबालिया.

विक्रमी १७०५ [हि० १०५८ = ई० १६४८] में उसने बीजापुरको जातेहुए आदिलशाहका ख़ज़ानह लूट लिया; और इन्हीं दिनोंमें कांग्री, तुंग, तिकोना, भूरप, कुआरी, लोगर, और राज मांची वग़ैरह आदिलशाही क़िलोंपर अधिकार जमाया. इसी तरह कोकण देशके कई ज़िलोंमें लूट मार मचादी; कल्याण वग़ैरहके क़िले अपने क़बज़हमें लेकर आभा कोण्देवको वहांका हाकिम क़रार दिया.

यह ख़बरें सुनकर आदिलशाहने शाहजीको क़ैद करलिया, और विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] में शाहजी उसी क़ैदकी हालतमें बीजापुर लाया गया. जब वह बादशाहके पास आया, तो उसने बहुतेरी मिन्नत की, और कहा, कि मेरा लड़का मेरे कहनेमें नहीं है; लेकिन् बादशाहको उसके कहनेपर यक़ीन न हुआ, और उसे एक तंग मकानमें क़ैद करके दर्वाज़ा बन्द करादिया, सिर्फ़ खिड़की खुली रक्खी, कि जिसकी राहसे उसको खाना पीना दियाजाता था. इसपर शिवाने दिल्लीके बादशाह शाहजहांसे दर्ख़्वास्त की, और शाहन्शाही ज़ोर डालकर अपने बापको क़ैदसे छुड़ाया; लेकिन् ताहम शाहजी बीजापुरमें नज़र क़ैदके तौरपर रक्खागया. जो कि आदिलशाहको शाहजहांकी नाराज़गीका बड़ा ख़ौफ़ था, इसलिये उसने शिवाको भी क़ैद करना चाहा, लेकिन् वह उसके फ़िरेबमें न आया. विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] में शाहजी बीजापुरसे रिहा होकर अपनी जागीर कर्नाटकमें पहुंचा, जहां कनकगिरीकी लड़ाईमें उसका बड़ा बेटा शंभा मारा गया. विक्रमी १७१४ कार्तिक कृष्ण १४ [हि० १०६७ ता० २७ मुहर्रम = ई० १६५७ ता० ४ नोवेम्बर] को आदिलशाह बीजापुरी मरगया, और उसका बेटा अ़ली आदिलशाह बीजापुरका बादशाह बना, जिसपर शाहजहांके हुक्मसे शाहज़ादह औरंगज़ेब और मीर जुम्लहने चढ़ाई की, लेकिन् कुछ दिनों तक ईश्वरको बीजापुरकी सल्तनत क़ाइम रखना मन्ज़ूर था, शाहजहांकी बीमारीकी ख़बर मिलनेसे

औरंगज़ेब फ़ौज ख़र्च लेकर पीछा औरंगाबादको चलागया. इन दिनोंमें शिवाने औरंगज़ेबसे मिलावट करली, और उसकी इजाज़त लेकर कोकणकी तरफ़ क़बज़ह बढ़ाया.

बीजापुरमें अली आदिलशाहकी नातजिबहकारीसे बद इन्तिज़ामी फैलती जाती थी, कई पठान नौकरियें छोड़कर शिवाके पास आगये, जिससे उसकी बग़ावत और भी ज़ियादह बढ़ी. यह हालत देखकर अली आदिलशाहने अपने मातह्त ज़बर्दस्त सर्दार अफ़्ज़लखांको एक बड़ी फ़ौज समेत शिवापर भेजा. शिवाने दग़ाबाज़ीसे सुलहका पैग़ाम भेजकर अपने क़ुसूरोंकी मुआफ़ी चाही, जिसपर अफ़्ज़लखांने उसके पास तसल्ली देनेके लिये पण्डित पंथो गोपीनाथको भेजदिया. शिवाने उस ब्राह्मणको मिलालिया, उसने भी वापस आकर अफ़्ज़लखांसे कहदिया, कि शिवा बहुत डरा हुआ है, आप अकेले चलकर प्रतापगढ़में उसकी तसल्ली करदीजिये. अफ़्ज़लखांने इस बातको क़बूल करके प्रतापगढ़के क़िलेसे नीचे मिलनेको कहा. शिवाने धोखादिही करके अपने लोगोंको चारों तरफ़के पहाड़ोंमें छिपादिया, और आप अफ़्ज़लखांसे मुलाक़ात करनेके लिये क़िलेसे नीचे उतरा; मिलनेके वक्त शिवाने उस साफ़ दिल मुसलमान सर्दारको मारडाला, और उसका तमाम ख़ज़ानह व लड़ाईका सामान वग़ैरह लूट लिया. ग्रैण्ट डफ़ साहिब लिखते हैं, कि अफ़्ज़लखांकी तलवार अबतक सिताराके तोशहख़ानहमें मौजूद है. इसके बाद परनाला, पवनगढ़ व वसन्तगढ़ वग़ैरह क़िलोंपर क़बज़ह करलिया, और यहांतक बढ़ा, कि बीजापुरके गिर्दोनवाहमें भी लूट मार मचादी. तब अली आदिलशाहने सीदी जौहर और अफ़्ज़लखांके बेटे फ़ज़्ल मुहम्मदको बड़ी भारी फ़ौज देकर शिवाके मुक़ाबलेपर भेजा. परनाला मक़ामपर चार महीनेतक शिवा लड़ता रहा, इसके बाद दबकर क़िले रीगणेमें जाघुसा. अली आदिलशाह, सीदी जौहरपर शिवासे रिश्वत लेनेका इल्ज़ाम लगाकर बीजापुरसे चढ़ दौड़ा, और परनाला व पवनगढ़ वग़ैरह कई क़िलोंपर उसने अपना क़बज़ह करलिया. आपसमें कई लड़ाइयां होने बाद शिवाने कुल कोकण देशको अपने अधिकारमें लेलिया. ग्रैण्ट डफ़ साहिब लिखते हैं, कि उस वक्त उसके पास ७००० सवार और ५०००० पैदल थे.

जब बीजापुर वालोंमें शिवाके रोकनेकी ताक़त न रही, तब उसने अह्मदनगरके इलाक़े याने आलमगीरके मुल्कमें पैर बढ़ाया. यह ख़बर पहुंचनेपर आलमगीरने शायस्तहखांको एक बड़ी फ़ौजके साथ शिवाकी तरफ़ रवानह किया; कई जगह मुक़ाबलह करके उसने मरहटोंको हटादिया, और पूनामें पहुंचकर तलकोकणपर क़बज़ह करलिया. इसके बाद पूना छोड़कर क़िले चाकनाका मुहासरह किया. चन्द

रोज़ बाद उसमें अपना अमल दख़्ल जमा लिया. शायस्तहख़ां अपनी फ़ौज आरास्तह करके विक्रमी १७१९ [हि० १०७२ = .ई० १६६२] में पूनाको आया. आलमगीरने जोधपुरके राजा जशवन्तसिंहको गुजरातकी सूबेदारीसे शायस्तहख़ांकी मददके लिये दक्षिणकी तरफ़ भेजदिया. विक्रमी १७२० चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० १०७३ रमज़ान = .ई० १६६३ एप्रिल] में शिवाने एक मरहटेको दुलहा बनाकर रातके वक्त पूनामें छापा मारा, और शायस्तहख़ांके कई आदमियोंको मकानके अन्दर मारडाला. इसी हम्लेमें मुख़ालिफ़ोंकी तलवारसे शायस्तहख़ांके हाथकी एक अंगुली कट गई. शिवा सहीह व सलामत निकल गया. शायस्तहख़ांका बेटा अबुल्फ़त्हख़ां जानसे मारा गया. आलमगीरने इस गफ़्लतसे नाराज़ होकर शायस्तहख़ांको बंगालेकी सूबेदारीपर भेजदिया, और अपने शाहज़ादे मुहम्मद मुअ़ज़्ज़मको दक्षिणकी सूबेदारीपर रवानह किया.

विक्रमी १७२१ [हि० १०७४ = .ई० १६६४] में शिवाने सूरत वगैरह बन्दरको लूटा, और इन्हीं दिनोंमें उसका पिता शाहजी तुंगभद्रा नदीके किनारे शिकार खेलते वक्त घोड़ेसे गिरकर मरगया; तब शिवाने राजाका ख़िताब इख़्तियार करके अपने नामका सिक्कह जारी किया. आलमगीरने महाराजा जशवन्तसिंहको दक्षिणसे तलब करके उसके एवज़ आंबेरके महाराजा जयसिंह अव्वलको भेजा, और महाराजाने मरहटोंके अक्सर क़िले फ़त्ह किये. जब शिवाने मुल्ककी बर्बादी और अपनी ना ताक़ती देखली, तो लाचार होकर महाराजाके पास अपने एक पंडित रघुनाथ पन्थ न्याय शास्त्रीको सुलहका पैग़ाम देकर भेजा, महाराजाने उसकी तसल्ली की, जिसपर विक्रमी १७२२ आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० १०७५ ता० ८ ज़िल्हिज = ई० १६६५ ता० २२ जून] (१) को शिवा मए थोड़ेसे आदमियोंके शाही लश्करमें चला आया. महाराजाने ताज़ीम वगैरह इज़्ज़तसे उसे अपनी गद्दीपर बराबर बिठाया. तरफ़ैनमें तसल्लीके लाइक़ इक़ार होनेपर शिवाने कई क़िलोंसे अपना दख़्ल उठा लिया; और महाराजाकी अर्ज़ी पहुंचनेपर आलमगीरने शिवाके नाम तसल्लीका एक फ़र्मान और उसके ८ वर्षकी उम्र वाले बेटे शंभाको पांच हज़ारी ज़ातका मन्सब लिख भेजा.

विक्रमी १७२२ चैत्र कृष्ण ८ [हि० १०७६ ता० २१ रमज़ान = .ई० १६६६ ता० २८ मार्च] को बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ महाराजा जयसिंहने शिवा व उसके बेटे शंभाको तसल्ली देकर आगरेकी तरफ़ आलमगीरकी ख़िदमतमें रवानह किया, जो विक्रमी १७२३ ज्येष्ठ कृष्ण १ [हि० १०७६ ता० १५ ज़िल्क़ाद =

---

(१) ग्रैंटडफ़ साहिबने जुलाई महीनेमें शिवाका शाही लश्करमें आना लिखा है, लेकिन मूलमें ख़फ़ीख़ांके लिखनेको मोतबर समझकर ८ ज़िल्हिज लिखा गया.

.ई० १६६६ ता० २० मई] को आगरे पहुंचा. बादशाहने जयसिंहके कुंवर रामसिंह व मुख़्लिसख़ांको शहरके बाहरतक पेश्वाईको भेजा, और विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ४ [हि० ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २३ मई] को अपने दर्बारमें बुलाया. बख़्शीने शिवाको पांच हज़ारी मन्सबदारोंकी सफ़में खड़ा किया, जिसपर वह बहुत नाराज़ हुआ, और बड़बड़ाया, क्यौंकि यह .इज़्ज़त याने पांच हज़ारी मन्सब उसके बेटे व दामादको मिलचुकनेके सबब वह अपने वास्ते ज़ियादहका उम्मेदवार था. बादशाहने इस गुस्ताख़ीसे ख़फ़ा होकर उसे अपने डेरे चले जानेका हुक्म दिया, और वहां उसे नज़र क़ैद करदिया. वह डेरेमें बीमारीके बहानेसे एक अरसे तक पलंगपर पड़ा रहा, और हिन्दू वैद्योंसे .इलाज कराता रहा; कुछ दिनों बाद वह अपना सिहत पाना ज़ाहिर करके मुहूताजों और फ़क़ीरोंके लिये बड़े बड़े टोकरे मिठाईके भेजने लगा. यहां तक, कि विक्रमी १७२३ भाद्रपद कृष्ण १३ [हि० १०७७ ता० २७ सफ़र = .ई० १६६६ ता० २८ ऑगस्ट] को दोनों बाप बेटे उन्हीं मिठाईके टोकरोंमें बैठकर वहांसे निकल गये, आगे उनके भेजे हुए घोड़े तय्यार थे, जिनपर सवार होकर मथुरा पहुंचे. वहां उसका दोस्त तन्नाजी मालूसरा मिला. ग्रैंटडफ़ साहिब लिखते हैं, कि वहां उसने अपने बेटे शंभाको एक पंडितके सुपुर्द करके कहा, कि अगर मैं ज़िन्दह पहुंचूं, तो इस लड़केको मेरे पास ले आना, वर्नह इसको दक्षिण में पहुंचा देना. ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि शंभाको कवि कलश ब्राह्मणके पास इलाहाबादमें रक्खा. यहांसे शिवाने बदनपर ख़ाक मलकर फ़क़ीरी लिबास बनाया. ग्रैंटडफ़ साहिबका बयान है, कि वह विक्रमी मार्गशीर्ष [हि० जमादियुस्सानी = ई० डिसेम्बर] में मथुरासे रायगढ़ पहुंचा; और ख़फ़ीख़ां कई मोतबर दक्षिणी ब्राह्मणोंके ज़बानी हवालेसे लिखता है, कि शिवा अपने बहुतसे सर्दारों समेत फ़क़ीर बनकर बनारसकी तरफ़ निकला, रास्तेमें यह गिरोह अली कुली नामी एक शाही मुलाज़िमके हाथ पड़गया, उसने इन्हें क़ैद किया. तब शिवाने उसे एक बेश क़ीमती लाल और एक हीरा देकर पीछा छुड़ाया; और वहांसे इलाहाबाद, बनारस, पटना, बिहार, चंदा वग़ैरहमें जंगल और पहाड़ोंके रास्ते होता हुआ गोलकुंडेमें क़ुतुबुल्मुल्कके पास विक्रमी १७२५ [हि० १०७९ = ई० १६६८] में पहुंचा.

इस वक़ गोलकुंडा और बीजापुरके बादशाहोंमें भी नाइत्तिफ़ाक़ी होगई थी, क्यौंकि क़ुतुबुल्मुल्कके कई क़िले बीजापुरवालोंने लेलिये थे. शिवाने गोलकुंडेकी फ़ौजके साथ लड़कर वे क़िले क़ुतुबुल्मुल्कको दिलाने बाद उनपर अपना क़बज़ह रक्खा, और एक दो क़िले उनको आंसू पोछनेके लिये दिये; बाद इसके उसने थोड़े दिन राजगढ़में ठहरकर महाराजा जशवन्तसिंहको अपना दोस्त बनाया, और उसकी

मारिफ़त शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मकी सिफ़ारिशसे आ़लमगीरके पास अ़र्ज़ी भेजकर राजाका ख़िताब और बरारके इलाके़में कुछ जागीर हासिल की. आ़लमगीर और शिवा दोनों अपने अपने मत्लबके लिये फ़िरेबी शतरंजकी चाल चलरहे थे. इस मिलावटके सबब तीन लाख रुपये बीजापुरकी तरफ़से और पांच लाख गोलकुंडेसे सालियानह चौथके शिवाको मिलने लगे. इसी अ़र्सेमें बीजापुरका इन्दाराजपुर नामी क़िला लेकर जज़ीरामें सीदी फ़तहख़ांको जाघेरा, परन्तु शिवाको वहांसे शिकस्त खाकर लौटना पड़ा. सीदियोंकी इस मर्दानह कार्रवाईपर ख़ुश होकर आ़लमगीरने ख़ानिजहांकी मारिफ़त उनके लिये मन्सब और ख़िल्अ़त भेजा. इन सीदी हबशियोंने शिवासे कई लड़ाइयां लड़ने बाद उससे क़िला इन्दाराजपुर भी छीन लिया. विक्रमी १७२७ [हि० १०८१ = ई० १६७०] में शिवाने शहर सूरतको लूट लिया, और एक बड़ी विकट जगहमें राहेड़ी पहाड़पर एक क़िला तामीर कराकर उसीमें रहने लगा.

आख़िर शिवाका बेटा शंभा मए कवि कलश ब्राह्मणके अपने बापसे आमिला. शिवाकी फ़ौजका इन्तिज़ाम नीचे लिखे मुवाफ़िक़ था:—

शिवाकी फ़ौजमें ख़ासकर मावली और हेटकरी क़ौमोंके लोग थे, जो जंगली और शिवाके फ़र्मांबर्दार होनेके सिवा क़िलोंको फ़तह करलेनेमें बहुत मशहूर और होश्यार थे. दस आदमियोंके अफ़्सरको नायक, पचासके मुख़्तारको हवाल्दार, १०० के मालिकको जुम्लहदार, हज़ार सिपाहियोंके अधिकारीको हज़ारी कहते थे; और सबसे बड़े अफ़्सरको "सर नौबत" का ख़िताब था. सवारोंकी फ़ौज दो क़िस्मकी थी, अव्वल बारगीर, जिनके पास सर्कारी घोड़े होते थे, दूसरे सिलहदार, जो घरू घोड़ोंसे नौकरी देते थे. सवारोंकी वर्दी याने लिबास घुटने तक तंग मुहरीका पायजामा, रूईदार अंगरखा और बल्दार पगड़ी तथा कमरबन्द था; और हथियारोंमेंसे ढाल, तलवार व भाला रखते थे. पच्चीस सवारोंपर एक हवाल्दार, १२५ पर जुम्लहदार और पांच जुम्लेदारोंका अफ़्सर सूबेदार कहलाता था, जिसके पास एक अहलकार हिसाब रखने वाला रहता था. दस सूबेदारोंका अफ़्सर पंज हज़ारी कहलाता था, जिसके तहतमें एक मज़िमदार (मज्मूअ़हदार) ब्राह्मण अहलकार, एक रोज़नामचहनवीस, और एक हिसाब रखनेवाला अमीन रहता था. यह सबसे ऊपरका उ़हदह होता था. इनमें एक ख़बर नवीस भी रक्खा गया था. पैदल सिपाहियोंकी तन्ख़्वाह १ से लेकर ३ पैगोडा (१) तक, बारगीरोंकी तन्ख़्वाह २ से ५ पैगोडा तक और सिलहदारोंकी ६ से १२ पैगोडा तक माहवार मुक़र्रर थी.

---

(१) यह सिक्कह ३ से ४ रुपये तकका होता था.

शिवाकी यह आदत थी, कि वह गाय, ब्राह्मण वगैरह मज़्हबी लोगों और किसानों तथा औरतोंको तक्लीफ़ नहीं पहुंचाता था, और सिवा मुसल्मान व मालदार हिन्दुओंके किसीको क़ैदकी सज़ा नहीं देता था. ज़मीनकी पैदावारके पांच हिस्सोंमेंसे दो हिस्से राज्यमें हासिलके लियेजाते थे. शिवाने अपने राज्य प्रबन्धके लिये आठ प्रधान मुक़र्रर किये थे- पहिला प्रधान पेश्वा, जो कुल कामोंका अफ्सर आला और रियासतके हरएक कारख़ाने तथा अफ्सरोंकी निगरानी रखने वाला था; इस उह्देपर अव्वल पिंगले नियत किया गया; दूसरा प्रधान मज़ीमदार याने जमा ख़र्चकी निगरानी रखनेवाला, आबाजी सोनदेव था; तीसरा सूरनीस दफ्तरकी निगरानी रखनेवाला आनाजी दत्तो; चौथा दत्ताजी पन्थ वाक़ानवीस, याने ख़ास दफ्तर व ख़ास फ़ौजकी संभाल रखने वाला; पांचवां सरनौबत, जो कुल फ़ौजका अफ्सर व निगहबान था; मगर इस नामके उह्देपर दो शख़्स मुक़र्रर थे, जिनमेंसे सवारोंका प्रतापराव गूजर, और पैदलोंका एशजी कंक; छठा दबीर, जो अज़्लाए गैरके मुआमलात व मस्लिहत में मश्गूल रहता, याने दूसरी रियासतोंके वकीलोंसे बात चीत तथा मुलाक़ात करानेका इख्तियार रखता था; यह काम सोमनाथ पन्थके सुपुर्द था; सातवां न्यायाधीश, इस उह्देपर भी दो शख़्स थे, एक नीराजी राव और दूसरा गोमाजी नायक; और आठवां न्याय शास्त्री शंभुपाध्ये था.

आलमगीरके सेनापति ख़ानिजहांसे शिवाकी कई लड़ाइयां हुईं, मगर फ़साद रफ़ा न हुआ, तब आलमगीरने शिवाके बेटे शंभाको छः हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब भेजकर इस झगड़ेको ठंडा किया; लेकिन् कुछ अरसे बाद शिवाने बादशाही ख़ालिसहके शहर मूंगापट्टनको लूटकर फिर फ़सादकी बुन्याद उठाई, और आपस में लड़ाइयां होने लगीं. आख़िर कार विक्रमी १७३७ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १०९१ ता० २४ रबीउस्सानी = ई० १६८० ता० २३ मई](१) को शिवा फ़ौत होगया. उसके चार औरतें थीं- अव्वल निबालकरकी बेटी सई बाई, दूसरी सिरकेकी बेटी सोयराबाई, तीसरी मोहित्यांकी बेटी पूतलांबाई, और चौथीका नाम मालूम नहीं. सई बाईके गर्भसे शंभा और सोयराबाईके गर्भसे राजा राम पैदा हुआ था. शंभा बड़ा याने पाटवी होनेके सबब गद्दीका हक़दार था; लेकिन् जनार्दन पन्थ वगैरह सर्दारोंने उसे बद चलन जानकर बजाय उसके राजा रामको मक़ाम रायगढ़में गद्दीपर बिठादिया. यह ख़बर पाकर शंभाने क़िले परनालापर अपना क़बज़ह करलिया, और उसके बाद कोल्हापुर लेकर जनार्दन पन्थको क़ैद किया. फिर

(१) ग्रैंटडफ़ साहिब ५ एप्रिलको शिवाका मरना लिखते हैं, और मूलमें मआसिरेआलमगीरीके मुवाफ़िक़ २४ रबीउस्सानी लिखा गया, जिसके मुताबिक़ २३ मई होती है.

हमीरराव सेनापति और मोरो पन्थ पिंगलेको मिलाकर रायगढ़को भी अपने क़बज़हमें लिया, और आना दत्तो तथा अपने भाई राजा रामको कैद करने बाद अपनी सौतेली माता सोयराबाईको यह इल्ज़ाम लगाकर मरवाडाला, कि इसने मेरे पिता (शिवाजी) को ज़हर देकर मरवाडाला है. इसके सिवा दूसरे भी कई मरहटे सर्दारोंको क़त्ल करवाया; और राजा बनकर पंडित कवि कलशको अपना प्रधान नियत किया, जिसने उसको आलमगीरके भयसे बचाया था. ग्रैंटडफ़ साहिब कवि कलशकी निस्बत लिखते हैं, कि यह शख़्स एक अच्छा शाइर था, और शंभा इसके क़बज़हमें था, लेकिन् मुल्की इन्तिज़ाम करनेमें कच्चा होनेके सबब रियासती कार बार न संभाल सका, और मुल्की बन्दोबस्त व ख़ज़ानहमें ख़लल आगया.

शंभाकी शुरू हुकूमतमें आलमगीरका चौथा शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर अपने बापसे बाग़ी होकर चला आया, जिसको शंभाने क़िले राहेड़ीमें पनाह दी. यह सुनकर आलमगीर, जो उस वक़् मेवाड़ वालोंसे लड़ रहा था, घबराया; और महाराणा जयसिंहसे सुलह करके फ़ौरन् दक्षिणको रवानह हुआ. विक्रमी १७३८ चैत्र कृष्ण ९ [हि० १०९३ ता० २३ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १६८२ ता० ३ मार्च] को वह औरंगाबादमें पहुंचा, मगर शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर उसके पहुंचनेसे पहिलेही कुछ दिन क़िले राहेड़ीमें रहकर ईरानको चलागया, और आलमगीरने ग़ाज़ियुद्दीनख़ांको एक बड़ी फ़ौज देकर शंभासे क़िला राहेड़ी छीन लेनेको बिदा किया, जिसने बड़ी कोशिशके साथ उक्त क़िलेको फ़त्ह करके फ़ीरोज़जंगका ख़िताब हासिल किया. इसके बाद शंभा तो दब-गया, सिर्फ़ नामके वास्ते कभी कभी बादशाही फ़ौजोंसे मुक़ाबलह करता रहा; लेकिन् अब बादशाहको बीजापुर व गोलकुंडा लेनेकी फ़िक्र हुई, और बड़ी बड़ी लड़ाइयोंके बाद दोनों सल्तनतें फ़त्ह करली गईं. इसके बाद उसने शंभाको बर्बाद करनेपर कमर बांधी; विक्रमी १७४४ माघ शुक्ल पक्ष [हि० १०९९ शुरू रबीउ़स्सानी = ई० १६८८ फ़ेब्रुअरी] में शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको ४०००० सवार देकर शंभाके मुक़ाबलेके लिये भेजा. शाहज़ादह क़िले बेलगांवको फ़त्ह करके बादशाहके पास चला आया.

विक्रमी १७४५ फाल्गुन् शुक्ल पक्ष [हि० ११०० शुरू जमादियुल्अव्वल = ई० १६८९ फ़ेब्रुअरी] में शैख़ निज़ाम हैदराबादी, जिसका ख़िताब मुक़र्रबख़ां था, बादशाहके हुक्मसे परनालेको रवानह हुआ; वहां पहुंचनेपर उसको ख़बर मिली, कि शंभा क़िले परनालासे खेलनाकी तरफ़ बैरागियोंका फ़साद मिटानेको गया,

और वहांसे संगमेश्वर, जहां वाणगंगाका तीर्थ है पहुंचा; यहां उसके प्रधान कवि कलशके वनाये हुए वाग़ व मकानात वगैरह भी थे. वहां पहुंचकर वह तीर्थ स्नान, दान पुण्य व पूजन वगैरह करने बाद ऐश व इश्रतमें मश्गूल था. यह खबर सुनकर मुकर्रवखांने फ़ौजी क़ाफ़िलेको शोलापुरके पास छोड़ा, और चुनेहुए सिपाहियों के साथ ४५ कोसकी सख्त पहाड़ी घाटियोंको तै करता हुआ बड़ी मुश्किलसे उस मकानके क़रीब पहुंचा, जहां शंभा क़ियाम रखता था. उस वक़ उसके साथ २००० सवार और १००० पैदल थे. यह हालत देखकर शंभाको उसके नौकरोंने गफ़लत की नींदसे होश्यार होनेकी खबर दी. वह शराबके नशे में चूर था; कहा, कि यहां बादशाही फ़ौज नहीं आसक्ती; और खबर लानेवालोंको धमकाया. इसी अरसेमें मुक़र्रवखां भी आ पहुंचा; शंभाने तीन चार हज़ार सवारों से मुक़ावलह किया, परन्तु अक्सर लोगोंके भागजानेके सबब वह मए कवि कलश ब्राह्मणके मुकर्रवखांकी गिरिफ्तारीमें आया; और शंभाकी एक स्त्री भी अपने बेटे साहू व २५ रिश्तहदारों सहित गिरिफ्तार हुई. इन लोगोंको गिरिफ्तार करके मुक़र्रवखांने उसी वक़ वापस कूच किया. शंभाकी सख्त मिज़ाजीसे कुल मरहटे नाराज़ थे, इसलिये किसीने उसके छुड़ानेमें कोशिश न की; और विक्रमी १७४५ फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० ११०० ता० ५ जमादियुल्अव्वल = ई० १६८९ ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को वह बहादुरगढ़में बादशाहके साम्हने लाया गया.

जब शंभाको बादशाहके साम्हने लाये, उस वक़ आलमगीर तख्तसे उतरकर खुदाका शुक्रियह अदा करनेलगा. उस समय कवि कलशने शाइरीमें कहा, कि ऐ शंभा राजा ! तेरा रोब ऐसा तेज़ है, कि बादशाह भी तुझको देखकर तख्तसे उतरगया. बाद इसके वे दोनों मुसल्मानोंके पैग़म्बरों व बादशाहको गालियां देने लगे. बादशाहने दोनोंकी ज़बानें कटवाकर गर्म लोहेकी सलाखें आंखोंमें फिरवादीं; और बड़ी ज़िल्लतके साथ इनके सिर कटवाने बाद शंभाके बेटे साहू (१) व मदनसिंह तथा अधोसिंहको असदखां वज़ीरके पास डेरोंमें रहने की इजाज़त दी. सात वर्षकी उम्र वाले साहूको बादशाहने सात हज़ारीका मन्सब इनायत किया था.

---

(१) कप्तान डब्ल्यू० लॉकने बम्बई गज़ेटिअरके लिये पूना, सितारा, और शोलापुरकी, जो तवारीख़ लिखी है, उसमें शंभाके गिरिफ्तार होने बाद रायगढ़में शाहजीका विक्रमी १७४७ [हि० ११०१ = ई० १६९०] में गिरिफ्तार होना लिखा है.

अब शिवाके दूसरे बेटे राजाराम ने मरहटी राज्यका प्रबन्ध अपने हाथमें लिया, और बादशाही मुलाज़िमोंसे खूब लड़ाइयां करने लगा, जिसके शरीक नीचे लिखे हुए आदमी थेः-

प्रल्हाद नीरा, जनार्दन पन्थ हनमन्त, रामचन्द्र पन्थ बोरीकर, महादा नायक पानसंबल, सन्ता घोरपड़ा, धन्ना जादव, और खन्डेराव दाभड़.

राम राजा पहिले क़िले गंजीमें रहा, और कई लड़ाइयां होने बाद आलमगीरके सेनापति ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने उसे वहांसे निकाला. वह निकलकर विशालगढ़में आया, वहांसे विक्रमी १७५४ [हि० ११०८ = ई० १६९७] में सितारे पहुंचकर उसको अपनी राजधानी बनाया, और रामचन्द्र पन्थको मन्त्री किया. शंकरा नारायणको सचिव बनाया. आख़िरकार सन्ता घोरपड़ा आपसकी लड़ाइयों में मारा गया, और उसकी जगह धन्ना जादव सेनापति मुक़र्रर किया गया, जो सन्ताका दुश्मन था.

विक्रमी १७५६ [हि० ११११ = ई० १६९९] में रामराजा ने एक बड़ी चढ़ाई करके बरार, ख़ानदेश, और बगलाना वग़ैरहपर हुकूमत जमाई, जिससे आलमगीरने नाराज़ होकर पहाड़ी क़िले छीन लेनेका हुक्म दिया. पहिले उसने बसन्तगढ़ लेकर सितारेका मुहासरह किया; और उस क़िलेको कई महीनों बाद फ़त्ह करलिया. इन्हीं दिनोंमें राम राजाका इन्तिक़ाल होगया. इसके दो बेटे थे, जिनमेंसे बड़ा शिवा गद्दीपर बिठाया गया, और औरंगज़ेबने पुरन्दरसे परनाले तक क़िले लेलिये; लेकिन् मरहटे लोग लूट खसोट करके उनको दिक़ करते रहे.

विक्रमी १७६२ [हि० १११७ = ई० १७०५] में रायगढ़ और तोरणाका क़िला लेकर आलमगीर कुछ दिनों जिनारके नज़्दीक रहा, फिर बीजापुरको गया. इस अ़रसेमें मरहटोंने परनाला और पवनगढ़के क़िलोंपर फिर अपना क़बज़ह जा जमाया. इस कामका करने वाला रामचन्द्र पन्थ था. इधर परसराम त्रिंबकने बसन्तगढ़ और सितारा छीन लिया, और शंकरा नारायणने सिंहगढ़, रायगढ़ वग़ैरह क़िलोंपर क़बज़ह करलिया. आलमगीर मुल्क दबाता हुआ अहमदनगरमें पहुंचा, और वहीं मरगया; तब उसके शाहज़ादे मुहम्मद आज़मने आगरेकी तरफ़ कूच करते वक्त शंभाके बेटे साहूको छोड़दिया. उसने परसो घोंसला, चीमा दामोदर, हैबतराव नीबालकर, नीमा सेंधिया वग़ैरहको मिलाकर बड़ी फ़ौजके साथ दक्षिणकी तरफ़ कूच किया; लेकिन् धन्ना जादव इसका मुख़ालिफ़ बनकर रोकनेको आया,

जिसके साथ परसराम त्रिंबक भी था; भीमा नदीके किनारे खेड़के पास मुक़ाबलह हुआ. लड़ाई होने बाद जब परसरामको मालूम हुआ, कि धन्ना पोशीदह तौरपर साहू राजासे मिलगया है, वह सितारेको भाग गया; पीछेसे साहू राजा भी फ़ौज लेकर चला, और सितारेपर क़बज़ह करके विक्रमी १७६५ चैत्र [हि० ११२० मुहर्रम = ई० १७०८ मार्च] में शंभाकी जगह गद्दीपर बिठाया गया. उसने धन्नाको सेनापति, बाला विश्वनाथ भट्टको कारकुन, जो पेशवा खानदानकी बुन्याद डालनेवाला था, गदाधर प्रल्हादको प्रतिनिधि, और भैरव पन्थ पिंगलेको पेशवा मुक़र्रर किया. शिवाके खानदानमें आपसकी बहुतेरी लड़ाइयां होती रहीं, लेकिन् राजा साहू हर एकमें फ़त्हयाब होता गया; परनाला और विशाल गढ़ भी राम राजाके कुटुम्बसे छीन लियेगये. इन्हीं दिनोंमें धन्ना मरगया, और उसकी जगह उसका बेटा चन्द्रसेन सेनापति बनाया गया. विक्रमी १७६७ [हि० ११२२ = ई० १७१०] में राम राजाकी स्त्री ताराबाईने परनाला छीन लिया, और कोल्हापुर वग़ैरह ज़िलोंपर भी क़बज़ह करलिया, साहू राजाके मुलाज़िमोंमें नाइत्तिफ़ाक़ी होने लगी, जो शुरूमें तो पोशीदह तौरपर ही होती रही, परन्तु विक्रमी १७७० [हि० ११२५ = ई० १७१३] में चन्द्रसेन जादव व बाला विश्वनाथमें ज़ाहिरा लड़ाई हुई, जिसपर बाला भागकर पुरन्दर होता हुआ पांडूगढ़ पहुंचा, मगर चन्द्रसेनने उसको वहां भी जाघेरा. तब साहू राजाने बालाका मददगार बनकर हैबतराव नीबालकरको उसकी मददके लिये भेजा. चन्द्रसेन उससे शिकस्त खाकर पहिले कोल्हापुर और पीछे निज़ामके पास पहुंचा, जिसने उसको एक जागीर भी दी. साहू राजाने सेनापतिका काम मन्ना मोरे को दिया, और बाला विश्वनाथका बहुत कुछ इख्तियार बढ़ाया. कुछ अरसह बाद निज़ामसे साहू राजाके प्रधान बाला विश्वनाथकी लड़ाई हुई; और इसके खत्म होने पीछे और भी कई लड़ाइयां होती रहीं. आख़िरकार विक्रमी १७७१ [हि० ११२६ = ई० १७१४] में बालाने साहू राजाका पेशवा नियत होकर अपना बहुतसा इख्तियार बढ़ालिया. विक्रमी १७७५ [हि० ११३० = ई० १७१८] में वह दिल्ली गया, और वहांसे कई जागीरोंकी सनद हासिल करके विक्रमी १७७७ [हि० ११३२ = ई० १७२०] में वापस आने बाद मरगया.

विक्रमी १७७८ [हि० ११३३ = ई० १७२१] में बाला विश्वनाथका बेटा बाजीराव पेशवा बना. विक्रमी १७८४ [हि० ११३९ = ई० १७२७] में निज़ामुल्मुल्कने कोल्हापुर व सितारामें फ़साद उठाया; निज़ामुल्मुल्क और साहूके आपसमें लड़ाई हुई, जिसमें निज़ामने शिकस्त खाई. विक्रमी १७८६ [हि० ११४१

= ई० १७२९] में कोल्हापुरके राजा शंभासे साहूकी लड़ाई हुई, और उसमें राम राजाकी विधवा ताराबाई गिरिफ़्तार होकर सितारामें आई. तब शंभाने साहूसे सुलह करली. विक्रमी १७८७ [हि० ११४२ = ई० १७३०] में एक अह्दनामह आपसमें क़रार पाया, कि जिसके मुताबिक़ दो नदियां याने वारना और कृष्णा दोनों रियासतोंकी सर्हद क़ाइम हुई; तास गांव व मीरज वग़ैरह दूसरे ज़िले राजा साहूको मिले. फिर त्रिंबकराव दाभाड़े और बाजीराव पेश्वासे लड़ाई हुई, जिसमें त्रिंबकराव मारा गया. तब उसका बेटा जशवन्तराव सेनापति बनायागया, जिसके बालक होनेके सबब पेला गायकवाड़ उसके तअ़ल्लुक़के कार बारकी निगरानीपर मुक़र्रर हुआ. विक्रमी १७९२ [हि० ११४८ = ई० १७३५] में जंजीरेके सीधियोंसे रायगढ़ छीन लिया.

विक्रमी १७९७ वैशाख शुक्ल १ [हि० ११५३ ता० २९ मुहर्रम = ई० १७४० ता० २८ एप्रिल] को बाजीराव मरगया, और उसका बेटा बाला बाजीराव पेश्वा हुआ. इस वक़्त हिन्दुस्तानमें अक्सर जगह मरहटे फैलगये. विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई० १७४९] में साहू राजा लावलद मरगया. साहूने पेश्तर उदयपुरके महाराणा दूसरे जगत्सिंहसे दर्ख़ास्त की थी, कि अपने छोटे भाई नाथसिंह को, जो बागोरके महाराज हैं, मुझे दत्तक दीजिये; लेकिन् कई कारणोंसे महाराणाने इस बातको मंजूर नहीं किया.

साहू राजाके मरने बाद सीसोदिया मरहटोंकी रियासत बिल्कुल ब्राह्मणों याने पेश्वाओंके हाथमें चली गई; उनकी विधवा सकवारबाईने कोल्हापुरसे शंभा राजाको गोद लेना चाहा, लेकिन् ताराबाईने राम राजाको शिवाका बेटा और अपना पोता बतलाकर गोद रखा दिया. वह साहूका दत्तक होकर सितारेका मालिक बना. साहूके मरने बाद बाला बाजीराव पेश्वा सितारेमें आया, और प्रतिनिधिको क़ैद करके सकवारबाईको सती करवा दिया; उसने रियासतका इन्तिज़ाम करके राघव घोंसलाको अपनी तरफ़ करलिया, (जो पीछे नागपुरके राजाओंकी बुन्याद डालने वाला हुआ). मालवाके ज़िले, जो बाजीराव पेश्वाने हासिल किये थे, हुल्कर, सेंधिया व पंवारने तक्सीम करलिये. पेश्वाने साहू राजाके प्रतिनिधि जगजीवनको क़ैदसे रिहा किया, मगर बहुतसी जागीर उसकी लेली. फिर यमा शिवदेवने बग़ा-वत उठाई, लेकिन् उसको पेश्वाके रिश्तेदार सदाशिव भाऊने रोका. पेश्वाने पन्थ सचिवसे सिंहगढ़का क़िला लेलिया, और सितारेका क़िला ताराबाईके सुपुर्द किया; वह वहांपर मए राम राजाके रही. इसने फ़साद उठाना चाहा, परन्तु कामयाब न हुई, तब दामा गायकवाड़को बुलवाया. कृष्णा नदीके किनारे आरला और नीमके क़रीब पेश्वाके अफ़्सरोंसे लड़ाई हुई; दामाने फ़त्हयाब होकर कई

क़िले ताराबाईको दिला दिये. नाना पुरन्दरीने हमला करके दामाको भगा दिया. वह वाईके क़रीब जौरखोरा ग्राममें जा ठहरा, जहां पहुंचकर पेश्वाने उसे गिरिफ्तार किया, और क़ैद करके पूनामें भेजदिया; सितारा ताराबाई व राम राजाके क़ब्ज़हमें रहने दिया. पेश्वाके चले जाने बाद ताराबाईने रामोसियोंकी एक बड़ी फ़ौज एकट्ठी की, और वाई तथा सिताराके ज़िलोंपर क़ब्ज़ह करलिया. विक्रमी १८११ [हि० ११६७ = ई० १७५४] में दामा गायकवाड़ पेश्वाका दोस्त बनकर रिहा हुआ, और उसने पेश्वाके भाई रघुनाथरावके साथ गुजरातमें जाकर अह्मदाबादपर क़ब्ज़ह करलिया. विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में पेश्वाकी फ़ौजमेंसे सदाशिव भाऊ व पेश्वाके बेटे विश्वासराव वगैरह पानीपतकी लड़ाईमें अह्मदशाह अब्दालीसे लड़कर मारेगये. इस ख़बरके सुननेसे थोड़े दिनों बाद बाला बाजीराव पेश्वा भी मरगया, और उसका बेटा माधवराव पेश्वा हुआ. इसी विक्रमीके मार्गशीर्ष [हि० ११७५ जमादियुलअव्वल = ई० डिसेम्बर] में ताराबाई भी इन्तिक़ाल करगई; फिर माधवराव और उसके काका रघुनाथरावमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई, लेकिन् रघुनाथरावने औरंगाबादके मुसल्मान हाकिमसे मदद लेकर अपने भतीजेको शिकस्त देने बाद कुल कारोबार अपने हाथमें लेलिया; मगर उसने अपनी मददके लिये मुसल्मानोंको जो ज़िला देनेका इक़ार किया था, वह पूरा नहीं किया. इस पर निज़ाम व पेश्वासे लड़ाइयां हुईं; निज़ामने पूना और दूसरे मुल्कको भी बर्बाद किया, लेकिन् गोदावरीके किनारे राकसबन (राक्षसबन) के पास शिकस्त खाई. विक्रमी १८२५ [हि० ११८१ = ई० १७६८] तक माधवरावने अपने चचाके साथ मेल रक्खा, उसके बाद रघुनाथराव बाग़ी हुआ, जिसको माधवरावने क़ैद करलिया.

विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में माधवराव मरगया. इसके मरनेसे बड़े बड़े सर्दार ख़ुद मुख़्तार होगये, और गवर्मेन्ट अंग्रेज़ीको भी दख़्ल देनेका मौक़ा मिला. माधवरावका छोटा भाई नारायण राव पेश्वा बना, जो थोड़े दिनों बाद मारडाला गया. फिर उसका चचा रघुनाथराव पेश्वा बना, लेकिन् उससे सब सर्दार नाराज़ थे; उनको मालूम होगया, कि नारायणरावकी विधवा स्त्रीको गर्भ है, इसलिये उसे क़िले पुरन्दरमें लेगये, और विक्रमी १८३१ अधिक वैशाख [हि० ११८८ सफ़र = ई० १७७४ एप्रिल] में लड़का पैदा होनेपर उसका नाम दूसरा माधव राव रक्खा. इस बातसे रघुनाथराव दबकर गुजरातमें चलागया, क्योंकि उसको गवर्मेन्ट अंग्रेज़ीसे मददकी उम्मेद थी, परन्तु गवर्मेन्ट बंगालके हुक्मसे कर्नेल

अफ़्सरोंने व मक़ाम पुरन्दर विक्रमी १८३३ चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० ११९० मुहर्रम = .ई० १७७६ मार्च] में पेश्वाके अ़हूदनामहपर दस्तख़त करदिये, इससे रघुनाथराव ना उम्मेद होगया. विक्रमी १८३४ [हि० ११९१ = .ई० १७७७] में राम राजा दत्तक, जो नामके लिये सितारेका राजा कहलाता था, मरगया; और उसकी जगह दत्तक राजा साहू दूसरा गद्दीपर बिठाया गया.

इसके बाद गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ हुल्कर व सेंधिया वगै़रह मरहटोंकी कई लड़ाइयां हुईं, और अक्सर मरहटे ग़ालिब रहे. विक्रमी १८३९ [हि० ११९६ = .ई० १७८२] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ दूसरा अ़हूदनामह हुआ, जिससे सालसेटीके सिवा कोकणका .इलाक़ह मरहटोंको देकर रघुनाथरावको पेन्शन देनेका इक़्रार करना पड़ा; इसके बाद कई सालतक अम्न रहा.

माधवराव पेश्वा, जो नाना फड़नविसके दबावमें था, विक्रमी १८५२ आश्विन शुक्ल १० [हि० १२१० ता० ९ रबीउस्सानी = .ई० १७९५ ता० २३ ऑक्टोबर] को खुद कुशीके इरादेसे महलसे गिरकर मरगया. विक्रमी १८५३ मार्गशीर्ष [हि० १२११ जमादियुस्सानी = .ई० १७९६ डिसेम्बर] में रघुनाथरावका बेटा बाजीराव, जो नाना फड़नविसकी क़ैदमें था, शिवनेरसे लायाजाकर माधवरावकी जगह पेश्वा बनाया गया. इन्हीं दिनोंमें सितारेका राजा साहू, जो एक क़ैदीके मुवाफ़िक़ था, क़िले सितारापर क़ाबिज़ होगया; और कुछ लड़ाई होने बाद क़ैदी बनाया गया. राजाका भाई चतरसिंह कोल्हापुरको भाग गया, तब पेश्वाकी फ़ौज परशराम भाऊकी मातह्तीमें कोल्हापुरसे लड़ती रही. आख़िरकार परशराम कोल्हापुर वालोंके हाथसे मारागया, और उसकी फ़ौज भाग गई. दोबारह फ़ौज भेजी गई, लेकिन् नाना फड़नविसके मरनेसे पेश्वाको कोल्हापुरसे सुल्ह करनी पड़ी.

विक्रमी १८५९ पौष [हि० १२१७ शअ़्बान = ई० १८०२ डिसेम्बर] में पेश्वा बाजीराव दूसरेने अंग्रेज़ोंके साथ अ़हूद करलिया, जिस वक़्त कि वह जशवन्तराव हुल्करसे शिकस्त खाकर पूनाको छोड़ भागा था. अंग्रेज़ी फ़ौजने बाजीरावको मदद देकर पूनामें बिठाया, लेकिन् उसने अपने सर्दारोंपर बहुतसी सख़्तियां कीं, और मुल्कमें बद इन्तिज़ामी फैलती रही. तब दूसरी दफ़ा विक्रमी १८७४ ज्येष्ठ [हि० १२३२ रजब = .ई० १८१७ मई] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे अ़हूदनामह हुआ, जिसमें यह मत्लब था, कि अह्मदनगरका क़िला और कंटिन्जेण्ट फ़ौज ख़र्चके एवज़ सिंहगढ़, पुरन्दर व रायगढ़ वगै़रह क़िले देकर सर्दारों व जागीरदारोंके साथ उस अ़हूदनामहके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे, जो विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में हुआ था. विक्रमी १८७४

कार्तिक कृष्ण ११ [हि० १२३२ ता० २४ ज़िल्हिज = ई० १८१७ ता० ५ नोवेम्बर] को पेश्वाने दग़ाबाज़ीसे पहिले गवर्मेण्टकी मदद करनेका वादा किया, लेकिन् उसके बर्ख़िलाफ़ अंग्रेज़ी फ़ौजपर हमलह करदिया. लड़ाईमें बाजीराव पेश्वा भागगया, और अंग्रेज़ोंने पूनापर दख़्ल करके उसका पीछा किया. विक्रमी १८७४ पौष कृष्ण ९ [हि० १२३३ ता० २३ सफ़र = ई० १८१८ ता० १ जैन्युअरी] को भीमा नदीके किनारे कोड़ गांवके क़रीब २५००० मरहटी फ़ौजका मुक़ाबलह जेनरल स्मिथने अंग्रेज़ी लश्करके ८०० आदमियोंसे किया, और फ़त्ह पाकर सितारा भी लेलिया, क्यौंकि सिताराके राजाको भी पेश्वाने अपना शरीक बनाया था. इसी विक्रमीकी माघ शुक्ल १४ [हि० ता० १४ रबीउस्सानी = ई० ता० २० फ़ेब्रुअरी] को जेनरल स्मिथने पेश्वाको जालिया, मुक़ाबलह होने बाद सितारेका राजा गिरिफ़्तार हुआ, और पेश्वा भाग गया, लेकिन् वह भी विक्रमी १८७६ ज्येष्ठ [हि० १२३४ रजब = ई० १८१९ मई] में धूलकोटके पास सर जॉन माल्कमके ताबे होगया. सिताराके राजा साहू दूसरेकी जगह विक्रमी १८७५ चैत्र शुक्ल ८ [हि० १२३३ ता० ७ जमादियुस्सानी = ई० १८१८ ता० १४ एप्रिल] को उसका बेटा प्रतापसिंह गद्दीपर बिठायागया. पेश्वाके बाक़ी क़िलोंपर भी गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने क़बज़ह करलिया, और सिताराके शामिल नीरा नदीसे वारना तक और घाट (सह्याद्रि) से भीमा तक इलाक़ह रहने दिया, लेकिन् राजाके होश्यार होने तक कप्तान ग्रैंटडफ़ रियासती इन्तिज़ामके वास्ते मुक़र्रर हुआ, और बाक़ी ज़िले दूसरे अफ़्सरोंके सुपुर्द किये गये. सबका अफ़्सर मिस्टर एल्फ़िन्स्टन था. विक्रमी १८७९ वैशाख [हि० १२३७ रजब = ई० १८२२ एप्रिल] में राजा प्रतापसिंहको पूरा इख़्तियार दियागया, लेकिन् थोड़े दिनोंके बाद वह अंग्रेज़ोंके दबावसे नफ़रत और अह्दनामहकी शर्तोंके ख़िलाफ़ दूसरे रईसोंसे ख़त किताबत करने लगा; तब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने उसे विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = ई० १८३९] में गद्दीसे ख़ारिज करके नज़र क़ैदीके तौर इज़्ज़तके साथ बनारस भेजदिया; और उसके छोटे भाई शाहजीको गद्दीपर बिठाया. उसने राज्यका प्रबन्ध बहुत उम्दह किया, विक्रमी १९०५ [हि० १२६४ = ई० १८४८] में शाहजी मरगया. उसके कोई औलाद न होनेके सबब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने राज्यको अपने मुल्कमें शामिल किया, और उसकी तीन विधवा राणियोंके लिये पेन्शन मुक़र्रर करदी, जो विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] तक सब इस दुन्यासे कूच करगईं, और सिताराके राज्यका ख़ातिमह हुआ. सिर्फ़ एक शाख़ इस ख़ानदानकी कोल्हापुरमें बाक़ी रही, जो शिवाके दूसरे बेटे राम राजाकी औलादमें है.

कोल्हापुर.

इस देशपर पहिले सिल्हारा व यादव राजपूतोंका अधिकार था. विक्रमी १००६ [हि० ३३७ = ई० ९४९] से विक्रमी १२६३ [हि० ६०१ = ई० १२०५] के क़रीब तक सिल्हारा वंशके राजा १ जतिग, २ नाइम्म, (नाइ वर्म्मा), ३ चन्द्रराज, ४ जतिग दूसरा, ५ गौंक्क, ६ मारसिंह, ७ गूवल, ८ भोज, ९ बल्लाल, १० गंडरादित्य, ११ विजयार्क, और १२ भोज दूसरा, क्रमसे राज्य करते रहे. फिर दूसरे भोजसे देवगिरिके यादव राजा जैत्रपालके पुत्र सिंघनने कोल्हापुरको छीनकर देवगिरिमें मिला लिया. सिंघनके बाद कृष्ण, महादेव, रामदेव और शंकर देवगिरिके राजा हुए. रामदेवके वक़्में अलाउद्दीन खिल्जीने देवगिरिपर हमलह किया, तबसे यादव कमज़ोर हुए. विक्रमी १३७५ [हि० ७१८ = ई० १३१८] में अलाउद्दीनके तीसरे बेटे मुबारकने यादवोंका ख़ातिमह किया, और देवगिरिपर अपना क़बज़ह जमालिया; उस वक़्से कोल्हापुर भी मुसल्मानोंके क़बज़हमें आया. इसके बाद विक्रमी १७१६ [हि० १०६९ = ई० १६५९] में शिवा घोंसलाने वहांपर अपना दख़्ल किया.

शिवाके दूसरे बेटे राम राजा (१) के दो बेटे, शिवा और शंभा थे. जब राम राजाका इन्तिक़ाल विक्रमी १७५७ [हि० ११११ = ई० १७००] के क़रीब होगया, तब उसका बेटा शिवा गद्दी नशीन हुआ; और बारह वर्ष तक रियासतपर हुक्मरानी करने बाद विक्रमी १७६९ [हि० ११२४ = ई० १७१२] में फ़ौत होगया. इसके बाद उसका छोटा भाई शंभा गद्दीपर बैठा, जिसके वक़्में कई बार अंग्रेज़ी फ़ौजकी चढ़ाइयां हुईं. वह विक्रमी १८१७ [हि० ११७३ = ई० १७६०] में लावलद इन्तिक़ाल करगया. इसलिये घोंसला ख़ानदानसे एक लड़का लाया गया, जिसको दूसरा शिवा नाम रक्खा जाकर रियासतका वारिस क़ाइम किया; और राज्यका प्रबन्ध शंभाकी विधवा स्त्री करती रही; लेकिन् बहुतसे फ़सादोंकी तरक़ी होनेके सिवा अम्नकी सूरत न देखकर गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने विक्रमी १८२२ [हि० ११७८ = ई० १७६५] में वहां फ़ौज भेजी, और एक अह्दनामह आपसमें क़रार पाया, जिसका नतीजह कुछ न निकला. तब सर्कार इंग्लिशियहने विक्रमी १८४९ [हि० १२०६ = ई० १७९२] में फिर फ़ौज

---

(१) राम राजाकी विधवा स्त्री तारा बाई और उसके बेटोंने सितारासे जुदा होकर कोल्हापुरकी राजधानी क़ाइम की.

भेजी, और दोबारह अह्दनामह हुआ. विक्रमी १८६८ [हि० १२२६ = ई० १८११] में राजाकी कई लड़ाइयां दक्षिणकी दूसरी रियासतोंके साथ हुईं, और गवर्मेंट अंग्रेज़ीने बीचमें पड़कर फ़साद मिटाया. इस मौक़ेपर तीसरी दफ़ा और अह्दनामह होने बाद विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में दूसरा शिवा मरगया. इसके दो बेटे १ शंभू या आबा साहिब, और २ शाह या बाबा साहिब थे. इनमेंसे बड़ा आबा साहिब गद्दीपर बैठा. विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में इसने पेश्वाके मुक़ाबलहपर अंग्रेज़ोंको मदद दी, जिसके एवज़ सर्कारसे कुछ ज़िले भी हासिल किये; लेकिन् विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में वह मारागया, और उसका एक बच्चा, जो बाक़ी रहा था, वह भी मरगया; तब उसका छोटा भाई शाह बावा साहिब विक्रमी १८७९ [हि० १२३७ = ई० १८२२] में गद्दीपर बैठा.

विक्रमी १८७९ से १८८६ [हि० १२३७ से १२४४ = ई० १८२२ से १८२९] के दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ीको उसपर तीन बार फ़ौज भेजनी पड़ी; और इन लड़ाइयोंमें तीन ही दफ़ा अह्दनामह बदलागया. विक्रमी १८९५ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० १२५४ ता० ११ रमज़ान = ई० १८३८ ता० २९ नोवेम्बर] को बाबा साहिबका देहान्त हुआ, और उसका कम उम्र बच्चा तीसरा शिवा गद्दीपर बिठाया गया. इस अ़र्सेमें रियासतका इन्तिज़ाम शिवाकी माता और एक कॉन्सिलने किया, मगर फिर गवर्मेंट अंग्रेज़ीको निगरानी रखनी पड़ी. विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = ई० १८६२] में राजाको इख़्तियार देकर सर्कारने एक अह्दनामह क़ाइम किया. यह राजा विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें सर्कारका ख़ैरख़्वाह रहा था. विक्रमी १९२३ [हि० १२८२ = ई० १८६६] में इसके लावलद मरजानेपर इसकी बहिनका बेटा राजा राम गोद लिया जाकर राजका मालिक बनाया गया, जो विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में यूरोपकी सैर को गया, और उसी तरफ़ इटलीकी राजधानी फ़्लॉरेन्समें मरगया. इसके बाद नारायणराव घोंसलेको दत्तक लिया, जिसका नाम गद्दीपर बैठने बाद चौथा शिवा रक्खा गया. वह विक्रमी १९४० पौष कृष्ण ११ [हि० १३०१ ता० २४ सफ़र = ई० १८८३ ता० २५ डिसेम्बर] को लावलद मरगया, उसकी जगह कागल वालोंके बेटे जशवन्तरावको गोद रक्खा जाकर गद्दीपर बिठाया गया, और उसका नाम शाह रक्खा गया. इस रियासतकी सलामी १९ तोप, क्षेत्रफल (१) २८१६ मील मुरब्बा,

(१) डॉक्टर हंटरके गज़ेटिअरसे लिखा गया है.

आबादी ८००१८९ आदमी और आमदनी २२१९७६०) रुपये सालानह है.

तंजावर.

तंजावरकी रियासत भी सिताराके राजाओंकी एक छोटी शाख़ है. एचिसन् साहिबकी ट्रीटीकी पांचवीं जिल्दमें लिखा है, कि शिवाका चचा व्यंका (१) इस रियासतकी बुन्याद डालने वाला हुआ, और उसीके वंशमें साहू था, जिससे प्रतापसिंहने, जो कम अस्ल था, यह रियासत ज़बर्दस्ती छीन ली. यह औरंग-ज़ेब और फ़रांसीसियोंके दर्मियान पहिले लड़ाइयां होनेके वक्त तंजावरपर क़ाबिज़ था.

विक्रमी १८१९ [हि० ११७५ = ई० १७६२] में कर्नाटकके नव्वाबने इस राजापर चढ़ाई करनेमें अंग्रेज़ोंसे मदद चाही, मगर मदरास गवर्मेंएटने बजाय फ़ौजी मदद देनेके मध्यस्त होकर पिछले चढ़े हुए बाईस लाख रुपये ख़िराजके दिलाकर आइन्दहके लिये चार लाख रुपया सालानह देनेका इक़ार राजासे करादिया.

इसके बाद प्रतापसिंह मरगया, और उसके बेटे तुलजाने विक्रमी १८२८ [हि० ११८५ = ई० १७७१] में रमनाड़पर चढ़ाई की, जो कर्नाटकके मातह्त था. तब नव्वाब कर्नाटककी दर्ख्वास्तके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ोंने राजापर फ़ौज भेजी; लेकिन् नव्वाबके बेटेने राजासे बाला बाला एक अ़ह्दनामह करलिया, जिसमें यह दर्ज था, कि आठ लाख रुपये चढ़े हुए ख़िराजके और साढ़े बत्तीस लाख फ़ौज ख़र्चके देकर सुलह करलेवें. गवर्मेंएट अंग्रेज़ी इस अ़ह्दसे नाख़ुश हुई. राजा इस अ़ह्दनामहकी शर्तोंको पूरा न करसका, तब वेल्लमका क़िला और कोइलाड़ी व यलागरके ज़िले नव्वाबको देदिये.

विक्रमी १८३० [हि० ११८७ = ई० १७७३] में जब इस राजाका मैसोरवाले नव्वाब हैदरअ़लीसे मिलावट रखना पाया गया, तो अंग्रेज़ोंने नव्वाबके ज़रीएसे फ़ौज भेजकर विक्रमी आश्विन कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० ता० १६ सेप्टेम्बर] को उससे तंजावर छीन लिया, और उसको क़िलेमें क़ैद करलिया; लेकिन् ईस्ट इण्डिया कम्पनीने मद्रास गवर्मेंएटको राजाका मुल्क उसे वापस देदेनेके लिये कहा, जिसपर विक्रमी १८३३ वैशाख कृष्ण ८ [हि० ११९० ता० २१ सफ़र = ई० १७७६ ता० ११ एप्रिल] को राजाको पीछा इख्तियार दिया गया; और एक अ़ह्दनामह

---

(१) डॉक्टर हंटर इसको शिवाका भाई लिखते हैं.

इस मत्लबसे क़रार पाया, कि राजा कम्पनीके बख़िलाफ़ न हो, और चार लाख पैगोड़ा फ़ौज ख़र्च तथा २७७ गांव देवे.

विक्रमी १८४४ [हि० १२०१ = ई० १७८७] में तुलजाका देहान्त होगया, और उसका सौतेला भाई अमीरसिंह गद्दीपर बैठा. उसके साथ एक अ़ह्दनामह किया गया, जिसमें दर्ज था, कि राजा पांच हिस्सोंमेंसे दो हिस्से ख़िराज दिया करे, और जब वह लड़ाईमें मदद चाहे, तो उस वक्त दूना ख़िराज लिया-जावे; हर साल तीन लाख पैगोड़ा क़र्ज़ अदा करनेके लिये देता रहे; और कर्नाटक के नव्वाबने, जो ख़िराज अंग्रेज़ोंको देना कुबूल किया, वह भी अदा किया करे.

मैसोरके टीपू सुल्तानकी लड़ाई ख़त्म होनेपर विक्रमी १८४९ श्रावण कृष्ण ९ [हि० १२०६ ता० २२ ज़िल्क़ाद = ई० १७९२ ता० १२ जुलाई] को अमीरसिंहके साथ दूसरा अ़ह्दनामह हुआ, लेकिन् अगले महाराजा तुलजाने शरफ़ू नामी एक लड़का गोद लिया था, जिसके बख़िलाफ़ अमीरसिंह बैठ गया, और उसको अंग्रेज़ी अफ़्सरोंने भी मंज़ूर करलिया. मगर अपील होनेपर वह गद्दीसे उतारा गया, और शरफ़ू बिठाया गया, जिसके साथ विक्रमी १८५६ कार्तिक कृष्ण १२ [हि० १२१४ ता० २५ जमादि युलअव्वल = ई० १७९९ ता० २५ ऑक्टोबर] को फिर अ़ह्दनामह हुआ. इसके वक्तसे रियासतका बिल्कुल इख़्तियार सर्कार अंग्रेज़ीके हाथमें चला गया; राजाको आमदनीका सिर्फ़ पांचवां हिस्सह और एक लाख पैगोड़ा सालानह मिलने लगा. अमीरसिंहकी पच्चीस हज़ार पैगोड़ा सालानह पेन्शन मुक़र्रर हुई, जो अ़ह्दनामह क़रार पानेके तीन वर्ष बाद विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में मरगया. शरफ़ूके वक्तमें इस राज्यका कुल इख़्तियार जाता रहा, केवल नामके लिये तंजावर का क़िला व उसके गिर्दोनवाहका ज़िला उसके इख़्तियारमें बाक़ी रहा. विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में शरफ़ूका इन्तिक़ाल हुआ, और उसका बेटा शिवा गद्दीपर बैठा, लेकिन् वह भी विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = ई० १८५५] में बे औलाद मरगया, और इस ख़ानदानका ख़ातिमह हुआ. शिवाकी एक बेटी बाक़ी रही, जिसको सर्कारसे किसी क़द्र पेन्शन मिलती थी; वह विक्रमी १९४२ [हि० १३०२ = ई० १८८५] में मरगई.

सावन्तवाड़ी.

यह छोटी रियासत घोंसला ख़ानदानकी एक जुदा शाख़के अधिकारमें है.

इस रियासतपर छटी सदी .ईसवीसे आठवीं सदी तक चालुक्य वंशके राजा राज्य करते थे, बाद उनके विक्रमी ९९० [हि० ३२१ = .ई० ९३३] में यादवोंका क़बज़ह हुआ. और विक्रमी १३१८ [हि० ६५९ = .ई० १२६१] में फिर चालुक्योंका दख़ल होगया. विक्रमी १४४८ [हि० ७९३ = .ई० १३९१] में विजयनगरके राजाओंने इस राज्यको लेलिया, जिनको बे दख़्ल करके विक्रमी १४९३ [हि० ८३९ = .ई० १४३६] में बीजापुरके बह्मनी ख़ानदान वाले बादशाहोंने उसपर अपना अधिकार जा जमाया. इसके पीछे घोंसला ख़ानदानका मंगसामन्त नामी एक शख़्स विक्रमी १६११ [हि० ९६१ = .ई० १५५४] में बीजापुरसे बाग़ी होकर वाड़ी (सावन्त वाड़ी) से ६ मीलके फ़ासिलेपर होड़वड़ा गांवमें रहने लगा, और बीजापुरके मुसल्मानोंसे अक्सर लड़ता रहा. परन्तु उसके मरने बाद मुसल्मानोंने मुल्कको अपने क़बज़हमें करलिया. कुछ अ़रसह पीछे इसी ख़ानदानमेंसे फ़ोंड-सामन्तका बेटा खेमसामन्त नामी राजा स्वाधीनता हासिल करके विक्रमी १६९७ [हि० १०५० = .ई० १६४०] में मरगया, और उसका बेटा सोमसामन्त गद्दीपर बैठा, जो १८ महीना राज्य करके मरगया, तब उसके भाई लक्ष्मणसामन्तने उसकी जगह हासिल की. विक्रमी १७२२ [हि० १०७५ = .ई० १६६५] में इसका मृत्यु हुआ. फिर इसका भाई फ़ोंडसामन्त दूसरा गद्दी नशीन हुआ, उसने १० वर्ष राज्य किया. इसके पीछे इसका बेटा खेमसामन्त दूसरा गद्दीपर बैठा. इसने विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = .ई० १६७५] से विक्रमी १७६६ [हि० ११२१ = .ई० १७०९] तक राज्य किया; और उसके बाद उसका भतीजा फ़ोंडसामन्त तीसरा गद्दीपर बैठा. इसके अ़ह्दमें सर्कार अंग्रेज़ीके साथ विक्रमी १७८७ [हि० ११४२ = .ई० १७३०] में एक अ़ह्दनामह क़रार पाया. वह अ़ह्दनामह क़ाइम होनेके बाद सात वर्ष तक राज्य करके विक्रमी १७९४ [हि० ११४९ = .ई० १७३७] में मरगया.

फ़ोंडसामन्तके पीछे उसका पोता रामचन्द्रसामन्त गद्दीपर बैठा. उसके पीछे विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = .ई० १७५५] में उसका बेटा तीसरा खेमसामन्त राज्यका मालिक बना. इसके ज़मानहमें बहुतसी लड़ाइयां हुईं, और विक्रमी १८२२ [हि० ११७८ = .ई० १७६५] में सर्कार अंग्रेज़ीने फ़ौज भेजकर जशवन्तगढ़ या रेड़ीका क़िला लेलिया, जो अ़ह्दनामह होनेपर वापस देदिया गया; परन्तु उसकी शर्तोंपर पूरा पूरा अ़मल दरामद न हुआ, इस सबबसे दूसरे वर्ष फिर एक अ़ह्दनामह तज्वीज़ किया गया, जिसके मुताबिक़ उसने विंगूरलाका क़िला १२ वर्षके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको सौंप दिया. विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = .ई० १८०३] में वह बेऔलाद मरगया, और कुछ अ़रसे तक झगड़ा बखेड़ा चलता रहा; लेकिन् विक्रमी १८६२

[हि० १२२० = ई० १८०५] में खेमसामन्तकी विधवा राणीने रामचन्द्रसामन्त को, जिसका दूसरा नाम भाऊ साहिब था, गोद लेकर रियासतका मालिक बनाया. यह विक्रमी १८६४ [हि० १२२२ = ई० १८०७] में क़त्ल हुआ, और इसकी जगह फोंडसामन्त चौथा गद्दीपर बैठा. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में इसका भी देहान्त होगया, तब इसका बेटा चौथा खेमसामन्त गद्दीपर बैठा. इसके वक्में विक्रमी १८७५ फाल्गुन कृष्ण ७ [हि० १२३४ ता० २१ रबीउस्सानी = ई० १८१९ ता० १७ फेब्रुअरी] को गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे एक अह्दनामह क़रार पाया, जिसके अनुसार यह रियासत ब्रिटिश गवर्मेंटकी हिफ़ाज़तमें आई. सर्कार अंग्रेज़ीने तीस हज़ार रुपया सालानह आमदनीका एक पर्गनह, जो पहिले सावन्तवाड़ीसे लेलिया था, वापस राजाको देदिया. फिर कोल्हापुर और इस रियासतके दर्मियान ख़िराजकी बाबत विक्रमी १८७७-७९ [हि० १२३५-३७ = ई० १८२०-२२] में फ़साद उठा, लेकिन् विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = ई० १८२६] में सर्कार अंग्रेज़ीने सावन्तवाड़ीका एक इलाक़ह कोल्हापुर वालोंको दिलाकर उसका फ़ैसला करादिया.

विक्रमी १८८७-८९ [हि० १२४५-४७ = ई० १८३०-३२] में ख़ानगी बग़ावतके सबब राजाको एक अह्दनामह करना पड़ा, जिसमें रियासती इन्तिज़ामकी बाबत कई शर्तें हुईं. फिर विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में एक दूसरा अह्दनामह हुआ, जिसके मुताबिक़ समुद्र और इलाक़हकी राहदारीका मह्सूल गवर्मेंटने अपने इख़्तियारमें लिया, और उसके एवज़ कुछ रुपया नक़्द रियासतको मुक़र्रर करदिया. इसी सालमें दूसरे अह्दनामहके मुवाफ़िक़ राजाकी रज़ामन्दीसे रियासतका इन्तिज़ाम भी सर्कार अंग्रेज़ीने अपने हाथमें लेलिया. विक्रमी १९२४ आश्विन [हि० १२८४ जमादियुस्सानी = ई० १८६७ ऑक्टोबर] में राजाका देहान्त हुआ, और उसका बेटा फोंडसामन्त पांचवां गद्दीपर बैठा, जिसका दूसरा नाम आना साहिब प्रसिद्ध है. यह शख़्स विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] की एक बग़ावतमें शामिल होगया था, परन्तु सर्कार अंग्रेज़ीसे उसका क़ुसूर मुआफ़ किया जाकर गद्दीपर बैठनेके वक्त बग़ावत दबानेका फ़ौज ख़र्च और एक सालकी आमदनीका नज़ानह लिया गया. विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में वह मरगया, और उसका बेटा रघुनाथसामन्त रियासतका वारिस बना, जो अब मौजूद है.

इस रियासतकी सलामी ९ तोप, रक़बह ९०० मील मुरब्बा, आबादी १७४४३३ आदमी, और आमदनी ३२५०००) रुपये सालानह है.

रियासत नागपुर.

यह भी घोंसला ख़ानदानमेंकी एक रियासत गिनी गई है, क्योंकि इस ख़ानदानके राजा यहां भी राज्य करते थे. यहांपर पहिले गौंड वग़ैरह जातिके राजा राज्य करते रहे, जब राजा चांद सुल्तान अपने पीछे १ बुर्हानशाह और २ अक्बरशाह (१) नामके दो बेटे छोड़कर विक्रमी १७९६ [हि० ११५२ = ई० १७३९] में मरगया, और वलीशाह नामी एक दूसरे शख़्सने राज्य छीन लिया, तब चांद सुल्तानकी विधवा राणीने बरारसे राघव घोंसलाको बुलाया, जिसने वलीशाहको क़त्ल करके उस विधवाके दोनों बेटोंको गद्दीपर बिठा दिया. कुछ दिन बाद इन दोनोंमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई, तो बुर्हानशाहने विक्रमी १८०० [हि० ११५६ = ई० १७४३] में राघवको फिर बुलाया, उसने नागपुरमें आकर अक्बरशाहको निकाल दिया, और आप राज्यका रक्षक बनकर वहीं रहने लगा. इसने बुर्हानशाह को नामके लिये राजा रखकर पेन्शन करदी थी, जो अब तक उसके ख़ानदानको मिलती है. थोड़े दिनोंके बाद राघव ख़ुद मुख़्तार बनगया, और विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] में पेश्वासे एक नई सनद हासिल करली, जिसके ज़रीएसे बरार, और गौंडवाना वग़ैरह भी अपने क़बज़ह में करलिया. यह बहुत लम्बा चौड़ा मुल्क हासिल करके विक्रमी १८१२ चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० ११६८ जमादियुस्सानी = ई० १७५५ मार्च] में मरगया. इसके चार बेटे १ जानो, २ साबा, ३ माधव और ४ बिम्बा थे. जानो अपने बापकी गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में मरगया. उसने अपने भाई माधवके बेटे राघवको दत्तक लेलिया था, लेकिन् जानोके मरने पर साबाने दख़्ल करलिया. विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में माधवने साबाको मारडाला, तब राघव गद्दीका मुख़्तार हुआ. राज्यका प्रबन्ध उसका बाप माधव करता रहा, और इसने अपना तअ़ल्लुक़ गवर्मेएट अंग्रेज़ीके साथ रक्खा.

विक्रमी १८४५ [हि० १२०२ = ई० १७८८] में माधव मरगया, तब राघव ख़ुद मुख़्तार बना, और हुल्कर व सेंधियासे मिलकर अंग्रेज़ोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करने लगा, जो कि अ़हृदनामहकी शर्तोंसे बिल्कुल बर्ख़िलाफ़ थी. असाई और आरगांव की लड़ाइयोंमें सेंधिया और राघवकी ताक़त तोड़दी गई, तब विक्रमी १८६० पौष शुक्ल ३ [हि० १२१८ ता० २ रमज़ान = ई० १८०३ ता० १७ डिसेम्बर] को देव-

(१) इन नामोंसे ये राजा मुसल्मान मालूम होते हैं.

गांवमें एक अहदनामह किया गया, जिसके अनुसार कटक और वर्धा नदीके पश्चिम और नर्मदाके दक्षिणका देश तथा गाविलगढ़के पहाड़ राजासे छीन लिये गये. विक्रमी १८६३ [हि॰ १२२१ = ई॰ १८०६] में संभलपुर और पटनाका इलाक़ह राजाको वापस मिला.

विक्रमी १८७३ [हि॰ १२३१ = ई॰ १८१६] में राघव मरगया, और उसका बेटा परसू गद्दीपर बैठा; लेकिन् यह इन्तिज़ाम करनेके लाइक़ न था, इसलिये उसके रिश्तहदार माधव (आपा साहिब) के मातहत एक कौन्सिल मुक़र्रर कीगई, परन्तु परसूको इस कौन्सिलका एतिबार न था. विक्रमी १८७३ ज्येष्ठ कृष्ण ३० [हि॰ १२३१ ता॰ २८ जमादियुस्सानी = ई॰ १८१६ ता॰ २७ मई] को गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे एक अहदनामह हुआ, जिसके मुताबिक़ साढ़े सात लाख रुपया सालानह देना क़रार पाकर एक कन्टिन्जेन्ट फ़ौज उसने अपनी हिफ़ाज़तके लिये रक्खी. विक्रमी १८७४ [हि॰ १२३२ = ई॰ १८१७] में यकायक परसू मरगया, पीछेसे मालूम हुआ, कि आपा साहिबने उसे मरवा डाला, और आप गद्दीपर बैठ गया है. जिस वक़्त पेश्वाने अंग्रेज़ोंसे बख़िलाफ़ होकर रेज़िडेन्सीपर हमलह किया, आपा साहिब भी उसके शरीक होगया था, लेकिन् पेश्वाके शिकस्त खानेपर विक्रमी १८७४ पौष कृष्ण ३० [हि॰ १२३३ ता॰ २८ सफ़र = ई॰ १८१८ ता॰ ६ जन्युअरी] को आपा साहिबको तरफ़से एक अहदनामह करना पड़ा, जिसके अनुसार बहुतसा इलाक़ह छोड़ देनेके बाद रेज़िडेन्टकी सलाहसे इन्तिज़ाम करनेका इक़ार हुआ; परन्तु उसने उस अहदके बख़िलाफ़ कार्रवाइयां कीं, इससे गिरिफ़्तार किया गया, लेकिन् किसी मौक़ेसे निकल भागा, और गोंड देशमें पहुंचा, वहांसे नागपुरपर क़ब्ज़ह करनेकी कोशिशें कीं, जो सब बेफ़ाइदह हुईं. लाचार वह राजपूतानह की तरफ़ जोधपुर आया, और वहींपर विक्रमी १८९७ [हि॰ १२५६ = ई॰ १८४०] में मरगया.

नागपुरमें राघवका दोहिता विक्रमी १८७५ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि॰ १२३३ ता॰ २१ शश्र्वान = ई॰ १८१८ ता॰ २६ जून] को राघव नामसे गद्दीपर बिठाया गया. इसकी कम उम्रीके सबब रेज़िडेन्टोंका अधिकार रहा. विक्रमी १८८३ [हि॰ १२४१ = ई॰ १८२६] में उसको इख़्तियार दियागया, तब एक अहदनामह हुआ, जिसके मुवाफ़िक़ कन्टिन्जेन्ट फ़ौज ख़र्चके लिये एक मुल्की हिस्सह लिया गया, लेकिन् इस अहदनामहको बेजा समझकर गवर्मेंटने यह ज़िले वापस देदिये, और आठ लाख रुपये सालानह लेना क़बूल किया. विक्रमी १९१० मार्गशीर्ष शुक्ल ११ [हि॰ १२७० ता॰ ९ रबीउलअव्वल = ई॰ १८५३ ता॰ ११ डिसेम्बर] को राघवका देहान्त होगया. इसके कोई वारिस न था, इसलिये गवर्मेंट अंग्रेज़ीने तमाम इलाक़ह ज़ब्त

करलिया. विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = ई० १८५५] में राघवंकी विधवा स्त्रीने जानो घोंसलाको दत्तक लिया. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के बल्वेमें इस ख़ानदानने सर्कार अंग्रेज़ीकी ख़ैरख़्वाही की, इसलिये सिताराके ज़िलेमें देवरका इलाक़ह और राजा बहादुरका ख़िताब हमेशहके लिये मिला, और दो लाख तीन हज़ार रुपया सालियानह पेन्शन मुक़र्रर करदी गई.

हमने घोंसला ख़ानदानका मुख़्तसर हाल इसवास्ते लिखा है, कि ये लोग सीसोदिया वंशकी शाख़ कहलाते थे. अब उन लोगोंके नौकर सेंधिया हुल्कर पंवार और गायकवाड़, जो बाक़ी रहकर ख़ुद मुख़्तार राजा कहलाते हैं, उनकी तारीख़ ग्रैन्ट डफ़ व माल्कम साहिब वग़ैरहने लिखी हैं, जिनके हिन्दी व उर्दू तर्जमे भी होचुके हैं, तथापि हम यहां उन रियासतोंकी वंशावली और मुख़्तसर हाल पाठकोंके अवलोकनार्थ दर्ज करते हैं.

ग्वालियर.

ग्वालियरका राज्य पहिले कछवाहोंके तहतमें था और उनके बाद तंवरोंके हाथ आया. परन्तु कछवाहोंका हाल हमको कुछ नहीं मिला, अल्बत्तह जयपुरकी ख्यातसे सिर्फ़ इतना मालूम हुआ है, कि दसवीं सदी विक्रमीके बाद तक कछवाहे ग्वालियरमें राज्य करते रहे; जिनमेंसे आख़री राजा ईषासिंहने यह राज्य अपने भानजेको देदिया था. इसकी बाबत किसी क़द्र हाल जयपुरकी तवारीख़में लिखा जाचुका है - (देखो पृष्ठ १२६८).

कछवाहोंके बाद जो तंवर राजा हुए उनका हाल क़लमी पुस्तकों वग़ैरहसे जेनरल कनिंघमने लिखा है, परन्तु ग्वालियरमें जो पाषाण लेख मिले हैं उनसे यह हाल पूरा पूरा नहीं मिलता; इसलिये हम इस हालको छोड़कर पाषाण लेखके अनुसार जिन राजाओंका हाल मिला है, दर्ज करते हैं.

चौथी सदी ईसवीमें तोरमण और पशुपति राज्य करते थे, जिनके बाद नवीं और दसवीं सदीमें भोजदेव, रामदेव वग़ैरह राजा हुए; और उनके पीछे कच्छप घात (१) वंशके राजा लक्ष्मण, वज्रदामा, मंगलराज, कीर्तिराज, भुवनपाल, देवपाल, पद्मपाल, और महीपाल क्रमसे राज्याधिकारी बने. पीछे भुवनपाल, मधुसूदन, शक्रेंद, नागसिंह, विलंगदेव, वीरसिंह, उद्धरणदेव, गणपतिदेव, डुंगरेंद्रदेव, कीर्तिसिंह, कल्याण-

---

(१) कच्छप घात वंश अर्थात् कछवाहोंको मारने वाला वंश, जो लिखा है उससे मालूम होता है, कि यह तंवर ख़ानदानका नाम है.

मल्ल (कल्याणशाही), मानसिंह (मानशाही), विक्रमादित्य (विक्रमशाही), रामसिंह (रामशाही) (१), शालिवाहन, श्यामशाह, और मित्रसेन (वीर मित्रसेन) वगैरह राजा हुए. लेकिन् मुसल्मानी तवारीख़ोंसे मालूम होता है, कि विक्रमी १५७६ [हि० ९२५ = ई० १५१९] में इब्राहीम बादशाहने ग्वालियरपर (रामशाहके वक़्में) अपना दस्ल जमाया; और मुसल्मानी सल्तनतमें अदला बदली होने बाद उसपर मरहटोंका क़ब्ज़ह हुआ.

माल्कम साहिब अपनी किताबकी पहिली जिल्दके ९५ पृष्ठ में लिखते हैं, कि "राणू सेंधिया छोटे दरजहकी कुलबी ज़ातका आदमी बाईके ज़िलेमें कुमारखेड़ेका पुश्तैनी पटैल था; वह पहिले बाला विश्वनाथ पेश्वाका नौकर हुआ, और बालाके मरने बाद उसके बेटे बाजीराव बल्लालकी नौकरीमें रहा. इससे पहिले वह राणू पेश्वाकी जूतियां उठानेकी नौकरीपर था. एक दिन बाजीराव साहू राजासे सलाह करके बाहर आया, और वह अपनी जूतियां राणूको छातीपर रक्खे हुए सोया देखकर बहुत खुश हुआ, और कहा, कि इसे अपनी नौकरीका बहुत ही ख़याल है; उसने राणूको अपनी पायगाहमें छोटी अफ्सरीपर मुक़र्रर किया, लेकिन् बहुत जल्द तरक़्क़ी होगई. यहां तक, कि जब बाजीराव मालवेका सूबहदार बना, तो राणू बादशाहके पास दिल्ली भेजा गया, और उसने बाजीरावकी तरफ़से इक़ारनामहपर दस्तख़त किये. वह बहुत अच्छा सिपाही था, विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] के लगभग शुजाअलपुर ज़िले मालवामें मरगया, और उसके मरनेसे उस गांवका नाम राणूगंज होगया. जब यह मरा, तो इसके अधिकारमें पैंसठ लाख रुपया सालियानहकी आमदनीका मुल्क था. राणूके एक हम क़ौम स्त्रीसे तीन बेटे, १ जया आपा, २ दत्ता, और ३ जट्टोबा, और राजपूत क़ौमकी दूसरी स्त्रीसे दो बेटे, १ तुका, व २ माधवराव थे."

जया आपा राणूके मरनेसे थोड़े ही दिनों बाद मारवाड़के राजा विजयसिंहके कहनेसे एक खोखर राजपूतके हाथ दग़ासे मारा गया. दत्ता दिल्लीके पास रड़बेड़की लड़ाईमें मारा गया; और जट्टोबा डीगके पास कुम्हेरकी लड़ाईमें क़त्ल हुआ, इसलिये जया आपाके बाद उसका बेटा जनकू मालिक हुआ; लेकिन् यह भी पानीपतकी लड़ाईमें मारा गया, और तुका भी उसी लड़ाईमें काम आया; तब माधव मुरुतार बना. यह भी पानीपतकी लड़ाईमें एक अफ़्ग़ानके हाथसे ज़ख़्मी हुआ था. यह बाजीरावके बेटे बाला-

(१) यह राजा विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में अक्बरसे महाराणा प्रतापसिंह की लड़ाई हुई, तब अपने दोनों बेटों सहित मारा गया- (देखो पृष्ठ १५१).

रावके बड़े सर्दारोंमें गिना गया, और उसके ताबे बहुतसी फ़ौज थी. पानीपत की लड़ाईके तीन वर्ष बाद मल्हारराव हुल्कर भी मरगया, जिससे माधवकी ताक़त बहुत बढ़ी. उसने सेन्ट्रल इन्डियामें सब राजाओंपर ख़िराज लगाकर अपना इख़्तियार ख़ूब बढ़ाया, सिर्फ़ नामके लिये पेश्वाका ताबेदार कहलाता था, और उसीके नामसे कार्रवाई करता था. बालाराव पेश्वाके मरने बाद इसने नर्मदाके उत्तरी तरफ़ हिन्दुस्तानपर अपना इख़्तियार रखना चाहा, और वह दिल्लीके बादशाह शाह आलम सानीका नामके लिये ताबेदार हुआ; गोया उसको बादशाहका नाइब (सूबेदार) कहना चाहिये. सालबाईके अहदनामहके मुताबिक़ वह ख़ुद-मुख़्तार राजा होगया, लेकिन् उसने पेश्वाका तअल्लुक़ नहीं छोड़ा. जब पेश्वाको दिल्लीके बादशाहने "वकील मुतलक़" (नाइब) का ख़िताब दिया, और माधव उसका नाइब बना, तो माधवका क़बजह सतलजसे आगरे तक और अक्सर राजपूतानहमें भी था. उसके पास सोलह पैदल पल्टनें क़वाइद दां और पांच सौ तोपें व एक लाख सवार थे. मालवेका दो तिहाई हिस्सह और दक्षिणके कई अच्छे सूबे उसके इख़्तियारमें थे. एक बहुत उम्दह फ़्रान्सीसी अफ़्सर उसे मिलगया, जिसका नाम डीबाइन था. माधवने राजपूतानहकी ताक़तको भी सद्मह पहुंचाया, और मेवाड़, मारवाड़ व जयपुरसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां कीं, जिनका हाल उक्त रियासतोंकी तवारीख़ोंमें लिखा गया है.

वह दक्षिणमें जाकर विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] में पूना मक़ामपर मरगया. माल्कम साहिब लिखते हैं, कि "यह अंग्रेज़ोंका पूरा दुश्मन था". माधवके कोई बेटा न था, इसलिये उसके भाई तुकाके तीन बेटों १- केबन २- जोटीबा, और ३- आनन्दरावमेंसे तीसरेका बेटा दौलतराव तेरह वर्षकी उम्रमें माधवकी गद्दीपर बिठाया गया. माधवकी विधवा स्त्रियोंने दौलतरावके बर्ख़िलाफ़ बग़ावत की, लेकिन् काम्याबी नहीं हुई. दौलतराव अपनी ताक़तका बहुत भरोसा रखता था, लेकिन् उसने लॉर्ड वेलेज़्ली और लेकसे अलीगढ़, दिल्ली, असाई, आगरा, लसवाड़ी और अरगांवकी लड़ाइयोंमें विक्रमी १८६० [हि० १२२८ = ई० १८०३] में शिकस्तें खाईं, जिससे उसका घमंड जाता रहा; और उक्त वर्षके अन्तमें एक अहदनामह किया, जिसके मुताबिक़ गंगा व जमुनाके बीचका इलाक़ह और जयपुर, जोधपुर, व गोहदके उत्तर तथा अहमद-नगर भड़ोचके ज़िले और अजन्ता घाट व गोदावरीके बीचका मुल्क छोड़दिया. उसने दिल्लीके बादशाह, पेश्वा, निज़ाम, महाराजा गायकवाड़ और दूसरे राजाओंसे,

जिन्होंने सर्कार अंग्रेज़ीको मदद दी थी, अपना तअ़ल्लुक़ छोड़दिया; लेकिन् यह शर्त पिछले अ़ह्दनामहसे कुछ बदल दीगई.

विक्रमी १८८४ चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० १२४२ शअ़्बान = ई० १८२७ मार्च] में दौलतराव ग्वालियरमें मरगया. उसके कोई लड़का न था, इसलिये सेंधियाके ख़ानदानसे एक लड़का मुगटराव चुना गया, जिसको गद्दीपर बिठाकर जनकूराव सेंधिया मश्हूर किया, परन्तु उसका चाल चलन ठीक न था. वह भी विक्रमी १८९९ माघ शुक्ल ८ [हि० १२५९ ता० ६ मुहर्रम = ई० १८४३ ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को मरगया. तब सेंधिया ख़ानदानसे एक आठ वर्षका लड़का लेकर गद्दीपर बिठाया गया, जिस का नाम जियाजीराव सेंधिया रक्खा; और बन्दोबस्तके वास्ते मामा साहिब सितोले मुक़र्रर हुआ, परन्तु इससे काम न चला, तब दादा साहिब ख़ासगी वाला कामका मुख़्तार बना, मगर इसकी कार्रवाई गवर्मेंट अंग्रेज़ीके विरुद्ध मालूम हुई, विक्रमी १९०० पौष शुक्ल ८ [हि० १२५९ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १८४३ ता० २९ डिसेम्बर] को महाराजपुर और पनिआलमें अंग्रेज़ोंसे लड़ाइयां हुईं, जिनमें सेंधियाकी फ़ौजने शिकस्त पाई, और एक अ़ह्दनामह हुआ, उसके मुताबिक़ १८०००००) लाख रुपये सालानह कन्टिन्जेण्ट फ़ौज ख़र्चके लिये और कुछ मुल्क क़र्ज़ और लड़ाईके ख़र्चके वास्ते भी सर्कारको दिया गया. फ़ौजका ख़र्च घटाकर छः हज़ार सवार, तीन हज़ार पैदल, बत्तीस तोपें और दो सौ गोलन्दाज़ रक्खे गये, और यह भी इक़ार हुआ, कि राजाकी नाबालिग़ीमें रेज़िडेण्टकी सलाहसे काम हो.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] तक गवर्मेंटके साथ इक़ारके मुताबिक़ बर्ताव रहा, उक्त सन्के ग़द्रमें कन्टिन्जेण्ट फ़ौजने बग़ावत की, जिससे पोलिटिकल अफ़्सरको भागजाना पड़ा.

विक्रमी १९१५ आषाढ़ [हि० १२७४ ज़िल्क़ाद = ई० १८५८ जून] में तांतिया टोपी बाग़ी फ़ौज लेकर ग्वालियरमें पहुंचा, और महाराजाकी फ़ौज भी उससे मिलगई, तो लाचार महाराजा भागकर आगरे गये. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १९ जून] को सर ह्यूजरोज़की फ़ौजने बाग़ियोंसे ग्वालियर छीनकर महाराजाको फिर क़ाइम किया. उसी दिनसे महाराजाको अपने दीवान दिनकर रावसे नफ़्रत हुई. उन्होंने विक्रमी १९१६ पौष [हि० १२७६ जमादियुलअव्वल = ई० १८५९ डिसेम्बर] में उसको अपनी रियासतसे निकाल दिया, और बाला चिमनाको दीवान बनाया. नव वर्ष बाद इसके ज़ियादह ज़ईफ़ होजानेके सबब यह काम गणपतिराव खटकेको मिला, जो अगले दीवानका

नाइब था. गद्रकी ख़ैरस्वाहीके वाइस महाराजाको ३०००० तीन लाखकी जागीर मिली, और पैदल पल्टनमें दो हज़ार आदमी तथा चार तोप अधिक रखनेका अधिकार मिला. सर्कारका जो ख़िराज बाक़ी था, छोड़ दिया गया; इसके सिवा दस हज़ार रुपये सालानहकी आमदनीवाला बड़वासागरका हिस्सह भी मिलनेकी इजाज़त हुई. अगले अह्दनामहसे कई बातें तब्दील हुईं, इसलिये विक्रमी १९१७ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० [हि० १२७७ ता० २८ जमादियुलअव्वल = ई० १८६० ता० १२ डिसेम्बर] को दूसरा इक़ारनामह लिखा गया, जिसके मुवाफ़िक़ बर्ताव रहा. बहुतसे पर्गने व गांव गवर्मेंएट अंग्रेज़ी व सेंधियाने रज़ामन्दीसे बदल लिये. इस राजाने बड़ा नाम पाया; आगरा और ग्वालियरके बीच वाली रेल तय्यार होनेके वक़ उसने विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में ७५००००० रुपया और विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में इन्दौरसे नीमच तक रेल बनाई जानेके समय ७५००००० रुपया ४ रु० सालियानह सैकड़ाके सूदपर दिया. उनको सर्कार अंग्रेज़ीसे के० जी० सी० एस० आइ० (K. G. C. S. I.) का ख़िताब और दो तोपकी ज़ियादह सलामी हीन हयात मिली.

इस रियासतकी सलामी १९ तोप (१), क्षेत्रफल २९०४६ मील मुरब्बा, आबादी ३११५८५७ बाशिन्दे और १०३४६ गांव हैं. आमदनी १२०००००० रुपया सालानह है. जियाजीराव सेंधिया विक्रमी १९४३ आषाढ़ कृष्ण ३ [हि० १३०३ ता० १७ रमज़ान = ई० १८८६ ता० २० जून] को इस दुन्यासे कूच करगया. यह नामवर, आक़िल व खुशअख़्लाक़ राजा था, उसको सिपाहियानह ढंग ज़ियादह पसन्द था. फ़ौजकी क़वाइद हमेशह आप लेता था. मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अपनी आंखसे देखा है, जब कि महाराजा मालवेका दौरा करनेको नीमचकी छावनी तक आये थे. वापसीके वक़ रामपुरासे भानपुराकी तरफ़ कूच हुआ, तो एक पल्टनका सिपाही पेटमें दर्द होनेसे सड़कके किनारेपर तड़प रहा था, महाराजा घोड़ा दौड़ाते हुए उस जगह आ निकले; सिपाहीको देखकर घोड़ेसे कूदे, और उसका पेट हाथसे मलने लगे; तब बाबा आप्ट्या, दादा खटक्या, बापू सेंधिया वग़ैरह सर्दार भी घोड़ोंसे उतरे, और इन सर्दारोंने सिपाहीको हाथों हाथ उठाकर सर्कारी सामानकी गाड़ीमें डाला, दो चार आदमी उसकी संभालके लिये तईनात करदिये. मैं उस वक़ उस दर्दमन्द सिपाहीसे पचास क़दमके फ़ासिलेपर

(१) लेकिन् इनके इलाक़हमें हमेशह २१ तोपकी सलामी होती है.

अठाणाके रावत् दूलहसिंहके साथ उनके हाथीपर चढ़ा हुआ यह माजरा देख रहा था. हम लोग महाराजाकी रहमदिलीको देखकर तारीफ़ कर रहे थे. हक़ीक़तमें यह महाराजा नेक दिल व क़द्रदान थे. जियाजीरावके अन्त समय सर्कार अंग्रेज़ीने मुरारका क़िला ग्वालियरकी रियासतको सौंप दिया, और महाराजाके बेटे माधवरावको आठ वर्षकी उम्रमें गद्दी मिली. रईसकी कम उम्रीके सबब उनकी माको रियासतका रिजेंट (मुख़्तार) समझा गया, और दीवान रावराजा सर गणपतिराव, के० सी० एस० आइ० को कौन्सिलका प्रेसिडेंट किया गया. विक्रमी १९४६ [हि० १३०६ = ई० १८८९] में सर गणपतिरावके गुज़र जानेसे रईसके नानाको, जो फ़ौजका सिपहसालार था, कौन्सिलकी प्रेसिडेन्सी मिली.

इन्दौर.

इस रियासतके राजाओंका मूल पुरुष मल्हारराव हुलकरका बाप कंधा हुल गांवका रहने वाला गाडरी क़ौम और धनगर गोत्रका अदना आदमी था, जिसकी शादी ख़ानदेशके तालंदा गांवमें नारायणरावकी बहिनके साथ हुई थी. उसी ग़रीबीकी हालतमें उसके गर्भसे विक्रमी १७५० [हि० ११०४ = ई० १६९३] के क़रीब मल्हाररावका जन्म हुआ था.

विक्रमी १७५४ [हि० ११०८ = ई० १६९७] के क़रीब कंधा मरगया, तो उसकी विधवा स्त्री अपने पुत्र मल्हाररावको लेकर ख़ानदेशमें अपने भाई नारायणरावके पास चली आई; उसने अपने भान्जेको भेड़ बकरियां चरानेके लिये दीं. जब मल्हारराव होशियार हुआ, तो नारायणरावने उसे पच्चीस सवारोंका अफ़्सर बनाया, जो क़दमबन्दी नाम मरहटा सर्दारके मातहत थे. मल्हाररावने इस थोड़ेसे गिरोह से अच्छा काम देकर नाम पाया, तब पेश्वाने उसे अपना नौकर बनाया, और एक बड़ी फ़ौजकी अफ़्सरी दी. निज़ाम और कोकणकी लड़ाइयोंमें उसने अच्छे अच्छे काम दिये, जिससे वह पेश्वाके बड़े सर्दारोंमें माना गया.

विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = .ई० १७२८] में मलहाररावको नर्मदाके उत्तर बारह पर्गने मिले, और उसके बाद विक्रमी १७८८ [हि० ११४३ = .ई० १७३१] में सत्तर पर्गने फिर मिले. पेशवाने उसे इख्तियार देदिया. विक्रमी १७९२ [हि० ११४८ = .ई० १७३५] में नर्मदाके उत्तर पेशवाकी जितनी फ़ौज थी, उस सबका वह सेनापति (कमान्डर) होगया. इस फ़ौज खर्चके लिये इन्दौरका बड़ा हिस्सह मुक़र्रर हुआ, जो अब तक कई तब्दीलातके साथ हुल्करके ख़ानदानमें चला आता है.

एक बार मलहाररावने दिल्लीके क़रीब पहुंचकर कालिका देवीका मेला लूट लिया, दूसरी दफ़ा आगरेके क़रीब अवधके बुर्हानुल्मुल्कसे शिकस्त खाई; एक बार उसने दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहकी बेगम मलिकए ज़मानीका सामान रास्तेमें लूट लिया, जो दिल्लीको जाता था. विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] में वह मुग़ल लोगोंसे मिलकर रुहेलोंसे बड़ी बहादुरीके साथ लड़ा, फिर उसको ख़ानदेशमें चान्दौरकी देशमुखी बादशाहसे मिली, जिसकी सनद उसके ख़ानदानमें अबतक मौजूद है. इसके बाद उसने सिकन्दराके आस पास लूट मार मचाई, परन्तु अह्मदशाह अब्दालीकी फ़ौज आ पहुंची, जिससे शिकस्त खाकर हुल्करको भागना पड़ा. इसके पीछे यह फ़ौज एकट्ठी करके मरहटोंकी बड़ी जमइयतके साथ पानीपतके मक़ामपर पठानोंसे लड़नेको पहुंचा, लेकिन् यह लड़ाई मलहाररावकी सलाहके बर्ख़िलाफ़ हुई थी, जिसमें बहुतसा नुक्सान उठाकर मर्हटोंको बर्बादीकी हालतमें भागना पड़ा. इसके बाद मलहारराव मालवेके इन्तिज़ाममें मश्गूल रहा, और छहत्तर वर्षकी अवस्था पाकर विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = .ई० १७६८] (१) में इस दुन्याको छोड़ गया.

मलहाररावका पुत्र खंडेराव था, जो विक्रमी १८११ [हि० ११६७ = .ई० १७५४] में क़िले कुंभेरके मुहासरेमें मारागया और उसके बाद उसकी विधवा अहल्याबाई और एक बेटा मालीराव व एक लड़की बाक़ी रही. पेशवाकी तरफ़से मालीराव मलहाररावका क्रमानुयायी बना, परन्तु गद्दीपर बैठनेके बाद पागल होगया, और नौ महीना राज्य करके विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = .ई० १७६९] में मरगया, तब तमाम रियासती बन्दोबस्त अहल्याबाईने अपने हाथमें लिया. इसने तीस वर्ष तक बहुत उत्तमतासे राज्यका काम चलाया. यह चाल चलनकी बहुत नेक, ईमान्दार, बुद्धिमान, दयावान, लाइक़ और फ़य्याज़ थी. माल्कम साहिब लिखते हैं, कि जैसे जैसे दर्याफ़्त होता है, इसकी नेकियां ज़ियादह मिलती जाती हैं. इसने मैसोरमें व नर्मदाके किनारेपर घाट तथा मन्दिर

(१) हंटर साहिब विक्रमी १८२२ [हि० ११७८ = .ई० १७६५] में मरना लिखते हैं.

बहुत उत्तम बनवाये; और और भी कई तीर्थोंमें उसके बनवाये हुए धर्म स्थान हैं, जिनमें अबतक सदावर्त जारी हैं. इसने तीस वर्षकी उम्रमें राज्य प्रबन्ध अपने हाथमें लिया, और साठ वर्षकी उम्रमें इस दुन्याको छोड़ा (१). उसके कोई लड़का न रहा, केवल एक लड़की थी, जो भी उसके सामने ही अपने पतिके साथ सती होगई; तब उसका कमान्डर इन्चीफ़ (सेनापति) तुकाजी राव गद्दीपर बैठा, जो कुछ दूरका रिश्तहदार हुल्कर क़ौमका था; लेकिन् वह भी गद्दी बैठनेके बाद दो ही वर्ष तक ज़िन्दह रहा. उसके चार लड़के थे, जिनमेंसे बड़ा काशीराव और दूसरा मलहार राव तो विवाहिता स्त्रीसे और तीसरा विठो व चौथा जशवन्तराव, ये दोनों पासवानके पेटसे थे. पेश्वाने काशीरावको मुख़्तार बनाया, और मलहार राव क़त्ल किया गया.

मलहाररावके एक लड़का खंडेराव था, जिसे क़ैद किया, लेकिन् जशवन्तरावने काशीरावको ख़ारिज करके खंडेरावको मुख़्तार बनाया; कुछ अ़र्सेबाद खंडेरावको ज़हर देकर जशवन्तराव मुख़्तार बनगया. इसने फ़तहगढ़, डीग और भरतपुरमें अंग्रेज़ोंसे लड़ाइयां कीं. आख़िरकार लॉर्ड लेकसे दबकर सुलह करली, और वह अपने इलाक़े पाकर खुश हुआ; फिर इन्दौर जाकर राज्य प्रबन्धपर झुका, परन्तु कुछ दिनों बाद पागल होगया; और विक्रमी १८६८ कार्तिक [हि॰ १२२६ रमज़ान = ई॰ १८११ ऑक्टोबर] को ज़िले इन्दौरके क़स्बे भानपुरमें मरगया, जहां उसके समाधि स्थानपर मन्दिरके ढंगकी छतरी बनी हुई है. जशवन्तरावके पागल होनेके समयसे उसकी स्त्री तुलसीबाई राज्य प्रबन्ध चलाती थी, परन्तु उसकी बद चलनीसे बहुतसे बखेड़े उठे. फ़ौजकी बग़ावतसे विक्रमी १८७४ मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि॰ १२३३ ता॰ ११ सफ़र = ई॰ १८१७ ता॰ २० डिसेम्बर] को सिपाहियोंने तीस वर्षकी उम्रमें उसे मारडाला, और जशवन्तरावके एक पुत्र मलहाररावको, जो छोटी क़ौमकी औरत केसराबाईके पेटसे पैदा हुआ था, गद्दीपर बिठाकर भानपुरमें विक्रमी १८७४ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि॰ १२३३ ता॰ १२ सफ़र = ई॰ १८१७ ता॰ २१ डिसेम्बर] को अंग्रेज़ोंसे मुक़ाबलह किया, जिसमें शिकस्त खाने बाद भागना पड़ा.

---

(१) हमने इसका तीस वर्ष हुकूमत करना माल्कम साहिबकी तवारीख़से लिखा है, लेकिन् सय्यद करीमअ़लीकी तारीख़ मालवामें इसकी हुकूमत सत्ताईस वर्ष और विक्रमी १८५० [हि॰ १२०७ = ई॰ १७९३] में इन्तिक़ाल होना लिखा है. उक्त मुन्शीने माल्कम साहिबके क़ौलका रद्दिया भी किया है, लेकिन् वह यह भी लिखता है, कि माल्कम साहिबने अहल्याबाईकी हुकूमतके चालीस वर्ष लिखे हैं, परन्तु हमारे पास माल्कम साहिबकी किताब मौजूद है, उसमें तीस लिखे हैं.

विक्रमी १८७४ पौष कृष्ण ३० [हि० १२३३ ता० २८ सफ़र = ई० १८१८ ता० ६ जैन्युअरी] को मन्दसौरमें एक अ़हदनामह हुआ, जिसके मुवाफ़िक़ मलहारराव हुल्कर अंग्रेज़ी रक्षामें आया. फिर वह इन्दौरमें राज्य करने लगा, लेकिन् उसका चाल चलन बहुत ख़राब था. आख़िरमें सत्ताईस वर्षकी उम्र पाकर विक्रमी १८९० आश्विन शुक्ल १४ [हि० १२४९ ता० १३ जमादियुस्सानी = ई० १८३३ ता० २७ ऑक्टोबर] को उसने इस संसारको छोड़ा.

विक्रमी १८९० पौष शुक्ल ७ [हि० १२४९ ता० ५ रमज़ान = ई० १८३४ ता० १७ जैन्युअरी] को मार्तण्डराव गद्दीपर बिठाया गया, परन्तु दो महीने बाद उसको गद्दीसे उतारकर हरीराव हुल्कर मालिक बन बैठा. यह भी पूरा बद चलन था; विक्रमी १९०० कार्तिक शुक्ल १ [हि० १२५९ ता० १ शव्वाल = ई० १८४३ ता० २४ ऑक्टोबर] को गुज़र गया. इसने अपनी ज़िन्दगीमें बापूराव हुल्करके लड़के खण्डेरावको गोद लेलिया था, जो विक्रमी १९०० मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [हि० १२५९ ता० २० शव्वाल = ई० १८४३ ता० १३ नोवेम्बर] को गद्दी नशीन हुआ; और केवल तीन ही महीने राज्य करने बाद विक्रमी १९०० फाल्गुन् कृष्ण १३ [हि० १२६० ता० २७ मुहर्रम = ई० १८४४ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को मरगया.

गवर्मेएट अंग्रेज़ीने हरीरावकी माता कृष्णाबाईको हुक्म दिया, कि हुल्करके ख़ानदानमेंसे कोई लड़का मुक़र्रर किया जावे. इसपर पहिले उसने मार्तण्डरावको ही लेना चाहा, जिसको हरीरावने ख़ारिज करदिया था, लेकिन् इस बातको सर्कार अंग्रेज़ीने ना मन्ज़ूर किया; तब कृष्णाबाईने भाऊ हुल्करके बेटेको तज्वीज़ करके विक्रमी १९०१ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० १२६० ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १८४४ ता० २७ जून] को गद्दीपर बिठाया, और उसका नाम जशवन्तराव सुत तुक़ाजीराव हुल्कर रक्खा गया. इसकी कम उम्रीके ज़मानहमें रियासतका काम रेज़िडेएट साहिब और कृष्णाबाईकी सलाहसे होता रहा. विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में इसको रियासती इख़्तियार मिला. विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] में हुल्करने चान्दौरके ठिकानेके एवज़ जो अहमदनगरके ज़िलेमें था, मध्य प्रदेशमेंसे सतवास व नीमाड़के पर्गने लेने चाहे. जिसपर विक्रमी वैशाख [हि० ज़िल्क़ाद = ई० मई] में उसकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ ऊपर लिखे दोनों पर्गनोंके २३१ गांव, जिनकी आमदनी २८८७२ रुपया सालानह थी, गवर्मेएटकी तरफ़से उसको दियेगये. चान्दौरके नौ गांव जो हुल्करके क़ब्ज़हमें बाक़ी रहे थे, वे भी विक्रमी १९२२ आषाढ़ [हि० १२८२ मुहर्रम = ई० १८६५ जून] में अंग्रेज़ी सर्कारको दे दिये गये. इन गांवोंकी या दूसरी जागीर वग़ैरहकी कुल आमदनी २९६१९ रुपया सालानह थी.

विक्रमी १९२४ आश्विन [हि० १२८४ जमादियुस्सानी = ई० १८६७ ऑक्टोबर] में हुल्करके दक्षिणी इलाके व बलन्दशहरके ज़िलेकी जागीर वगैरहके एवज़ सर्कार अंग्रेज़ीसे नीमाड़, बड़वाय, धरगांव, खसरौद और मंडलेसरके पर्गने महाराजाको दिये गये, जिनमें १७६ गांव थे. बड़वायमें लोहेकी खानें और बहुत बड़ा जंगल था, उसके एवज़ इन्दौर और नीमाड़के बीचकी किसीक़द्र राहदारी महाराजाने छोड़ दी; और बड़वायमें, जो लोहेका कारखानह था, वह ५०००० रुपया देकर ख़रीद लिया. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में जब छोटा खसरौदका जागीरदार बे औलाद मरगया, तो वह जागीर महाराजाको मिलगई.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रसे पहिले हुल्करको मालवा कंटिन्जेन्ट फ़ौज ख़र्चके लिये १११२१४ रुपया, और मालवा भील कोरके लिये ७८६२ रुपया सालियानह देना पड़ता था, लेकिन् कंटिन्जेन्ट फ़ौजने इसी वर्षमें बग़ावत की, जिससे वह मौकूफ़ करदी गई, और भील कोर बहाल रही, जिसके ख़र्चमें सर्कार अंग्रेज़ीको ९८२८ रुपया सालियानह देना पड़ता है. पाटन पर्गनेके एवज़, जो सर्कारने हुल्करसे लेकर बूंदीको दिया, ३०००० रुपया सालियानह और प्रतापगढ़के ख़िराजकी बाबत ७२७०० रुपया सालिमशाही सालियानह सर्कार अंग्रेज़ी हुल्करको देती है. विक्रमी १९२२ [हि० १२८२ = ई० १८६५] में हुल्करने सर्कार अंग्रेज़ीको रेलवेके लिये बिदून एवज़ ज़मीन मए इख्तियारात व राहदारी महसूलके देनेका इक़ार किया; और विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में खंडवा व इन्दौरके बीचवाली रेल तय्यार होनेके वक्त एक करोड़ रुपया क़र्ज़के तौरपर दिया. विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में हुल्करने एक कारखानह तोप व बन्दूक़ वगैरह हथियार बनानेके लिये जारी किया. यह बात मालूम होनेपर सर्कार अंग्रेज़ीने उसे बिल्कुल मौकूफ़ करा दिया.

इन महाराजाको सर्कार अंग्रेज़ीने दत्तक लेनेकी सनद और जी० सी० एस० आइ० (G. C. S. I.) का ख़िताब दिया था, और रियासतकी १९ तोप सलामीके सिवा दो तोप इन महाराजाके लिये हीन हयात ज़ियादह कीगई थीं. यह क्रीनके सलाहकार भी मुक़र्रर किये गये थे. विक्रमी १९४३ आषाढ़ कृष्ण १ [हि० १३०३ ता० १४ रमज़ान = ई० १८८६ ता० १७ जून] को प्रातःकालमें इन महाराजाका देहान्त होगया. इनके दो बेटे बड़े शिवाजीराव और छोटे जशवन्तराव हैं.

महाराजा तुकाजीराव हुल्कर बड़े होश्यार, चालाक और आमदनी बढ़ानेमें बहुत आक़िल और घमंडी भी थे; परन्तु अपना मत्लब निकालनेके लिये जैसा

मौक़ा देखते, वर्ताव करते थे. मैं (कविराजा श्यामलदास) भी इनसे तीन बार मिला, अव्वल दिल्लीके क़ैसरी दर्बारमें कैलास वासी महाराणा सज्जनसिंहके साथ; दूसरी वार चित्तौड़के स्टेशनपर तथा डेरोंमें, जब कि महाराजा शिमलेको जाते थे, और मैंने उक्त महाराणा की तरफ़से उनकी मिहमानीका बन्दोवस्त किया था. तीसरी दफ़ा जब मैं अपनी आंखका .इलाज करानेके लिये इन्दौर रेज़िडेन्सीके डॉक्टर कीगन साहिबके पास गया, तव महाराजाने मेरी बहुत ख़ातिर की थी, और मैं डेढ़ महीने तक इन्दौरकी छावनीमें रहा. वापस आते वक़ उनसे मिला था. इन तीनों मुलाक़ातोंमें कई घंटों तक मेरी उनकी बातें हुईं, जिसमें मेरे एक सवालके जवाबमें वे चार कलाम करते थे, और हर कलाम उनका मत्लबसे ख़ाली न था.

तुकाजीके बाद शिवाजीराव गद्दीपर बिठाये गये; यह पहिले इन्दौरके राजकुमार कॉलिजमें पढ़े थे, और इन्होंने अपने बापकी मौजूदगीमें राजपूतानह, उत्तरी हिन्दुस्तान, बंगाला और दक्षिणी हिन्दुस्तानकी सैर की थी. यह महाराजा विक्रमी १९४४ वैशाख [हि० १३०४ रजब = .ई० १८८७ एप्रिल] में ज्युबिलीके जल्सेपर इंग्लिस्तानको गये थे, और विक्रमी आशाढ़ कृष्ण १४ [हि० ता० २७ रमज़ान = .ई० ता० २० जून] को लण्डनके जल्सेमें शरीक हुए.

इस रियासतका क्षेत्रफल ८४०० मील मुरब्बा, और आबादी १०५४२३७ आदमियों की है. आमदनीके लिये डॉक्टर हण्टर अपने गजेटिअरकी सातवीं जिल्दके पहिले व सातवें पृष्ठमें लिखते हैं, कि "विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = .ई० १८७५] में ४५९८०००) और विक्रमी १९३५ [हि० १२९५ = .ई० १८७८] में ५१२३०००) रुपया थी, लेकिन् विक्रमी १९३८-३९ [हि० १२९८-९९ = .ई० १८८१-८२] में ७०७४४०० रुपया होगई." इस रियासतमें कुल फ़ौज ८८९० है, जिसमें ३१०० क़वाइद जाननेवाले पैदल, २१५० बे क़वाइदी, २१०० क़वाइद दां सवार और १२०० बग़ैर क़वाइद दां, और ३४० गोलन्दाज़ व चौबीस तोपें हैं. यहांकी फ़ौजमें अवध और पश्चिमोत्तर देशके आदमी जियादह भरती होते हैं, और दो कम्पनी सिक्खोंकी हैं.

रियासत धार.

यहां वाले राजा पंवार ख़ानदानके हैं, जो क़दीम ज़मानहमें भी मालवेके नामवर राजा रहे थे. इस ख़ानदानका पुराना हाल प्रशस्ति, ताम्रपत्र वग़ैरह लेखोंसे इस तरह मालूम हुआ है, कि परमार वंशका राजा कृष्णराजदेव उज्जैनमें राज करता था, उस के बाद वैरिसिंह, सीयकदेव और वाक्पतिराज (१) हुए, और इनके बाद सिंधुराज, भोजराज, उदयादित्य, नर वर्मा, यशो वर्मा, अजय वर्मा, विन्द वर्मा, सुभट वर्मा और अर्जुन वर्मा उज्जैन तथा धारमें विक्रमी १२७२ के क़रीब तक राज्य करते रहे.

तारीख़ मालवामें मुन्शी करमअली लिखता है, कि जगदेव पंवारकी औलाद मालवा छोड़कर गुजरातमें पहुंची, लेकिन् दुश्मनोंने वहां भी उनको न रहने दिया, तब वे दक्षिणको चले गये, और ज़मींदारी वग़ैरहसे अपना गुज़ारा करने लगे. आख़िरकार

---

(१) "भोज प्रबन्ध" में लिखा है, कि राजा सिंधुल (सिंधुराज) ने मरते वक़ अपने पुत्र भोजके कम .उम्र होनेके कारण अपने भाई मुंजको राज्यका मालिक बनाकर भोजको उसे सौंपा; परन्तु यह मुंज उसका भाई न था, किन्तु उसके पिता वाक्पतिराजका ही दूसरा नाम होना संभव है. क्योंकि राजा भोजने विक्रमी १०७८ चैत्र शुक्ल १४ [हि० ४११ ता० १३ ज़िल्हिज = .ई० १०२१ ता० ३० मार्च] के एक ताम्रपत्रमें सीयकदेवके बाद वाक्पतिराज और उसके बाद सिंधुराज लिखकर फिर अपना नाम लिखा है, इससे सिन्धुलके बाद मुंज नामका कोई राजा होना नहीं पाया जाता.

"दशरूपावलोक" ग्रन्थमें मुंजका बनाया हुआ एक श्लोक लिखा है, और उसी श्लोकको दूसरी जगह वाक्पतिराजका बनाया हुआ लिखा है. इससे पाया जाता है, कि ये दोनों नाम एक ही राजाके हैं.

"पिंगल सूत्रवृत्ति" में हलायुधने मुंजकी तारीफ़में तीन श्लोक बनाये, जिनमेंसे पहिले दो श्लोकोंमें मुंज और एक श्लोकमें वाक्पति नाम लिखा है, इससे भी साबित होता है, कि वाक्पतिराज और मुंज नामका एक ही राजा था.

"सुभाषित रत्न सन्दोह" नामक ग्रन्थ जो एक जैनी यतिने विक्रमी १०५० पौष शुक्ल ५ [हि० ३८३ ता० ४ ज़िल्क़ाद = .ई० ९९३ ता० २१ डिसेम्बर] को बनाया, उसमें उसने लिखा है, कि इस ग्रन्थकी समाप्ति राजा मुंजके समयमें हुई. यदि यह राजा वाक्पतिराजसे अलग होता, तो भोज अपने ताम्रपत्रमें इसका नाम ज़ुरूर दर्ज करता. इस वास्ते भोज प्रबन्धका लेख सुबूतके क़ाबिल नहीं समझा जासक्ता.

एक ताम्रपत्रमें वाक्पतिराजका तीसरा नाम अमोघवर्ष भी होना लिखा है, जो विक्रमी १०३६ चैत्र कृष्ण ९ [हि० ३७९ ता० २३ शअ़्बान .ई० ९८० ता० १३ मार्च] की मितीका इसी राजाके समयका है.

राजा शिवा घोंसलाके ज़मानहमें बया पंवारने उक्त राजासे सर्दारी हासिल की, और शिवाके मरने बाद शंभासे बहुतसी जागीरें व राजा रामसे विश्वासरावका ख़िताब पाया.

बयाके मरजाने बाद उसके दो बेटे १ कालू व २ शंभा बाक़ी रहे, जिनमेंसे कालूकी औलाद दक्षिणमें रही, और शंभा पंवारके तीन बेटे ऊदा, आनन्दराव और जगदेव हुए. इन तीनोंको शंभाके मरने बाद साहू राजाने बड़े बड़े उह्दे देकर ऊदाको उसके बापके मुवाफ़िक़ विश्वासरावका ख़िताब दिया. आख़िरकार ऊदासे पेश्वाकी नाइत्तिफ़ाक़ी होगई, इस सबबसे पेश्वाने आनन्दरावको अपनी तरफ़ मिलाकर धारका मुल्क उसको जागीरमें देदिया. मरहटे सर्दारोंमें आनन्दराव बड़ा मश्हूर बहादुर था. जब वह विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई० १७४९] में मरगया, तो उसका बेटा जशवन्तराव गद्दीपर बैठा, और वह भी विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में पानीपतकी लड़ाईमें मारा गया. इसके बाद उसका कम उम्र लड़का खण्डेराव धारकी गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १८३६ [हि० ११९३ = ई० १७७९] में उसका इन्तिक़ाल होनेपर उसका बेटा आनन्दराव, जो खण्डेरावकी मृत्युके छः महीने बाद पैदा हुआ था, अपने ननिहालमें पर्वरिश पाकर सत्तरह वर्षकी उम्रमें धारकी गद्दीका मालिक बना, और विक्रमी १८६४ [हि० १२२२ = ई० १८०७] में मरगया. इसका देहान्त होने बाद रामचन्द्र-राव नामका एक लड़का पैदा हुआ, जिसकी कम उम्रीके सबब राज्यका इन्तिज़ाम आनन्दरावकी विधवा मीनाबाई करती रही. परन्तु जब यह लड़का (रामचन्द्रराव) भी मरगया, तो मीनाबाईने अपनी बहिनके बेटेको गोद लेकर उसका नाम रामचन्द्र रक्खा.

अंग्रेज़ोंका मालवेपर क़बज़ह होनेसे पहिले इस रियासतको सेंधिया व हुल्करने लूट मार करके बहुत कुछ बर्बाद किया. लेकिन् विक्रमी १८७५ पौष शुक्ल १४ [हि० १२३४ ता० १२ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १८१९ ता० १० जैन्युअरी] को महाराजा और सर्कार अंग्रेज़ी के दर्मियान एक अह्दनामह क़रार पाया, जिसके अनुसार यह रियासत अंग्रेज़ी हिफ़ाज़त में आई; और बहुतसे ज़िले जो इस रियासतसे निकल गये थे, महाराजाको वापस दिलाये गये. रियासत धारने बांसवाड़ा और डूंगरपुरमें जो अपना हक़ था वह और दो लाख पचास हज़ार रुपया क़र्ज़ अदा करनेको पांच वर्षके वास्ते पर्गनह बेरस्या सर्कार अंग्रेज़ीको सौंप दिया; लेकिन् विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में एक दूसरा अह्दनामह हुआ, जिसके मुताबिक़ रियासत धारने बेरस्याके पर्गने व आलिमोहनका ख़िराज सर्कार अंग्रेज़ीको देदिया. विक्रमी १८८८ [हि० १२४६ = ई० १८३१] में यह पर्गनह सर्कार अंग्रेज़ीने धारको वापस दिया.

विक्रमी १८८९ [हि० १२४७ = ई० १८३२] में रामचन्द्रराव मरगया, तब जशवन्तराव गोद लिया जाकर विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में गद्दीपर बिठाया गया. इससे बेरस्याके पर्गनेका कुछ बन्दोबस्त न हुआ, तब सर्कार अंग्रेज़ीने विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में उसे फिर अपने क़बज़हमें लेलिया. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] में जशवन्तरावका देहान्त हुआ, और उसका छोटा भाई आनन्दराव जो विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में पैदा हुआ था, गद्दीपर बैठा. इसी वर्ष राजाकी कम उम्रीके सबब रियासतमें बल्वा हुआ, जिसका नतीजह यह निकला, कि गवर्मेंट अंग्रेज़ीने राज्य ज़ब्त करलिया; लेकिन् कुछ अरसे बाद बेरस्याके पर्गनेके सिवा, जो भोपालको दिया गया, बाक़ी राज्य आनन्दराव पंवारको वापस देदिया, और इन्तिज़ाम अपनी निगरानीमें रक्खा.

विक्रमी १९२१ [हि० १२८० = ई० १८६४] में राजाको मुल्की इख्तियारात मिले. गोद लेनेकी सनद इनको पहिले ही मिल चुकी थी. इस राजाने रेल्वे लाइनके लिये सर्कारको ज़मीन दी, और के० सी० एस० आइ० (K. C. S. I.) का ख़िताब पाया.

इस रियासतका क्षेत्रफल १७४० मील मुरब्बा, आबादी १४९२४४ आदमी, और आमदनी (१) ७४३१२० रुपया है, जिसमेंसे १९६५० रुपया सालानह मालवा भील कोरके लिये दियाजाता है. फ़ौजमें २७६ सवार, ८०० पैदल, २ तोप और २१ गोलन्दाज़ हैं. रियासतकी सलामी १५ तोप सर्कार अंग्रेज़ीसे मुक़र्रर हैं.
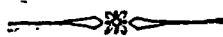
रियासत देवास.

इस रियासतके रईस पंवार ख़ानदानमेंसे हैं. बया पंवारके दो बेटे १- कालू, और २- शंभा थे, जैसा कि धारकी तवारीख़में बयान होचुका है; उनमेंसे शंभाकी औलादमें धारके राजा और कालूकी नस्लमें देवासवाले हैं. कालूके चार बेटे १- कृष्णाराव, २- तुकाराव, ३- जीवाराव, और ४- मानाराव थे. कालूके मरनेपर

(१) एचिसन साहिबकी ट्रीटीकी तीसरी जिल्दमें ४३७००० रुपया सालानह आमदनी लिखी है, और जो ऊपर दर्ज हुई, वह डॉक्टर हण्टरके गजेटिअरकी चौथी जिल्दसे लीगई है.

कृष्णाराव, अपने बापकी जगह सोपाका मालिक हुआ, तुकारावने कनी गांव पाया, जीवाराव मेगनीका मालिक बना और मानारावको पाथरी मिली. इनमेंसे तुका व जीवा दोनों पेश्वाके मातहृत सर्दारों में रहे. जब बाजीराव पेश्वा मालवाके मुल्कका मुरूतार बना, तो खर्चके लिये देवास, सारंगपुर, आलोट, कर्कछ, रंगनोद, वगैरह चौदह पर्गने दोनों भाइयोंको जागीरमें मिले. ये दोनों ख़ास देवासमें रहते थे, और आमदनीको, जो इन पर्गनोंसे मिलती, आधी आधी बांट लेते थे. इन दोनों भाइयोंकी औलादसे एक शहर देवासमें दो रियासतें काइम होगईं.

तुकारावका बेटा कृष्णाराव और उसके दूसरा तुकाराव, और उधर जीवारावके सदाशिवराव, और उसके आनन्दराव हुआ. इस रियासतको भी हुल्कर और सेंधियाने धारकी तरह तबाह किया, और बढ़ने न दिया. जब तुकाराव दूसरे और आनन्दरावका विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ अह्दनामह हुआ, तो माल्कम साहिबने दोनों रईसोंके लिये एक ही दीवान मुक़र्रर किया.

दूसरे तुकारावके बाद रुक्मांगद उर्फ़ ख़ासह बाबा, और उनके पीछे कृष्णाराव बाबा साहिब मालिक हुए, जो अब मौजूद हैं. दूसरे आनन्दरावके हैबतराव और उनके वारिस नारायणराव दादा साहिब हैं. अब्री मेके साहिबके बयान व तारीख़ मालवासे एक शाख़के कुर्सी नामहमें फ़र्क़ मालूम होता है. अब्री मेके की किताबमें लिखा है, कि तुकारावका भाई जीवाराव, उसका बेटा आनन्दराव, जिसका पुत्र हैबतराव, उसका दूसरा आनन्दराव फ़िर दूसरा हैबतराव और उसका नारायणराव हुआ. जो एचिसन्की किताबसे भी मिलता है.

कृष्णारावके गद्दीपर बैठने बाद राज्यका काम इनकी माताने चलाया, लेकिन् क़र्ज़ और बद इन्तिज़ामी बढ़ती गई. विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में रईसका खर्च मुक़र्रर करके इन्तिज़ामके लिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तरफ़से एक देशी सुपरिन्टेन्डेन्ट मुक़र्रर किया गया. विक्रमी १९२१ [हि० १२८० = ई० १८६४] में दूसरे हिस्सहदार हैबतरावका इन्तिक़ाल हुआ, और उसका छोटा बच्चा नारायणराव गद्दीपर बैठा, जो विक्रमी १९१७ [हि० १२७६ = ई० १८६०] में पैदा हुआ था. इसके बचपनमें राज्यका प्रबन्ध गोविन्दराव रामचन्द्र कामदारके हाथमें रहा और निगरानी एजेण्ट गवर्नर जेनरल सेन्ट्रल इन्डिया की थी.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमें ये दोनों हिस्सह-

दार गवर्मेंएटके खैरख्वाह रहे, इसलिये अंग्रेज़ी सर्कारने इनको कन्टिन्जेएट फ़ौज ख़र्चमेंसे २७३६० रुपया छोड़ दिया और दत्तक लेनेकी सनद दी. इन दोनों रईसोंमेंसे हर एककी सलामी पन्द्रह तोप मुक़र्रर है. देवासका क्षेत्रफल २८९ मील मुरब्बा, आबादी १४२१६२ आदमी, और ४५५ गांव हैं. एचिसन् साहिबने दोनों रईसोंकी आमदनी ४२५००० रुपया सालियानह लिखी है.
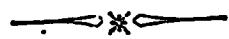
रियासत बड़ौदा.
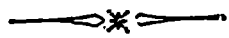
इस रियासतका इतिहास बम्बई गजेटिअरकी सातवीं जिल्दमें बहुत तूल तवील लिखा है, और एचिसन् साहिब व डॉक्टर हन्टर, तथा ग्रेन्ट मेकेने अपनी किताबोंमें मुख्तसर तौरपर बयान किया है, इसलिये हम भी उक्त तीनों मुवर्रिख़ोंकी किताबोंसे ज़रूरी हालात चुनकर यहांपर दर्ज करते हैं:-

इस मरहटी रियासतका मूल पुरुष कैरोराव था, जिसके तीन बेटे १- जींगो, २-दामा, और ३- हरजी थे. इनमेंसे दामाराव गायकवाड़ सिताराके महाराजा साहू छत्रपतिके बड़े सर्दारोंमें था.

विक्रमी १७७७-७८ [हि० ११३२-३३ = .ई० १७२०- २१] में दामाकी मातहत फ़ौजने गुजरातको लूटा, तो उसे दूसरे दरजेका सेनापति बनाकर शम्शेर बहादुरका ख़िताब दिया गया. दामाके बाद जींगोका बेटा पीला गायकवाड़ मुख्तार बना. इसको "सेना खास खैल" का ख़िताब मिला. इस वक्त पश्चिमी हिन्दुस्तानमें बड़ी अब्तरी फैल रही थी, सिताराके अस्ली राजाके नौकर खुद मुख्तारीकी कोशिश करते थे. पीला गायकवाड़को विक्रमी १७८८ [हि० ११४३ = .ई० १७३१] में जोधपुरके महाराजा अभयसिंह, गुजरातके बादशाही सूबहदारने मरवाडाला. यह काम पेशवाकी मिलावटसे हुआ. इसकी जगह इसका बेटा दूसरा दामा गायकवाड़ मुक़र्रर हुआ, जिसको विक्रमी १७८९ [हि० ११४४ = .ई० १७३२] में साहू राजाने अव्वल दरजहका सेनापति बनाया. जब अह्मदाबादकी हुकूमत दिल्लीकी मातहतीसे निकल गई, तब विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = .ई० १७५५] में

दामा गायकवाड़ और पेश्वाने इस मुल्कको तक्सीम करलिया. दामा पेश्वा को ख़िराज देता रहा..

विक्रमी १८२५ [हि० ११८१ = ई० १७६८] में (१) दामा मरगया. इसके चार बेटे, १- सीया, २- गोविन्दराव ३- फ़तहसिंह, और ४- माना थे. पेश्वाने गायकवाड़की ताक़त तोड़नेके लिये सीयाको, जो पागल था, मुख़्तार बनाया, और उसके भाई फ़तहसिंहको प्रबन्ध कर्त्ता नियत किया, लेकिन् वह महलके झरोखेसे गिरकर विक्रमी १८४६ पौष शुक्ल ५ [हि० १२०४ ता० ३ रबीउस्सानी = ई० १७८९ ता० २१ डिसेम्बर] को मरगया, और मानाराव मुख़्तार हुआ. विक्रमी १८५० श्रावण कृष्ण १० [हि० १२०७ ता० २३ ज़िल्हिज = ई० १७९३ ता० १ ऑगस्ट] को मानाका इन्तिक़ाल हुआ. इससे थोड़े दिन पेश्तर सीया भी मरगया था, इसलिये गोविन्दराव मालिक बना, जिसके विक्रमी १८५७ आश्विन [हि० १२१५ रबीउस्सानी = ई० १८०० सेप्टेम्बर] में मरने बाद उसका बेटा आनन्दराव गद्दीपर बैठा. परन्तु वह कम अक्ल था, इसलिये उसके भाई कान्हाने, जो गोविन्दरावकी पासबानसे था, गोविन्दरावके रिश्तहदार मलहारराव गायकवाड़की मदद्से राज्य छीन लिया. इसपर गवर्मेएट अंग्रेज़ीने मलहाररावको बम्बई व कान्हाको मद्रास भेजदिया, और आनन्दरावके साथ विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में पहिला व विक्रमी १८६२ [हि० १२२० = ई० १८०५] में दूसरा अहदनामह किया, जिसके मुताबिक़ एक कन्टिन्जेएट फ़ौज मुक़र्रर कीजाकर उसमें तीन हज़ार सिपाही और एक तोपख़ानह रक्खा गया.

विक्रमी १८७६ आश्विन शुक्ल १४ [हि० १२३४ ता० १२ ज़िल्हिज = ई० १८१९ ता० २ ऑक्टोबर] को आनन्दराव मरगया, और उसका भाई सीयाराव दूसरा गद्दीपर बैठा. इसकी बद चलनी व बेवकूफ़ीके सबब सर्कार अंग्रेज़ीने धमकी दिखलाने को पेटलादका इलाक़ह लेलिया. विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में सीयाराव मरगया; जिसके बाद इसका बेटा गणपतराव राज्यका मालिक बना, जो विक्रमी १९१३ मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० १२७३ ता० २० रबीउल्अव्वल = ई० १८५६ ता० १९ नोवेम्बर] को मरगया. इसके कोई लड़का न था, इसलिये इसका छोटा भाई खण्डेराव विक्रमी पौष कृष्ण १ [हि० ता० १३ रबीउस्सानी = ई० ता० १२ डिसेम्बर] को गद्दीपर बैठा. इसने ग़द्रके वक्त सर्कार अंग्रेज़ीके साथ ख़ैरख़्वाही ज़ाहिर की, इस वास्ते सर्कारसे तीन लाख रुपया सालानह उसको छोड़ दियागया, जो कन्टिन्जेएट फ़ौज ख़र्चके लिये उससे लियाजाता था. विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = ई० १८६२]

(१) गुजरात राजस्थानमें दामाका मरना ईसवी १७७२ [वि० १८२९ = हि० ११८६] में लिखा है.

में उसे दत्तक लेनेकी सनद मिली, और जी० सी० एस० आइ० का ख़िताब भी हासिल हुआ.

वह विक्रमी १९२७ मार्गशीर्ष शुक्ल ६ [हि० १२८७ ता० ४ रमज़ान = ई० १८७० ता० २८ नोवेम्बर] को लावलद मरगया, और उसका छोटा भाई मल्हारराव गायकवाड़ गद्दीपर बैठा. इसका इन्तिज़ाम बहुत ख़राब था, इस सबबसे गवर्मेएट अंग्रेज़ीने उसको अठारह महीनेके अन्दर इन्तिज़ाम करनेका हुक्म दिया. परन्तु उसने इन्तिज़ामकी दुरुस्तीके एवज़ इसी मीआदके अन्दर विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में रेज़िडेएटको ज़हर देनेकी कोशिश की, जिसकी तह्क़ीक़ातके लिये कमिशन मुक़र्रर हुई. इस कमिशनमें जयपुरके महाराजा सवाई रामसिंह, ग्वालियरके महाराजा जियाराव सेंधिया, राजा सर दिनकरराव (जो पहिले ग्वालियरका दीवान था), सर रिचर्ड मीड तथा मिस्टर पी० एस० मेल्विल मेम्बर और बंगालके चीफ़ जस्टिस सर रिचर्ड काउच प्रेसिडेंएट नियत हुए; लेकिन् कमिशनकी रायमें इख़्तिलाफ़ रहा, याने हिन्दुस्तानियोंने उसको बेक़ुसूर और यूरोपिअन अफ़्सरोंने क़ुसूरवार ठहराया, तब गवर्मेएटने कमिशनकी रायको छोड़कर ख़ुद यह फ़ैसलह किया, कि इसके इन्तिज़ाममें कई तरह ख़लल है, इसवास्ते गद्दीसे ख़ारिज करदिया जावे. विक्रमी १९३२ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १२९२ ता० १२ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १८७५ ता० १९ एप्रिल] को मल्हारराव गद्दीसे ख़ारिज किया गया, और तीन दिन बाद याने २२ एप्रिल को राज क़ैदी बनाया जाकर मदरास भेजा गया.

इसके बाद सर्कार अंग्रेज़ीसे खण्डेरावकी विधवा जमुनाबाईको दत्तक लेनेका अधिकार मिला. जिसपर उसने पीला गायकवाड़के ख़ानदानमेंसे गोपालराव नामका एक लड़का चुना, और उसको विक्रमी १९३२ ज्येष्ठ कृष्ण ७ [हि० १२९२ ता० २१ रबीउ़स्सानी = ई० १८७५ ता० २७ मई] को गद्दीपर बिठाकर सीयाराव गायकवाड़के नामसे प्रसिद्ध किया. इसकी कम उम्रीके समय सर टी० माधवराव दीवान बनाया गया, जो एजेएट गवर्नर जेनरलकी रायसे काम करता रहा. विक्रमी १९३४ माघ कृष्ण २ [हि० १२९३ ता० १५ ज़िल्हिज = ई० १८७७ ता० १ जैन्युअरी] को यह महाराजा दिल्लीके क़ैसरी दर्बारमें गये, जहांपर उनको होश्यारी, इ़ल्मी लियाक़त, और बुद्धिमानीके सबब "फ़र्ज़न्द ख़ास दौलत इंग्लिश्यह" का ख़िताब मिला, और तीन वर्ष पीछे तन्जावरके ख़ानदानमें विक्रमी १९३७ [हि० १२९७ = ई० १८८०] में इनकी शादी हुई. इनको विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = ई० १८८७] में ज्युबिलीके

जल्सेपर जी० सी० एस० आइ० (G. C. S. I.)का ख़िताब मिला. इसी वर्षमें वह अपनी महाराणी सहित विलायतकी सैरको गये थे.

बड़ौदेका क्षेत्रफल ८५७० मील मुरब्बा, बाशिन्दे २१८५००५, और आमदनी की तादाद एचिसन्ज़ ट्रीटीके मुवाफ़िक़ ११५००००० रुपया सालियानह है, और डॉक्टर हण्टरने अपने गज़ेटिअरकी दूसरी जिल्द में १११८२३२० रुपया लिखा है. वम्बई गज़ेटिअरकी सातवीं जिल्द में एफ़० ए० एच० इलियटने १३९९१४४५ रुपया दर्ज किया है. इस रियासतकी सलामी गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे २१ तोप मुक़र्रर है. फ़ौजमें २ बाटरी तोपख़ानह, १५४ गोलन्दाज़, ४२ तोप, जिनमें दो सोनेकी और दो चांदी की हैं; रिसालेमें सवारोंके अलावह २४७ अफ़्सर, छः रेजिमेन्ट पैदलोंकी, कुल तीन हज़ार सोलह क़वाइद जाननेवाले, और ४४१० सवार और १८२७ पैदल बेक़वाइदी हैं; क़वाइद जाननेवाली फ़ौजका ख़र्च साढ़े सात लाख और बेक़वाइदका अठ्ठाईस लाख रुपया सालियानह है.

टौंककी तवारीख़.

जुग्राफ़ियह,

रियासत टौंक मुल्क राजपूतानहमें एक दर्मियानी दरजेकी मुसल्मानी रियासत है. उसके छः पर्गनों टौंक, रामपुरा, नीवाहेड़ा, सरोंज, छपरा और पड़ावामेंसे पहिले तीन पर्गने ख़ास राजपूतानहके अन्दर वाके हैं; और बाक़ी मुल्क मालवाकी सर्हदपर उसकी रियासतोंसे घिरे हुए अलहदह अलहदह हैं, इसलिये इस रियासत की हदें एक जगह बयान नहीं हो सक्तीं. टौंक और रामपुरा शहर जयपुरसे दक्षिणी तरफ़ राज्य जयपुरसे घिरे हुए हैं; नीवाहेड़ा राज्य मेवाड़ और .इलाक़ह सेंधियासे घिरा हुआ है; सरोंज मालवाके अन्दर .इलाक़ह सेंधिया, भोपाल और ज़िले सागरसे

घिरा हुआ है; छपरा मुल्क मालवाकी सर्हदपर कोटा, झालरापाटन और सेंधियाके .इलाक़हसे घिरा हुआ है; और पड़ावाके गिर्द झालरापाटन, सेंधिया तथा हुल्करका .इलाक़ह फैला हुआ है.

टौंकके मातह्त हर पर्गनहकी ज़मीन उम्दह और ज़रखेज़ है; और बनास नदी ख़ास टौंकके पास गुज़रकर बड़ी सर्सब्ज़ीका ज़रीअ़ह हुई है. इस रियासतमें कुल गांव एक हज़ार एक सौ तेंतालीस हैं. कुल रक़बह २५०९ मील मुरव्वा, आबादी ३३८०२९ आदमी, आमदनी १२८५२६० रुपया सालानह और फ़ौज सवार व पैदल चार हज़ारके क़रीब है. इस रियासतकी सलामी सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से सत्तरह तोपकी मुक़र्रर है.

ख़ास शहर टौंक एक नीची पहाड़ीके पास आबाद है, जिसकी निस्बत रिवायत है, कि विक्रमी १००३ माघ कृष्ण १३ [हि० ३३५ ता० २७ जमादियुल् अव्वल = .ई० ९४६ ता० २४ डिसेम्बर] को दिल्लीके राजा खनवादके एक मातह्त हाकिम रामसिंहने एक गांव बसाकर उसका नाम टौंक रक्खा था, और उस आबादीको अबतक कोट कहते हैं. विक्रमी १३३७ माघ शुक्ल ५ [हि० ६७९ ता० ४ शव्वाल = .ई० १२८१ ता० २७ जैन्युअरी] को अलाउद्दीन ख़िल्जीने इस गांवको दोबारह रौनक़ दी. विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = .ई० १८०६] में टौंकपर नव्वाब अमीरख़ांका क़बज़ह हुआ, उन्होंने आबादीसे एक माइल दक्षिणी तरफ़ अपने रहनेके मकान, कारख़ाने और दफ़्तर क़ाइम किये, और उनके बाद बराबर आबादीने तरक़्क़ी पाई, जिससे वह एक छोटेसे शहरका नमूनह बनगई. टौंकमें विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = .ई० १८७१] से मद्रसेकी और विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = .ई० १८७२] से शिफ़ाख़ानहकी बुन्याद क़ाइम हुई. मौजूद नव्वाबके वक़्तमें छापाख़ानह भी जारी हुआ है, जिससे एक उर्दू अख़्बार "सफ़ीरि टौंक" नाम हफ़्तहवार छपकर निकलता है.

क़स्बह रामपुरा एक मज़्बूत पक्की शहरपनाहके अन्दर आबाद है; इस पर्गनहकी ज़मीन अक्सर बराबर है, और कहीं कहीं छोटी पहाड़ियां पाई जाती हैं. क़स्बह नीबाहेड़ाके गिर्द भी पुख़्तह हल्की शहरपनाह मौजूद है. विक्रमी १८७७ [हि० १२३५ = .ई० १८२०] में टॉड साहिबने उक्त क़स्बेको देखकर उसकी बहुत तारीफ़ लिखी है, और वह अबतक बाहरसे बहुत ख़ूबसूरत मालूम होता है, इस पर्गनहकी ज़मीन अक्सर जगह काली और चिकनी है, जिसमें अफ़्यून ख़ूब पैदा होती है, अक्सर मक़ामातपर नीची पहाड़ियां भी मौजूद हैं, और घास पैदा होती

है. पर्गनह पड़ावाकी ज़मीन और हालत नीवाहेड़ाके पर्गनहसे बिल्कुल मिलती हुई पाई जाती है.

पर्गनह सरोंज मालवाके अन्दर सबसे बिह्तर मक़ाम है. यहांपर छोटी नदियां अक्सर जारी रहती हैं. आंब, महुवा, इमली, बड़ और पीपल वगैरहके बड़े दरख़्तोंसे इलाक़हमें रौनक़ नज़र आती है, और आम खेतीकी पैदावार भी अच्छी होती है. सरोंजकी आबादी पुराने ज़मानहमें बहुत ज़ियादह थी, मगर अब हाकिमोंकी बे पर्वाईसे बहुत कम होगई है. शहर सरोंजके पश्चिममें एक क़िला, और दक्षिणमें उम्दह पानीका एक तालाब है. यह पर्गनह महाराजा जशवन्तराव हुल्करने नव्वाब अमीरख़ांको फ़ौज ख़र्चके लिये दिया था. पर्गनह छपराकी ज़मीन बराबर, काली और चिकनी है; उसकी पैदावार दर्मियानी क़िस्मकी है, और उसमें दरख़्त चीड़की लकड़ी कस्रतसे पैदा होती है.

राज्य प्रबन्धके लिये रियासत टोंकमें नव्वाबके मातह्त एक कौन्सिल क़ाइम है, उसके बाद दीवानी और फ़ौज्दारीकी अदालतें हैं; और हर पर्गनहपर एक हाकिम रहता है, जिसको यहां आमिल कहा जाता है. हर आमिलके पास एक पेश्कार याने नाइब हाकिम और कई थानहदार मुक़र्रर रहते हैं. इस अमलेके सिवा इस रियासतको एजेंसियोंमें देवली, जयपुर, उदयपुर, आबू, इन्दौर, आगर और सीहोर वगैरह मक़ामातपर अपने वकील बाहिरी मुआमलातकी जवाबदिहीके लिये हाज़िर रखने पड़ते हैं. हर एक आमिलकी तन्ख़्वाह सौ रुपयेसे दो सौ रुपये तक और वकीलकी तन्ख़्वाह पचाससे सौ रुपये माहवारी तक अलावह सवारी ख़र्च वगैरहके होती है.
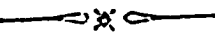
तवारीख़ टोंक.
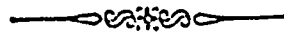
तवारीख़ी हाल इस रियासतका इस तरहपर है, कि अफ़्ग़ानिस्तानके ज़िले बुनेर मौज़े चूहड़से सालारज़ई क़ौमके एक पठान कालेख़ांका बेटा तालेख़ां, दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहके ज़मानहमें यहां (हिन्दुस्तानमें) आया, और शहर संभल ज़िले कठेहर मुहल्ला तरीना सरायमें रहने लगा, और चन्द लुटेरोंसे मिलकर लूट खसोटमें मश्गूल हुआ. कठेहर ज़िलेके एक सर्दार अली मुहम्मदख़ांका, जिसकी औलादमें रामपुरके नव्वाब हैं, साथी हुआ; उसपर मुहम्मदशाह बादशाहने फ़ौज भेजी. लड़ाईमें यह शख़्स

बादशाही फ़ौजसे बनेगढ़ (विनयगढ़) में एक मकानके अन्दर घिर गया, लेकिन् कुछ अरसह बाद जान सलामत लेकर निकल गया.

जब तालेख़ां मरगया, तो उसका बेटा मुहम्मद हयातख़ां, बच्चा रहगया था; उसकी पर्वरिश अली मुहम्मदख़ांके बेटे दूंदेख़ांने अच्छी तरह की. दूंदेख़ांके मरने बाद मुहम्मद हयातख़ां अपने बापकी जगह तरीना सरायमें बे वसीले रहकर खेतीसे अपना गुज़ारह करने लगा. विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] में उसके बेटे अमीरख़ांका जन्म हुआ. इससे पहिला हाल किताब अमीरनामहके मुसन्निफ़ सय्यद सईद अह्मदने बहुत बढ़ावे, और तवालतसे लिखा है. अब बाक़ी हाल वक़ाये राजपूतानहसे लिखते हैं.

जब अमीरख़ां बीस वर्षकी उम्रका हुआ, तो अपने छोटे भाई करीमुद्दीन और दस दूसरे आदमियोंको लेकर मालवे गया, और मरहटी फ़ौजमें नौकर होगया. विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] में अमीरख़ां छः सवार व साठ पियादोंका अफ्सर बनकर नव्वाब हयात मुहम्मदका नौकर हुआ; लेकिन् एक सालके बाद राघवगढ़के खीची राजा जयसिंह व दुर्जनशाल के पास नौकर हुआ, जिनको सेंधियाने राज्य छीनकर निकाल दिया था. इन राजपूतों के साथ अमीरख़ांने लूट मार करनेमें खूब नामवरी हासिल की. खीची सर्दारोंसे नाइत्तिफ़ाक़ी होनेके सबब उनकी नौकरी छोड़ दी, और बालाराम एंगलियाके पास नौकर होगया. इस मरहटे सर्दारने अमीरख़ांको फ़त्हगढ़का क़िला और नव्वाब ग़ौस मुहम्मदख़ांकी हिफ़ाज़त सुपुर्द की. मरहटोंके लौट जाने और मुराद मुहम्मद के मरजानेसे फ़त्हगढ़का क़िला छूट गया.

विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] में अमीरख़ां जश्वन्तराव हुल्करका नौकर हुआ. इसके सर्दारोंमें अमीरख़ां अव्वल दरजेका अफ्सर समझा गया. अमीरख़ांको हुल्करकी तरफ़से बहुत बड़ा इख्तियार था, और बढ़ते बढ़ते इसकी फ़ौज भी बहुत बढ़गई थी. वक़ाये राजपूतानहका मुसन्निफ़ ज्वालासहाय लिखता है, कि विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = ई० १८०६] में उसके मातह्त ३५००० आदमी और ११५ तोपें थीं. इस फ़ौजकी तन्ख्वाह वह लूट खसोटसे पूरी करता था. हुल्करने उसे इस फ़ौज ख़र्चके लिये ऊपर लिखे हुए छः पर्गने दिये, लेकिन् इस जागीरसे फ़ौज की तन्ख्वाहका पूरा नहीं पड़ता था, अमीरख़ांको सिपाही लोग बहुत तंग करते, यहां तक कि उसको कभी कभी तोपके मुंहपर बांध देते थे, तब वह राजाओं और रियासतोंपर सख्तियां करता. उसकी मातह्त फ़ौजको सिपाहियोंकी सेना नहीं बल्कि लुटेरोंका दल कहना

चाहिये. जशवन्तराव हुल्करने अमीरख़ांको नव्वाबका ख़िताब देकर उसको बड़गूंदाकी छावनीसे पूर्वकी तरफ़ रवानह किया, तब उसने एक लाख रुपया देवासके राजासे और कुछ ख़र्च आगरको लूटकर वुसूल किया; फिर वह बेरस्या, सागर और सरोंजकी तरफ़ गया. जिधर निकला, उधर बर्साती नालेकी तरह मुल्कको बर्बाद करता चला. उस वक्त़ सागरमें पेश्वाकी अमलदारी थी; विनायकरावने उस शहरको कुछ दिनोंतक तो बचाया, लेकिन् अख़ीरमें अमीरख़ांने छापा मारकर लेलिया, और एक महीनेतक उसको ख़ूब लूटा; इसने शहरको लूटनेपर ही सब्र न किया, बल्कि जबतक लूट रही हमेशह उसको जलाता रहा. इस वक्त़ विनायकरावकी फ़ौजके सिपाही तथा शहरके बाशिन्दे मिलाकर चार सौ या पांच सौ आदमी मारे गये, और शहर बिल्कुल बर्बाद होगया. जब विनायक-राव नागपुरके राजासे फ़ौजी मदद लेकर आ पहुंचा, तो अमीरख़ां भी थोड़ेसे सिपाहियोंसे मुक़ाबलेको तय्यार हुआ, लेकिन् इसी मौक़ेपर घोड़ेसे गिरजानेके सबब उसके सख़्त चोट लगी; और उसकी फ़ौजने भी उसका साथ छोड़ दिया. तब वह राठगढ़ (१) की तरफ़ चला गया, जहांके हाकिम मुहम्मदख़ां और कोठीवाल मोहनलालको लूटकर आसूदह बना.

उसने अपने भाई करीमुद्दीनके कहनेपर अफ़्ग़ान अफ़्सरोंसे रुपया वुसूल करना चाहा, लेकिन् पठानोंने इन्कार करके रास्तह लिया, इसपर करीमुद्दीनने उनको कड़वाई मक़ामपर सज़ा दी. थोड़े ही दिनोंके बाद करीमुद्दीन शुजाअलपुरमें मारा गया. इस वक्त़ जशवन्तराव हुल्कर अमीरख़ांसे नाराज़ होगया था, लेकिन् उसने उसे बहुत जल्द ख़ुश कर लिया. जब दौलतराव सेंधियाकी फ़ौजसे उज्जैनके पास जशवन्तराव हुल्करकी लड़ाई हुई, तो अमीरख़ांने पीछेसे हमलह करके सेंधियाकी फ़ौजको बर्बाद किया; परन्तु इसका बदला सेंधियाने इन्दौरको लूटकर बहुत जल्द ही लेलिया. अमीरख़ां हुल्करके साथ दक्षिणमें भी रहा, और वहांसे लौटने बाद उससे जुदा होकर राजपूतानहमें जयपुरके राजाका मददगार बना, और उक्त राजाके साथ जोधपुरपर घेरा डाला, फिर जगत्सिंहका दुश्मन व जोधपुरका दोस्त होकर जयपुरको लूटने लगा, और उदयपुरमें कृष्णकुंवर बाईको ज़हर दिलवाया; लेकिन् जोधपुरके राजाका भी इससे नाकमें दम आगया था, जो उसका दोस्त बना था. इस मुआमलेका किसी क़द्र हाल जयपुर व जोधपुरकी तवारीख़में लिखा गया है, और बाक़ी आगे लिखा जावेगा.

जब जशवन्तराव हुल्कर पागल होगया, और उसके गुलाम धर्माकुंवरने मुख़्तार बनकर हुल्करको मारना चाहा, तो उस समय अमीरख़ां आ पहुंचा; उसने धर्माको मारकर हुल्करको हिफ़ाज़तके साथ भानपुरमें भेजदिया. अगर्चि

(१) तवारीख़ मालवामें राहतगढ़ लिखा है.

अमीरख़ांने अपने दोस्त व दुश्मनोंको तक्लीफ़ देनेके सिवा किसीको दोस्तीके लिहाज़से फ़ायदह नहीं पहुंचाया था, परन्तु जशवन्तराव हुल्करके साथ अल्बत्तह उसने अपनी दोस्तीका हक़ निभाया.

जब अंग्रेज़ लोगोंका अफ़्सर राजपूतानहमें आया, तो उस वक़ अमीरख़ांको कहा गया, कि लुटेरे लोगोंका गिरोह बर्ख़ास्त करदेवे, और सिवा ४० तोपोंके बाक़ी तोपख़ानह भी सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करे; हुल्करकी दी हुई जागीर उसके क़बज़हमें बहाल रहेगी. इसपर उसने इन शर्तोंको मान लिया. जब हुल्करकी दी हुई जागीर सर्कारसे बहाल रहनेका हुक्म होगया, तो इसने दूसरे राजपूत राजाओंसे जो ज़मीन मिली थी, उसका भी दावा किया, लेकिन् वह ना मन्ज़ूर हुआ. विक्रमी १८७४ कार्तिक शुक्ल १ [हि० १२३२ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १८१७ ता० ९ नोवेम्बर] को सर्कार अंग्रेज़ीने नव्वाबके साथ एक अह्दनामह किया, और ३००००० रुपया, जो उसको क़र्ज़ दिया गया था, मुआफ़ करदिया. सर्कार अंग्रेज़ीने उसके बेटे वज़ीरुद्दौलहको पलवलका इलाक़ह जागीरमें हीन हयात दिया था, जिसके एवज़ १२५०० रुपया उसकी ज़िन्दगी तक मिलता रहा.

विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में (१) अमीरख़ांका इन्तिक़ाल हुआ; और उसका बेटा वज़ीर मुहम्मद, जिसको वज़ीरुद्दौलह भी कहते हैं, गद्दीपर बैठा. यह विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्र में सर्कार अंग्रेज़ीका ख़ैरख़्वाह रहा, इसलिये उसको गोद लेनेकी सनद मिली.

---

(१) अमीरख़ांकी औलाद नीचे लिखे मुवाफ़िक़ थीः- १ नव्वाब मुहम्मद वज़ीरख़ां (वज़ीरुद्दौलह), जो गद्दी नशीन हुआ; २ हाफ़िज़ मुहम्मद इबादुल्लाहख़ां, जिसके एक लड़का हुआ; ३ हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुल्करीमख़ां, जिसके दो बेटे और छः बेटियां पैदा हुईं; ४ हाफ़िज़ मुहम्मद जमालख़ां, इसके ३ बेटे और तीन बेटियां हुईं; ५ मुहम्मद जलालख़ां, जिसके २ बेटे व ३ बेटियां हुईं; ६ अहमद अलीख़ां, जिसके ३ बेटे और ३ बेटियां हुईं; ७ अहमद यारख़ां, जिसके एक लड़का, और दो लड़कियां हुईं; ८ मुहम्मद बख़्त बलन्दख़ां, जिसके ५ बेटे और ४ बेटियां हुईं; ९ मुहम्मद मुनीरख़ां, जिसके दो बेटे और १ बेटी थी; १० अक्रमख़ां, जिसके १ बेटा व ५ बेटियां थीं; ११ मुहम्मद कमालख़ां; और १२ मुहम्मद हिदायतुल्लाहख़ां. बेटियोंमें १ हुस्न बीबी, जो करीमुल्लाहख़ांको ब्याही गई, जिसके १ बेटा और १ बेटी हुई; २ गुलबूना बेगम, गुलाम क़ादिरख़ांकी स्त्री, जिसके ३ बेटे और ४ बेटियां थीं; ३ गुल्शन बेगम, नादिरशाहकी स्त्री, जिसके १ बेटा और १ बेटी थी; ४ फ़ातिमह बेगम, इस्फ़न्दयारख़ांकी स्त्री, जिसके ५ बेटे और २ बेटियां थीं; ५ फ़ैज़ बेगम, अहमद यारख़ांकी स्त्री, जिसके २ लड़के और १ लड़की थी; ६ दुन्दह बेगम, अली मुहम्मदख़ांकी स्त्री; ७ अशरफ़ बेगम, अमीर शेरख़ांकी स्त्री, जिसके ३ लड़के और २ लड़कियां थीं; ८ रहमत बेगम, क़ासिम अलीख़ांकी स्त्री, जिसके ३ लड़के और १ लड़की थी; और ९ बशारत बेगम, इब्राहीम अलीख़ांकी स्त्री, जिसके २ बेटे और तीन बेटियां हुईं.

यह विक्रमी १९२१ ज्येष्ठ शुक्ल १४ [हि० १२८१ ता० १३ मुहर्रम = ई० १८६४ ता० १८ जून] को मरगया.

वज़ीरुद्दौलह मज़्हब मुहम्मदीके बड़े पाबन्द और बड़े फ़य्याज़ थे; उनके बाद उनके बेटे नव्वाब मुहम्मद अलीख़ां गद्दीपर बैठे. इन्होंने विक्रमी १९२२ [हि० १२८२ = ई० १८६५] में लावहपर फ़ौज भेजी, जो नरूका राजपूतोंकी जागीरमें है; नव्वाबकी फ़ौजसे यह क़िला ख़ाली न हुआ, कुछ दिनोंतक लड़ाई रही; आख़िर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने फ़ैसलह करके फ़ौजको लावहसे हटा दिया. इस बातपर नव्वाबने ज़ियादह गुस्सेमें आकर लावहके जागीरदार धीरतसिंहको मए उसके चचा रेवतसिंहके तसल्ली देकर टोंकमें बुलाया, और विक्रमी १९२४ श्रावण शुक्ल १ [हि० १२८४ ता० २९ रबीउल्अव्वल = ई० १८६७ ता० १ ऑगस्ट] की रातके ९ बजे जागीरदारके चचा रेवतसिंहको वज़ीरने तलब किया. वह मए अपने बेटे, दो कामदार और १४ दूसरे साथवालोंके वहां गया. नव्वाबने इन सबको दग़ासे क़त्ल करवा दिया, सिर्फ़ १ आदमी हमराहियोंमेंसे जान बचाकर भागा. और इसी वक़ उस मकान को भी, जिसमें ठाकुर धीरतसिंह उतरा था, फ़ौजने घेर लिया. विक्रमी श्रावण शुक्ल ९ [हि० ता० ७ रबीउस्सानी = ई० ता० ८ ऑगस्ट] को एक अंग्रेज़ी अफ़्सरने आकर ठाकुर लावहको वतन जानेकी रुख़्सत दिलाई. इस क़ुसूरमें नव्वाब [मुहम्म]द अलीख़ां गद्दीसे ख़ारिज और उसके वज़ीर हकीम सर्वरशाहको क़ैद किया गया; [और] रियासतकी सलामी १७तोपसे ११ की जाकर गद्दीसे ख़ारिज किया हुआ रईस मुहम्मद-[अ]लीख़ां बनारस भेजदिया गया. इसकी बाबत एक इश्तिहार भी विक्रमी १९२४ [म]ार्गशीर्ष कृष्ण ३ [हि० १२८४ ता० १६ रजब = ई० १८६७ ता० १४ नोवेम्बर] को गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे जारी हुआ, और नव्वाब मुहम्मद अलीख़ांके गुज़ारेके वास्ते रियासतसे ६००००) रुपया सालानह पेन्शन मुक़र्रर हुई. लावहका जागीरदार रियासत टोंकसे जुदा किया जाकर एजेण्टी देवलीका मातहत बनाया गया.

विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में मुहम्मद अलीख़ांका बेटा मुहम्मद इब्राहीम अलीख़ां गद्दीपर बिठाया गया, और रियासतका प्रबन्ध साहिबज़ादह इबादुल्लाहख़ांके सुपुर्द हुआ. इन्तिज़ामके लिये एक कौन्सिल मुक़र्रर की गई, जिसमें एक अंग्रेज़ी अफ़्सर भी शरीक रहा. विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में नव्वाब इब्राहीम अलीख़ांको पूरा इख़्तियार मिला, जो अब रियासतकी हुकूमत करते हैं. विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७७] के क़ैसरी दर्बारमें नव्वाबकी सलामी १७ तोप बहाल होगई; और विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = ई० १८८७]

में रईसके मातह्त एक कौन्सिल क़ाइम की गई, जिसका वाइस प्रेसिडेएट साहिब-ज़ादह उबैदुल्लाहख़ां सी० एस० आइ० है.

टोंकका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब, जिल्द ३, हिस्सह पहिला.

अह्दनामह नम्बर ६२.

अह्दनामह, जो ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी और नव्वाब अमीरुद्दौलह मुहम्मद अमीरख़ांके दर्मियान, ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़ के० जी०, गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख़्तियारातके मुवाफ़िक़ मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेट्कॉफ़, और नव्वाबके दिये हुए इख़्तियारातके अनुसार लाला निरंजनलालकी मारिफ़त क़रार पाया.

शर्त पहिली- गवर्मेएट अंग्रेज़ी वादह करती है, कि नव्वाब अमीरख़ां और उसके वारिसोंको हमेशहके लिये वे मक़ामात दिये जायेंगे, जो उसको महाराजा हुल्करने अपने इलाक़ेहमें दिये हैं, और गवर्मेएट अंग्रेज़ी उन मक़ामातको अपनी हिफ़ाज़तमें रक्खेगी.

शर्त दूसरी- नव्वाब अपनी फ़ौजको सिवा उतनी फ़ौजके, जो इलाक़ेहके प्रबन्धके वास्ते ज़रूरी समझी जावेगी, मौक़ूफ़ करदेंगे.

शर्त तीसरी- नव्वाब अमीरख़ां किसी मुल्कपर धावा या लूट मार नहीं करेंगे, और वह पिंडारों व दूसरे डाकुओंकी दोस्ती और इत्तिफ़ाक़को छोड़ देंगे; और सिवा इसके वह गवर्मेएट अंग्रेज़ीके इत्तिफ़ाक़से ऐसे लोगोंके सज़ा देने तथा दबानेमें कोशिश करेंगे, और किसी शख़्ससे गवर्मेएटकी इजाज़त व रज़ामन्दीके विना मिलावट न करेंगे.

शर्त चौथी- नव्वाब अमीरख़ां अपना कुल लड़ाईका सामान, सिवा उस क़द्र सामानके, जो उनके इलाक़ेह और क़िलोंके इन्तिज़ामके वास्ते ज़रूरी समझा जायेगा, गवर्मेएट अंग्रेज़ीको देदेंगे, और उसके एवज़ उनको सर्कारसे रुपया दिया जायेगा.

शर्त पांचवीं- जो फ़ौज नव्वाब अमीरख़ां अपने पास रक्खेंगे, वह ज़रूरतके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ी गवर्मेएटके साथ रहेगी.

शर्त छठी – यह अ़ह्दनामह छः शर्तोंका दिल्ली मक़ामपर तै पाकर, उसपर मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेट्कॉफ़ और लाला निरंजनलालके मुहर व दस्तख़त हुए. नक़्ल इसकी हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और नव्वाब अमीरख़ांकी तस्दीक़ की हुई मक़ाम दिल्लीमें तारीख़ ९ नोवेम्बर सन् १८१७ ई० से एक महीनेके अन्दर एक दूसरेको दी जावेगी.

(दस्तख़त)– सी० टी० मेट्कॉफ़. (दस्तख़त)– हेस्टिंग्ज़. मुहर.

नव्वाबकी मुहर.

मुहर लाला निरंजनलाल.

मुहर कम्पनी.

इस अ़ह्दनामहको हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने मक़ाम कैम्प सलियापर ता० १५ नोवेम्बर सन् १८१७ ई० को तस्दीक़ किया.

(दस्तख़त)– जे० ऐडम्,
सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल.

ऊपर लिखे हुए अ़ह्दनामहके अ़लावह विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = ई० १८६२] में एक सनद असली औलाद न होनेकी हालतमें गोद लेनेकी निस्बत नव्वाबको मिली; और विक्रमी १९२५ फाल्गुन कृष्ण १ [हि० १२८५ ता० १४ शव्वाल = ई० १८६९ ता० २८ जैन्युअरी] को एक अ़ह्दनामह मुज्रिमोंके लेन देन वगै़रहकी बाबत, जैसा कि राजपूतानहकी कुल दूसरी रियासतोंसे हुआ, गवर्मेंट अंग्रेज़ीने इस रियासतके साथ भी किया.

जावराकी तवारीख़.

यह इलाक़ह पहिले अमीरख़ांके क़ब्ज़हमें था, लेकिन् उसने अपने साले अ़ब्दुल् गफ़ूरख़ांको देदिया था, जब कि वह मालवेसे चला गया. जब मन्दसौर मक़ामपर गवर्मेंट अंग्रेज़ी और हुल्करके दर्मियान अ़ह्दनामह क़रार पाया, तो उसकी बारहवीं

शर्तके मुवाफ़िक़ जावरेका इलाक़ह ग़फ़ूरखांकी जागीरमें रहा; अमीरखांने इसपर दावा किया था, लेकिन् वह सर्कारसे नामन्ज़ूर हुआ.

विक्रमी १८८२ [हि० १२४० = ई० १८२५] में ग़फ़ूरखां मरगया, तब उसका बेटा गौस मुहम्मदखां दो वर्षकी उम्रमें गद्दीपर विठाया गया. अगर्चि इस को गद्दी नशीन करनेकी तज्वीज़ गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने की, परन्तु हुक़ूक़ क़ाइम रखनेके लिये २०००००) रुपया नज़्रानहका हुल्करको दिलाया. ग़फ़ूरखांकी विधवा स्त्री और उसका दामाद जहांगीरखां रियासती इन्तिज़ामके लिये मुक़र्रर किये गये; लेकिन् उनसे पूरा पूरा प्रबन्ध न हो सका, बल्कि बद इन्तिज़ामीमें तरक़्क़ीकी सूरत नज़र आई, तब सर्कारने उनका इख़्तियार छीन लिया. विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में रियासतसे १८५८१०) रुपया कन्टिन्जेएट फ़ौज खर्चके लिये लिया जाना क़रार पाया. लेकिन् विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रकी खैरख़्वाहीके एवज़ विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] से २४०००) रुपया मुआफ़ किया जाकर आइन्दहके लिये १६१८१०) रुपया सालानह बाक़ी रक्खा गया. विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = ई० १८६२] में नव्वाबको गोद लेनेकी सनद मिली, और विक्रमी १९२२ [हि० १२८१ = ई० १८६५] में नव्वाब गौस मुहम्मद हैज़ेकी बीमारीसे मरगये. यह नव्वाब अक़्लमन्द, होश्यार, नेक आदत, फ़य्याज़ और खूबसूरत थे. मैं (ग्रन्थ कर्ता) ने भी जावरा मक़ामपर इनके मरनेसे कुछ अरसह पहिले इनसे मुलाक़ात की थी; हक़ीक़तमें यह रईस तारीफ़के क़ाबिल था, परन्तु मौत किसीको नहीं छोड़ती. इनके सिर्फ़ एक लड़का मुहम्मद इस्माईलखां था, जो अपने पिताकी जगह गद्दीपर बैठा.

इसकी गद्दी नशीनीपर भी २०००००) रुपया अगले क़ाइदेके मुवाफ़िक़ तुकाराव हुल्करको नज़्रानहका दिया गया. हुल्करने रईसकी कम उम्रीके समय रियासती प्रबन्धमें दस्ल देना चाहा, लेकिन् मन्दसौरके अह्दनामहकी शर्तके बर्ख़िलाफ़ जानकर गवर्मेंएटने मन्ज़ूर न किया; और अपनी तरफ़से एक अंग्रेज़ी अफ़्सर नव्वाबकी शिक्षाके वास्ते भेजदिया. विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में नव्वाबको मुल्की इख़्तियार मिला. इन दिनोंमें यार-मुहम्मदखां, इस रियासतका कामदार मुक़र्रर हुआ है.

इस रियासतका रक़्बह ८७२ मील मुरब्बा, आबादी १०८४३४ आदमी, हंटरके

गज़ेटिअरके मुवाफ़िक़ आमदनी ७९९३००) रुपया, और एचिसन्ज़ ट्रीटीके अनुसार ६५५२४०) रुपये सालानह हैं. फ़ौजमें १५ तोप, ६९ गोलन्दाज़, १२१ सवार, २०० पैदल क़वाइद जानने वाले और २०० ग़ैर क़वाइद दां तथा ४९७ सिपाही पुलिसके हैं. पहिले इस रियासतकी सलामी सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से ११ तोप थी, लेकिन् ग़द्रकी ख़ैरख़्वाहीके सबब २ तोप बढ़ाकर १३ करदी गई हैं.

भरतपुरकी तवारीख़.

जुग्राफ़ियह.

भरतपुर पूर्वी राजपूतानहमें दर्मियानी दरजेकी एक रियासत है, जो एजेन्सी पूर्वी राजपूतानहसे तअ़ल्लुक़ रखती है. इस रियासतके उत्तरमें ज़िला गुड़गांवह, .इलाक़ह पंजाब; उत्तर पूर्वमें ज़िला मथुरा; पूर्वमें ज़िला आगरा; दक्षिणमें धौलपुर व क़रौली; दक्षिण पश्चिममें रियासत जयपुर, और पश्चिममें अलवरका .इलाक़ह वाके है. यह राज्य २६°, ४२′ व २७°, ४९′ उत्तर अक्षांश और ७६°, ५४′ व ७७°, ४८′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान फैला हुआ है, जिसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तरफ़ क़रीबन् ७७ मील, और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको ६३ मील है. कुल रक़बह १९७४ मील मुरब्बा, आबादी ६४५५४० आदमी, रियासतकी सालानह आमदनी हण्टरके गज़ेटिअरके मुवाफ़िक़ २८०००००) अट्ठाईस लाख रुपया, और फ़ौज सवार व पैदल पांच हज़ार है. यहांके राजा सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज नहीं देते.

ज़मीनकी हालत– राज्य भरतपुरकी क़रीब क़रीब कुल ज़मीन बराबर और सेराब याने तर है. उत्तरी पर्गनों और ख़ास भरतपुरके आस पासकी धरती बहुत नीची है. जब किसी साल बारिश ज़ियादह होती है, तो बहुतसे खेत पानीमें डूब जानेके सबब वहां दूसरी फ़स्लमें खेती बोई जाती है.

पहाड़– इस रियासतके दक्षिणी हिस्सेमें पहाड़ बहुत हैं. बयानाके पास वाला पहाड़ी हिस्सह, जिसमें अक्सर जगह नाले बहते हैं, डांगके नामसे प्रसिद्ध है.

इसमें जंगली दरख़्त बहुत हैं, और आबादी कम है; यहांके बाशिन्दे अक्सर गूजर हैं, जो खेती बाड़ी बहुत ही कम करते हैं, बाज़ अपना गुज़ारा मवेशियोंके ज़रीएसे करते हैं, और बाज़े चोरी वगैरह करके पेट भरते हैं. जिस पहाड़पर बयाने का क़िला वाके है, वह बहुत ऊंचा, चौड़ा और पर्गनह रूपवासके अन्ततक फैला हुआ है. सिवा इसके उत्तरी पर्गनोंमें भी कई जगह पहाड़ हैं, परन्तु सारे राज्यमें सबसे ऊंचा पहाड़ अलीपुर, पर्गनह अखेगढ़का है, जो "काला पहाड़" के नामसे राज्य भरतपुर, जयपुर व अलवरके तरपटेपर वाके है; इसकी ऊंचाई समुद्रके सतहसे १३५७ फ़ीट है. छपरा, पर्गनह पहाड़ीका पहाड़ १२२२ फ़ीट, दमदमा, पर्गनह बयानावाला १२२२, पर्गनह नगरका रसिया पहाड़ १०६५ फ़ीट, पर्गनह रूपवासका उसीरा पहाड़ ८१७ फ़ीट, और ख़ास पर्गनह भरतपुरका माढोनी पहाड़ ७२५ फ़ीट समुद्रके सतहसे ऊंचा है.

पत्थर व धातु- बयानाके पहाड़में मकानातकी छतें पाटनेकी पट्टियां निकलती हैं. रूपवास पर्गनहके खान और पहाड़पुर, तथा पर्गनह बयानाके बारेटा नामी मकामोंमें बहुत अच्छा सिफ़ेद व लाल पत्थर निकलता है. ये खानें पुराने ज़मानहसे जारी हैं; फ़त्हपुर सीकरीके प्रसिद्ध मकानात, भरतपुर, दीग और बैरके महल, तथा दिल्लीके रेलवे पुलकी तामीरमें यहीं मश्हूर पत्थर लगाया गया है, और रेलवे लाइनपर तारके लट्ठे भी इसी पत्थरके हैं; परन्तु इन पहाड़ोंमें धातुकी कोई खान नहीं है. बहुत अरसह पहिले भुसावर तथा बैरके बीच और बयानाके पहाड़ोंमें तांबेकी चन्द खानें जारी हुई थीं, परन्तु कुछ फ़ायदह न पाया जानेसे बन्द करदी गईं.

नदियां- इस राज्यमें साल भरतक बराबर बहने वाली कोई नदी नहीं है; केवल चार नदियां, याने पहिली उटंगन या बाण गंगा, दूसरी गम्भीर, तीसरी काकुन्द और चौथी रूपारेल वर्सातके दिनोंमें बहती हैं.

बाण गंगा- रियासत जयपुरसे निकलकर इस राज्यमें भुसावर पर्गनहके गांव कमालपुराके पास दाख़िल होकर पूर्व तरफ़ बहती हुई, भुसावर, बैर, बयाना, उचैन व रूपवास पर्गनहमें होकर पर्गनह फ़त्हपुर सीकरी और खेड़ागढ़में जा निकली है. इसके पानीसे खेतीको बहुत कुछ फ़ायदह पहुंचता है. इसकी एक धारा शहर भरतपुरके आस पास वाले बन्धों और नहरमें पहुंचकर वहांके बाशिन्दोंके वास्ते मीठा पानी मौजूद करती है; क्योंकि वहांके कुओंमें ज़ियादह तर खारा पानी होता है.

गम्भीर- यह नदी भी जयपुरके राज्यमेंसे आती है, और पर्गनह बयानाके

करसाड़ा गांवमें दाख़िल होकर पहिले पूर्व रुख़ और उसके बाद उत्तरमें बयानाके पहाड़के गिर्द घूमती हुई कुरका गांवके पास बाण गंगामें गिरती है.

काकुन्द- क़रौलीके पहाड़ोंसे निकलकर इस इलाक़हकी सर्हदपर बयानाके पर्गनह में आती है, जहांपर यह ऊंची पहाड़ी ज़मीनसे गोरधा नामी गांवकी ज़मीनपर गिरती है; वहां हमेशह पानी भरा रहता है. छः मीलतक यह पहाड़ोंके बीच होकर गुज़री है, जिनका तमाम पानी नालोंके ज़रीएसे इस नदीमें आता है. इस पहाड़ी इहातेमेंसे बारेटा गांवके पास निकलने बाद यह उत्तर तरफ़ चलकर सालाबाद गांवके नज़्दीक गम्भीर नदीमें शामिल हुई है.

रूपारेल- क़स्बह सीकरीके पास इलाक़ह अलवरसे इस राज्यमें दाख़िल हुई है. इस नदीके पानीपर एक अरसेतक अलवर व भरतपुरकी रियासतोंमें बाहमी तनाज़ा रहा, जिसको विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = ई १८५५] में सर हेनूरी लॉरेन्स, एजेण्ट गवर्नरजेनरल राजपूतानहने दूर किया. सीकरीके बन्दसे, जहां यह नदी रियासत भरतपुरमें दाख़िल हुई है, दो हिस्सोंमें तक़्सीम होती है; अव्वल वह, जो उत्तर पूर्वमें गोपालगढ़ व पहाड़ीकी तरफ़ और दूसरा दक्षिण पूर्वमें दीग, कुम्हेर व भरतपुरको जाता है. उत्तरमें कामासे बढ़कर पानीको रास्तह न मिलनेसे, ज़ियादह वर्सात होनेपर पहाड़ी और कामाके बीच ग्यारह मीलतक पानी जमा होजाता है, परन्तु जब यह झील पूरी भरजाती है, तो ज़ायद पानी मथुराके ज़िलेमें जाकर वहांकी ज़िराअतको नुक़्सान पहुंचाता है. दक्षिणी धाराका पानी दीगके पास खोहकी झील तथा दूसरी कई झीलोंमें होता हुआ भरतपुरके पास मोती झीलमें जा गिरता है, और वहांसे ओरीन नदीमें, जो खारी नदीकी एक शाखा है, शामिल होकर फ़त्हपुर सीकरीकी तरफ़ बहजाता है. खारी नदी ज़िले आगरामें बाण गंगाके शामिल हुई है.

झील व बन्द- जो कि इस रियासतमें साल भरतक बराबर बहती रहने वाली कोई नदी न होनेके सबब ज़िराअतको पानी पहुंचानेके लिये नहरें नहीं हैं, इसलिये वर्सातका पानी बन्दोंके ज़रीएसे रोका जाकर फ़स्ल बोनेके वक्त छोड़ा जाता है. इन बन्दोंमें हर साल दूर दूरतक पानी भरजाता है, और ख़ाली होनेपर उनके अन्दरकी ज़मीनमें बहुत उम्दह ज़िराअत होती है. इस ग़रज़से पानीके बड़े बड़े रास्तोंपर बन्द तय्यार किये गये हैं, जो गर्मीमें सूखजाते और वर्सातमें पूरे भरजाते हैं. राज्यमें कुल बन्दोंकी तादाद ११६ से कुछ ज़ियादह है, जिनमेंसे कई तो ८ तथा ९ माइलतक की लम्बाईमें फैले हुए हैं. बाज़ोंके

पक्के पुश्ते बने हुए हैं, और सबमें पक्की मोरियां हैं. ज़ियादह तर बन्दोंमें पानी बर्साती नदियोंका एकट्ठा कियाजाता है. सबसे बड़ा बन्द अजान ९ मील लम्बा है.

आब हवा व बारिश – आब हवा यहांकी ठीक ठीक है, बारिश अच्छी होती है; मगर ख़ास भरतपुरमें पीनेका पानी बहुत ख़राब है, सिर्फ़ चन्द कुओंमें, जो तालाब व नहरके किनारेपर हैं, मीठा पानी पाया जाता है.

जंगल – शहर भरतपुरके आस पास और उसके दक्षिणमें जंगल है; दक्षिणी जंगल सात मील लम्बा और सवा मीलके क़रीब चौड़ा है. पर्गनह रूपबासमें भी एक जंगल है, जहां बादशाह अक्बर जब फ़त्हपुर सीकरीमें रहता था, शिकार खेलनेके लिये आता था.

पैदावार – इस रियासतकी ख़ास पैदावार गेहूं, जव, चना, ज्वार, बाजरा, मूंग, मौठ, और उड़द वगैरह हैं.

राज्य प्रबन्ध – अदालती इन्तिज़ामके लिहाज़से राज्य भरतपुर दो हिस्सोंमें बटा हुआ है – अव्वल ख़ास भरतपुर, जिसमें आठ पर्गने, १ शहर भरतपुर, २ रूपबास, ३ बयाना, ४ उचैन व रुदावल, ५ वैर, ६ भुसावर, ७ अखेगढ़ और ८ कुम्हेर, १३०० मील मुरब्बाके रक़बहमें फैले हुए हैं. इस हिस्सहमें कुल ६४२ गांव दाख़िल हैं. और दूसरी अदालत दीग व ज़िले मेवातमें पांच पर्गने, १ दीग, २ गोपालगढ़, ३ कामा, ४ पहाड़ी और ५ नगर हैं. इस हिस्सहके गांवोंकी तादाद ५१८ और रक़बह ६५३ मील मुरब्बा है. हर एक हिस्सहमें एक अदालती मुक़र्रर है, जिसको मुक़द्दमात फ़ौज्दारीमें तीन सालतक क़ैद व पचास रुपयेतक जुर्मानह और दीवानीमें बिला हद दावेकी समाअ़तका इख़्तियार है. इन अदालतोंका अपील महकमह पंचायत और पंचायतका अपील रईसके इज्लास ख़ास में होता है. अदालतोंके मातह्त हर पर्गनहमें तह्सीलदार और शहर भरतपुरमें मुन्तज़िम फ़ौज्दारी शहर, और अदालती दीवानी शहर, रहते हैं. फ़ौज्दारी मुआ़मलातमें कुल तह्सीलदारों व मुन्तज़िम शहर फ़ौज्दारीको तीन महीनेतक क़ैद व दस रुपयेतक जुर्मानहका इख़्तियार है; और दीवानी मुक़द्दमोंमें तह्सीलदारों व अदालती दीवानी शहरको ५००) रुपयेतक के दावेकी समाअ़तका इख़्तियार है. इन सबका अपील अदालतोंमें होता है. हर तह्सीलमें एक थानहदार मए जमइ्यत के मुक़र्रर है; और शहरके अन्दर कोतवालके तह्तमें चौकीदार व पोलिस वगैरह है. सिवा इनके महकमह माल, साइर, फ़ौज, तामीरात, और सरिश्तह तालीम व

हिफ़ाज़नि सिहत वग़ैरह कुल बड़े छोटे महकमों व कारख़ानोंकी संभालपर जुदे जुदे प्रबन्ध कर्त्ता नियत हैं. फ़ौजकी क़वाइद वग़ैरहका काम ख़ुद रईस देखता है, और हर एक छोटेसे छोटे नौकरकी मौकूफ़ी बहाली भी बिना मन्ज़ूरी रईसके नहीं होती.

डाकख़ानह- इस राज्यमें चार जगह अंग्रेज़ी डाकख़ाने हैं- १ भरतपुरमें, २ कुम्हेरमें, ३ दीगमें और ४ कामामें; बाक़ी इलाक़ह भरमें राज्यकी डाक है.

सरिश्तह तालीम- इस सरिश्तहपर एक सुपरिन्टेन्डेएट नियत है, जो कुल मद्रसोंकी निगरानी रखता है. भरतपुरमें एक मद्रसह है, जिसमें अंग्रेज़ी, संस्कृत, फ़ार्सी व हिन्दी और हिसाब वग़ैरहकी शिक्षा दीजाती है. इस मद्रसेके मुतअल्लिक़ एक छापाख़ानह भी है, जिसमें स्कूलकी पढ़ाईकी किताबें और राज्यका स्टाम्पी काग़ज़ छपता है. तह्सीली मद्रसोंमें, जो राज्यके गांवोंमें क़ाइम किये गये, फ़ार्सी, हिन्दी और हिसाबी काम सिखाया जाता है. तह्सीली मद्रसोंके ख़र्चका ज़ियादह हिस्सह ज़मींदारोंसे वुसूल होता है.

ज़ात, फ़िर्क़ह व क़ौम- इस राज्यके बाशिन्दे ख़ासकर जाट, गूजर, मुसल्मान, मेव, मीणा, ब्राह्मण, कायस्थ, बनिया, अहीर, माली और धांकड़ हैं; और इनके अलावह कई दूसरी क़ौमें शागिर्द पेशहमेंसे भी आबाद हैं. कुल आबादीमें फ़ी सैकड़ा १८ मुसल्मान और बाक़ी हिन्दुओंमें फ़ी सैकड़ा उन्नीस जाट हैं; मुसल्मानोंमें ज़ियादह तादाद मेवोंकी है.

ज़मीनका क़बज़ह व मह्सूल- इस राज्यमें दो तरहकी ज़मीन है, अव्वल ख़ालिसह और दूसरी मुआफ़ी. ख़ालिसहके गांवोंकी तादाद ११७४ और मुआफ़ीके गांवोंकी तादाद १९५ है. ज़मींदारोंकी तरफ़से किसान लोग खेती करते हैं, और उनको लगान देते हैं; वह लगान ज़मीनकी हैसियत और पैदावारकी मिक्दार तथा क़िस्मके मुवाफ़िक़ लीजाती है, जिसमेंसे ज़मींदार अपना मालिकानह नफ़ा रखकर सर्कारी जमा गांवके पटवारीकी मारिफ़त नक्द रुपया ऑक्टोबर व एप्रिलकी दो क़िस्तोंमें हर फ़स्लपर राज्यके ख़ज़ानहमें जमा कराता है. मुआफ़ीकी तीन क़िस्में हैं- १ इन्आम, २ जागीर, और ३ पुण्यार्थ. इन्आमके गांव, जो तादादमें ५० हैं, सिपाहियानह नौकरीके एवज़ औसत दरजह तीस बीघा ज़मीन फ़ी बन्दूक़के हिसाबसे बटे हुए हैं. जागीरी गांवोंकी तादाद १०० के लगभग है. ये जागीरें मौरूसी हैं, जिनमें ज़ियादह तर महाराजा सूरजमल्लकी औलाद वाले कोटड़ी बन्द ठाकुर हैं. इन जागीरदारोंकी नौकरी व ख़िराज दोनों मुआफ़ हैं; लेकिन ज़मींदारों

को बेदख़्ल करने और मुक़र्ररह जमासे ज़ियादह वुसूल करनेका अपनी जागीरोंमें इख़्तियार नहीं रखते. पुण्यार्थ गांव ४५ हैं, जो मन्दिरों, ब्राह्मणों, तथा बैरागियों को खैरातमें मिले हैं.

मश्हूर शहर व क़स्बे.

ख़ास शहर भरतपुर नीची ज़मीनपर बसा है, जिसकी लम्बाई ३ मीलके क़रीब और चौड़ाई एक मीलसे कुछ ज़ियादह है. लड़ाईके वक्त बाहरकी झीलोंसे इतना पानी छोड़ दिया जा सक्ता है, कि दुश्मनकी ताक़त नहीं, कि शहरमें घुस सके. शहर-पनाह कच्ची, लेकिन् बहुत चौड़ी बनाई गई है, जिसमें १० दर्वाज़े शहरके भीतर आने जानेको हैं. शहरपनाहके गिर्दवाली खाई बर्सातके दिनोंमें सब जगह और दूसरे मौसममें जहां जहां गहराई है, पानीसे भरी रहती है; शहरपनाहके चारों तरफ़ पक्की सड़क सैर करनेके लिये बनी हुई है. इस शहरका नाम राजा रामचन्द्रके भाई भरतके नामपर भरतपुर रक्खा गया है. अगर्चि यह आबादी पुरानी है, लेकिन् क़िला और बहुतसे मकानात महाराजा सूरजमल्लके समयसे नये तय्यार होकर यह शहर राजधानी बनाया गया. शहरके भीतर एक मज़्बूत और ऊंचा क़िला है, जिसके गिर्द बहुत चौड़ी और गहरी खाई बनी हुई है; उसमें हमेशह पानी भरा रहनेसे शहरवालोंको बहुत कुछ आराम मिलता है. क़िलेके दो दर्वाज़े और आठ बुर्ज हैं, और तीन महल, याने एक मर्दानह, दूसरा ज़नानह और तीसरा कचहरीका, उम्दह गिने जाते हैं. महाराजा क़िलेमें नहीं रहते; उन्होंने शहरसे पश्चिम तरफ़ तीन मील दूरीपर सेवर गांवके पास एक छावनी बसाकर रहना इख़्तियार किया है, जहां कई बंगले और फ़ौजकी बारकें वग़ैरह दूरतक फैली हुई हैं.

बयानाका क़िला एक प्रसिद्ध मक़ाम है, जो शुरू ज़मानहमें चन्द्रवंशी यादव राजपूतों और बाद उसके अक्सर दिल्ली वग़ैरहके ज़बर्दस्त बादशाहोंके क़बज़हमें रहा; मुग़्लों की सल्तनत बिगड़नेपर, जिसतरह जयपुरवालोंके क़िला रणथम्भोर हाथ लगा, बयानाको भरतपुरवालोंने दबा लिया.

डीग- यह भी इस राज्यमें एक मश्हूर जगह है, जो मकानोंकी मज़्बूती, बाग़की रौनक़ और फ़व्वारोंकी कस्रतसे तारीफ़के लाइक़ गिनी जाती है, बल्कि मुन्शी ज्वाला-सहायने कारीगरी व उम्दगीमें आगराके रौज़ए मुम्ताज़ महलसे दूसरे दरजेपर यहांके महलातको ही रक्खा है. शहरमें एक मज़्बूत क़िला और उसके गिर्द चन्द झील हैं.

कामा - इसकी बाबत बयान है, कि यह क़स्बह पुराने ज़मानहकी आबादी है, जो ब्रजमें हिन्दुओंके मज़्हबी तीर्थ स्थानोंमेंसे श्री कृष्णचन्द्रकी ननिहाल समझा जाता है.

वैर - एक बड़ा क़स्बह, राजाके महल, बाग़, और मज़्बूत क़िलेके सबब मश्हूर मक़ामोंमें शुमार किया जाता है.

रूपबास - यह क़स्बह अगर्चि छोटासा है, लेकिन् इसमें क़दीम ज़मानह के बने हुए लाल पत्थरके महल और उनके नीचे एक पक्का तालाब है, जो अक्बर बादशाहके फ़त्हपुर सीकरीमें रहनेके समय तय्यार कराये गये थे. यहां महाराजा बलवन्तसिंहका बनवाया हुआ एक बाग़ भी है.

हलेना - पर्गनह भुसावरमें एक क़स्बह है, जो रियासत भरतपुरके अगले महाराजाओंके बनवाये हुए महलसे प्रसिद्ध है.

पहरसर - यह गांव गद्रके पीछेसे नई शुहरत पाने लगा है, जिसके बहुधा मुसल्मान बाशिन्दे मामूली सिपाहगरीसे अहल्कारीके दरजेको पहुंचकर सय्यद होनेका दावा रखते हैं.

पहाड़ी - मेवातमें एक पर्गनहका सद्र है, इसमें साहिबख़ां नामी एक ख़ानज़ादह पीरकी दर्गाह है.

ऊपर लिखे हुए शहर व क़स्बोंके सिवा, नीचे लिखे हुए मक़ामात भी इस रियासतमें मुरुतलिफ़ सबबोंसे प्रसिद्ध समझे जाते हैं:- भुसावर, बोकोली, बहनेरा, चकसाना, गोरधा, गोपालगढ़, केतवाड़ी, खानूवा, नगर, और फ़र्सों.

सड़कें - राज्य भरतपुरमें नीचे लिखी हुई ख़ास सड़कें हैं:-

१ आगरासे जयपुरतक, २ भरतपुरसे दीगतक, ३ दीगसे कामातक, ४ दीग, व अलवरके दर्मियान, ५ भरतपुरसे मथुराको जानेवाली, ६ दीग व मथुराके बीचमें, ७ भरतपुरसे सीकरी फ़त्हपुरतक, ८ शहरके गिर्द, ९ एजेन्सीसे सेवरतक, १० मन्दिर केवलादेवकी सड़क, ११ भरतपुरसे हिंडौनतक, १२ दीगसे नदबईतक, १३ गोपालगढ़से कामातक, १४ बयानासे ज़गनेरको जानेवाली, और १५ भरतपुर व गोवर्द्धनके दर्मियान.

तवारीख़.

भरतपुरके रईस अगर्चि अपना नस्बनामह श्री कृष्णचन्द्रसे मिलाते हैं, परन्तु वह क़ौमसे जाट माने जाते हैं, और उन्हीं लोगोंमें उनके विवाह शादी आदि होते हैं.

आलमगीरके आखरी ज़मानहमें, जिसके वैर विरोध और ज़ुल्मने अक्सर हिन्दू कौमोंको उससे बर्खिलाफ़ और सर्कश बननेके लिये मज्बूर किया, और जिसके पीछे बहुतसी बुराइयें बढ़कर मुग़ल बादशाहोंकी सल्तनत बर्बाद हुई, भरतपुर वालोंके बुज़ुर्ग भी काश्तकारी छोड़कर लूट मार वग़ैरह करने लगे; और तक्लीफ़ व कामयाबी दोनों हालतोंमें अपनें इरादहसे न रुके. इनमेंसे पहिला राजाराम जाट अपने गिरोहका मुखिया बना था, जिसको विक्रमी १७४६ [हि० ११०० = ई० १६८९] में आलमगीरकी फ़ौजने मुक़ाबलेमें क़त्ल किया. उसके बाद थोड़े दिन उसका बेटा और अखीरमें चूड़ामन, जो राजारामका भतीजा था, जाटोंका सर्दार बना; इसको फ़र्रुख़-सियर बादशाहके अह्दमें वज़ीर अब्दुल्लाहखांने रास्तेकी हिफ़ाज़त रखनेके लिये "राहदारखां" ख़िताब मए थोड़ीसी जागीरके दिया था. परन्तु वह अपनी लूट मारकी आदतसे न रुका, तो बादशाही तरफ़से विक्रमी १७७४ [हि० ११२९ = ई० १७१७] में महाराजा सवाई जयसिंहको चूड़ामनकी सज़ादिहीका हुक्म मिला, लेकिन् वह फ़र्मांबर्दार न बना, बल्कि उसने हमलह करनेवालोंको शिकस्त देकर निकाल दिया.

इत्तिफ़ाक़से चूड़ामनका भतीजा बदनसिंह, जो बर्खिलाफ़ीके सबब मुह्कमसिंहकी क़ैदमें रह चुका था, सवाई जयसिंहसे जा मिला, और उनको अपनी मददके लिये साथ लाकर थून मक़ामपर मुहासरह करने बाद चूड़ामनके बेटे मुह्कमसिंह (१) को भगाकर इलाक़हपर क़ाबिज़ होगया. विक्रमी १७८० [हि० ११३५ = ई० १७२३] में बदनसिंह जाटोंका सर्दार माना गया, जिसको सवाई जयसिंहने डीग मक़ामपर राजाओंकी तरह राज्य तिलक दिया. इसके बाद बदनसिंह और उसकी औलाद बराबर तरक़्क़ी करती रही. अगर्चि कई बार इलाहाबादके सूबहदारोंने उनको तबाहीके क़रीब पहुंचा दिया, लेकिन् वे इस इलाक़हमें अंग्रेज़ोंके समयतक बने रहे, और उनको दूसरे राजाओंकी तरह सर्कारने रईस माना. बदनसिंहसे इस समयतक डेढ़ सौ वर्षके अरसहमें ग्यारह रईस भरतपुरकी गद्दीपर बैठे, जिनमेंसे हर एकका मुख़्तसर तारीख़ी हाल यहां दर्ज किया जाता है:-

(१) मुन्शी ज्वालासहाय अपनी किताब वक़ाये राजपूतानहमें लिखता है, कि अगर्चि भरतपुरके मुवर्रिख़ोंने यह मारिका मुह्कमसिंहके साथ होना लिखा है, परन्तु एक अंग्रेज़ी मुवर्रिख़ने इस लड़ाईका चूड़ामनसे होना और शिकस्त खाने बाद चूड़ामन और मुह्कमसिंह दोनोंका भाग जाना बयान किया है.

१– राजा बदनसिंह.

विक्रमी १७७९ चैत्र शुक्ल १ [हि० ११३४ ता० ३० जमादियुल्अव्वल = .ई० १७२२ ता० १८ मार्च] को राजा बना, और दीग, कुम्हेर, और वैर वगैरह मक़ामोंपर मज़्बूतीके लिये क़िले बनवाये, और अपने बेटे सूरजमल्लको राज्य सौंपकर विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = .ई० १७५५] में गुज़र गया.

२– राजा सूरजमल्ल.

इसने विक्रमी १७८९ [हि० ११४५ = ई० १७३२] में खेमा जाटको भरतपुरसे ख़ारिज किया और उसका गढ़ तोड़कर अपना बड़ा क़िला तय्यार कराने बाद क़स्बहको राजधानी बनाया. दीगके मश्हूर महल भी इसी राजाके समयमें तय्यार हुए थे. विक्रमी १८१७ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में अहमदशाह अब्दालीकी लड़ाईके वक्त इसने मरहटोंको मदद दी थी. विक्रमी १८२० [हि० ११७७ = ई० १७६३] में इलाहाबादके सूबहदार नजीबुद्दौलहसे इसकी लड़ाई हुई; यह बड़ी बहादुरीसे जान तोड़कर लड़ा, लेकिन् अख़ीरमें इसी विक्रमीकी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ रजब = .ई० १७६४ ता० १५ जैन्युअरी] को पठानोंके हाथसे मारा गया. कर्नेल टॉड अपनी किताबमें लिखते हैं, कि सूरजमल्लके पांच बेटों, जवाहिरसिंह, रत्नसिंह, नवलसिंह, नाहरसिंह, और रणजीतसिंहमेंसे पहिले दो कोरमी क़ौमकी औरतसे, तीसरा मालिनसे और चौथा तथा पांचवां जाटनीसे पैदा हुए थे.

३– राजा जवाहिरसिंह.

यह अपने बापके मारे जाने बाद दीग मक़ामपर गद्दी नशीन हुए. इन्होंने विक्रमी १८२१ [हि० ११७८ = .ई० १७६४] में बहुतसी सिक्खोंकी फ़ौज और शिमरू फ़िरंगीको नौकर रक्खा और मरहटोंको मददगार बनाकर नजीबुद्दौलहसे अपने बापका बदला लेना चाहा, परन्तु कुछ लड़ाइयां होने बाद आपसमें सुलह होगई. राजा जवाहिरसिंह विक्रमी १८२४ [हि० ११८१ = .ई० १७६७] (१) में पुष्कर स्नानको गये, और वहांपर जोधपुरके महाराजा विजयसिंहसे मुलाक़ात हुई; लौटते वक्त जयपुरके

(१) इस तवारीख़के पृष्ठ १३७७ में अलवरकी तवारीख़के अंतर्गत जवाहिरसिंहका पुष्कर स्नानको जाना और लौटते वक्त जयपुरकी फ़ौजसे उसका मुक़ाबलह होना विक्रमी १८२३ [हि० ११८० = .ई० १७६६] में पाउलेट् साहिबके गज़ेटिअरके मुताबिक़ भूलसे लिख दिया गया है; अस्लमें इस लड़ाईका होना विक्रमी १८२४ में ही सहीह है, जैसा कि इसी तवारीख़के पृष्ठ १३०४ में पहिले लिखा जा चुका है.

महाराजा माधवसिंह अव्वलकी फ़ौजने जवाहिरसिंहको अपने इलाक़हमें घेरलिया. सख्त मुक़ाबलेके बाद, जिसमें दोनों तरफ़की फ़ौजके बहुतसे आदमी और जयपुरके अहलकार गुरसहाय व हरसहाय खत्री मारे गये, जवाहिरसिंह भरतपुरको भाग आये, और जयपुरके इलाक़हमेंसे कामाका पर्गनह दबा लिया. दूसरे वर्ष राजा जवाहिरसिंह क़िले आगराकी सैर करनेके वक्त विक्रमी १८२५ द्वितीय श्रावण शुक्ल १५ [हि० ११८२ ता० १४ रबीउस्सानी = .ई० १७६८ ता० २७ ऑगस्ट] को एक शख़्सके हाथ तलवारसे घायल होकर मरगये, और उनके दूसरे भाई रत्नसिंह राज्यके मालिक हुए.

४– राजा रत्नसिंह.

यह विक्रमी १८२५ भाद्रपद कृष्ण १ [हि० ११८२ ता० १५ जमादियुल् अव्वल = ई० १७६८ ता० २८ ऑगस्ट] को राजा होकर सात महीने बाद विक्रमी १८२६ चैत्र शुक्ल ५ [हि० ११८२ ता० ३ ज़िल्हिज = .ई० १७६९ ता० ११ एप्रिल] को एक गुसाईंके हाथसे, जिसने कीमिया (रसायण) बनानेका फ़िरेब दिया था, एक मन्दिरमें क़त्ल हुए. इनके नौकरोंने गुसाईंको भी मारडाला, और राजा जवाहिरसिंहके बेटे केसरीसिंह वारिस माने गये.

५– राजा केहरीसिंह (केसरीसिंह).

यह विक्रमी १८२६ चैत्र शुक्ल ६ [हि० ११८२ ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० १२ एप्रिल] को अपने चचाके बाद गद्दीपर बिठाये गये. इनकी कम उम्रीके ज़मानहमें इनका एक चचा नवलसिंह दीवान और राज्यका मुख़्तार बना; और उसके दूसरे भाई रणजीतसिंहने मरहटों व सिक्खोंकी मददसे राज्यका दावा किया. नवलसिंहने पांच छः रोज़तक आपसमें सख्त लड़ाई रहनेके बाद लाचार होकर मरहटोंसे इक़ार किया, कि वह मुहासरह छोड़कर मथुराको चले जायें, तो एक करोड़ रुपया दिया जायेगा; लेकिन् उनके रवानह होते ही पीछेसे जाटोंने सेंधिया और हुल्करका सामान लूटना शुरू किया. इस दग़ाबाज़ीके बाद मरहटोंने फिर डीगमें नवलसिंहको घेर लिया, और सत्तर लाख रुपया जुर्मानह लेकर पीछा छोड़ा.

विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में शाह आलम दूसरेके मातहत सर्दार नजफ़ख़ांने नाराज़ होकर नवलसिंह और उसके नौकर शिमरू फ़िरंगीको शिकस्तें देने बाद .इलाक़हसे निकाल दिया; लेकिन् कुछ अरसह बाद राजा केसरीसिंहकी माता राणी किशोरीके लाचारी करनेपर नव्वाबने इलाक़ह वापस देदिया. विक्रमी १८३३ [हि० ११९० = ई० १७७६] में नवलसिंहके मरने

पर उसके भाई रणजीतसिंहको दीवानीका उह्दह मिला. रणजीतसिंहने अपने मुख़ालिफ़ पठानोंको दीगसे ख़ारिज करदिया, जिसपर नव्वाब नजफ़ख़ांने फिर मुल्क छीन लिया. राजा और दीवान भागकर छिपगये, और दूसरे साल विक्रमी १८३३ चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ११९१ ता० २८ सफ़र = .ई० १७७७ ता० ७ एप्रिल] को राजा नाउम्मेदी की हालतमें चेचककी बीमारीसे मरगया.
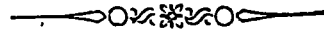
६- राजा रणजीतसिंह.

यह विक्रमी १८३४ चैत्र शुक्ल १ [हि० ११९१ ता० २९ सफ़र = .ई० १७७७ ता० ८ एप्रिल] को जाटोंके सर्दार माने गये; लेकिन् उनके पास कुछ इलाक़ह न था; लाचार इन्होंने अपनी भावी राणी किशोरीकी मारिफ़त एक भारी नज़ानह नव्वाब नजफ़ख़ांको दिया, जिससे खुश होकर नव्वाबने उसको नौ लाख रुपया आमदनीके पर्गने देकर राजा बनाया. विक्रमी १८३९ [हि० ११९६ = .ई० १७८२] में मिर्ज़ा मुहम्मद शफ़ीअ्ने, जो नव्वाब नजफ़ख़ांके मरनेपर वज़ीर हुआ था, शहर भरतपुरके सिवा कुल इलाक़ह छीन लिया; लेकिन् मुहम्मद शफ़ीअ्को इस्माईलबेगने, जो दीगपर क़ाबिज़ था, दग़ासे क़त्ल करडाला, और रणजीतसिंहने दोबारह मुल्कमें दख़्ल करलिया. इसके थोड़े दिन पीछे महाराजा सेंधियाने शाह आलमको खुश रखनेके लिये भरतपुर वालोंको तंग करके उनसे कुछ जुर्मानह लिया.

विक्रमी १८४१ [हि० ११९८ = .ई० १७८४] में महाराजा सेंधिया और भरतपुरका कुंवर रणधीरसिंह बादशाह शाह आलमको अपने मुल्कमें सैर करानेके वास्ते लाये, जिसने वदलबेगसे दीगका क़िला भरतपुरवालोंको, और दाऊदबेगसे आगरेका क़िला सेंधियाको दिला दिया. सेंधियाकी तरफ़से जेनरल पेरन साहिब आगरेकी हुकूमतपर नियत हुआ था, जिसको विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = .ई० १८०४] में अंग्रेज़ी जेनरल लॉर्ड लेकने शिकस्त देकर निकालने बाद अपना अधिकार जमाया. इस वक्त भरतपुर वाले लॉर्ड लेकसे मिलगये, और एक अह्दनामह लिखा; परन्तु थोड़े दिनोंमें पोशीदह तौरपर हुल्करसे मिलावट करली, जिसपर लॉर्ड लेकने हुल्कर और रणजीतसिंहको दीगमें शिकस्त देने बाद विक्रमी १८६१ पौष शुक्ल ६ [हि० १२१९ ता० ५ शव्वाल = .ई० १८०५ ता० ७ जैन्युअरी] को भरतपुर आकर शहरपर घेरा डाला; लॉर्ड लेककी फ़ौजने क़िलेपर तीन चार बार हमलह किया, जिसमें तीन हज़ार सर्कारी सिपाही क़त्ल और ज़ख्मी हुए; झीलका पानी शहर और क़िलेके गिर्द छोड़दिया जानेसे लॉर्ड लेकने लाचार होकर घेरा उठा लिया. अंग्रेज़ी फ़ौजकी शिकस्तसे अगर्चि भरतपुरने शुहरत पाई, लेकिन् दोबारह बदला लिये जानेके डरसे

महाराजा रणजीतसिंहने तेरह लाख रुपया फ़ौज खर्चका लॉर्ड लेकको भेजकर सुलह करली. लड़ाईके दूसरे वर्ष विक्रमी १८६२ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ [हि० १२२० ता० १४ रमज़ान = .ई० १८०५ ता० ६ डिसेम्बर] को महाराजाका देहान्त होनेपर उसका बेटा रणधीरसिंह गद्दीपर बैठा.

७- महाराजा रणधीरसिंह.

यह विक्रमी १८६२ पौष कृष्ण १ [हि० १२२० ता० १५ रमज़ान = ई० १८०५ ता० ७ डिसेम्बर] को गद्दी नशीन हुए; और विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = .ई० १८१४] में फ़त्हपुर सीकरी मक़ामपर लॉर्ड म्वायरा (१) साहिबसे मुलाक़ात करने गये. विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = .ई० १८१७] में पिंडारोंके मुक़ाबिल इन्होंने अंग्रेज़ी सर्कारको मदद दी. विक्रमी १८८० आश्विन शुक्ल ४ [हि० १२३९ ता० ३ सफ़र = .ई० १८२३ ता० ७ ऑक्टोबर] को उनके मरजानेसे उनके छोटे भाई वल्देवसिंहको राज्य मिला.

८- महाराजा वल्देवसिंह.

यह विक्रमी १८८० आश्विन शुक्ल ५ [हि० १२३९ ता० ४ सफ़र = .ई० १८२३ ता० ८ ऑक्टोबर] को राज्यके मालिक बने; इनके छोटे भाई लछमण-सिंह (लक्ष्मणसिंह) के मरजाने बाद उसके बेटों माधवसिंह और दुर्जनशालमेंसे पहिलेने महाराजासे वर्ख़िलाफ़ी की, और दूसरेने महाराजाके गुज़रने बाद नौ महीना तक राज दबा लिया.

विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = .ई० १८२४] में महाराजाने जेनरल अक्टर लोनीको भरतपुर वुलवाया, और अपने छः वर्षके बेटे बलवन्तसिंहको हिफ़ाज़त और हिमायतके भरोसेपर उनकी गोदमें विठाया. इसी विक्रमी की फाल्गुन शुक्ल ११ [हि० १२४० ता० १० रजव = .ई० १८२५ ता० १ मार्च] को डेढ़ वर्षके क़रीब राज्य करने वाद महाराजाका इन्तिक़ाल होगया; और दुर्जनशालने भरतपुर दबाकर कुंवर वलवन्तसिंहको नज़र वन्द करदिया.

९- महाराजा दुर्जनशाल.

इसने विक्रमी १८८१ चैत्र कृष्ण ९ [हि० १२४० ता० २२ रजव = .ई० १८२५ ता० १३ मार्च] को कई अफ्सरों और फ़ौजकी मददसे राज्यपर क़बज़ह हासिल

(१) .ईसवी १८१३ में लॉर्ड मिन्टो और .ईसवी १८१४ में मार्क्विस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़ गवर्नर जेनरल थे, न मालूम वावू ज्वालासहायने लॉर्ड म्वायरा कहांसे लिखा है.

किया था; ऑक्टर लोनी साहिबने दुर्जनशालके ख़ारिज करनेको अंग्रेज़ी फ़ौज बुलाई, मगर लॉर्ड एम्हर्स्टने उनकी तज्वीज़को, इस सबबसे, कि यह ख़ानगी झगड़ा है, नामन्ज़ूर करके उनको मौक़ूफ़ करदिया; कहते हैं, कि इसी शर्मिन्दगीसे जेनरल ऑक्टर लोनी थोड़े दिनों पीछे मरगये. लेकिन् फ़साद फैलनेके अन्देशहसे लॉर्ड कम्बरमेअर पच्चीस हज़ार सर्कारी फ़ौज लेकर भरतपुर आये. उन्होंने अगले वर्ष झीलका पानी फैलनेसे नाकामीके सबब पहिले झीलको क़बज़हमें करलिया, और सुरंग लगाकर एक महीनेके अन्दर क़िला ख़ाली करालिया. दुर्जनशाल भागतेहुए गिरिफ़्तार होकर आगरे भेजे गये, और बलवन्तसिंह राज्यके मालिक बनाये गये, जिनकी कम उम्रीके सबब एक पोलिटिकल एजेण्ट इन्तिज़ामकी निगरानीको मुक़र्रर हुआ.

१०- महाराजा बलवन्तसिंह.

विक्रमी १८८२ पौष शुक्ल ११ [हि० १२४१ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १८२६ ता० १९ जैन्युअरी] को सर्कारी मददसे राजा हुए. लॉर्ड कम्बरमेअरने फ़ौजको मिहनतके एवज़ इन्आम दिलाना चाहा, जो महाराणी और राज्यके अह्लकारोंको मन्ज़ूर न होनेसे फ़ौजने बेरह्मीके साथ ज़नानह मह्लोंके सिवा क़िले और तमाम शहरको लूटकर बर्बाद करदिया; दूसरे साल इन्तिज़ामकी ख़राबीके सबब पोलिटिकल एजेण्टकी रिपोर्टपर महाराजाकी माता हुकूमतसे बेदख़्ल, और दीवान जानी बैजनाथ शहरसे ख़ारिज किया गया.

विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में महाराजाको रियासती इख़्तियारात मिलकर एजेन्सी उठाली गई. विक्रमी १९०७ फाल्गुन् कृष्ण १४ [हि० १२६७ ता० २७ रबीउस्सानी = ई० १८५१ ता० १ मार्च] को कुंवर जशवन्तसिंहके पैदा होनेकी ख़ुशीमें महाराजाने तमाम नौकरों और रिआयाको इन्आम और शीरीनी बांटकर जेलख़ानहके कुल क़ैदी छोड़ दिये. दो वर्ष पीछे विक्रमी १९०९ फाल्गुन् शुक्ल ११ [हि० १२६९ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १८५३ ता० २१ मार्च] को महाराजाका देहान्त होगया.

११- महाराजा जशवन्तसिंह.

मौजूदह महाराजा जशवन्तसिंह विक्रमी १९१० आषाढ़ शुक्ल २ [हि० १२६९

ता० १ शव्वाल = ई० १८५३ ता० ८ जुलाई] को गद्दी नशीन हुए. दूसरे वर्ष कर्नेल हेनरी लॉरिन्स साहिब रेज़िडेएट राजपूतानहकी हिदायतसे राज भरतपुरमें मुल्की अदालतें, तह्सील और थाने अंग्रेज़ी अमल्दारीकी तरह क़ाइम किये गये. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमें भरतपुरके अहल्कार साहिब एजेएटकी सलाहसे खैरख्वाह बने रहे. विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] में महाराजाकी शादी पटियालाके महाराजा नरेन्द्र-सिंहकी बेटीके साथ हुई. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] की रिपोर्टमें मेजर वॉल्टर साहिबने महाराजाकी बहुत तारीफ़ लिखी, जिसपर दूसरे साल उनको मुल्की इख्तियारात सर्कारी हुक्मसे मिलगये. अगर्चि कई सालतक पोलिटिकल एजेएटकी सलाहपर चलनेकी शर्त की गई, लेकिन् दो वर्ष बाद कर्नेल ब्रुकने इस क़ैदको दूर किया. महाराजाके इख्तियार मिलनेसे पहिले पटियालावाली महाराणी किसी रंजीदगीके सबब अपने पिताके यहां चली गई थीं, जहांपर कुछ मुद्दतमें उनका और उनके कुंवरका थोड़े दिनोंके फ़र्क़से इन्तिक़ाल होगया.

विक्रमी १९२९ आश्विन [हि० १२८९ रजब = ई० १८७२ सेप्टेम्बर] में महाराजाके कुंवर रामसिंहका जन्म हुआ; दिल्लीके शहन्शाही दर्बारमें महाराजाको विक्रमी १९३३ माघ कृष्ण २ [हि० १२९३ ता० १५ ज़िल्हिज = ई० १८७७ ता० १ जेन्युअरी] को जी० सी० एस० आइ० का खिताब और तमगह सर्कार अंग्रेज़ीसे मिला. विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = ई० १८८७] में ज्युबिलीके मौक़ेपर महाराजाने अपनी तरफ़से मुबारकबादके वास्ते चार अह्लकार विलायतको भेजे, जो खैरियत और खुशीके साथ वापस आ गये. यह महाराजा कोई दीवान नहीं रखते, राज्यका कुल काम खुद संभालते हैं. इनके राज्यमें दीवान जानी बिहारीलाल राव बहादुर बड़े क़दीम और मश्हूर अह्लकार हैं.
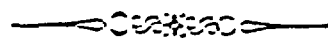
भरतपुरका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब जिल्द ३,

अह्दनामह नम्बर ६७, जो सन् १८०३ ई० में

क़रार पाया.

अह्दनामह, जो हिज़् एक्सिलेन्सी मोस्ट नोब्ल रिचर्ड मार्किस ऑफ़ वेलेज़्ली,

गवर्नर जेनरल इन् कौन्सिल, मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम वाके बंगालाकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी लेफ्टिनेण्ट जेनरल, जिरार्ड लेक, शाही फ़ौजोंके सिपह्सालार और भरतपुरके महाराजा विश्वेन्द्र सवाई रणजीतसिंह बहादुरके दर्मियान क़रार पाया.

शर्त पहिली- महाराजा विश्वेन्द्र सवाई रणजीतसिंह बहादुर, बहादुर जंग और ऑनरेबल कम्पनीके दर्मियान हमेशहके लिये दोस्ती क़ाइम रहेगी.

शर्त दूसरी- हर एक सर्कारके दोस्त व दुश्मन, दोनोंके दोस्त और दुश्मन समझे जायेंगे.

शर्त तीसरी- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी महाराजाके मुल्की मुआमलातमें हर्गिज़ दख़्ल न देगी, और न कुछ ख़िराज तलब करेगी.

शर्त चौथी- अगर कोई दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीके इलाक़हपर हमलह करेगा, तो महाराजा इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि वह उस दुश्मनको निकालनेमें अपनी फ़ौजसे मदद करेंगे, और इसी तरह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी इक़ार करती है, कि अगर महाराजाके इलाक़हपर कोई बाहिरी दुश्मन हमलह करेगा, तो वह महाराजा की मदद उनकी रियासतकी हिफ़ाज़तके वास्ते अपनी फ़ौजसे करेगी.

इन शर्तोंके अनुसार चलनेका इक़ार इन्जीलके रूसे किया जाता है.

ता० २९ सेप्टेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ ता० ११ जमादियुस्सानी, सन् १२१८ हिज्रीको लिखा गया.

(नक़्ल मुताबिक़ अस्लके है.)

(दस्तख़त)- जी० लेक.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलने ता० २२ ऑक्टोबर सन् १८०३ ई० को की.

नम्बर ६८.

अह्दनामह, जो भरतपुरके राजासे सन् १८०५ ई० में किया गया.

दोस्ती और एकताका अह्दनामह जो ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी

और महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुर, बहादुर जंगके दर्मियान, हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिराई लॉर्ड लेककी मारिफ़त, हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबूल रिचर्ड मार्किस ऑफ़ वेलेज़्ली, गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके दिये हुए इख्तियारातसे, जो उनको हिन्दुस्तानके तमाम अंग्रेज़ी इलाक़ों और हिन्दुस्तानकी तमाम मौजूदह अंग्रेज़ी फ़ौजोंकी बाबत हासिल हैं, ऑनरेबूल ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी तरफ़से और महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुर, बहादुर जंगके, उनकी ज़ात ख़ास, उनके वारिसों और जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहिली- हमेशहके लिये मज़्बूत दोस्ती और एकता ऑनरेबूल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुर और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम हुई है.

शर्त दूसरी- चूंकि दोनों सर्कारोंके दर्मियान दोस्ती क़ाइम हुई है, इसलिये दोस्त और दुश्मन एक सर्कारके, दोस्त और दुश्मन दोनोंके समझे जायेंगे, और इस शर्तकी पाबन्दीका दोनों सर्कारोंको हमेशह लिहाज़ रहेगा.

शर्त तीसरी- चूंकि कई बातें ऐसी वाक़े हुई हैं, जिनके सबबसे, ऑनरेबूल कम्पनी और महाराजा रणजीतसिंहके दर्मियानकी अगली दोस्ती टूट गई थी, और चूंकि अब दोबारह क़ाइम हुई है, इसलिये उन बातोंको दूर करनेकी नज़रसे महाराजा इक़ार करते हैं, कि उनके कुंवरोंमेंसे एक कुंवर हमेशह अंग्रेज़ी अफ़्सरके साथ, जो दिल्ली या आगराकी फ़ौजके हाकिम होंगे, उस वक़्ततक रहा करेगा, जबतक कि अंग्रेज़ी गवर्मेंटको महाराजाकी दोस्ती और एकताका इत्मीनान साबित होगा; और ऑनरेबूल कम्पनी यह वादह करती है, कि जब उस को गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी निस्बत महाराजाकी दोस्ती व एकतापर इत्मीनान होजायेगा, तो दीगका क़िला, जो हालमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीके अफ़्सरोंके क़बज़हमें है, राजा रणजीतसिंहको वापस दिया जायेगा.

शर्त चौथी- महाराजा रणजीतसिंह वादह करते हैं, कि वह ऑनरेबूल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनीको उस सुलहके एवज़, जो उसने उनसे अब की है, बीस लाख रुपया फ़र्रुख़ाबादी सिक्केका, नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ देंगे; और ऑनरेबूल कम्पनी उस नुक्सानकी नज़रसे, जो महाराजाका हुआ है, और उसके मुल्ककी ख़राबी व बर्बादी और इस नज़रसे भी, कि महाराजाने बयान किया है, कि वह उस रुपयेको एक दम अदा नहीं कर सके, मन्ज़ूर करती है, कि वह इस रुपयेको नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुताबिक़ लेगी. और ऑनरेबूल कम्पनी यह भी वादह

करती है, कि जब आख़री क़िस्त पांच लाख रुपयेकी अदा करनेके वक़्त गवर्मेंट को महाराजाकी दोस्ती व वफ़ादारीपर भरोसा होजावेगा, तो फिर वह क़िस्त मुआफ़ कीजायेगी.

हालमें एक दम दिया जावे.................................. ३००००० रुपया सिक्कह फ़र्रुख़ाबादी.
दो महीने पीछे.. २००००० ''

५०००००

क़िस्तें.

आख़िर संवत् १८६२, (सन् १८०६ ई० के एप्रिलमें) ३००००० ''
आख़िर संवत् १८६३, (सन् १८०७ ई० के एप्रिलमें) ३००००० ''
आख़िर संवत् १८६४, (सन् १८०८ ई० के एप्रिलमें) ४००००० ''
आख़िर संवत् १८६५, (सन् १८०९ ई० के एप्रिलमें) ५००००० ''

२०००००० सिक्कह फ़र्रुख़ाबादी.

शर्त पांचवीं- जो मुल्क पहिले महाराजा रणजीतसिंहके क़बज़हमें था, याने अंग्रेज़ी गवर्मेंएटकी अमल्दारीसे पहिले, वह मुल्क अब ऑनरेबल कम्पनी उनको देती है; और ऑनरेबल कम्पनी दोस्तीकी नज़रसे, जो अब आपसमें क़ाइम हुई है, इस मुल्कके क़बज़हमें महाराजासे मुज़ाहमत न करेगी, और न इस मुल्कके एवज़ कुछ ख़िराज तलब करेगी.

शर्त छठी- उस हालतमें, कि कोई दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीके इलाक़हपर हमलह करनेका इरादह करेगा, तो महाराजा रणजीतसिंह वादह करते हैं, कि जहां तक उनसे हो सकेगा, उस दुश्मनको निकालनेमें मदद करेंगे, और किसी तरहपर वह लिखा पढ़ी, मिलावट या मदद ऑनरेबल कम्पनीके दुश्मनोंकी न करेंगे.

शर्त सातवीं- जोकि इस अह्दनामहकी दूसरी शर्तके मुवाफ़िक़ ऑनरेबल कम्पनी महाराजाके मुल्ककी हिफ़ाज़त ग़ैर दुश्मनोंके मुक़ाबिलमें करनेकी ज़िम्मह्दार होती है, इसलिये महाराजा इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि अगर कुछ तक़ार उनके और किसी सर्कार या सर्दारके दर्मियान पैदा होगी, तो महाराजा पहिले उस तक़ारके सबबकी मुफ़स्सल कैफ़ियत अंग्रेज़ी ऑनरेबल कम्पनीको लिखकर भेजेंगे, ताकि सर्कार उसका वाजिबी फ़ैसला इन्साफ़ और पुराने रवाजके रू से करादेनेकी कोशिश करेगी; और

अगर दूसरे फ़रीक़की ज़िद्से वाजिबी फ़ैसला तै न पावे, तो महाराजा सर्कार कम्पनीसे मददकी दर्ख्वास्त करें, और ऊपर बयान कीहुई हालतमें इस शर्तके मुवाफ़िक़ मदद दीजायेगी.

शर्त आठवीं- महाराजा आइन्दह किसी अंग्रेज़ी या फ़रांसीसी रिआयाको या यूरोपके किसी और बाशिन्देको सर्कार ऑनरेबल कम्पनीकी मन्जूरी बग़ैर अपनी नौकरीमें या अपने पास नहीं रक्खेंगे; और ऑनरेबल कम्पनी भी वादह करती है, कि वह महाराजाके किसी रिश्तहदार या नौकरको, उनकी रज़ामन्दीके विना अपने पास न रक्खेगी.

ऊपरका अह्दनामह, जिसमें आठ शर्तें हैं, ता० १७ एप्रिल सन् १८०५ ई० मुताबिक़ ता० १६ मुहर्रम सन् १२२० हिज्री और ३ माह वैशाख संवत् १८६२ को मक़ाम भरतपुर वाक़े सूबह अक्बराबादमें हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक और महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुरके मुहर और दस्तख़त होकर मन्जूर हुआ.

जब एक अह्दनामह, जिसमें ऊपर लिखी हुई आठ शर्तें होंगी, हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके मुहर और दस्तख़तके साथ महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुरको दिया जायेगा, तब हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेककी मुहर और दस्तख़तका यह अह्दनामह वापस होगा.

राजाकी मुहर. (दस्तख़त)- लेक. मुहर.

गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलने ता० ४ मई सन् १८०५ ई० को तस्दीक़ किया.

कम्पनीकी मुहर.
(दस्तख़त)- वेलेज़्ली.
(दस्तख़त)- जी० एच० बार्लो.
(दस्तख़त)- जी० अडनी.
गवर्नर जेनरलकी मुहर.

इन अह्दनामोंके अलावह एक अह्दनामह मुज्रिमोंके लेन देनकी बाबत राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ भरतपुरसे भी हुआ है; और गोद लेनेकी सनद भी और रियासतोंके अनुसार मिली है.

तवारीख़ रियासत
धौलपुर.

जुग्राफ़ियह.

रियासत धौलपुर पूर्वी राजपूतानहमें एक छोटी रियासत है, जिसका सालानह खिराज वगैरह सर्कार अंग्रेज़ीसे मुआफ़ है. इसके उत्तरमें सर्कारी ज़िला आगरा; पूर्वमें इलाक़ह ग्वालियर और ज़िला आगरा; दक्षिणमें ग्वालियर, और पश्चिममें राज्य भरतपुर व क़रौली वाके हैं. कुल राज्यका रक़बह १२०० मील मुरब्बा उत्तर अक्षांश २६°, २२′ व २६°, ५७′, और पूर्व देशान्तर ७७°, १६′ व ७८°, १९′ के दर्मियान फैला हुआ है, जिसकी लम्बाई उत्तर पूर्वसे दक्षिण पश्चिमको ७२ मील और चौड़ाई औसत १६ मील; आबादी २४९६५७ आदमी, सालानह आमदनी ९०००००) रुपया, और फ़ौज सवार व पैदल ३००० के क़रीब है.

ज़मीनकी हालत - इस राज्यका पूर्वी हिस्सह अक्सर बराबर और रेतीला है, और दक्षिणी पश्चिमी भागमें जगह जगह छोटी बड़ी पहाड़ियां फैली हुई हैं. ज़मीन यहांकी अगर्चि ख़राब है, लेकिन् आब पाशीसे पैदावार ठीक होती है. जिस साल बारिश अच्छी होती है, फ़स्ल खूब निपजती है. आंबके दरख़्तोंकी कस्रतसे इलाक़हमें रौनक़ ज़ियादह है. धौलपुरसे चार मील पश्चिम तरफ़ पचगांवमें सिफ़ेद और लाल पत्थरकी खानें हैं.

नदियां - चम्बल नदी, जो इस राज्यकी दक्षिणी पूर्वी सर्हद है, पूर्वकी तरफ़ बहती है, और राज्यकी सर्हदपर साठ मीलके क़रीब बहकर ज़िले आगरा व रियासत ग्वालियरकी हद बनगई है.

बाण गंगा - जो इस इलाक़हमें उटंगन नामसे प्रसिद्ध है, थोड़ी दूरतक सर्हदपर बहने बाद १४ मीलके क़रीब मुल्कके भीतर पूर्व रुख़को जाकर वहांसे इस राज्य और ज़िले आगराके बीच बीस मीलतक सर्हद क़ाइम करती है. दक्षिण की तरफ़से पार्वती नामी एक नाला, जो क़रौलीके इलाक़हसे निकलकर धौलपुरके राज्यमें दाख़िल हुआ है, इस नदीमें शामिल होता है.

तालाब व झील— इस रियासतमें ३३ से ज़ियादह तालाब हैं; इनमेंसे अक्सर बादशाही वक़्के बने हुए हैं, जिनको मरम्मत वग़ैरहसे दुरुस्त कराया गया है; और कई नये बनवाये गये हैं. ज़िराअ़तको इनसे बहुत कुछ मदद मिलती है, बल्कि यह कहें, तो कुछ बेजा नहीं, कि ज़िराअ़तकी पैदावारका कुल दार मदार इन्हींपर है. ख़ास धौलपुरमें एक उम्दह तालाब है, और मौज़े ख़ानपुर, धोर, नीमरोल, व पचगांवके तालाब बड़े हैं, जिनसे दो हज़ार बीघाके क़रीब ज़मीन सींची जाती है.

राज्य प्रबन्ध— अगले वक़्तोंमें इस रियासतका इन्तिज़ाम बेक़ाइदह व ख़राब था; अक्सर फ़ौज्दारी मुक़द्दमातकी इत्तिला तक राज्यमें नहीं होती थी, ज़मींदार लोग अपने तौरपर मुदई मुद्दआ़अ़लेहोंका फ़ैसलह करके बाहम राज़ीनामह करा लेते थे; और अक्सर पुलिस वाले भी सद्रको इत्तिला किये बिदून ख़ुद फ़ैसले करदेते थे, अगर्चि उनको इस क़द्र मजाज़ नहीं था, क्योंकि कुल महकमे उस वक़्त मौजूद थे. विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में नया इन्तिज़ाम किया गया, उस वक़्तसे इज्लास ख़ासका महकमह जारी हुआ, जिसमें ख़ुद महाराजा दीवानकी मददसे अपीलकी समाअ़त, संगीन मुक़द्दमोंके फ़ैसले [illegible] राज्य सम्बन्धी दूसरे मुआ़मलात तै करने लगे. महकमह पंचायतमें जो इ[illegible] ख़ासकी शाख़के तौरपर है, कई लोग शामिल [illegible] कुल मुआ़मलात[illegible] अपनी राय समेत इज्लास ख़ासमें भेजते हैं. मह[illegible] सा[illegible] मालपर दो हाकिम नियत [illegible] जिनमेंसे एकके सुपुर्द मालगुज़ारी व मुआ़फ़ी वग़ै[illegible] ज़मीनके क[illegible]की निगरानी है, दूसरा रियासती ख़र्च वग़ैरहके हिसाबी कामका मुहतमिम है. अ़दालत दीवानी व फ़ौज्दारीका प्रबन्धकर्त्ता एक ही शख़्स है, जिसको फ़ौज्दारी मुक़द्दमातमें ३ साल क़ैद व ३००) रुपया जुर्मानह और दीवानी मुआ़मलातमें १०००) से ज़ियादह दावेके शुरू मुक़द्दमातकी समाअ़तका इख़्तियार है. इसके तहतमें दो नाइब हैं, जो दीवानी व फ़ौज्दारीका काम जुदा जुदा करते हैं. इनके इख़्तियारातसे बाहर वाले मुक़द्दमोंकी समाअ़त हाकिम करता है; अपील पंचायतमें होता है, और वहांसे ख़ुलासह व राय दर्ज कीजाकर मिस्लें इज्लास ख़ासको जाती हैं. इलाक़ह ग़ैरके लिये एक जुदा महकमह है, जिसमें अंग्रेज़ी इलाक़ह और दूसरी रियासतोंके मुआ़मलात और मुसाफ़िरों वग़ैरहके इन्तिज़ामकी कार्रवाई तै पाती है. फ़ौजका महकमह पहिले नहीं था, अब क़ाइम किया गया है, जिसमें एक हाकिम मए अ़मलेके नियत है, तन्ख़्वाह बांटनेके सिवा फ़ौजके मुतअ़ल्लिक़ कुल हुक्म उसीकी

मारिफ़त जारी होते हैं. इनके अलावह आबपाशी, साइर, मालगुज़ारी, तालीम, तामीर मकानात वगैरह, कई छोटे बड़े महकमे व कारखाने हैं.

मद्रसे- रियासतमें आठ मद्रसे हैं, जिनमेंसे १ धौलपुरमें, २ पुरानी छावनीमें, ३ गांव अगाईमें, और पांच मद्रसे पर्गनोंमें हैं. पहिले इस राज्यकी रिआयाको पढ़ने लिखनेका बहुत कम शौक़ था, मगर अब किसी क़द्र होता जाता है. कहीं कहीं ज़मींदारोंने मद्रसोंका आधा खर्च देना मन्जूर किया है.

शिफ़ाखानह- खास शहर धौलपुर, बाड़ी और राजखेड़ा, तीन मक़ामोंपर एक एक हॉस्पिटल है, मरीज़ोंका .इलाज .उम्दह तौरपर किया जाता है. इसी सरिश्तहसे जाड़ेके मौसममें वेक्सिनेटर मुक़र्रर होकर हर साल शहर व इलाक़हमें टीका लगाते हैं, जिससे चेचककी बीमारीके लिये बहुत कुछ रोक होजाती है.

जेलखानह- पहिले राज्य धौलपुरके ज़ियादह मीआद वाले क़ैदी मक़ाम बाड़ीके जेलखानहको भेजे जाते थे; लेकिन् विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = .ई० १८७१] में धौलपुरसे पांच मील पुरानी छावनीमें उम्दह आब हवा और मौक़ा देखकर एक बड़ा कुशादह जेलखानह तय्यार करा लिया है, जिसमें कुल राज्यके संगीन व कम मीआद वाले क़ैदी रक्खे जाते हैं. चन्द क़ैदी दरी, टाट, व कपड़ा बुनने और रस्से बटनेका काम करते हैं.

ज़मीनका क़बज़ह व महसूल- इस राज्यमें ३८० गांव खालिसहकी माल-गुज़ारीमें हैं, उनमेंसे २१० से कुछ ज़ियादह गांवोंवाले सर्कारी जमाके अला-वह कुछ रुपया नानकारकी बाबत भी अदा करते हैं, जो मुख्तलिफ़ शरहसे तक्सीम होता है. यह नानकार चन्द नम्बरदारोंको राजाकी खैरख्वाही या किसी सर्हद वगैरहके फ़सादका इन्तिज़ाम करनेके एवज़ बख्शी गई है. ६१ गांव जागीरदारोंको नौकरीके एवज़ मुख्तलिफ़ वक्तोंमें दिये गये हैं, जिनपर हर साल किसी क़द्र सवारोंसे राज्यकी नौकरी करना फ़र्ज़ है. बाज़ लोगोंको जागीर के सिवा नक्द रुपया भी मिलता है. ४४ गांव मुआफ़ीके हैं, जिनमेंसे ज़ियादह-तर ब्राह्मणोंमें बटे हुए हैं; इनसे खिराज नहीं लिया जाता. महाराजा धौलपुरके तहतमें दो इलाके याने सरमथुरा और बीजोली खिराज गुज़ार हैं, जो सालानह खिराजके अलावह राजाको गद्दी बैठनेके समय नज़ानह देते हैं. ये दोनों करौलीके राज्यकी सन्तानमेंसे यादव राजपूत हैं, जो किसी क़द्र खुद मुख्तार भी हैं. इसी तरह इलाक़ह ग्वालियरके गांव निमरोलवाले भी कुछ

रुपया सालानह अदा करते हैं, मगर वह अस्लमें टांकादार याने ख़िराजगुज़ार नहीं हैं.

तह्सीलें- .इलाक़हके बन्दोबस्तके वास्ते ६ तह्सीलें और १० थाने नियत हैं; हर तह्सीलमें तह्सीलदार व मुहर्रिर रहते हैं. धौलपुर, वाड़ी तथा राजखेड़ाकी दीवानी पर दो दो तह्सीलोंके लिये एक एक मुन्सिफ़ मुक़र्रर है, जिसको १०००) रुपया मालियत तकके दावेकी समाअ़तका इख्तियार है. तह्सीलदारोंको फ़ौज्दारीमें पांच रुपया तक जुर्मानह और एक हफ्तहकी क़ैदका इख्तियार है. मुन्सिफ़ों व तह्सीलदारोंका अपील शहरकी अदालत दीवानी व फ़ौज्दारीका हाकिम सुनता है.

मश्हूर शहर व क़स्बे.

धौलपुर ख़ास राजधानी, आगरा व ग्वालियरकी सड़कपर आगरेसे ३४ मील दक्षिण, और ग्वालियरसे ३७ मील उत्तरमें वाक़े है. शहरसे एक मील दक्षिण रुख़को चम्बल नदी बहती है, सड़कपर किश्तियोंके ज़रीएसे उतरकर जाना पड़ता है. मगर चार मील ऊपरकी तरफ़ मक़ाम केतरीके पास, जहां उसका पाट पौन मील है, पानी कम गहरा है; बर्सातके दिनोंमें इस दर्याका पानी ज़ियादह चढ़जानेसे दाहिने किनारेपर दूरतक ज़मीन पानीमें डूबजाती है, परन्तु बाएं किनारेपर, जहां क़िला है, ऊंचा होनेके सबब पानी नहीं फैल सक्ता. यहां पुराने ज़मानहकी कई मस्जिदें व मक्बरे हैं. एक मस्जिदकी बाबत लोग कहते हैं, कि इसको विक्रमी १६९१ [हि० १०४३ = .ई० १६३४] में शाहजहांने बनवाया था. दूसरे कई मकान इससे भी पुराने ज़मानहके बने हुए हैं. ये सब मकानात निहायत उम्दह हैं, जो इसी .इलाक़हके बढ़िया क़िस्मके पत्थरसे बनाये गये हैं. शहर धौलपुर बहुत पुरानी बस्ती है, जिसकी बाबत इस मुल्कके लोगोंका बयान है, कि धौला नामी एक रईसने इसको आबाद किया था; और उसीके नामपर इसका नाम धौलपुर रक्खा गया. यहांपर एक तालाब (१) है, और उसके पास ही महल, मस्जिद, सैरगाह, कई कुएं और एक बंगला व कुशादह मैदान है.

वाड़ी- यह क़स्बह राज्यके दक्षिणी पश्चिमी हिस्सेमें पहाड़ोंके बीच धौलपुरसे १८ मील पश्चिम रुख़को एक पर्गनहका सद्र मक़ाम है.

राजखेड़ा- यह क़स्बह भी पर्गनहका सद्र है, और धौलपुरसे २३ मील पूर्वोत्तरमें वाक़े है.

मनया- आगरा व ग्वालियरकी सड़कके किनारे, आगरेसे २५ मील दक्षिणको एक बड़ा गांव है.

(१) यह तालाब एक लाल पत्थरके चटानमें खोदा गया है.

रजोरा- आगरा व बाड़ीकी सड़कके किनारे, आगरेसे ३० मील दक्षिण पश्चिममें वाके है.

तवारीख़.

धौलपुर वालोंके बुज़ुर्ग गोहद नाम गांवके रहनेवाले जाट थे, जो क़िले ग्वालियरसे २८ मील उत्तर पूर्वमें है; इस समयसे १५० वर्ष पहिले विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = ई० १७४०] के पहिलेसे बाजीराव पेश्वाकी ख़िद्मत और नौकरीसे गोहद मक़ामके हाकिम बनगये, और विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में जब अह्मदशाह अब्दालीसे लड़ाई करके मरहटोंका ज़ोर टूट गया, तो इनमेंसे लोकेन्द्रसिंह नामी शख़्सने ग्वालियरको अपने अधिकारमें लाकर राणाका ख़िताब इख़्तियार किया, जिसको दिल्लीके बादशाहकी तरफ़से बख़्शा जाना बयान किया जाता है. मरहटोंने इनको दोबारह तबाह करदिया था, परन्तु सर्कार अंग्रेज़ीकी मदद और हिमायतसे वह फिर बहाल होकर धौलपुरके रईस बनाये गये, जहां उनकी औलादवाले अबतक क़ाइम चले आते हैं.

१- राज राणा लोकेन्द्रसिंह.

विक्रमी १८२४ [हि० ११८० = ई० १७६७] में मरहटोंमेंसे रघुनाथ-रावने गोहदको घेरकर तीन लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका लिया और कुछ ख़िराज नियत करके पीछा छोड़ा. विक्रमी १८३६ मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० ११९३ ता० २३ ज़िल्क़ाद = ई० १७७९ ता० २ डिसेम्बर] को अम्न क़ाइम होनेके ख़यालसे सर्कार अंग्रेज़ीने एक अह्दनामहके द्वारा गोहदके रईस लोकेन्द्रसिंहको अपनी हिमायतमें लिया, और ग्वालियरका क़िला भी मरहटोंसे छीनकर उसके हवाले किया. इस अह्दनामह और रिआयतके तीन वर्ष पीछे रईसका चाल चलन बिगड़ी हुई हालतमें पाया गया, तो सर्कारने उसकी हिफ़ाज़तसे किनारह किया; इस हालतमें माधवराव सेंधियाने उक्त रईससे ग्वालियरका क़िला और मक़ाम गोहद छीनकर उसको क़ैद करलिया. लोकेन्द्रसिंह ना उम्मेदीकी हालतमें मरगया, और २२ वर्षतक बिगड़ी हुई दशामें रहनेके बाद सर्कार अंग्रेज़ीकी मिहर्बानी और सहायतासे उसके बेटेको एक रियासत मिली, जो अब धौलपुरके नामसे प्रसिद्ध है.

२- महाराज राणा कीर्तिसिंह.

विक्रमी १८६० माघ शुक्ल ५ [हि० १२१८ ता० ३ शव्वाल = .ई० १८०४ ता० १७ जैन्युअरी] को जब कि अंग्रेज़ी सर्कारने दौलतराव सेंधियाकी बख़िलाफ़ीके सबब उसका अक्सर .इलाक़ह दबाया, तो ग्वालियरका क़िला सर्कारी अधिकारमें रखकर गोहद मक़ाम राज राणा लोकेन्द्रसिंहके बेटे कीर्तिसिंहको सौंप दिया; परन्तु विक्रमी १८६२ मार्गशीर्ष शुक्ल १ [हि० १२२० ता० २९ शअ्बान = .ई० १८०५ ता० २२ नोवेम्बर] को सर्कार अंग्रेज़ीने सेंधियासे सुलह होजानेके सबब ग्वालियर और गोहद दोनों मक़ाम उसको देदिये; इस समय राज राणाका कोई क़ुसूर न था, इसलिये उनको एक नये अ़हदनामहके रूसे तीन पर्गने धौलपुर, बाड़ी, और राजखेड़ा दिये गये, जिससे वह गोहदके एवज़ इस समयसे ८४ वर्ष पहिले धौलपुरके रईस क़ाइम हुए. विक्रमी १८९३ [हि० १२५२ = .ई० १८३६] में महाराज राणा कीर्तिसिंहके मरजानेपर उसका बेटा भगवन्तसिंह राजा हुआ.

३- महाराज राणा भगवन्तसिंह.

इन्होंने विक्रमी १८९३ [हि० १२५२ = ई० १८३६] में राज्य पाया, और विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें कई अंग्रेज़ोंको अपनी पनाहमें रखकर सर्कारी ख़ैरख़्वाही साबित की, और इनको राजपूतानहके दूसरे रईसोंकी तरह गोद लेनेकी सनद मिली. थोड़ेसे वर्ष पहिले महाराज राणाने अपने यहांके बनियोंपर महाराजा सेंधियासे मिलावट रखनेका इल्ज़ाम लगाकर जैनके मन्दिरमेंसे पार्श्वनाथकी मूर्ति उखड़वा डाली और उसकी जगह महादेवकी मूर्ति स्थापन करदी. सेंधियाने बड़े ज़ोरके साथ सर्कार अंग्रेज़ीसे इसका .एवज़ चाहा; जिसपर सर्कारी तरफ़से महाराज राणाको समझाइश कीजानेके सिवा कोई कार्रवाई नहीं कीगई. विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] में महाराज राणाको उनके काम्दार देवहंसने गद्दीसे ख़ारिज करना चाहा, इसपर वह भागकर मददके वास्ते आगरे चले आये; सर्कारने तह्क़ीक़ातके बाद काम्दारको क़ैद करके बनारस भेजदिया. विक्रमी १९२० [हि० १२८० =

ई० १८६३] में रईसने सर दिनकररावके भाई गंगाधरको अपना प्रधान नियत किया, जिसके उ़म्दह इन्तिज़ामसे क़र्ज़ेहमें बहुत कमी हुई. कुछ अ़रसहके बाद गजरा नामी एक कस्बी महाराज राणाके बहुत मुंह लग गई, और वह उसका कहा मानने लगे, इसपर हर तरहकी शिकायतें सर्कारतक पहुंचीं, और बद चलन लोग रियासतसे निकाले जाकर कस्बीको पोलिटिकल एजेण्टकी तरफ़से धमकाया गया, कि राजके मुआ़मलातमें दख़्ल देना उसके हक़में बुरा होगा. विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में महाराज राणाका जवान बेटा, जो अ़य्याशी व बद चलनीसे बहुत ख़राब हालतमें था, और बापसे हमेशह विरुद्ध रहता था, मरगया.

महाराज राणाने बेटेके मरजाने बाद अपने पोतेको, जो विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में पांच वर्षका था, बुरी सुह्बतसे बचाये रक्खा, और उ़म्दह तौरपर पढ़ाना लिखाना शुरू किया, जिससे आगेके लिये बिह्तरीकी उम्मेद नज़र आती थी. विक्रमी १९२६ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० १२८६ ता० २ रमज़ान = ई० १८६९ ता० ६ डिसेम्बर] को हुजूर मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तरफ़से महाराज राणाको जी० सी० एस० आइ० (G. C. S. I.) का ख़िताब और तमग़ह मिला; और दूसरे साल वह एडिंबराके शाहज़ादह साहिबकी मुलाक़ात और पेश्वाईके लिये कलकत्तेको गये. विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में उक्त रईसने हकीम अ़ब्दुन्नबीख़ांको, जो पटियालासे नाराज़ होकर चला आया था, अपना प्रधान मुक़र्रर किया. इस शख़्सने क़र्ज़ह उतारनेके सिवा फ़ौज्दारीका प्रबन्ध तारीफ़के क़ाबिल किया. यह प्रधान दूसरे साल मरगया, और विक्रमी १९२९ माघ शुक्ल १२ [हि० १२८९ ता० १० ज़िल्हिज = ई० १८७३ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को महाराज राणा भगवन्तसिंहके गुज़र जानेपर उनके पोते राज्यके मालिक माने गये.

४- महाराज राणा निहालसिंह.

विक्रमी १९२९ माघ शुक्ल पक्ष [हि० १२८९ ज़िल्हिज = ई० १८७३ फ़ेब्रुअरी] में नौ वर्षकी उ़म्रके अन्दर अपने दादाके बाद गद्दीपर बिठाये गये. शुरू वक़्तमें राव राजा सर दिनकररावने बग़ैर तन्ख़्वाह रियासतका प्रबन्ध किया, फिर मेजर डेनूही पोलिटिकल एजेण्ट निगरानीपर रक्खे गये. विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] तक रईसको दुरुस्तीके साथ शिक्षा दी गई, वह

अंग्रेज़ी, फ़ार्सी, तथा हिन्दीमें किसी क़द्र काम करनेके लाइक़ होश्यार होगये. विक्रमी १९४० [हि० १३०१ = ई० १८८४] में अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से महाराज राणाको मुल्की इख्तियारात हासिल होगये हैं, और उनकी मातह्तीमें एक कौन्सिल तमाम राज्यके कारोबारकी निगरानी करती है.

धौलपुरका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब जिल्द ३.

अह्दनामह नम्बर ७२, जो दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी कम्पनी और गोहदके राणा महाराजा लोकेन्द्र बहादुरके क़रार पाया.

अह्दनामह, जो मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम वाके़ बंगालामें सर्कार कम्पनीकी तरफ़से ऑनरेबल गवर्नर जेनरल व कौन्सिल, बाबत उमूर ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी एक फ़रीक़, और दूसरे फ़रीक़ गोहदके राणा महाराजा लोकेन्द्र बहादुरके दर्मियान, उनकी व उनके वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहिली- सर्कार अंग्रेज़ी कम्पनी और महाराजा लोकेन्द्र बहादुर, और उनके जानशीनोंके दर्मियान हमेशहके वास्ते दोस्ती क़ाइम रहेगी; और नीचे ज़िक्र की हुई बातोंको पूरा करनेकी बाबत इत्तिफ़ाक़ किया जायेगा.

शर्त दूसरी- जब कभी दोनों सर्कारोंमेंसे किसी फ़रीक़के और मरहटाके लड़ाई होगी, और अगर महाराजा लोकेन्द्र बहादुर अपने मुल्ककी हिफ़ाज़त या दूसरे इलाक़ोंको फ़त्ह करनेके वास्ते अंग्रेज़ी कम्पनीसे फ़ौजकी मदद मांगेंगे, तो यह फ़ौजी मदद महाराजाकी तह्रीरी दर्ख्वास्तके मुवाफ़िक़ उतनी दीजायेगी, जितनी कि ज़रूरत समझी जावेगी, और अंग्रेज़ी फ़ौजका कमांडिंग अफ़्सर उस जगहका, जो ज़ियादह नज़्दीक होगी, महाराजाकी फ़ौजके साथ उस वक़्ततक रहेगा, जबतक कि वह उसको रुख़्सत न करेंगे; और ख़र्च इस फ़ौजका बीस हज़ार रुपया सिक्कह मछलीदार बनारसी, या उसकी बराबर क़ीमतवाले किसी दूसरे सिक्केकी माहवारी

क़िस्तोंसे हर एक पलटन व मामूली तोपख़ानहकी बाबत महाराजा देंगे. और यह ख़र्चा उस वक़्से शुरू होगा, जबसे कि उक्त फ़ौज कम्पनीके इलाक़हकी सर्हद या अवधवाले नव्वाबके इलाक़हकी सर्हदसे कूच करेगी, और उस वक्त ख़त्म होगा, जब वह वापस कम्पनी या अवधके नव्वाबकी सर्हदमें दाख़िल होगी; और उसका कूच चार कोस रोज़ानहके हिसाबसे होगा.

शर्त तीसरी- यह फ़ौज महाराजाके भीतरी या बाहिरी मुक़ाबलेमें और मरहटेका इलाक़ह फ़त्ह करनेके वास्ते भी काममें लाई जावेगी.

शर्त चौथी- जो कुछ मुल्क मरहटेका इस अह्दनामहके रूसे कम्पनीकी फ़ौज या महाराजाकी फ़ौजके इत्तिफ़ाक़ या इत्तिफ़ाक़के बिना, और लड़ाई या सुलहसे फ़त्ह होगा, वह उन छप्पन महाल (पर्गनों) के सिवा, जो महाराजाकी जागीरमें हैं, और जो अब भी मरहटाके क़बज़हमें नहीं हैं, इस तौरपर तक्सीम होगा, यानी नौ आने कम्पनीके और सात आने महाराजाके; और आमद उस मुल्ककी फ़रीक़ैनके तज्वीज़ किये हुए अमीनोंकी मारिफ़त गुज़रे हुए दस वर्षोंकी औसत आमदनीके हिसाबसे क़रार दीजायेगी; और कम्पनीका हिस्सह, जो इस तरह तज्वीज़ होगा, उसमेंसे तह्सीलका ख़र्च, जो ऐसे मुल्कोंमें होता है, मुज्रा देकर बाक़ी जो कुछ बचेगा, वह महाराजा सालानह ख़िराजके तौरपर अदा किया करेंगे, और मुल्क व क़िला वग़ैरह सब महाराजाके क़बज़हमें रहेंगे.

शर्त पांचवीं- अगर यह बात दुरुस्त व मुनासिब ठहरे, कि सर्कार कम्पनी और महाराजाकी फ़ौज शामिल होकर इत्तिफ़ाक़के साथ मरहटाके मुक़ाबलहमें महाराजाकी सर्हदके बाहर लड़ाई करे, और गवर्मेंट इस मज़्मूनकी तह्रीर महाराजा को भेजे, तो महाराजा दस हज़ार सवार लड़ाईके वास्ते देंगे, और दोनों सर्कारें अपनी अपनी फ़ौजका ख़र्च आप करेंगी, और अंग्रेज़ी फ़ौजके अपनी सर्हदकी तरफ़ लौटनेके वक्त अगर महाराजाको अंग्रेज़ी फ़ौजकी ज़रूरत हो, और वह दर्ख़्वास्त देकर उसको अपने वास्ते रोक रक्खें, तो जिस तारीख़से दर्ख़्वास्त दी जायेगी उस तारीख़से अंग्रेज़ी फ़ौजका ख़र्चा महाराजाके ज़िम्मह होगा, और उसी अन्दाज़से ख़र्चा दिया जायेगा, जो अन्दाज़ दूसरी शर्तमें दर्ज है; और महाराजासे उनकी फ़ौज उन मक़ामोंकी लड़ाईके वास्ते, जो इन्दौर और उज्जैनसे आगे वाक़े होंगे, सिवाय महाराजाकी रज़ामन्दी और ख़ुशीके नहीं मंगाई जायेगी, और न लीजायेगी.

शर्त छठी- जब अंग्रेज़ी फ़ौज महाराजाके मुल्ककी हिफ़ाज़तके वास्ते, या

दूसरे इलाक़हको फ़त्ह करनेके लिये मस्रूफ़ होगी, तो काम उसका महाराजा तज्वीज़ करेंगे, परन्तु उस कामके पूरा करनेका तरीक़ह अंग्रेज़ी फ़ौजके कमांडिंग अफ्सरके इख्तियारमें रहेगा.

शर्त सातवीं– जब कभी कम्पनी और महाराजा दोनोंकी फ़ौजें मिलकर किसी दूरवाले मुल्ककी लड़ाईमें मस्रूफ़ होंगी, तो अंग्रेज़ी फ़ौजके कमांडिंग अफ्सर लड़ाईसे तअल्लुक़ रखनेवाली हर एक बातमें महाराजासे सलाह किया करेंगे; और जिस बातमें दोनोंकी राय शामिल न होगी वह सिर्फ़ अंग्रेज़ी फ़ौजके कमांडिंग अफ्सरके इख्तियारमें रहेगी, और उसी काममें महाराजाकी हुकूमत उनकी निजकी फ़ौजपर पूरी पूरी रहेगी.

शर्त आठवीं– जब सर्कार कम्पनी और मरहटाके दर्मियान सुलह होजायेगी, तो महाराजा भी उस अहदनामहमें एक फ़रीक़ माने जायेंगे, और उनका इलाक़ह, जो इस वक्त उनके क़बज़हमें है, मए क़िला ग्वालियरके, जो क़दीमसे महाराजाके खानदानमें चलाआता है, अगर उस वक्त भी उनके क़बज़हमें होगा, और जितना इलाक़ह उन्होंने लड़ाईमें हासिल किया होगा, और जो शर्तोंके मुवाफ़िक़ उस वक्त उनके पास रहनेके लाइक़ होगा, वह सब ज़िक्र किये हुए अहदनामहके रूसे उनके क़बज़हमें रक्खा जायेगा.

शर्त नवीं– महाराजाके मुल्कमें कोई अंग्रेज़ी कारखानह क़ाइम न होगा, और कोई नामी शख्स अंग्रेज़ी कम्पनीकी तरफ़से, या कोई शख्स गवर्नर जेनरल और कौन्सिलकी तरफ़से लाइसेन्सके द्वारा महाराजाकी रज़ामन्दीके बिना नहीं भेजा जायेगा, और न उनकी रअय्यत सिपाहियानह कामके लिये मज्बूर कीजायेगी, और न उन पर महाराजाके हुक्मके सिवा किसी दूसरेका हुक्म वाजिब होगा.

फ़ोर्ट विलिअम मक़ाममें तारीख़ २ डिसेम्बर सन् १७७९ ई० को इसपर मुहर और दस्तखत हुए.
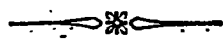
नम्बर ७४.

गोहदके राणाका अहदनामह जो सन् १८०४ ई० में क़ाइम हुआ.

अहदनामह दोस्ती और एकताका दर्मियान ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराज सवाई राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरके, जिसके रूसे ऑनरेबल कम्पनी वादह करती है, कि वह गोहदका मुल्क और दूसरे इलाक़े महाराज राणाको देती है, और उनका क़बज़ह हाकिमानह तौरसे उनपर रहेगा; और जिसके रूसे

महाराज राणा ऑनरेब्ल कम्पनीकी कुमकी फ़ौज रखनेका वादह करते हैं, ऑनरेब्ल कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोब्ल रिचर्ड मार्किस वेलेज़्ली, नाइट ऑफ़ दि मोस्ट ऑनरेब्ल इलस्ट्रिअस ऑर्डर ऑफ़ सेण्ट पेटेरिक, वन ऑफ़ हिज़ ब्रिटैनिक मैजेस्टीज़ मोस्ट ऑनरेब्ल प्रिवी कौन्सिल, कप्तान जेनरल, और हिन्दुस्तानकी कुल मौजूदह फ़ौज खुश्कीके सिपहसालार, और गवर्नर जेनरल इन कौन्सिल, मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम वाके बंगालाके दिये हुए इख्तियारातसे एक तरफ़ हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक, मुल्क हिन्दुस्तानकी मौजूदह अंग्रेज़ी फ़ौजोंके सिपहसालार, और दूसरी तरफ़ महाराज सवाई राणा कीर्तिसिंह बहादुरके, उनकी ज़ात ख़ास और उनके वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहिली- हमेशहके वास्ते ऑनरेब्ल कम्पनी और महाराज राणा कीर्तिसिंह बहादुर और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान दोस्ती और एकता क़ाइम हुई है; इसलिये उस दोस्तीके लिहाज़से एक फ़रीक़के दोस्त और दुश्मन दोनों फ़रीक़ोंके दोस्त और दुश्मन समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी- ऑनरेब्ल ईस्ट इण्डिया कम्पनी इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करती है, कि वह महाराज राणा कीर्तिसिंहका उसके मौरूसी मुल्क गोहद और नीचे लिखे हुए ज़िलोंपर हाकिमानह क़बज़ह करा देगी, और ये सब ज़िले उनके और उनके वारिसों और जानशीनोंके क़बज़हमें बिना ख़िराज, सर्कार ऑनरेब्ल कम्पनीकी ज़मानतसे रहेंगे :-

ग्वालियर ख़ास.	तअ़ल्लुक़ह मालावा.	भोंदा.
आंतरी वग़ैरह, पांच महाल.	" जगनी.	लेहार वग़ैरह, जिसमें ज़िला गंज व काहटी शामिल है.
	सराय जुल्ला.	
आंतरी.	दूंदरी.	लेहार.
चमक.	अनहोन.	रामपुर.
लवान.	नूराबाद.	ककसीस.
सलवाई और चन्नो.	अटोरा.	खतौंदा
अम्बापुर.	बहादुरपुर.	बकसा.
समोली.	बिलौठी.	गोपालपुर.

परिहारगढ़ वग़ैरह, जिसमें तत्र्अल्लुक़ह सरवारी शामिल है.	कुरवास.	गूजरा.
	हवेली गोहद.	कटौली.
तत्र्अल्लुक़ह चतोर.	बीहट.	लावान वड़ी.
पर्गनह बीद मए उसके तत्र्अल्लुक़ोंके.	तत्र्अल्लुक़ह सुकल्हारी.	पर्गनह नोह.
	" अमान.	पर्गनह बीटवा.
पर्गनह फोम्प.	इन्दरकी.	तत्र्अल्लुक़ह देवगढ़.
तत्र्अल्लुक़ह अमरी.	भांदरी.	

शर्त तीसरी – ऑनरेबल कम्पनीके सिपाहियोंकी तीन पल्टनें हमेशह महाराज-राणाके साथ उनके मुल्ककी हिफ़ाज़तके वास्ते रहेंगी, और उनका ख़र्च महाराज-राणा महीनेके महीने ऑनरेबल कम्पनीको पच्चीस हज़ार रुपया फ़ी पल्टनके हिसाबसे, याने पचहत्तर हज़ार रुपया सिक्कह लखनऊ, या उसके बराबर क़ीमत वाला कोई दूसरा सिक्कह माहवार, या नौ लाख रुपया सालानह दिया करेंगे; अगर महाराज-राणा किसी माहवारी क़िस्तके जमा करानेमें मज्बूर रहेंगे, तो ऑनरेबल कम्पनीकी गवर्मेण्टको इख़्तियार हासिल रहेगा, कि वह किसी शख़्सको अपनी तरफ़से आमदनी मालगुज़ारी मुल्कमेंसे उक्त रुपया वुसूल करनेके लिये निगरां मुक़र्रर करे.

शर्त चौथी – महाराज राणा इक़ार करते हैं, कि क़िले और शहर ग्वालियरका क़बज़ह हमेशह गवर्मेण्ट ऑनरेबल कम्पनीके मुतअ़ल्लक़ रहेगा, और उक्त गवर्मेण्टको यह भी इख़्तियार रहेगा, कि ख़ास गोहदके अलावह राणाके मुल्कमें किसी क़िलेमें जब कभी जहां वह चाहे या मुनासिब समझे, वहां ऑनरेबल कम्पनीकी फ़ौज क़ाइम करे, और क़िले गोहदके सिवा राणाके मुल्कमें जिस क़िलेको वाजिब समझे उसको तुड़वा डाले.

शर्त पांचवीं – ऑनरेबल कम्पनी कुछ ख़िराज उस मुल्कका, जो महाराज-राणा कीर्तिसिंहको दियाजाता है, तलब न करेगी.

शर्त छठी – अगर किसी वक़ ऑनरेबल कम्पनीका कोई दुश्मन उस मुल्क पर, जो अब हिन्दुस्तानके अन्दर ऑनरेबल कम्पनीके क़बज़हमें है, हमलह करने का इरादह करे, तो महाराज राणा इक़ार करते हैं, कि वह अपनी तमाम फ़ौज उक्त गवर्मेण्टकी मददके वास्ते देंगे, और ख़ुद उस दुश्मनको निकालनेमें पूरी कोशिश करेंगे, और दोस्ती व एकताके सुबूतकी कोई बात बाक़ी न छोड़ेंगे.

शर्त सातवीं – चूंकि इस अह्दनामहकी दूसरी शर्तके मन्शासे ऑनरेबल कम्पनी ज़ामिन होती है, कि वह राणाके मुल्ककी हिफ़ाज़त बाहिरी दुश्मनके मुक़ाबलेमें करेगी, इसलिये महाराज राणा इस तह्रीरके ज़रीएसे इक़ार करते हैं, कि अगर कोई तकार आपसमें उनके और किसी दूसरी सर्कार या सर्दारके हो, तो महाराज राणा पहिले उस तकारकी वज्ह गवर्मेण्ट कम्पनीपर ज़ाहिर करेंगे, ताकि गवर्मेण्ट उसका वाजिबी फ़ैसलह करानेकी कोशिश करे; अगर दूसरे फ़रीक़की ज़िदसे वाजिबी फ़ैसलह न होने पावे, तो महाराज राणाको इरिव्तयार होगा, कि वह अंग्रेज़ी फ़ौजको, जो मुल्ककी हिफ़ाज़तके वास्ते मुक़र्रर है, उस दूसरे फ़रीक़के मुक़ाबलेके लिये काममें लावें.

शर्त आठवीं– अगर्चि महाराज राणाको अपनी फ़ौजपर पूरी हुकूमत हासिल है; लेकिन् तो भी वह इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि लड़ाईके वक़ कम्पनीकी फ़ौजके कमान्डरकी सलाहसे काम करेंगे.

शर्त नवीं– महाराज राणा किसी अंग्रेज़ी या फ़रांसीसी रिआयाको, या यूरोपके किसी और वाशिन्देको किसी तरह अपनी नौकरीमें या अपने पास बग़ैर रज़ामन्दी गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके न रक्खेंगे.

ऊपरका अह्दनामह, जिसमें नौ शर्तें दर्ज हैं, हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेकके मुहर व दस्तख़तसे बयाना मक़ामपर ता॰ १७ जैन्युअरी सन् १८०४ ई॰ मुताबिक़ ता॰ ३ शव्वाल सन् १२१८ हिज्री मुवाफ़िक़ २० माह माघ (माघ शुक्ला ५) संवत् १८६० को, और महाराज सवाई राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरके मुहर व दस्तख़त से ग्वालियर मक़ामपर ता॰ २९ जैन्युअरी सन् १८०४ ई॰ मुताबिक़ ता॰ १५ शव्वाल सन् १२१८ हिज्री मुवाफ़िक़ ३ माह फाल्गुन् (फाल्गुन् कृष्ण ३) संवत् १८६० को सहीह होकर मन्ज़ूर हुआ. जब एक अह्दनामह ऊपर लिखी हुई नौ शर्तोंका हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल् मार्किस वेलेज़्ली, गवर्नर ज़ेनरल इन कौन्सिलके मुहर और दस्तख़त होकर महाराज राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरको दिया जायेगा, तब यह अह्दनामह हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेकका मुहरी व दस्तख़ती वापस किया जायेगा.

गवर्नर जेनरल की छोटी मुहर.		राणाकी मुहर.

ता॰ २ मार्च सन् १८०४ ई॰ को तस्दीक़ हुआ.

नम्बर ७५.

गोहदके राणाका अह्दनामह, जो
सन् १८०६ ई० में क़रार पाया.

अह्दनामह दर्मियान ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराज सवाई राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरके, जिसके रूसे गोहदका मुल्क और क़िला वग़ैरह राणा कीर्तिसिंह ऑनरेबल कम्पनीको देते हैं, और जिसके रूसे ऑनरेबल कम्पनी राणा कीर्तिसिंहको धौलपुर, बाड़ी और राजखेड़ाके ज़िलोंकी हुकूमत देती है, ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से ऑनरेबल सर ज्यॉर्ज हिलेरो बार्लो बैरोनेट, हिन्दुस्तानके कुल अंग्रेज़ी इलाक़ोंके गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख़्तियारातसे एक तरफ़ मिस्टर ग्रीम मर सर और दूसरी तरफ़ महाराजा सवाई राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरके उनकी व उनके वारिसों और जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहिली - चूंकि एक अह्दनामह दोस्ती और एकताका ता० २९ जैन्युअरी सन् १८०४ ई० मुताबिक़ ता० १५ शव्वाल सन् १२१८ हिज्री मुवाफ़िक़ ३ माह फाल्गुन् (फाल्गुन् कृष्ण ३) संवत् १८६० को ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराज राणा कीर्तिसिंहके दर्मियान हुआ था, जिसके रूसे दोनों फ़रीक़ोंके फ़ायदों पर नज़र रक्खी गई थी; और चूंकि लाचारीके सबब महाराज राणा मुल्क गोहद वग़ैरहका बन्दोबस्त करने और उन शर्तोंके पूरा करनेमें, जो ऑनरेबल कम्पनीके साथ मददगार फ़ौजका ख़र्चा अदा करनेकी बाबत क़रार पाई थीं, मज्बूर रहे; और फ़रीक़ैनके फ़ायदोंपर ख़याल न रहा, इसलिये ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराजा कीर्तिसिंह इस तह्रीरके ज़रीएसे मन्ज़ूर करते हैं, कि ऊपर ज़िक्र किया हुआ अह्दनामह रद और ख़ारिज समझा जावे.

शर्त दूसरी - महाराज राणा इस तह्रीरके ज़रीएसे इक़ार करते हैं, कि वह गोहदके मुल्क और क़िले व दूसरे इलाक़ोंका क़ब्ज़ह, जो उनको पहिले अह्दनामह के रूसे मिले थे, गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके अफ़्सरोंको देते हैं, और उनको इख़्तियार है, कि जिस तरह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी चाहे, उस तरह उसका बन्दोबस्त करें.

शर्त तीसरी - ऑनरेबल कम्पनी इस ख़यालसे, कि अगले अह्दनामहकी शर्तें महाराज राणाकी तरफ़से लाचारीके सबब पूरी नहीं हुई थीं, अब ख़ुशीके साथ उनके वास्ते काफ़ी पर्वरिश तज्वीज़ करती है, और इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह

करती है, कि धौलपुर, बाड़ी, और राजखेड़ाके ज़िले मुवाफ़िक़ तफ़्सीलके, जिसमें इन ज़िलोंके मुतअ़ल्लक़ कुल गांव (१) अ़लहदह अ़लहदह दर्ज हैं, महाराज राणा और उनके वारिसों व जानशीनोंको देती है, जिनकी पूरी हुकूमत उनके इख़्तियारमें रहेगी; और महाराज राणा अपनी तरफ़से इक़ार करते हैं, कि वह अपने .इलाक़हके नज़्दीक वाले किसी सर्दारसे, बख़्शे हुए पर्गनोंकी पुरानी हदोंकी बाबत तक़ार न करेंगे, और हदें वही क़ाइम रहेंगी, जो बख़्शनेके वक़ होंगी.

शर्त चौथी- चूंकि इस अ़हदनामहकी तीसरी शर्तके रूसे धौलपुर, बाड़ी व राजखेड़ाके पर्गने दर्ख़्वास्तके मुवाफ़िक़ महाराज राणाको दिये गये हैं, और उनमें कोई हुक्म अंग्रेज़ी अ़दालतका जारी न होगा, और न कुछ मुतालबह उनकी बाबत ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से पेश होगा; इसलिये महाराज राणा इस तह्रीरके ज़रीए़से वादह करते हैं, कि वह उन तमाम मुक़द्दमोंका फ़ैसलह, जो दाइर होंगे, चाहे वे .इलाक़हके भीतर या बाहर वाक़े हुए हों, अपने ज़िम्मह रक्खेंगे; और कुछ ज़िम्मह्दारी मदद या हिफ़ाज़तकी निस्बत ऑनरेबल कम्पनीके नहीं रहेगी.

ऊपर लिखा हुआ अ़हदनामह, जिसमें चार शर्तें दर्ज हैं, फ़रीक़ैनकी मन्ज़ूरीके मुवाफ़िक़ मक़ाम ग्वालियरमें ता० १९ डिसेम्बर सन् १८०५ .ई० मुताबिक़ ता० २८ रमज़ान सन् १२२० हिज्री मुवाफ़िक़ १४ माह पौष (पौष कृष्ण १४) संवत् १८६२ को ख़त्म होकर तै हुआ, और उसपर मिस्टर ग्रीम मरसर और महाराज राणा कीर्तिसिंहके मुहर और दस्तख़त आगराके पास ता० १० जैन्युअरी सन् १८०६ .ई० मुताबिक़ ता० १९ शव्वाल सन् १२२० हिज्री और मुवाफ़िक़ ६ माह माघ (माघ कृष्ण ६) संवत् १८६२ को होकर फ़रीक़ैनमें तक़्सीम हुआ.

जब एक अ़हदनामह, जिसमें ऊपर लिखी हुई चार शर्तें दर्ज होंगी, ऑनरेबल गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके मुहर व दस्तख़तसे महाराज राणा कीर्तिसिंहको दिया जायेगा, तब यह अ़हदनामह मिस्टर ग्रीम मरसरके मुहर व दस्तख़तका वापस होगा.

राणाकी मुहर.

---

(१) इस अ़हदनामहके आख़िरमें हर एक ज़िलेके मुतअ़ल्लक़ अ़लहदह अ़लहदह कुल ६६० गांवोंकी फ़िहरिस्त दर्ज है, जो तवालतके ख़यालसे यहां पर दर्ज नहीं कीगई.

इस अह्दनामहको ऑनरेबल गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलने ता० ८ मार्च सन् १८०६ ई० को तस्दीक़ किया.

कम्पनीकी मुहर.

(दस्तख़त)- जी० एच० बार्लो.
(दस्तख़त)- जी० अडनी.
(दस्तख़त)- जे० लम्सडन.

ऊपर लिखे हुए अह्दनामोंके अलावह मुज्रिमोंके लेन देनकी बाबत एक अह्द-नामह होकर गोद लेनेकी सनद भी राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुताबिक़ इस रियासतको मिली है, लेकिन् पहिले बाज़ जगह दर्ज होजानेके सबब यहां उनको छोड़ दियागया.

शेप संग्रह नम्बर १.

उदयपुरके सूर्यपोल दर्वाजे भीतर संध्यागिरिके मठसे पश्चिम तरफ़ एक छोटे शिवालयकी प्रशस्ति.

श्रीरामजी

स्वस्तिश्री गुणेशायजी प्रसादात् ॥ श्री एकलिंगजी प्रसादात् ॥ श्रीमत् उदयपुर मेदपाट राज्ये महाराणा श्री जगत्सिंह सुत राणा परतापसिंह तस्यात्मज गोब्राम्हण प्रतिपाल धर्मावतार महदगुणालंकृत सूर्यवंशोद्भव राणा श्री राजसिंहजी राज्ये सस्वनगरोदयपुर मध्ये वसित ब्राह्मण सनावड जाति त्रवाडी पौलोदी गोत्र त्रवाडी देवकरणजी तस्यात्मज मयारामजी तस्य भार्या पाठक गोत्रे वदरी तस्य पु० धन्यावाई कुक्ष्ये पुत्र शिवदासजी तस्य श्री हरिहरकी आगा विष्णु देवालये शिवनारायण मूर्त्ति स्थापित द्वितीय शिवदेवालय श्री महादेव शिवेश्वर स्थापित पूजा नैवेद्य वालभोग श्री शिवनारायण अर्पण धरती वीघा ४ शिव पधरा देवरा पधते अगणाई सुध आगले मंदिर सुध रामार्पण पूजा करसी सो पावसी संवत् १८१२–१६७७ मास माघ सुद ५ गुरुवासरे देवरो परणायो.

शेप संग्रह नम्बर २.

उदयपुरमें प्रभुवारातणकी वाड़ीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

॥ श्रीरामजी.

सजयति सिंन्धुरवदनः सदनमगम्ये सितार्थसिद्धीनां ॥ यस्यस्मृतिरपि जगतां त्वरितं दुरितं विदूरयति ॥ १ ॥ यत्पदपंकजरेणु र्जडताजलधिं विशिष्यशोषयति ॥ वितरतु शुद्धिं वचसां सा देवी शारदा वरदा ॥ २ ॥ मुखमुखरितवेणुक्काणसन्मूर्छनाभि र्विधुरितदुरितौघः श्टण्वतां भक्तिभाजाम् ॥ सजलजलदजालश्यामलः काम लीलाविलुलितवनमालः पातु वः पीतवासाः ॥ ३ ॥ स्वस्तिश्रीमदसीमदोर्वलगलद्गर्वप्रणम्राखिलक्ष्माभृन्मौलिमहोपलद्युतिततिभ्राजिष्णुपादांबुजः ॥ भास्वद्वंश विभूपणं त्रिभुवनोदंचत्प्रतापोज्वलः क्षात्रे कर्मणि कर्मठो विजयते देवोऽरिसिंहः कृती ॥ ४ ॥ तस्याजानुभुजाभृतः क्षितिपते र्भूरिप्रमोदास्पदं सच्छीलव्रतशालिनी सविनया सौजन्यमाविभ्रती ॥ गोविप्रातिथिदेवसेवनविधौ श्रद्धावती भास्वती वर्वर्ति प्रभुसंज्ञयेह विदिता वारातणी श्रेयसी ॥ ५ ॥ महीभृदन्तःपुरमाननीया महामहीदोजकुलप्रसूता ॥ महीयसीं सच्चरितैः प्रसिद्धिं महीतले सौ प्रभुराजगाम ॥ ६ ॥ प्रसादमासाद्य महीमहेन्द्रात् प्रभूस्तनूभूस्तुलसाभिधस्य ॥ प्रसन्नमूर्तेर्गरुडध्वजस्य प्रासादमेनं रचयांचकार ॥ ७ ॥ एतद्दैवतगेहगामिजगदन्तर्यामिपादस्व-

लतुस्वर्गंगाभरनिर्भृतावनिरुहच्छायासमाच्छादिता ॥ पाथ : संभृतये गताभिरभित : पौरांगनाभिर्वृता भात्येषा प्रभुसुभ्रुवा परकृते निर्मापिता वापिका ॥ ८ ॥ पुरन्दरपुरोपमोदयपुरैकभूपायितं सुरायतनमुल्लिखत्खतलमारचय्य प्रभु : ॥ द्विजान्निगमपारगान् समुपहूय शुद्धे तिथौ वत्र्षं वसुदृष्टिभि : कृतवती प्रतिष्ठाविधिम् ॥ ९ ॥ सैतत्सुरालयविहारिमुरारिभक्तिक्लृप्तिप्रलीनकलिकिल्बिषवैष्णवानाम् ॥ वस्तुं व्यचीक्लृपदिमामभितोवहंती मद्दैः श्रियं सुललितामिह धर्मशालाम् ॥ १० ॥ देवालयममुमिमां धर्मशालां च वापिकाम् ॥ प्रभू : परोपकारार्थ मेककालं व्यचिक्लृपत् ॥ ११ ॥ भूरिद्रव्यव्ययेन प्रभुरतिशयितं धर्मकर्मार्जयन्ती प्रासादं धर्मशालामुपवनसहितां वापिकां कल्पयित्वा ॥ नालं चक्रेमुमेकं शिखरविनिहितस्वर्णकुंभेन शंके स्त्रीयां जातिं स्वकीयं कुलमपि सकलं सा मनुष्यावतारम् ॥ १२ ॥ श्री ठाकुरजीरो सेवन बाबो दयारामदास निरंजणी : (सुतार जीवो भवानीदासजी) (१) "अथ प्राकृतं" महाराजा धिराज महाराणाजी श्रीअरिसिंहजीरी निवाजसी महीदोज तुलसारी बेटी धर्म मूर्ति बाई श्री प्रभु श्री ठाकुरजीरो यो देवरो तथा या वावड़ी तथा या धर्मशाला हाटां सुधी निर्माण करायो ॥ बाई प्रभुरा भाईरो नाम खेतो, भतीजो शिवजी, महता लखमीचन्दजीरे आगेचे कमठाणो करायो, कामदार शिवजी पोखरणो, गजधर दीपचन्द गणपतरो गोतभंगोरो, प्रोत जीवो पञ्चार भोपजी, पोरवाड गुलाबजी, कामवतो करायो, श्री ठाकुरजीरी वणी ज्यो चाकरी कीदी, समसत कमठाणा सुदी रुपीया ६२५२) हजार छह दोइ से बावन खरच्या, देवरारी प्रतिस्टा कीदी : जदी : बामणाने जीमाया, तथा न्यात जिमाई, तथा कन्या २ परणाई, थुआदार कामदार तथा कारीगरांहे दुसाला दीधा, अतीत भगतांहे जीमाया, तथा थुरमा पामडी चादर ओढाया. संवत् १८१९ ज्येष्ठ शुदी १४ दिने श्री भद्र भूयात् ॥

शेष संग्रह नम्बर ३.

उदयपुरके हाथीपौल दर्वाजे बाहर चौगानके पास पश्चिम दिशाको पार्श्वनाथके मन्दिरमें मूर्तियोंके नीचेकी

प्रशस्ति.

स्वस्ति श्री नृप विक्रमार्क संवत् १८१९ वर्षे शालीवाहन शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे माघमासे शुक्ल पक्षे ५ बुधवासरे श्रीमत् उदयपुर वास्तव्य

(१) ब्रेकेट्के भीतर वाले अक्षर पीछेसे जगह पाकर किसीके खोदे हुए मालूम होते हैं.

मेदपाट देशे इक्ष्वाकु वंशे शीशोद्या गोत्रे चित्रकोट गढपति महाराणा श्री अरिसिंह विजयराज्ये तस्य नगर वास्तव्य ऊषा वंशे व्रद्धिशापायां नवलषसेण पालदेकुलपत्तने परतरवंशहीकृत जिनवर्द्धनसूरि उपदेशात् संवत् १४९२ वर्षे कारितं महाराणा कुंभकर्ण राज्यमध्ये महाद्रव्यव्ययं कारितं नागदा नगरे अदबुद तीर्थ कारितं लष्य ११ द्रव्य पर्च्यो तस्य कुलेकुलावतंसक नवलषासाह वहमान तस्य भार्या विमलादे तस्य पुत्र जिनधर्मरतसुश्रद्धारत्न त्रयीधर्मवल्लभ पुण्यपवित्र साह कपूरचंद वर्द्धमान स्वपरसम्यक् लहितकाराय स्वभवनिर्मलीकरणे कर्मक्षयकारक अनाद चैत्रीसीमध्ये प्रथमप्रभुश्रेणिको जीव श्री महावीर भक्तिवशेन तीर्थंकर नाम कर्मोपार्जित तस्याभिधान पदमनाभ तीर्थंकर कारितं जंगमयुग प्रधान चक्रचूडा मणि दोयहजार च्यार वर्त्तमान चोवीसीमध्ये एकावतारि श्री जिनधर्मप्रभाविकपुण्य सहायक दोप निवारक अग्न्यानविध्वंसक स्वपरहितकारक दुष्षसहिष्णुप्रवर्त्तमान सद्धर्मसूरिभि प्रतिष्ठितम् लिखित महा उपाध्याय श्री हीरसागर ठाणि प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु (१).
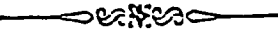
शेष संग्रह नम्बर ४.
उदयपुर धायभाईके पुलपरके मन्दिरमेंकी
प्रशस्ति.
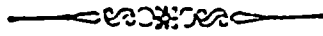
श्रीरामो जयति.

श्री गणेशायनमः ॥ श्री एकलिंगजीप्रसादात् श्री रूपनाराणजीप्रसादात् स्वस्ति श्री महाराजधिराज महाराणा श्री श्री अरिसिंहजी विजयराज्ये राणा श्री अरिसिंहजीरे धौओजी श्री नगजी जाति पगार ॥ नगजीरे वहु वाई नगी जाति चहुवाण, जिणरे पुत्र तीन, बड़ा धायभाई श्री रूपजी ॥ धायभाईजी कीकोजी, धायभाईजी जोधोजी. धायभाईजी रूपजीरे बहू पूरवाई ॥ जाति पचोलण, जिणारा पुत्र २, उदयरामजी ॥ हटूजी ॥ उदयरामजीरे वहु मयावाई. धायभाईजी श्री रूपजी श्री एकलिंगजीरे गेले नदी ऊपरे पुला वंधावी. श्री रूपनारायणजीरो देवालय कीधो, सराय कीधी, बावड़ी कीधी. वाडी कीधी, संवत १८१८ वर्षे माघ शुद ११ शुक्रवाररे दिन पायो भरावारो सुमूर्त्त कीदो; संवत १८२० वर्षे वैशाख शुद ६ सोमवार पुष्य नक्षत्र

(१) इस मूर्तिके पासवाली दूसरी मूर्तियोंके नीचे भी लेख हैं, लेकिन् यहांपर यह एक ही दर्ज किया गया है, क्योंकि उनमें इससे ज़ियादह मत्लब कुछ नहीं पाया जाता.

इणी दिन प्रतिष्ठा कीधी. अणी उछव ऊपरे श्री दिवाणजी, कुंवरजी, राजलोक, भाई बेटा, उमराव, समस्त लोकवाक सहित शराय पधारया, दिन ७ सुधी रह्या, गोठ आरोग्या. धायभाईजी श्री रूपजी श्री दिवाणजीरी निजर कीधा. हाथी ५, घोडा ५, छोगो १ हीरारा जडावरो, तथा गहणो, सिरोपाव, तथा रोक रुप्या तथा कुंवरजी, राजलोक, भाई बेटा, उबराव, कामदार, पासवान, समस्त लोकवाक ने सिरपाव दीधा, पहरावणी कीधी. रूपारी तुला कीधी. मेवाडथी न्यात बुलावेने न्यात मेलो कीधो. कन्या परणावी. चोरासी न्यात जीमावी. अनेक दान पुन्य कीधा; वीघा १० धरती, वीघा २ मेरपाली, जमे वीघा १२ श्री रूपनारायणजीरे बाल भोग सारू चढावी. सेवग फतेराम रूप्या ३५०००) समस्त कमठाणा (का) लागा रुप्या ९५०००) प्रतिष्ठा कीधी जणी समय घरचाणा.

श्रीरामो जयती.

श्लोक ॥ विश्वेश्वरं सगिरिजं सगणाधिराजं सोमेश्वरो द्विजवरो विबुधांश्च नत्वा श्री रूपजित्कृतसुरालयसेतुशालावापीप्रशस्तिरचनाक्रममातनोति ॥ १ ॥ विविध विभववृद्धिभासमान मुदयपुरनगरोत्तमं विभाति ॥ क्षितिवलयविभूषणं समंताद्रुपवनदेवनिकेतनाभिरामं ॥ २ ॥ रूपेणाप्रतिमोयथा रतिपतिः कांत्या कलानां पतिः शत्रौसंयमनीपतिः प्रभुतया ख्यातः सुराणां पतिः श्रीमत्शंभुपदारविंदमकरंदामोदभृंगीपति र्यत्राभात्यरिसिंहनामनृपतिर्यस्तेजसाहर्पतिः॥ ३ ॥ धीरोवीरोमाननीयो मनस्वी दाता भोक्ता पुण्यशीलोदयालुः भक्तोविष्णोः शक्तिमान् सर्वकार्ये धात्रीभ्राता रूपजिद्राज तेसौ॥ ४ ॥ नद्यास्तोये मज्जतां मानवानां सौख्यायासौरूपजित्सेतुबन्धं यावचन्द्रादित्यताराधरित्र्य स्तावत्कीर्त्तिस्थंभतुल्यंससर्ज ॥ ५ ॥ रक्षोवधाय मुनिदेवगणावनाय रामः ससर्ज जलधाविह सेतुबन्धं ॥ भक्तस्य तच्चरणयो रुचितोस्य धात्रीबन्धो सुखायजगतां भुवि सेतुबंधः ॥ ६ ॥ कवित ॥ माथेपैं मुकट लपट रह्यो हीरनसुं कंचनके कुंडल चिबुक चित लायो है। बागो जरतारीको किनारीदार फेटो कटि हाथमे लकुट बनबंसी बजायो है ॥ कहत भोपराम सुण उत्तम विचार नर नगलेरे नेह हूने पंछी जुगायो है । संष चक्र लिये प्रभू पधराये हें तातें रूपजीका देहरा रूपराजने बणायो है ॥ १ ॥ तोरणकी नोष देष पुरो अनोप बण्यो डोली उपरंत जासुं बंगला सरसाई है। बेरचकी तीर तीर बंसीवारो आय परो सुंदर बंधी हे बाव सो कइलासपुरी याइ है ॥ भणे भोपराम अमर कीनो कुलमैं

नाम देहरेकी सरस छबि रूपने बणाई है। सांचो नगराज धवा माथे धनभाग तेरे नंदने सुंदर पुल बंधाई है॥ २॥ कामदार रोड़जी नागोरी भाई गोड़जी कोथली धर हरकिसन फतेराम जात पल्लीवाल॥
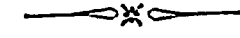
शेष संग्रह नम्बर ५.

मेवाड़के सालेड़ा ग्राममें पूर्व दिशावाली बावड़ीपर महादेवजीके मन्दिरकी प्रशस्ति.
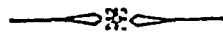
श्री गणेशायजी प्रसादात्॥ श्री एकलिंगजी प्रसादात्॥ सिद्ध श्री महाराजाधिराज महाराणाजी श्री श्री श्री श्री श्री अरिसिंहजी विजयराज्ये धऊबाजी नगजी जात पगार, धायजी बाई नगी जात चहुवाण, जणारे पुत्र ३ तीन, बडा धायभाई रूपजी, जणाथी ल्होडा कीकोजी, जणाथी ल्होडा जोदोजी. धायभाई रूपाजी गाम सालेरे परण्या पंचोली किसनाजीरी बेटी पूरबाई, जात पंचोली. पूरबाईरे पुत्र २, बडा उदयरामजी. ल्होडा हटूजी, बेटी गंगाबाई, उदयरामजीरी वहु मयाबाई जात छादोली, बाई पूरा गाम सालेरा मांहे पीहरछे, जणी थी महादेव जीरो देवरो कराव्यो, ने पूराबाईरी माऊ चांपूबाई जातकी कसाणी, जणी बावडी करावी ने देवरो तथा वावडीरो डोरो प्रतिष्टा साथेही कीधी. संवत् १८२५ वर्षे वैशाख शुद ८ रवौरे दिन हुवी, कामरो आरंभ संवत् १८२३ रा चेत शुद ५ रे दिन कीधो थो मास १३ काम चाल्यो, कमठाणो तथा व्यावहे रुपिया हज़ार सात ७०००, लागाछेजी ॥ अथ कवित ॥ भस्म लगाये अंग पारबती लिये संग वाघंबर ओढे खाल नाग लपटाये है। कंचनसे देहरे विराजे आय शंभुनाथ सब किये पूरे आस पूरेसर कहाये हैं॥ जटा मांहि गंगा रहै बैल वाके संग रहै सींगी अर नाद पूरे डमरू बजाये है। पोपनकी गुंजमाल परे है तेरे द्वार आरती करोनी पूरा भोले शंभु आये है ॥ १ ॥ धन तेरो भाग कांक सपुत्री अनोप जाय सालेरा लडाये सुंदर देहरो बणायो है। चंदके प्रकाश लिये पंचोलण किशना पुत्री करोने उछाव रघुरूप बर पाये है॥ कहै भोपराम अब कहा लों करे वखाण ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों नाद ल्याये है। बैलपै चढते पारबती संग लियां काशीको वासी पूरा तेरे द्वार आये है ॥ २ ॥ पौपनकी गुंज माल पैराई थी श्री गोपाल चंदन तुमेंरेसो काढी केसरकी खोर है। प्रभूके हुकमसूं

उदयराम हुए कुंवर ध्रुव जुं अटल रहो भाइनंकी जोर है ॥ कहै भोपराम कहालुं बखाए करूं कृष्ण संग राधिकाजु रूप बर मोर है। अटल रहो सुभाग भाग ध्रू जुं अटल रहो पूरबाई पूरो पूज्यो वीं पूजी गणगोर है ॥ ३ ॥ सहा लखमीचंदजी समरथजीरा बेटा कामदार जात सिंगवी, गजधर रामोजी जात मेवाडा गोत भगोर, किसनाको बेटो देवो वे पीथो वे नंदो.

शेष संग्रह नम्बर ६.

कोल्हापुरके शिल्हार वंशका ताम्रपत्र, जो बम्बई ब्रेश्व ऑफ़ दि रॉयल एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल नं० ३५ पृष्ठ २५ में दर्ज है.

॥ स्वस्ति श्रीर्जयश्चाभ्युदयश्च ॥

जयति स कश्यपसूनुर्य्यः पीयूषं जहार जित्वेद्रं ॥ जीमूतवाहनं प्रति नागानंदं चयः कृतवान् ॥ श्री शैलाहारवंशांबरतरणिरुदेतिस्म मित्राब्जबंधुर्विद्विड्ध्वांतप्रहारो जतिगनृपतिरस्यात्मजो नायिवर्म्मा तस्याभूच्चंद्रराजः प्रियतमतनयः शौर्य्यसंपन्निवास : स्तस्याऽपत्यं विरेजे जतिगनृपतिरस्यात्मजोगोंकराज : तद्भ्राता गूवलो राजा निर्जितारिव्रजोऽभवत् तद्भ्राता विद्विषां जेता कीर्तिराजो नृपोव्यभात् मारोवारवधूजनस्य समदद्विट्कुंभिसिंहो रणे यस्मात्तद्गदितो भवत्क्षितिपतिः श्री मारसिंहाह्वयः पुत्रो गोंकनृपस्य सत्पनिलयो लंकेश्वर श्चाज्ञया चक्रेशप्रिय मातुलोऽतुलगुणः श्री रूपनारायण : तदात्मजो गूवलदेवनामा नयांबुधिः क्षात्रगुणैकभूमिः जयांगनालिंगितबाहुदण्डो वभूव नित्यं कुनृपप्रचंडः तस्यनुजन्मा विनतावनीशसत्कुंतलाल्यावृतपादपद्म : श्रीभोजदेवोरिपुवीरनारीवैधव्यदीक्षाकरणैकदक्ष : तद्भ्राता सुभगांगनारतिपतिर्ब्बल्लालभूपालक : किं वर्ण्यः खलु यद्यशोधवलयद्यावापृथिव्योर्वपुः दृष्ट्वाहर्निशमात्मनश्च किरणानिंदुप्रमुष्टान्दिवा लज्जोपार्जितहत्कलंकमधुना धत्तेऽयमंकच्छलात् तस्यानुजन्मा सुचिरंचकास्ते श्री गंडरादित्य नृपोजगत्यां विद्विष्टदुष्टावनिपालराजिघोरान्धकारक्षरणैकलक्षः अवार्यतेजास्सततोदयो यो मनोमयानन्तविचित्रवाजी रात्रिंदिवं संपरिभासमानस्समाननामानमधः करोति पीनांभोजश्रियं कुर्वन्नुदितः खेचरेश्वरः गंडरादित्य भूपालो विद्विड्ध्वांतांतकस्सदा राजन्नीरेजहस्तो विबुधततिनुतस्सोदयः प्रत्यहञ्च प्राविर्भूतात्मतेजोनुविचरितजनोनात्मकार्यप्रवृत : क्षोणीमेनामनून [।] मनुदिनमधिकं भासयन्नासमंताद्देकस्सो व्याप्ततेजाः खचरगणमणिर्गंडरादित्यदेवः

समधिगतपंचमहाशब्दमहामंडलेश्वरः तगरपुरवराधीश्वरः श्री शिलाहारनरेन्द्रः जीमूतवाहनान्वयप्रसूतः सुवर्ण गरुडध्वजः मरुवंकसर्पः अय्यनसिंगः रिपुमं-[।] डलिक भैरवः विद्विष्टगजकंठीरवः इडवरादित्यः रूपनारायणः शनिवारसिद्धिः गिरिदुर्गलंघनः कलियुगविक्रमादित्यः श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादि-समस्तनामावलिविराजितः श्रीमन्महामंडलेश्वरो गंडरादित्यदेवः मिरिंजदेशं ससप्तखोल्लं सकोंकणमेकच्छत्रेण दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनपुरःसरं सधर्म्मेणोपभुंजानः एडेनाडांतर्ग्गतीररवाडग्रामे (क्री) डानुवृत्या सुखसंकथाविनोदेन विजयराज्यं चिरं कुर्व (न्) शकनृपकालातीतद्वात्रिंशदुत्तरसहस्रे विरोधिसंवत्सरे माघशुद्ध दशम्यां मंगलवारे नानागोत्रेभ्यः षोडशविप्रेभ्यः कन्यादानं कृत्वा तत्पाणिग्रहण समये वंकवने खोल्लांतर्गत गुडायनाम ग्रामे गालगुट्टि सजया पल्या प्रविष्टया सह वर्तमाने खोल्लश्रुद्धि क्षेत्रमानदंडेन निवर्तनत्रयेणैकैकांवृत्तिं कल्पयित्वा षोडषवृत्तीः समन्वितैकनिवेशनाः समदात् । श्रीप्रयागे लक्षब्राह्मणान्भोजयित्वा तद्भोजनाधिष्ठाय कामवृत्तिमेकामयच्छत् तत्संवत्सरोपरितनविकृतसंवत्सरवैशाखपौर्णमा-स्यां सोमग्रहणपर्वणि पंचलांगलव्रतं कृत्वा तदंगदाक्षि (णा) तया वृत्तिद्वयं ददाति-स्म। मिरंजदेशांतर्गतं इरुकुडिनामग्रामे निजनिर्मितगंडसमुद्राख्यतटाकोपकंठे नि-जप्रतिष्ठितेश्वरबौ (बु) द्धार्हद्भ्यः प्रत्येकमेकैकं निवर्तनमिति त्रिभ्यः त्रिणि निवर्तनानि प्रददौ गुडालयग्राममूलिकाय निवर्तनानि चत्वारि व्यतरत् गुडालेश्वरदेवाखंड-प्रदीपार्थमग्निष्टिकाग्निप्रगुणनार्थं प्रपोदकप्रदानार्थं सौपर्णतांबूलार्थं च वृत्तिमेका-मददात् । गुडालेश्वरदेवस्य पूजार्थे निवर्तनमेकं पूर्वप्रसिद्धमेव प्रतिपालितवान् तद्ग्रामपश्चिमदिशि प्रतिष्ठितमहादेवस्य पूजार्थे पूर्वप्रसिद्धं निवर्त्तनार्द्धं प्रतिपालितवान् एवमनेकविधभूमिदानेन सवृक्षमालाकुलं ग्रामं धारापूर्व्वकमाचंद्रतारमापुत्रपौत्रिकं सशासनमयच्छत् । तस्य सीमा आग्नेयां दिशि पर्वताग्रे पणुतरगे खोल्लस्यसीमा तत्पश्चिमतो मयूरवप्यथा दक्षिणतो म्यसानकप्राकारः तत्पश्चिमतो लघुश्रोतोभूतो नादिप्रवाहो यावच्चंदनकालसंगमः तद्दक्षिणस्यां दिशि खंदिरस्थाणुः तत्पश्चिमत-स्तटाकपालिः प्रमाणं तद्दक्षिणतः अगबाल यस्य खलयं प्रमाणं तद्दक्षिणतः माणि यवप्याः प्रमाणं तत्तः प्रागुक्त पणुतरगेखोल्लस्यसीमा प्रमाण मिति ।

मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा पापादपेतमनसो भुवि भूमिपालाः ये पालयन्ति मम धर्ममिदं समस्तं तेभ्यो मया विरचितोंजलिरेष मूर्ध्नि सामान्यो ऽयं धर्म्मसेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः सर्वानेतान्भाविनः पार्थि-वेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः

यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य तदा फलम् स्वदत्तां परदत्तां वायो हरेत वसुंधरां षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः गामेकां र(क्ति) कामेकां भूमेरप्येकमंगुलम् हरन्नरकमाप्नोति यावदाभूतसंप्लवम् समधिगतन्यायार्णवसीम्ना दीर्णान्यवादिकुमहिम्ना श्रीदामोदरनाम्ना रचितमिदं शासनं जयति समधिगतशिल्पशास्त्रः कण्डरणकलापसर्वज्ञः लिखितांभोरुहगर्तः शासनमिद मलिखदप्योजः यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च व्योमचाम्बुधयस्तथा तावच्च श्रीशिलाहारशासनं जयताद्ध्रुवम्

शेष संग्रह नम्बर ७.

ग्वालियरके क़िलेमें पद्मनाथके मन्दिरकी
प्रशस्ति.

काव्यमालाकी प्राचीन लेखमालाके पृष्ठ ८१ से ९६ तक.

॥ ॐनमः पद्मनाथाय ॥ हर्षोत्फुल्लविलोचनै र्दिशि दिशि प्रोद्गीयमानं जनैर्मेदिन्यां विततं ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् ॥ श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्रीपद्मभूभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्मलवपुः श्वेत निरुद्धश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्यस्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः ॥ दर्शयन्निव केशस्थनवजीमूतकर्णिकाम् ॥ २ ॥ मुक्ताशैलच्छलेन क्षितितिलकयशोराशिना निर्मितोऽयं देवः पायादुषायाः पतिरतिधवलस्वच्छकान्तिर्जगन्ति ॥ मन्वानः सर्वथैव त्रिभुवनविदितं श्यामतापह्नवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुटतटमिलन्नीलकान्त्या बिभर्ति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न भवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्चैष भगवान् ॥ उपाकर्णोत्तंसीकरणसुभगं नीलनलिनं वहत्यचाप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्वीर्यलघूकृतेन्द्रतनयो निःशेषभूमीभृतां वन्द्यः कच्छपघातवंशतिलकः क्षोणीपतिर्लक्ष्मणः ॥ यः कोदण्डधरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानुगां गामेकः पृथुवत्पृथूनपि हठादुत्पाट्य पृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्वज्रधरोपमः क्षितिपतिः श्रीवज्रदामाभवद्दुर्वारोर्जितबाहुदण्डविजिते गोपाद्रिदुर्गे युधा ॥ निर्व्याजं परिभूय गाधिनगराधीशप्रतापोदयं यद्वीरव्रतसूचकः समभवत्प्रोद्घोषणाडिण्डिमः ॥ ६ ॥ नतुलितः किल केनचिदप्यहं जगति भूमिभृते

तिकुतूहलात् ॥ तुलयतिस्म तुलापुरुषैः स्वयं स्वमिह यः सुविशुद्धहिरण्मयैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्रधामा नृपोऽभवन्मङ्गलराजनामा ॥ य ईश्वरैक प्रणतिप्रभावान्महीश्वराणां प्रणतः सहस्त्रैः ॥ ८ ॥ श्रीकीर्तिराजो नृपतिस्ततोऽभूद्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः ॥ धूलीवितानैः सममेव चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमभूद्द्विषश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोऽस्यकथाद्भुतं नरपतेरेतेन शौर्याब्धिना दण्डो मालवभूमिपस्य समरे संख्या मतीतोजितः ॥ यस्मिन्भङ्गमुपागते दिशि दिशि त्रासात्करायच्युतै र्ग्रामीणाः स्वगृहाणि कुन्तनिकरैः संछादयांचक्रिरे ॥ १० ॥ अद्भुतः सिंहपानीयनगरे येन कारितः ॥ कीर्तिस्तम्भ इवाभाति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥ तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्भुवनपाल इति प्रसिद्धः ॥ आनन्दयञ्जगदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरलंकृततनुर्मनुतुल्यकीर्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि भूपालां सर्वां पालयतः प्रभोः ॥ भुवं त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमभूज्जगत् ॥ १३ ॥ राज्ञी देवव्रता तस्य हरेर्लक्ष्मीरिवाभवत् ॥ तस्यां श्रीदेवपालोऽभूत्तनयस्तस्य भूपतेः ॥ १४ ॥ त्यागेन कर्ण मजयत् पार्थं कोदण्डविद्यया ॥ धर्मराजं च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १५ ॥ सूनुस्तस्य विशुद्धबुद्धिविभवः पुण्यैः प्रजानामभून्मांधातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपालप्रभुः ॥ मत्स्वाम्येऽपि करप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन् दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणत्सान्द्रैश्चमूरेणुभिः ॥ १६ ॥ कृत्वान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशादाशां गतैर्दक्षिणामुक्षिप्ताचलसंनिभानविरतं यत्सैन्यवाजिव्रजैः उद्भूतान्यततः पयोधिमभितः संप्रेक्ष्य रेणूत्करान्भूयोऽप्युद्भटसेतुबन्धनधिया त्रस्यन्ति नक्तंचराः ॥ १७ ॥ यस्येन्दुद्युति सुन्दरेण यशसा नीते सुराणां गणे वैवर्ण्यं भ्रमशीलखण्डनभयादप्राप्नुवन्तः प्रियान् ॥ नूनं शक्रपुरः सरामरवधूसंघाः श्रिये सांप्रतं गौर्यै च स्पृहयन्ति ये प्रथमतः पत्युर्वपुः संश्रिते ॥ १८ ॥ कैर्दृष्टाः क्व समस्तवाञ्छितफलभ्राजिष्णवः पादपा गावः कामदुघाश्च कैः क्व मणयः कैश्चिन्तितार्थप्रदाः ॥ पूर्णाः कस्य मनोरथा इह न के पत्यामुना पूरिता वीरोऽधोऽनयदस्य तद्गुणवतः कल्पद्रुमादीनपि ॥ १९ ॥ स्तुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षिता भूः प्राप्तोऽन्यथापि यदसौ वत नग्नभावः ॥ दौःस्थ्यान्निरम्बरतनुर्विपिनेष्वशोच यस्य प्रतिक्षणमिति प्रतिपन्थिसार्थः ॥ २० ॥ भ्रमः कुलालचक्रेषु लोभः पुण्यार्जनेष्वभूत् ॥ काठिन्यं कुचकुम्भेषु यस्मिञ्शासति मेदनीम् ॥ २१ ॥ असंमतोद्गूढगुणस्य पीडा साधुर्न निस्त्रिंशपरिग्रहोऽपि ॥ इत्याललम्बे न धनुर्न चासिं तथापि यो वैरिगणं जिगाय ॥ २२ ॥ सद्यस्त्रुतास्त्रपृषतव्यतिकीर्णभूषु वैरिद्विपाधिपशिरोमणिभिः समन्तात्

॥ लोकानुरागयशसामिव बीजवापं विस्तारयां यदसिरास रणाजिरेषु ॥ २३ ॥ वने यदरिनारीणां हैमनीरजनिश्चियः ॥ भृङ्गाणां तन्मुखेनातो हैमनीरजनिश्चयः ॥ २४ ॥ स विमृश्य नदीपूरगत्वरे संपदायुषी ॥ पूर्तधर्मे मतिं चक्रे जिघृक्षु रनयोः फलम् ॥ २५ ॥ प्रजाभर्त्रा तेन क्षितितिलकभूतेन सदनं हरेर्धर्मज्ञेन त्रिदशसदृशा कारितमदः वदाम्यस्योच्चैस्त्वं कथमिव गिरा यस्य शिखरं समारूढः सिंहो मृगमिव मृगाङ्कस्थमशितुम् ॥ २६ ॥ प्रासादस्यास्य शश्वद्विधुधरशिखरि स्पर्धिनो हैममण्डं दण्डाग्रात्पावनीयं शशधरधवला वैजयन्ती पतन्ती ॥ निर्वातं भाति भूतिच्छुरितनिजतनोर्देवदेवस्य शंभोः स्वर्गाङ्गेव पिङ्गस्फुटविकटजटाजूटमध्यं विशन्ती ॥ २७ ॥ तदेतद्ब्रह्माण्डं स इह भविता पङ्कजभवः पुनर्थं वोढास्मो (रो) वयमिह विमानेन वियति ॥ सुवर्णाण्डं हंसास्तदिदमुररीकृत्य सकलं ध्रुवं संसेवन्ते हरिसदनमूर्ध्नि स्थितममी ॥ २८ ॥ तुङ्गिम्ना कनकाचलः शुभविधावन्तः स्थित श्रीपति र्बिभ्राणो द्विजसत्तमानुदधिजा वासो नृसिंहान्वितः ॥ निर्मातास्य वृतः समस्तविबुधै र्लब्धप्रतिष्ठैरयं प्रासादश्च धरातले सममहो कल्पंहरेः कल्पताम् ॥ २९ ॥ देवेऽर्धसिद्धे द्विजपुंगवेषु प्रतिष्ठितेष्वष्टसु पद्मपालः ॥ युवैव दैवप्रतिकूलभावात्सक्रन्दनार्धासनभाग्बभूव ॥ ३० ॥ तस्य भ्राता नृपतिरभवत्सूर्यपालस्य सूनुः श्रीगोपाद्रौ सुकृतनिलयः श्रीमहीपालदेवः ॥ यं प्राप्यैव प्रथितयशसं तावभूतां सनाथौ शौर्यत्यागौ हरिरविसुताभावदुःस्थौ चिरेण ॥ ३१ ॥ स्टष्टिं कुर्वन्नमात्यानां विप्राणां स नृपः स्थितिम् ॥ प्रलयं विद्विषामासी द्ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः ॥ ३२ ॥ यत्र धामनिधौ राज्ञि पालयत्यवनीतलम् ॥ नभास्वान्भास्करादन्यो न राजान्योविधोरभूत् ॥ ३३ ॥ कृताभिषेकं सद्वृत्तैरुपविष्टं नृपासने ॥ यमुदार पदैरेवं तुष्टुवुः सूतमागधाः ॥ ३४ ॥ त्वामुद्वहन्ति शिरसा खलु राजहंसाः स्टष्टास्त्वया पुनरिमाः समयावसन्नाः ॥ नाथ प्रजाः सुमनसां प्रथमोऽसि कोऽसि त्वंसिद्धवीररस तामरसोद्भवस्य ॥ ३५ ॥ लक्ष्मीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिन्हं पाणिद्वयं वहसि भूप भुवं बिभर्षि ॥ श्यामं वपुः प्रथयसिस्थि तिहेतुरेक स्त्वं कोऽसि नीतिविजितोद्भव माधवस्य ॥ ३६ ॥ त्वं पालयस्य निशमर्थिजनस्य कामं रामः श्रिया त्वमसि नाथ गुणैरनन्तः संकर्षणः समिति विद्विषदायुषस्त्वं त्वं कोऽसि सच्चरितहाल हलायुधस्य ॥ ३७ ॥ ख्याता रतिस्तव निजप्रमदासु नित्यं रूपं तवातिशय विस्मयकारि देव ॥ त्वं मीनचिन्हपुरुषोत्तमसंभवोऽसि कस्त्वं क्षितीशवर शम्बरसूदनस्य ॥ ३८ ॥ भूभृत्सुतापतिरसि द्विषतां पुराणां भेत्ता त्वमीश वृषपोषरतोऽसि नित्यम् ॥ भूतिं दधास्यमलचन्द्रविभूषिताङ्गः

कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शंकरस्य ॥ ३९ ॥ त्वं तेजसा शिखिनमिद्धमधः करोषि शक्तिं दधासि नरदेव विपत्तिहन्त्रीम् ॥ त्वं तारकं रिपुबलस्य बलान्निहंसि कस्त्वं नवीनबलनीलगलध्वजस्य ॥ ४० ॥ त्वं वज्रभृत्वमसि पक्षभिदप्यशेष भूमिभृतां विबुधवन्द्यगुरुप्रियोऽसि ॥ श्रीमत्सुवर्णगिरिदुर्गचरोऽसि कोऽसि त्वं भीमसाहस-सहस्रविलोचनस्य ॥ ४१ ॥ ख्यातं तवेश बहुपुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकावलिभि-राप्ततमैश्च गुप्ता ॥ त्वामामनन्ति परमेश्वरवद्धसख्यं त्वं कोऽसि सद्गुणनिधान ध-नाधिपस्य ॥ ४२ ॥ तेजोनिधिस्त्वमसि भूमिभृतः समग्राः क्रान्ताः करैः प्रस-भमुग्रतरैस्तवेश ॥ प्राप्तोदयः सततमर्थिजनस्य कोऽसि त्वं कल्पभूरुहसरोरुहबा-न्धवस्य ॥ ४३ ॥ आनन्ददोऽसि जनतानयनोत्पलानामाप्यायिताखिलजनः करमार्दवेन ॥ त्वं शश्वदीश्वरशिरस्तलदत्तपाद स्तत्कोऽसि मर्त्यभुवनेशनिशाकरस्य ॥ ४४ ॥ त्वामंशमीश निगदन्ति मधुद्विषोऽमी श्यामाभिरामतनुरस्यमलप्रबोधः॥ पुण्यं च भारतमिदं विहितं त्वयैव त्वं कोऽसि सत्यधन सत्यवतीसुतस्य ॥ ४५ ॥ नीतात्मकीर्तिसुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तं त्वयोन्नतिमसौ गमितः स्ववंशः ॥ पूर्वैप-वित्रतनवो विहिताश्वकोऽसि त्वं सत्सुलब्धपरभाग भगीरथस्य ॥ ४६ ॥ एतत्त्व-या कृतमताडकमाशु विश्वं व्याप्ता मही हरिभिरीशमनोजवैस्ते ॥ पुण्यावतारकरण क्षतदुर्दशास्यस्त्वंकोऽसि दत्तरिपुलाघवराघवस्य ॥ ४७ ॥ धर्मप्रसूत्वमसि सत्यधनस्त्वमेक स्त्वं वासुदेवचरणार्चनदत्तचित्तः ॥ त्वंकोऽसि विप्रजनसेवितशेष-वृत्तिः संग्रामनिष्ठुर युधिष्ठिरपार्थिवस्य ॥ ४८ ॥ त्वंभूरिकुञ्जरबलोभुवनैकमल्ल विद्याविभूषिततनु र्नृप पावनोऽसि ॥ प्रच्छन्नसूपकृतिसंभृतबन्धुवाञ्छः कस्त्वं कवीन्द्रकृतमोद वृकोदरस्य ॥ ४९ ॥ एकस्त्वमीश भुवि धन्वभृतांवरिष्ठः सस्वामि-कारिगणदर्पहरस्त्वमाजौ ॥ गन्धर्वराजपृतनाविजयाप्तकीर्ति स्त्वंकोऽसि सुन्दर पुरंदरनन्दनस्य ॥ ५० ॥ दुर्योधनाखिलदर्पहृतस्तवेश यत्नः परार्जनयशः प्रसरं निरोद्धुम् ॥ त्वं कोऽसि सूर्यजनितप्रमदार्थिसार्थदौर्गत्यकर्तन विकर्तनसंभवस्य ॥ ५१ ॥ रत्नालयस्त्वमसि धाम गभीरताया स्त्वं पासि पार्थसमभूमिभृतः प्रवि-ष्टान् ॥ अन्तः स्थितस्तव हरिः सततं नरेश कस्त्वंवितीर्ण रिपुजागर सागरस्य ॥ ५२ ॥ शौर्यैकभूः क्रमसमागतसत्ववृत्ति स्त्वंराजकुञ्जरशिरः प्रवितीर्णपादः ॥ दृप्तारिभास्करतिरस्कृतिसिंहकाभूः कस्त्वंमहीपतिमृगाङ्क मृगाधिपस्य ॥ ५३ ॥ दानं ददासि विकटोन्नतवंशशोभ स्त्वं दन्तपालिकरवालहतारिदर्पः ॥ क्षोणी-भृतो जयसि तुङ्गतया नरेन्द्र त्वं कोऽसि वैरिबलवारण वारणस्य ॥ ५४ ॥ सद्म श्रियस्त्वमसि मित्रकृतप्रमोद स्त्वं राजहंससमलंकृतपादमूलः ॥ स्वामिन्नधः

कृतजडो ऽसि गुणाभिरामः कस्त्वं स्मिताढ्यमुखपङ्कज पङ्कजस्य ॥ ५५ ॥ सत्पत्रभूषिततनुः सुविशुद्धकोश स्त्वं चन्द्रकान्तिसमलंकृतकान्तमूर्तिः ॥ स्यातं तवैव कविवल्लभ सौमनस्यं त्वं ब्रूहि कः समरभैरव कैरवस्य ॥ ५६ ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि शश्वन्मङ्गल्यभूस्त्वमसि निर्मलताभिरामः को ऽसि प्रसीद वद सद्गुणरत्नयोनि स्त्वंकच्छपारिकुलभूषण भूषणस्य ॥ ५७ ॥ धात्रा परोपकरणाय विस्टष्टकाय सच्छायजन्मसमलंकृततुङ्गगोत्रः । ब्रूहि त्रिसंध्यमवनीश्वरवन्दनीय स्त्वं को ऽसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य ॥ ५८ ॥ नाथः कृतद्विजपति र्न गदान्वितोसि ऽनलं विशुद्धहृदय प्रथितोग्रमायः । त्वंजातु न क्षतवृषो न जडे कृतास्थ स्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथंते ॥ ५९ ॥ नित्यं संनिहितक्षयः स तमसा प्रायो ऽभि भूयेत स त्वत्त्रासाद्भुवनैकनाथ हरिणस्तस्योदरे प्राविशत् मूर्त्तिस्तस्य कलङ्किता सजडतां धत्ते स दोषाकरशब्दस्ते विदितस्तथापि नृपते राजात्वमित्यद्भुतम् ॥ ६० ॥ एकेनोत्तर गोग्रहे विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यासेन स्तुतिरर्जुनस्य विहितेत्यज्ञायी पूर्वं किल तत्सम्यक्प्रति भाति संप्रति पुनः श्रीमन्महीपाल न स्त्वामालोक्य सहस्रशो रिपुबलं निघ्नन्तमेकं रणे ॥ ६१ ॥ किन्नूमो ऽविकलत्वमीश भवतस्त्वं नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपते चतस्टणा मात्म प्रियाणां शृणु कीर्तिर्भ्राम्यति दिक्षु गीर्गुणवतां कण्ठे लुठत्यादृता मर्यादारहिता मही द्विजसुहृद्गेहे रता श्रीरपि ॥ ६२ ॥ किंचित्रं भुवनैकमल्ल यदियं मन्दाकिनी पद्मभूर्लोकादुद्धरता भगीरथनृपेणानायि निम्नां महीम् । आश्चर्यं पुनरेतदीश यदितो निम्नान्महीमण्डलादूर्ध्वं कीर्तितरङ्गिणी कमलभूलोकं त्वया प्रापिता ॥ ६३ ॥ चित्रं नात्र सलक्षण स्त्वमकरोः सर्वात्मना विद्विषोदेवप्रत्ययलोपमाशु विशिखैः संमूर्छितस्याहवे क्रोधाद्भैरवमूर्तिरुल्लसदसि क्रूरप्रहाराद्भुतै रस्यत्वं यदनीनशः प्रकृतिमप्येतन्ननाश्चर्यकृत् ॥ ६४ ॥ अत्यम्बुधि भवद्धैर्यमत्यादित्यं भवन्महः अतिसिंहं भवच्छौर्यमतः केनोपमीयसे ॥ ६५ ॥ केयूरं तव भूपाल भुजदण्डे विराजते किरीटमिव वा ह्यन्तर्निवासि विजयश्रियः ॥ ६६ ॥ यदर्चायां नित्यं त्रिभुवनगुरो स्तोत्रमकृथा स्तदेष प्रीतस्त्वां ध्रुवमकृत कल्पस्थितिमिह यदुत्सङ्गे तुङ्गे तव लुठति चंद्रांशुविमला प्रलम्बव्याजेन क्षितितिलक तारावलिरियम् ॥ ६७ ॥ वैतालिकैरित्थमभिष्टुतेन संपूजितामर्त्यगुरुद्विजेन विमुक्तकारागृहसंयतेन वितीर्णभूताभयदक्षिणेन ॥ ६८ ॥ तेनाभिषिक्तमात्रेण प्रतिजज्ञे द्वयंस्वयम् पद्मनाथस्य संसिद्धिः कन्यायाः सद्वरार्पणम् ॥ ६९ ॥ तच्च द्वयं कृतमनेन विवेकभाजा राजात्मजा मदनपालवराय दत्ता श्रीपद्मनाथसुरमन्दिरमेतदुच्चै र्नीतं समाप्तिमविनाशि यशः शरी

रम् ॥ ७० ॥ समर्धिता ब्रह्मपुरी च तेन शेपान्विधायावनिदेवमुख्यान् । प्रवर्तितं सत्रमतन्द्रितेन मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ ७१ ॥ श्रीपद्मनाथस्य स लोकनाथश्चक्रिद्वयं भूपतिचक्रवर्ती नैवेद्यपाकाय विपक्वबुद्धिः प्रादात्प्रदीपाय च गोत्रदीपः ॥ ७२ ॥ ब्रह्मोत्तरं मण्डपिकासमुत्थं द्वेधा विधाय स्वयमीश्वरेण । श्रीपद्मनाथाय वितीर्णमर्ध मर्धं च वैकुण्ठ सुरेश्वराय ॥ ७३ ॥ विलासिनीवादकगायनादेर्यथार्हतः पादकुलस्य वृत्तिम् । स पद्मनाथस्य पुरः समग्रामकल्पयत्प्रेक्षणकाय भूपः ॥ ७४ ॥ पापाणपल्लीं प्रविभज्य सम्यग्देवाय सार्धानि पदानि पञ्च । संपादयामास तथा द्विजेभ्यः सार्धाचतुर्विंशतिमुत्तमेभ्यः ॥ ७५ ॥ ददौ करस्वं खरवारखेटं महीपति स्तत्र भवं समस्तम् । आकाशपातालसमुद्गतं च देवद्विजेभ्यो लवणाकरं च ॥ ७६ ॥ तस्यादृष्टसहायतामुपगतो योगेश्वराङ्गोद्भवः ख्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपते ः सर्वत्र विश्वासभूः । आधारो विनयस्य शीलभवनं भूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य कृत ज्ञतैकवसतिः सौजन्यकोशालयः ॥ ७७ ॥ तत्प्रत्ययेन निदधे निखिलानि धर्मकार्याणि धर्मनिरतः स नरेन्द्रचन्द्रः । विप्रः सनि ः स्पृहतया गुणगौरवेण चित्तं विवेश समवृत्तितया च राज्ञः ॥ ७८ ॥ महीपालेनये विप्रास्तस्मिन्ग्रामे प्रतिष्ठिताः तेपां नामानि लिख्यन्ते विस्तरः शासनोदितः ॥ ७९ ॥ देवलब्धिः सुधीराघस्तथा श्रीधरदीक्षितः । सूरिः कीर्तिरथः सार्धपदिनोऽस्य द्विजास्त्रयः ॥ ८० ॥ गङ्गाधरो गौतमश्चामलकोऽथ गदाधरः । देवनागो वसिष्ठश्च देव शर्मा यशस्करः ॥ ८१ ॥ कृष्णो वराहस्वामी च गृहवासः प्रभाकरः । इच्छाधरोमधुश्चैव तिल्हेकः पुरुपोत्तमः ॥ ८२ ॥ रामेश्वरो द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः । अष्टादशैते विप्राश्च पदिनः शङ्ढलो द्विजः ॥ ८३ ॥ पादोनपदिको रत्नतिहूणेकौ सुरार्चकौ द्वावर्धपदिनावेप विप्राणां संग्रहः कृतः ॥ ८४ ॥ ददौ देवपदानां च मध्यादर्धपदं नृपः ॥ विधाय शाश्वतं लोहभटकायस्थसूरये ॥ ८५ ॥ देवाय दत्तः सौवर्णो राज्ञारत्नैः समाचितः । मुकुटः सुमहानीलो मणिर्यत्र विराजते ॥ ८६ ॥ हरिन्मणिमयं भूपतिलकस्तिलकं ददौ ॥ रत्नैर्विचित्रं नीष्कंच निष्कलङ्कः स भूपतिः ॥ ८७ ॥ प्रादात्केयूरयुगलं रत्नैर्बहुभिराचितम् ॥ कङ्कणानां चतुष्कं च महार्हमणिभूपितम् ॥ ८८ ॥ इति रत्नमयं तावदेकमाभरणं विभोः ॥ द्वितीयमनिरुद्धस्यसौवर्णं केवलं यथा ॥ ८९ ॥ कङ्कणानां चतुष्कं च भालपट्टद्वयं तथा ॥ कृत्तिदारं स्वर्णमुष्टिं बिभर्त्यन्वहमच्युतः ॥ ९० ॥ रूप्यमद्वालिका दत्ता कच्चोलैः पञ्चभिर्युता ॥ नैवेद्यधारणार्थं च कांस्यस्थालचतुष्टयम् ॥ ९१ ॥ सुवर्णाण्डत्रयं देवपरिवारविभूपणम् ॥ धृतं चोपरि हेमाब्जमातपत्रीकृतं विभोः ॥ ९२ ॥ निवेश्य

ताम्रपत्रे च तन्मये नैव गड्डुना ॥ स्नाप्यते प्रतिमा नित्यमनिरुद्धस्य राजती ॥ ९३ ॥ प्रतिमा वामनस्यैका द्वितीया लघुराच्युती ॥ राजावर्त्तमयीचान्या द्वे पूर्वे रीतिनिर्मिते ॥ ९४ ॥ ताः प्रयत्नेन निम्नोऽपि पूज्यन्ते गर्भवेश्मनि ॥ तत्रताम्रमयं दत्तं दीपार्थं मल्लिकाद्वयम् ॥ ९५ ॥ स्नानार्थं ताम्रकुण्डे द्वे दत्ते द्वे ताम्रपात्रिके ॥ ताम्रार्घपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीभुजा ॥ ९६ ॥ सधूपदहनाः सप्त घण्टाश्चारात्रिकान्विताः ॥ दत्ताः शङ्खाश्चसप्तैव ताम्रपात्रीचतुष्टयम् ॥ ९७ ॥ सकांस्यमाजनं प्रादान्नृपतिः काहलाद्वयम् ॥ चामरं दण्डयुग्मं च रीतिस्फटिकसंभवम् ॥ ९८ ॥ द्वह्वरुद्वयं ताम्रमयं ताम्रालुकात्रयम् ॥ ताम्राभाण्डयस्तथा पञ्च दत्ताश्चाटुश्च तन्मयः ॥ ९९ ॥ .... ॥ एपदेवोपकरणद्रव्याणां संग्रहः कृतः ॥ १०० ॥ शिलाकुट्टस्यपत्यादियन्त्रिशाकटिकादिषु ॥ वापीकूपतडागादिखननावन्धनेषु च ॥ १०१ ॥ दशमांशं तथा विंशत्यंशं सर्वत्र मण्डले ॥ ददौ राजानिरुद्धाय तेन सर्व्वं प्रवर्त्तते ॥ १०२ ॥ अयं देवालयः पद्मनृपतेः स्फटिकामलः ॥ भूया दुपार्जितःपुण्यैर्विष्णुलोक इवाक्षयः ॥ १०३ ॥ भारद्वाजेन मीमांसान्यायसंस्कृतवुद्धिना ॥ कवीन्द्ररामपौत्रेण गोविन्दकविसूनुना ॥ १०४ ॥ कविना मणिकण्ठेन सुभाषितसरस्वता ॥ प्रशस्तिर्द्विजमुख्येन रचितेयमनिन्दिता ॥ १०५ ॥ प्रतापलङ्केश्वरवाग्विलीयां विभ्रत्सुद्दत्तां मणिकण्ठसूरेः ॥ अशेषभाषासुकविर्लिलेख वर्णान्यशोदेव दिगम्बरार्कः ॥ १०६ ॥ एकादशस्वतीतेषु सवत्सरशतेषुच ॥ एकोनपञ्चाशति च गतेष्वब्देषु विक्रमात् ॥ १०७ ॥ पञ्चाशे चाश्विने मासे कृष्णपक्षे नृपाज्ञया ॥ रचिता मणिकण्ठेन प्रशस्तिरियमुज्ज्वला ॥ १०८ ॥ अङ्कतोऽपि ११५० आश्विन वहुलपञ्चम्याम् ॥ ॐ ॥ तैस्तैस्तस्य महीपतेः प्रतिरणं प्रौढप्रतापानले नाश्चर्यं यदनेकशो रिपुचमूचक्रैः पतङ्गायितम् । यस्येन्द्रप्रतिमस्य वुद्धिसचिवः सर्वज्ञकल्पोऽभवन्नोत्या निर्जितमौर्यवंशतिलकाचार्यः स गौरः सुधीः ॥ १०९ ॥ किं चित्रं यन्महीपालो भुनक्ति स्माखिलां महीम् । यस्य गीर्वाणमन्त्रीव मन्त्री गोरोऽभवत्सुधीः ॥ ११० ॥ प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा सद्वर्णा पद्मशिल्पिना । देवस्वामिसुतेन श्रीपद्मनाथसुरालये ॥ १११ ॥ तथैव सिंहराजेन माहुलेन च शिल्पिना । प्राप्नुवन्तु समुत्कीर्णान्यक्षराणि यथार्थताम् ॥ ११२ ॥

(इस प्रशस्तिमें लिखे हुए राजाओंने क्रमसे राज्य किया है, इसवास्ते यह लेख दिया गया है; और यहांके दूसरे राजाओंकी शृंखला पूर्ण न होनेके सबब उन राजाओंके लेख दर्ज नहीं किये गये).

शेष संग्रह नम्बर ८.

धारा नगरीके प्रख्यात भोजराजके पितामह वाक्पतिराजका दानपत्र, काव्यमालाकी प्राचीन लेखमालाके पृष्ठ १ से.

याः स्फूर्जत्फणभृद्विषानलमिलद्धूमप्रभाः प्रोल्लसन्मूर्धाबद्धशशाङ्ककोटिघटिता याः सैंहिकेयोपमाः। याश्चस्वाद्रिगिरिजाकपोलल्लुलिताः कस्तूरिकाविभ्रमाः स्ताः श्रीकण्ठकठोरकण्ठरुचयः श्रेयांसि पुष्णन्तु वः॥ यल्लक्ष्मीवदनेन्दुना न सुखितं यन्नार्द्रितं वारिधे र्वारा यन्न निजेन नाभिसरसीपद्मेन शांतिं गतम्। यच्छेषाहिफणासहस्त्रमधुरश्वासै र्न चाश्वासितं तद्राधाविरहातुरं मुररिपोर्वेल्लद्वपुः पातु वः॥ परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री कृष्णराजदेवपादानुध्यात परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री वैरिसिंहदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराज परमेश्वर श्री सीयकदेवपादानुध्यात परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वरश्रीमदमोघवर्षदेवापराभिधानश्रीमद्वाक्पतिराजदेवपृथ्वीवल्लभश्रीवल्लभनरेन्द्रदेवः कुशली श्रीनर्मदातटे गर्दभपानीयभोगे गर्दभपानीयसम्बन्धिनि उत्तरस्यां दिशि पिप्परिकानाम्ना तडारे समुपगतान्समस्तराजपुरुषान्ब्राह्मणोत्तरान्प्रतिवासिपट्टकिलजनपदादींश्च बोधयति अस्तु वः संविदितम् यथा तडारोऽयमस्माभिः आघाटाः पूर्वस्यां दिशि अगारवाहलामर्यादा तथोत्तरस्यां दिशि चिखिल्लिकासत्कगर्तायासमायतामर्यादा, तथा पश्चिमदिशि गर्दभनदीमर्यादा, तथा दक्षिणस्यां दिशि श्री पिशाचदेवतीर्थमर्यादा, एवं चतुराघाटोपलक्षिताभिरेकत्रिंशसाहस्त्रिकसंवत्सरेऽस्मिन् भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां पवित्रकपर्वणि श्रीमदुज्जयिनीसमावासितैः शिवतडागाम्भसि स्नात्वा चराचरगुरुं भगवन्तं भवानीपतिमभ्यर्च्य संसारस्यासारतां दृष्ट्वा, वाताभ्रविभ्रममिदं वसुधाधिपत्य मापातमात्रमधुरोविषयोपभोगः। प्राणास्तृणाग्रजलबिन्दुसमा नराणां धर्मः सखा परमहो परलोकयाने॥ भ्रमत्संसारचक्राग्रधाराधारामिमां श्रियम्। प्राप्ययेन ददुस्तेषां पश्चात्तापः परंफलम्॥ इति जगतो विनश्वरं सकलमिदमाकलय्य उपरिलिखित तडारः स्वसीमतृणकाष्ठयूतिगोचरपर्यन्तः सवृक्षमालाकुलः सहिरण्यभागभोगः सोपरिकरः सर्वादायसमेतः अहिच्छत्त्रविनिर्गताय धामदक्षिणप्रपन्नाय ज्ञानविज्ञानसंपन्नाय श्रीमद्वसन्ताचार्याय श्री धनिकपण्डितसूनवे मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये अदृष्टफलमङ्गीकृत्य आचन्द्रार्कार्णवक्षितिसमकालं परया भक्त्या शासनेनोदक-

पूर्वं प्रतिपादित इति मत्वा तन्निवासिजनपदैर्यथा दीयमानभागभोगकरहिरण्या दिकं सर्वमाज्ञाश्रवणविधेयैर्भूत्वा सर्वदास्मै समुपनेतव्यम् सामान्यं चैतत्पुण्यफलं बुध्वास्मद्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मादायो ऽयमनुमन्तव्य: पालनीयश्च । उक्तंच बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभि: सगरादिभि: । यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य तदाफलम् ॥ यानीह दत्तानि पुरा नरेन्द्रैर्दानानि धर्मार्थयशस्कराणि। निर्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि कोनाम साधु: पुनराददीत ॥ अस्मत्कुलक्रममुदार मुदाहरद्भि रन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनीयम् । लक्ष्म्यास्तडित्सलिलबुद्बुदचञ्चलाया दानं फलं परयश: परिपालनं च ॥ सर्वा नेतान्भाविन: पार्थिवेन्द्रा न्भूयो भूयो याच तेरामभद्र: । सामान्यो ऽयंधर्म सेतुर्नराणां काले काले पालनीयोभवद्भि: ॥ इति कमलदलाम्बुबिन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्य जीवितं च । सकलमिदमुदाहृतं च बुद्वा नहि पुरुषै: परकीर्तयो विलोप्या: ॥ इति ॥ सं० १०३१ भाद्रपद सुदि १४ स्वयमाज्ञा दायकश्चात्र श्रीकण्हयैक: स्वहस्तो ऽयं श्रीवाक्पति राजदेवस्य.

शेष संग्रह नम्बर २.

वाक्पतिराजका दूसरा दानपत्र इंडियन एन्टिकेरीकी १४ जिल्दके १६० पृष्ठ से.

ॐ ॥ या: स्फू (र्जत्फण) भृद्विषानलमिलद्धूमप्रभा: प्रोल्लसन्मूर्द्धाबद्ध शशाङ्ककोटिघटिता या: सैंहिकेयोपमा: । या (श्च) द्रिरिजाकपोललुलिता: कस्तूरिकाविभ्रमास्ता: श्री कण्ठकठोरकण्ठ (रु) चय: श्रेयांसिपुष्णन्तु व: ॥ यल्लक्ष्मीवदनेन्दुना न सुखितं यन्नार्द्रितंवारिधेर्व्वारा यन्न निजेन नाभिसरसी पद्मेन शान्तिङ्गतं । यच्छेषाहिफणासहस्रमधुरश्वासैर्न्न चाश्वासितं तद्राधाविरहातुरं मुररिपोर्व्वेल्लद्वपु ॅ पातुव: ॥ परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्रीकृष्ण राजदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्री वैरिसिंहदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्री सीयकदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्रीमदमोघवर्षदेवापराभिधान श्रीमद्वाक्पतिराजदेवपृथ्वीवल्लभश्रीवल्लभनरेन्द्रदेव: कुशली ॥ तिणिसपद्रद्वादशकसम्बद्ध महासाधनिकश्री महाइकभुक्तसेम्बलपुरकग्रामे समुपगतान्समस्तराजपुरुषान्ब्राह्मणोत्तरान्प्रतिवासिपट्टकिलजनपदादींश्च बोधयत्यस्तुव: संविदितं यथा ग्रामोयमस्माभि: षट्त्रिंशसाहस्रिकसंवत्सरेस्मिन् कार्तिकशुद्धपूर्णिमायां सोमग्रहणपर्वणि श्री भगवत्पुरावासितैरस्माभिर्म्महासाधनिक श्री महाइकपत्नीथ्यासिनीप्रार्थनया उपरिलिखित-

ग्राम : स्वसीमातृणयूतिगोचरपर्य्यन्त : स हिरण्याभागभोग : सोपरिकर : सर्वादा-यसमेत: श्री मदुज्जयन्यां भट्टारिकाश्रीमद्भद्देश्वरीदेव्यै स्नानविलेपनपुष्पगन्धधूप (ने) वेद्य प्रेक्षणकादिनिमित्तञ्च तथा खण्डस्फुटितदेवगृहजगतीसमारचनार्थञ्च मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये दृष्टफलमङ्गीकृत्याचन्द्रार्कार्ण्णवक्षितिस-मकालं परया भक्त्या शासनेनोदकपूर्वकं प्रतिपादित इति मत्वा तन्निवा-सिपट्टकिलजनपदैर्यथादीयमानभागभोगकर हिरण्यादिकं सर्वमाज्ञा-श्रवणविधेयैर्भूत्वा सर्व्वथा सर्वमस्या: समुपनेतव्यं सामान्यं चैतत्पुण्यफलं बुद्ध्वा ऽस्मद्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्म्मदायोयमनुमन्तव्य : पालनीयश्च। उक्तं च । बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभि: सगरादिभिर्य्यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलं ॥ यानीह दतानिपुरानरेन्द्रैर्द्दानानि धर्म्मार्थयशस्कराणि [।] निर्म्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि कोनाम साधु : पुनराददीत ॥ अस्मत्कुलक्रम-मुदारमुदाहरद्भिरन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनियम् लक्ष्म्यास्तडित्सलिलबुद्बुदचञ्च-लाया दानंफलं परयश: परिपालनञ्च सर्व्वानेतान्भाविन : पार्थिवेन्द्रा न्भूयो भूयो याचते रामभद्र: सामान्योयन्धर्म्मसेतुर्नृपाणां कालेकालेपालनीयोभवद्भि:। इति कमलदलाम्बु विन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितं च । सकलमिदमुदाहृतञ्च बुद्ध्वानहि पुरुपे ॅ परकीर्तयो विलोप्या इति सम्वत् १०३६ चैत्र वदि ९। गुणपुरा वासिते श्री मन्महाविजयस्कन्धावारे स्वयमाज्ञा दापकश्चात्र श्री रुद्रादित्य: स्वहस्तोयं श्रीवाक्पतिराजदेवस्य.

शेप संग्रह नम्बर १०,

भोजका दानपत्र इंडियन एन्टिक्वेरी, ६। ५३-५४,

जयति व्योमकेशो ऽसौ य: सर्गाय बिभर्ति ताम्। ऐन्दवीं शिरसा लेखां जगद्बीजाङ्कुराकृतिम् ॥ तन्वन्तु व: स्मराराते: कल्याणमनिशंजटा : । कल्पान्तसमयोद्दामतडिद्वलयपिङ्गला : ॥ परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्री सीयकदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीवाक्पतिराजदेव पादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीसिन्धुराजदेवपादानुध्यात पर-मभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीभोजदेव: कुशली नागह्रदपाश्चिमपथकान्त:-पातिवीराणके समुपगतान्समस्तराजपुरुषान्ब्राह्मणोत्तरान्प्रतिनिवासिपट्टकिलजन-पदादींश्च समादिशति – अस्तु व: संविदितम् यथा अतीताष्टसप्तत्य-

धिकसाहस्त्रिकसंवत्सरे माघासिततृतीयायां रवावुदगयनपर्वणि कल्पितहलानां लेख्ये श्रीमद्धारायामवस्थितैरस्माभिः स्नात्वा चराचरगुरुं भगवन्तं भवानीपतिं समभ्यर्च्य संसारस्यासारतां दृष्ट्वा वाताभ्रविभ्रममिदं वसुधाधिपत्यमापातमात्र-मधुरोविषयोपभोगः। प्राणास्तृणाग्रजलबिन्दुसमा नराणां धर्मः सखा परमहो परलोकयाने ॥ भ्रमत्संसारचक्राग्रधाराधारामिमां श्रियम्। प्राप्य ये न ददुस्तेषां पश्चात्तापः परं फलम्, ॥ इति जगतोविनश्वरं स्वरूपमाकलय्य उपरिलिखित ग्रामः स्वसीमातृणगोचरयूतिपर्यन्तः सहिरण्यभागभोगः सोपरिकरः सर्वादाय-समेतः ब्राह्मणधनपतिभट्टाय भट्टगोविन्दसुताय बह्वृचाश्वलायनशाखाय त्रिप्रव-राय वेल्लवल्लप्रतिबद्धश्रीवादाविनिर्गतराधसुरसङ्कर्णाटाय मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये अदृष्टफलमङ्गीकृत्य आचन्द्रार्कार्णवक्षितिसमकालं यावत्परया भक्त्या शासनेनोदकपूर्वं प्रतिपादित इति मत्वा यथादीयमानभागभोगकरहिरण्या-दिकमाज्ञाश्रवणविधेयैर्भूत्वा सर्वमस्मै समुपनेतव्यम् सामान्यं चैतत्पुण्यफलं बुद्ध्वास्मद्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मादायो ऽ यमनुमन्तव्यः पालनीयश्च उक्तं च बहुभिर्वसुधादत्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलम् ॥ यानीह दत्तानि पुरा नरेन्द्रैर्दानानि धर्मार्थयशस्कराणि। निर्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि को नाम साधुः पुनराददीत ॥ अस्मत्कुलक्रममुदार-मुदाहरद्भि रन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनीयम्। लक्ष्म्यास्तडित्सलिलबुद्बुदचञ्चलाया दानं फलं परयशः परिपालनंच ॥ सर्वानेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रान्भूयो भूयो याचते रामभद्रः। सामान्यो ऽयं धर्मसेतुर्नराणां काले काले पालनीयो भवद्भिः ॥ इति कमलदलाम्बुबिन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितंच। सकलमिद मुदाहृतं च बुद्ध्वा नहि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः॥ इति संवत् १०७८ चैत्र सुदि १४ स्वय माज्ञा मङ्गलं महाश्रीः स्वहस्तो ऽयं श्री भोजदेवस्य.

शेष संग्रह नम्बर ११.

धारा नगरीके राजा भोजके वंशके अर्जुनवर्मदेवका दानपत्र
अमेरिकन् ओरिएन्टल् सोसाइटी जेनरल ७ भागमें.

ॐ नमः पुरुषार्थचूडामणये धर्माय

प्रतिविम्बनिभाद्भूमेः कृत्वा साक्षात्परिग्रहम् जगदाह्लादयन्दिश्याद्द्विजेन्द्रो मङ्गलानि वः जीयात्परशुरामो ऽसौ क्षत्रैः क्षुण्णं रणाहतैः। संध्यार्कविम्बमेवोर्वीदातुर्यस्यैति

ताम्रताम् ॥ येन मन्दोदरीबाष्पवारिभिः शमितो मृधे । प्राणेश्वरीवियोगाग्निः स रामः श्रेयसे ऽस्तु वः॥ भीमेनापि धृतामूर्ध्नि यत्पादाः स युधिष्ठिरः। वंशाद्येनेन्दुना जीयात्स्वतुल्य इव निर्मितः॥ परमारकुलोत्तंसः कंसजिन्महिमा नृपः। श्री भोजदेव इत्यासीन्नासीराक्रान्तभूतलः॥ यद्यशश्चन्द्रिकोद्द्योते दिगुत्सङ्गतरङ्गिते। द्विषन्नृपयशःपुञ्ज पुण्डरीकैर्निमीलितम्॥ ततो ऽभूदुदयादित्यो नित्योत्साहैककौतुकी। असाधारणवीरश्रीरश्रीहेतुविरोधिनाम्॥ महाकलहकल्पान्ते यस्योद्दामभिराशुगैः। कति नोन्मूलितास्तुङ्गा भूभृतः कटकोल्वणाः॥ तस्माच्छिन्नद्विषन्मर्मा नरवर्मा नराधिपः। धर्माभ्युद्धरणे धीमानभूत्सीमा महीभुजाम्॥ प्रतिप्रभातं विप्रेभ्यो दत्तैर्ग्रामपदैः स्वयम्। अनेकपदतां निन्ये धर्मोयेनैकपादपि॥ तस्याजनि यशोवर्मा पुत्रः क्षत्रियशेखरः। तस्मादजयवर्माभूज्जयश्री विश्रुतः सुतः॥ तत्सूनुर्वीरमूर्धन्यो धन्योत्पत्तिरजायत। गुर्जरोच्छेदनिर्वन्धी विन्ध्यवर्मा महाभुजः॥ धारयोद्धृतया सार्धं दधातिस्म त्रिधारताम्। सांयुगीनस्य यस्यासिस्त्रातुं लोकत्रयीमिव॥ तस्यामुष्यायणः पुत्रः सुत्रामश्रीरथाशिपत्। भूपः सुभटवर्मेति धर्मे तिष्ठन्महीतलम्॥ यस्य ज्वलति दिग्जेतुः प्रताप स्तपनद्युतेः। दावाग्निच्छद्मनाद्यापि गर्जन्गुर्जरपत्तने॥ देवभूयं गते तस्मिन्नन्दनो ऽर्जुनभूपतिः। दोष्णा धत्ते ऽधुना धात्रीवलयं वलयं यथा॥ वाललीलाहवे यस्य जयसिंहे पलायिते। दिक्पालहासव्याजेन यशो दिक्षु विजृम्भितम्॥ काव्यगान्धर्वसर्वस्वनिधिना येन सांप्रतम्। भारावतरणं देव्याश्चक्रे पुस्तकवीणयोः॥ येन त्रिविधवीरेण त्रिधा पल्लवितं यशः। धवलत्वं दधुस्त्रीणि जगन्ति कथ मन्यथा॥ स एष नरनायकः सर्वाभ्युदयी पगाराप्रतिजागरणके नर्मदोत्तरकूले हथिणावरग्रामे पूर्वराजदत्तावशिष्ठायां भूमौ समस्तराजपुरुषान्ब्राह्मणोत्तरान्प्रतिनिवासिपट्टकिलजनपदादींश्च वोधयति— अस्तु वः संविदितम् यथा श्रीमदमरेश्वरतीर्थावस्थितैरस्माभिर्द्विसप्तत्यधिकद्वादशशतसंवत्सरे भाद्रपदपौर्णमास्यां चन्द्रोपरागपर्वणि रेवाकपिलयोः संगमे स्नात्वा भगवन्तं भवानीपतिमोंकारं लक्ष्मीपतिं चक्रस्वामिनं चाभ्यर्च्य संसारस्यासारतां दृष्ट्वा तथा हि-

वाताभ्रविभ्रममिदं वसुधाधिपत्यमापातमात्रमधुरो विषयोपभोगः। प्राणास्तृणाग्रजलविन्दुसमा नराणां धर्मः सखापरमहो परलोकयाने॥ इति सर्वं विमृश्यादृष्टफलमङ्गीकृत्य मुक्तावस्थूस्थानविनिर्गताय वाजसनेयशाखाध्यायिने काश्यपगोत्राय काश्यपावत्सारनैध्रुवेतित्रिप्रवराय आवसथिकदेह्लप्रपौत्राय पण्डितसोमदेवपौत्राय पण्डितजैत्रसिंहपुत्राय पुरोहितपण्डितश्रीगोविन्दशर्मणे ब्राह्मणाय भूमिरियं चतुः कण्टकविशुद्धा सवृक्षमालाकुला सहिरण्यभागभोगा सोपरिकर-

घट्टादायलवणादायेत्यादिसर्वादायसमेता सनिधिनिक्षेपा मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये चन्द्रार्कार्णवक्षितिसमकालं यावत्परया भक्त्या शासनेनोदकपूर्वं प्रदत्ता । तन्मत्वातन्निवासिपट्टकिलजनपदैर्यथादीयमानभागभोगकरहिरण्यादिकमाज्ञाविधेयैर्भूत्वा सर्वममुष्मै दातव्यम् । सामान्यं चैतत्पुण्यफलं बुद्ध्वास्मद्वंशजैरन्यैरपिभाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मादायोऽयमनुमन्तव्यः पालनीयश्च उक्तं च–
वहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधराम् । सविष्ठायां कृमिर्भूत्वा पितृभिः सह मज्जति ॥ सर्वानेवं भाविनः पार्थिवेन्द्रान्भूयो भूयो याचते रामभद्रः । सामान्योऽयं धर्मसेतुर्नराणां काले काले पालनीयो भवद्भिः ॥ इति कमलदलाम्बुबिन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितं च । सकलमिदमुदाहृतं च बुद्ध्वा नहि पुरुषैः परकीर्त्तियो विलोप्याः ॥ इति ॥ संवत् १२७२ भाद्रपद सुदि १५ बुधे दू श्रीमु । ३ रचितमिदं महासांधि ० राजासलखणसंमतेन राजगुरुणा मदनेन स्वहस्तोऽयं महाराजश्रीअर्जुनवर्मदेवस्य उत्कीर्णं प० वाप्पदेवेन.

त्रोटक छन्द,

जगतेश गये परलोक जवें ॥ नृप ठौर प्रताप सुताप तवें ॥
तिनकी वल विक्रम स्वल्प कथा ॥ दिव गौन कियो लिखवाय जथा ॥ १ ॥
उनके लघु उम्मर पुत्र बड़े ॥ नृप आसन राज नृपाल चढ़े ॥
वणहेड़ उमेद जु छीन लियो ॥ नृप लै रु यथा विधि न्याय कियो ॥ २ ॥
दश अट्ठक वत्सर आयु भये ॥ नृप राजड़ स्वर्ग पधार गये ॥
जिनके पितु भ्रात कथा सरसी ॥ नृप आसन बैठगये अरसी ॥ ३ ॥
इक कृत्रिम भूप वनाय लियो ॥ सिरदार कितेकन दुंद कियो ॥
गृह द्वेष विशेष हि नाथ मरे ॥ मरहट्ट मलार सु संधि करे ॥ ४ ॥
विष दैरु सलूंवर जोध हते ॥ मरहट्ट मिलावन हेत मते ॥
अरसी नृप घात विसास कियो ॥ भट राघवपै हठ चूक भयो ॥ ५ ॥
फिर मालव देश अवंति पुरी ॥ अरसी दल नौवत जाय घुरी ॥
भट ओघ सराहन जोग भये ॥ तरवारन वारन स्वर्ग गये ॥ ६ ॥
फिर माधवराव बड़े दलतें ॥ उदयापुर घेर लियो वलतें ॥
अरसी निज विक्रम खूव लरे ॥ नय दाम विचाररु संधि करे ॥ ७ ॥

छल रानहि तें सिरदार छली ॥ उपईश बनायरु फ़ौज मिली ॥
बहु बेर किये हमले अरसी ॥ अरि ताकत सेन सबें घरसी ॥ ८ ॥
अरसी निज बायव प्रांत दियो ॥ दल सेवनदे मरु भूप लियो ॥
निज भट्टन कट्टन रान चढे ॥ समरू हि भगायरु आप बढे ॥ ९ ॥
नृप बुन्दिय आयरु चूक कियो ॥ छल राव अजीत कलंक लियो ॥
अरसी परलोक प्रयान कथा ॥ फिर दक्षिण क्षत्रिय वंश जथा ॥१०॥
कुहलापुर आदिक वंश बधे ॥ तिन सेवक ग्वालियरादि सधे ॥
जिनके बल वंश बिचार कहे ॥ रजपूतनमें थल टौंक लहे ॥११॥

दोहा.

भरत धौलपुर युग्म भट जट्ट भूप बर जोर ॥
कही सकल तिनकी कथा प्रस्तर लेख बहोर ॥ १ ॥
आशय सजन रानको शासन फतमल सिद्ध ॥
किय श्यामल कविराजने शुद्ध प्रकर्ण प्रसिद्ध ॥ २ ॥

महाराणा अरिसिंह ३.
तेरहवां प्रकरण समाप्त.
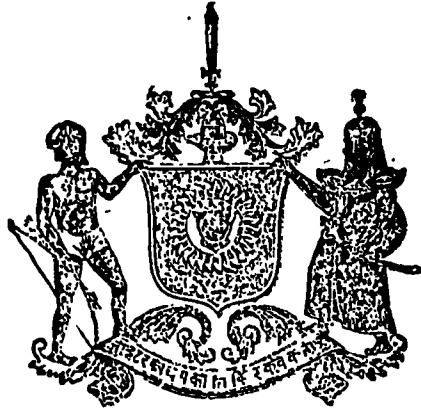
चौदहवां प्रकरण.

महाराणा दूसरे हमीरसिंह.

जब महाराणा अरिसिंह ३ अमरगढ़ मक़ामपर बूंदीके राव राजा अजीतसिंहके हाथ दग़ासे मारे गये, और इसकी ख़बर विक्रमी १८२९ चैत्र कृष्ण ३ [हि० ११८६ ता० १७ ज़िल्हिज = ई० १७७३ ता० ११ मार्च] को उदयपुरमें पहुंची, तो राजधानी में बड़ा भारी तहलका मचा, क्योंकि ऐसे जवान राजाका अपने पीछे सिर्फ़ दो बालक कुंवरोंको छोड़कर इस दुन्यासे उठजाना और मुल्कमें खानगी झगड़ोंका फैलना एक ऐसी हालत थी, कि चाहे कैसा ही मज्बूत दिल आदमी क्यों न हो, सिवा अफ्सोस व रंजके और क्या कर सक्ता था! लेकिन् इस वक्त कई अच्छे और खैरख्वाह लोगोंने महाराणाके बड़े बेटे हमीरसिंहको गद्दीपर बिठाया; और कुल सर्दार, उमराव व पासबानों वगैरह ने, जो उस समय मौजूद थे, नज्रें दिखलाईं. इसके बाद प्रधान ठाकुर अमरचन्द सनाढ्य, बछावत महता अगरचन्द, भटनागर कायस्थ जशवन्तराय, व बौल्या एकलिंगदास वगैरह अहलकारोंने महाराज बाघसिंह और महाराज अर्जुनसिंहसे कहा, कि "इस समय आप दोनों सर्दार महाराणाके बुजुर्ग हैं, इसलिये रियासतका कार बार आपको

संभालना चाहिये." इन दोनों सर्दारोंने सच्चे दिलसे जवाब दिया, कि "अगर्चि महाराणा बालक हैं, लेकिन् हमारे मालिक और हम इनके नौकर हैं, जहांतक हमसे होसकेगा, अपनी तरफ़से खैरख्वाहीमें किसी तरह की कमी न करेंगे."

प्रधान अमरचन्द सनाढ्य कुछ दिनतक, तो बड़ी तनदिहीसे काम अंजाम देता रहा, लेकिन् मालिककी कम उम्रीसे रियासतकी मुख़्तारी औरतोंके हाथमें जा पड़नेके सबब बाईजीराज सर्दारकुंवर और उनकी दासियोंका हुक्म इतना तेज़ हुआ, कि उक्त दासियोंमेंसे बाई रामप्यारी, जो बहुत ज़बान दराज़ थी, एक दिन अमरचन्दसे बड़ी गुस्ताख़ीके साथ पेश आई, इसपर उस प्रधानने, जिसके मिज़ाज में खुदमुख़्तारी समाई हुई थी; रामप्यारीको सख़्त सुस्त कहकर ललकारा. रामप्यारीने बाईजीराजसे अमरचन्दकी बहुत कुछ शिकायत की; उन्होंने उसके कहनेपर अमल करके प्रधानको क़ैद करनेके लिये अपने आदमियोंको भेज दिया. अमरचन्द भी खैरख्वाहीके नशेमें चूर था, उसने अपने घरका कुल ज़ेवर व अस्बाब छकड़ों व हम्मालों के सिरपर रखवाकर ज़नानी ड्योढ़ीपर भेज दिया. यह खैरख्वाही देखकर बाईजीराजको बड़ा पछतावा हुआ, और उन्होंने वह सामान उसे वापस देना चाहा, लेकिन् उसने एक जोड़ी मामूली कपड़ोंके सिवा कुछ भी न लिया. मश्हूर है, कि यह शुभचिन्तक प्रधान ज़हरसे मरवाडाला गया; जब यह मरा, तो उसके घरमें कफ़न भी न निकला; उसकी उत्तर क्रिया सर्कारसे कराई गई. उक्त प्रधानके कोई ख़ास औलाद नहीं थी, लेकिन् उसके भाइयोंकी सन्तान अबतक इस राज्यमें मौजूद है, जिनका ज़िक्र किसी मौक़ेपर किया जावेगा.

इस खैरख्वाह प्रधानके मरनेसे रियासतको बहुत नुक्सान पहुंचा, यहां हम एक प्रसिद्ध कहावतका पद्य लिखते हैं:-

दोहा.

नहिं पति बहु पति निबल पति शिशु पति पतनी नार ॥
नरपुरकी तो क्या चली सुरपुर होत उजार ॥ १ ॥

उस वक्त उदयपुरकी जैसी कुछ हालत थी, इस दोहेके अर्थसे समझ लेना चाहिये. अब दूसरा हाल सुनिये, कि महाराणा अरिसिंहने मुल्ककी हिफ़ाज़तके वास्ते, जो सिंधी सिपाहियोंकी एक बड़ी फ़ौज नौकर रक्खी थी, उसने तन्ख्वाह न मिलनेके सबब महलोंमें धरना दिया. इस समय रियासतका ख़ज़ानह ख़ाली था,

राज्यके ख़ैरख़्वाह लोगोंको यह दशा देखकर बड़ा विचार पैदा हुआ. महाराज बाघसिंह, महाराज अर्जुनसिंह, महाराज गुमानसिंह व चहुवान चतरसिंह वग़ैरह सर्दार ज़नानी ड्योढ़ीपर शस्त्र बांधकर आजमे. चालीस दिनतक यह फ़साद रहा; आख़िरकार बाईजीराजने महता लक्ष्मीचन्दको भेजकर कुरावड़से रावत् अर्जुनसिंह को बुलाया, जिसने सिंधी सिपाहियोंको बहुत कुछ समझा बुझाकर कहा, कि "ख़ज़ानह में रुपया मौजूद नहीं है, इलाक़हमेंसे जमा करनेपर मिलसक्ता है, इसलिये हम और तुम सब मिलकर मेवाड़में चलें और रुपया एकट्ठा करें; उन रुपयोंसे तुह्मारी तन्ख़्वाह चुका दी जायेगी." सिंधियोंने उक्त रावत्से कहा, कि "हमको एतिबारके लाइक़ एक ओल (१) देना चाहिये." यह बात सुनकर बाईजीराजको बड़ा अफ्सोस हुआ, और सोचने लगीं, कि अब किसको सौंपें! उस वक्त महाराणाके छोटे भाई भीमसिंह, जिनकी उम्र ६ वर्षकी थी, बोल उठे, कि "मुझे भेज दीजिये." बाईजीराजको अपने बच्चेकी यह हिम्मत देखकर आश्चर्य हुआ, और उसे प्यार करके सिंधियोंके हवाले करदिया. रावत् अर्जुनसिंह दस हज़ार सिंधियोंकी फ़ौज समेत भीमसिंहके साथ होकर उदयपुरसे इलाक़हकी तरफ़ रवानह हुए. ये लोग चित्तौड़के क़रीब पहुंचे थे, कि माधवराव सेंधियाका जमाई बैरजी ताकपीर चित्तौड़की तलहटीके क़स्बहको लूटनेके लिये आ पहुंचा. उस समय छः वर्षकी उम्र वाले महाराणाके छोटे भाईने अपने साथियोंसे कहा, कि "बड़े अफ्सोस और शर्मकी बात है, कि हमारी मौजूदगीमें चित्तौड़ लुटजावे और रियासतकी बदनामी हो." उस कम उम्र सर्दारके इस कलामका सिंधी सिपाहियोंके दिलपर इतना असर हुआ, कि उन लोगोंने जोशमें आकर बैरजीकी फ़ौजसे ख़ूब मुक़ाबलह किया. भीमविलास ग्रन्थमें लिखा है, कि सिंधियोंकी फ़ौजने, उस मरहटी फ़ौजको, जो पन्द्रह हज़ारसे कम न थी, शिकस्त देकर भगा दिया.

चित्तौड़का क़िलेदार सलूंबरका रावत् भीमसिंह महाराणाके भाई और सिंधियोंको क़िलेपर लेगया, जहां उसने तन्ख़्वाहके एवज़ सिंधियोंको बड़ी बड़ी जागीरें लिख-दीं; और दो वर्षतक क़िलेपर रहनेके बाद रावत् अर्जुनसिंह व महाराणाके भाई भीमसिंहको सलूंबरके रास्तेसे उदयपुरकी तरफ़ रवानह किया. अब रियासतकी हालत दिन दिन नाज़ुक होने लगी. बाईजीराजने भींडरके महाराज मुहकमसिंहको, जो कोटाके झाला ज़ालिमसिंहका दोस्त था, रियासतके कारोबारका मुख़्तार

---

(१) किसी मोतबर आदमीको रुपयेके एवज़ सुपुर्द करदेना.

बना दिया, लेकिन् यह बात सलूंबरके रावत् भीमसिंह व कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह वगैरह चूंडावतोंको बहुत नागुवार गुज़री; और सिंधियोंने भी अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करके महाराणाका हुक्म मानना छोड़ दिया, जिनको सनाढ्य अमरचन्द प्रधानने ख़ैरख़्वाह बनाया था. इसी अ़रसहमें बेगूंके रावत् दूसरे मेघसिंहने, जो उस वक्त रत्नसिंहका मददगार और महाराणासे बर्ख़िलाफ़ था, ख़ालिसेके चन्द पर्गनोंपर अपना अ़मल करलिया; तब उदयपुरसे माधवराव सेंधियाके पास मददके लिये मोतमिद भेजे गये, वह बर्सात ख़त्म होते ही एक बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ मेवाड़में आया (१), और भीलवाड़ा मक़ामसे बेगूंकी तरफ़ चला; लेकिन् बेगूंका मे मिजाज दाइमा ब्राह्मण कथा भट्ट फ़त्हराम माधवरावके पास, उसके बेगूं पहुंचनेसे पय्यारीने पहुंच गया था. यह शख़्स बहुत छोटे क़दका आदमी था, जब इसने कहनेपर दिया, तो माधवरावने कहा कि "आओ बावन;" उक्त ब्राह्मणने जवाब दि अमरचन्द "हां राजा बलि." इसपर सेंधियाने कहा, कि "मांग." उस ब्राह्मणने कहा, कि हम्मालों मुआ़मलह इनायत कीजिये." माधवरावने कहा, कि "अगर तुमको यह मीराजको तो महाराणा अरिसिंहके वक्त विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = ई० १७६ पने एक इक़ार मूजिब तुम्हारे ठिकानेदारसे, जो फ़ौज ख़र्चके रुपये दिलाये गये थे, वह अदा क चिन्तक इस ब्राह्मणने खुशीके साथ उन रुपयोंका अदा करना मंजूर करलिया; लेकिन् किला; मेघसिंहने घमंडके मारे इस बातसे बिल्कुल इन्कार किया, और कहा, कि "हम ब्रा किन् नहीं हैं, जो आशीर्वाद देकर अपना काम निकालें, हम राजपूत हैं; रुपयोंकी ऐसी बारूद, गोला और तलवारसे माधवरावका क़र्ज़ह अदा करेंगे." यह सुनकर उस मर सर्दारकी फ़ौजने बेगूंको घेर लिया, और छः महीनेतक (२) सख़्त लड़ाई होती र मगर माधवरावकी फ़ौजको काम्यावी न हुई. सेंधियाको इस छोटेसे क़िले और ठिकानेदारके क़ाबूमें न आने और अपना रोब उठजानेसे बड़ा अफ़्सोस हुआ. तब कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंहने मेघसिंहके पुत्र प्रतापसिंहको अपनी तरफ़ करलिया जो अपने बापसे बर्ख़िलाफ़ था. इस आपसके बखेड़ेसे लाचार होकर रावत् मेघसिंह माधवरावके पास चला आया, और फ़ौज ख़र्चके एवज़ ज़ेवर व नक्द वग़ैरह देनेके सिवा पर्गनह गिर्वी रखकर पीछा छुड़ाया. इसवक्त दो काग़ज़ इक़ारनामहके तौरपर लिखे गये थे, जिनकी नक़्लें जो हमको बेगूंसे मिलीं, नीचे दर्ज कीजाती हैं:-

---

(१) बाज़ लोगोंका क़ौल है, कि माधवराव ख़ुद नहीं आया था, उसने अपने सेनापतिको भेजदिया था, लेकिन् मैं (कविराज श्यामलदास) ने बेगूंके बुड्ढे आदमियोंकी ज़बानी जैसा सुना है, वैसा ही मूलमें लिखा है.

(२) बाज़ लोगोंका यह भी बयान है, कि तीन महीने लड़ाई रही.

कागज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

। सीधश्री सरबवोपमा लाईक राज श्री रावतजी सवाई मेगसीगजी जोग राज श्री सुबादार श्री मादोरावजी सीदेके बचना, इहाका स्माचार भलाहे तुमारा भला चाहीजे, अप्रंचः सरकारकी फोज सात मेवाड़ माय आकर बेगु मोरचा लगाओ, लड़ाई हुवी; सरब नजराणा त्था गोड़ा पड़े जीसका वा तोबषानाका षरचका ठाहारा रुपीया

९००००१ नजराणा त्था गोड़ापड़ेका वा तोफषानाका षरचका

६३००० दरबार षरच मसुदीयाका

९६३००१) जीस माये सरकार माये पहुचे रुपीआ ४८१२१७) जुमले चार लाष अकासी हजार दो सो सीतरा आगरागे रुपीआ बाकी तुमारे तरफ रुपीये रहे, ४७३७०४) जुमले आक चार लाष तोतर हजार सात स चार रुपीआ, जीसके करार बेमोजब भरोती हुवी नहीं; सब बङजीगके मुकाम माय सीरकारके एवजमे तपा सीगोली, तपा भीचोरके गाम बीगत सुमार रुः जुमल रुपे ६८३०२) अड़ट हजार तीन सो दोओ रुपा समत १८३१ का भुगाव बीगत रुपीये

३१४५१ तफा सीगोलीका

४१००	कस्बा सींगोली	१०००	गाम बाम्णहेड़ो
१०००	गाम अरणो	२०००	गाम घारडी
६००	गाम बरड़ावदो	१००	गाम कुवाड़ी
३०००	गाम पाछुदी	३१००	गाम धन गाव
१५००	गाम प — — ल	६००	गाम जामरणा
५००	गाम कछाला	८००	गाम सलोदो
५००	गाम अनेड़	४५०	गाम जसवतपरो
४००	गाम जेसीगपुरो	४००	गाम देवपरो पवाराको
२००	गाम सवलपुरो	३००	गाम मोषाचाङोस

१००	गाम गोईदपुरो
४००	गाम हरीपरो
५०	गाम पेड़ी
५००	गाम बोहोटो
२५०	गाम श्रेमपुरो
३५०	गाम पीपलीपेडो
२५०	गाम जोदा कुडल
३००	गाम वजेडो
२००	गाम पेड़ो मादावताको
	१८

४००	गाम तुरको
४००	गाम मसपुरो गोड़ाको
५००	गाम जराड़
३००	गाम कुवचा
३००	गाम लाडपरो सोलपरको
४००	गाम ताल
१००	गाम बुहाडा
१८००	गाम कदवास
३००	गाम पाटण
	१८

धरमा डोली २५००

३६५१ त्या भीचोरको

६५००	गाम भीचोर
१००	गाम पेमपुरो
१०००	गाम चावड़ो
२५००	गाम गुलावह
५००	गाम मोट्यारड़ो
७००	गाम मेघपुरो
१०००	गाम सेणा तलाई
२५०	गाम कालदा
५००	गाम मेघपुरा जोग गोतम
	९

२००	गाम नाल
५००	गाम गोपालपुरो
२०००	गाम धनोरो
२५००	गाम सरतलाई
६००	गाम गुलभरी
१५००	गाम मावुपुरो
१०००	गाम फतेपुर
६५००	गाम काटुदो
३०००	गाम थडोद
	९

तीमधे धरमादो डोली रुपग ३५००), वाद वाकी ३६८५१); ६८३०२) जुमले अड़सट हजार तीनसो दो रुपीश्रग, जीसमु वजा धरमादा व डोलीका रु० ६०००), बाकी रुपीश्रग ६२२०२) बासट हजार दोसो दो रुपग्पे, जमले गाम

सुमार चोपन तुमारे पाससे सीरकारमे लीये, जाहा सीरकारके कामदार रहेगे अमल करेगे. जमा बैठेगा जीस माय सरबदी तथा सवार पीयादा बगेरे खरच वजा होकर बाकी रहे सो एवज चार लाष त्र्यहतर हजार सात सो च्यार रुपीया सीरकार में तुमारे तरफ सु लषा हरजासमाय मडेगा, सीरकारके च्यार लाष त्र्यहतर हजार सात सो चार रुपीया गरोक जीसका बटती परगनाके चलप सु होवे; वुजा द्रसालका तक सीरकार के पुरे पड़े सीवाये सीरकार मुसु गाम छूटेगे न्ही; रुपीये पुरा पडे ताई गामासु कीसी बातसु षेचल करबा मती. भील भोम्या कोई षेचल करे, वुसका पारपतका फागण मती चेत सुदी १२ समत १८३१.

छाप.

दूसरे कागज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

श्री श्री श्री सरब ओपमा लाअेक राज श्री रावत सवाई मेगसीगजी जोग राज श्री सुबादारजी श्री मादोरावजी सीदेकी बचना, ईहाका स्माचार भला हे, तुमारा स्दा भला चाईजे, अप्रच।: ससथान वुदेपुररी मामलीती राणा श्री अडसीजी ईनोने संवत् १८२६ का सन सबेनके साल ठेराई, ओ वुस मामलीतीके एवजकी भरोती हुवी नही, सवब कालसा तथा पटाईतोके पटामाई चोथान सरकार माहे लेणा ठहेरा जीस वास्ते प्रगणे बेगुको चोथान सवत् १८३१ का सन षमस सुबेनके सालसु सरकार माहेलीआ. गाम शुमार ४८ अडतालीस जुमले तनषावु रुपीआ ४३१०० जुमले तआलीस हजार सो आकाबे तअग्लीस हजार, एकसो गाम वजा धरमादा व डोली रुपा ४१००, बाकी रुपा अडतीस हजार ३८०००

५१	कसबा निलीदेई	४००	गाम पाडावा
३००	मेणकेसर	३००	गाम जेतपुर दुजो कुसालजीको
१६००	गाम घामणचा	४००	गाम राजपुरा

५०० गाम नेराल
८०० गाम बील षेडो
१०० गाम मनोरपुरो
२५० गाम अणदपुरो भडगोताको
६०० गाम पीपराव
६०० गाम चलदु
४०० गाम अतवा
६०० गाम कस्तूपुरो
१४०० गाम अतवावडी
३०० गाम मुरोली
६००० गाम काटुदो
५०० गाम अलपुरो
७०० गाम बासोटो
१५०० गाम मेसरा
५०० गाव गुडो
३०० गाम तुबो
१२०० गाम मारणा
२०० गाम अणदपुरो
५०० गाम सालेरो
२०० गाम गाम गो
१२०० गाम गास्ता
११०० गाम जेतपर

१३२५० २४

७०० गाम हडमतो
३०० गाम अणदपुरो चवाणाको
४०० गाम डावड़ा
४०० गाम तीरोली
४०० गाम मोकमपर
४०० गाम छोटी डावडा
८०० गाम आमलदो
३१०० गाम वनोड़ो
३१०० गाम नदवास
२०० गाम देवसा
१५० गाम मादोपुरो मीडकी पावको
३०० गाम जाडोल
२५० गाम पेडो हाडाको
२०० गाम नीमोद
१५० गाम हरीपरो जोगाको
५०० गाम परकापेडी
५०० गाम देवपरो जोस्याको
१००० गाम वसी
२५० गाम सुवाणो
२६०० गाम आवल हेडो
५०० गाम पुरवापेडो

२४७५ २४

जुमले गाम सुमारी अडतालीस तनषा अडतीस हजार रुपे सीरकार मे माये लिये हैं, सो सीरकारके अमलदार रहे आल करेगे, ईनसो कोई बातका षरच क्रोगा मती. मामलतीका रुपीआ भर चुकेके उपरात गाम सीरकार मेयसु छुटेंगे भील मोगा कोई षेचल करे वुसका पारपत तुम करोगा. मती चेत सुद १२ समत १८३१.

छाप.

बेगूंके ठिकानेपर और भी मरहटोंने तबाहियां डाली थीं, जिनका ज़िक्र किसी मौक़ेपर कियाजावेगा. फिर बैरज़ी ताकपीर और आंबाजी एङ्गलियाने मेवाड़पर धावा किया, और इसी लूट खसोटकी हालतमें रियासतके अन्दर आपसकी ना-इत्तिफ़ाक़ियां बढ़ीं, जिससे दिन दिन मुल्ककी बर्बादी पेश आती थी. कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंहको, जो राजपूतानहमें बड़े आक़िल रईस और महाराणा अरिसिंह के स्वसुर थे, बाईजीराजने अपना मददगार बनानेके लिये काग़ज़ लिखा; जिसके जवाबमें बहादुरसिंहने उनकी बहुत कुछ तसल्ली की, और कहा कि, मैं अपने जान व मालसे मेवाड़के लिये हाज़िर हूं; और इसके साथही यह दर्ख्वास्त की, कि मेरी पोती, कुंवर विड़दसिंहकी बेटी अमरकुंवरकी शादी महाराणाके साथ हो. बाईजी-राजने इस दर्ख्वास्तको मंजूर किया, लेकिन् इन्हीं दिनोंमें हुल्करकी सर्कारने मेवाड़पर ज़ोर डाला, कि जिस तरह सेंधियाको फ़ौज ख़र्चके एवज़ इलाक़े गिर्वी दिये हैं, उनके हम भी हक़दार हैं, क्योंकि जो मुआमलह ठहरे, उसमें पेश्वा, हुल्कर और सेंधिया, तीनोंका हिस्सह बराबर होता है. इस बातपर सेंधियाने कुछ लिहाज़ न किया; और रिया-सत उदयपुर आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ी, तथा महाराणाकी कम उम्रीसे इस वक़्त बिल्कुल कमज़ोर होरही थी, ऐसा कोई नहीं था, कि हुल्करको वाजिबी जवाब देता. आख़िरकार लाचार होकर विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में अहल्या बाईको नींबाहेड़ेका पर्गनह देना पड़ा.

इसी अरसहमें कृष्णगढ़के महाराजा बहादुरसिंहने अपनी पोतीके विवाहका लग्नपत्र भेजा. बाईजीराजने अपने बेटेकी बरातके लिये फ़ौजका बन्दोबस्त किया (१). और उदयपुरमें राज्य प्रबन्धके लिये देलवाड़ेका राज सज्जा, कोठारियाका रावत् विजयसिंह, व महाराज बाबा बाघसिंह रक्खेजाकर बरातमें महाराणाके साथ उनके छोटे भाई भीमसिंह, व बाबा महाराज अर्जुनसिंह, बीजोलियाका राव शुभकरण, भैंसरोड़का रावत् मानसिंह, कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह अपने बेटे जगत्सिंह समेत, महाराज अनोपसिंह, जहाज़पुरका राणावत बाबा भोपतसिंह खुमाणसिंहोत, चूंडावत कृष्णावत रावत् सर्दारसिंह, आरज्याका बाबा पद्मसिंह पूरावत, थांवलाका चहुवान कुशलसिंह, सनवाड़का बाबा जैतसिंह राणावत, बनेड़्याका चहुवान चतुरसिंह, पुरोहित नन्दराम, साह किशोरदास देपुरा, अगरचन्दका बेटा महता देवीचन्द मए मांडलगढ़की जमइयतके, धायभाई

---

(१) कुम्भलमेरपर रत्नसिंहका फ़ुतूर बाक़ी था, और सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे बाईजीराजको यह डर था, कि कोई ग़नीमको लाकर रास्तेमें मेरे बेटेपर हमलह न करे.

कीका, चारण पन्ना आढ़ा, जमादार सादिक़, और जमादार चन्दर, वगैरह सर्दार अपनी अपनी जमइयतों समेत गये. उदयपुरसे रवानह होकर महाराणा शाहपुरे पहुंचे. शाहपुरेके राजा भीमसिंहने पेश्वाई वगैरह अदब आदाबसे पेश आकर फ़ौज समेत महाराणाकी बहुत कुछ मिह्मानी व ख़ातिरदारी की.

महाराणाने शाहपुरेसे राजा भीमसिंहको भी साथ लेलिया; जब कृष्णगढ़ पहुंचे, तो महाराजा बहादुरसिंह साढ़ेचार कोसतक पेश्वाईको आया. विक्रमी १८३३ माघ कृष्ण १२ [हि० ११९० ता० २५ ज़िल्हिज = ई० १७७७ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को विवाह होचुकने बाद (१), महाराजा बहादुरसिंहने मिह्मानी व दहेज़ वगैरह बहुत अच्छी तरह देकर महाराणाको विदा किया, और अपने कुंवर बिड़दसिंहको दो हज़ार फ़ौज सहित उनके साथ भेजा. महाराणाने नाहरमगरा मक़ामपर पहुंचकर बिड़दसिंहको विदा किया; और इसी जगह सलूंबरका रावत् भीमसिंह नीचे लिखे हुए सर्दार पासवानों समेत महाराणाकी ख़िद्मतमें हाज़िर हुआः–

सादड़ीका राज सुल्तानसिंह झाला, बेदलाका राव प्रतापसिंह चहुवान, बेगूंका रावत् मेघसिंह चूंडावत मेघावत, कान्हौड़का रावत् जगत्सिंह सारंगदेवोत, आमेटका रावत् प्रतापसिंह चूंडावत जगावत, बागौरका महाराज बाबा भीमसिंह, बनेड़ाका राजा हमीरसिंह, महुवाका बाबा सूरतसिंह राणावत, हमीरगढ़का रावत् धीरतसिंह राणावत, साह नन्दलाल देपुरा, साह मौजीराम बोल्या, साह एकलिंगदास बोल्या साह विजयसिंह नाणावटी वगैरह.

नाहरमगरेसे महाराणा उदयपुर आये, और विवाहकी रीति पूरी होचुकने बाद उसी फ़ौजके साथ नाथद्वारे होकर कुम्भलमेर ख़ाली करानेके इरादेसे आगे बढ़े; लेकिन् रावत् राघवदास देवगढ़से एक बड़ी जमइयत लेकर रत्नसिंहकी मददको आता था, रास्तेमें रींछेड़ गांवके पास महाराणाकी फ़ौजसे उसका मुक़ाबलह हुआ, परन्तु वह भागकर सहीह सलामत कुंभलमेर पहुंच गया, इसलिये महाराणा चतुर्भुजनाथके दर्शन करके उदयपुर लौट आये, और कुल सर्दारोंको अपनी अपनी जागीरोंपर जानेकी रुख़्सत दी. विक्रमी १८३४ मार्गशीर्ष [हि० ११९१ ज़िल्क़ाद = ई० १७७७ डिसेम्बर] का ज़िक्र है, कि महाराणा शिकारको गये थे, एक हिरनपर गोली चलाते वक़ बन्दूक़ फटकर उसके टुकड़ेसे उनके हाथका

(१) कृष्णगढ़के प्रधान महता सौभाग्यसिंहने कृष्णगढ़के राज्यवंशका जो एक नक्शह हमारे पास भेजा है, उसमें इस शादीका माघ कृष्ण ३ को होना लिखा है, लेकिन् हमने "भीमविलास" ग्रन्थके लिखे अनुसार, जो महाराणा भीमसिंहके हुक्मसे तय्यार हुआ था, द्वादशी लिखा है.

मांभा (१) बिखर गया, जिसका इलाज जर्राहों वग़ैरहने बहुत कुछ किया, लेकिन् दर्द दिन दिन बढ़ता गया. आख़िरकार विक्रमी पौष शुक्ल ८ [हि० ता० ७ ज़िल्हिज = .ई० १७७८ ता० ६ जैन्युअरी] को महाराणा हमीरसिंहका देहान्त होगया. इनके साथ तीन ख़वास याने पासबान सती हुईं. इन महाराणाके इन्तिक़ालकी बाबत यह भी मश्हूर है, कि उन्होंने आम लोगोंके साम्हने यह कहदिया था, कि जितने हरामख़ोर हैं, उन सबसे मैं बदख़्वाहीका एवज़ लूंगा. इस सबबसे उस घावपर ज़हरकी पट्टी चढ़वा दीगई; और उसी ज़हरसे उनका इन्तिक़ाल होगया. बाज़का क़ौल है, कि सांठेके गट्टोंमें ज़हर खिलाया गया. इनकी पैदाइश का महीना व तिथि तो सहीह है, लेकिन् संवत्में सन्देह मालूम होता है; हमारे क़ियाससे विक्रमी १८१८ ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० ११७४ ता० १० ज़िल्क़ाद = .ई० १७६१ ता० १३ जून] को महाराणी सर्दारकुंवरसे इनका पैदा होना मालूम होता है. इनका रंग गेहुवां, क़द मझोला, आंखें बड़ी और पेशानी चौड़ी थी. चिह्रा हंसीला व ख़ूबसूरत था, आदतमें फ़य्याज़ी और ग़ुस्सह था, तबीअत साफ़ और बहादुरीसे ख़ाली न थी.

दोहा.

अरसी नृप परलोक पद। मिहर प्रकाश हमीर ॥
अमरचन्दको मृत्यु जो। स्वामि भक्त बड़ धीर ॥ १ ॥
बेघम पैं मरहट्ट दल। दंड द्रव्य तैं दैन ॥
महि बिभागकर मेघतैं। निज दल गिरवी लैन ॥ २ ॥
निम्बाहेड़ा प्रांत इक। हुलकरको लिख दीन ॥
फिर हमीर नृप कृष्णगढ़। किल बिवाह निज कीन ॥ ३ ॥
फिर कुंभलगढ़ पै हला। कर आए निज गेह ॥
भावी प्रबल हमीरने। कियो जु त्यागन देह ॥ ४ ॥
सज्जन आशय तैं फतै। शासन मनको मंड ॥
कविराजा श्यामल कियो। मंडन पूरन खंड ॥ ५ ॥

(१) हाथके अंगूठे और तर्जनीके बीच वाली चमड़ेकी सीवनको " मांझा " बोलते हैं, जिसे उर्दू ज़बानमें " घाई " कहते हैं.

महाराणा हमीरसिंह २.
चौदहवां प्रकरण समाप्त.
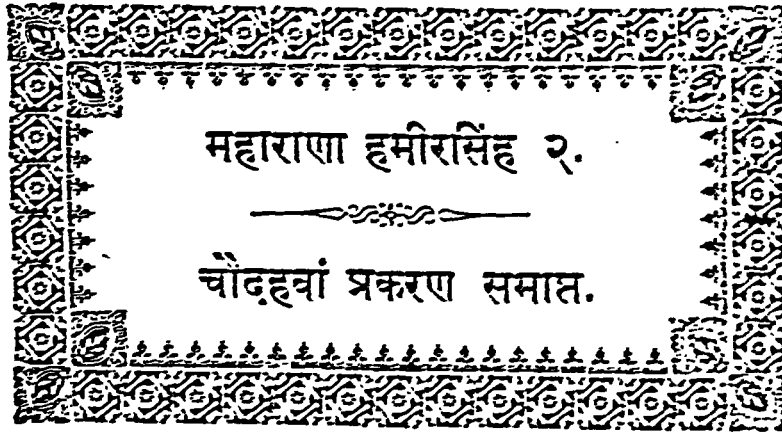
पन्द्रहवां प्रकरण.

महाराणा दूसरे भीमसिंह.

महाराणा हमीरसिंहका ऐसी छोटी उम्रमें, कि जो ऐन जवानीका शुरू था, इन्तिक़ाल होजानेसे बाईज़ीराज सर्दारकुंवरको बहुत रंज हुआ; क्योंकि अव्वल तो वह अपने पति महाराणा अरिसिंहके ही रंजमें डूबी हुई थीं, जो कुछ कम चार वर्ष पहिले दग़ासे मारेगये, दूसरे इस वक्त उन्हें अपने प्यारे बेटेकी असह दुःख पैदा करनेवाली मौतका सद्मह उठाना पड़ा, कि जिसने उनके दिलमें राज्यके बखेड़ोंसे दिली नफ़्रत पैदा की. हाज़िरीन लोगोंने हमीरसिंहकी जगह उनके छोटे भाई भीमसिंहको गद्दीपर बिठाना चाहा, तब बाईजीराजने साफ़ इन्कार करदिया, और कहा, कि मैं अपने इकलौते बच्चेके लिये ऐसा राज्य नहीं चाहती, जिसमें उसकी जानका ख़तरह हो; मैं अपना ग़रीब हालतमें रहना और अपने बेटेको देखकर बाक़ी ज़िन्दगी पूरी करना पसन्द करती हूं. इसपर उन लोगोंने अर्ज़ किया, कि राज्यका दावा छोड़कर आप अपने बेटेको और भी ज़ियादह ख़तरेमें डालेंगी, क्योंकि अगर ऐसी हालतमें रत्नसिंह मेवाड़का मालिक बनगया, तो कब आपके बच्चेको ज़िन्दह छोड़ेगा ! इस तरहकी बातोंके सुननेसे बाईजीराजने लाचार भीमसिंहको गद्दीपर बिठाना कुबूल किया.

विक्रमी १८३४ पौष शुक्ल ९ [हि० ११९१ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १७७८ ता० ७ जैन्युअरी] को महाराणा भीमसिंह नौ वर्ष साढ़े नौ महीनेकी उम्रमें गद्दीपर

बिठाये गये; सात घड़ी रात गये पुरोहित रामराय, एकलिंगदास बौल्या, महाराज बाघसिंह, महाराज अर्जुनसिंह, महाराज अनोपसिंह, देलवाड़ेके राज सज्जा, कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह, सनवाड़के बाबा जैतसिंह, भदेसरके रावत् सर्दारसिंह, चारण पन्ना आढ़ा, धायभाई रूपा, व धायभाई कीका वगैरह सर्दार तथा पासबानोंने नज़्रें दीं. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] से इस वक़्तक अठ्ठाईस लाख पचास हज़ार सालियानहकी आमदनीका मुल्क (१) मेवाड़से निकल गया.

और महाराणा भीमसिंहके गद्दीपर बैठनेके वक़्से चालीस वर्षतक मरहटोंने और भी रहा सहा इस मुल्कको बर्बाद किया, अगर्चि मुसल्मान बादशाह मेवाड़के दिली दुश्मन थे, लेकिन् वे बादशाहतके तरीक़ेपर हुकूमत करनेके सबब इन्साफ़के भी पाबन्द थे; ये मरहटे लोग, जिनको लूटनेके सिवा और कोई तरीक़ा पसन्द न था, मेवाड़को बर्बाद करनेके लिये एक सख़्त बला थे. कर्नेल टॉडके लेखसे मरहटोंने १८१००००० रुपयेके अनुमान इस मुल्कसे वुसूल किया (२). अगर मुल्ककी बर्बादी न होती और बहुतसे ज़िले इस रियासतसे अलहदह न निकल जाते, तो यह रक़म अदा हो सक्ती थी, लेकिन् उन लुटेरे ग़नीमोंने दौलत व मुल्क लूटनेके अलावह सख़्त ख़ूरेज़ियां भी कीं.

महाराणा भीमसिंहके शुरू अह्दमें मुख़ालिफ़ सर्दारोंने रत्नसिंहका साथ छोड़दिया, तब महाराणा विक्रमी १८३८ चैत्र कृष्ण १३ [हि० ११९६ ता० २६ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १७८२ ता० ११ मार्च] को रवानह होकर देवगढ़से रावत् राघवदासको लेआये, जो रत्नसिंहका बड़ा एतिबारी सर्दार था. इसी वर्षमें सलूंबरके रावत् भीमसिंहने अपनी चार बेटियोंका विवाह किया, जिनमेंसे एकका बीकानेरके महाराजा गजसिंहके बड़े कुंवर राजसिंहके साथ, दूसरीका ईडरके महाराज शिवसिंहके कुंवर भवानीसिंहके साथ, तीसरीका रतलामके राजा पद्मसिंहके कुंवर प्रतापसिंहके साथ, और चौथीका देलवाड़ाके राज सज्जाके पुत्र कल्याणसिंहके साथ.

---

(१) विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] में रामपुरा और भानपुरा ९००००० का, विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = .ई० १७६९] में जावद, जीरण, नीमच, और नीबाहेड़ा ४५०००० के, विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = .ई० १७७४] में रत्नगढ़ खेड़ी, सींगोली, अरण्या, जाठ, व नन्दवाय वग़ैरह ६००००० के, और इसी वर्षमें गोड़वाड़ ९००००० का, जुम्लह २८५०००० . यह नोट कर्नेल टॉडकी किताबसे नक़्ल किया गया है.

(२) विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] में ६६०००००, विक्रमी १८२० [हि० ११७७ = .ई० १७६३] में ५१०००००, जुम्ले ११७०००००, हुल्करने और विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = .ई० १७६९] में ६४०००००, माधवराव सेंधियाने, कुल १८१०००००, रुपया वुसूल किया.

रावत् भीमसिंहने महाराणाको भी इस शादीमें मिह्मान किया था. मश्हूर है, कि इन शादियोंमें रावत् भीमसिंहने दस लाख रुपया ख़र्च किया, और चारण भाट वग़ैरह लोगों को छः महीनेतक बराबर त्याग बांटा, जो कोई शख़्स इस उम्मेदसे उक्त रावत्के पास आया, उसे इन्कार नहीं किया गया. कहते हैं कि, एक भाट मटकेमें बहुतसे मेंडक भरलाया था, उन सबका भी रावत् भीमसिंहने त्याग चुकाया. जब महाराणा सलूंबरसे उदयपुरको आये, तो उस वक़् आमेटका रावत् प्रतापसिंह व कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह दोनों महाराणाके बड़े एतिबारी मुसाहिब थे.

विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = .ई० १७८३] में रावत् अर्जुनसिंह महाराणाकी तरफ़से भींडरके महाराज मुह्कमसिंहपर फ़ौज लेगया, और भींडरको जाघेरा. रावत् लालसिंह शक्तावतका बेटा संग्रामसिंह, जो इन दिनोंमें नामवर गिना जाता था, और जिसने सर्दारगढ़, याने लावाका क़िला डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहके बेटे सावन्तसिंहसे छीन लिया था, भींडरका मददगार होकर अर्जुनसिंहकी जागीर (कुरावड़) पर हमलह करने लगा. एक दफ़ा जब कि वह मवेशी घेरकर लिये जाता था, अर्जुनसिंहका बेटा ज़ालिमसिंह आ पहुंचा, जिसको उसने बर्छेसे मारडाला. यह ख़बर सुनकर अर्जुनसिंहने अपने सिरसे पघड़ी उतारकर फैंटा बांधलिया, कि बेटेका एवज़ लेने बाद पघड़ी सिरपर रक्खूंगा; और भींडरसे मोर्चे उठाकर कुरावड़ चला गया. इस वक़्से चूंडावतों और शक्तावतोंके दर्मियान अदावत ज़ियादह बढ़ी, यहांतक, कि एक दूसरेकी जान लेनेको मुस्तइद होगये.

महाराणा भीमसिंहका पहिला सम्बन्ध ईडरके राजा शिवसिंहकी बेटी अक्षयकुंवरसे हुआ था. जब इस विवाहकी तय्यारी होने लगी, तो कोटेसे झाला ज़ालिमसिंहने मामाके रिश्तेसे नीचे लिखा हुआ सामान देकर गेंताके हाड़ा नाथसिंह और कनाड़ीके झाला भवानीसिंहको उदयपुर भेजाः–

हीरेकी पहुंची जोड़ी १, मोतियोंकी माला १, ढाल १ सिलहट, सोनेके साज़की तलवार १, कटारी १ सोनेके सामान सहित, महाराणाको उनके कुटम्बियों सहित सरोपाव और घोड़े मए ज़ेवरके; ये तमाम चीज़ें नज़के तौर पेश की गईं.

महाराणाने उदयपुरसे रवानह होकर पहिला मक़ाम तीतरड़ी गांवमें किया; बरात में कोटेके दोनों सर्दार मए १००० आदमियोंके व देवगढ़का रावत् राघवदास, आमेटका रावत् प्रतापसिंह, बाबा महाराज अर्जुनसिंह, और कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह साथ थे. इसी मक़ामपर रावत् अर्जुनसिंह अव्वल दरजेके उमरावोंमें पारसोलीकी बैठकपर बिठाया गया. यहांसे रवानह होकर बड़गांवमें मक़ाम हुआ, जहां ईडरके

राजा शिवसिंहका वलीअहद भवानीसिंह पेशवाईको आया. यहांसे रवाना होने बाद डूंगरपुरके नज़्दीक वहांके रावल शिवसिंह दो हज़ार आदमियों समेत महाराणाकी बरातमें शामिल हुए. ईडरसे चार कोसतक राजा शिवसिंह पेश्वाईको आये. विक्रमी १८४१ ज्येष्ठ कृष्ण ११ [हि० ११९८ ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० १७८४ ता० १५ मई] को महाराणाने ईडर पहुंचकर बड़ी धूम धामसे विवाह किया, और राजा शिवसिंहको अपनी गद्दीपर साम्हने बैठनेकी इजाज़त दी. महाराणा भीमसिंह ईडरसे लौटकर देव गदाधर (प्रसिद्ध सांवलाजी) के दर्शन करके डूंगरपुर पहुंचे. रावल शिवसिंहने नज़, निछावर व पगमंडे वगैरह सब दस्तूर अदा करके बहुत अच्छी तरह मिह्मानी की. फिर वहांसे विदा होकर महाराणा उदयपुर आये.

इन दिनोंमें रावत् अर्जुनसिंह वगैरह मुसाहिबोंने महाराणाको अपने क़ाबूमें करलिया. जब कभी खर्चके लिये रुपया दर्कार होता, वे लोग ख़ाली जवाब देदेते; एक दिन बाईजीराजने इन मुसाहिबोंसे कहलाया, कि महाराणाके जन्मोत्सवका जल्सा क़रीब आता है, इसलिये रुपयोंका बन्दोबस्त करना चाहिये; इन लोगोंने अपनी आदतके मुवाफ़िक़ इस मौक़ेपर भी ख़ाली जवाब दिया, जिसपर बाईजीराजको बहुत गुस्सह आया. ज़नानी ड्योढ़ीके नौकरोंमेंसे सोमचन्द नामी एक गांधी महाजन था, उसने बाई रामप्यारीसे कहा, कि बाईजीराजको रावत् अर्जुनसिंह बड़े कारगुज़ार मालूम होते हैं, अगर मुझको प्रधानेका सिरोपाव बख़्शें, और महाराज अर्जुनसिंहको मेरे साथ मकानपर भेजदें, तो फ़ौरन् रुपयोंका बन्दोबस्त होजायेगा. रामप्यारीकी सलाहसे यह बात मन्ज़ूर होकर सोमचन्द प्रधान बना दिया गया. यह बड़ा अक़्मन्द और होश्यार अह्लकार था, इसने चूंडावतोंके मुख़ालिफ़ोंको अपना दोस्त बनाया और कुछ रुपया एकट्ठा करके बाईजीराजके पास भेजदिया. यह बात सुनकर रावत् अर्जुनसिंह, रावत् प्रतापसिंह व भीमसिंह वगैरह सर्दार बहुत हंसे, और जिसको सोमचन्दका दोस्त जाना, उसीको नुक़्सान पहुंचाने लगे. सोमचन्दने अक़्लमन्दीसे सबके साथ मुहब्बत बढ़ाई, इससे उसका गिरोह बढ़गया. इस नये प्रधानने कोटाके झाला ज़ालिमसिंहको भी अपना दोस्त बनालिया, जो चूंडावतोंका दिली दुश्मन था; उसकी रायपर विक्रमी १८४२ फाल्गुन [illegible] ता० २ जमादियुल अव्वल = ई० १७८६ ता० ३ मार्च] को [illegible] राणाने उद[illegible] की सलाहसे यह बात क़रार पाई, कि महाराणा भींडर जाकर [illegible] दोनों सर्दार लेआवें, जो बीस वर्षसे महाराणाके विरुद्ध कार्रवाई करता था. महा[illegible] पसिंह, बा[illegible] होकर भींडर पहुंचे; उसी दिन झाला ज़ालिमसिंह भी पांच हज़[illegible] मपर [illegible] मेत वहां हाज़िर होगया, और मुहकमसिंहको साथ लेकर ज़ालिमसिंह सहित महाराणा उदयपुर

आये. चूंडावत सर्दार, जो इस नये प्रधानकी हंसी उड़ाते थे, बिल्कुल फीके पड़गये.

इन्हीं दिनोंमें, याने विक्रमी १८४२ चैत्र कृष्ण ९ [हि० १२०० ता० २३ जमादियुल्-अव्वल = ई० १७८६ ता० २४ मार्च] को महाराणी भटियाणीके गर्भसे एक पुत्र पैदा हुआ, जिसकी खुशीमें बड़ा भारी जल्सह किया गया, और उसी उत्सवपर चारण आढ़ा दूलहसिंह को हाथी व गांव वगैरह लाख पशाव; चारण आसिया जशवन्तसिंहको घोड़ा, सिरोपाव और गांव; कृष्णगढ़के चारण बारहट शिवदानको घोड़ा व सिरोपाव; बारहट भोपसिंहको घोड़ा व सिरोपाव; और बारहट रत्नसिंहको घोड़ा वगैरह बख़्शे जानेके सिवा और भी बहुतसे सर्दारों व चारणों तथा पासवानोंको घोड़े व सिरोपाव वगैरह इन्आममें दिये गये.

विक्रमी १८४३ वैशाख शुक्ल ७ [हि० १२०० ता० ६ रजब = ई० १७८६ ता० ४ मई] को ईडरकी महाराणी अक्षयकुंवरके गर्भसे एक राजकुमारी और विक्रमी १८४४ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२०१ ता० २४ ज़िल्काद = ई० १७८७ ता० ७ सेप्टेम्बर] को एक राजकुमारका जन्म हुआ, जिसपर चारण बारहट खूबचन्दको हाथी, सिरोपाव व सिरशोभा; बारहट शिवदानको घोड़ा, सिरोपाव और गांव; बारहट भोपसिंहको घोड़ा, सिरोपाव तथा गांव, और आसिया जशवन्तसिंहको घोड़ा, सिरोपाव व गांव वगैरह बख़्शे गये और इसी तरह दूसरे लोगोंने भी हस्ब हैसियत घोड़े, सिरोपाव वगैरह इन्आम इक्राम हासिल किया.

माधवराव सेंधिया व आंबा एंगलियाको सोमचन्दने अपना मददगार बना लिया, जो ज़ालिमसिंहका दोस्त था, परन्तु महाराणाका यह हाल था, कि वह अपनी युवावस्थाके कारण न तो एक जगह ठहरते और न किसीकी बातपर ख़याल करते थे; इसलिये कृष्णगढ़के महाराजा बिड़दसिंहके पाससे चारण बारहट शिवदानको बुलवाया, जिसकी यह खूबी थी, कि अगर किसी सभामें बहुतसे आदमी बैठे होते, और वहांपर वह कोई प्रसंग छेड़ देता, तो सब लोग उसीकी तरफ़ मुतवज्जिह होजाते थे. महाराणाके दिलपर उस कवीश्वरकी बातोंने ऐसा असर किया, कि वह एक जगह बैठकर दो दो पहरतक उसकी बातें सुनने लगे. इस बुद्धिमान बारहटकी उपयोगी बातें सुननेसे महाराणाको रियासती कार्रवाईके ढंग और कई पोलिटिकल मुआमलातमें बहुत कुछ वाक़फ़ियत होगई, जिससे सोमचन्दका भी हौसला ज़ियादह बढ़गया. झाला ज़ालिमसिंह तो इस वक्त कोटे चला गया, लेकिन् प्रधान सोमचन्द व महाराज मुह्कमसिंह वगैरहकी एक सम्मति होकर यह क़रार पाया, कि मेवाड़के ज़िले, जो मरहटोंने दबालिये हैं, शम्शेरके ज़रीएसे छीन लेना चाहिये; लेकिन् ऐसे मौक़ेपर चूंडावतोंको भी शामिल करलेना बिह्तर है, कि जिससे आपसमें बखेड़ा

पैदा न हो. यह सलाह ठहरने बाद बाई रामप्यारीकी मारिफ़त रावत् भीमसिंहको तसल्ली देकर सलूंबरसे बुलाया; लेकिन् उसको एतिबार न था, इसलिये आमेटके रावत् प्रतापसिंह, कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह, भदेसरके रावत् सर्दारसिंह और हमीरगढ़के रावत् धीरतसिंहको साथ लेकर उदयपुर आया, और शहरके बाहर कृष्णविलासमें डेरा किया. इस अरसेमें ज़ालिमसिंहका भेजा हुआ, भींडरका महाराज मुह्कमसिंह भी कोटेसे पांच हज़ार सवारोंकी जमइयत लेकर आ पहुंचा; जिसमें कनाड़ीका राज भवानीसिंह झाला, कोयलाका आप सूरजमल्ल हाड़ा, फलायताका आप अमरसिंह हाड़ा, अंताका नाथसिंह हाड़ा और जयसिंह हाड़ा, ऊमरी भदौराका सीसोदिया सोहनसिंह रंगरावत और दयानाथ बख़्शी वगैरह मुख़्तार थे. जोकि इस फ़ौजका डेरा चंपाबाग़ व हरसिद्धी माताके क़रीब हुआ था, इस लिये रावत् भीमसिंहको ख़ौफ़ हुआ, कि शायद यह, बन्दोबस्त हम लोगोंके क़त्ल करनेको ही हुआ है, और इसी अन्देशेसे वह अपने साथियों समेत रंजीदह होकर चल निकला. सोमचन्द वग़ैरह ख़ैरख़्वाह लोगोंका मन्शा ख़राब न था, इन लोगोंने बाईजीराजको कहा, कि आप पधारकर तसल्लीके साथ उसे ले आवें; तब उक्त राज माता पलाणा नामी ग्राममें पहुंचकर चूंडावतोंको तसल्ली के साथ एकलिंगपुरीमें लाईं, और वहां क़स्म वग़ैरहसे उनका सन्देह दूर करने बाद उदयपुर ले आईं.

सोमचन्दने ख़ानगी बखेड़ा दूर करके जयपुर, जोधपुर वग़ैरह रियासतोंसे भी मरहटोंको राजपूतानहके बाहर निकालदेनेकी सलाह करली थी. इस बारेमें सोमचन्दके नाम जोधपुरसे मोहणोत ज्ञानमल्लके भेजे हुए एक काग़ज़की नक़्ल पाठकोंकी वाक़फ़ियतके लिये नीचे दर्ज कीजाती है:-

ज्ञानमल्लके काग़ज़की नक़्ल.
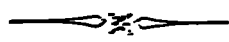
स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने साहजी श्री सोमजी जोग्य, जोधपुर मेड़तीया दरवाजा बारला डेरा थी मोहणोत ग्यानमल लीपावतं जुहार वांचजो- अठारा समाचार श्री जीरे तेज प्रतापसुं भला छे, राजरा सदा भला चाहीये अप्रंच:- कागद राजरो आयो, समाचार श्री हजुर मालुम कीया, राज लीपीयो इतरा दीन जेज हुई, सो तो सीरदारांरे माहो मांहरो बेबोयो, जीण राहसुं हुई; नें हमेंतो सारी बात पुषत वीचारने पटेलरा मुकासदार सीताब उठाय देणा ठेहराया छे; सो सीताब उठाय देणामें आवसी. सारी बातां तीनांरा यतनारो सामलात पणो छे, सु दुरस छे. श्री दीवाणजी राजस्थानामें मुष्य छे, सो या बात जोग हीज छे; तीनांही

राजस्थानारा सामलायत एकठपणांसुं घणो फायदो छे, ने राजस्थानारो घणो दोर वधसी, ने कोइी ही दषणी राजस्थानने आसंगमें ल्याय सकसी नही. हमे पटेलरा मुकासदार उठावणारी जेज करणरी सरबथा सलाह न छे, सीताब उठाय देणा; और सारा समाचार उपाध्या मनरुपजीरा कागदमें लीषीया छे; सु कहसी- संवत १८४४ भादवा सुद ३.

अगर्चि सोमचन्द प्रधानने बहुत अच्छी तरहसे चूंडावतोंकी सफ़ाई करवा दी थी, तो भी इस गिरोहके दिलोंका सन्देह दूर न होनेके सबब वे उदयपुरकी हिफ़ाज़त पर रक्खे गये, और बाक़ी फ़ौज मए कोटाकी जमइयतके मालदास व मौजीराम महताकी मुख्तारीमें रवानह हुई. इन लोगोंने नीबाहेड़ा, नकूंप और जीरण वगैरह कुल ज़िलोंसे मरहटोंको निकालकर उनपर अपना क़ब्ज़ह करलिया. मरहटी सिपाह, जो जावदमें जमा होगई थी, महाराणाकी फ़ौजने वहां पहुंचकर उसका मुक़ाबलह किया. कुछ दिनोंतक नाना सदाशिवराव लड़ा, लेकिन् फिर चन्द शर्तोंपर शहर छोड़कर चला-गया. वेगूंके रावत् मेघसिंहने भी अपने उन पर्गनोंपर अमल करलिया, जो पहिले उसने मरहटोंके सुपुर्द किये थे.

यह ख़बर सुनकर अहल्याबाईने तुलाजी सेंधिया व श्रीभाईकी मातहतीमें एक फ़ौज इस तरफ़को रवानह की, रास्तेमें सेंधियाकी फ़ौज और मन्दसौरसे शिवा नाना भी इनके शरीक होगया, जिसने मेवाड़ी राजपूतोंके मुक़ाबलेसे भागे हुए लश्करको एकट्ठा करलिया था. इन तीनों गिरोहोंके शामिल होजानेसे उन लोगोंके पास बड़ी भारी जमइयत होगई. मरहटी फ़ौजने मन्दसौरसे मेवाड़की तरफ़ कूच किया. यह ख़बर पाकर मालदास महताने भी अपनी फ़ौजकी दुरुस्ती की. सादड़ीका राज सुल्तानसिंह, देलवाड़ेका राज कल्याणसिंह, कान्होड़का रावत् ज़ालिमसिंह, सनवाड़का बाबा दौलतसिंह मए अपने भाई कुशालसिंहके और जमादार सादिक़ व जमादार पंजू सिंधी वगैरह सर्दार मए अपनी अपनी जमइयतके रवानह हुए. गांव चलदूके क़रीब हड़क्या खालपर विक्रमी १८४४ माघ कृष्ण ४ [हि० १२०२ ता० १७ रबीउस्सानी = ई० १७८८ ता० २६ जैन्युअरी] मंगलवार को मरहटोंकी फ़ौजसे मुक़ाबलह हुआ. पहिले हमलेमें तो राजपूतोंने ग़नीमोंको बड़े ज़ोर शोरसे रोका, लेकिन् जब दूसरा हमलह हुआ, तो ये लोग तलवार और बर्छोंसे लश्करपर टूट पड़े. उसवक़ मेवाड़की फ़ौजका अफ्सर महता मालदास मुख़ालिफ़ोंके हाथसे मारा गया, और सादड़ीका राज सुल्तानसिंह ज़ख्मी होकर मरहटोंके पंजेमें गिरिफ्तार हुआ.

देलवाड़ेका राज कल्याणसिंह ज़ख्मोंसे चूर होकर वच रहा; कान्होड़का रावत् ज़ालिमसिंह भी वहुत ज़ख्मी हुआ; बावा दौलतसिंहने सिलहपर तलवारोंके कई वार झेले, और उसका छोटा भाई कुशालसिंह मारा गया; जमादार पंजू सिंधी काम आया, और जमादार सादिक़की सिलहपर कई तलवारें लगीं. इन सर्दारोंकी जमइयत बड़ी बहादुरीके साथ मारी गई, और बाक़ी फ़ौज अब्तर होकर जावदमें एकट्ठी हुई. मरहटोंने दूसरे कुल मक़ामोंपर अपना अमल करके जावदको आघेरा, कि जहांपर महता अगरचन्दका भतीजा दीपचन्द बड़ी बहादुरीके साथ लड़ रहा था; एक महीनेके बाद वह कई शर्तोंके साथ सिलहख़ानह वगैरह अस्बाब लेकर अपने आदमियों सहित मांडलगढ़ चला आया. राज सुल्तानसिंह दो वर्ष तक मरहटोंकी क़ैदमें रहने वाद अपने पट्टेके चार गांव देकर रिहा हुआ, और मेवाड़के क़बज़ेमें आये हुए ज़िले फिर हाथसे निकल गये; लेकिन् साह सोमचन्द गांधीने हिम्मत न छोड़ी, मेवाड़के तह्तमें जो मुल्क बाक़ी रहा, उसको आवाद और दुरुस्त करलिया.

विक्रमी १८४५ [हि० १२०२ = ई० १७८८] में महाराणाने बारहट शिवदानको लाख पशाव दिया, जिसमें उसने गांव और जीविका पाई, जो अबतक उसके क्रमानुयायी चंडीदानके क़बज़ेमें है. बारहट शिवदान (१) महाराणाका बड़ा सलाहकार होगया था, यहांतक, कि महाराणा भीमसिंहके ज्योतिदानमें सलाहके वक़्की तस्वीरमें भी उसका चित्र मौजूद है.

अब हम साह सोमचन्द प्रधानके आपसकी अदावतसे मारे जानेका हाल लिखते हैं. इस वक़् रियासतमें सर्दार व मुसाहिबोंके दो फ़िर्के हो रहे थे, जिनमेंसे सलूंबरके रावत् भीमसिंह, कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह, और आमेटके रावत् प्रतापसिंह वगैरह चूंडावतोंका गिरोह कम ताक़त, और दूसरे फ़िर्केके लोग याने भींडरका महाराज मुह्कमसिंह व प्रधान साह सोमचन्द वगैरह ताक़तवर हो रहे थे, और इसी वजूहसे ये लोग चूंडावतोंकी आंखोंमें खटकते थे. रावत् भीमसिंह और उनके साथी चित्तौड़ चले गये. इस समय उदयपुरकी रियासत बड़ी नाज़ुक दशामें थी, सोमचन्दने महाराणाको समझाया, कि हम लोगोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे रियासतका

(१) यह खैरख्वाह बारहट भी सोमचन्दका साथी होनेके कारण चंद सालके बाद मारा गया, इसने कृष्णगढ़ जाते वक़् बनास नदीके किनारे मदारा गांवके पास मुख़ालिफ़ सर्दारोंके भेजे हुए डाकुओं से बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर चन्द आदमियों सहित प्राण दिया; और उसका भतीजा रामदान ज़ख्मी होकर बाक़ी रहा, जिसका प्रपौत्र बारहट चंडीदान हालमें मौजूद है.

नुक्सान है; मुनासिब है कि रावत् भीमसिंहको बुलाकर रियासती कारोबारमें शरीक कर दीजिये. इसपर महाराणाने बाई रामप्यारीकी मारिफ़त रावत् भीमसिंह, व अर्जुनसिंह वगैरह चूंडावतोंको बुलाकर दोनों फ़िर्क़ोंमें इत्तिफ़ाक़ करादिया. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "यह इत्तिफ़ाक़ रावत् भीमसिंहने अपने मुख़ालिफ़ोंको धोखा देनेकी ग़रज़से किया, क्यौंकि दूसरा फ़रीक़ उनकी हुकूमत छीनकर रियासती कारोबारका मुख़्तार बनगया था."

विक्रमी १८४६ कार्तिक शुक्ल ६ [हि० १२०४ ता० ४ सफ़र = ई० १७८९ ता० २४ ऑक्टोबर] शनि वारको कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह व भदेसरका रावत् सर्दारसिंह मह्लोंमें गये, और बाईजीराजके भंडारकी चौपाड़ (कमरा) में सोमचन्द को सलाह करनेके बहानेसे एक तरफ़ लेजाकर कहा, कि तूने हमारी जागीर किसतरह छीनी (१), और दोनों तरफ़से कटार मारे, कि उसका काम तमाम होगया. इसके बाद दोनों सर्दार वहांसे भागकर अपनी जमइयतोंमें जामिले, जो त्रिपौलियाके पास खड़ी थी. उस वक्त महाराणा बदनौरके ठाकुर जैतसिंह सहित सहेलियोंकी बाड़ी में थे. सोमचन्दके भाई सतीदास व शिवदास महाराणाके पास पहुंचे और कहा, कि "हमको दुश्मनोंके हाथसे क्यौं मरवाते हैं ! आप अपने ही हाथसे मार डालिये." पीछेसे रावत् भीमसिंह भी अपने गिरोह और जमइयतको साथ लेकर चौगानके दरीख़ानहमें जा बैठा, जो शहर और सहेलियोंकी बाड़ीके बीचमें है. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "रावत् अर्जुनसिंह सोमचन्दके खूनसे भरे हुए हाथ सहित महाराणाके पास पहुंचा, और अपने मालिकका कुछ भी लिहाज़ न किया. उस वक्त महाराणाके पास इतनी जमइयत न थी, कि उसको सज़ा देते, उन्होंने सिर्फ़ यह कहा, कि "हरामख़ोर हमारी आंखोंके साम्हनेसे चलाजा, हमको मुंह मत दिखला."

इस समय महाराज अर्जुनसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत, जो काशीवास करनेको शहरसे रवानह होकर हज़ारेश्वरमें ठहरे हुए थे, यह बात सुनकर चूंडावतोंके गिरोहमें गये और कहा, कि "तुम रावत् चूंडाकी ख़ैरख़्वाहीको दाग़ लगानेके लिये अपने मालिकसे साम्हना कर रहे हो; ख़ैर जो कुछ हुआ सो हुआ, अब अपने घरको चले जाना चाहिये." महाराज अर्जुनसिंहके इस कलामका उनपर बड़ा असर हुआ, वे

(१) सलूंबरके रावत् कुबेरसिंहका बड़ा बेटा जोधसिंह और छोटा भीमसिंह था. महाराणाने भीमसिंह को कंवारिया और सावाका पट्टा जुदा जागीरमें दिया था; लेकिन् रावत् पहाड़सिंहके मारेजाने बाद भीमसिंह सलूंबरका रावत् होगया, इसलिये सोमचन्दने वह जागीर ख़ालिसे करली थी; क्यौंकि दो जागीरदारोंकी जायदादका मालिक एक आदमी नहीं बन सक्ता.

लोग शर्मिन्दह होकर सलूंबरकी तरफ़ होते हुए चित्तौड़को चलेगये. सोमचन्दके मारे-जानेसे बाईजीराज (महाराणाकी माता) ने नाराज़ होकर कहा, कि "मैं ऐसे पुत्रका मुंह नहीं देखना चाहती, जिसने दग़ाबाज़ीसे एक ख़ैरख़्वाह प्रधानको मरवा डाला." यह सुनकर महाराज अर्जुनसिंह ज़नानी ड्योढ़ीपर पहुंचे, और कहा, कि "बहूको कहदो, अगर अपने पुत्रकी ज़िन्दगी चाहती हो, तो इस बातको छोड़कर अपने बेटेकी तसल्ली करो; तुम्हारा पुत्र इस बातको बिल्कुल नहीं जानता." बाईजीराजने अपने स्वसुरकी शिक्षासे महाराणाको बुलाकर कहा, कि जो हुआ सो हुआ, अब आगेके लिये तुमको प्रबन्ध करना चाहिये. महाराणाने सोमचन्दका दाह कर्म पीछोलाकी बड़ी पालपर करवाया, जिसकी छत्री अबतक वहां मौजूद है, और सोमचन्दके छोटे भाई सतीदास (१) को प्रधानका पद देकर कहा, कि सोमचन्दका पुत्र जयचन्द, जो बालक रहगया है, उसकी पर्वरिश करो. सतीदासका छोटा भाई शिवदास अपने भाईका मददगार बना. सतीदास और शिवदासने अपने भाई सोमचन्दका बदला लेनेके लिये जमइयत एकट्ठी की, और भींडरका महाराज मुहकमसिंह भी इनका मददगार बनगया. दूसरी तरफ़ चूंडावतोंने अपनी जमइयतको दुरुस्त करके मुक़ाबलह करनेको चित्तौड़से कूच किया. इस फ़ौजका मुख़्तार कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह था. आकोलाके पास दोनों जमइयतोंका मुक़ाबलह हुआ; इस लड़ाईमें सतीदास और भींडरके महाराजने फ़त्ह हासिल की, और चूंडावतोंका बहुत नुक्सान हुआ; रावत् अर्जुनसिंहने भागकर जान बचाई. कर्नेल टॉड लिखते हैं, "कि इस लड़ाईका एवज़ चूंडावतोंने शक्तावतोंको शिकस्त देकर खैरोदाके पास लिया था, लेकिन् आपसकी लड़ाइयोंसे यह नतीजा हुआ, कि मुल्क वीरान होगया, किसान लोग देश छोड़ भागे, व्यापार बन्द हुआ, और ग़नीमोंसे देशको बचाने वाले बहादुर राजपूतोंकी जान सस्ती होगई."

रावत् अर्जुनसिंह अपने बेटे ज़ालिमसिंहका बदला शक्तावतोंसे लेना चाहता था, इन दिनोंमें रावत् संग्रामसिंहने अपने बाप लालसिंहको बाल बच्चों और औरतों सहित

---

(१) ओसवालोंमें "छोटे साजन" गांधी गोत्रका खुशालचन्द नामी एक शख़्स था, जो ज़नानी ड्योढ़ीके मोहल्लों (मुहल्लों) में रहा करता था; इसके चार बेटे थे:- १- रूपचन्द, २- सोमचन्द, ३- सतीदास और ४- शिवदास. सोमचन्दका बेटा जयचन्द था, और सतीदासकी गोद महाराणा स्वरूपसिंहने लालचन्दको रक्खा, जिसका बेटा गोपाललाल हालमें मौजूद है.

शिवगढ़में भेजदिया, जो डूंगरपुरके ज़िलेमें सोम नदीके किनारेपर पहाड़ोंमें एक दुश्वार-गुज़ार जगह है, और डूंगरपुरके रावलकी तरफ़से उसको जागीरमें मिली थी, और आप सर्दारगढ़ (लावा) में रहने लगा, जो उसने डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहके बेटोंसे छीन लिया था. रावत् अर्जुनसिंहने मौक़ा देखकर विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] में मए जमइयतके लालसिंहको शिवगढ़में जा घेरा; कुछ देरतक दोनों तरफ़के लोग आपसमें लड़े, लेकिन् अर्जुनसिंहके पास जमइयत बहुत थी, उसने एकदम हल्ला करदिया; रावत् लालसिंह, जो ७० वर्षकी उम्रका था, बड़ी बहादुरीसे लड़कर मारा गया; रावत् अर्जुनसिंहने संग्रामसिंहके दो लड़कोंको गिरिफ़्तार करके बड़ी बे रहमीसे मारकर अपने बेटे ज़ालिमसिंहका एवज़ लिया. लालसिंहकी स्त्री अपने पतिके साथ सती होगई. भींडरके महाराज मुहकमसिंह और साह सतीदास व शिवदास वगैरह मुसाहिबोंने देवगढ़के रावत् गोकुलदासको हिकमत अमलीसे अपनी तरफ़ करके उससे एक इक़ारनामह लिखवाया, जिसकी नक़ नीचे दर्ज कीजाती है :-

---

इक़ारनामहकी नक्ल.

सिध श्री लपतां रावत् गोकलदासजी अप्रच : श्री दरबारकी बंदगी करणी, कणी ही फेल फतुर म्ही सामले होवां न्ही, और मेवाड़रा गढ़े सारा ई सरदारांरा पाडे जदै मे प्णै पाडे नापां; और गाव गोठ पंचा सरस्तै छोड़ देणा. भाई बेटा श्री द्रबाररा जागीरदार है, सो हुकमै प्रमांणै बंदगी करसी. संवत १८४८ भादवा सुद १२.

इसके बाद महाराणाके मुसाहिब साह सतीदास, शिवदास व जयचन्द, और महता अगरचन्द सहित भींडरके महाराज मुहकमसिंहने विचार किया, कि इस वक्त ज़ालिमसिंह झालाके ज़रीएसे माधवराव सेंधियाको बुलाकर रावत् भीमसिंह वगैरह चूंडावतोंको सज़ा देने बाद चित्तौड़से निकालदेना चाहिये.

महाराणाने इस सलाहको मन्ज़ूर किया, और झाला ज़ालिमसिंहको मए आंबा ऐंगलियाके बुलाया. मुसाहिबोंने उनको कुल हाल लिख भेजा. वे लोग मए फ़ौजके कोटासे रवानह होकर हमीरगढ़ पहुंचे. यह क़िला रावत् भीमसिंहके सलाहकार

रावत् भीमसिंहके क़बज़ेमें था; आंबा मरहटेने गोलन्दाज़ी शुरू करदी, भीमसिंह किला छोड़कर चित्तोड़पर चला गया, और हमीरगढ़पर आंबाने अपना बन्दोबस्त किया. इसीतरह बसीका किला भी लेलिया. ज़ालिमसिंह झाला महाराणाके पास आया, और यहांसे इजाज़त लेकर माधवराव सेंधियाके पास पहुंचा. वह महाराणासे मुलाक़ात करनेकी बड़ी आर्ज़ू रखता था, क्योंकि सेंधियाको इस बातसे अपनी इज़्ज़त बढ़ानेकी ख्वाहिश थी. इसवास्ते उसने यह इक्रार करलिया, कि मेवाड़से चौसठ लाख रुपया वुसूल किया जावे, जिसमेंसे तीन हिस्सह सेंधिया और एक हिस्सह महाराणा लेवें. वह फ़ौरन् ज़ालिमसिंहके साथ मए लश्करके रवानह होकर नाहर मगरे पहुंचा, जो उदयपुरसे पूर्व ईशानमें सोलह मीलके फ़ासिलेपर एक शिकार-गाह है. महाराणा भी मए लश्कर व बाज़ सर्दारों तथा पासवानों वगैरहके उदयपुरसे रवानह हुए, जिनके नाम नीचे दर्ज किये जाते हैं:-

सादड़ीका राज सुल्तानसिंह झाला, कोठारियाका रावत् विजयसिंह चहुवान, भींडरका महाराज मुहकमसिंह शक्तावत, महाराणाका चचा महाराज भैरवसिंह बाघसिंहोत, महाराज बख्तावरसिंह, शक्तावत रावत् संग्रामसिंह लालसिंहोत, खैराबादका बाबा सालिमसिंह राणावत, महाराज भगवन्तसिंह, महाराज ज़ालिमसिंह नाथसिंहोत बागोरका छोटा, भगवानपुरेका रावत् ज़ोरावरसिंह चूंडावत सांगावत, करेड़ेका राजा विष्णुसिंह चूंडावत सांगावत, बाठरड़ेका रावत् एकलिंगदास सारंग-देवोत, सनवाड़का बाबा दौलतसिंह राणावत, कोठारियाके रावत् फ़त्हसिंहका छोटा बेटा उदयसिंह और उसका भाई दुलेलसिंह चहुवान, राणावत बख़्तसिंह भारतसिंहोत खैराबादका छोटा, शक्तावत मुहकमसिंह, बनेड़ियाका चहुवान बिशनसिंह (विष्णुसिंह) चत्रसिंहोत, चहुवान अदोतसिंह चत्रसिंहोत, और महाराणाके सात पासवानिये भाई- महाराज गोपालदास, महाराज देवीदास, महाराज मनोहरदास, महाराज भगवानदास, महाराज चैनदास, महाराज मोहनदास और महाराज जवानदास. इनके सिवा पीयावासका जागीरदार चूंडावत जगावत नत्थूसिंह, महता अगरचन्द, साह किशोरदास देपुरा, साह एकलिंगदास बोल्या, पाणेरका चारण सौदा बारहट भोपसिंह, पसूंद का चारण आसिया जशवन्तसिंह, कृष्णगढ़का चारण बारहट शिवदान, धायभाई उदयराम, धायभाई फता, धायभाई हड्डू, पंचोली (कायस्थ) नाथ सहीवाला, पंचोली चतुरभुज, महासाणी पंचोली रामा, पंचोली स्वरूपनाथ, व्यास शिवदत्त, त्रिवाड़ी गुलाब, पुरोहित केशवराय, फ़राशख़ानहका दारोगा साह नग्गा पटवारी, पाणेरी लाला, पाणेरी गजसिंह, पांडे बिशनदास (विष्णुदास), गुहिलोत ज़ोरा डोंकड्या, भोई लाला, भोई नौका,

झालादार कृष्णदास, जमादार सादिक़ सिन्धी, पठान शेरखां और कपूरखां मए अपने मातहत दो हज़ार पठानोंके, और भाणेज ज़ालिमसिंह पांच सौ सवारों सहित थे. महाराणाने देलवाड़ेके राज कल्याणसिंह और प्रधान साह सतीदासको उदयपुरकी हिफ़ाज़तके लिये छोड़ा, और साह शिवदास तथा जयचन्दको अपने साथ लिया. माधवराव सेंधिया अपने लश्करसे दो कोसतक महाराणाकी पेश्वाई करने बाद वापस अपने डेरोंको चला गया और महाराणाने शिकारगाहके महलोंमें पहुंचकर आराम किया.

विक्रमी १८४८ आश्विन् [हि० १२०६ मुहर्रम = ई० १७९१ सेप्टेम्बर] में नाहर-मगरा मक़ामपर महाराणासे सेंधियाकी मुलाक़ात हुई. और इसी जगह कुछ दिनों ठहरकर उससे रावत् भीमसिंह वग़ैरह चूंडावतोंको चित्तौड़से निकाल देनेकी बाबत बात चीत कीगई, यह सलाह मश्वरा होने बाद कूच होने वाला था, कि महाराणाके नौकर पठानोंने तन्ख़्वाहके लिये बल्वा किया, और ड्योढ़ीकी तरफ़ नंगी तलवारें लेकर चले. यह हाल सुनकर महलके भीतरसे महाराणा ढाल तलवार लेकर उठ खड़े हुए, और सर्दारोंने पठानोंपर हमलह करदिया. इस फ़सादमें महाराणाके मातहत सर्दारोंमेंसे पीथावासका जागीरदार तख़्तसिंह मारा गया, और धायभाई उदयरामके हाथमें तलवारका ज़ख़्म लगा, बाक़ी ख़ैरियत रही. लेकिन् पठानोंके आदमी ज़ियादह मारेगये, कितनेही ज़ख़्मी होकर गिरे और अक्सर जान बचाकर भागगये. यह वायवैला सुनते ही कई उमराव सर्दार, जो दूर दूर डेरोंमें थे, दौड़कर आये, परन्तु इस मुक़द्दमेको हाज़िरीन लोगोंने पेश्तर ही फ़ैसल करदिया था, इसवास्ते बहसकी ज़रूरत न रही, वर्नह एक राय होनेमें बड़ी दिक़्क़तें पेश आतीं. कुछ देर बाद माधवराव सेंधिया और भाणेज ज़ालिमसिंह भी आ पहुंचे. झाला ज़ालिमसिंह वग़ैरह बुद्धिमान लोगोंने आइन्दहके लिये फ़ौजकी तन्ख़्वाह चुकानेके साथ महाराणाकी अर्दली व खास चौकीका भी उम्दह इन्तिज़ाम कर-दिया. महाराणाने मए फ़ौज और माधवराव सेंधियाके यहांसे रवानह होकर चित्तौड़के क़रीब सेंथी गांवमें मक़ाम किया, और रावत् भीमसिंहको कहलाया, कि क़िला छोड़ कर हाज़िर होजावे. लेकिन् उसको व उसके साथियोंको महाराणाके मुसाहिबोंका एतिबार न था, इसलिये उसने हाज़िर न होकर क़िलेमें लड़ाईका सामान दुरुस्त किया. मरहटों और मेवाड़की फ़ौजने घेरा डालकर विक्रमी १८४८ कार्तिक कृष्ण ११ [हि० १२०६ ता० २५ सफ़र = ई० १७९१ ता० २३ ऑक्टोबर] को क़िलेपर गोलन्दाज़ी शुरू की, और अढ़ाई महीनेके क़रीबतक लड़ाई होती रही. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि ज़ालिमसिंहका इरादह चूंडावतोंको बर्बाद करके मेवाड़में पूरी पूरी दस्तन्दाज़ी करलेनेका था; उसने जोधपुरके

सर्दारोंको भी मिला लिया, और जयपुरको, तो वह कोटेकी ताक़तसे पेश्तर उसपर फ़त्ह पा चुकनेके सबब कुछ हक़ीक़त ही नहीं समझता था, उसका ख़याल था, कि मेवाड़का मुसाहिब होनेसे कुल राजपूतानहमें अपना दख़्ल करके इस ताक़तसे तमाम हिन्दुस्तानपर भी अपना रोब जमा लेवे. उस झाला सर्दारका यह इरादह जानकर आंबा एंगलिया रावत् भीमसिंहसे मिलावट करने लगा. भीमसिंहने भी इस मौक़ेको ग़नीमत जाना, और कहलाया, कि अगर ज़ालिमसिंह झाला कोटेको चलाजावे, तो मुझे महाराणाके पास हाज़िर होनेमें कोई उज़्र नहीं है, और सेंधियाको भी बीस लाख रुपया देना मुझे मंजूर है. माधवरावको पूनाकी तरफ़ जानेकी जल्दी थी, इसलिये उसने यह बात कुबूल करली. ज़ालिमसिंह ऊपरी दिलसे यह कहकर, कि जिस बातमें महाराणाका फ़ायदह हो, वही मुझे मंजूर है, कोटेकी तरफ़ चलागया.

सलूंबरका रावत् भीमसिंह और आमेटका रावत् प्रतापसिंह आंबा एंगलियाकी मारिफ़त महाराणाके पास हाज़िर होगये, और सेंधियासे मिलकर उन्होंने अपने वादेको पूरा करनेकी तह्रीर लिखदी. सेंधिया अपनी तरफ़से आंबा एंगलियाको इख़्तियार देकर नीचे लिखी हुई हिदायतें करने बाद रवानह हुआः-

अव्वल- महाराणाकी हुकूमतको बहाल करना, और ख़ालिसेकी ज़मीन, जो सर्कश सर्दारों और सिन्धी सिपाहियोंने दबाली है, वापस दिलवाना.

दूसरे- झूठे दावेदार (रत्नसिंह) को कुम्भलमेरसे निकाल देना.

तीसरे- जोधपुरके राजासे गोड़वाड़का ज़िला वापस लेना.

चौथे- महाराणा अरिसिंहके मारे जानेके बाबमें, जो बूंदीसे फ़साद हुआ था, उसको दूर करना.

महाराणा साह जयचन्द गांधीको चित्तौड़के क़िलेमें रखकर मए रावत् भीमसिंहके उदयपुर चले आये. कुछ दिनों बाद यह विचार हुआ, कि अब रत्नसिंहको कुम्भलमेरसे निकाल देना चाहिये. आंबा एंगलिया तो मए मरहटी फ़ौज और तोपख़ानहके तय्यार ही था, महाराणाने यहांसे साह शिवदास गांधीको भी महता अगरचन्द, साह किशोरदास देपुरा व रावत् अर्जुनसिंह समेत कुम्भलगढ़की तरफ़ रवानह करदिया. ये सब लोग फ़ौज सहित खमणोर पहुंचे, और वहांसे घाणेरावके ठाकुर दुर्जनसिंहको लिख भेजा, कि हम कैलवाड़ेकी तरफ़से आते हैं, आप उधरसे क़िलेमें चढ़जावें. उक्त ठाकुरने मुस्तइदीके साथ इस सलाहको मंजूर किया. आंबा व शिवदास वगैरह समीचा गांवमें, जहां रत्नसिंहके तरफ़दार जोगियोंका गिरोह मुक़ाबलेको खड़ा था, पहुंचे, और वहां लड़ाई होने लगी, पहिले बारूदसे और उसके बाद तलवार,

वर्छी व कटारसे मुक़ावलह हुआ. आख़िरकार जोगियोंके गिरोहको मेवाड़ तथा आंवाकी फ़ौजने पीछा करके कैलवाड़ेसे भगा दिया, और आरेठ पौल की तरफ़से मेवाड़के सर्दार व दूसरी तरफ़से घाणेरावका ठाकुर दुर्जनसिंह क़िलेपर चढ़गया, जिससे घबराकर रत्नसिंह मए अपने साथियोंके क़िले कुम्भलमेरसे निकल भागा, और विक्रमी १८४९ पौष कृष्ण ७ [हि० १२०७ ता० २१ रबीउस्सानी = ई० १७९२ ता० ६ डिसेम्बर] बृहस्पतिवारको क़िलेमें महाराणाका अमल दख़ल होकर फ़ुतूरी रत्नसिंहका मेवाड़से बिल्कुल नाम निशान उठ गया.

आंवा एंगलिया, ठाकुर दुर्जनसिंह, रावत् अर्जुनसिंह, साह शिवदास, साह किशोरदास व महता अगरचन्दने कुम्भलमेरकी क़िलेदारी सूरजगढ़के राज जशवन्तसिंहको, और पर्गनेकी हाकिमी महता हटीसिंहको दी. फिर ये लोग उदयपुरको चले आये. अब आंवाने माधवरावकी हिदायतके मुवाफ़िक़ मेवाड़का इन्तिज़ाम करनेपर कमर बांधी, और बीस लाख रुपया, जो जागीरदारोंसे लेना क़रार पाया था, उसमेंसे बारह लाख चूंडावतोंसे और आठ लाख शक्तावतोंसे वुसूल करने बाद राजनगर व रायपुर सिंधी सिपाहियोंसे, गुरलां व गाडरमाला पूरावतोंसे, हमीरगढ़ रावत् सर्दारसिंहसे, कुर्ज कंवारिया सलूंबरसे और जहाज़पुर राणावतोंसे छीन लिया. लिखा है, कि ज़मीनका हासिल उस वक्त आधी बटाईके हिसाबसे लिया जाता था; और महाराणाके ख़ालिसेमें पचास लाख रुपया मुल्कसे सालानह वुसूल होता था. अगर्चि आंवा एंगलिया भी एक लुटेरा सर्दार था, लेकिन् माधवराव सेंधियाकी हिदायतके मुवाफ़िक़ यह काम उसने तारीफ़के लाइक़ किया.

महाराणाने दूसरी दफ़ा विक्रमी १८५० फाल्गुन् [हि० १२०८ रजब = ई० १७९४ मार्च] में ईडरके राजा शिवसिंहकी बेटी गुलाबकुंवर और दूसरी शिवसिंहके कुंवर भवानीसिंहकी बेटी उमांकुंवर, दोनोंके साथ एकही लग्नपर विवाह किया. महाराणाकी बरातमें नीचे लिखेहुए सर्दार, पासवान और अह्लकार थे:-

शाहपुरेका राजा भीमसिंह, बनेड़ाके राजा हमीरसिंहका पुत्र भीमसिंह, कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह चूंडावत कृष्णावत, बागोरका महाराज शिवदानसिंह, करजालीका काका महाराज भैरवसिंह, शिवरतीका महाराज सूरजमल्ल, पुरोहित रामराय, कारोईका महाराज बख़्तावरसिंह, शक्तावत रावत् संग्रामसिंह, बाठरड़ेका रावत् एकलिंगदास सारंगदेवोत, हमीरगढ़का राणावत रावत् धीरतसिंह बीरमदेवोत, काका महाराज बहादुरसिंह अर्जुनसिंहोत, चहुवान उदयसिंह, चहुवान दलेलसिंह फ़त्हसिंहोत, थांवलेका, चहुवान कुशालसिंह, ठाकुर अजीतसिंह अर्जुनसिंहोत चूंडावत कृष्णावत, आमेटका

चूंडावत जगावत मुहब्बतसिंह फ़त्हसिंहोत, बनेड़ियाका चहुवान विशनसिंह (विष्णुसिंह), विजयसिंह, अदोतसिंह चत्रसिंहोत, और महाराणाके पासबानिये भाई महाराज गोपालदास, मनोहरदास, भगवानदास, देवीदास, चैनदास, मोहनदास, तथा जवानदास महाराणा अरिसिंहोत, धायभाई हड्डू, धायभाई उदयराम, व्यास शिवदत्त, कायस्थ महासाणी रामा, साह एकलिंगदास बोल्या, महता मौजीराम, चारण आढ़ा दूलहसिंह, कायस्थ चतुर्भुज, कायस्थ स्वरूपनाथ, सहीवाला कायस्थ नाथ, सहीवाला वल्लभदास, पांडे विशनदास (विष्णुदास), ख़वास रघुनाथ, त्रिवाड़ी गुलाब, ड्योढ़ीका दारोग़ा भोई लाला, फ़र्राशख़ानहका दारोग़ा पुरोहित केशवराय, पाणेरी गजसिंह, पाणेरी मोडा, ढींकड्या गजसिंह, ढींकड्या ज़ोरा, भोई नीका, पुरोहित नांदेश्वर, साह सतीदास गांधी, परिहार मयाराम, और आंबा एंगलियाकी तरफ़से पंडित गणेश नानाराव मए दो हज़ार फ़ौजके और जमादार सादिक़ व जमादार चन्दर दोनों मए दो हज़ार सवारोंके.

महाराणाने ईडर पहुंचकर दोनों राजकुमारियोंके साथ शादी की, और ईडरके महाराजाकी दूसरी कन्याका विवाह बनेड़ाके राजा हमीरसिंहके पुत्र भीमसिंहके साथ हुआ. फिर महाराणाने वहांसे फ़ौज सहित रवानह होकर डूंगरपुरको आ- घेरा, क्योंकि रावल शिवसिंहके बाद फ़त्हसिंहने, जो उसकी गद्दीपर बैठा था, महाराणा से दस्तूरके मुवाफ़िक़ तलवार न बंधवाई, और न ईडर साथ आया, इसलिये उसको इस बेपर्वाईकी सज़ा दी गई. इसवक़ उसने महाराणाके पास हाज़िर होकर, तीन लाख रुपया गद्दी नशीनीके दस्तूर व फ़ौज ख़र्चका अदा करने बाद अपना क़ुसूर मुआफ़ कराया. इसी जगह देवगढ़का रावत् गोकुलदास चूंडावत सांगावत, और आमेटका रावत् प्रतापसिंह चूंडावत जगावत, और आंबा एंगलियाका छोटा भाई बालेराव मए आठ हज़ार फ़ौज और पच्चीस तोपोंके आमिले. महाराणाने कुल फ़ौज सहित बांसवाड़ेकी तरफ़ कूच किया, क्योंकि वहांके रावल विजयसिंहने भी डूंगरपुर वालोंकी तरह सर्कशी इख़्तियार कर रक्खी थी. लेकिन् मही नदीके मक़ामपर उक्त रावल ने गढ़ीके ठाकुर जोधसिंह चहुवानको महाराणाकी ख़िदमतमें भेजकर तीन लाख रुपये देने बाद क़ुसूर मुआफ़ करालिया. देवलिया प्रतापगढ़के रावत् सामन्तसिंहने भी यह ख़बर पाकर इसी मक़ामपर अपने मोतमिद लोगोंको महाराणाकी ख़िदमतमें भेजदिया, और धरियावद वग़ैरह डांगलका पर्गनह, जो उसने दबा लिया था, छोड़कर तीन लाख रुपया दंडका देना क़बूल किया. महाराणाने धरियावदका पर्गनह रावत् रघुनाथसिंहको इनायत किया, क्योंकि यह पहिलेसे उसके पूर्वजोंके अधिकारमें था, और रुपयोंका पुख़्तह बन्दोबस्त करके आप मए फ़ौजके उदयपुरमें दाख़िल हुए.

अब सेंधियाकी हिदायतोंमेंसे जावद, व नीमच वगैरह वापस देना, और जोधपुर वालोंसे गोड़वाड़का इलाक़ह, तथा बूंदी वालोंसे उनकी दग़ाबाज़ीका एवज़ लेना बाक़ी रहा. महाराणाने आंबासे यह इक़ार करलिया था, कि कुल शर्तें पूरी होजानेपर अलावह फ़ौज ख़र्चके साठ लाख रुपया तुमको इन्आम दिया जायेगा. अगर्चि मुल्की इन्तिज़ाम अम्नकी हालतमें बहाल रहकर गया हुआ मुल्क वापस मिलनेपर यह रक़म ज़ियादह न थी, परन्तु सर्दारोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे इन्तिज़ामका क़ाइम रहना दुश्वार होगया. उस वक्त मुल्ककी आमदनी कम न होनेपर भी रियासतकी हालत तंग थी, क्योंकि अव्वल तो बहुतसा रुपया मरहटोंको देना पड़ता था, दूसरे, महाराणा ऐसे उदार चित्त थे, कि जो उनके हाथ आता उसे इन्आम इक्राममें उड़ा देते; परन्तु हमारी यह राय है, कि उस समय महाराणाकी इस क़द्र फ़य्याज़ी न होती, तो उनके पास नौकरोंका ठहरना मुश्किल होता, क्योंकि जागीरोंकी आमदनी, तो छुटैयोंकी मौरूसी जीविका होगई थी, नौकरोंके गुज़ारेका दार मदार केवल इसी इन्आम इक्रामपर था.

विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] में महाराणाकी बड़ी बहिन चन्द्रकुंवर-बाईका सम्बन्ध जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहसे क़रार पाया, और इस विवाहके लिये पांच लाख रुपया मरहटोंसे क़र्ज़ लेना पड़ा; परन्तु वह रुपया भी शादीमें देर होनेके सबब ख़र्च होगया, क्योंकि अव्वल तो विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = ई० १७९५] में महाराणाकी माता याने बाईजीराजका इन्तिक़ाल होगया, दूसरे, वर्षा अधिक होनेसे पीछोले तालाबका बन्द टूट जानेपर एक तिहाई शहर बहजानेके सबब वह बन्द उसी वक्त तय्यार करवाना पड़ा, और तीसरे ईडरवाली महाराणी गुलाबकुंवरके गर्भसे विक्रमी १८५२ फाल्गुन कृष्ण ६ [हि० १२१० ता० १९ शअ्बान = ई० १७९६ ता० २९ फ़ेब्रुअरी] को राजकुमार अमरसिंहके पैदा होनेकी खुशीमें बहुतसा रुपया ख़र्च पड़ा.

इन महाराणाके विक्रमी १८४२ [हि० ११९९ = ई० १७८५] से विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] तक बहुतसी सन्तान हुई, और हर एक राजकुमार व राजकन्याके जन्मोत्सवपर उन्होंने पांचसे दसतक हाथी, बीससे साठतक घोड़े, और पांच सात "लाख पशाव" चारणोंको दिये. इसी संवत्में आंबा एंगलियाको सेंधियाने हिन्दुस्तानकी तरफ़ अपना नाइब मुक़र्रर किया, और मेवाड़में पंडित गणेश पंथ रहा. इसके पास जो मेवाड़के अहलकार मुक़र्रर हुए, उन्होंने बहुतसी सख़्तियां कीं. यह ख़बर सुनकर आंबा एंगलियाने गणेश पंथके एवज़ रायचन्दको मुक़र्रर किया, तोभी बद इन्तिज़ामी दूर न हुई. इस आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे चूंडावत बहुत बर्बाद होगये; कुरावड़ छीन

और सिंधी सिपाही भागकर देवगढ़में जा
लिया गया, सलूंबरपर मोर्चा लगा, रह कि वह एक क्षण मात्रमें अपनी विचित्र छिपे.

ईश्वरकी महिमा अपार है, र कि जोरावरको कमज़ोर और कमज़ोरको शक्तिसे अमीरको ग़रीब, और ग़रीबको अमीर, नद तो चूंडावतोंने, जहांतक उन रावर कर दिखाता है. देखिये, कि पहिलेयर. दी और तबाहीपर कमर बां पेच पड़ा, अपने दौर दौरेमें शक्तावतोंकी बबा ज़ीर यक शक्तावतोंका सितारा था, और जब ये अपने ज़ुल्मसे न रुके, तो यका नाथ, ग़रज़से चूंडावतोंपर तक उठा, और उन्होंने भी अपना एवज़ लेनेकी र, के फ़िर्क़े तथा गांधी ई तरहकी सख्तियां करना शुरू किया, जो अख़ीरमें उन्ह सिंह, बारह ताक़तवर प्रधानकी तनज़ुलीका कारण हुई, याने ईश्वरने पहिले फ़िर्क़ेको दो तीदासह, जो मी दिया. इस वक़्त कृष्णावत रावत् अर्जुनसिंहका छोटा पुत्र अजीतसिं, मश्हेर डावतोंमें सबसे बढ़कर सलाहकार और चालाक था, आंबा एंगलियाके पास जा गया, जब कि वह मरहटा सर्दार दतियाकी लड़ाईमें मसरूफ़ था. अजीतसिंहने आंबा एंगलियाके पास पहुंचकर उसको दस लाख रुपया देनेके इक़ारसे अपना मददगार बनाया, और आंबाने अपने नाइबको तलब करके भींडरके महाराज मुह्कमसिंह व प्रधान सतीदास का साथ छोड़ दिया. जब रावत् भीमसिंह वग़ैरह चूंडावत उदयपुरमें आये, तो महाराणा भी उनके तरफ़दार बन गये, क्योंकि उन्होंने यही पॉलिसी इख्तियार कर रक्खी थी, कि जो गिरोह ग़ालिब आता, उसीके मददगार बन जाते.

विक्रमी १८५३ मार्गशीर्ष कृष्ण १२ शनिवार [हि० १२११ ता० २५ जमादियुल्अव्वल = .ई० १७९६ ता० २६ नोवेम्बर] को साह सतीदास व जयचन्द क़ैद किये गये, और शिवदास भाग निकला. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ११ शनिवार [हि० ता० ९ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १० डिसेम्बर] के दिन महता अगरचन्दको प्रधानका पद और रावत् भीमसिंहको मुसाहिबीका ख़िल्अ़त मिला. इन लोगोंने मुसाहिब बनकर शक्तावतोंसे दस लाख रुपये वुसूल करके हीता व सेमारी दोनों ठिकाने छीन लिये. कर्नेल टॉड इस रियासतकी बद इन्तिज़ामी और सर्दारोंकी बाहमी अ़दावतका हाल अमृतरावके काग़ज़ोंसे महाराणा दूसरे जगत्सिंहके अ़ह्दसे लेकर इस वक़्ततक बयान करते हैं, उसमेंसे कुछ तो महाराणा जगत्सिंहके प्रकरणमें और बाक़ी मौके मौक़ेपर दर्ज हो चुका है, इसलिये अब उसका ज़ियादह लिखना ज़रूर नहीं.

विक्रमी १८५५ ज्येष्ठ [हि० १२१२ ज़िल्हिज = .ई० १७९८ मई] में महाराणा अपनी तीसरी शादी ईडरके राजा भवानीसिंहकी बेटी और गंभीरसिंहकी बहिनके साथ करनेको गये. इधर रावत् भीमसिंहने दूसरे गिरोहको ग़ारत करने और आंबा

एंगलियाकी फ़ौजको मुल्कसे निकालनेके लिये जोधपुरके महाराजा भीमसिंह को अपना मददगार बनाना चाहा, और सिंगवी जैतकरणकी मारिफ़त महाराणाकी कन्या कृष्णकुंवर बाईका सम्बन्ध करनेका पैग़ाम भेजा. इस पैग़ामका नतीजह बहुत ख़राब हुआ, जिसका ज़िक्र मौक़ेपर लिखा जायेगा. चूंडावत लोग इसी फ़िक्रमें थे, कि ज़ालिमसिंह झालाके दोस्त आंबा एंगलियाका लश्कर मेवाड़से निकाल दिया जावे; और इसी लिये उन्होंने लखवा दादासे मिलावट की, जो दौलतराव सेंधियाका दूसरा सर्दार और आंबाका दुश्मन था. वह राजपूतानहका सूबहदार बनकर रवानह हुआ. जब आंबाके नाइब नाना गणेशने मेवाड़से मदद चाही, तो चूंडावतोंने दग़ाबाज़ी से उसको यह कहलाया, कि तुम मज़्बूत होकर लड़ो, हम फ़ौज लेकर आते हैं. नाना गणेशने इन लोगोंकी बातपर यक़ीन करके लखवासे लड़ाई शुरू की; परन्तु उसने पहिले ही हमलेमें शिकस्त पाई, क्योंकि उसको मेवाड़के सर्दारोंसे कुछ भी मदद न मिली. चूंडावतोंने नानाको लखवाके साथ मुक़ाबलह करनेके लिये फिर उभारा, लेकिन् इस वक़ भी उसको भागकर हमीरगढ़में पनाह लेनी पड़ी, और चूंडावत लखवासे मिलगये. इसके बाद महाराणाके हुक्मसे नीचे लिखे हुए सर्दार मए फ़ौज व जमइयतके हमीरगढ़की तरफ़ रवानह हुए:-

फ़ौज मुसाहिब सलूंबरका रावत् भीमसिंह चूंडावत कृष्णावत, प्रधान महता अगरचन्द बछावत, आमेटका रावत् प्रतापसिंह चूंडावत जगावत, देवगढ़का रावत् गोकुलदास चूंडावत सांगावत, बदनोरका ठाकुर मेड़तिया जैतसिंह जयमलोत, राणावत रावत् धीरतसिंह वीरमदेवोत मए अपने बेटों अभयसिंह और भवानीसिंह के, भदेसरका रावत् सर्दारसिंह चूंडावत कृष्णावत, मंडप्याका राणावत उदयसिंह वीरमदेवोत, बावा अनोपसिंह पूरावत मए अपने तीनों बेटोंके, बाबा गोपालसिंह, बांसड़ेका राणावत बावा अर्जुनसिंह ग़रीबदासोत, लाछूड़ाका जागीरदार राठौड़ सूरजमल्ल ईसरोत, कैरियाका बावा फ़तहसिंह ग़रीबदासोत, और भगवानपुरेका रावत् चूंडावत सांगावत ज़ोरावरसिंह वग़ैरह सर्दार क़रीब पन्द्रह हज़ार फ़ौजके रवानह होकर हमीरगढ़ पहुंचे.

नाना गणेश क़िलेके अन्दर ख़ूब लड़ा, बल्कि उसने कई दफ़ा बाहर निकल निकल कर बहादुरानह तौरपर हमले किये. इस समय रावत् धीरतसिंहके बेटों अभयसिंह और भवानीसिंहने एक हमलेमें उससे ख़ूब मुक़ाबलह किया, और दोनों बहादुर अपने बापके साम्हने दुश्मनसे लड़कर मारे गये. इसी अरसहमें आंबा एंगलियाका मातह्त अफ्सर गुलाबराव कोदब नाना गणेशकी मददको मेवाड़में आया; तब मेवाड़के सर्दारोंने मूसामूसी गांवके पास लड़ाई की. ग़ालिब था, कि इस लड़ाईमें ये लोग मरहटी फ़ौजपर फ़त्ह पाजाते; लेकिन् लड़ाईके वक़ एक सवार अपना घोड़ा हाथसे छूटजानेके सबब " भागो,

भागो" कहकर पुकारा, और दूसरेने उस घोड़ेको पकड़कर "मिलगया, मिलगया" कहा. इन लफ़्ज़ोंके सुननेसे मेवाड़की फ़ौज भाग निकली.

इस लड़ाईमें जमादार चन्दर सिंधी तथा दूसरे भी बहुतसे राजपूत मारे गये, और मेवाड़की फ़ौजने शाहपुरेमें पहुंचकर अपनी दुरुस्ती करने बाद दोबारह हमीरगढ़के क़िलेको जा घेरा. इस हमलेमें मंडप्याका बावा उदयसिंह पूरावत, बावा अनोपसिंह, और चमरदार कायस्थ गोवर्द्धनदास वगैरह काम आये. क़िलेकी दीवार भी टूट चुकी थी, और क़रीब था, कि नाना गणेश भाग जावे, या मारा जावे, कि इतनेही में आंबा एंगलियाका बेटा और उसका भाई बालेराव व बापू सेंधिया, और जशवन्तराव सेंधिया झाला ज़ालिमसिंहकी फ़ौज सहित नाना गणेशकी मददको आ पहुंचे. तब लखवा मोर्चा उठाकर मए मेवाड़की फ़ौजके चित्तौड़की तलहटीमें आ ठहरा; और नाना गणेश व बालेराव वगैरह वहांसे रवानह होकर घोसूंडा गांवमें बेड़च नदीके किनारे ठहरे. लखवाकी फ़ौज भी उधरसे नदीके दूसरे किनारेपर आ पहुंची, और दोनों लश्करोंमें तोपोंकी लड़ाई शुरू हुई. नाना गणेश और बालेरावके दर्मियान तन्ख्वाहकी बाबत तकार होगई, इसलिये नाना गणेश वहांसे निकलकर सांगानेर चला गया. जोकि बालेरावको एक दफ़ा गूगल छपरा मक़ामपर फ़ौजकी क़ैदमें आजानेके वक्त लखवाने रुपयोंकी मदद देकर छुड़वाया था; इसलिये यातो वह उस इह्सानसे या लड़ाई न करनेके इरादे से लखवाके साथ मेल करके वापस चला गया, और महाराणाने आंबाके नाइबों नाना गणेश वगैरहकी मदद छोड़दी, क्योंकि मुसाहिबीका रुतबा चूंडावतोंको मिलगया था. जिस प्रकार ज़ालिमसिंह झाला और शक्तावतोंने चूंडावतोंके तरफ़दारोंकी जागीरें ज़ब्त करली थीं, उसी तरह अब चूंडावतोंने भी उनके तरफ़दारोंकी जागीरें छीनकर अपने साथियोंको दिलाई. बीजोलियाका ठिकाना राव सवाई केशवदास पुंवारको, हमीरगढ़ रावत धीरतसिंह वीरमदेवोतको, गाडरमाला बावा गोपालसिंह पूरावतको, और गुरलां बावा देवीसिंह पूरावतको दियागया.

विक्रमी १८५६ [हि० १२१३ = ई० १७९९] में आंबा एंगलियाने अपने नाइब नाना गणेशकी मददके लिये अपने मातहत अफ़्सर सदर्लैण्ड साहिबको मए फ़ौज व तोपखानहके रवानह किया, और उसकी सहायताके वास्ते ज्यॉर्ज टॉमस नामी एक मश्हूर व बहादुर शख़्सको अपना नौकर बनाकर हरियाणा व पंजाबकी तरफ़से बुलाया. इसी ज्यॉर्ज टॉमसके काग़ज़ात देखकर फ्रैंक्लिन साहिबने एक किताब छपवाई है, उसमेंसे मेवाड़का जुग्राफ़ियह या मुल्की हालत तो हम मेवाड़के भूगोल सम्बन्धी वृत्तान्तमें दर्ज करचुके हैं; अब यहांपर बाक़ी किताबका खुलासह याने लखवाकी लड़ाईसे मुतअ़ल्लिक़ हाल दर्ज किया जाता है:-

ज्योर्ज टॉमसकी लखवापर चढ़ाई.

"उदयपुरकी तरफ़ कूच करनेके वक्त टॉमसके सिपाहियोंने चढ़ी हुई तन्रूवाह मिलनेमें देर होनेके सबब बल्वा मचाया, और यह बहाना किया, कि हम लोग दक्षिण की तरफ़ जाते हैं, पीछेसे वाल बच्चोंको खर्चकी तंगी होगी, इसलिये हमारी तन्रूवाह मिलजाना चाहिये. अगर्चि यह बात किसी क़द्र सहीह मालूम होती थी, लेकिन् टॉमसने उनकी अर्ज़ीको मंजूर करलेना मुनासिब न समझकर इन्कार करदिया. इसपर बाग़ी सिपाहियोंने उसे क़ैद करना चाहा, परन्तु वह थोड़ेसे ख़ैरख़्वाह सिपाहियोंके साथ इन लोगोंसे अलग रहता था, इस सबबसे उनके घेरेमें न आसका, और उसने अपनी मददके लिये, सवारोंका एक गिरोह बुलाया. जब कि बाग़ी लोग उसपर हमलह करनेके लिये बन्दूकें लेकर चढ़ आये, तो वह उनको सज़ा देने या सज़ा देनेकी कोशिशमें अपनी जान खोदेनेका पक्का इरादह करके अपने घोड़ेपर सवार हुआ, और उनका साम्हना करनेके वास्ते गया. इस वक्त उसपर कई गोलियां चलाई गईं, लेकिन् उसने साबित-क़दमीसे ख़ास ख़ास आदमियोंको गिरिफ़्तार करके कैम्पके बाहर निकाल दिया, और बाक़ी लोगोंने अपने साथियोंकी यह हालत देखकर दोबारह अपना काम शुरू किया; तब वह लखवाकी तरफ़ चला. रास्तेमें जोधपुर, जयपुर व कृष्णगढ़के वकील अपनी अपनी रियासतोंसे नज़्रें लाकर उससे मिले, और कहा, कि सेंधियाने लखवाका कुसूर मुआफ़ करदिया है, इसलिये तुमको उस सर्दारके साथ दुश्मनी करना मुनासिब नहीं है, परन्तु टॉमसको, जो उस वक्त आंबाका नौकर होनेके सबब उसीके फ़ायदोंकी बातपर ख़याल रखता था, आंबाने लखवासे लड़नेका साफ़ हुक्म देदिया था, इसलिये उसने लड़ाईको रोकना अपने इख़्तियारमें न समझा; लेकिन् उसके सिपाहियोंकी अगली बग़ावत, जो अच्छी तरहसे तै न हुई थी, दोबारह दूने जोशके साथ शुरू हुई, इस वक्त भी टॉमसने ख़ास ख़ास फ़सादी लोगोंको गिरिफ़्तार करके मुनासिब सज़ा दी, याने उनमेंसे एकको तो तोपसे उड़वा दिया और बाक़ियोंको पैरोंमें बेड़ियां डलवाकर क़ैद करदिया. इस सख़्तीका नतीजह बहुत अच्छा हुआ, कि उसकी फ़ौजमें यही आख़िरी बल्वा होनेके बाद फिर किसी तरहका बखेड़ा न उठा.

इस वक्त सदलैंड साहिब फ़ौजका एक गिरोह लेकर मज़्बूत इरादहके साथ लखवाका साम्हना करनेको मुस्तइद हुआ, और दोनों (टॉमस और सदलैंड) ने अपनी फ़ौज शामिल करके लखवाकी तरफ़ क़दम बढ़ाया. वह सर्दार (लखवा) उस वक्ततक अच्छी तरह साम्हना करनेके लाइक़ न था, इसलिये उसने उस घाटेके पास डेरा किया, कि जहांसे उदयपुर

को रास्तह जाता है, और उसी घाटेके भीतर उसने अपना भारी सामान रख दिया, कि जिस तज्वीज़से किसी दूसरे मौकेपर उसकी बर्बादी होना संभव था; लेकिन् लखवाको पहिलेसे ख़बर मिलगई थी, कि उदयपुरके महाराणा उसके दोस्त हैं, और वह उसके साथियोंको आश्रय देनेके लिये तय्यार हैं. ग़रज़ कि उस वक्त टॉमस और सदलैंडने मिलकर हमलह करनेकी तज्वीज़ की और दूसरे दिन सुब्हका वक्त हमलेके वास्ते मुक़र्रर हुआ, परन्तु उसी रातको सदलैंड साहिबने बग़ैर कोई सबब ज़ाहिर करनेके कैम्पसे अलग होना और टॉमसको अकेला छोड़ जाना मुनासिब समझा, जिसपर टॉमसको बड़ा ही तअ़ज्जुब हुआ. इस बातसे लखवाको अपनी काम्यावीका भरोसा हुआ, और वह या तो पहिले ख़राब हालतमें होनेके सबब नर्म दिल था, या अब हालत बदलजानेसे बड़ा घमंडी होगया, और उसने आस पासके सर्दारोंको चिट्ठियां लिखकर मदद मांगी. सदलैंडके चले जानेके तीन दिन बाद टॉमस आंबाको फ़ौजके साथ सामानकी हिफ़ाज़तके लिये छोड़कर लड़ाईके तरीक़ेसे लखवाकी तरफ़ बढ़ा, लेकिन् बहुत ज़ोरसे बारिश, गरज और बिजलीका तूफ़ान आजानेके सबब लड़ाई न होसकी; लखवाने अपनी फ़ौजको ठहरा दिया. टॉमसका मक़ाम रिसालेके वास्ते अच्छा था, और दुश्मनकी फ़ौजका ज़ियादह हिस्सह सवारोंका ही था, उनका शुमार ज़ियादह होनेके सबब टॉमस अपने मक़ामको बदलना चाहता था, इसलिये बाईं तरफ़ हटकर ऊंची ज़मीनपर ठहरा, जहांपर रिसालेका हमलह उसकी तरफ़ नहीं होसक्ता था. जब तूफ़ान बन्द होगया, तो लखवा टॉमसकी तरफ़ हटा, लेकिन् उसका अच्छा मक़ाम देख-कर और उसके तोपख़ानहकी फ़ाइरके नज़्दीक आनेके सबब कुछ आदमियोंका नुक़्सान होजानेसे उसने खेतसे अलग होजाना मुनासिब समझा. टॉमस दिनभर बहुत सख़्त मिह्नत उठानेके बाद थककर शामके वक्त अपने कैम्पमें वापस आया.

आधी रातके वक्त लखवाके वकील सेंधियाकी चिट्ठियां लेकर कैम्पमें आये, जिनमें दोनों तरफ़से दुश्मनी ख़त्म करनेका मन्शा ज़ाहिर किया गया था, और उसने लखवाको नर्मदाके उत्तर तरफ़के तमाम इलाक़ोंका हाकिम मुक़र्रर किया. सुब्हके वक्त जंगी कौन्सिल हुई और सब सर्दारोंने अपनी अपनी राय दी. टॉमसने अपनी तरफ़से यह कहा, कि आंबाने मुझे ख़ास इसी मत्लबसे मुक़र्रर किया है, कि मेवाड़का इलाक़ह उस (आंबा) के ताबे करलियाजावे, इसीलिये वह (टॉमस) किसी शर्तको मंजूर नहीं कर सक्ता, जिसमें कि अव्वल यह बात न लिखी हो, कि लखवा उस मुल्कको ख़ाली करदेवे. बहुतसी बात चीत होनेके बाद यह तज्वीज़ कीगई, कि दोनों फ़ौजें उत्तरी सर्हदकी तरफ़ जावें और वहांपर इस बारेमें सेंधियाके नये हुक्मकी मुन्तज़िर रहें. टॉमस

लखवाकी बेईमानीको अच्छी तरह जानता था, और यह, कि वह सिर्फ़ वक्त टाल रहा है, ता कि अजमेरसे उसकी मददके लिये जो फ़ौज आरही है, पहुंच जावे, और उस इलाक़ेको अपने पीछे करलेवे; क्योंकि अजमेरका क़िला और शहर उसका था, और ऐसा करलेनेसे उसे सामान बराबर पहुंचते रहनेका भरोसा था. इसलिये टॉमसने यह तज्वीज़ मंज़ूर न की. सिवा इसके उसको यह भी मालूम था, कि उनका उदयपुरके नज़्दीक क़ियाम होनेसे मामूली बारिशके मौसममें, जो कि क़रीब था, बहुत फ़ायदह होगा, क्योंकि टॉमस तो चारे दानेका बन्दोबस्त कर सक्ता था, और उनको इसकी बड़ी हाजत थी. ये बातें उसने आंबाके विचारके लिये लिख भेजीं, लेकिन् इससे कुछ फ़ायदह न हुआ; क्योंकि उस सर्दारके ख़ास अफ़्सरोंको रिश्वत देदी गई थी; इस वास्ते उन्होंने सेंधियाका जवाब आनेतक लखवासे लड़ाई करनेमें इन्कार किया. टॉमसने लाचार होकर नाराज़ीके साथ इन बातोंको क़ुबूल किया, और दोनों फ़ौजें रवानह हुईं; बारिशके सबब उत्तरी सर्हदपर पन्द्रह दिनमें पहुंचीं, जो सिर्फ़ पचास कोसका फ़ासिला था. लखवाकी मददको उदयपुर व अजमेरसे फ़ौज पहुंचगई थी, इसलिये उसने मुल्क ख़ाली करनेसे इन्कार किया, और दोबारह दुश्मनी शुरू करके टॉमसकी तरफ़ कूच किया. आंबाकी फ़ौज एक ऐसे मैदानमें ठहरी थी, कि उसपर रिसालेका हमलह अच्छी तरह होसक्ता था. टॉमसने अपनी ज़ाती होश्यारीके साथ ऐसी जगहपर क़दम जमाया, जो नालों व खालोंसे घिरी हुई थी. उस वक्त एक जंगी कौन्सिल हुई, जिसमें यह क़रार पाया, कि आंबाकी फ़ौज टॉमसके पीछे ठहरे, ता कि दुश्मनके रिसालेका हमलह उसपर न होसके. लेकिन् यह बात मालूम होनेसे पहिले फ़ौजके एक गिरोहने रसोई बनाना शुरू करदिया था, इसलिये खाना खालेनेके पहिले लड़ाईमें न जा सकनेके सबब मौक़ेपर पहुंचनेमें देरी हुई, और इस देरीका नतीजह बहुत ख़राब हुआ, परन्तु लखवाने भी अपने साम्हनेके मोर्चेपर जा पहुंचने की कोशिश की, और पक्का इरादह करके चला, मगर उसने बहुत जल्द ही पीछा हटनेपर मज्बूर होकर पैदल सिपाहियोंको अपने बचावके वास्ते हुक्म दिया, और अपनी नाकामयाबीका बदला लेनेकी ख़्वाहिश से ऊपर लिखे हुए गिरोहपर अचानक टूट पड़ा, जो हमला होनेके ख़यालसे बिल्कुल बेख़बर रहनेके सबब उसका मुक़ाबलह करनेको तय्यार न था; इसलिये उस गिरोहके कुल आदमी मारे गये. टॉमसने आंबाकी मददके लिये दो गिरोह छोड़कर बाक़ी सिपाहियोंके साथ लखवाकी फ़ौजपर हमलह करनेको कूच किया, लेकिन् उस वक्त सख़्त बारिश आजानेके सबब नालोंमें एक दम पानी भर गया, और तर्फ़ैनसे लड़ाई बन्द होगई. आठ दिनतक बराबर पानी बरसता रहा, और

इन दिनोंमें छोटी मोटी लड़ाइयां भी होती रहीं. लखवा और उसके ख़ास थोड़े सर्दार किसी क़द्र चुने हुए सवारोंके साथ रोज़ टॉमससे मिलनेको जाया करते और वे अक्सर कैम्प व शाहपुरेके दर्मियान ठहरते थे, जहांसे बराबर उसे रसद पहुंचा करती थीं.

इस मौक़ेपर दुश्मनको धोखा देनेके लिये टॉमस अपने सिपाहियोंकी पोशाक और झंडेका रंग बदल देता और किसी बहानेसे दुश्मनकी फ़ाइरके भीतर पहुंचकर बड़ी तेज़ीके साथ गोलन्दाज़ी शुरू करा देता था; एक दफ़ह वह दुश्मनोंके गिरोहके इतना क़रीब जा पहुंचा, कि जहां लखवा आसानीसे पहिचाना जा सक्ता था. टॉमसने बड़ी तेज़ी और होश्यारीके साथ फ़ाइरसे हमलह किया, जिसमें उनको बहुत जल्द कुछ आदमियों व घोड़ोंका नुक्सान उठाकर पीछा हटना पड़ा. इन छोटी छोटी लड़ाइयोंसे, जिनमें फ़ौजके लोगोंको बड़ी दिक़्क़तें पेश आती थीं, किसी गिरोहको ज़ियादह नुक्सान न पहुंचा, क्योंकि दोनोंको सेंधियाकी तरफ़से सुलह करनेकी बाबत जवाब पहुंचनेकी उम्मेद हर रोज़ रहती थी. टॉमसकी ग़ैर हाज़िरीका मौक़ा पाकर जेजूरके पर्गनेपर पेरन साहिबके हमलह करने और उसके दूसरे इलाक़हमें लूट मार मचानेकी ख़बर पहुंची, जिसको वह लखवासे पोशीदह रखना चाहता था, परन्तु उस (लखवा) को पहिलेसे ही यह ख़बर मिलगई थी. अब उसने टॉमसको लालच देकर अपने शामिल करनेकी कोशिश की, लेकिन् टॉमसने क़तई इन्कार किया और जवाब दिया, कि मुम्किन है, कि मैं उस (आंबा) की नौकरी इस लड़ाईके ख़त्म होनेपर छोड़ दूं, परन्तु उसका दुश्मन तो किसी हालतमें नहीं हो सक्ता, और न उसके दुश्मनोंसे किसी तरहका सरोकार रख सक्ता. यह सुनकर लखवा नाराज़ हुआ, और उसने अपने दर्बारमें टॉमसकी बड़ी शिकायत करके कहा, कि वह एक अजीब चाल चलनका आदमी है; सेंधियाने उसको लड़ाई बन्द करनेका बराबर हुक्म भेजा, तो भी उसने न माना. अख़ीरमें टॉमस पर यह तुहमत लगाई, कि उसका इरादह सेंधियाकी हुकूमत तोड़कर अपनी हुकूमत जमानेका है. इन बातोंकी बनावटसे आसूदह न होकर लखवाने पोशीदह तौरपर टॉमसके कैम्पमें अपने आदमी भेजकर सिपाहियोंको बहकाना चाहा, लेकिन् टॉमसके हर्कारोंने उन आदमियोंको गिरिफ़्तार करलिया, और जबतक लड़ाई रही, वे वहां क़ैद रहे.

जब टॉमसकी कोई बन्दिश इस मौक़ेपर कारगर न हुई, तो उसने अपने व लखवाके सिपाहियोंको उनके मुल्कमें बहुत जल्द पहुंचानेकी तसल्ली देकर राज़ी करलिया. उस वक़्त लखवा की फ़ौजमें नौ हज़ार सवार, छः हज़ार क़वाइद जानने वाले पैदल सिपाही, दो हज़ार रुहेले और पांच या छः हज़ारके क़रीब दूसरे सिपाही मए ९० तोपोंके थे. टॉमसके पास सिर्फ़ छः पल्टनें थीं, जिनमेंसे भी बहुतसे लोग कम होकर सिर्फ़ १५० सवार, ३०० रुहेले और २२

तोपें रहगई थीं. इस थोड़ीसी फ़ौजके साथ उसको आंबाकी हिफ़ाज़त, कैम्पके बचाव और सामान पहुंचानेके गार्ड तथा तमाम लश्करके लिये घास वगैरहका बन्दोबस्त करना पड़ा.

लखवा और टॉमसके दर्मियान कई लड़ाइयां हुईं, जिनमें टॉमसने अक्सर फ़त्ह पाई, और कई वार उसने दुश्मनको कैम्पकी तरफ़ पीछा हटा दिया; बल्कि एक मौक़ेपर तो ऐसी तेज़ीसे हमलह किया, कि लखवा सख्त शिकस्त पानेसे थोड़ा ही बच गया. उसने अपनी कुल फ़ौज कैम्पसे निकालकर टॉमसपर, जिसके पास सिर्फ़ दो ही पल्टनें थीं, हमलह किया, इसलिये मज्बूर होकर उसे पीछा हटना पड़ा; लखवाने कैम्पतक उसका पीछा किया, लेकिन् उसी मौक़ेपर एक वारगी ३ पल्टनों और कुछ गोले बारूदकी मदद आ पहुंचनेके सबब टॉमसने पीछा करने वालोंपर अचानक हमलह कर दिया, और उन्हें अच्छी तरहसे रोका. लखवा अपने बहुतसे आदमियोंका नुक्सान होजानेसे घबराकर पीछा फिरा, और लश्करमें इस क़द्र अब्तरी होगई, कि वह सिर्फ़ रातके अंधेरेके सबबसे ही शिकस्त पानेसे बचा, वर्नह उसे पूरा नुक्सान उठाना पड़ता. दोनों कैम्पोंके दर्मियान एक नाला था, जिसके उत्तर तरफ़ लखवाकी फ़ौज और दक्षिण तरफ़ आंबा व टॉमसकी फ़ौज थी. आंबाने लखवाके तोपख़ानहसे बचनेके लिये, जो उसके ऊपर फ़ाइर करना चाहता था, नालेके उत्तर तरफ़ एक मज्बूत मोर्चा बनाया; लेकिन् फ़ौजके ख़ास गिरोहसे ज़ियादह दूर होनेके सबब हमलेकी हालतमें मदद नहीं पहुंच सक्ती थी, इसलिये उसकी हिफ़ाज़तके वास्ते तीन गिरोह सिपाहियोंके, छ: तोप और एक हज़ार गुसाईं तईनात किये गये, और इनकी मददके वास्ते तीन गिरोह थोड़ी थोड़ी दूरीपर पीछेकी तरफ़ रक्खे गये. चौबीस घंटेतक ख़ूब बारिश हुई, जिससे दो बड़े तालाब किनारेतक भरकर पानी बह निकलनेके सबब नालेमें पानी बहुत बढ़ गया, और दोनों लश्करोंके बीचकी आमद रफ्त बन्द होगई.

लखवाने यह मौक़ा पाकर ऊपर बयान किये हुए मोर्चेपर बड़ी तेज़ीसे धावा किया, उसके आदमी हमलह करनेको गले तक पानीके भीतर चले गये, यह बहादुरी देखकर मोर्चेके सिपाहियोंकी हिम्मत पस्त होगई, और वे एक गोली भी नहीं चला सके थे, कि ताबे होगये; लेकिन् गुसांइयोंने ताबे होनेसे इन्कार किया, और बड़ी बहादुरीके साथ मुक़ाबलह करके मारे गये, आंबाकी बहुतसी फ़ौज भाग गई. लखवाने शाहपुराके राजाको भी टॉमसका दुश्मन बना दिया, ताकि उसे रसद वगैरहकी मदद न मिल सके. इस वक़्त टॉमसके पास बीस दिनका और आंबाके पास सिर्फ़ तीन ही दिनका सामान था, इसलिये कुछ दिक़्क़त हुई. अगर उन (आंबाकी फ़ौज) को टॉमसकी मददके बिना पीछा हटना पड़ता, तो ज़रूर था, कि उनका चालाक और होश्यार दुश्मन उनके टुकड़े टुकड़े करडालता.

टॉमसको गोले बारूदकी तक्लीफ़ थी, क्योंकि उसका बहुतसा सामान बीस (१) कोसके फ़ासिलेपर सांगानेरमें रहगया था; ज़ियादह फ़ासिलेके सबब थोड़ेसे आदमी सामान लानेके लिये नहीं भेजे जासके थे, और ज़ियादह आदमी भेजना मुम्किन न था, इसलिये उसने खुद कूच करना और ज़रूरी सामान लेकर अपने पहिले मक़ामपर वापस जाना मुनासिब समझा, लेकिन् आंबाके बहुतसे घायल और बीमार आदमी वहां पड़े रह गये थे, इसवास्ते टॉमसने अपनी ज़ाती नेकी और सख़ावत से उनको सवारी ख़र्चके लिये रुपया दिया. लखवाकी फ़ौजके एक गिरोहने उसका पीछा किया, परन्तु उसको कई बार हैरान और परेशान होकर पीछा छोड़ना पड़ा. इसके बाद टॉमसने बाक़ी सफ़र बे खटके तै किया. पहिले लिखा गया है, कि आंबाने टॉमसके क़ब्ज़ेपर हमलह करनेकी इजाज़त दी थी, और इस ग़लतीको वह जानता भी था, क्योंकि टॉमसने हमेशह ईमान्दारीके साथ उसकी नौकरी की थी. आंबाने इन हमलोंका इल्ज़ाम 'पेरन' पर लगाया.

हक़ीक़त तो यह है, कि आंबा और पेरन दोनोंने यह विचार लिया था, कि लखवाने मेवाड़ तो ख़ाली कर ही दिया है, अब टॉमसकी नौकरीका कुछ काम नहीं; इसलिये यह मौक़ा उसके इलाक़े छीन लेनेके लिये अच्छा है, लेकिन् उसकी दिलेरी और हालकी लड़ाईमें अपनी ख़ैरख़्वाही ज़ाहिर करनेसे बड़े शर्मिन्दह हुए और अपने बद इरादोंसे बाज़ रहे. टॉमसने इस बद सुलूकीसे अपनी नाराज़ी ज़ाहिर करना मुनासिब समझकर उसके ज़िले वापस देदिये, जिससे मुआमलह तै होगया.

सांगानेरमें पहुंचने बाद गोला बारूद वग़ैरह कुल सामान दुरुस्त करके टॉमस फ़ौरन् लखवाकी तरफ़ चला, जिसने सांगानेरसे बीस कोसपर पूर्वोत्तरकी तरफ़ एक क़िलेको घेर रक्खा था, और उसने धीरे धीरे अगरचन्द महताके इलाक़ह (पर्गनह मांडलगढ़) में होकर उस सर्दारको सज़ा देना मुनासिब समझा, जिसने कि देशी लोगोंको ऐसे मौक़ेपर उसके बख़िलाफ़ बहका दिया था.

टॉमस थोड़े दिनोंमें लखवाके कैम्पसे क़रीब बारह मीलके फ़ासिलेपर पहुंचा, जिसपर दूसरे दिन सुब्हको हमलह करना चाहता था, लेकिन् लखवाने अपनी कमज़ोरी पर ख़याल करके उस क़िलेको छोड़दिया, जिसपर कि उसने घेरा डाल रक्खा था, और दो मंज़िल चलकर अजमेरके सूबेमें दाख़िल होगया. दौलतराव सेंधियाकी चिट्ठियां टॉमसके नाम आगई थीं, कि लखवाको फ़र्मांबर्दार बनाकर लड़ाई ख़त्म करो. लेकिन् इन

(१) यह फ़ासिलह फ्रैंक्लिन साहिबने अंदाज़हसे लिखदिया है, वर्नह अस्लमें १२ कोसके अनुमान है.

ख़तोंका जवाब टॉमस बराबर यही देता रहा, कि मैं आंबाका नौकर हूं, उसके हुक्मके सिवा किसी दूसरेका हुक्म नहीं मान सक्ता, और उसका हुक्म बराबर यही आता रहा है, कि जब-तक लखवा उदयपुरका इलाक़ह न छोड़ देवे लड़ाई बन्द न करो.

यह मुराद अब पूरी होगई, इसलिये टॉमसने महसूल जारी करना शुरू किया, कि गुज़श्तह लड़ाईका ख़र्च आंबाको चुका देवे. उसने चार लाखके क़रीब रुपया एकठा करलिया, जो ख़र्चसे बहुत ज़ियादह था. अगर पेरन साहिब उस वक्त उस अह्दनामहको, जो आंबाके साथ हुआ था; न तोड़ता, तो वह इससे भी ज़ियादह रुपया जमा कर सक्ता था. इस अह्दनामहकी यह शर्त थी, कि अगर सेंधिया लखवाको दोबारह इख़्तियार देना मुनासिब समझे, तो वे दोनों मिलकर काम करें. इस तरहसे उन दोनोंके दरजे ज्योंके त्यों बने रहेंगे. यह भी शर्त थीं, कि मेवाड़ आंबाके क़ब्ज़हमें रहे. पेरन इस समय आंबासे डाह रखने लगा, और उसने लखवाके साथ पोशीदह तौरपर एक अह्दनामह कर लिया. सेंधियाकी चिट्ठियां पेश की गईं, जिनमें लिखा था, कि आंबा मेवाड़से फ़ौज हटा लेवे, और लखवा उसके इलाक़हपर क़ाबिज़ रहे. पेरनने आंबाको सलाह दी, कि इस हुक्मकी तामील करो, वर्नह लखवाकी मदद करके ज़बर्दस्ती उसके इलाक़े दिलाऊंगा. इस हालतमें आंबाने अपने तहसीलदारों व टॉमसके नाम चिट्ठियां लिखीं, कि मुल्क मुतनाज़ह छोड़कर फ़ौज हटा लो. टॉमसने तामील की. पेरन जयपुरको गया, आंबा पीछे रहा, और थोड़े ही दिनोंमें टॉमसको दतियाकी तरफ़ भेजना चाहा, वह उस तरफ़ जानेकी तय्यारी कर रहा था, कि एक दूसरा हुक्म उसके नाम आंबा और लखवा दोनोंकी फ़ौजमें शामिल जा मिलनेकी बाबत आया. टॉमसको कुछ दग़ाबाज़ीका शुब्ह मालूम हुआ, कि लखवा मेरी बर्बादीका मौक़ा ढूंढता है, इस-लिये वह उस हुक्मको न मानकर उत्तरकी तरफ़ चला गया.

लखवाने एक फ़ौज टॉमसको सज़ा देनेके वास्ते भेजना चाहा, लेकिन् ज़ुरूरतके मुवाफ़िक़ रुपया जमा न कर सका. टॉमसने अजमेरके सूबेमें, जिधरसे सफ़र कर रहा था, बहुतसा रुपया जमा किया, और अपने तईं ज़ाहिरा लखवाका दुश्मन समझा. इस वक्त उसकी हालत बहुत नाज़ुक होगई थी, लखवाकी फ़ौज सिर्फ़ बीस कोस फ़ासिले पर पूर्वकी तरफ़ थी; जयपुरकी फ़ौज उसके साम्हने थी, और पेरन उसको नुक्सान पहुंचानेकी कोशिशमें लगरहा था. मेवाड़के पहाड़ी इलाक़हके ख़राब पानीसे उसकी फ़ौजका तिहाई हिस्सह बीमार था, लेकिन् लखवाकी फ़ौज नाफ़र्मांबर्दार होरही थी, और महाराजा जयपुर व पेरन साहिब, कर्नेल कॉलिंस, अंग्रेज़ी एल्चीकी मौजूदगीसे डरगये थे, जोकि विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] के

अख़ीरमें पहुंचा था, कि अवधके बनावटी नव्वाब वज़ीर अलीको मांग लेवे. इस हालतमें टॉमस उसकी तरक़ीको रोकनेकी हर एक कोशिश तै करके दो लाख रुपया जमा करने बाद अपने .इलाक़हमें आराम करनेके इरादहसे पहुंच गया था, लेकिन् ज़ियादह आराम न ले सका; मालगुज़ारी तह्सील करनेके लिये जो फ़ौज छोड़ी गई थी, वह भी आ-मिली; अब वह मरहटोंका फ़साद तै होजानेके सबब पंजाबमें जाकर पटियालेके साहिब-सिंहको सज़ा देना चाहता था, जिसने साल गुज़श्तहमें टॉमसके साथ पोशीदह ख़त किताबत करनेके बाइस अपनी बहिनके साथ बद सुलूकी की थी, और उसकी ग़ैर मौजूदगीमें, जब कि वह मेवाड़के .इलाक़हमें था, उसके ज़िलोंमें लूट मार मचा रक्खी थी, लेकिन् उस (पटियालाके) सिक्ख सर्दारने कुछ गांव और थोड़ासा नक्द रुपया देकर दुश्मनी दूर की. इसके बाद टॉमस बीकानेरके राजाकी तरफ़ चला, जिसने अख़ीर झगड़ा ख़त्म होनेपर जयपुरके महाजनोंके नाम झूठी हुंडियां दी थीं, इस वक़ उस राजाने अपने पड़ौसी भाटियोंसे, जिनके साथ उसकी बहुत दिनोंसे ना इत्तिफ़ाक़ी चली आती थी, कुछ काम निकाला."

ज्यॉर्ज टॉमस, जो राजपूतानहमें ज्याज फ़िरंगीके नामसे मश्हूर है, जब मेवाड़में घुसा, तो उसने देवगढ़, आमेट, कोशीथल वग़ैरह आंबाके बहुतसे मुख़ा-लिफ़ सर्दारोंके ठिकाने बर्बाद किये. उसने सांगानेरसे रवानह होकर इस किताबके लिखने वाले (कविराजा श्यामलदास) के गांव ढोकलियाको भी बड़ी सख़्तीके साथ लूटा; जिसमें क़रीबन पचास हज़ार रुपयेका माल उसके हाथ लगा था. इस मारिकेमें, जो लोग मौजूद थे, उनकी ज़बानी मैंने सुना है, कि वह अंग्रेज़ लुटेरा होनेपर भी मुन्सिफ़ मिज़ाज था. जब हमारे पुरोहित (ब्राह्मण नाथा सोती) ने उससे जाकर कहा, कि इस मन्दिरमें हमारे ठाकुरोंका ज़नानह, और गांवकी औरतें धन माल छोड़कर बैठी हैं, अगर आपकी फ़ौजके सिपाही मन्दिरके अन्दर जाना चाहेंगे, तो हम उन औरतोंको मारकर सौ दो सौ आदमी कट मरेंगे. उस नेक ख़याल अंग्रेज़ने एक गार्ड भेजकर हुक्म दे दिया, कि कोई शख़्स उस मन्दिरके पास न जाने पावे. यह धावा आंबाके दोस्त जोगीराम कान्हावतकी अदावतसे हुआ, जो पहिलेसे हमारे पूर्वजोंके साथ मुख़ालफ़त रखता था.

इन दिनोंमें महता अगरचन्दने प्रधानेका कुल कारोबार अपने बड़े बेटे देवीचन्दको देकर मांडलगढ़में रहना इख़्तियार किया था. विक्रमी १८५६ पौष शुक्ल ५ [हि० १२१४ ता० ४ शअ्बान = .ई० १७९९ ता० ३१ डिसेम्बर] के दिन वहांसे उसके गुज़र जानेकी ख़बर मिली, महाराणाको

इस खैरख्वाह प्रधानके जहानसे उठ जानेका बहुत रंज हुआ, क्योंकि वह विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] से विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] तक बराबर अपने स्वामीका खैरख्वाह बना रहा; अल्बत्तह वह दोनों पार्टियोंमेंसे चूंडावतोंका तरफ़दार गिना जाता था, लेकिन् अपने मालिकके नुक्सानमें कभी शरीक नहीं हुआ. वह अपने चारों बेटोंको अपनी जिन्दगीमें यही नसीहत करता रहा, कि मैं खैरख्वाहीके सबब छोटे दरजेसे बड़े रुतबेको पहुंचा हूं, इसलिये तुम लोग भी, चाहे कैसी ही तक्लीफ़ें क्यों न उठानी पड़ें, हमेशह अपने मालिकके खैरख्वाह बने रहना, इसीमें तुम्हारी नेकनामी और इज़्ज़त है.

इस शख़्सने बड़ी बड़ी तक्लीफ़ें उठाकर मांडलगढ़के क़िलेको ग़नीमोंके पंजेसे बचाया, और उस पर्गनेके राजपूत व मीणा वग़ैरह लोगोंकी बड़ी बड़ी जमइयतें लेकर फ़ौरन् महाराणाकी ख़िद्मतमें हाज़िर होता रहा. यह स्वामिभक्त मुसाहिब प्रधानेका ख़िताब मिलने, और उस उह्देसे बर्तरफ़ किये जानेपर भी, दोनों हालतोंमें अपने मालिकका खैरख्वाह बना रहा. इस किताबके मुसन्निफ़का प्रपितामह मयाराम भी इस खैरख्वाह प्रधानका सलाहकार गिना जाता था. उसकी नेक नसीहतका असर उसकी औलाद पर भी बना रहा, और महाराणाने भी उसके ख़ानदानकी इज़्ज़त बढ़ाने व पर्वरिश करनेमें कमी न की; हर एकको जुदी जुदी जागीरें और समय समयपर उह्दे दिये.

विक्रमी फाल्गुन् कृष्ण १० [हि० ता० २३ रमज़ान = ई० १८०० ता० १८ फ़ेब्रुअरी] को भींडरके महाराज मुह्कमसिंहका इन्तिक़ाल होगया. यह शख़्स भी अपने मालिकका खैरख्वाह और मुल्कको तरक़ी देनेवाला था. अगर्चि इसका चूंडावतोंसे मुक़ाबलह होनेके समय मुल्कमें तबाही फैली, लेकिन् जब यह मुसाहिब बना, तो महाराणाके ख़ालिसेको बढ़ाने और मुल्की फ़साद दूर करनेकी कोशिश करता रहा. यदि ये दोनों पार्टी एक होकर मुल्कको तरक़ी देना चाहतीं, तो यह ज़मानह भी महाराणा संग्रामसिंहके अह्दका नमूनह बन सक्ता था, लेकिन् आपसकी अदावत और फूटसे हिन्दुस्तानमें बड़ी बड़ी ख़राबियां पैदा हुईं, और उसी फूटने महाराणा दूसरे जगत्सिंहके समय से मेवाड़में भी पैर जमाया. यह कुद्रतका तमाशा है, यदि कोई शख़्स ज़मानहके फेरफारको देखना चाहे, तो तवारीख़की सैर करनेसे उसको अच्छी तरह मालूम हो सक्ता है. इन दिनोंमें रावत् भीमसिंह और रावत् अर्जुनसिंह भी इस दुन्यासे कूच करगये, जिससे कुछ दिनोंके लिये दोनों तरफ़का फ़साद ठंढा होगया.

विक्रमी १८५७ [हि० १२१५ = ई० १८००] में जहाज़पुरका क़िला

भी, जो लखवाने शाहपुरेसे (१) छीनकर महाराणाके ख़ालिसेमें मिला लिया था, महता अगरचन्दके बड़े पुत्र महता देवीचन्दकी सुपुर्दगीमें किया गया. यह काम भी बहुत ठीक हुआ, क्योंकि अगर ऐसे ख़ैरख़्वाह आदमीके तह्तमें यह सर्हदी क़िला न रक्खा जाता, तो संभव था, कि कोई ग़नीम या सर्हदी मुख़ालिफ़ उसपर क़बज़ह करके मुल्कका एक बड़ा हिस्सह रियासतसे जुदा करलेता; अलावह इसके और भी कई तरहके फ़ायदे थे, जिनमेंसे सबसे बढ़कर यह था, कि उस ज़िलेमें राजपूत, मीणे, व गूजर हज़ारों लड़नेवाले आदमियों की आबादी होनेसे वक़्पर रियासतको फ़ौजी मदद मिल सक्ती थी. हक़ीक़तमें अगरचन्द और देवीचन्दने इन ज़िलोंको हाथसे न जाने दिया, वर्नह पेश्तर इनपर कई तरहके ख़तरे गुज़र चुके थे. यदि महाराणा और उनके ख़ैरख़्वाह मुसाहिबोंकी कोशिशसे ये दोनों गिरोह एक होजाते, तो बहुत कुछ मुल्की फ़ायदह करते. अगर्चि इस फूटकी बुन्याद तो पहिलेसे ही जमगई थी, जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, लेकिन् इस समय उसको ज़ियादह तरक़्क़ी देनेवाला ज़ालिमसिंह झाला था, जो दोनों फ़रीक़ोंको आपसमें लड़ानेकी कोशिश करता रहा, क्योंकि इसमें वह अपना फ़ायदह जानता था, जैसा कि कर्नेल टॉडने लिखा है.

विक्रमी १८५८ माघ कृष्ण १० [हि० १२१६ ता० २४ रमज़ान = ई० १८०२ ता० २९ जैन्युअरी] को नाथद्वारेके गोस्वामी श्री गोवर्द्धननाथकी मूर्तिको उदयपुर लेआये, जिसका हाल इस तरहपर है, कि जब जशवन्तराव हुल्कर फ़ौज समेत नाथद्वारेके क़रीब आ पहुंचा, और उसका इरादह हुआ, कि इस देवस्थानकी दौलत लेलेवे, तो यह सुनकर उक्त गोस्वामीने एक पत्र महाराणाके नाम भेजा, जिसपर महाराणाने देलवाड़ेके राज कल्याणसिंह झाला, कूंठवाके ठाकुर विजयसिंह चूंडावत सांगावत, आगरयाके ठाकुर राठौड़ जगत्सिंह जैतमालोत, मोईके जागीरदार अजीतसिंह भाटी, साह एकलिंगदास बोल्या, तथा जमादार नाथू सिंधीको मए जम्इयतके नाथद्वारेकी तरफ़ रवानह किया. ये लोग वहां पहुंचकर गोस्वामी और श्री गोवर्द्धननाथ, विठ्ठलनाथ तथा नवनीतप्रिय आदिकी मूर्तियोंको लेकर चले; इसी मौक़ेपर कोठारियेका रावत् विजयसिंह चहुवान भी मददके लिये आ पहुंचा. इन लोगोंका पहिला मक़ाम ऊनवास गांवमें हुआ, जो पहाड़ोंके घेरमें है. आगेकी तरफ़ कुछ ख़तरा न जानकर विजयसिंहने रुख़्सत ली, रास्तेमें जशवन्तराव हुल्करकी फ़ौजने उस बहादुर सर्दारको घेरकर कहा, 'कि घोड़े व शस्त्र दे जाओ. उस शूर-वीरको यह बात नागुवार गुज़री, और उसने अपने घोड़े क़त्ल करके क़दीम

(१) शाहपुराके राजाने कुछ दिनों पहिले इस क़िलेमें क़बज़ह करलिया था.

रवाजके मुवाफ़िक़ पैदल होकर दुश्मनोंपर हमलह कर दिया. अगर्चि ग़नीमकी फ़ौजके हज़ारों आदमी थे, लेकिन् विजयसिंहकी बहादुरीपर वे चारों तरफ़से शाबाश! शाबाश!! बोलते, और अपनी जानका ख़तरा समझे हुए थे; परन्तु हज़ारों आदमियोंके दलमें यह अपने थोड़ेसे राजपूतोंकी जम्इयतसे क्या करसक्ता था, आख़िरकार उन बहादुर राजपूतों सहित लड़कर वहीं मारा गया.

श्री गोवर्द्धननाथकी मूर्तिको लेकर गोस्वामी घसियार (१) ग्राममें पहुंचा, महाराणा उन्हें पेश्वाई करके ऊपर लिखी हुई तारीख़को उदयपुरमें ले आये. यहां वह दस महीनेतक ठहरे और घासियारमें मन्दिर व क़िला बनने के बाद मूर्ति सहित वहां जा बसे. विक्रमी १८६४ [हि० १२२२ = ई० १८०७] में गोस्वामी महाराज मूर्तिको घसियारसे नाथद्वारेको लेगये. जशवन्त-राव हुल्करने नाथद्वारेके लोगोंपर बड़ी सख्तियां करके रुपया लेने बाद भींडर पर भी दबाव डाला. इन बातोंको देखकर महता अगरचन्दके नाइब महता मौजीरामने, जो उस समय प्रधान बना था, महाराणासे अर्ज़ की, कि अब क़वाइद जानने वाली जंगी फ़ौज भरती करके उसका ख़र्च मेवाड़के सर्दारोंसे वुसूल करना चाहिये. यह बात सुनकर मेवाड़के सर्दारोंने मौजीरामको प्रधानेसे ख़ारिज करादिया, और उसकी जगह साह सतीदासको वज़ीर बनाकर उसके भाई शिवदासको कोटासे बुलाया, जो चूंडा-वतोंके ख़ौफ़से ज़ालिमसिंहके पास भाग गया था. इन्हीं दिनोंमें आंबा एंगलियाका भाई बालेराव और ज़ालिमगिर गुसाईं व ऊदा कंवर (२) आये, और विक्रमी १८५८ फाल्गुन् [हि० १२१६ शव्वाल = ई० १८०२ मार्च] में वे तीनों शख़्स महाराणाके साम्हने सख़्त कलामी करनेके क़ुसूरपर क़ैद किये गये. ज़ालिमसिंह झाला कोटेसे एक फ़ौज लेकर मेवाड़की तरफ़ रवानह हुआ, वह चाहता था, कि महाराणा इन तीनों मरहटोंको छोड़ देवें, लेकिन् इसके बर्ख़िलाफ़ चूंडावत सर्दार इस बात को न मानकर ज़ालिमसिंहकी सज़ादिहीके वास्ते मए फ़ौजके उदयपुरसे रवानह हुए. महा-राणा तो दोनों फ़रीक़ोंको ख़ुश रखना चाहते थे, वह इसवक़्त ज़ाहिरा चूंडावतोंके साथ मुक़ा-बलहको तय्यार होगये, और ख़ानगीमें ज़ालिमसिंहको कहला भेजा, कि तुम थोड़ासा मुक़ा-बलह करना, जिससे हम चूंडावतोंको धमकाकर बालेरावको छोड़ देंगे. और ऐसा ही हुआ,

---

(१) यह स्थान उदयपुरसे वायव्य कोणमें ६ कोसके फ़ासिलेपर है, इसका सविस्तर वृत्तान्त नाथद्वारेके हालमें लिखा जायेगा.

(२) मरहटे लोग ग़ुलामको कंवर कहते हैं.

कि महाराणा मए चूंडावत सर्दारों व फ़ौजके नाहर मगरेके क़रीब मुख़ालिफ़ोंकी फ़ौजके मुक़ाबिल पहुंचे, और तर्फ़ैनसे तोपोंके गोले चलने लगे. उस वक़ यह अपने सर्दारोंको घबराये हुए देखकर लौट आये, लेकिन् चूंडावत सर्दारोंने बदनामी उठानेपर भी अपने पुश्तैनी दरजेको न छोड़ा, याने लड़ाईके वक़ हरावलमें थे, उसी तरह भागते वक़ भी हरावलमें होलिये. चेजाके घाटेमें थोड़ासा मुक़ाबलह होनेपर महाराणाने ज़ालिमसिंहको बुला लिया, और उसने भी बड़ी नर्मीके साथ कहा, कि मैंने अपने मालिकसे गुस्ताख़ी की, उसका क़ुसूर मुआफ़ होना चाहिये. महाराणाने उसकी ख़ातिर की और तीनों मरहटोंको उसके सुपुर्द किया.

सेंधियाने हुल्करको बड़ी भारी शिकस्त देकर मेवाड़तक उसका पीछा किया था, और वह जयपुरकी तरफ़ भाग गया, लेकिन् सेंधियाके अफ्सरोंने महाराणासे भी तीन लाख रुपया गहना व जवाहिरात बिकवाकर वुसूल किया, और लखवाको हुकूमतसे ख़ारिज करदिया. वह विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = .ई० १८०२] में सलूंबरके एक मठमें मरगया. अब ज़ालिमसिंह झालाकी बात तेज़ होगई, और वह इस वक़ महाराणाकी ख़ैरख़्वाही छोड़कर मेवाड़की बर्बादीको अपनी आंखसे बे फ़िक्रीके साथ देखने लगा. साह सतीदास प्रधान और बालेराव मेवाड़की हुकूमत लेकर चूंडावतोंको ज़लील करनेपर मुस्तइद हुए.

विक्रमी १८६२ [हि० १२२० = .ई० १८०५] में हुल्कर और सेंधिया, दोनों मेवाड़में बदनोरके क़रीब ठहरे और गवर्मेएट अंग्रेज़ीके ख़ौफ़से आपसमें दोस्त बनकर अपने बचावकी तद्बीरें सोचने लगे. लेकिन् उनकी कोई हिकमत न चली; उधर अंग्रेज़ोंने मरहटोंपर तबाही डाली, और इधर मरहटोंने मेवाड़की ख़राबी की. इस वक़ पूर्वोत्तरी हिन्दुस्तानसे मरहटोंका दख़्ल उठ गया था, और नर्मदासे दक्षिण तरफ़ भी अंग्रेज़ी निशान उड़ रहे थे. हुल्कर और सेंधियाने अंग्रेज़ोंसे मुक़ाबलह करनेके लिये यह तद्बीर सोची, कि मेवाड़के क़िलों और पहाड़ोंमें अपने बाल बच्चे तथा सामानको हिफ़ाज़तसे रखकर अंग्रेज़ोंसे लड़ें. इस वक़ महाराणाकी तरफ़से रावत् सर्दारसिंह सेंधियाके लश्करमें एल्ची था, और सेंधियाको उसका मुसाहिब आंबा एंगलिया मेवाड़का दुश्मन बनकर यही सलाह देता था, कि मेवाड़का राज मरहटे सर्दारोंमें तक्सीम करदिया जावे, लेकिन् सर्दारसिंहके मददगार दौलतराव सेंधियाकी स्त्री बेजाबाईकी मददके सबब आंबाकी ख़्वाहिश पूरी न होसकी. रावत् संग्रामसिंह व कायस्थ कृष्णदास महाराणाके भेजे हुए हुल्करके दर्बारमें मोतमद थे. जब आंबाका ज़ियादह ज़ोर शोर देखा, तो रावत् सर्दारसिंह हुल्करके लश्करमें अपने

दुश्मन रावत् संग्रामसिंहसे आ मिला. इन दोनों सर्दारोंने अपने मालिककी ख़ैरस्वाही के लिये आपसकी ख़ानगी दुश्मनी छोड़कर जशवन्तराव हुल्करको अपना मददगार बनाया, और उसे यह कहनेके अलावह, कि क्या आपने आंबाको मेवाड़का मुल्क बेच दिया है, कि वह अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ रिआयापर ज़ुल्म करता है ! इसी क़िस्मकी और भी कई बातें कहीं, जिन्होंने जशवन्तरावके दिलपर बहुत कुछ असर किया, और उसने सर्दारसिंह व संग्रामसिंहको तसल्लीके साथ यह कहकर, कि आंबाकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ कुछ न होगा, तुम दोनों आपसकी दुश्मनी छोड़कर एक हो जाओ, उन दोनों सर्दारोंको अफ़ीम दी, और आपसमें इत्तिफ़ाक़ करादिया. हुल्करने सेंधियासे कहा, कि मेवाड़के ख़ानदानका बड़प्पन बर्बाद करना ईमान्दारीके बर्ख़िलाफ़ है, क्योंकि महाराणा हमारे मालिकोंके (१) मालिक हैं; और इसके सिवा यह भी कहा, कि जितने मुल्क क़दीमसे महाराणाके हैं, वे सब छोड़कर लाज़िम है, कि उनके साथ दोस्ती पैदा करें, और मेवाड़के क़िलोंको अपना क़ियामगाह बनाकर अंग्रेज़ोंसे लड़ें.

इसके बाद हुल्करने, मेवाड़के कुल ज़िले, जो उसने अपने क़बज़ेमें ले लिये थे, छोड़ दिये (२). यह बात सेंधियाके दिलपर भी जमगई, लेकिन् बर्सात शुरू होजानेके कारण दोनों मरहटे सर्दारोंके बीच दोबारह बात चीत करनेका मौक़ा न मिला. इसी अर्सेमें हुल्कर के ख़बर नवीसका एक ख़त उस (हुल्कर) के पास इस मज़्मूनका पहुंचा, कि लॉर्ड लेक के कम्पू में महाराणाका एल्ची भैरवबख़्श आया है, वह यह कहता है, कि जो अंग्रेज़ी फ़ौज टौंकमें मुक़ीम है, मेवाड़में आकर मरहटोंको निकाल देवे. इस ख़तके पढ़ते ही जशवन्तराव आग होगया, और उसने सर्दारसिंह व संग्रामसिंहको बुलाकर वह काग़ज़ दिखाया. मेवाड़के

---

(१) हुल्कर व सेंधियाका मालिक पेश्वा, और उसके मालिक सितारा वाले थे, जो महाराणाके ख़ानदानकी एक शाखामेंसे गिने जाते थे.

(२) हुल्करने नीबाहेड़ा छोड़ देनेकी बाबत महाराणाके नाम एक काग़ज़ लिख भेजा था, जिसकी नक़ल यहांपर दर्ज कीजाती है:—

स्वस्तिश्रीमन्निपलनिगदितलीलोमारमणचरणशरणमहाराणाजी श्री भीमसिंहजी जोग्य, लिखतं महाराज धिराज़ राज राजेश्वर महाराज सूबेदारजी श्री जशवन्तरावज़ी हुल्कर आलीजाह बहादुर केन श्री वंचजो, अठाका समाचार श्री जीकी कृपाकर भला छे, आपका सुख समाचार सदा भला चाहिजे, तो परम संतोष हो, अप्रच आपकी तरफ़सूं याद आई, सो ठाकुर अजीतसिंहजीके विद्यमान मोकलसी वा क़रार करदीनी वा नीबाहेड़ाकी तुरंत छोड़ चिट्ठी लिखा भेजी है. यादमें मोकलसी करार किया, जी परमाणे अठासूं तफावत न पड़शी; परन्तु दोनों तरफकी निभाकी रपड़शी, अठे सारा भला वेव्हार आपहीका जाण कृपा पत्र हमेशा लिखावता रहोगा जीज़ारकी यह म चैत्र सुद २ संवत १८६०.

वकील कृष्णदास कायस्थने इस बारेमें चन्द उज़ पेश करके हुल्करका गुस्सह ठंढा किया; लेकिन् उसका वज़ीर अलीकर तांतिया बोल उठा, "कि तुम इन रांघड़ोंको ईमान्दार समझते हो, लेकिन् यह तुममें और सेंधियामें बाहम दुश्मनी पैदा कराकर दोनोंको बर्बाद करेंगे, इसलिये राजपूतोंको छोड़कर सेंधियासे इत्तिफ़ाक़ करना और सरजीरावको निकलवाकर आंबाको मेवाड़का सूबेदार बनाना चाहिये, वर्नह मैं भी तुम्हारा साथ छोड़कर सेंधियाको मालवेमें लेजाऊंगा." दूसरे सलाहकारोंने भी तांतियाकी इस बातको पसन्द किया. हुल्कर उत्तरकी तरफ़ गया, जिसको लॉर्ड लेकने पंजाबतक पीछा करके भगाया; और दोबारह मेवाड़के ज़ियादहतर ज़ेरबार होनेका वक्त आया, कि सेंधियाने १६०००००) सोलह लाख रुपया वुसूल करनेपर जयपुरकी (१) फ़ौजको उदयपुर से निकाल देनेके लिये सदाशिवरावको हुक्म देकर भेजा. अब महाराणाकी कन्या कृष्णकुंवरबाईकी शादीमें विक्षेप होने और उस निर्दोष राजकुमारीकी ज़िन्दगी ख़त्म होनेका हाल लिखाजाता है:-

यह राजकन्या महाराणा भीमसिंहकी बेटी और जवानसिंहकी सगी बहिन थी, जिसका जन्म महाराणी चावड़ीके गर्भसे हुआ था, इसका सम्बन्ध विक्रमी १८५५ [हि० १२१३ = ई० १७९८] में सलूंबरके रावत् भीमसिंहकी मारिफ़त जोधपुरके महाराजा भीमसिंहके साथ होनेकी बात चीत हुई थी; लेकिन् उक्त महाराजा विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में गुज़र गये, और महाराजा मानसिंह जोधपुरकी गद्दीपर बैठे.

कृष्णकुंवरबाईका सम्बन्ध जयपुरके महाराजासे क़रार पानेकी हालतमें लोगोंने उक्त रियासतोंमें बखेड़ा पैदा करनेकी कोशिशें करना शुरू किया. उन दिनों महाराजा मानसिंहका उमराव पोहकरणका ठाकुर सवाईसिंह जयपुरमें था, और

---

(१) महाराणाकी बहिन चन्द्रकुंवरका सम्बन्ध जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहके साथ हुआ था, जिसका ज़िक्र हम ऊपर लिख चुके हैं. इन दिनोंमें उक्त महाराजाका इन्तिक़ाल होगया, तब चन्द्रकुंवरबाईने कहा, कि मेरा पति तो वही था, जिसके साथ मेरी मंगनी हुई थी, अब मैं अपनी शेष उम्रका खातिमह वैधव्य व्यवहारके साथ करूंगी. उक्त राजकन्या प्रतापसिंहके पुत्र महाराज जगत्सिंहको अपना पुत्र जानती थी, और जगत्सिंह भी अपनी माताके तुल्य उसका सत्कार करते थे, जब मेवाड़में अधिक तर तबाही फैली, तो चन्द्रकुंवरबाईने अपनी भतीजी कृष्णकुंवर बाईका विवाह महाराजा जगत्सिंहके साथ करना चाहा, और [illegible] सिंहकी [illegible]नका विवाह महाराणासे किया जाना ठहराया. यह खानगी तहरीर होचुकी, इ[illegible] हुए [illegible] मददके लिये ३००० तीन हज़ार फ़ौज बुलाई गई थी [illegible] तो रावत.

उसने अपनी पोतीकी शादी महाराजा जगत्सिंहके साथ करनी चाही थी. यह ख़बर सुनकर महाराजा मानसिंहने उसके नाम इस मज़्मूनका एक पत्र लिख भेजा, कि तुम अपनी पोतीकी शादी महाराजाके साथ करो, तो पोहकरणमें करना, अगर जयपुरमें लेजाकर करोगे, तो राठौड़ोंकी बड़ी हतक होगी. जिसके जवाबमें सवाईसिंहने लिखा, कि मेरे भाई उम्मेदसिंहका घर जयपुरमें और गीजगढ़का ठिकाना उसकी जागीरमें है, इसलिये यहां विवाह करनेमें, तो कोई हतककी बात नहीं है, लेकिन् उदयपुरके महाराणाकी राजकुमारी, जिसका सम्बन्ध महाराजा भीमसिंहके साथ होचुका था, जयपुरके महाराजासे व्याही जाती है, इसमें अल्बत्तह कुल राठौड़ोंकी हंसी होगी: अब सम्बन्ध करनेके लिये उदयपुरसे टीकेका सामान आने वाला है, इसलिये आपको चाहिये, कि इस बातपर ज़रूर ख़याल रक्खें. यह सुनकर महाराजा मानसिंह जवानीके नशे में जोधपुरसे चढ़ निकले और कहा, कि जयपुरवालोंका क्या मक्दूर है, जो जोधपुरके महाराजाके साथ मंगनी कीहुई कन्याको विवाह लेजावें.

विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = ई० १८०६] के शुरूमें उदयपुरसे टीके का दस्तूर जयपुरकी तरफ़ रवानह कियागया था, कि जोधपुरसे महाराजा मानसिंह के उदयपुरकी तरफ़ कूच करनेकी ख़बर सुनकर जयपुरके महाराजा भी बड़ी फ़ौजके साथ मुक़ाबलेको रवानह होगये, इस कारण टीकेका सामान शाहपुरा मक़ामसे वापस लौटाया गया, और इस वक़्त जयपुर व जोधपुरके अहलकार बीच बचाव करके सुलहके साथ दोनों राजाओंको पीछे लौटा लेगये. यह हाल मुफ़स्सल तौरपर दोनों रियासतोंकी तवारीख़ोंमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ८६२ व १३१७).

दोनों राजाओंमें सुलह् होजानेके सबब पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंहका मत्लब पूरा न हुआ, इसलिये उसने जयपुर पहुंचकर महाराजा जगत्सिंहसे कहा, कि उदयपुरका सम्बन्ध न होनेसे आपकी बड़ी हतक हुई; अगर अब भी हिम्मत हो, तो हम सब राठौड़ आपके मददगार रहेंगे. महाराजाने दोबारह फ़ौजकी तय्यारी की; और बीकानेरका महाराजा सूरतसिंह व नव्वाब अमीरख़ां जयपुरके मददगार बने. महाराजा मानसिंह भी जोधपुरसे रवानह हुए, पुष्करके नज़्दीक गांव गींगोलीमें विक्रमी १८६३ फाल्गुन शुक्ल पक्ष [हि० १२२२ मुहर्रम = ई० १८०७ मार्च] में दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, कुल राठौड़ जयपुरकी फ़ौजमें आमिले, और जोधपुरके महाराजा भागकर क़िले जोधपुरमें जा छिपे. जयपुरके दीवान रायचन्दने महाराजासे कहा, कि अब आपको उदयपुर शादी करके वापस जयपुर पधार जाना चाहिये; क्योंकि हमारी फ़त्ह होगई है; सिर्फ़ वही काम बाक़ी रहा है, जिसके लिये लड़ाई कीगई, सो वह भी जल्द ही सिद्ध होना चाहिये. उक्त वज़ीरकी यह सलाह बहुत ही मुफ़ीद थी, लेकिन् ठाकुर

सवाईसिंह, जो अपना मत्लब किया चाहता था, इस सलाहमें बाधक हुआ, महाराजा ने उसका कहना मानकर जोधपुरको जाघेरा, उस वक़ अमीरख़ां पोशीदह तौरपर जोधपुर से मिलगया, इस शरूसकी दग़ाबाज़ीसे महाराजा जगत्सिंहको वापस भागना पड़ा. महाराजा मानसिंहने अमीरख़ांकी मददसे पीछा करके महाराजा जगत्सिंहको बहुत तंग किया.

दौलतराव सेंधियाने उदयपुरकी तरफ़ फ़ौजकशी करके विक्रमी १८६२ [हि० १२२० = ई० १८०५] में महाराणासे कहलाया, कि जयपुरके वकीलको, जो शादीका पैग़ाम लेकर आया है, निकाल दो, परन्तु इसकी तामीलमें देर जानकर वह खुद उदयपुरके क़रीब आ पहुंचा, और लड़ाई शुरू करदी, महाराणाने समयके अनुसार उसका कहना मंजूर करके फ़सादको दूर किया. सेंधियाकी जयपुरके महाराजासे नाराज़गी के दो कारण थे, एक तो यह, कि उसका चढ़ा हुआ ख़िराज जयपुरसे नहीं मिला था, दूसरे सेंधियाकी फ़ौज पहिले जयपुरसे शिकस्त पा चुकी थी; इस वास्ते उसने इस शादीको रोककर महाराजा जयपुरकी हतक करवाना चाहा. जब महाराणाने उसके कहनेपर अमल करके जयपुरके एल्चीको निकलवा दिया, तो वह वापस चला गया. जिस वक़ जयपुर व जोधपुरके दर्मियान लड़ाई होनेके बाद आपसमें सफ़ाई होचुकी, और अमीरख़ांने सवाईसिंह वग़ैरहको मारकर महाराजा मानसिंहका खटका मिटा दिया, तब महाराजाने नव्वाबसे कहा, कि अब एक काम और बाक़ी रहा है, उसको भी तुम उदयपुरमें पहुंचकर ख़त्म करो; क्योंकि जबतक कृष्णकुंवरबाई ज़िन्दह है, तबतक कभी न कभी फिर फ़सादकी सूरत पैदा होनेका अन्देशह है. उस ज़ालिम निर्दयी पठानने इस राक्षसी कामके करनेपर कमर बांधी, और चूंडावत ठाकुर अजीतसिंहसे, जो उसके लश्करमें उदयपुरकी तरफ़से एल्ची था, सब हाल ज़ाहिर करदिया. अजीतसिंह उसकी फ़र्माइशको कब टाल सक्ता था, लाचारीके साथ मंजूर करके उसके साथ होलिया. अमीरख़ांने उदयपुरमें पहुंचकर अजीतसिंहके ज़रीए़से महाराणाको कहलाया, कि या तो आप कृष्णकुंवरबाईको मारडालें, या महाराजा मानसिंहके साथ उसकी शादी करदें, वर्नह मैं इस रियासतको बर्बाद करदूंगा. इस पैग़ामके सुननेसे रियासती लोगोंमें एक तरहका सन्नाटा पड़गया.

अजीतसिंहने महाराणासे कहा, कि इस बातकी तामील होनेमें देर हुई, तो रियासतको बड़ा भारी सदमह पहुंचेगा. तब महाराज दौलतसिंह भैरवसिंहोत बुलाया गया, और उसे यह हुक्म दिया गया, कि ज़नानख़ानहमें जाकर उस राजकुमारीकी ज़िन्दगीका ख़ातिमह करे. यह हुक्म सुनकर दौलतसिंह अफ्सोसके आलममें ख़ामोश होगया, लेकिन् जब दोबारह कहा गया, तो वह ज़ोरसे बोल उठा, कि ऐसा बेरहमीका हुक्म सुनाने वालोंकी ज़बान कटाना चाहिये. अगर मुझको हुक्म देना है, तो अमीरख़ांके लिये दीजिये, कि इसी वक़

छातीमें खंजर मारकर उसका काम तमाम करूं, परन्तु कन्यापर घात करना मेरा काम नहीं है, यह काम तो जल्लादोंका है. यह सुनकर सब लोग चुप होरहे. इसके बाद महाराणा अरिसिंहके पासबानिये पुत्र जवानदासको हुक्म दिया गया, तब वह कटार लेकर ज़नानख़ानहमें पहुंचा, लेकिन् उस राजकुमारीको देखकर उसका भी शरीर कांपने लगा, और कटार हाथसे गिरगया. इस हालको जानकर कृष्णकुंवर बाईकी माता महाराणी चावड़ीने जवानदासको बहुतसी गालियां दीं, और लानत मलामत की, जिससे वह बाहर चला आया, तब उस निरपराध राजकुमारीको शर्बतमें ज़हर दिया गया. उसने खुशीके साथ पियाला हाथमें लेकर कहा, " कि अगर मेरी ज़िन्दगीके ख़ातिमेसे दाजीराजकी तक्लीफ़ रफ़ा हो, तो यह मौक़ा मेरे लिये ग़नीमत है," और उसे पीलिया. इसी तरह तीन दफ़ा ज़हर दिया गया, लेकिन् तीनों बार क़ैके ज़रीएसे निकल गया. चौथी दफ़ा अफ्यून पिलाई गई, जिसे भी वह खुशीसे पीगई, और परमेश्वरसे अपनी ज़िन्दगीका ख़ातिमह करनेकी प्रार्थना की. ईश्वरने वैसा ही किया, कि विक्रमी १८६७ श्रावण कृष्ण ५ [हि० १२२५ ता० १८ जमादियुस्सानी = ई० १८१० ता० २१ जुलाई] को सोलह वर्षकी उम्रमें इस राजकन्याका देहान्त होगया. कुल रणवास व रियासतमें ऐसा मातम छाया, और कोलाहल मचा, कि जिसका बयान करना हृदसे बाहिर है. हमने उस हालको यहांपर बिल्कुल घटाकर लिखा है. यदि किसीको पूरे तौरपर देखना हो, कर्नेल टॉडकी किताबमें देखे, जिन्होंने बहुतसे हालात अपनी आंखोंके देखे हुए और बहुतसे देखने वालोंकी ज़बानी सुनकर दर्ज किये हैं.

नव्वाब अमीरख़ां तो यमराजका दूत बनकर आया था, जो कृष्णकुंवरबाईका इन्तिक़ाल होनेके बाद वापस चला गया; और उक्त राजकुमारीकी माता महाराणी चावड़ीने अपनी बेटीके रंजमें अन्न जल छोड़कर अपना भी प्राण त्यागन किया. इन महाराणीके गर्भसे जो औलाद हुई थी, उसमेंसे कुंवर जवानसिंह व बाई रूपकुंवर बाक़ी रही.

जब बालेरावको महाराणाने क़ैद किया, तब झाला ज़ालिमसिंहने फ़ौज ख़र्चकी एवज़ जहाज़पुरका पर्गनह अपने क़बज़हमें करलिया, और धांगड़मऊका जागीरदार विष्णुसिंह शक्तावत, ज़ालिमसिंहकी तरफ़से जहाज़पुरका हाकिम बना. इन दिनोंमें दाणियोंकी कोटड़ीका क़िला शाहपुराके राजा अमरसिंहकी तरफ़से उसके भाइयोंके तह्तमें था, वहांके जागीरदारने कोटड़ीके भोमिया कान्हावत शेरसिंहको मारडाला, तब शेरसिंहके बेटे सूरजमल्लने झाला ज़ालिमसिंहके पास पहुंचकर अपनी कुल हक़ीक़त ज़ाहिर की, जिसपर ज़ालिमसिंहने विष्णुसिंह शक्तावतको उसकी मददके

वास्ते लिख भेजा, उसने जहाज़पुरसे चन्द तोपें और कुछ फ़ौज सूरजमल्लके साथ करदी. यह मदद लेकर उसने कोटड़ीके क़िलेको आघेरा, और विक्रमी १८६८ [हि० १२२६ = ई० १८११] में राणावतोंको निकालकर क़िलेको मिस्मार करदिया, और कोटड़ीको शाहपुरेके पट्टेसे छीनकर पर्गनह जहाज़पुरमें शामिल करादिया. ईसी तरह सांगानेर भी देवगढ़ वालोंसे छीना जाकर जहाज़पुरमें मिलाया गया. ज़ालिमसिंहका यह इरादह था, कि भीलवाड़ेसे पूर्व तरफ़का मेवाड़का हिस्सह, जो खैराड़के नामसे मश्हूर है, रियासत कोटेमें दाख़िल करलिया जावे, क्योंकि पहिले उसने मेवाड़का मुसाहिब बननेकी बहुत कुछ कोशिश की थी, परन्तु उसमें कामयाबी हासिल न हुई, तब महाराणाको दबाकर मांडलगढ़का क़िला लेना चाहा. महाराणाने ज़ाहिरदारीमें एक ख़ास रुक़ह महता देवीचन्दके नाम इस मज़्मूनका लिख भेजा, कि मांडलगढ़का क़िला ज़ालिमसिंहके हवाले करदेना; लेकिन् उसीके साथ एक सवारको उसके लिये बख़्शिश के तौरपर ढाल व तलवार देकर भेजदिया, जिसका देवीचन्दने यह मत्लब समझा, कि महाराणाने यह ख़ास रुक़ह दबावटसे लिख दिया है, वर्नह अस्लमें उन्होंने ढाल तलवार भेजकर हमको लड़ाई करनेका इशारह किया है; इसलिये उसने अपने कुल आदमियोंको क़िलेका बन्दोबस्त करनेके लिये हुक्म दिया, और उस खैरख़्वाह प्रधानकी बहादुरी व हिम्मतसे ज़ालिमसिंहका यह मनोरथ सिद्ध न होसका.

विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में ऐसा सख़्त क़हत पड़ा, कि इस तबाहीकी हालतमें वह मेवाड़के लिये मानो क़ियामतका नमूनह बनगया था, जिसमें मेवाड़की रही सही प्रजा और भी बर्बाद होगई. इस वक़ महाराणाने अपना व अपने रणवासका ज़ेवर बेचकर अपने नौकरों वग़ैरहकी पर्वरिश की.

विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = ई० १८१३] में हुल्करका मुलाज़िम नव्वाब जमशेदख़ां फ़ौज लेकर उदयपुर आया. यह शख़्स बड़ा ज़ालिम और लुटेरा था, इसने यहां आकर महाराणासे रुपया तलब किया, लेकिन् यहां तो पेश्तर से ही ख़ज़ानह ख़ाली पड़ा था, और रहा सहा ज़ेवर वग़ैरह क़हतमें ख़र्च होचुका. उस ज़ालिम लुटेरेने रुपया न मिलनेके सबब शहर और गिर्दनवाहकी प्रजापर उस वक़ बड़ी सख़्तियां कीं, कि वह ज़मानह अबतक "जमशेद गर्दी" के नामसे मश्हूर है. महाराणाने उसकी सख़्तियों और ज़ुल्मसे तंग आकर उसको अपने साथ रखकर मेवाड़के सर्दारोंसे रुपया वुसूल करनेपर राज़ी किया, और मए कुछ फ़ौज व अपने दोनों कुंवर अमरसिंह व जवानसिंहके इलाक़हकी तरफ़ दौरेको रवानह होकर राजनगर तथा दूसरे कई ज़िलोंमें होते हुए चित्तौड़ पहुंचे, जहांका क़िलेदार

रावत् धीरतसिंह बड़ी खैरख्वाहीके साथ पेश आया. इस वक्त महाराणाके पास फ़ौजी ताक़त भी बढ़गई. जमशेदखांको कहा गया, कि कुछ रुपया और वुसूल करना बाक़ी है, इसलिये छोटे कुंवर जवानसिंहको तुम्हारे साथ भेजते हैं, कि वह मेवाड़के चन्द क़िलों और ज़िलोंसे जमा करादेगा. उस लुटेरेने भी इस बातको क़ुबूल किया. महाराणाने चन्द मुसाहिबों सहित छोटे कुंवरको उसके साथ देकर बड़े कुंवर अमरसिंहको चित्तौड़की हिफ़ाज़तके लिये छोड़ा, और आप उदयपुरको चले आये.

इन दिनों महाराणाने ५०० सिपाही पठान नौकर रक्खे थे, उन्होंने अपनी तन्ख्वाह न मिलनेसे महलोंमें धरणा (१) दिया. तब महाराणाके हुक्मसे रावत् सर्दारसिंहने इस तरहपर सिपाहियोंको समझाया, कि जबतक तुम्हारा रुपया अदा न हो, मैं तुम्हारी हवालातमें रहूंगा. इसपर पठानोंने उस सर्दारको अपनी सुपुर्दगीमें लेकर धरणा उठादिया. उन दिनों साह सतीदास गांधी महाराणाका प्रधान था, उसने अपने भाई सोमचन्दका बदला लेनेकी ग़रज़से, जिसको कि सर्दारसिंहने मारडाला था, पठानोंको इशारह करदिया, इससे वे सर्दारसिंहपर सख्तियां करने लगे. एक दिन उक्त रावत्के पीनेको अफ़ीम लाई गई, उसे सिपाहियोंने ठोकर देकर गिरा दिया. यह देखकर सर्दारसिंहको उसके हमराही राजपूतोंने कहा, कि अब ज़िन्दगीकी उम्मेद छोड़ देना चाहिये, क्योंकि यह अदावत रुपयोंके लिये नहीं, बल्कि जान लेनेका उपाय है. सर्दारसिंहने इस बातको सहन करके सब्र किया, लेकिन् उसके साथ वालोंमेंसे ल्हसाड़ियाका चूंडावत लालसिंह, आटूणका पूरावत जवानसिंह और बानसीणका भाटी दौलतसिंह, तीनों राजपूत तलवारें निकालकर सिपाहियोंपर टूट पड़े और बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारे गये. उक्त राजपूतोंके मारे जाने बाद रावत् सर्दारसिंहपर ज़ियादह तर सख्ती होने लगी. फिर साह सतीदास और उसके भतीजे जयचन्दने पठानोंकी चढ़ी हुई तन्ख्वाह देकर सर्दारसिंहको अपनी हिफ़ाज़तमें लेलिया, और उसे आहड़की नदीके पश्चिमी किनारेपर पुलके क़रीब लेजाकर मारडाला. उसकी लाश तीन रोज़के बाद जलाई गई. वे पांच सौ पठान सतीदास व जयचन्दके मददगार थे, और महाराणा भी अपनी पॉलिसीके अनुसार उन्हींके सहायक बनगये. थोड़ेही अर्सेबाद नव्वाब जमशेदखां, नव्वाब दिलेरखां, शाहज़ादह खुदादादखां, बापू सेंधिया, और हिम्मत बहादुर, पांचों लुटेरोंने उदयपुरको आ घेरा. इस वक्त भी सतीदास और जयचन्दने उन मरहटोंको कुछ रुपया वगैरह देकर रुख्सत किया.

विक्रमी १८७२ [हि० १२३० = ई० १८१५] में ज़ालिमसिंह झालाकी दर्ख्वास्तपर महाराणा उदयपुरसे रवानह होकर चित्तौड़, बेगूं व भैंसरोड़ होते हुए कोटे

(१) खाना पीना छोड़कर जब कोई किसीके दर्वाज़ेपर बैठ जाता है, उसको धरणा कहते हैं.

पहुंचे, जहां महाराव उम्मेदसिंहकी कन्या किशोरकुंवरके साथ अपना, और महारावके पुत्र विष्णुसिंहकी कन्याके साथ वलीअह्द अमरसिंहका विवाह किया; इन्द्रगढ़के जागीरदार संग्रामसिंहकी बेटीके साथ छोटे कुंवर जवानसिंहकी शादी हुई. ज़ालिमसिंहने सम्बन्ध होनेसे पहिले तो बहुत कुछ मदद वगैरह देनेका वादह किया था, लेकिन् शादी हो चुकने बाद कुल वादे झूठे दिखाई दिये, तब महाराणा नाउम्मेद होकर वापस उदयपुर चले आये. इन दिनोंमें चूंडावतोंका पेच पड़जानेसे गांधियोंका फ़िर्क़ह कमज़ोर होगया था; ठाकुर अजीतसिंह, रावत् जवानसिंह और दूलहसिंहने महाराणासे हुक्म लेकर साह सतीदास प्रधानको क़ैद करलिया, और विक्रमी १८७२ कार्तिक कृष्ण १२ [हि० १२३० ता० २५ ज़िल्क़ाद = ई० १८१५ ता० २९ ऑक्टोबर] को पहर रात गयेके क़रीब रावत् जवानसिंह व दूलहसिंह उक्त प्रधानको महलोंसे दिल्ली दर्वाज़ेके क़रीब लेगये और उसका सिर काटकर रावत् सर्दारसिंहका बदला लिया. यह ख़बर सुनतेही पिछली रातके वक्त साह जयचन्द अपनी जान बचानेके लिये शहरसे भागा, लेकिन् चूंडावतोंने रास्तेहीमें ग्राम नाईके पास उसको भी पकड़कर मार डाला (१).

विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = ई० १८१६] में नव्वाब दिलेरख़ांकी फ़ौजने चित्तौड़ ज़िलेके गांवोंको बर्बाद किया. यह सुनकर विक्रमी आश्विन कृष्ण १२ [हि० ता० २५ शव्वाल = ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को कुंवर अमरसिंहने मए साह शिवलाल और रावत् दूलहसिंह वगैरहके उससे मुक़ाबलह किया, जिसमें दिलेरख़ांकी फ़ौज शिकस्त खाकर भाग निकली, और राजकुमारके साथियोंमेंसे महन्त सुखराम गिर गुसाईं, तथा बानसीणका भाटी हमीरसिंह मारा गया, रावत् दूलहसिंहको बर्छेका ज़ख़्म लगा, और ओछड़ीका शक्तावत उदयसिंह, मान्यावासका चूंडावत चतुर्भुज, राणावत गुलाबसिंह वीरमदेवोत, राठौड़ खूमसिंह, गौड़ जोधसिंह, और भाटी गुलाबसिंह वगैरह ज़ख़्मी हुए.

इन दिनोंमें गवर्मैण्ट अंग्रेज़ीकी अमल्दारी दिन ब दिन बढ़ती जाती थी, ज़ालिमसिंह झालाने महाराणाको लिख भेजा, कि अगर हुक्म हो, तो मैं अंग्रेज़ोंके साथ मेवाड़की बाबत अह्द पैमान करनेकी बातचीत करूं, लेकिन् महाराणाको ज़ालिमसिंहकी तरफ़से यह ख़ौफ़ था, कि जिस तरह उसने कोटाके महारावको बे इख़्तियार कर रक्खा है, उसी तरहका बर्ताव यहां भी करेगा, इसलिये उसको टालाटूलीका जवाब देकर जयपुरके मोतमद चतुर्भुज हल्दियाकी मारिफ़त अंग्रेज़ोंसे इस मुआमलेमें बात चीत करना शुरू किया, और ठाकुर अजीतसिंहको, जो उन दिनों कोटेमें था, लिख भेजा, कि तुम फ़ौरन् गवर्नर जेनरलके पास पहुंचकर यह मुआमलह तै करो, लेकिन्

(१) बाज़ लोग कहते हैं, कि उसको लुटेरे भीलोंने घेरकर मारडाला.

अजीतसिंहके जानेमें कुछ देर हुई. गवर्मेएट अंग्रेज़ीके साथ अह्दनामहकी शर्तें क़रार पानेके वक्त मरहटोंने मेवाड़का बहुतसा मुल्क दबा रक्खा था, उसके वापस मिलनेकी बाबत मेवाड़वालोंकी तरफ़से बहुत कुछ उज़्र किया गया, लेकिन् गवर्मेएटको सेंधियाका लिहाज़ ज़ियादह था, इसलिये इस बारेमें तवज्जुह नहीं की. विक्रमी १८७४ पौष शुक्ल ७ [हि० १२३३ ता० ५ रबीउल्‌अव्वल = ई० १८१८ ता० १३ जैन्युअरी] को गवर्मेएट अंग्रेज़ीके साथ पहिला अह्दनामह हुआ, जिसकी नक्ल अख़ीरमें लिखीजावेगी.

चन्द रोज़ पेश्तर तो मरहटोंका ज़ोर शोर और ज़ालिम पिंडारोंका ज़ुल्म ऐसा बढ़ा हुआ था, कि जिसको देखकर मेवाड़के बाशिन्दोंने इस मुसीबतके दूर होनेकी बिल्कुल आशा छोड़ दी थी, क्योंकि ये लोग मेवाड़की बर्बादी और लूटपर कमर बांधकर मुल्कमें लगातार धावा करने लगे थे. जब एक मरहटा फ़ौज लेकर मेवाड़में आता और महाराणासे रुपया तलब करता, तो उसको ख़ाली काग़ज़ लिखकर जैसे तैसे विदा किया जाता, कि इतनेमें दूसरा ज़ालिम शहरकी बर्बादीको आ खड़ा होता, जिसको रुपया अदा करनेके ज़मानह तक रुपयेके एवज़ अपने अज़ीज़ोंको सुपुर्द करके पीछा छुड़ाना पड़ता, कि एक तीसरा लुटेरा दौलत एकट्ठी करनेको और आ मौजूद होता. ऐसी हालतमें प्रजाकी खुश नसीबीसे गवर्मेएट अंग्रेज़ीका आना और एकदम अम्न फैलाकर आदमियोंके दिलोंको तसल्ली दिलाना ऐसा हुआ, कि मानो चन्द्रमा और सूर्यका ग्रहण लगने बाद एकदम अपनी अस्ली रौशनीको प्राप्त होना.

हमने जो मरहटोंके ज़ुल्मका हाल ऊपर बयान किया है, वह बहुत मुख़्तसर है, अगर किसीको मुफ़स्सल तौरपर देखना हो, कर्नेल टॉडकी किताबको पढ़े. महाराणा और सर्कार अंग्रेज़ीके दर्मियान अह्दनामह होनेके बाद जब गवर्मेएट अंग्रेज़ीका एल्ची कर्नेल टॉड मेवाड़ और ख़ास उदयपुरमें आया और उस वक्तकी हालतका बयान, जो उसने अपनी किताबमें लिखा है, उसका खुलासह हम पाठकोंके अवलोकनार्थ नीचे दर्ज करते हैं :-

"इस वक्त मेवाड़के ख़ालिसहकी आमदनी फ़स्ल उन्हालू (रबीअ) की ४०००० चालीस हज़ार रुपयेसे ज़ियादह न थी, और महाराणाके पास पचास सवारोंसे भी कम जमइयत बाक़ी रहगई थी, शहर उदयपुरमें पचास हज़ार घरोंकी जगह तीन हज़ारसे भी कम बाक़ी रहगये थे; सर्दारोंका यह हाल था, कि कोठारियाके रावत्, पचास हज़ार रुपया सालियानहकी जागीर वालेके पास चढ़नेको एक घोड़ा

तक न था, और मुल्ककी यह हालत थी, कि उदयपुरसे नाथद्वारेतक ८ रुपया सैकड़ा बीमाका लिया जाता था. आमद रफ्तकी बे इन्तिज़ामीसे एक रुपयेके ७ सात सेर गेहूं बिकते थे, लेकिन् अंग्रेज़ी अमल्दारीके आनेसे एकदम अम्न होगया; अंग्रेज़ोंका रोब हर एकके दिलपर ऐसा ग़ालिब हुआ, कि आम लोगोंका बयान था, कि अंग्रेज़ लोग बड़े जादूगर हैं, बड़ी भारी फ़ौजको जैबमें रखकर लेजा सक्ते हैं, और लड़ाईके वक़् काग़ज़के आदमियोंसे काम लेते हैं. ऐसी बे बुनूयाद अफ़्वाहसे यह फ़ायदह हुआ, कि हर एक आदमी लूट मार करनेसे किनारह करगया, और एकदम अम्न व आमान के आसार दिखाई देने लगे. जब कर्नेल टॉड गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से एजेएट बनकर मेवाड़में आये, तो मानो बे इन्तिज़ामीके अंधेरेमें अम्नके चराग़को रौशनीके साथ लाये. पिंडारे और मरहटे काफ़ूर होगये, लुटेरे लोग अपनी अपनी जगहपर ख़ामोश हो बैठे, सर्दारोंकी अदावतने मुल्कसे खेमह उठाया. "

कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "मैं जब विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = ई० १८०६] में आया था, तब भीलवाड़ेमें तीन हज़ार घरोंकी आबादी थी, जिसमें ज़ियादह तर व्यापारी लोग रहते थे, जो इस वक़् वीरान पड़ा है." उक्त कर्नेल हमारे मुल्कके ख़ैरख़्वाह बाशिन्दोंसे भी ज़ियादह ख़ैरख़्वाह थे. उनको महाराणाका नुक्सान सहन नहीं होता था. वह महाराणाके ख़ैरख़्वाहोंसे खुश और बदख़्वाहोंसे नाराज़ थे, जब वह उदयपुरमें पहुंचे, महाराणाने उनको उमराव सर्दारोंसे ऊपर बैठनेकी इजाज़त दी, और कुल उमराव सर्दारोंको तलब किया; सब एकदम हाज़िर होगये. एक दिन बड़ा दर्बार हुआ, जिसमें कुल सर्दार जागीरदार मौजूद थे. ऐसा दर्बार ५० वर्षके अरसेमें कभी न हुआ था. कर्नेल टॉडने खड़े होकर कहा, कि "महाराणा साहिब आपका जो बदख़्वाह हो, उसको मुझे बतलाइये; गवर्मेंएट अंग्रेज़ी उसे सज़ा देनेको तय्यार है." महाराणाने रहमदिली, बुर्दबारी और अक़्मन्दीसे जवाब दिया, कि "इस वक़्से पहिला क़ुसूर हमने सबका मुआफ़ किया, लेकिन् अब जो कोई करेगा, उसकी इत्तिला साहिबको फ़ौरन् होगी." महाराणाके इस बड़प्पनके जवाबको लोग आजतक याद करते हैं.

जिन लोगोंने क़ुसूर किये थे, वे ज़ियादह शर्मिन्दह हुए, मुल्कमें ख़ालिसहके ज़िलोंपर हाकिम मुक़र्रर किये गये, और एक इश्तिहार जारी हुआ, जिसके ज़रीएसे मालवा व हाड़ौती वगैरह मुल्कोंमें गई हुई रिआया वापस आने लगी. साइरका भी प्रबन्ध हुआ, व्योपारियोंको एक सालका महसूल मुआफ़ और आइन्दह क्रम क्रमसे बढ़ानेका हुक्म हुआ; सर्दारोंसे ख़ालिसहके गांव, जो उन्होंने रियासती बखेड़ोंके वक़् दबाये थे, छुड़ा लिये गये;

मुल्की आमदनीकी एक दम तरक़ी हुई. इस वक़ कर्नेल टॉड शाही मुलाज़मतके अलावह खानगी तौरपर महाराणाके मुसाहिब बनकर रियासतको सर्सब्ज़ करनेपर मुस्तइद होगये. हक़ीक़तमें मेवाड़के बाशिन्दोंकी औलादको उनका इह्सान न भूलना चाहिये, जो देशको ज़ालिमोंके पंजेसे छुड़ाकर हमारे मुहाफ़िज़ बने. जिस तरह पानीमें डूबते हुएको नाव और सूखती हुई खेतीको पानीका सहारा मिलता है, उसी तरह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका आना हमारे मुल्कमें समझना चाहिये. थोड़े ही अरसे बाद इस अम्नके वक़में महाराणाको एक बड़ा सदमह पहुंचा, कि विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = .ई० १८१८] में वलीअह्द कुंवर अमरसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जिनकी .उम्र २२ बाईस वर्षसे कुछ ज़ियादह थी. यह वलीअह्द अपने खानदानके मुवाफ़िक़ बड़े बहादुर मज्बूत और खूबसूरत थे. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि महाराणाके ९५ सन्तान हुईं, जिनमेंसे एक कुंवर जवानसिंह वारिस तख़्त व ताजका बाक़ी रहा; इनके अलावह दो बेटियां और एक पोती भी थी, जिनका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा.

कर्नेल टॉडके रहनेके लिये पहिले रामप्यारीकी बाड़ी नियत हुई थी. यह मकान शहरके भीतर है, जहां अब राज्यका तोपखानह व मेगज़िन रहता है, और जिसका थोड़ासा हिस्सह बोहिड़ाके रावत्को रहनेके लिये दिया गया है. विक्रमी १८७५ भाद्रपद शुक्ल ५ [हि० १२३३ ता० ३ ज़िल्क़ाद = .ई० १८१८ ता० ५ सेप्टेम्बर] के दिन म्हता देवीचन्दको प्रधानेका खिल्अ़त दिया गया. इस वक़ देवीचन्दने प्रधानेसे इन्कार किया, लेकिन् महाराणाने कहा, कि तुम्हारी मौजूदगी में दूसरेको प्रधाना देना बेजा है. इस सबबसे प्रधान तो मह्ता देवीचन्द ही रहा, लेकिन् काम कुल उसका भतीजा शेरसिंह करता रहा; मुख्य मुसाहिब कर्नेल टॉड थे, जिनकी सलाहके बिदून कोई काम नहीं होता था, महाराणाके खानगी सलाहकार रावत् जवानसिंह, रावत् दूलहसिंह, और ठाकुर अजीतसिंह थे.

प्रधान देवीचन्दने दो शादियां की थीं, जिनमेंसे पिछली शादी मह्ता रामसिंहकी बहिनके साथ हुई थी, इसलिये उस प्रधानका अपने सालेपर ज़ियादह भरोसा था, और रामसिंह भी लाइक़ व होशयार आदमी था, जो महाराणाके सलाहकारोंमें शामिल हुआ; साह शिवलाल गलूंड्या बड़े कुंवर अमरसिंहका एतिबारी नौकर होनेके कारण जुदा ही ढंग जमाने लगा. यह इफ़ात तफ़ीत देखकर मह्ता देवीचन्दने प्रधानेका खिल्अ़त अपने साले रामसिंहको दिला दिया.

महाराणाने अपनी दो बेटियों और एक पोतीका विवाह करना चाहा, उनमें

से अजबकुंवर बाईका सम्बन्ध बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहके बड़े कुंवर रत्नसिंहसे और रूपकुंवर बाईका जयसलमेरके रावल गजसिंहके साथ निश्चय करलिया गया; लेकिन् कुंवर अमरसिंहकी बेटी और महाराणाकी पोती कीकाबाईका विवाह भी इसी मौक़ेपर करनेका इरादह हुआ; तब महाराणी राठौड़ गुलाबकुंवरने अपनी पोतीका सम्बन्ध कृष्णगढ़के महाराजा कल्याणसिंहके कुंवर मुह्कमसिंहके साथ करनेको कहा. महाराणाने मन्ज़ूर करके चारण बारहट रामदान (१) को एक ख़ास रुक़ह लिख भेजा, कि तुम कृष्णगढ़के महाराजाके कुंवर मुह्कमसिंहका सम्बन्ध निश्चय करके विवाहके मुहूर्तसे विनायक बिठाकर जल्दी आओ; और इसी मज़्मूनका एक ख़ास रुक़ह महाराणी राठौड़ने भी उक्त बारहटको लिख भेजा. उसने हुक्मके मुवाफ़िक़ महाराजा कल्याणसिंहको कहकर विवाहकी तय्यारी शुरू करादी, और आप तीन रोज़में कृष्णगढ़से उदयपुर आया, लेकिन् पीछेसे महाराणाको मत्लबी लोगोंने बिल्कुल बर्ख़िलाफ़ करदिया, और कहा, कि कृष्णगढ़में आपकी पोतीका विवाह करना बिल्कुल बेजा है.

रामदान बारहटको यह सम्बन्ध मुआफ़ रखनेके मन्शासे कहा गया, कि तुमको कृष्णगढ़की जायदादके एवज़ पांच हज़ारकी जीविका यहां और मिलेगी, लेकिन् रामदान इस बातसे बहुत रंजीदह हुआ; वह कटार निकालकर ज़नानी ड्योढ़ीपर जा बैठा, और उसने महाराणीसे कहलाया, कि मैंने आपके लिखनेपर कृष्णगढ़के विवाहकी तय्यारी करवादी, और अब इन्कार होता है, इसलिये मैं अपनी जान आपकी ड्योढ़ीपर खो दूंगा; महाराणी भी गुस्सहमें आकर अपना और अपनी पोतीका प्राण श्री दर्बारके साम्हने देनेको तय्यार हुई. यह क्लेश देखकर महाराणाने कृष्णगढ़का सम्बन्ध मन्ज़ूर करलिया. फिर तीनों जगहोंसे बरातें आईं; जिनमेंसे दो जगहके दूल्हे तो बड़ी शान शौकत और जुलूसके साथ आये, लेकिन् जयसलमेरके रावल गजसिंह किसी ख़ानगी काममें फंसजानेके सबब लवाज़िमहके साथ जल्द न आसके, वह पिछली रातको अकेले सांडणीपर सवार होकर आये.

विक्रमी १८७७ आषाढ़ कृष्ण ८ सोमवार [हि° १२३५ ता° २१ रमज़ान = ई° १८२० ता° ३ जुलाई] को तीनों राजकुमारियोंका विवाह बड़ी धूमधामके साथ हुआ; और बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहके दूसरे कुंवर मोतीसिंहकी शादी बागौरके महाराज शिवदानसिंहकी कन्या दीपकुंवरसे हुई. इन शादियोंमें लाखों रुपयोंका इन्आम, इक्राम व त्याग बांटा गया, इसके बाद तीनों बरातें विदा हुईं.

---

(१) यह शख़्स कृष्णगढ़की तरफ़से जागीर रखता था, और मेवाड़में भी दो गांव महाराणाके दिये हुए इसके अधिकारमें थे.

विक्रमी १८७८ चैत्र शुक्ल २ [हि० १२३६ ता० १ रजब = .ई० १८२१ ता० ४ एप्रिल] को महाराणाने साह शिवलाल गलूंड्याको प्रधानेका खिल्अ़त दिया, और टॉड साहिब व महाराज सूरजमल्लको साथ देकर उसे दस्तूर के मुवाफ़िक़ मकानपर पहुंचाया. यह शख़्स महाराणाका दिली ख़ैरख़्वाह था. इन दिनोंमें सेन्ट्रल इण्डियाके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर जॉन माल्कम साहिब उदयपुरमें आये, जिनकी महाराणाने उम्दह तौरपर ख़ातिर तवाज़ो की. इसवक़ रतलामके राजा पर्वतसिंहका कुंवर बलवन्तसिंह, जो सलूंबरके रावत्‌की बेटीसे पैदा हुआ, महाराणाके पास मौजूद था, क्यौंकि रतलामके लोगोंने उसको अपने हक़से ख़ारिज करनेके मन्शापर बनावटी बयान करके उक्त राजाके दिलमें उसकी तरफ़से शक डाल दिया था; महाराणाने उस बच्चेको हाथ पकड़कर माल्कम साहिबकी गोदमें बिठादिया और कहा, कि इस बच्चेको आप अपना फ़र्ज़न्द जानकर इसके मददगार रहिये. तब माल्कम साहिब ने कहा, कि मुझको आपके फ़र्मानेका बहुत बड़ा लिहाज़ है, लेकिन् इस लड़केकी शादी आप अपने कुटुम्बमें करदीजिये, ताकि शक दूर होजावे. महाराणाने उक्त साहिबके कहनेपर उनके साम्हने ही बलवन्तसिंहकी शादी बागौरके महाराज शिवदानसिंहकी कन्याके साथ विक्रमी १८७८ चैत्र शुक्ल ९ [हि० १२३६ ता० ८ रजब = .ई० १८२१ ता० ११ एप्रिल] को करदी. इस बातसे माल्कम साहिबको पूरा यक़ीन होगया, और विक्रमी १८८२ [हि० १२४० = .ई० १८२५] में राजा पर्वतसिंह का इन्तिक़ाल होनेपर बलवन्तसिंह रतलामकी गादीपर बिठाया गया.

विक्रमी १८७८ वैशाख शुक्ल ९ बृहस्पतिवार [हि० १२३६ ता० ७ शअ्बान = ई० १८२१ ता० १० मई] को महाराणाके वलीअ़ह्द कुंवर जवानसिंहका सम्बन्ध रीवांके राजा जयसिंहदेवकी पोती और विश्वनाथसिंहकी बेटी सुभद्रकुमारीसे गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त क़रार पाया. विक्रमी १८७९ (१) वैशाख कृष्ण १३ [हि० १२३७ ता० २६ रजब = .ई० १८२२ ता० १९ एप्रिल] को उक्त महाराजकुमार विवाह करनेके लिये उदयपुरसे रीवांको रवानह हुए, और विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १३ [हि० ता० १२ शव्वाल = .ई० ता० २ जुलाई] को विवाह हुआ. इसी विक्रमीकी फाल्गुन् शुक्ल ९ [हि० १२३८ ता० ७ जमादियुस्सानी = .ई० १८२३ ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को साह शिवलाल गलूंड्या क़ैद किया जाकर उससे दण्ड लिया गया.

इन दिनोंमें कर्नेल टॉडके विलायत चले जानेपर उनकी जगह कप्तान कॉफ़

(१) रीवांकी तवारीख़के ज़रीएसे विक्रमी १८८० में इस शादीका होना वहांके इतिहासमें छपचुका है, लेकिन् अस्लमें यह शादी विक्रमी १८७९ में ही हुई थी.

पोलिटिकल एजेएट हुए. मेवाड़के खालिसहके कामदार महाराणाकी तरफ़से, और एक एक चपरासी हर ज़िलेमें पोलिटिकल एजेएटकी तरफ़से मुक़र्रर था; क्योंकि पहिले खालिसहकी आमदनी कम होनेके सबब मुल्की आमदनीका चौथा हिस्सह गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको देना मंज़ूर किया गया था, लेकिन् इस दोहरी हुकूमतकी तक्लीफ़ोंसे रिआया आजिज़ होकर वायवैला मचाने लगी, और यह शिकायत कॉफ़ साहिब की गैर मौजूदगीमें गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके कानतक पहुंची. यह ख़बर पाकर कप्तान कॉफ़, जो छुट्टीपर थे, उदयपुरमें आये, और इस कुल शिकायतका मूल साह शिवलालको ठहराकर विक्रमी १८८१ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२३९ ता० २४ ज़िल्हिज = ई० १८२४ ता० २० ऑगस्ट] के दिन उसे प्रधानेके कामसे बर्खास्त करने बाद महता रामसिंहको प्रधान बनाया, और उस मुल्की हिस्सहके एवज़, जो गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको दिया जाता था, हमेशहके लिये तीन लाख रुपया उदयपुरी सालियानह ठहराया गया; लेकिन् कुछ अ़र्सेसे बाद दो लाख रुपया कल्दार सालियानह देनेका इक़ार हुआ, जिसका ज़िक्र अ़हदनामहके बयानमें लिखा जायेगा. विक्रमी १८८१ पौष कृष्ण ७ [हि० १२४० ता० २० रबीउ़स्सानी = ई० १८२४ ता० १२ डिसेम्बर] को महाराणाकी बड़ी बहिन चन्द्रकुंवर बाईका देहान्त होगया, जिसका महाराणा और कुल रियासती लोगोंको बड़ा रंज हुआ, क्योंकि महाराणा उनको अपनी माताके समान समझते थे, और हज़ारों रियासती आदमियोंको उनके दमसे फ़ायदह पहुंचता था. इसी सदमेके कुछ दिनों बाद, याने विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ता० २६ जमादियुलअव्वल = ई० १८२५ ता० १६ जैन्युअरी] को महाराणाकी दूसरी बहिन अनोपकुंवर-बाईको भी इन्तिक़ाल होगया.

विक्रमी १८८२ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२४० ता० ९ रमज़ान = ई० १८२५ ता० २८ एप्रिल] को इन महाराणाने रसोड़ाके दक्षिण तरफ़ पीछोला तालाबके तीरपर अपने बनवाये हुए महलोंके सम्पूर्ण होजानेपर एक बड़ा भारी जल्सह किया, और उनका नाम नया महल रक्खा. इसी विक्रमीकी आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२४१ ता० २७ सफ़र = ई० ता० ११ ऑक्टोबर] को हाथीपौलके बाहर कॉफ़ साहिबने कोठी तय्यार करवाई, जहां पहिले बेगूंके रावत् की हवेली थी, और अब उदयपुरकी रेज़िडेन्सीका मक़ाम है; इस मकानकी तय्यारीका भी जल्सह हुआ, जिसमें उक्त साहिबने महाराणाको मिहमान किया.

विक्रमी १८८४ श्रावण शुक्ल ८ [हि० १२४३ ता० ६ मुहर्रम = ई० १८२७ ता० ३१ जुलाई] को महाराणी बीकानेरी पद्मकुंवर बाईके बनवाये हुए भीमपद्मेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई- (देखो शेष संग्रह).

इसी विक्रमी की कार्तिक कृष्ण ११ मंगलवार [हि० ता० २४ रबीउ़लअव्वल = ई० ता० १६ ऑक्टोबर] को वलीअ़ह्द कुंवर जवानसिंहके फ़र्जन्द पैदा हुआ, जिसकी खुशीसे महाराणा भीमसिंह बाग़ बाग़ होगये, और हज़ारहा रुपया, ज़ेवर, क़ीमती सिरोपाव, हाथी, घोड़े, और पालकी चारणों वगैरह को .इन्ञाममें दिये; लेकिन् विक्रमी १८८५ चैत्र शुक्ल १ [हि० १२४३ ता० २९ शअ़्बान = ई० १८२८ ता० १६ मार्च] को यह चराग़ गुल होगया, जिससे महाराणाको जितनी खुशी हुई थी, उससे दोचन्द रंज उठाना पड़ा, और इसी सबबसे उन्होंने अपने शरीरका भी ख़ातिमह किया, याने सब लोगोंके कहनेसे तीन दिनतक तो गनगौरकी सवारियां कीं, और जब एक दो सवारी करनेको वलीअ़ह्दने फिर कहा, तो जवाब दिया, कि मैंने इतना भी हिम्मतके साथ किया है, क्योंकि मेरे बदनकी हालत ख़राब है. विक्रमी चैत्र शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रमज़ान = ई० ता० २५ मार्च] के दिन उनको तासीरकी बीमारीने बे होश करदिया, लेकिन् फिर कुछ होशमें आकर दो तीन रोज़ बाद दोबारह वही हालत होगई; और आख़िरकार तीसरी दफ़ाकी मूर्छासे विक्रमी १८८५ चैत्र शुक्ल १४ [हि० ता० १३ रमज़ान = ई० ता० ३० मार्च] को पिछली सात घड़ी रात रहे इस दुन्यासे कूच करगये, और विक्रमी चैत्र शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रमज़ान = ई० ता० ३१ मार्च] को दग्ध क्रिया हुई.

यह महाराणा हरदिल अ़ज़ीज़, अव्वल दरजेके फ़य्याज़, गुनाह बख़्श, और ग़रीब पर्वर थे. इन्होंने अपने हाथसे कभी किसीपर ज़ुल्म नहीं किया, अगर ऐसा हुआ भी, तो दूसरे लोगोंके लिहाज़से हुआ होगा, क्योंकि सख़्ती करना इनको बिल्कुल ना पसन्द था; तवारीख़ी .इल्मसे यहांतक वाक़फ़ियत रखते थे, कि अपनी रियासतके अ़लावह दूसरी रियासतोंका हाल भी वर्ज़बान याद था; अपने नौकरोंकी पुश्तैनी ख़िद्मतोंको बयान करके ला वारिस बच्चोंकी हिफ़ाज़त अपने बच्चोंके मुवाफ़िक़ करते थे. हर एक नौकरको यह यक़ीन था, कि मेरे मरनेके बाद बाल बच्चोंकी पर्वरिशमें कमी न होगी. हिन्दी व राजपूतानहकी शाइ़रीमें भी वह कमाल रखते थे. कर्नेल टॉड उनकी बहुतसी तारीफ़ें लिखकर ज़ियादह ख़र्च करनेकी शिकायत लिखते हैं, लेकिन् वह राजपूतानह में पैदा होते, तो यहांके रवाजसे वाक़िफ़ होकर उनकी शानमें हर्गिज़ ऐसा लफ़्ज़ न कहते, क्योंकि इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तानके रवाजमें ज़मीन आस्मानका फ़र्क़ है. इंग्लिस्तानके बाज़ रवाजोंपर हिन्दुस्तानी लोग एतिराज़ करते हैं, परन्तु वे रवाज वहांके मुवाफ़िक़ हैं, और बहुतसे रवाज हिन्दुस्तानियोंके अंग्रेज़ोंको बहाल रखने पड़ते हैं. दूसरा यह कारण था, कि कर्नेल टॉड मेवाड़के मुसाहिब बनकर इस रियासतका प्रबन्ध करना चाहते थे; और मुसाहिबोंका यही काम है, कि ख़र्चकी ज़ियादतीको

रोकें. अल्बत्तह यह बात महाराणामें शिकायतके लाइक़ थी, कि ज़बानकी पाबन्दी नहीं रखते थे, लेकिन् इसका कारण भी मरहटोंका ग़द्र था, क्योंकि ऐसी तक्लीफ़की हालतोंमें वह क़ाइम मिज़ाजीको कैसे काममें लाते; चालीस वर्षतक उसी हालतमें रहने से उनमें बेशक यह आदत पड़गई थी.

इन महाराणाका छोटा क़द, पुष्ट और ताक़तवर शरीर, बड़ी पेशानी, मोटी आंखें, और बड़ी डाढ़ी होनेके अलावह चहरा हंसीला, और ज़बान बहुत शीरीं थी. इनकी ताक़तका हाल मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अपने पिताकी ज़बानी सुना है, कि नवरात्रियोंमें भल्का चौथके दिन उनकी कमानका तीर भैंसेके बदनको फोड़कर बहुत दूर चला जाता था. एक दफ़ा नव्वाब जमशेदख़ांने महाराणासे उनकी ताक़तका हाल दर्याफ्त किया, उस वक्त उन्होंने एक मज्बूत पुरानी ढाल मंगाकर नव्वाबको दी, वह भी ताक़तका घमंड रखता था, उसने खूब ज़ोर किया, लेकिन् कुछ असर न हुआ, महाराणाने उस ढालको दोनों हाथोंसे पकड़कर चीर डाला. इसी तरह और भी बहुतसी बातें उनकी ताक़तवरीकी बाबत मश्हूर हैं.

इनका जन्म विक्रमी १८२४ चैत्र कृष्ण ७ गुरुवार [हि० ११८१ ता० २० शव्वाल = .ई० १७६८ ता० १० मार्च] को हुआ था. इनके साथ महाराणी झाली, महाराणी बीकानेरी, महाराणी पुंवार, महाराणी भटियाणी, पासबान गुणराय, पासवान मोती, पासवान सैनरूप, और बडारण सहेली जमुना आठ सतियां हुईं. अगर्चि इनका इन्तिक़ाल साठ वर्षकी उम्रमें हुआ, लेकिन् बीस वर्षके जवान मालिक का इन्तिक़ाल होनेपर जैसा रंज होता है, उससे भी ज़ियादह सद्मह मेवाड़के लोगोंके दिलोंपर गुज़रा. उनकी नौकरी करने वालोंमेंसे जो लोग अब भी ज़िन्दह हैं, वे उनका नाम आते ही ठंडी सांस भरकर याद करते हैं. उनकी उत्तमता यहांतक थी, कि इस रियासतके कुल छोटे बड़े फ़ज्रके वक्त ईश्वरका नाम लेने बाद उनका नाम लेनेसे दिनभर अम्न चैनसे गुज़रनेका ख़याल रखते हैं.

जयसलमेरकी तवारीख़.

जुग़ाफ़ियह.

जयसलमेर पश्चिमी राजपूतानहकी अन्तिम सीमापर चन्द्रवंशी ख़ानदानके भाटी राजपूतोंकी एक रियासत है, जिसके उत्तरमें रियासत बीकानेर और इलाक़ह बहावलपुर, पश्चिममें सिन्धका मुल्क, दक्षिणमें जोधपुरका राज्य, और पूर्वमें जोधपुर तथा बीकानेरका इलाक़ह वाके है. पांच सौ वर्ष पहिले यह रियासत बहुत बड़ी थी, परन्तु रावल भीमसिंहके समयसे रफ़्तह रफ़्तह दूसरे लोगों, याने जोधपुर, बीकानेर, बहावलपुर और सिन्धवालोंने तरक़्क़ी पाकर चारों तरफ़से यहांकी ज़मीन दबाली; तोभी यह रेतीला मुल्क, जिसका रक़्बह १६४४७ मील मुरब्बा है, २६° ५′ व २८° २३′ उत्तर अक्षांश और ६९° २९′ व ७७° १५′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान ज़ियादहसे ज़ियादह १७२ मीलकी लम्बाई, और १३६ मीलकी चौड़ाईमें फैला हुआ है; लेकिन् इलाक़हमें रेता ज़ियादह और सेराबी कम होनेके सबब आबादी केवल १०८१४३ आदमी है. राज्यकी फ़ौज एक हज़ार, ख़ालिसहकी आमदनी सवा लाख रुपया, और इसी क़द्र सर्दारोंकी जागीर समझी जाती है.

मुल्ककी कुद्रती सूरत— इलाक़हमें हर तरफ़ रेतेका मैदान है, सिर्फ़ दक्षिणी भागमें कुछ पहाड़ियां व झाड़ी पाई जाती है, जिसमें जानवरोंके चरनेके लाइक़ चारा पैदा होता है. रेतीले टीबोंके दर्मियान भी अक्सर जगहोंपर कांटेदार झाड़ी और भुरट वगैरह घास होती है, जो यहांके रेवड़ और ऊंटोंके वास्ते बड़े कामकी है. दक्षिणी सर्हदके जंगलमें झड़बेरी, खेजड़ा, आंवल, जांट, बबूल, कैर, फोग, आक, ढाक, सांगरी और पीलू वगैरह कस्रतसे होते हैं, बड़ व पीपल शहर तथा जंगलमें केवल दर्शन रूपी कहीं कहीं दिखाई देते हैं. जंगली जानवरोंमें शेर, चीते, बघेरे और गोरखर बाज़ स्थानोंपर पाये जाते हैं; हरिण, चिकारे और रोझ भी कम हैं, लेकिन् सूअर, भेड़िये और गीदड़ ज़ियादह पाये जाते हैं, सर्पोंकी इतनी कस्रत है, कि वहांके निवासी उनसे बचनेके लिये चमड़ेके मोज़े पहिनते हैं.

पत्थर व धातु— जयसलमेरमें धातुकी कोई खान नहीं है, परन्तु बाज़ बाज़

मकामोंमें चन्द किस्मका पत्थर और मिट्टी पाई जाती है. पर्गनह देवीकोटमें गेरू, और पर्गनह कोट रामगढ़में मुल्तानी मिट्टीकी खान है, इसके अलावह गांव हाबुरमें संग हाबुर नामका एक उम्दह जौहरदार पत्थर निकलता है, जिससे खूबसूरत पियाले, रकावियां तथा तस्बीह (माला) के मणके बनाये जाते हैं, जिनको मुसल्मान और फ़क़ीर लोग ज़ियादह पसन्द करते हैं.

नदी, नाले - इस रियासतमें कोई बड़ी या सालभर तक बहने वाली नदी नहीं है, केवल लाठी नामकी एक नदी मारवाड़के डूंगरोंसे निकलकर इस रियासत में दाखिल होती, और अपने किनारोंके गांवोंकी ज़मीनको सेराब करती है; लेकिन् यह सिर्फ़ बर्सातमें और उसके कुछ दिनों बाद तक बहकर सूख जाती है, बारहों महीने जारी नहीं रहती. इसकी पूर्वी सीमापर बड़े गांवके पास गोगड़ी व काकनय नदी और कई बर्साती नाले हैं.

झील, या तालाब - जिनको यहां सर बोलते हैं, उनकी भी वही हालत है, जैसी, कि नदियोंकी, याने वे भी बर्साती नालोंका पानी रोका जानेके सबब थोड़े दिनों तक भरे रहकर जल्द ही सूख जाते हैं, सिर्फ़ किसी किसी झीलमें सालभर तक पानी रहता है. इस रियासतमें सबसे बड़ी झील बुजकी पच्चीस मीलके घेरेमें है, जो काकनय नदीके पानीसे भरती है. शहर जयसलमेरके पास ही "घड़सी सर" नामी एक मश्हूर छोटा तालाब है, जिसका ज़िक्र मश्हूर मक़ामातमें किया जायेगा; और अलावह इनके कई छोटी छोटी झीलें तथा कुएं हैं, जिनपर कुल रियासतकी खेतीबाड़ीका दारमदार है. इलाक़ह जयसलमेरमें पानी इतनी गहराईपर है, कि बाज़ जगह तीन सौ फ़ीट खोदे बिना अच्छा पानी नहीं निकलता; हात्रा ग्राममें, जो पश्चिमोत्तरी सहद्दपर वाक़े है, तीन सौ नौ फ़ीट, ख़ास राजधानी जयसलमेरमें तीन सौ चार फ़ीट, और राजधानीसे ३२ मील अग्नि कोणकी तरफ़ चोरिया ग्राममें ४९० फ़ीट गहरे कुए हैं.

आब हवा व बारिश - मुल्ककी आब हवा स्वच्छ और नीरोग है, लेकिन् बारिश बहुत कम होती है, कभी कभी अकाल पड़नेपर मुल्कके बाशिन्दोंको बड़ी तक्लीफ़ उठानी पड़ती है, यहांतक, कि खेजड़ेके छोडे, इन्द्रायणके बीज और भुरट वगैरह खाकर गुज़र करते हैं.

ज़ात व फ़िर्के - इलाक़हकी आबादीमें ब्राह्मण, क्षत्री, चारण, बनिये, खत्री, सुनार, लुहार, कुम्हार, माली, गूजर, खाती, सिलावट, भोजक, सेवक, साधु, रैबारी, नाई, कलाल, चूड़ीगर, जुलाहा, भील, ढेढ, मुसल्मान व फ़क़ीर आदि कई क़ौमोंके लोग बस्ते हैं. पूर्व दक्षिणमें हिन्दुओंकी आबादी अधिक है, जिसमें अक्सर भाटी राजपूत, पल्लीवाल ब्राह्मण और जाट तथा गडरिये हैं; और पश्चिम व उत्तरमें मुसल्मान क़ौमें ज़ियादह हैं.

पैदावार - इस मुल्ककी ख़ास पैदावार बाजरी, जवार, मूंग, मोठ, तिल,

कपास, गुवार, और सरसूं हैं. जहां ज़मीन ज़ियादह सेराब है वहां गेहूं, चना, अफ़्यून, मूली, बैंगन, पियाज़, धनिया, मिरच, सिंघाड़ा, तर्बूज़, और ककड़ी वगैरह भी पैदा होते हैं. तम्बाकू अक्सर जगह बोई जाती है.

राज्य प्रबन्ध- महता अजीतसिंहने इस रियासतके राज्य प्रबन्धकी बाबत अपने बनाये हुए जयसलमेरके जुग्राफ़ियहमें लिखा है, कि यहांका राजसी इन्तिज़ाम रईस की मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ होता है, क़ाइदेके मुवाफ़िक़ कोई इन्तिज़ामी अदालत या क़ानून नियत नहीं है, कुल दीवानी मुक़द्दमात शहरके इज़्ज़तदार और बुद्धिमान लोगोंकी पंचायती कौन्सिलसे फ़ैसल होते हैं, जिसमें रू रिआयत कम होनेके सबब शिकायत पैदा नहीं होती. फ़ौज्दारी मुक़द्दमातमें किसी क़द्र जुर्मानहके अलावह क़ैदकी सज़ा मुज्रिमों को बहुत कम दीजाती है; चोरीकी वारिदात इत्तिफ़ाक़से ही कभी होती है, वर्नह ज़ियादह नहीं होती; क्योंकि यहांके लोग खोज लगानेमें बड़े होश्यार समझे गये हैं, कि यदि मवेशी वगैरह कोई चीज़ कभी चोरीमें चली भी जाती है, तो फ़ौरन् पता लगाकर उसे दर्याफ़्त करलेते हैं. यहांके रियासती अह्लकार दीवानी, फ़ौज्दारी तथा दूसरे मुक़द्दमातमें जहांतक हो सक्ता है, मुज्रिमोंसे रुपया ही वुसूल करते हैं.

ज़मीनका पट्टा व मह्सूल वगैरह- मुन्शी ज्वालासहायने अपनी तवारीख़ वक़ाये-राजपूतानहमें लिखा है, कि जयसलमेरकी रियासतमें चौबीस पर्गने और कुल गांव ४६१ (१) हैं, जिनमेंसे २२४ ख़ालिसहके, ७१ जागीरदारोंके, और बाक़ी इनूआम व पुण्य आदिमें बटे हुए हैं. ख़ालिसहके गांवोंका मह्सूल पैदावार के चौथे हिस्सहसे लेकर ग्यारहवें हिस्सेतक ज़मीनकी हैसियत और पैदावारके अनुसार लिया जाता है. जागीरदार लोग महारावलको ख़िराज नहीं देते, अल्बत्तह नये महारावलकी गद्दी नशीनीपर न्यौतेका रुपया देते हैं. सासण गांवोंसे भी, जो चारण व स्वामियोंकी जागीरमें हैं, किसी क़िस्मका मह्सूल नहीं लिया जाता, और इस क़िस्मके गांव हमेशहके लिये जागीरमें दिये गये हैं. भोमियोंसे प्रति मनुष्य रु० १।) ७ पाई या १॥) रुपया लिया जाता है, और ज़रूरतके वक़्त इन लोगोंसे तन्ख़्वाह पर नौकरी भी लीजाती है. ख़ालिसहके गांवोंमें राज्यका मह्सूल अदा करनेके सिवा ज़मींदार लोग, गांवके काम्दार व सेणेको भी उनका हक़ देते हैं. जयसलमेरके इलाक़हमें तीन क़िस्मके जागीरदार हैं- अव्वल " बसी ", जिनकी जागीरें हमेशहके

(१) इस तादादमें, जो ज्वालासहायकी तवारीख़से दर्ज की गई है, और महता अजीतसिंहके बनाये हुए जुग्राफ़ियहकी तर्तीब देहातमें फेर फार होनेके सबब फ़र्क़ मालूम होता है, इसलिये उससे ठीक तौरपर तादाद मालूम न होनेके कारण मूलमें गांवों और पर्गनोंकी तादाद वक़ाये राजपूतानहसे ही लिखी गई है.

लिये हैं; दूसरे पट्टादार, कि जिनकी जागीरें जबतक रईस चाहे रक्खे, या जिस वक्त चाहे छीन ले, परन्तु ख़िराज यह भी नहीं देते; और तीसरी क़िस्म कुछ अरसेसे जारी हुई है, जिसमें वे लोग शामिल हैं, जिनको हीन हयात जागीरें मिलती हैं.

पर्गनह- इस रियासतमें कुल २४ पर्गने हैं, जिनके नाम ज्वालासहायकी तवारीख़के अनुसार नीचे लिखे जाते हैं:-

१- ख़ास शहर जयसलमेर, २- बीकमपुर, ३- सीररोह, ४- नांचणा, ५- काटोड़ी, ६- कावा, ७- कुलदरा, ८- सतोह, ९- जिंजियाली, १०- देवीकोट (१), ११- बाप या बाफ़, १२- बालानह, १३- सतियासा, १४- बारू, १५- चांन, १६- लुहारकी, १७- नोनतला, १८- लाठी, १९- डांगरी, २०- बीजोराय, २१- मंडाय, २२- रामगढ़, २३- वरसलपुर, और २४- गिराजसर. इनमेंसे १, ५, ६, ७, १०, ११, २०, २१, २२, नम्बरके तो ख़ालिसहमें और बाक़ी पटायतोंके क़बज़हमें हैं.

मश्हूर मक़ामात.

इस रियासतकी राजधानी शहर जयसलमेर, जिसको विक्रमी १२१२ श्रावण शुक्ल १२ रविवार [हि० ५५० ता० ११ जमादियुल अव्वल = .ई० ११५५ ता० १४ जुलाई] को रावल जयसलका आबाद किया हुआ बतलाते हैं, कई मील लम्बी चौड़ी पहाड़ीके दक्षिणी किनारेपर बसा हुआ है; शहरपनाह और उसके बुर्ज पत्थरोंसे चुने गये थे, जो अब अक्सर जगहोंसे गिर गये हैं. इस तीन मील लम्बे शहरमें केवल तीन दर्वाजे हैं, और वस्तीके दक्षिणी विभागमें पौन मील मुरब्बा और दो सौ फ़ीटसे ज़ियादह ऊंची पहाड़ीपर रियासतका क़िला बना हुआ है, जिसमें महारावल साहिबका चित्रदार महल दूसरे मकानातसे ज़ियादह ख़ूबसूरत मालूम होता है. शहरमें बहुधा मकान पक्के बने हुए हैं, और महारावल साहिब भी वहीं रहना पसन्द करते हैं; परन्तु क़िलेके साम्हने वाली चन्द .उम्दह दूकानोंके सिवा और किसी तरफ़ रौनक़दार बाज़ार वग़ैरह नहीं है.

बीकमपुर- यह रेतेके जंगलमें जयसलमेरसे ९५ मील उत्तर पूर्वमें एक क़िला है, जिसकी मज़्बूत दीवारें २५ फ़ीट ऊंची हैं, और वह सौ गज़ मुरब्बाके घेरमें छोटे बुर्जों सहित वाक़े है, इसके पूर्वोत्तरी कोणपर एक बहुत ऊंचा बुर्ज है, जहांसे चारों ओरका मुल्क दूर दूरतक दिखाई देता है; इस क़िलेमें राज्यके सौ आदमी चार तोपों सहित फ़ौजकी हिफ़ाज़तके वास्ते रहते हैं. अगर्चि यह क़िला मज़्बूत है, परन्तु इसपर चढ़नेमें किसी तरहकी तक्लीफ़ नहीं होती, क्योंकि रास्तह सरल है; इसके चारों ओर रेतेके ऊंचे ऊंचे टीबे थोड़ी थोड़ी दूरीपर वाक़े हैं. क़िलेसे दक्षिण पूर्वमें सवा दो सौ घरोंकी आबादीका एक छोटा क़स्बह है.

(१) इस पर्गनहके घोड़े व घोड़ियां ताक़तवर और चालमें .उम्दह गिने जाते हैं.

बरसलपुर - यह क़स्बह, जिसमें चार सौ घर और हज़ार मनुष्योंकी आबादी है, बहावलपुरके रास्तेमें बहावलपुरसे ९० मील दक्षिण पूर्वको वाके है. यहां २० फ़ीट ऊंची पहाड़ीपर एक क़िला है. क़स्बहसे एक मील दूरीपर दक्षिण पश्चिममें एक टीला क़िलेसे ऊंचा है, जिसपर चार सौ वर्ष पहिले हुमायूं बादशाह खड़ा रहा था, जब कि उसको क़िलेमें न आने दिया. यह क़स्बह बहुत पुराना है, यहांके हिन्दुओंके बयानसे सन् ईसवीके दूसरे शतकमें इसका आबाद होना पाया जाता है; यहांके ठाकुरने विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में मिस्टर ब्वाइलो साहिब इंजिनिअरकी बड़ी ख़ातिरदारी की थी, जो मुल्की हालात दर्याफ़्त करनेके लिये सर्कारकी ओरसे यहां भेजे गये थे.

चाहिन - यह सौ घरोंकी आबादीका गांव है, जो चोरों गुज़नी स्थान होनेके सबब इलाक़हमें प्रसिद्ध है.　　रहते हैं, प्र

कानोड - यह क़स्बह शहर जयसलमेरसे उत्तर पूर्वमें सातवीं खारी भीलके किनारेपर, जो ८ मील चौड़ी और १५ मीलके क़रीब लम्बी है, वाके [illegible] इस भील में पानी सूख जानेपर नमक जमता है, और बर्सातमें पानी भरजानेपर पूर्वकी ओर इसमेंसे एक नदी निकलती है, जो ३० मील बहकर मारवाड़के रेतेमें ग़ाइब होजाती है.

काठोड़ी - जयसलमेर और बहावलपुरके रास्तेमें राजधानीसे १६ मील उत्तर पल्लीवाल बोहरा ब्राह्मणोंकी बस्तीका एक गांव है, जो व्यापार करते हैं. इसमें एक उम्दह तालाब भी है.

किशनगढ़ - बहावलपुरकी सीमाके पास जयसलमेरसे ८० मील उत्तर पश्चिम में ईंटोंका बना हुआ एक पक्का व मज़्बूत क़िला और ग्राम है.

कोरा क़िला - जयसलमेरसे ३८ मील पश्चिममें क़िला और गांव है.

लाठी - इलाक़ह जोधपुरके क़स्बह पोहकरणसे २५ मील जयसलमेरके रास्ते पर उत्तर पश्चिममें है.

मोहनगढ़ - जयसलमेरसे ३५ मील उत्तर पूर्वमें जंगलके दर्मियान एक क़िला है, जिस पर्गनहमें यह वाके है, वहां लाठी नदीकी सेराबीसे गेहूं व जव और कई फ़स्ली चीज़ें कस्रतसे पैदा होती हैं.

नवा थला - जयसलमेरसे ४८ मील पूर्वोत्तर कोणमें बीकानेर व जयसलमेरके रास्तेपर एक क़िला और गांव है.

बाप या बाफ - रियासतकी पूर्वी सीमापर जोधपुरकी तरफ़ बीकानेर व जयसलमेरके

रास्तेमें जयसलमेरसे १०० मील उत्तर पूर्वमें है. जिस पर्गनहका यह सद्र मक़ाम है, वहांकी ज़मीन जयसलमेरके कुल पर्गनोंसे बढ़कर उपजाऊ और सेराब व सर्सब्ज़ है, और इसी सबबसे उसका नाम "कोट काश्मीर" भी प्रसिद्ध है, इसमें गोरे भैरवका एक प्रसिद्ध देवस्थान है, जिसके दर्शनके लिये मेलेपर और दूसरे वक़ोंमें भी दूर दूरसे यात्री लोग आते हैं.

घड़सीसर तालाव – राजधानी जयसलमेरके क़रीब ३ मील लम्बा और १ मील चौड़ा महारावल घड़सीका बनवाया हुआ एक तालाव है, जिसमें एक छोटीसी गढ़ी और दो बुर्ज बने हुए हैं, और उसकी पालपर हिङ्गलाज माताका मन्दिर और एक उम्दह महल तथा बाग़ीचह व कई देवालय, शिवालय, धर्मशाला आदि उत्तम स्थान हैं.

ऊपर [illegible] नरसलपुर, क़िलोंके सिवा रामगढ़, रूपसी और सोढाखोरमें भी छोटे छोटे क़िले हैं.

व्यापार स्वरके त [illegible] है – इस मुल्कमें व्यापार और खेती बहुत कम होती है, अक्सर लोग सांड (ऊंट), भेड़ व बकरी आदि चौपायोंके ज़रीएसे अपना गुज़र करते हैं, विद्याका प्रचार बहुत कम है. दस्तकारी भी ज़ियादह नहीं होती, केवल रूईका मोटा कपड़ा बुना जाता है, लेकिन् भेड़की ऊनके कम्बल व खेस वग़ैरह, पत्थरके पियाले व रकाबियां, और हाथीदांत व हड्डीके ज़ेवर अल्बत्तह उम्दह बनते हैं.

इस मुल्कमें कोई पक्की सड़क और रास्ते नहीं हैं, लेकिन् गंगाके किनारेके मुल्क से लगाकर सिन्ध देशतक व्यापारियोंके ऊंटोंकी क़तारें एक दूसरी जगहको व्यापारकी वस्तुएं लाते और लेजाते समय इस मुल्कमें होकर गुज़रती हैं, इसी सबबसे जयसलमेर व्यापारी स्थानके तौरपर प्रसिद्ध है, बल्कि यही ज़रीअह राज्यकी ज़ियादहतर आमदनी का है, क्योंकि राहदारीके महसूलकी रक़म कुल रियासतकी सालियानह आमदनीके आधे हिस्सहके क़रीब जमा होती है.

जयसलमेरकी तवारीख़.

जयसलमेरके वर्तमान भाटी राजा चन्द्रवंशी यादव राजपूतोंकी एक शाख़में हैं, जो राजपूतानहके बहादुर और नामवर क्षत्रियोंमेंसे गिने जाते हैं. चन्द्रवंशी राजपूतों का जो प्राचीन हाल भागवत और महाभारतादिक ग्रन्थोंमें लिखा हुआ है, उसमें तो इतिहास वेत्ता लोग कुछ हेर फेर कर ही नहीं सक्के, अल्बत्तह बाज़ बाज़ प्राचीन शोधकारक समयके अधिक न्यून होनेमें अपनी राय प्रकाश करते हैं, परन्तु

उसमें कुल विद्वानोंकी सम्मति एक नहीं पाई जाती, इसलिये यहांपर प्राचीन समयके हालात छोड़कर पिछले ज़मानहका वृत्तान्त लिखा जाता है.

भाटी लोग श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नके पौत्र वज्रनाभ अर्थात् अनिरुद्धके बेटेकी औलाद कहलाते हैं; परन्तु वज्रनाभसे लेकर गजके समय तकका दर्मियानी हाल सहीह सहीह मिलना बहुत मुश्किल है; और जयसलमेरकी रियासतसे भी हमको इस खानदानका इतिहास सम्बन्धी वृत्तान्त कुछ नहीं मिला, इसलिये गजसे पिछला हाल, जो नीचे लिखा जाता है, वह कर्नेल टॉड और महता नेनसीकी पुस्तक तथा फ़ार्सी किताबोंसे चुनकर लिया गया है; इनके सिवा जयसलमेरके वर्तमान महता अजीतसिंहकी बनाई हुई भाटीनामह नामकी एक छोटी पुस्तक से भी कुर्सी नामह व साल संवत् वगैरहमें किसी क़द्र मदद मिली है.

चन्द्रवंशी यादव वज्रनाभके वंशमेंसे राजा गजका क़िले ग़ज़नीको बनवाना सहीह मालूम होता है, क्योंकि गांधार देश, जिसको अब क़न्धार कहते हैं, प्राचीन समयमें चन्द्रवंशियोंके अधिकारमें था, और चीनी मुसाफ़िर ह्युइनत्सांग, जो सातवीं सदी ईसवीमें उस तरफ़ होकर भारतवर्षमें आया, हिरातसे क़न्धारतक हिन्दू राजा व प्रजाका होना बयान करता है.

राजा गजका हाल कर्नेल टॉडने बहुत तूल तवील लिखा है, जो यदि सहीह भी हो, तो कुछ आश्चर्य नहीं, परन्तु हमको इसमें यह सन्देह है, कि वह कहांतक सहीह है; सिवा इसके जिन राजाओंके साथ गजकी लड़ाइयां हुईं, उनके नाम, क़ौम तथा देश और साल संवतोंका भी प्राचीन शोधके अनुसार पूरा पता लगना कठिन है.

राजा गज खुरासानके राजासे लड़कर मारा गया, और उसके बेटे शालिवाहनने पंजाबमें शालिवाहनपुर आबाद किया; उसका बेटा बुलन्द, और बुलन्दका पुत्र भट्टी हुआ. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि बुलन्दकी सन्तानमेंसे कितने ही मुसल्मान होगये, जिनकी औलाद पश्चिमकी तरफ़ मौजूद है. भट्टीके नामसे यादव राजपूतोंकी शाखामेंसे एक प्रति शाखा भाटी प्रसिद्ध हुई. भट्टीका पुत्र मंगलराव, जिसका मुअज़्ज़मराव, जो लुद्रवामें रहा, उसका खेड़, उसका तणू, उसका विजयराव, और उसका देवराज, जिसने एक जोगीकी बरकत से क़िला देवरावल (१) बनवाया, और राजाका ख़िताब छोड़कर रावलका पद इख़्तियार किया; देवराजका पुत्र मंध, उसका बछराज, उसका पुत्र दुसाज, और दुसाजका पुत्र १-जयसल हुआ, जिसने विक्रमी १२१२ श्रावण शुक्ल १२ [हि० ५५० ता० ११ जमादियुल-अव्वल = .ई० ११५५ ता० १४ जुलाई] को क़िले जयसलमेरकी नींव डाली.

---

(१) इस क़िलेकी तामीर याने बुनयादका संवत् कर्नेल टॉडने विक्रमी ९०९ माघ शुक्ल ५ सोमवार [हि० २३८ ता० ४ शअ्बान = .ई० ८५२ ता० २० जैन्युअरी] लिखा है.

जयसलके दो बेटे थे, जिनमें बड़ा केलण और छोटा शालिवाहन था; लेकिन् केलण गद्दीसे ख़ारिज कियाजाकर जयसलके मरने बाद विक्रमी १२२४ [हि० ५६२ = ई० ११६७] में २- शालिवाहन दूसरा गद्दीपर विठाया गया, यह एक नामी राजा हुआ, जिसके तीन बेटे बीजल, बानर, और हंसू थे; इनमेंसे हंसू एक दूसरे पहाड़ी मुल्कके यदुवंशी राजाका दत्तक माना गया, वह वहां पहुंचते ही मरगया, रास्तेमें उसकी गर्भवती राणीके पेटसे पलासके दरख़्तके नीचे एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम पलासू रक्खा गया, और इसीके नामसे उस रियासतका नाम पलासवा प्रसिद्ध हुआ.

जब शालिवाहन शादी करनेके लिये सिरोही गया, तो रियासत अपने बड़े बेटे बीजल के सुपुर्द करगया था, पीछेसे ३- बीजल अपने एक धायभाईके वहकानेपर शालिवाहनका शेरकी शिकारमें मारा जाना मश्हूर करके राज्यका मालिक बन बैठा. शालिवाहनने वापस आकर उससे बहुत कुछ नर्मी की, लेकिन् उसपर कुछ असर न हुआ, और वह क़िले देवरावलकी तरफ़ जाकर बिलोचोंके मुक़ाबलहमें मारा गया. थोड़े ही दिन गुज़रने पाये थे, कि एक रोज़ बीजलने गुस्सेकी हालतमें धायभाईको धमकाया और मार पीट की, जिसपर वह मुक़ाबलहके साथ पेश आया, और इस शर्मिन्दगीसे बीजल ख़ुदकुशी करके मरगया.

बीजलके मरने बाद विक्रमी १२५७ [हि० ५९६ = ई० १२००] में ४- केलण ५० वर्षकी उम्रमें राज्यका मालिक बना, जो शालिवाहनका बड़ा भाई, और पाहू नामी वज़ीरकी रंजिशके सबब जयसलके मरनेपर गादीसे ख़ारिज कियागया था. इसके छः बेटे चाचकदेव, पालणसाह, जयचन्द, आसराव, प्रथमचन्द और पूर्णसी हुए. १९ वर्ष राज करके केलण मरगया, और विक्रमी १२७५ [हि० ६१५ = ई० १२१९] में ५- चाचकदेव गद्दी नशीन हुआ (१). इसने अमरकोटके राजा रूपसी सोढापर हमलह करके उसकी लड़कीसे शादी करने बाद सुलह की; इसी तरह सोढा राजपूतोंकी मददसे छाडा राठौड़से भी मुक़ाबलह किया, और उसकी लड़कीसे शादी करके ३२ वर्ष राज्य करने बाद मरगया. इसके एक बेटा तेजराव था, जो अपने दो बेटों जैतसी और करणको छोड़कर ४२ वर्षकी उम्रमें चाचकदेवकी मौजूदगीमें ही मरगया था. चाचकदेव करणसे ख़ुश रहता था, इसलिये उसने अपने आख़री वक़्तमें जैतसीके एवज़ करणको, जो छोटा था, राज्यका मालिक बनादिया.

चाचकदेवके मरने बाद ६- रावल करण गद्दीपर बैठा, और जैतसी वतन छोड़कर

(१) इसकी गद्दी नशीनीका संवत् भाटीनामहमें विक्रमी १२६४ [हि० ६०३ = ई० १२०७] लिखा है, लेकिन् मूलमें कर्नेल टॉडके लिखे मुवाफ़िक़ दर्ज किया गया है.

गुजरातमें चला गया. इन दिनों नागौरमें मुज़फ़्फ़रख़ां पांच हज़ार सवारों समेत रहता था, जिसने नागौरके पास वाले एक भोमिया भगवतीदास झालासे, जो १५०० सवारोंका मालिक था, उसकी लड़कीके साथ शादी करनेकी दर्ख़्वास्त की. भोमिया मज्कूरको यह बात मन्जूर न हुई, और वह अपना देश छोड़कर लड़कीको ले-निकला; लेकिन् मुज़फ़्फ़रख़ांने उसका पीछा किया, और रास्तहमें मुक़ाबलह करके लड़कीको मए कई दूसरी औरतोंके छीन लिया. इस मुक़ाबलहमें भगवतीदासके साथियोंमेंसे क़रीबन् चार सौ आदमी मारे गये, और वह भागकर जयसलमेर पहुंचा. करणने उसकी मदद की, और मुज़फ़्फ़रख़ांको तीन हज़ार सिपाह समेत क़त्ल करके भगवतीदासको उसके वतनमें वापस आबाद करदिया.

करणके मरने बाद विक्रमी १३२७ [हि० ६६९ = ई० १२७०] में ७- रावल लाखणसेन राज्याधिकारी हुआ. यह बड़ा भोला राजा था. कर्नेल टॉड लिखते हैं, "कि इसने सियालों (गीदड़ों) की आवाज़ सुनकर उनकी तक्लीफ़ दूर करनेकी ग़रज़से उनके लिये दगले (सर्दीके मौसमके कपड़े) और मकानात बनवा दिये थे, जिनमेंसे कई मकान अबतक मौजूद हैं." वह थोड़े ही दिनों बाद कुछ दीवानह होगया, जिससे विक्रमी १३३१ [हि० ६७३ = ई० १२७४] में उसके बेटे ८- पुण्यपालने राज्यका कारोबार अपने हाथमें लिया. यह बड़ा सख़्त मिज़ाज था, इस सबबसे उसके सर्दार उमरावोंने रावल करणके बड़े भाई जैतसीको गुजरातसे बुलाकर पुण्यपालको गद्दीसे ख़ारिज करदिया.

विक्रमी १३३२ [हि० ६७४ = ई० १२७५] में ९- जैतसी राज्यका मालिक बना, इसके दो बेटे मूलराज और रत्नसी थे. इस वक़ दिल्लीपर अ़लाउद्दीन ख़िल्जी बादशाहत करता था. उन दिनों ठट्ठा और मुल्तानके दिल्ली जाते हुए ख़िराजको रास्तेमें मूलराज व रत्नसीने लूट लिया; यह ख़बर बादशाहके पास पहुंचनेपर फ़ौज-कशी हुई. मुक़ाबलहके दिनोंमें रावल जैतसीके मरजानेपर विक्रमी १३५० [हि० ६९२ = ई० १२९३] में १०- मूलराजने रावलका पद पाया. इसने अपने बेटे देवराजको, जिसके वंशके अर्जुनोत व हमीरोत भाटी हैं, मए उसके बेटे हमीरके क़िलेसे बाहिर निकाल दिया, और अपने भाई रत्नसी समेत मुक़ाबलहके वास्ते क़िलेमें रहा. देवराज बाहिरसे शाही फ़ौजपर धावा करता था, आख़िरकार आठ वर्षतक मुक़ाबलह करने बाद रसदकी कमीसे मूलराज व रत्नसीने अपनी स्त्रियों व बाल बच्चोंको आगमें जला दिया, और आप सात सौ हमराही राजपूतों समेत क़िलेसे बाहिर निकलकर बड़ी बहादुरीके साथ मारा गया. लिखा है, कि बादशाही फ़ौजके सर्दार महबूबख़ांसे रत्नसीकी बड़ी दोस्ती होगई

थी, इस सबबसे इसने अपने दोनों लड़कों घड़सी व कान्हड़को, जो नाबालिग़ थे, आख़री हमलह होनेसे पहिले महबूबखांके पास पर्वरिशके वास्ते भेजदिया था. यह मारिका विक्रमी १३५१ (१) [हि० ६९३ = ई० १२९४] में हुआ, जिसमें क़िला बादशाही लोगोंके हाथ आया, और देवराज, जो बाहिरसे बादशाही फ़ौजपर हमले कररहा था, बुख़ारकी बीमारीसे मरगया. जब यह क़िला बादशाही लोगोंके क़बज़ेमें आया, तो इसके दर्वाज़े बन्द करवादिये गये, और दो वर्षतक क़िला उन्हीं बादशाही लोगोंके क़बज़ेमें रहा. जयसलमेरको उसके वीरान होजानेपर जगमाल राठौड़ने अपने क़बज़हमें लेना चाहा; लेकिन् दूदा व तिलोकसी भाटीने, जो जयसलकी औलादमेंसे थे, भाटियोंको एकट्ठा करके राठौड़ोंको क़िलेसे निकाल दिया, और विक्रमी १३५६ [हि० ६९८ = ई० १२९९] में ११-दूदाने रावलका ख़िताब इख़्तियार किया. यह बड़ा लड़ाकू और दिलेर राजपूत था, जो अजमेरसे बादशाही (२) घोड़े लूट लेगया. जब इसपर हमलह हुआ, तो विक्रमी १३६२ [हि० ७०५ = ई० १३०६] में यह अपनी बहुतसी औरतों व बच्चोंको क़त्ल करके अपने भाई तिलोकसी व दूसरे साथियों समेत लड़कर मारा गया.

इस मारिकेके पेश आने बाद रत्नसीके बेटे १२-घड़सीको, जो अपने भाई कान्हड़ समेत रत्नसीका सौंपा हुआ महबूबखांकी हिफ़ाज़तमें था, और उसके मरजाने बाद उसके बेटोंकी निगरानीमें रहा, विक्रमी १३६२ (३) [हि० ७०५ = ई० १३०६] में जयसलमेरकी सनद मिली. इसकी शादी राठौड़ माला (मल्लीनाथ) की बेटी विमलादेवी व कमलादेवीसे हुई थी. विमलादेवी बड़ी होश्यार और बुद्धिमान स्त्री थी, इसने अपने पतिके कोई औलाद न होनेके सबब दूदाके बेटे केहर (४) को गोद लेना चाहा, जिसपर देवराजके बेटों हमीर वग़ैरहने बखेड़ा मचाया, और इसी रंजिशसे वह (घड़सी) आसकरण नामी एक भाटी राजपूतके हाथसे मारा गया.

---

(१) अलाउद्दीन ख़िल्जी ऊपर लिखे हुए संवत् १३५१ से १ वर्ष बाद दिल्लीके तख़्तपर बैठा था, इसलिये इस संवत्में शक पाया जाता है.

(२) कर्नेल टॉडने फ़ीरोज़शाहके घोड़े लेजाना लिखा है, लेकिन् यहसमय अलाउद्दीन ख़िल्जीका है.

(३) कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि घड़सीने तीमूरशाहके दिल्लीपर हमलह करनेके वक़ बहादुरी दिखलाई, जिसके बदलेमें उसको जयसलमेरकी सनद मिली थी, और भाटीनामहमें इसका गद्दीनशीन होना विक्रमी १३७३ [हि० ७१६ = ई० १३१६] में लिखा है. लेकिन् तीमूर बहुत ही पीछे आया है; इसलिये या तो साल संवतोंमें फ़र्क़ है, या कर्नेल टॉडके नोटके मुवाफ़िक़ यह ज़मानह ऐबकखांकी लड़ाईका होगा, क्यौंकि अलाउद्दीनके वक़्में मुग़लोंके कई हमले हुए हैं.

(४) दूदाके मुक़ाबलह करके मारे जानेके वक़ केहर अपनी माताके साथ उसकी ननिहाल मंडोवर में था.

विमलादेवीने अपने पतिके मारे जाने बाद उसके मन्शाके मुवाफ़िक़ केहरको जानशीन मुक़र्रर करदिया, और छः महीने पीछे विक्रमी १३९२ [हि० ७३६ = .ई० १३३५] में अपने पतिके बनवाये हुए "घड़सी सर" तालाबकी प्रतिष्ठा कराकर सती होगई.

विक्रमी १३९१ [हि० ७३५ = .ई० १३३४] में १३- रावल केहर गद्दीपर बैठा. इसके आठ बेटे थे- बड़ा लखमण (लक्ष्मण), जो केहरके बाद गद्दीनशीन हुआ; २- केलण, जिसने अपने पिताके समय बहुतसी लड़ाइयोंमें तारीफ़के क़ाबिल बहादुरी दिखलाई; ३- सोम, जिसकी औलाद वाले सोमा भाटी कहलाते हैं; ४- कलकरण, ५- तणू, ६- सांतल, जिसने एक पुराने शहरको आबाद करके उसका नाम सांतलमेर रक्खा (१); ७- धीजा, और ८- तेजसी.

केहरके मरने बाद विक्रमी १४५२ [हि० ७९७ = .ई० १३९५] में १४- लखमण गादीपर बैठा; इसके सात बेटे बैरसी, रूपसी, रायधर, अमरसी, कुम्भा, सादूल और साहसी हुए. रावल लखमणके छोटे भाई केलणने अपनी जवांमर्दीसे एक जुदा इलाक़ह ब्याह नदीके किनारेपर आबाद करके अलहदह राजधानी बनाई थी, इसके क़बज़हमें "किरोहर" के अलावह, जिसको उसने आबाद करके विक्रमी १४७२ [हि० ८१८ = ई० १४१५] में राजधानी बनाया था, पूंगल, बीकमपुर, नांदणा, देवरावल, मारोट, व भटनेर वग़ैरह बहुतसा .इलाक़ह था. केलणके रणमल्ल और चाचा वग़ैरह २४ बेटे थे.

केलणके मरने बाद रणमल्ल किरोहरका मालिक हुआ; लेकिन् किसी बीमारीसे उसके बदनका नीचेका हिस्सह बे काम होजाने या मरजानेके सबब चाचा जानशीन हुआ; इसने भी अपने पिताकी तरह कई मारिकोंमें बहादुरी दिखलाई. चाचाके बाद उसका बेटा बरसल क़िरोहरका राव कहलाया; यह भी बड़ा जवांमर्द था, इसने अपने नामपर बरसलपुर आबाद किया और पंजाबके रईसोंके साथ बहुतसी लड़ाइयां कीं. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "गारा नदीके दोनों किनारोंके ऊपरका बहुतसा हिस्सह केलणकी औलादके क़बज़हमें था, जिसपर बाबर बादशाहने मुल्तानको फ़त्ह करके, अपने हाकिम मुक़र्रर किये, तब केलणकी औलादवाले, जो क़िरोहर कोट, दीनापुर, पूंगल, व मारोट वग़ैरहमें आबाद थे, वे सब मुसल्मान होगये."

रावल लखमणके मरने बाद विक्रमी १४८६ [हि० ८३२ = .ई० १४२९] में १५- बैरसी राज्याधिकारी हुआ, जिसके चार बेटे १- चाचा, २- ऊगा, ३- मेला और ४- बनवीर हुए. रावल बैरसी बड़ा दूरन्देश और धर्मात्मा था; इसने मंडोवर के राव जोधाको अपने पास रक्खा, और मदद करके उसको मंडोवरका मालिक बनाया.

(१) जोधपुरकी तवारीख़में लिखा है, कि सांतलमेरको जोधपुरके राव जोधाके बेटे सांतलने आबाद किया था, लेकिन् न मालूम किसका क़ौल सहीह है, अगर यह सांतलमेर दूसरा हो, तो इख़्तिलाफ़ मिट सक्ता है.

विक्रमी १५०६ [हि० ८५३ = .ई० १४४९] में १६- रावल चाचा अपने बाप के मरने बाद गद्दी नशीन हुआ, यह थोड़े ही वर्ष राज्य करके मरगया, इसके एक ही बेटा १७- देवीदास था, जो विक्रमी १५१३ [हि० ८६० = .ई० १४५६] में राज्यका मालिक बना; इसने अमरकोटके सोढा राजपूतों वग़ैरहपर धावे किये. इसके जैतसी, सांतल, पातल, मदो (माधव), ठाकुरसिंह और रामा छः बेटे हुए. रावल देवीदासके मरनेपर विक्रमी १५४९ [हि० ८९७ = .ई० १४९२] में १८- जैतसी रावल कहलाया, जिसने विक्रमी १५७० [हि० ९१९ = .ई० १५१३] में "जैत बन्द" नामका एक तालाब बनवाकर उसपर बाग़ लगवाया. इसके लूणकरण, नरसिंह, महारावण, मंडलीक, बैरू, प्रतापसी, मेहरो और भवानीदास आठ बेटे हुए. विक्रमी १५८५ [हि० ९३४ = .ई० १५२८] में १९- रावल लूणकरण राज्यका मालिक बना, जिसके वक़में बाबर बादशाहने समर्क़न्दसे आकर इब्राहीम लोदीको मारने बाद दिल्लीपर अपना क़बज़ह किया (१). अलीख़ां नामी एक पठान जयसलमेर आया, जो कुछ दिन वहां रहकर एक रोज़ दग़ासे अपने साथियों समेत क़िलेमें जा घुसा, और तीन पहरतक बराबर लड़ाई करके वहीं मारा गया. भाटी नामहमें लिखा है, "कि यह मारिका विक्रमी १६०७ ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० ९५७ ता० १० जमादियुल अव्वल = .ई० १५५० ता० २८ मई] को हुआ." रावल लूणकरणके नौ बेटे मालदेव, हींगलीदास, रायपाल, सूरजमल्ल, शिवदास, रायमल्ल, दुर्जनशाल, दूदा और हरिदास थे.

इसी रावलके वक़में हुमायूं शाह जयसलमेरके रेगिस्तानमें होकर गुज़रा, जब कि शेरशाहने उसको दिल्लीसे निकाल दिया था, और रावल लूणकरणके लोगों से इसका मुक़ाबलह हुआ- (देखो पृष्ठ १२९).

विक्रमी १६०७ [हि० ९५७ = ई० १५५०] में २०- रावल मालदेव गद्दी नशीन हुआ. इसके हरिराज, भवानीदास, खेतसी, नारायणदास, सहसमल्ल, नेतसी और पूर्णमल्ल सात बेटे थे, जिनमेंसे रावल मालदेवके मरनेपर विक्रमी १६१८ पौष कृष्ण ६ [हि० ९६९ ता० २० रबीउ़ल अव्वल = .ई० १५६१ ता० २७ नोवेम्बर] को २१- हरिराज गद्दीपर बैठा; और बादशाह अक्बरके दर्बारमें दिल्ली हाज़िर होकर उसने ख़िल्अ़त वग़ैरह हासिल किया. इसने अपने इलाक़हके आसपासकी किसी क़द्र ज़मीन अपने क़बज़हमें करके मुल्कको भी बढ़ाया. हरिराजके मरने बाद उसके चार बेटों भीम, कल्याण, भाखरसिंह, और सुल्तानमेंसे

---

(१) बाबर बादशाह विक्रमी १५८५ [हि० ९३४ = .ई० १५२८] से दो तीन वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमें आ चुका था.

वड़ा २२- भीम विक्रमी १६३४ माघ शुक्ल ४ [हि० ९८५ ता० ३ ज़िल्क़ाद = ई० १५७८ ता० १२ जैन्युअरी] को जयसलमेरका मालिक वना. यह अक्वर बादशाहके समय शाही फ़ौजके साथ कई मुहिमोंपर भेजा गया, जिनमें ख़ैरख़्वाही और उ़म्दह कार्रवाई दिखलानेके सवव उसको कुछ जागीर वग़ैरह मिली थी. भाटी नामहमें लिखा है, कि बादशाहने उक्त रावलको तीन हज़ारी मन्सव दिया था. जयसलमेरके क़िलेमें इन्होंने वहुतसे मकानात वनवाये, जो इस वक़्तक मौजूद हैं. रावल भीमके मरजानेपर उनका भाई २३- कल्याण विक्रमी १६७० माघ शुक्ल १५ [हि० १०२२ ता० १३ ज़िल्हिज = ई० १६१४ ता० २५ जैन्युअरी] को गद्दी नशीन हुआ.

विक्रमी १६७३ [हि० १०२५ = ई० १६१६] के वयानमें वादशाह जहांगीर अपनी किताव तुज़क जहांगीरी में लिखता है, कि "कल्याण जयसलमेरी, जिसके बुलानेको राजा कृष्णदास गया था, हाज़िर हुआ, और उसने १०० अश्रफ़ी, व एक हज़ार रुपया नज़्र किया. उसका वड़ा भाई भीम जागीरदार था, जव वह गुज़र गया, तो उसने दो महीनेका एक वच्चा छोड़ा, वह भी ज़ियादह न जीया. शाहज़ादगीके दिनोंमें उसकी वेटीको मैंने व्याहा था, और उसको "मलिकए जहां" ख़िताव दिया था. ये लोग मुद्दतसे हमारे ख़ैरख़्वाह रहे हैं, और इनसे रिश्तहदारी भी होगई थी, इसलिये मैंने रावल भीमके भाई कल्याणको वुलाकर राजका टीका और रावलका ख़िताव दिया (१)."

रावल कल्याण, जिसको वादशाह जहांगीरने दो हज़ारी ज़ात व हज़ार सवार का मन्सव दिया था, मिज़ाजका वहुत सीधा सादा था, इसने मुल्कको वहुत कुछ सर्सब्ज़ और आवाद किया. इसके सिर्फ़ एकही वेटा २४- मनोहरदास था, जो विक्रमी १६८४ [हि० १०३६ = ई० १६२७] में उसके मरनेपर रावल कहलाया. मनोहरदास वड़ा नीतिनिपुण था, जिसने मंडलेतक अपनी सर्हद क़ाइम की. मनोहरदासके पीछे विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] में २५- रामचन्द्र राज्यका अधिकारी हुआ (२); लेकिन् रियासतमें नाइत्तिफ़ाक़ी व

(१) तुज़क जहांगीरीमें वादशाह जहांगीरने यह हाल हिज्री १०२५ के ज़िक्रमें लिखा है, और कल्याण की गद्दी नशीनीकी तारीख़ भाटीनामहमें विक्रमी १६७० माघ शुक्ल १५ [हि० १०२२ ता० १३ ज़िल्हिज = ई० १६१४ ता० २५ जैन्युअरी] लिखी है, इससे मालूम होता है, कि कल्याण गद्दी वैठनेके दो तीन वर्ष वाद वादशाहके वुलानेसे दिल्ली गया होगा.

(२) कर्नेल टॉडने अपनी कितावमें रावल वरसिंहके वाद रावल रामचन्द तक का कुछ हाल नहीं लिखा, वल्कि कुर्सीनामहमें भी फ़र्क़ है, याने उक्त कर्नेलने वरसिंहके वाद रावल जैत, लूणकरण, भीम, मनोहरदास और उसके वाद सवलसिंह लिखा है; इस सववसे हमने रामचन्द तक का हाल भाटीनामहसे मूलमें दर्ज किया है.

बखेड़ोंके सबब २६- सबलसिंह मालिक बन बैठा, जिसके गद्दी नशीन होनेकी तारीख़ भाटीनामहमें विक्रमी १७०७ माघ शुक्ल ५ [हि० १०६१ ता० ४ सफ़र = ई० १६५१ ता० २६ जैन्युअरी] लिखी है. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "जयसलमेरका अव्वल राजा सबलसिंह हुआ, जिसको जयसलमेरका .इलाक़ह बतौर जागीर बादशाहकी तरफ़से मिला था, लेकिन् यह अस्ली वारिस गद्दीका नहीं था. मनोहरदास ने अपने भाई (भीम) के बेटे नाथूको बीकानेरसे शादी करके वापस आते समय, जो गद्दीका वारिस था, फलौदी मक़ामपर एक औरतके हाथसे ज़हर दिलाया, कि जिससे वह मरगया, परन्तु ईश्वरको यह मन्ज़ूर न था, कि क़ातिलकी नस्ल हुकूमत करे, इसलिये वह मर्तबह सबलसिंहको नसीब हुआ, जो मालदेवकी तीसरी औलादमें से था (१)."

सबलसिंह आंबेरके राजा जयसिंह अव्वलका भानजा और बड़ा नेक मिज़ाज जवान आदमी था, उसको अपने मामाके मातहत पेशावरमें एक बड़ा उहदह मिला था, जहांपर उसने अफ़्ग़ानोंके हाथसे बादशाही ख़ज़ानहको बचाया था. इस ख़ैरख़्वाही के सबब कुल रईस, जो अपनी अपनी फ़ौज समेत बादशाही नौकरी करते थे, उसपर मिह्र्बान थे. बादशाहने जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहको हुक्म दिया, कि उस को गद्दी नशीन करे. नाहरख़ां कूंपावत इस कामपर मुक़र्रर हुआ, और इसी कामके पूरा करनेकी वजूहसे उसको शहर और .इलाक़ह पोहकरणकी हुकूमत दीगई, और इसी वक्तसे वह .इलाक़ह जयसलमेरसे अलहदह हुआ.

सबलसिंहके मरने बाद उसके सात बेटों अमरसिंह, रत्नसिंह, राजसिंह, महासिंह, माधवसिंह, बांकीदास और भावसिंहमेंसे बड़ा २७- अमरसिंह विक्रमी १७१६ श्रावण शुक्ल १५ [हि० १०६९ ता० १३ ज़िल्क़ाद = ई० १६५९ ता० २ ऑगस्ट] को गद्दीपर बैठा. इसने टीकादौड़के वक्तमें पहिला हमलह बिलोचोंपर करके फ़त्ह पाई. उक्त रावलने अपनी बेटियोंके विवाहके लिये, जो जोधपुरके महाराजा अजीतसिंह व उदयपुरके महाराणा अमरसिंहके साथ हुआ था, अपनी रिआयासे बराड़ लेना चाहा. इसपर रघुनाथ नामी एक राजपूतने, जो उसका मुसाहिब था, इन्कार किया, जिसको उसने उसी वक्त मार डाला. फिर रियासतके पूर्वी हिस्सहकी तरफ़ चुन्ना राजपूतोंने लूट मार

(१) लूणकरणके तीन बेटे थे:-

१- कल्याणदास, जिसका बेटा मनोहरदास, और उसका रामचन्द्र.

२- मालदेव, जिसका कायतसी (खेतसी), उसका दयालदास, और उसका सबलसिंह.

३- हरिराज, जिसका भीम, और उसका नाथू.

मचाई, तब उनपर चढ़ाई की, और फ़तहयाब होकर उन राजपूतोंसे अह्दनामे लिखा लिये.

कुछ अ़रसहसे राठौड़ोंने मुल्कमें फ़साद मचा रक्खा था, उसका .एवज़ लेनेके लिये बीकमपुर वाले सुन्दरदास व दलपतकी सलाहसे बीकानेरके .इलाक़हपर धावा किया गया, लड़ाई होनेपर भाटियोंने फ़त्ह पाई. यह ख़बर राजा अनोपसिंह बीकानेर वालेको, जो उसवक्त बादशाही फ़ौजके साथ दक्षिणमें था, पहुंची. तब उसने मक़ाम हंसारसे कुछ फ़ौज एक पठान सर्दारकी मातहतीमें देकर अपने मुसाहिब (प्रधान) को हुक्म दिया, कि राठौड़ोंको एकट्ठा करके जयसलमेरपर हमलह करे, और बीकमपुरको बिल्कुल बर्बाद करदे. यह हाल मालूम होनेपर रावल अमरसिंहने भाटियोंको जमा करके मुक़ाबलहके साथ पूंगलको दोबारह छीन लिया, और बाड़मेर व कोटड़ाके राठौड़ जागीरदारोंको अपना ताबेदार बनाया. इस लड़ाईमें बहुतसे राठौड़ मारे गये

अमरसिंहके जशवन्तसिंह, दीपसिंह, विजयसिंह, कीर्तिसिंह, श्यामसिंह, जैतसिंह, केसरीसिंह, जुझारसिंह, गजसिंह, फ़त्हसिंह, मुह्कमसिंह, हरिसिंह, जयसिंह, इन्द्रसिंह, महकरण, भीमसिंह, जोधसिंह और सुजानसिंह, अठारह बेटे और दो बेटियां थीं.

उक्त रावलको बादशाह आ़लमगीरने पोह्करण, फलौदी और मालाणी जागीर में दिये थे, जिनको उसके मरनेपर राठौड़ोंने छीन लिया, और कुछ हिस्सह मुल्कसे शिकारपुरके मालिक दाऊदख़ां अफ़्ग़ानने दबालिया.

विक्रमी १७५८ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ११११३ ता० ११ रबीउ़स्सानी = .ई० १७०१ ता० १६ ऑगस्ट] को २८- रावल जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठा; जिसके जगत्सिंह, सूरतसिंह, ईश्वरीसिंह, सर्दारसिंह और तेजसिंह, पांच बेटे थे.

कर्नेल टॉड लिखते हैं, "कि वलीअ़ह्द जगतसिंह, जिसके अक्षयसिंह, बुधसिंह और ज़ोरावरसिंह, तीन बेटे थे, अपने बापकी मौजूदगीमें ख़ुदकुशी करके मरगया. जशवन्तसिंहके मरने बाद २९- अक्षयसिंह गद्दीपर बैठा, बुधसिंह चेचककी बीमारीसे मरगया (१), परन्तु तेजसिंहने, जो जशवन्तसिंहका छोटा भाई था, जब्रन्

(१) "भाटीनामह" में लिखा है, कि जगतसिंहका बड़ा बेटा बुद्धसिंह और छोटा अक्षयसिंह था, तेजसिंहने बुद्धसिंहको, जो विक्रमी १७६४ वैशाख कृष्ण १२ [हि० ११११९ ता० २५ मुहर्रम = .ई० १७०७ ता० २९ एप्रिल] को गद्दीपर बैठा था, ज़हर देकर मारडाला, और विक्रमी १७७८ वैशाख शुक्ल १ [हि० ११३३ ता० २९ जमादियुस्सानी = .ई० १७२१ ता० २६ एप्रिल]

राज छीन लिया, तब अक्षयसिंह अपनी जान बचानेके लिये दिल्ली चला गया.

रावल जशवन्तसिंहका एक दूसरा भाई हरिसिंह, जो दिल्ली मक़ामपर बादशाही तावेदारी में था, तेजसिंहका जयसलमेरपर जब्रन् क़ाबिज़ होजाना सुनकर जयसलमेरकी तरफ़ आया, और उसने तेजसिंहसे मुक़ावलह किया. इस लड़ाईमें तेजसिंह बहुत ज़ख़्मी हुआ, और उन्हीं ज़ख़्मोंसे कुछ दिनों बाद वह मरगया. उसके बाद उसका बेटा सवाईसिंह गद्दीपर बैठा. यह नाबालिग़ था, जिससे अक्षयसिंहने भाटियोंको मिलाकर क़िलेपर हमलह करदिया, और सवाईसिंहको निकालकर दोबारह आप अपने हक़पर क़ाबिज़ होगया.

अक्षयसिंहने बहुत अरसेतक राज्य किया. इसके वक़में दाऊदख़ांके बेटे बहावलख़ांने देवरावल और खंदालका कुल इलाक़ह फ़त्ह करके बहावलपुरमें मिला-लिया. अक्षयसिंहके मूलराज, कुशालसिंह, और पद्मसिंह तीन बेटे हुए.

३०- रावल मूलराज दूसरा, विक्रमी १८१९ कार्तिक कृष्ण ५ (१) [हि० ११७६ ता० १९ रबीउल अव्वल = ई० १७६२ ता० ८ ऑक्टोबर] को अपने बापके बाद गद्दीपर बैठा; इसके तीन बेटे रायसिंह, लालसिंह, और जैतसिंह हुए. मूलराजने महता स्वरूपसिंहको अपना प्रधान मुक़र्रर किया था. इस प्रधानकी एक तवाइफ़से आश्नाई थी, और उसको सर्दारसिंह नामी एक राजपूत चाहता था, जिसने रायसिंहके साम्हने प्रधानकी शिकायत की. मुल्की आमदनी कम होजानेके सबब वलीअह्दकी उक्त प्रधानपर नाराज़गी तो पहिलेसे ही थी, इस वक़ सर्दारसिंहके बहकानेसे उसने ज़ियादह गुस्सहमें आकर स्वरूप-सिंहको मारडाला, और सर्दार व जागीरदारोंके कहनेसे मज्बूरन अपने बापको भी बेदख़ल करके हुक्मरानी करने लगा, परन्तु उसने गद्दीपर बैठने व अपने पिताको मारडालने से पर्हेज़ किया. इसके तीन महीने बाद अर्जुनसिंह, मेघसिंह और ज़ोरावरसिंह वग़ैरह सर्दारोंने मूलराजको क़ैदसे छुड़ाकर पीछा मालिक बनाया, और महता स्वरूपसिंहके बेटे सालिमसिंहको, जिसकी उम्र ग्यारह वर्षकी थी, प्रधानेका काम दिया. रायसिंह अपने बाप के हुक्मसे जिलावतन होकर जोधपुर चला गया, और वहांसे वापस आनेपर एक क़िलेमें क़ैद

को आप मालिक बन बैठा. तेजसिंह एक वर्ष बाद हरिसिंहके साथ मुक़ावलहमें ज़ख़्मी होकर मरगया, और उसका बेटा सवाईसिंह विक्रमी १७७१ [हि० ११३४ = ई० १७२२] में रावल कहलाया, जिसको निकालकर अक्षयसिंहने जयसलमेरपर विक्रमी १७८० श्रावण शुक्ल १४ [हि० ११३५ ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० १७२३ ता० १५ ऑगस्ट] को क़ब्ज़ह करलिया.

(१) कर्नेल टॉड विक्रमी १८१८ (ई० १७६२) में मूलराजका गद्दी नशीन होना लिखते हैं.

रक्खा जाकर कुछ दिनों बाद मरवाडाला गया, और उसके दो बेटे अभयसिंह व धौंकलसिंह भी इसीतरह ज़हरसे मारे गये.

रावल मूलराजका तीसरा बेटा जैतसिंह था, जिसका बेटा महासिंह हुआ, और महासिंहके सात बेटे तेजसिंह, देवीसिंह, फ़त्हसिंह, गजसिंह, जोधसिंह, केसरीसिंह और छत्रसिंह हुए, जिनमेंसे गजसिंह (१) अपने पड़दादाके बाद गद्दीपर बैठा. रावल मूलराजके वक़्में बहुतसा इलाक़ह रियासत जयसलमेरसे निकल गया था. इसी रावलके साथ विक्रमी १८७५ [हि॰ १२३३ = ई॰ १८१८] में पहिला अहृदनामह गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके साथ हुआ. मूलराजके वक़्में रियासतके कारोबारपर प्रधान महता स्वरूपसिंह व उसके मारेजाने बाद उसका बेटा सालिमसिंह ऐसे बाइख्तियार अफ्सर रहे, कि जिनकी रंजिशके सबब रावल मूलराजकी औलादमें से कई मारेजाने व बाज़ जिलावतन किये जाने वग़ैरह के अलावह सिर्फ़ गजसिंह ही बाक़ी रहा था.

विक्रमी १८७६ फाल्गुन शुक्ल ५ [हि॰ १२३५ ता॰ ३ जमादियुलअव्वल = ई॰ १८२० ता॰ १८ फ़ेब्रुअरी] को ३१- रावल गजसिंह गद्दी नशीन हुए, इनकी शादी उदयपुरके महाराणा भीमसिंहकी बेटीके साथ विक्रमी १८७७ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि॰ १२३५ ता॰ २१ रमज़ान = ई॰ १८२० ता॰ ३ जुलाई] को हुई थी- (देखो पृष्ठ १७४६).

इस मौक़ेपर बीकानेर व जयसलमेरके सर्हदी झगड़ोंमें किसी क़द्र कमी हुई. विक्रमी १८८० [हि॰ १२३९ = ई॰ १८२४] में प्रधान महता सालिमसिंह मरगया, जिसका दबाव महारावलके ऊपर बहुत कुछ था. इसके बाद महारावलने उसके दो बेटोंको किसी जुर्मपर क़ैद करके सालिमसिंहके फ़िर्क़ेका ज़ोर बिल्कुल तोड़ डाला.

सिन्धकी लड़ाईके वक़्त उक्त महारावलने गवर्मेंट अंग्रेज़ीको बारबर्दारी वग़ैरह मौजूद करनेमें बहुत कुछ मदद दी थी, जिसके एवज़, सिंधका इलाक़ह फ़त्ह होने पर, विक्रमी १९०० [हि॰ १२६० = ई॰ १८४४] में नव्वाब अली मुरादख़ांसे

---

(१) कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि मूलराजके तीन बेटे थेः-

१- रायसिंह, जो अपने दो बेटों धौंकलसिंह व अभयसिंह समेत ज़हरसे मारा गया.

२- जैतसिंह, जो काणा था, और उसका बेटा महासिंह अन्धा होगया.

३- मानसिंह, जो घोड़ेसे गिरकर मरगया, और उसके चार बेटों फ़त्हसिंह, गजसिंह, देवीसिंह और तेजसिंहमेंसे गजसिंह राज्यका मालिक बना और बाक़ी जिलावतन किये गये.

शाहगढ़ वग़ैरह पर्गने, जो पहिले वक्तमें इस रियासतके तह्तसे निकल गये थे, वापस दिलाये गये. इनके कोई बेटा नहीं था, इसलिये विक्रमी १९०२ आषाढ़ शुक्ल ५ [हि० १२६१ ता० ३ रजब = ई० १८४५ ता० ९ जुलाई] को रावल गजसिंहके इन्तिक़ाल करने बाद महाराणी राणावतने उनके छोटे भाई केसरीसिंहके बेटे रणजीतसिंहको जानशीन मुक़र्रर किया.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ६ [हि० ता० ४ रजब = ई० ता० १० जुलाई] को ३२- रणजीतसिंह जयसलमेरके रावल कहलाये. इनको विक्रमी १९१९ [हि० १२७९ = ई० १८६२] में राजपूतानहके दूसरे रईसोंके शामिल सर्कार अंग्रेज़ीसे गोद लेनेकी सनद मिली. यह भी विक्रमी १९२१ ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० १२८१ ता० ११ मुहर्रम = ई० १८६४ ता० १६ जून] को लावलद इन्तिक़ाल करगये, तब इनके छोटे भाई ३३- वैरीशालको जानशीन करनेकी तज्वीज़ हुई, और यह रावल माने गये. उस वक्त वैरीशालकी उम्र १५ वर्षकी थी, इन्होंने रियासतमें बद इन्तिज़ामी व झगड़ोंके सबब गद्दीपर बैठनेसे इन्कार किया, परन्तु दो वर्ष बाद कर्नेल ईडन (Eden.) एजेएट गवर्नर जेनरलने राज्यका प्रबन्ध करके इनका रंज व अन्देशह दूर करदिया. उक्त रावलका विवाह विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में डूंगरपुरके महारावल उदयसिंहकी बेटीके साथ हुआ, जिसमें दोनों तरफ़से शादीके ख़र्च व जहेज़ वग़ैरहमें बहुत रुपया ख़र्च हुआ था. यह महारावल, जो हालमें विद्यमान हैं, स्वभावके अच्छे और सादा चलन सर्दार हैं.
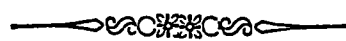
जयसलमेरका अ़ह्दनामह.

अ़ह्दनामह नम्बर ५०.

एचिसन साहिबकी अ़ह्दनामोंकी किताब जिल्द ३, पृष्ठ १२८-१२९.

अ़ह्दनामह दर्मियान ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और जयसलमेरके राजा महारावल मूलराज बहादुरके, जो ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबल मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी०, गवर्नर जेनरल बहादुर

के दिये हुए पूरे इस्तियारातके मुवाफ़िक़ सर चार्ल्स थिओ फ़िलस मेट्कॉफ़की मारिफ़त, और महाराजा धिराज महारावल मूलराज बहादुरकी तरफ़से उनके दिये हुए इस्तियारातके अनुसार मिश्र मोतीराम और ठाकुर दौलतसिंहकी मारिफ़त क़रार पाया.

पहिली शर्त- दोस्ती और एकता हमेशहके लिये ऑनरेब्ल कम्पनी और जयसलमेरके महारावल मूलराज बहादुर और उसके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम रहेगी.

दूसरी शर्त- महारावल मूलराजके वारिस जयसलमेरकी गद्दीपर रहेंगे.

तीसरी शर्त- किसी सख़्त हमलहकी सूरतमें, कि जिससे रियासत जयसलमेर के ग़ारत होनेका अन्देशह हो, या ऐसे बड़े अन्देशोंका ख़तरह हो, जो उक्त रियासतकी निस्बत पैदा होंगे, गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी रियासतकी हिफ़ाज़तके लिये कोशिश करेगी, उस सूरतमें, कि जयसलमेरके राजाकी निस्बत तक़्सीरका कोई सबब पैदा न होगा.

चौथी शर्त- महारावल और उसके वारिस व जानशीन हमेशह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके मातहत रियासत और उसकी बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे.

पांचवीं शर्त- यह अह्दनामह पांच शर्तोंका क़रार पाकर उसपर मिस्टर चार्ल्स थिओ फ़िलस मेट्कॉफ़ साहिब और मिश्र मोतीराम व ठाकुर दौलतसिंहकी मुहर और दस्तख़त हुए; और इस अह्दनामहकी तारीख़से छः हफ़्तेके अन्दर हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल बहादुर और महाराजाधिराज महारावल मूलराज बहादुरके दस्तख़तोंसे तस्दीक़ की हुई नक़ एक दूसरेको दीजावेगी.

मक़ाम दिल्ली ता० १२ डिसेम्बर सन् १८१८ ईसवी.

दस्तख़त- सी० टी० मेट्कॉफ़. (मुहर.)

दस्तख़त- हेस्टिंग्ज़.

(गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर.)

दस्तख़त- जी० डाउड्स वेल.

दस्तख़त- जे० स्टुअर्ट.

दस्तख़त- सी० एम० रिकेटस्.

फ़ोर्ट विलिअम मक़ामपर तारीख़ २ जैन्युअरी सन् १८१९ ईसवीको कौन्सिल के इज्लासमें गवर्नर ज़ेनरलने तस्दीक़ किया.

दस्तखत- जे० ऐडम,
चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेण्ट.

ऊपर लिखे हुए अह्दनामहके सिवा मुज्रिमोंके लेन देनकी बाबत एक अह्दनामह होकर गोद लेनेकी सनद भी राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ इस रियासतको मिली है.

शेषसंग्रह.

१- उदयपुरमें रामप्यारीकी बाड़ीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

श्री गणेशायनमः अथभाषाप्रशस्तिअर्थलिष्यते. श्रीगणपतपाय प्रणाम करि संस्कृतको लेसार ॥ भाषाप्रसस्ति अब लिखे सबहीको अधिकार ॥ १ ॥ अथ भाषा ॥ सिद्धश्रीमहाराजाधिराजमहिमहेंद्रसूर्यवंशावतंस श्रीजगतसिंहजी सुत श्रीदीवाणजी श्रीअरिसिंहजी सुत श्री ५ श्रीसकलगुणिजनप्रतिपालकअनेकगुणनिधानक्षत्रीधर्म-धुरंधरश्रीएकलिंगेश्व (र) चरणशरणशत्रुमातंग पंचानन अर्थिजनकल्पद्रुम ॥ श्रीकृष्णैकभक्तिपरायणदाक्षणात्यमालजित्प्रभृतिसुभट मौलिमाणिक्यनीराजितपद-पद्म । शास्त्रशस्त्रविचारचतुर । महाराजाधिराजमहाराणाजी श्री १०८ श्री भीमसिंहजी विजयराज्ये ॥ संवत् १८४७ वर्षे जेष्ठमासे शुक्ल पक्षे १२ तिथौ चन्द्र

वासरे श्री उदयपुरनगरे मारुपुरामध्ये श्रीरामनारायणजीरो देवरो, बावड़ी, बाड़ी, श्री दरबार लायक महल, धर्मशाला, और पण जायगा वडारण रामप्यारी करापितं श्री दीवाणजी श्रीश्रीभीमसिंहजीरी माता श्री ५ श्री सरदारकुंवर-बाई झालांरी वेटी धर्ममूरत श्री बाईजीराजरी कृपा सुनजररी पात्र पूर्वोक्तभक्ति-संबंधिश्रीदिवाणजीरा अंतःपुरमें वड़ो अधिकार लीया जात गूजर रामाजीरी बेटी वाई रुक्मारी कुक्षे जाई धर्ममूर्त्त दयासागर वाचाअविचल वाई रामप्यारीरे धर्मपुत्र मयारामजी सुत रतनजी जात आदगोड़ श्रीदरबारमें पड्यारो अधि-कार पाया धर्मपुत्री चंदणा जात सनावड़ जमाई किसनजी वाई रामप्यारी श्री-रामनारायणजीरो देवरारो सारी जायगारो महोछव कीदो जदी श्रीदिवाणजी, श्रीवाईजीराज, तथा राण्या तथा नानीवायां, रावला मायली डावड्यां, चाकर वावर, तथा भींडररो ठाकुर, देलवाडारो ठाकुर, कानोड़रो ठाकुर, सहा शिवदास जी, सतीदासजी, जेचंदजी गांधी, अगरजी, मोजीरामजी मेहता, किसोर-दासजी, कोटारो साथ, सेररा चोवट्या, सारा भलामनष, आदमी, लुगायां सुदी आवे दिन १२ सुदी रह्या, वड़ो उच्छव हुवो, ब्राह्मण अनेक जीम्यां, यथायोग्य दक्षणा दीधी, श्री दरवार सारो साथ घणा घुशी हुवा, श्री दरबाररी, श्री वाईजीराजरी घणी नछरावल कीधी, श्री दिवाणजी रामनारायणजीरे भेट गाम वरनोकड़ो प्रगणे कुंभलमेररे चढ़ायो, वाड़ी १ रसवागरी श्री बाईजीराज चढ़ाई, राण्यां आप आपरा गाम माहे धरती चढ़ाई, श्री रामनारायणजीरे पूजा सारू, श्री रामानुजसंप्रदाय श्री महंत ध्यानदासजी सुत पूर्णदासजी सुत मोती-दासजी अणाहे मेल्या, भटमेवाड़ा शिवलालहे कथा वांचवा मेल्या, चत्रभुज गजधरहे कड़ा दीधा, गोड़ ब्राह्मण चतुर्भुजहे अणी काम वावत गहणो सिर-पाव देवाणो, और साराहें राजी कीधा, वाईहे राजी वेने श्री जी तथा बाई-जीराज हुकम कीधो सो ओजूं कोहो सो करां, जदी बाई रामप्यारी घोड़ा, सरपाव, गेणो सारांहे जूदा जूदा नजर करे हाथ जोड़े अरज कीदी, सो मोने मोटी कीधी, इवे अरज या हे सो, कसारांरी ओलमें मारा घर हे, सो सारो साथ ले श्री प्रथीनाथ सनाथ केजे. आ अरज सुणे श्री दिवाणजी, श्री बाईजीराज सारांहें लेने उठे पधारया, आखो दिन रह्या नजराणो फेर अठारो लेने पाछा महलां पधारया. इसी तरह अठे उछब घणो हुवो, सारो साथ तालेवर सूं ले गरीब सुदि जीमण वीचे, कायदा वीचे, घणा कुशी हुवेने घरे सदाया, जायगांरी चाकरी में महतो फतो, वेटो दोलो, गूजर सवो, जाट नंगो, छड़ीदार जेकिसन.

श्लोक.

ॐ ॥ श्रीगुरुं गणनाथं च नत्वा वागीश्वरीं परां ॥ कुर्वे प्रशस्तिं रांप्यार्या रम्यां विबुधरंजिनीं ॥ १ ॥ श्रीसूर्यवंशे जगति प्रसिद्धोभून्महीपतिः ॥ जगत्सिंह इति ख्यातस्तद्वंश्यान्वर्णये धुना ॥ २ ॥ आसीज्जगत्सिंहसुतो रिसिंहः क्षात्रैकसिंहो रिमृगव्रजेषु॥तस्यात्मजौ द्वौ हि हमीरसिंहो यो भीमसिंहः स जगत्प्रशास्ति ॥ ३ ॥ कृष्णैकतानी सुकृतार्थदानी शास्त्राभिमानी सदसि प्रमाणी ॥ कल्पद्रुपाणिर्न्नवनीतवाणि र्भीमो धराजानिरमानिविश्वैः ॥ ४ ॥ जित्वा दिल्लीश्वराद्यान् धरणिधरवरान् गृह्यतेभ्यः करार्थानुद्दामश्रीर्जगत्यां प्रथितगुणयशा मालजिद्दाक्षिणात्यः ॥ यस्यांघ्रिद्वंद्वसंगोपमिति मुदवहत्स्वात्मनैव प्रसिद्धां स श्रीभीमो नरेन्द्रः स्पृहयतु जगदानंदसंवर्द्धनाय ॥ ५ ॥ दृष्ट्वा यत्खड्गनागं समरभुविचलत्कालकल्पं करालं द्विट्प्राणव्रातपानव्रतजनितधृतिं लेलिहानं समंतात् ॥ कीर्तिस्त्रैणस्वभावाच्चकिततरमनाः प्राद्रवत् सर्वभूमौ देशांस्तेभ्यो नरेशानथ सुरविपयान् दिग्विशेषानशेषान् ॥ ६ ॥ मातास्ति तस्य नृपते र्जनदुःखहर्त्री नारायणांघ्रिजनितात्ममनोभिलाषा ॥ सर्द्दार पूर्वकुवरीति पतिव्रता सज्झालान्वयाचलभवा भवशेखरेव ॥ ७ ॥ सद्धर्मैकपरंपराखिलजनश्रेयस्करीसत्करा भास्वद्वंशधरारिसिंह नृपतेरग्रेसरा योषितां ॥ दीनानाथदयाशयार्द्रहृदया या पुत्रपौत्रान्विता मान्या सर्वपतिव्रतासु सुतरां श्रीवाईराजाख्यया ॥ ८ ॥ पात्रंकृपाया नृपमातुरस्या वडारणेति प्रथितप्रभावा ॥ परोपकारैकमना हि रामप्यारीति विख्यातयशा जगत्यां ॥ ९ ॥ नरेश्वरांतःपुरमाननीया रामस्य पुत्री किल गुज्जरस्य ॥ रुक्मांगजा गोऽतिथिदेवसेवाश्रद्धावती शुद्धिमती चरित्रैः॥ १० ॥ यस्या मयारामइति प्रसिद्धः पुत्रश्च पुत्री चदणाख्ययेति ॥ धर्मार्थमेतौ द्विजजौ गृहीतावुभौ सगौडश्च सनावडीसा ॥ ११ ॥ पुरोगवत्वे धिकृतोन्नृपेण वालोपि सुज्ञैककुलानुसारी ॥ आस्ते पञ्चारेत्युपनामधेयः सद्भिः सुगेयः सदसोमुखे यः ॥ १२ ॥ लब्ध्वा प्रसादमतुलं नृपतेः समातुः सैपाशुमोदयपुरे रचयांचकार ॥ प्रासादमुन्नतशिखं रुचिरां च वापीं पांथाश्रमान् नृपविनोदगृहाणि वाटीं ॥ १३ ॥ यत्प्रासादसमाश्रितोहि भगवान् श्रीरामनारायणो लोकानां शुभमिच्छुरुन्नतयशा भूपार्च्चितांघ्रिद्वयः ॥ भास्वद्वंशभुवोनृपस्य ससुतस्येष्टंविधातुं पुरे सन्स्वीयायुधमूर्तिभूपणधरोवासीज्जगच्छ्रेयसे ॥ १४ ॥ यः सोपानपद्दंपरासु नगराद्यांतः पयोहेतवे कामिन्यः कनकश्रियाप्रतिफलत्कांत्यारतीयंति च ॥ या दृष्ट्वा रविरप्सरोगणमकार्षीन्स्नानसेमानसे वासंजातमनोभवाः स्मितलस-

द्रक्रा मनोहारिणी ॥ १५ ॥ त्रिवेदानां वर्गे द्वितियरहिते संवदुदये पुरे मासे ज्येष्ठे विशदसमये मन्मथतिथौ ॥ इयंरामप्यारी सकलनरनारीसुखकरी चकार प्रासाद-प्रभृति सुकृतं पूर्णविभवं ॥ १६ ॥ यदुच्छवे भूमिपति : सदार : स्फुरत्प्रताप : पुर वासि लोकैः ॥ सहैत्य सामंतयुतो निवासमचीकरद्वादशवासराणि ॥ १७ ॥ स्नुषोल्लसच्छ्रीर्हि नृपस्य माता समन्विता सेवनकारिणीभिः ॥ मुमोद दृष्ट्वोच्छव-भारमस्या नस्यादयं कुत्रचिदित्यभाणि ॥ १८ ॥ चंद्रानोपेभगिन्यौ द्वे उदेदोलत-संज्ञके ॥ आत्मजे नरनाथस्य समेत्यापुरिमामुदं ॥ १९ ॥ तथा नृपकलत्राणि पवित्राणि शुभैर्व्रतैः ॥ विचित्राणि विभूषाद्यै र्मित्राणि पतिपादयोः ॥ २० ॥ मद्रराजविजयाधिपसूनुर्भागिनेयपदभूषणरत्नं ॥ जाल्मसिंह इति यः सकलत्रो-त्राजगाम निजभृत्यसमेतः ॥ २१ ॥ भींडरेशश्चदेल्वाडाधिपः कानोडनायकः ॥ इत्यादयोहिसामंता मानिताः समुदो ऽ भवन् ॥ २२ ॥ शिवदासाभिधो ऽ मात्यो भ्रातृभिः सह संगतः ॥ परिवारयुतो धीरो मुमोदोच्छवदर्शनात् ॥ २३ ॥ बांध-वाश्च सुहृदः कुटुंबिनो गोत्रजा नगरवासिनो जनाः ॥ आप्रधान मधमावधि व्यधु र्मानमाननसमं समंततः ॥ २४ ॥ इत्थं नानाभावतृप्ताश्च लोकाः कोटादेशादाग ता ये विशोकाः ॥ ऊचुः सम्यक् सम्यगेवं मुखेभ्यः सार्द्धं वाद्यैर्भेरिभिः काहलाभिः ॥ २५ ॥ औदुंबरो निर्भयरामनामा ज्योतिर्विदग्रेसरजातधामा ॥ तेनैवदत्ते सुशुभे मुहूर्ते चक्रुर्द्विजाः सर्वमिदंयथोक्तं ॥ २६ ॥ येषामध्ययनं सम्यक् शास्त्रे श्रु-तिचतुष्टये ॥ वृतानामत्र यद्दत्ता दक्षिणाभूच्च तुष्टये ॥ २७ ॥ श्रीचंद्रसूनुर्भ्रगडोः पि-ता यश्चतुर्भुजो गौडकुलप्रसूतिः ॥ वस्त्रैर्विभूषादिभिरन्वमानि प्रासादकार्याधि-कृतौ नृपेण ॥ २८ ॥ राज्ञश्च राजमातुश्च राजपत्नीगणस्य च ॥ तथान्येषां च लोकानां सन्माने ऽ स्यैवदक्षता ॥ २९ ॥ अश्वैर्विभूषणभरैर्वसनैश्च भोज्यैः संमानितो नरपतिः प्रतिगृह्यतोषं ॥ सर्वैः प्रसूप्रभृतिभिः सहितोर्थितः सन्नस्यागृहं प्रतिय-यौ विनयान्विताया: ॥ ३० ॥ अंतः पुराधिकृतिना मोजीरामेण धीमता ॥ रक्षितानि कलत्राणि ननंद्रा सार्द्धमन्वयुः ॥ ३१ ॥ यामद्वयं मात्रयुतो वसित्वा विख्यापयन् प्यार्य्युपरिप्रसादं ॥ महोच्छवं शौल्विकहट्टमार्गे प्रदर्श्यलोकान् स्वगृहं नृपो ऽ गात् ॥ ३२ ॥ विविधभोजनतृप्तमनोरथैरनुचरैरथ पत्तनवासिभिः ॥ गदि-तमित्थमपूर्वमलोकि यन्न कथितं चिरजन्मिभिरप्यदः ॥ ३३ ॥ अमात्यौ श्रीनृपेंद्रस्य रामप्यार्यासुसत्कृतौ ॥ अगरश्च किशोरश्च प्रसन्नौ जग्मतुर्गृहे ॥ ३४ ॥ यः पूर्णदासस्य पिता जितात्मा पौत्रो यदीयः किलमुक्तिदासः ॥ चकार रामानुजसंप्रदायी सध्यानदासो भगवत्सपर्य्यां ॥ ३५ ॥ वृर्णोकडो नाम जगत्प्रसिद्धो ग्रामो ऽ स्ति यः कुंभलमेरुपार्श्वे

श्रीरामनारायणसेवनार्थं भूपेन रामार्पणतोर्पितः सः ॥ ३६ ॥ नृपस्य मात्रा भगवत्सपर्याहेतोर्मुदा दायि कुशोदकेन ॥ आचंद्रसूर्यं रसवाटिका सा पुराद्बहिः प्राग्दिशियार्द्धकोशे ॥ ३७ ॥ भूमिप्रदेशैर्निजनामचिन्हैः स्वग्रामसंस्थै र्नृपद्वारवर्गः ॥ पृथक् पृथक् पूजन माचकार श्रीरामनारायणपादपद्मे ॥ ३८ ॥ रामप्यार्याः प्रियः प्राणो मयारामतनूद्भवः रत्नाख्यः सेवनं चक्रे प्रभोरत्नादिभिः परं ॥ ३९ ॥ शिवा च शंभुः पितरौ प्रशस्तिकृद्वैद्यनाथो ग्रजएकतः परः ॥ भट्मेदजातिर्विदुषां- विभूषणं पुराणवक्ता शिवलाल आसस ॥ ४० ॥ कृत्वा प्रतिष्ठां हरिमंदिरादीन्नकेवलं भूषयतिस्म सेयं ॥ कुलं च शीलं च वपुर्वयश्च स्वं स्वामिधर्मं पितरौ यशश्च ॥ ४१ ॥ प्रासा- दाद्युत्पादकर्मण्यदीनारामप्यार्याश्चित्तवित्तप्रवीणाः ॥ आसन्सेवाधर्मकार्यै सहायाः सव्जीनग्जीजेकिसन्कालुरायाः ॥ ४२ ॥ प्रशस्ति र्लिखिताटंकै गंगारामतनूभुवा ॥ शिवरामेणभंगोरगोत्रिणा शिल्पशालिना ॥ ४३ ॥ श्रीविश्वकर्मोदितशिल्पसिंधौ चंद्रायमानेन चतुर्भुजेन ॥ भंगोरगोत्राभरणेन वेणीरामात्मजेनाकृत सूत्रिताऽत्र ॥ ४४ ॥ जलजारिलसत्स्थितीरयान् महदानंदनिधीरसांवुधेः ॥ प्रभुताचरणौवचोभरः कुरुतांनः सुखसंपदो हरेः ॥ ४५ ॥ संवत् १८४७ वर्षे ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे १३ तिथौ उदयपुरमध्ये वड़ारण रामप्यारी बाईकारित श्री रामनारायण प्रासाद वापी वाटी राजगृह प्रशस्तिः समाप्ता ॥ श्रीरस्तु.

२- उदयपुरके पीछोली मुहल्लेमें लक्ष्मीनारायणके मन्दिरके आगेकी सुरे.

सिद्धश्रीगणेशजीप्रसादात् महाराजाधिराज महाराज श्री भीमसिंहजी आदेसात् प्रत दुवे पंचोली प्रताब भट देवेसर गांम पीछोली श्री राजा रामचंद्रजी रो दत्त तींरा ब्राह्मण गरास्या चंद्रात्रण गोतरा हांस ४ नागदा कस्य अप्रंच ॥ गाम पीछोलीमें पीछोलो तलाव तींमहे संवत् १८४० मे तथा संवत् १८४१ मे तलावरी रूंण निकली तीवखत केणवत उपजी जदी श्री दरबारथी यो थाप ठेरावे सीम काढे दीदी, अठा पछे आयो आपणी हदमें चाल्यां जासी, या रीत कर सुरे रोपावी जणीमें सुरे १ पीछोल्यांरा तलावमें रूंणमें रुपी, ने सुरे १ भोम पीछोली रे चोरे ठाकुर श्री लछमीनारायणजीरे देवरे रोपावी, महता मालदासरे दुवे रुपी, पीछोलीरा बामणांरी हांस ४ रा कपालभागरी अणी परमाणे सीम काढे सुरे रुपाई, १ अरसीविलासरी रासणा मंगरी थी लंकाउ बाजु डोरी १ अलोइरा खांचा सुदी, जगनीवास री नीम थी उगमणी बाजु कुंवर सरदारसिंहजी रा महलां रा गरभ सुदी गरास्या, आथमणी बाजु सीसारमारी पाली सुदी, धराउ बाजु डोरी १॥ डोढ

रासणा मगरी थी ठेट ओटा सुदी षालस्या हे, ए सुरे दोई संवत् १८४१ महा विद ऽऽ अमावस सोमे मकर संक्रांतरी पर्वणी मांहे श्री रामाअर्पण करे उदक आघाट करे सुरे दोय २ रोपावी, अवे अणी सुरेने अठा पाछे थुवादार, कामदार व ता – – कोई उथापे तथा चोलण करेगा तिहे श्री एकलिंगजी दोषसी, श्री हजूर रो हुकम हे हांस ४ चार री   १ हांस एक जोसी पोषररी समसतरी, हांस १ जोसी नीलकंठरी समसत, हांस १ जोसी जीवारी समसत, हांस १ जोसी दयाराम री सभसतांरी, संवत् १८४१ वर्षे महा विद ऽऽ अमावस सोमे. नामा १ प्रत वीगा २ पासी, अणी सुरेमें नामा ४ हे, सो वावत वीघा ८ आठ षासी; सुरे १ दसगत प(चो)ली परताप कालावतरा हाथरा हे, सुरे १ अणी परमाणे तलावमें वामणीने रावली सीस वचे रासणा मगरीरा गरव परमाणे रोपी हे, जो काम पडे तो ऊठे सुजा – – – –

३– ऊपर लिखीहुई सुरेके पास वाली दूसरी सुरे.

॥ श्री रामजी ॥

स्वस्ति श्री श्री रामचंद्रजी सीतामातारो दत्त गाम पीछोली माहे हांस ४ रा लिपतां जोसी पोपर, जोसी नीलकंठ, जीवा, दयाराम, इणारी हांसरा समसत गरास्यां गाम मांहे धरती षेत चांव १ ओठे वेचणी नही, सरीपे साटे गेणाउ मेलणी सो लोपे, तो श्री दरवारको षुनी, रुप्या ५०१ रो पंचारो पुनी, अमावस मास १२ री तथा ग्यारस मास ४ री पाल्यां जासी, बलदरे खांधे जुड़ा दवे नहीं, गाम जुमाएया सुदी इतरी बात लोपे जणी हे श्री रामचंद्रजी, श्री एकलींगजी, श्री अचलेश्वरजी, श्री लछमीनारायणजी पोंचसी. मतो जोसी पोपर, मतो जोसी नीलकंठ, मतो जोसी जीवा, मतो जोसी दयाराम, हांस ४ रा समसत गरास्या उपलो लप्यो सही, संवत् १८४८ रा असाड शुदी ११ शनौ, तथा गामरा नामरो पैसो आवे सो समसत पंचारो पग दोड करे जणी हे पंच भरा (यो) दोष नही ॥

४– उदयपुरसे १४ मील उत्तरको श्रीएकलिंगजीकी पुरीमें सुरे.

श्रीगणेशप्रसादातु.   श्रीएकलिङ्गप्रसादातु.

स्वस्तिश्रीउदयपुरसुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंहजी आदेशातु गाम (नाग)दारा गरास्या समसत प्यावत, कचरावत, जगावत, बलावत, लषावत, भोजावत, पालडा रुणा कस्य, अप्र गाम मगरारी धरती काछा गोरमा

गोठलाई – – – चागल तथा वागेलारी रूण, करावाडी, रायणांवाडी, पालसारी कोदमालरो वीडो चढायो सो चोलण करो मती, वामणी धरती टाल दुजा पालसा री धरती काछोरा देलवाडे तथा रामे पटेल जाने भोग हासल देता था जणी प्रमाणे परो देवांगा, सो उत्थपेगा नही, ऋा धरती उथापेगा जीने श्री एकलींगजी पूगेगा, ऋा धरती संवत् १८४८ वेशाक विदी १४ श्री एकलींगजी चडाइ, सो लोपासी न्ही, तीरी सुरे रोपी प्रत दुवे कपडदार सहा सतीदास, भट जोतेसर सं० १८५० भादवा शुदी ९ सने.

५– मेवाड़ इलाक़ेमें मांडलगढ़के तालावकी पालपर गणेशपौलके

वाहिरकी सुरे.

॥ सिध श्री गणेशजी प्रसादातु ॥ श्री एकलिंगजी प्रसादातु ॥ महाराजाधिराज महाराणाजी श्री ५ श्री भीमसिंहजी ऋादेसात्, प्रत दुवे महता ऋगरा प्रगणे मांडलगडके हुवाल महता देवीचन्द हंसराज ऋपरंच ॥ मांडलगडका तलाव जालेसर जीमही जीव जनावर मारे सो दरवाररो तगसीरवार होसी, या सुरे लोपसी जीने श्री एकलिंगजी पूगसी, जनावर मारषासी, तो हिंदु तो गाय पासी, मुसलमान सूर षासी. श्लोका ऋपदत्तं परदत्तं जेपालंती वसुंधरा जेनरा सुरग जायंती जावचंद्र दिवाकरा १ ऋपदत्तं परदत्त जेलोपंती० संवत् १८५२ श्रावण शुद १५ सुक्रवासरे श्री रस्तु तलावमायली धरती हाकवा पावे न्ही.

६– मांडलगढ़ क़िलेके ऊपरके दर्वाज़हमें मंदिरके पास वाली सुरे.

सिध श्री दिवाणजी ऋादेसातु प्रत दुवे महता अगरा ऋपरंच मांडलगढ सराको दरवाजो श्री माताजी वीसहतीजीरो देवरो सथानक जूनो थो, सो गढ तथा तलेटीरा पंचा भेला होय अर दरवार ऋाए ऋरज करी सो देवरो मातारो करावणो, जठा सवाय देवरा नवेसर करायर पंचतीरथी पांच मूरत पदरावणी, हर ऋागे माताजीरी पूजा षाजरू भेसा तथा दारुरी छाकरी पूजा छी, सो सारी माफ कर हर उजली पूजा ठहराई, सो ऊजली पूजा करणी, ऋठा पाछे ऋागे देवरे माता वीजासणजीरा देवरामें अठे जीव जंत्र मरवा पावे नही. या थाप ठहराय मुरत श्रीरामचंद्रजी, श्री महालषमीजीरी, श्री सदासोजीरी, श्रीगणेसजीरी, श्री हनूमानजीरी मूरत पदराई, हर सुरे रुपाई, सो या थाप जो उथापसी जणी हे श्री एकलिंगजी पूगसी. या पूजा श्री जीरा दुवा थी हीदुने ता हीदुरा

सम अपदत्तं परदत्तं जेपालंती वसुंधरा ते नरा सरग जायंती जबलग चंद्र, दिवाकरा अपदत्तं परदत्तं येलोपंती वसुंधरा ते नरा नरकं यांती यावत् चन्द्र दिवाकरा संवत् १८५३ सषएक १२८ मतला.
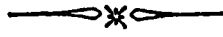
७– उदयपुरसे १४ मील उत्तर तरफ़ एकलिंगजीकी पुरीमें नन्दकेश्वरकी पावटीके पास सुरे.

॥ श्रीरामोजयति ॥

॥ श्री एकलिंगजी प्रसादातु ॥ ॥ श्री गणेजी प्रसादातु ॥

जो लोपे जीने श्रीजी पुगे

सही.

स्वस्तिश्रीमहाराजाधिराज महाराणाश्रीभीमसिंहजी आदेशातु, श्री जी हे गाम सरे प्रगणे मगरारे वास लउवांरो तथा भीलारो नीम सीम सुदी श्री हजूर रा दुसमनांरे डीले पेद हुइ तीरो अंगोल्यो कीदो संवत् १८५७ रा मगसर सुदी ७ रे दन, सो यो गाम भेट कीदो वोलमां मांहे उदक आघाट श्री शिवार्पण करे चडायो, लागत विलगत सरव सुदी सो कणी वातरी चोलण वेगा न्ही, चोलण करेगा जणीहे श्रीजी पोछेगा, अठा पाछे अणी गामरी चोलण करेगा तथा लोपेगा जणीहे श्रीएकलिंगजी पोछेगा, तथा गद्धेगाल हे, संवत् १८५८ रा वर्षे चेत वीद ५ भोमे तावापत्र भेट कीदो. स्वदत्तं परदत्तं वाये हरंति वसुंधरां षष्टिवर्ष सहस्राणि विष्टायां जायते क्रमी १ परवानगी सहा किशोरदास वरदभाणदेपरा, पडियार मयाराम, भट जागेसर या सुरे संवत् १८५९ रा वर्षे अशाढ शुदी १५ सोमे रोपी.
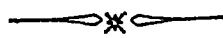
८– उदयपुरसे २ मीलके फ़ासिलेपर गांव सीसारमामें वैद्यनाथ महादेवके मन्दिरकी सुरे.

॥ श्री गणेशायनम : श्री एकलिंगजी श्री रामोजयति श्री वैद्यनाथजी महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंहजी आदेशातु दुअे श्री मुख प्रतदुवे मेता मालदास, भट्ट देवेशर अप्रच ॥ गाम सीसारमो प्रगणे गिरवारे आघाट बामणारे तींरा

भाग ४ च्यारां रा गोत ४ च्यार रा जुदा जुदा तीरा समसत गरास्या जात नागदा कस्य अप्रच ॥ गाम सीसारमो आगे राजा श्री रामचंद्रजी दत्त तींकरे, घणा वरपरी वात करे कठेक ठिकाणो रहे गयो हुवेगा, जठा पछे संवत् १८४० आसोज शुदी १४ गुरे रा दसवासरो करे तावापत्र करे देवाणो सो सावत, ने मारा वंशरो वेन थारा वंशरा थी थुवादार, कामदार, सकदार, वतागरावे चोलण करेगा नहीं, थारी सीम, मेरमुरजाद आगे राजा श्री रामचंद्रजीरा वारा थी चली आवे हे, सो सावत हे, जुनी मिटेगा न्ही, नवी वेगा न्ही. या सुरे भाद्रवा शुदी १५ सोमे चंद्र परवमे उदक आघाट करे रोपी श्रावण शुद ९ सोमे श्री जी ब्राह्मण भोजन करावेन सुरे रोपावारो हुवो दीधो, श्री जी वेजनाथजी दरशण करवा पदारचा जदी हुकम हुवो. गोत ४ च्यार तीरी विगत व्यास डुंगो गोत्र गोतम, जोसी वजेराम गोत्र कपिल, जोसी चतरा गोत्र गोत कोसक मेता पेमा गोत वसिष्ठ, गोत ४ च्यारा ब्राह्मणा वे आसरी वचन दीधो जदी सुरे रोपवारो हुकम हुवो- संवत् १८४१ भादवा शुदी १५ सोमे चंद्र ग्रहण मांहे रोपी श्री रस्तु रही.

९- ऊपर लिखी हुई सुरेके पास की दूसरी सुरे.

॥ श्री रामचंद्रजी प्रसादात् ॥ जो लोपे जीनेई पूगेगा रही.

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंहजी आदेशातु प्रत हुवे सहा वीरभाण, भट अमरेसर अपरंच ॥ गाम सीसारामे प्रगणे गिरवारे ब्राह्मण ४ च्यार गोतरा जुदा जुदा वीठण गोत वसिष्ठ, मेता ठाकुरसी गोत कपिल, जोसी वालाउ गोतरा ब्राह्मण, व्यास नंदा गोत कउछ जोसीजी थारा गोतरा. समसत ब्राह्मणा जात नागदा अप्रच फोज फांटारो दंगो आवे पडे जीशुं डरोगा न्हीं नवाव जमसेदखां गाम सीसारमो सु - - दोसो आगे हुवो, सो गोहवाई वे अठा पाछेकी वफथीदा देणा वेगा न्ही, राजा श्री रामचंद्रजीरा दिया दत्त हे, सो आगला मारा वंशरा पालता आवा जणी प्रमाणे श्री जीरा वंशरो पाल्यां जासी, थारा वंशरा वरामणा थी कामदार, थुवादार, गरवारो सकदार, कोद दंगो ठंगो भूलेने करेगा जीने श्री जीरा राजा श्री रामचंद्रजी, श्री वेजनाथजी पूगसी; हुलकर सुदां देसी प्रदेसीरा असवार पालो, फोज, महला मालक वे सो ज्यो अणी गामरा वरमाणारी चोलण करेगा जणी हे हिंदूने गाया मुसलमानने सूर मुरदारी सोगन हे, याथी कोद करेगा जीने श्री जी पूगसी. अणी सुरे रोपावारो हुकम मोती पासवान संवत् १८७२ फागण वीदी १४ सोमेरे दिन शिव रात्री उजमी जदी

मोती पासवानरे घरे पदारचा सो फागण वीद ऽऽ अमावस बुधरे दिन महावर देपातजीरे घरे होकम दीधो वीराजा होकम दीधो.

—⁂—

१०– उदयपुरसे पश्चिम तरफ़ दो मीलके फ़ासिलेपर सीसारमा गांवके क़रीब सीता माताकी प्रशस्ति.

श्रीगणेशायनमः ॥ को यज्ञाधिपतिः किपातिकरण ग्रह्णाति किं पार्थिवो लोकान् काप्सरसश्च किं तु जगति काभिर्हरिः क्रीडते ॥ कः सारोस्ति रणे परं गुणकरं मार्गे च किं किं तयो मत्प्रश्नोत्तरपूर्ववर्णनिचयः श्री भीमसिंहास्तु ते ॥ १ ॥ भीमसिंहस्य नृपतेः पुत्रः श्चैव धनुर्द्धरः॥ युवा युवानसिंहस्तु संग्रामे त्रासयन् रिपून्॥ २॥ श्रीमत्पुण्यपवित्रमूर्ति रनघो राज्ञां सपुज्यो महान् । द्वैताद्वैतविवेकशांतनिपुणः कर्मैकनिष्ठः श्रुतिः ॥ ज्ञानं लेजनमंदिरैकधिषणा चित्तैकहीरः स्तुतः सीतास्थानकेकेसरी विजयते मुद्रैकदर्शः कपिः ॥ ३ ॥ शीश्यार्मा संज्ञके ग्रामे भूमिं दत्वा द्विजान् परान् ॥ सीताप्रासादमकरोन्मदास्यांजनिसुनुना ॥ ४ ॥ वापीमनोरमांपुण्यां मछनक्रांकगामिनी ॥ शरयुसहितां त्वन्यां तडागांतरभूमिकां ॥ ५ ॥ केतकीपुष्पपुन्नागभ्रमरांकितशोभितां ॥ तत्रस्थले वाटिकां च मार्गे सीमाविभागतः ॥ ६ ॥ मेषरासभकैर्मत्तै रासनैशोभितः स्थलः स्यषिभिः सांबजुष्टं च मीनकेरिवापरं ॥ ७ ॥ तदूपरात्परध्वंशाद्भवकं सून्वकरथं कृत्वा गताजले वैदेहीमनसा तन्यो वालिकी रचयन् सुतः ॥ ८ ॥ जनकस्याग्निहोत्रत्ये जानकीप्रभवाहलात् सीमत् करगारांमे गताभूम्यां नृवाक्यत ॥ ९ ॥ अयोगोलकरेतसा दत्तंरामेण धीमता तत्रां तर्गतिमापन्ना सीता साक्षात् सती परा ॥ १० ॥ सीतात्रिवर्णा सितश्यामरक्तां त्रिलोचनांचक्रगदाब्जशंखां यज्ञस्थितां व्रंह्ममहेद्रपूज्यां लभेत मुक्ति स्मृतिस्वबाला ॥ ११ ॥ रत्नैरलंकृताजन्हो: पुत्री भागीरथीत्पुनः पूर्वेषां पावनकरी गंगा भूयात् शिवे शिवा ॥ १२ ॥ चारणी विकली गोत्रा गंगा नाम्नीति विश्रुता ॥ कर्णपुत्रं प्रसूता सा तस्य रंता च पत्निका ॥ १३ ॥ श्रीमत् हनूमानदास जिता प्रासादः श्रीमति सीतायां कृतचारणी गंगा तस्य पुत्रपत्नी रता नाम्नी परिरहिता तया च प्रसादार्थे द्रव्यं व्यापारितं तत्र जीर्णं प्रासादं भंजनं तत्सदृशं तस्मिन्नेव कृतं स्थले कृतं सीतायाः तत्र संस्कृतं रचयत् सुबुद्धिभिर्ज्ञातव्यश्च ज्योतिर्वित्कृपानाथेन कृतेयं प्रशस्तिश्चेयं गोलवालज्ञातिदेवकृष्णेन प्रतिष्ठा कृता भटमेदपाटकस्तु नातिकृपानाथस्तु गजधरदेवकृष्णेन प्रासादं कृतश्च धनेर्कै नवचंद्रेयुकशकेत्युत्तरगोलके त्वयनोत्तरगे त्वतौ ग्रीष्मे त्वाषाढे

शुक्लपक्षके ॥ १४ ॥ रामाब्धिक्रतियुकदंते स - विक्रमे स्तथा नवमी सुरपुज्येच प्रासाद प्रतिनिर्मितं श्री रस्तु शुभं भवतु नित्यं नागदा बडे गछ गोतम, व्यास दीपो गोत्र कौछ, जोसी पीथो गोत्र कपिल, जोसी हीरो गोत्र वशिष्ट, मेतो ठाकुरसी गोत्र च्यारा ब्राह्मणाहे गोत्र चंदण नरो ब्राह्मण भट जसु बावोजी श्री हनुमानदासजीरा कयाथी तथा गाम सीसारमारा कयाथी टेलबंदगी करी हे संवत् १८८१ शाक सतरेसे छयालीस १७४६ प्रवर्त्तमाने आशाढ शुक्ल पक्षे ९ गुरुवासरे बाबाजी श्री हनुमानदासजी देवरो करायो कल्याण मस्तु.

(यह प्रशस्ति अशुद्ध है, जिस तरह पत्थरमें पढ़ी गई उसी तरह छपवाई गई.)

११- उदयपुरमें भीमपद्मेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रशस्ति.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ देयं किंचनदेयमित्यविदुषां कोयं विकल्पभ्रमः कैवल्याप्तपुमर्थसत्सुखनिधेर्नेत्थंविचारोस्त्यतः वासोलंकृतिमाल्यलेपकक्रतेवैराग्यमुद्बोधयन् कृत्यस्थ्यर्कजपुष्पभस्मभिरयं देवो ऽभिदद्याच्छिवं ॥ १ ॥ नमामि पदपंकजं जनिभवोद्भयत्रासकं सुखैकनिलयं विदां सरसिजासने धिष्टितं ॥ नखेंदुभवकौमुदीबुधचकोरसंतोषदं सुरासुरनुतं मुदा प्रथममेव सारस्वतं ॥ २ ॥ निर्माता खिलसंपदां सुरगणाधीशार्चितांघ्रिद्वयः सत्सेवाजनितैकनिर्मलधियां सौख्यार्थसच्छेवधिः॥ शीशोदान्वयभीमभूपसकलाभिष्टप्रदः सांबिको जीयात्सर्वसुखैकभूः प्रतिदिनं श्रीभीमपद्मेश्वरः ॥ ३ ॥ शर्व्वप्लुष्टो मनसिजो ऽनंगतां प्रापयः पुरा ॥ वाप्पान्वयें तत्कृपया भूपोभूत्सांग एषकिं ॥ ४ ॥ सांगोराडिवराहिमंबुजफरं म्हेमंदसाहं च सः जिग्ये चैव बबंध दिल्यहमदावादाद्दमांडूधवान् ॥ अश्वाः पावकलक्षका द्विगुणिताः पद्माः सहस्रं गजाः साप्ताशीतिसहस्रमुष्ट्रनिचया यस्य प्रयाणेभवन् ॥ ५ ॥ चेदीगुर्जरमालवाब्धिजरणस्थंभोरुसिंधूद्भुजः मांडूदुर्गसकान्यकुब्जकमरूग्वालेरजालोरुपः ॥ यो दिल्लीपतिबब्बरं किल हमाउश्चैवतत्य पुनः खंधारेश सिकंदरं यमसखं चक्रेतिवीराग्रणीः ॥ ६ ॥ तस्मादभूदुदयसिंह इति क्षितीशोबोकार्यथोदयपुरं प्रवरं हि येन ॥ यत्र स्थिताप्रकृतिवत्प्रकृतिः प्रसक्तान् रूपैर्विमोहयति नामगुणैश्च पुंसः॥ ७ ॥ तत्तनूजनिरयं प्रतापको यत्प्रतापमिहिरांशुजनिर्यः॥ वैरिवर्गवनितास्त्रपयोदः ख्यापयत्यतितरां निजकीर्तिं॥ ८ ॥ तस्मादभूदमरसिंह उदारकीर्ति र्योरिव्रजार्णवलये किमु कुम्भयोनिः ॥ यत्कीर्तिभिर्धवलिताखिलभूतधात्रीत्येवंविधो ह्यमरता किमु नो व्यदर्शि ॥ ९ ॥ कर्णः किंपुनरागाद्दानार्णायैव सिंहइति किं तत् ॥ भेत्तुं ह्यरिगजमवितुं युष्मानाकर्णयमुज्जाता ॥ १० ॥ तस्यात्मजो जगत्सिंहः शत्रुवर्गेभनाशकः ॥ अकारिभुवनेशस्य जगन्नाथ-

स्य मन्दिरं ॥ ११ ॥ तत्पुत्रोभूद्राजसिंहः पुरारेर्भक्त्या लेभे राजराजत्वमेषः ॥ अब्धेस्तुल्यं सागरं कृत्तवान्यो माधुर्यांबु राजपूर्वं समुद्रं ॥ १२ ॥ तत्पुत्रो जयसिंहो जयैकभूररिकुलव्रजध्वंसी ॥ यो निर्ममे सुधाढ्यं यशः समुद्रं समुद्रमिव ॥ १३ ॥ तस्यांगजन्मामरसिंहवीरो वीरैकसूरस्मिमदं विधत्त ॥ यस्य प्रसूरासुरितीत्यनिद्रा देवाः समासे परिसंदिहाना :॥ १४ ॥ तस्मात्संग्रामसिंहोभूत् म्लेच्छेभमद नाशकः ॥ ग्रामे ग्रामे यशो यस्य गीयते निभृतं नरैः ॥ १५ ॥ ततो भवज्जगत्सिंहो जगन्नाथालयं पुनः ॥ जीर्णोद्धारात्कृतं पित्रा दिद्रक्षुः स्वकृतं पुरा ॥ १६ ॥ तस्मात्प्रतापसिंहो ह्यरिसिंहो द्वौ सुतौ तयोर्मध्ये ज्येष्ठे राज्यं ॥ भुक्त्वा स्वर्याते राजसिंहोभूत् ॥ १७ ॥ नयेन नयतः क्षोणीं राजसिंहस्य भूपतेः ॥ भ्रात्री यस्याप्यपुत्रस्याथारिसिंहोग्रहीत्पदं ॥ १८॥ तस्यपत्यमणित्रयं समभवद्धम्मीरवीरोग्रजो मध्या चन्द्रकुमारिका तदनुजः श्रीभीमसिंहो जयी ॥ गोगुंधाधिपराजकानजिगिरौ सत्सारशुद्धाकर सर्द्दारादिकुमारिकोदरपुटानिर्दुष्टमेतत् स्फुटं ॥ १९ ॥ आपंचशरदं क्षोणीं भुक्त्वा भूपे दिवं गते ॥ धीरहम्मीरवीरेवो भीमसिंहोभजन्नृपः ॥ २० ॥ पायं पायं मुरारेश्चरणकमलतः स्त्रावियन्मेघपुष्पं स्मारं स्मारं पुरारेश्चरितमतितरां तध्ववंशप्रतिष्ठः ॥ ध्यायं ध्यायं भवानीस्तवनमघहरं निर्मलैकाग्रचेता ज्ञायं ज्ञायं सुतत्वं ह्यमरतिभुवने भीमसिंहो नरेंद्रः ॥ २१ ॥ तस्यात्मजोप्यस्ति युवानसिंहो वाञ्छाधुरीनिर्जितसत्सुधौघः ॥ कामः किमु स्कंद उदारतेजाः सौंदर्यजैतेंद्रिय वृत्तिधर्मात् ॥ २२ ॥ अथ राज्ञीवंशः ॥ रायसिंह इति सूरसिंह कल्कर्णसिंह इति तत्सुतोभवत् ॥ तत्तनूजनिरनोयसिंहको ऽ णंदसिंह इति तत्तनूद्भवः ॥ २३ ॥ तस्माच्छ्रीगजसिंहभूपतिमहाराजान्वयायो ह्यभू तस्मात्सूरतसिंह इंद्रविभवो राठोड वंशैकभूः तद्भ्राता सुरतानसिंह इति यः क्षात्रैकनिष्ठोभव त्तज्जा पद्मकुमारिकेयमतुला श्रीभीमसिंहप्रिया ॥ २४ ॥ पद्मावतीव सकलाश्रितपद्मसद्मा पद्मासनातिरुचिभीरचितास्वपद्मा ॥ ईशांघ्रिपद्मकृतशोभितहृत्सुपद्मा तेनेयमस्ति किल पद्मकुमार्यतुल्या ॥ २५ ॥ धर्मस्य ध्वजिनीव दुःखनिवहत्राणाय दुष्टद्विषामर्थस्यप्रतिमेव कल्पलतिका पूज्या दरिद्रद्रुहां ॥ कामस्य प्रियवादिनीव सुखदा स्मर्तुः स्वभर्तुः सदा मोक्षे सत्कृतधीरियं मतिमतीकृत्तत्रिनेत्रालयात् ॥ २६ ॥ किं पद्मा किमु पार्वती किमदितिर्मूर्तिर्हि सारस्वती किं वा वाडवभूषणस्य च मुनेरत्रेः कलत्रं नु किं ॥ किं पद्मात्मजमीनकेतनवधूरित्युत्सवोत्प्रेक्षिता जीयात्पद्मकुमारिकेयमतुला श्रीभीमसिंहालये ॥ २७ ॥ महाराणो भीमः शयनमधिरूढः स्वनिजया रमण्या विज्ञप्तस्त्रिपुरहरसंस्थापनकृते ततो सारं ज्ञात्वा जगदिदमरातिव्रजनुतो नृपः शर्व-

शानावसथकक्कते चित्तमकरोत् ॥ २८ ॥ श्रवणनाथमहापुरुषार्पिते नृपतिरुत्सुकचि-त्तउमाधवे ॥ शुभशिवालयनिर्मितये स्वयं स्वमहिषीमुरुकीर्तिमथाकरोत् ॥ २९ ॥ शिवस्य जगतीशिवस्य शुभकृन्मनोभिष्टदं भवस्य जगदुद्भवस्य सकलाभितापाप-हं ॥ अचीकरदियं प्रियं नृपतिभीमसिंहाज्ञया शुभालयमिहालयं ह्यमरकुंडखंडाश्र-ये ॥ ३० ॥ प्रासादाः संति पृथ्व्यां कति कति सुकृतिप्राणिनिर्माप्यमाणाः किं स्वित्किंचित्खिलांगानसकमलसरः पूर्णसोपानमार्गाः सर्वत्वानंद एष क्व हिमगि-रिरिव स्वच्छसन्मानसार्द्रो दंतैः किं स्फाटिकैः किं किमपि च रजतैरेव निर्मापि-तांगः ॥ ३१ ॥ वर्षे वेदेभनागौषधिपतिसुयुते श्रावणश्वेतपक्षे सत्यां भूतेशतिथ्यां तुहिनकरयुते वासरे वैश्वभे च ॥ आयुर्योगे सुलग्ने विबुधगणयुतो भीमभूजानि-रेष श्रीशंभोः स्थापनं यो कृतयुवतियुता मन्दिरेस्मिन्महाग्र्यैः ॥ ३२ ॥ तुलामारूढा सा क्षितिपतिमता पट्टमहिषी सुवर्णैरूप्यैर्वानिखिलजनताश्चर्यजनिकां ततो द्रव्यै भव्यैरकृतसुकृतान्नैः पुरुरसैः सुतृप्तंतद्दत्तं द्विजचतुरशीतिव्रजमिदं ॥ ३३ ॥

अथ श्री पूर्वपट्टिकाशेषमापूर्यते ॥ प्रासादंह्यमुमेकलिंगचरणांभोजार्चना-स्वादिहृत्पारिव्राजकभूषणायविजयानंदायराजार्प्पयत् ॥ सोपिस्वच्छहृदामदं भवि-मदं सद्ब्रह्मचर्यव्रतं सोमेशस्य गणेशमर्चनविधौ प्रायुंक्त वेधाइव ॥ ३३ ॥ भवनिगमविधोक्तस्वर्चनाराधितेशः स्वहितकृदनुनीतप्रेमवल्ल्यौषधीशः निखि-लजनमनोज्ञोद्वेवयः कार्तिकेय क्षितिपतिबहुमान्यो ब्रह्मचारी गणेशः ॥ ३४ ॥ भोपासागरबद्धनित्यवसतेश्चौञ्चाणवंशस्थितेः पौत्री देवसुसिंहबाहुजजनेः पुत्री प्रतापस्य सा ॥ दौहित्री च जगद्वरेर्नरपतेः प्रख्यातकीर्तेरियं स्वस्त्रीयैजनबाइ रस्त्यधिपतेः श्रीभीमसिंहस्य या ॥ ३५ ॥ राज्ञा एजनबाइरेव हि पुरः कर्त्री च हर्त्री पुनः प्रासादोद्भवभावनाय सुकृपापात्री प्रदात्री मतेः ॥ नेत्री सर्वजनस्य शर्मनिवहं भव्यं प्रपत्री सदा तद्द्वारैवसुपर्वसर्वमभवद्धर्मार्थकार्ये प्रभोः ॥ ३६ ॥ दिग्गजाइव गजागजांगजा : सप्तसप्ततितताश्च सप्तय : ॥ वस्त्रभूषणचयानगोछ्र्या स्वर्णरूप्यबहुमुद्रिकालयः ॥ ३७ ॥ चारणद्विजसुशिल्पिचारकादिभ्यइभ्य-सहितान्नृपेण च ॥ तत्स्त्रिया वितरिता यथाक्रमं तन्महोत्सवविधौ विधानतः॥ ३८॥ ॥ युग्मं ॥ यो विष्णुदत्तोद्धुतचित्तवृत्तः स्वबुद्धिकौशल्यजितप्रमत्तः ॥ अत्राधिकारेकृत आत्तसत्तः परोपकारव्रत्तसंप्रवृत्तः ॥ ३९ ॥ कोष्ठागारी मोतिरामो राज्ञा सुसचिवः परः ॥ सर्वकामकरो मान्यो धीमान् सर्वसुखालयः ॥ ४० ॥ भूयांसः क्षितिमंडलेति रचना शीलासुशिल्पीश्वरा स्ते सर्वे तुलनां प्रयांति कृतिनो गोवर्द्धनस्याथ किं ॥ मन्येयं

कृतिवीक्षणात्सुरपतिर्मोहं परं प्राप्तवान् स्वीयं शिल्पिवरं हसत्यनुदिनं लज्जाविनम्रानन:

॥ ४१ ॥ श्रीशंभुर्जनकशिवार्चजननी ताभ्यांसुतानांत्रयी वेदानामिवमूर्तितामधिगता जातावदातार्जितै: ॥ ज्यायान्तेष्वथवैद्यनाथउरुधिः प्राप्तः कथाभट्टतां तत्पश्चाद्गूजलालएवशिवलालोस्मात्कनीयानभूत् ॥ ४२ ॥ कृष्णलालरामलालनामभूषितौ चयौ भट्टमेदपाटजातिजातभूसुरान्वयौ ॥ वैद्यनाथतोनुजद्वयीतमूह्यनुक्रम मनूनसद्यसत् प्रशस्तिनिर्मितंवितन्वतु ॥ ४३ ॥ देवकृष्णेनचोत्कीर्णा प्रशस्तिः शिल्पिनामुना ॥ शुभायभवतांभूयात्सर्वेषांसुखमिछतां ॥ ४४ ॥ श्रीरस्तु.
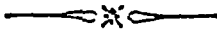
छन्द गीतिका.

लघुवेप रान हमीरके दिवगौन शोक अथाहको ।
जन थाह दैन विराज गद्दिय भीम भंजक आहको ॥
भट कृष्ण वंश कुमार जालम मार रावत लालने ।
युग शक्तवंशरु कृष्णके कुल द्वेप उद्भव ज्वालने ॥ १ ॥
नृप भीमसिंह विवाह ईडर होनको सब हाल व्है ।
फिर सोमचन्द प्रधान जालम झल्ल चुंडन शाल व्है ॥
मरहट्ट थट्ट मिटाय जावद मेदपाट मिलायके ।
वल छायके दल आयके वहु शूर वीरन घायके ॥ २ ॥
फिर भीम अर्जुन सोमचंदहि मार बागिय होनको ।
इतिहास चुंडरु शक्त वंश विरुद्ध जुद्धसु दोनको ॥
मतिमान जालम झल्लके मत देश वेप प्रबन्ध भो ।
फिर व्याह ईडर रान ह्वे लखि शैल पत्तन अंधको ॥ ३ ॥
दे दंड वांशवहाल देवलियादितें वहु भेट ले ।
अमरेश राज्यकुमार उद्भव ईश दर्शन भेट ले ॥
मरहट्ट अंबरु लक्ष युद्ध फ़िरंग टॉमस वीरता ।
फिर नाथ मंदिर लोभतें जशवंत दुष्ट अधीरता ॥ ४ ॥
तिहिं बाद कृष्ण कुमारिका निरदोष जीवन पात भौ ।
सिरदार रावत मार वैर विचार गंधिय घात भौ ॥
करनेल टॉड फ़िरंग दूत अभूत सज्जन आयके ।
नृप भीम संधि वनाय द्वंध मिटाय मंगल छायके ॥ ५ ॥

अमरेश राज्य कुमार त्यागन देहतें अति शोक व्है ।
वह राज्य भक्त अनन्य टॉड प्रबंध कारक ओक व्है ॥
त्रिक राज पुत्रिय व्याहतें नृप भीम कीरति मन्त भौ ।
फिर सृष्टि पालनहार ईश उदार जीवन अंत भौ ॥ ६ ॥
इतिहास जैसलमेर संग्रह शेष सज्जन रानको ।
उर सिद्ध शासन पाय श्यामल फतेसिंह दिवानको ॥
यह भीम खंड अखंड पूरन ईश भेट मनायके ।
कविराज इष्ट मनायके फल आज जीवन पायके ॥ ७ ॥
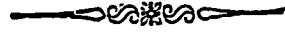
सोलहवां प्रकरण.

महाराणा जवानसिंह.

महाराणा भीमसिंहका देहान्त होने बाद विक्रमी १८८५ चैत्र शुक्ल १५ [हि० १२४३ ता० १४ रमज़ान = ई० १८२८ ता० ३१ मार्च] की शामको महाराणा जवानसिंहका राज्याभिषेक हुआ. यह महाराणा बड़े पिताभक्त थे, इनको अपने पिता के देहान्तका बहुत ही रंज हुआ, और कुल देशके लोगोंपर भी अत्यन्त शोक छागया, क्योंकि वैकुण्ठवासी महाराणा अपनी प्रजापर पिताके समान दृष्टि रखकर उसका पोषण करते थे. जब महाराणा जवानसिंहने इस सबबसे प्रजाको ज़ियादह रंजीदह देखा, तो उन लोगोंका शोक दूर करने और तसल्ली देनेकी ग़रज़से कहा, कि अगर्चि मैं अपने पिताके शोकमें निमग्न हूं, लेकिन् वह तुम्हारा पालन करनेको मुझे छोड़-गये हैं, इसलिये कुल लोगोंको निश्चिन्त रहना चाहिये. यह सुनकर सब लोगोंके दिलों को तसल्ली हुई, क्योंकि युवराजपनेकी हालतमें इनकी नेक आदतें दीखपड़ने और इसवक्त सबको दिलासा देनेसे पूरा विश्वास होगया. इन्होंने गद्दी नशीन होकर अपने पिताके नौकरोंका बड़ा लिहाज़ बरता, जो आदमी जिस उह्दहपर था, उसको उसीपर बहाल रक्खा, कोई तब्दीली नहीं की; मेवाड़के मुल्कमें दिन ब दिन तरक़्क़ीकी सूरत नज़र आने लगी, मुम्किन् था, कि अगर महाराणाकी निय्यतके मुवाफ़िक़ रिया-सतके कुल छोटे बड़े अह्लकार भी नेक निय्यतीको काममें लाते और अपने मत्लबकी तरफ़

रुजू न होते, तो रियासतकी तंगी और रिश्रायाकी मुफ़्लिसी एक दम दूर होजाती. महाराणाका यह मन्शा था, कि रियासतके जमा ख़र्च वगैरह कुल काम हमारे सामने हुआ करें; लेकिन् जवान उम्र होनेके कारण कुछ तो ऐश व इश्रतके कामोंसे खुद महाराणाकी कम फ़ुर्सती, और ख़ासकर जमा ख़र्च न दिखलानेके मत्लबसे अहलकारोंकी पेचीदगियोंने इस मन्शाको सिद्ध न होने दिया. जब जमा ख़र्चके लिये अहलकारोंसे सवाल किया जाता, तो वे लोग यही जवाब देते, कि हुजूर तो बादशाह हैं, हुजूरके हुक्मकी तामील करनेके लिये हम लोग मौजूद हैं, और इसी लिये हम पैदा हुए हैं, कि जमा ख़र्च वगैरह कुल कामोंमें तक्लीफ़ें उठाकर हुजूरके हुक्मकी तामील करें. परन्तु तामील ऐसी होती थी, कि जब वैकुण्ठवासी महाराणाका इन्तिक़ाल हुआ, उस वक़्त अहलकारोंने वलीअहदसे कहा, कि इस वक़्त दस हज़ार रुपयोंकी इस ख़र्चके लिये ज़ुरूरत है, और साहूकार लोग वगैर तसल्लीके नहीं देते, इसलिये हुक्म हो, वैसा किया जावे. तब वलीअहद, याने महाराणा जवानसिंहने कमाल रंजकी हालतमें गुस्सह होकर कहा, कि इस वक़्त क़र्ज़हकी ज़मानतके लिये बेड़ियां मौजूद हैं. इस कलामके सुननेसे वे लोग डरकर चुप हो रहे, और उस कामको पूरा किया, लेकिन् गवर्मेंएट अंग्रेज़ीका ख़िराज हरसाल बाक़ी रहने लगा, और पोलिटिकल एजेंएट ताकीद करने लगे. जब ख़िराजकी बाबत गवर्मेंएटकी तरफ़से ताकीद आती, तो महाराणा प्रधानको हुक्म देते, जिसपर साफ़ यही जवाब मिलता, कि ख़र्च ज़ियादह और जमा कम है; परन्तु जमा ख़र्चका मुफ़स्सल आंक नहीं बतलाते. जिस साल जमा की बिह्बूदी होती, तो बचतके रुपयोंका पता नहीं लगता, और कमीके वक़्त महाराणा तंग कियेजाते थे. परन्तु इसमें शक नहीं, कि उन दिनोंके अहलकार दंड देकर अपनी जान बचानेके लिये भी दौलत एकट्ठी करते थे, क्योंकि उनको ईमान्दारीके साथ काम करनेपर भी मौकूफ़ीसे बचकर अपने उह्दहपर एक अर्सेतक क़ाइम रहनेकी उम्मेद न थी, जिसका कारण यह था, कि महाराणाके पासवान और मरज़ीदां लोगोंके मन्शाके बर्ख़िलाफ़ कुछ भी कार्रवाई होती, तो उसी वक़्त अहल-कारोंपर आफ़त सवार होजाती थी; याने पासवान लोगोंमेंसे, जब एक आदमी कोई बात महाराणाके सामने पेश करता, तो दूसरा उसको मज्बूत करके, तीसरा गवाही दे देता. महाराणा भी मनुष्य शरीर थे, धोखेमें आकर ज़ुरूर उस बातपर यक़ीन करलेते. अगर्चि इन बातोंसे रियासती कामोंमें बहुत कुछ हर्ज होसक्ता था, लेकिन् सर्दार और रिआया सब महाराणासे खुश होनेके सबब उनके अह्द हुकूमतमें किसी तरहका ख़लल न आया, बल्कि मौक़ेपर हुक्मकी तामील भी होती रही.

विक्रमी १८८५ फाल्गुन शुक्ल १० [हि० १२४४ ता० ९ रमज़ान = ई० १८२९ ता० १५ मार्च] को गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तरफ़से कप्तान कॉफ़ साहिब टीकेका दस्तूर लेकर आये, जो एक बड़ा दर्बार किया जाकर महाराणाके सामने पेश हुआ, उसमें हाथी १, घोड़ा २, ढाल १, तलवार १, सरोपाव १, मोतियोंकी माला १, और सर्पेच १ था. महाराणाने उक्त कप्तानको फ़त्हदौलत नामका एक हाथी, तुरंगराज घोड़ा, कंठी, सर्पेच व सरोपाव और उनके लड़केको हाथोंकी सोनेकी पहुंचियां व सरोपाव, और असिस्टैण्ट साहिबको सर्पेच व मोतियोंकी माला दी. इसी विक्रमीकी चैत्र कृष्ण ६ [हि० ता० २१ रमज़ान = ई० ता० २७ मार्च] को कॉफ़ साहिबने रेज़िडेन्सीकी कोठीपर महाराणाको मिह्मान करके दावत दी, और हाथी १, घोड़ा १, सर्पेच १, मोतियोंकी माला १, और सरोपाव २ वग़ैरह सामान नज़के तौरपर पेश किया. गद्दी नशीनीका ख़िल्अ़त आनेपर महाराणाकी तरफ़से लाठ साहिबके नाम, जो ख़रीतह भेजागया, और उसके जवाबमें लॉर्ड बेंटिंक साहिबने ख़रीतह भेजा, उसका तर्जमह नीचे लिखा जाता है:-

लॉर्ड विलिअम बेंटिंक साहिबके फ़ार्सी
ख़रीतह (१) का तर्जमह,

महाराणा साहिब बड़े दरजेके मिहर्बान दोस्त, मिहर्बानी और इह्सानके ख़ज़ानह सलामत रहो.

बुज़ुर्ग मुलाक़ातकी ख़्वाहिशके बाद, जिसकी कैफ़ियत क़लम और ज़बान से अदा नहीं होसक्ती, आपके रौशन दिलपर ज़ाहिर किया जाता है, कि आप का मिहर्बानीका ख़त वुसूल हुआ, जिसमें आपने उस ख़िल्अ़तके मिलनेसे, जो गद्दी-

---

(١) نقل خريطهٔ لارڈ وليم بينٹنك گورنر جنرل هند بنام مهارانا جوان سنگهجي *

مهاراناصاحب عاليشان مشفق مهربان مصدر لطف واحسان سلامت *
بعد از تبليغ مراسم آرزوے گرامي مواصلت سراسر عاطفت كه گنجايش گير تحرير خامهٔ و زبان و تقرير پذير نامهٔ وسيع البيان نيست، مشهود ضمير منير گردانيده مي آيد* مهرباني نامه شفقت ختامه متضمن دستاويز مسرت وابتهاج فراوان بخاطر آنمهربان از وصول خلعتے كه بتقريب مسند نشيني آن عاليشان برواج اودے پور از طرف اين سركار دولتمدار معرفت

नशीनीके वक़ उस आलीशान दोस्तके लिये इस बड़ी सर्कार (अंग्रेज़ी) की तरफ़से बहादुर ज़ात कप्तान टॉमस अलेग्ज़ैण्डर कॉफ़ साहिबकी मारिफ़त भेजागया था, ख़ुशी ज़ाहिर की, और यह बात लिखी है, कि आप पुरानी दोस्तीके तरीक़ेपर सफ़ाई और मुहब्बतके दस्तूरोंकी हिफ़ाज़तमें ज़ियादहसे ज़ियादह मस्रूफ़ रहेंगे; और दूसरी कई बातें दोस्ती और सादगीकी, जो कप्तान साहिबके साथ वरती गईं, वे हद ख़ुशीका सबब हुईं. ख़िल्अ़तके मिलनेसे ख़ुशी ज़ाहिर करना, और वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबके दोस्ती व सच्चाईके तरीक़ेका बयान करना, और पुरानी दोस्ती व वफ़ादारी के तरीक़ेको जारी रखना, उन दोस्तकी साफ़दिलीका पूरा सुबूत है, जो इस ख़ालिस दोस्तको भी ख़ुशी बख़्शने वाला हुआ. बुज़ुर्ग ख़ुदा उस बड़े दरजेके दोस्तको एकता और मुहब्बतके तरीक़ेपर क़ाइम रक्खे. इस हालतमें इस मुन्सिफ़ सर्कारके क़ाइम मक़ाम, याने अहलकार सच्चाईका तरीक़ह, जो कैलासवासी महाराणा साहिबके साथ वरता जाता था, उन दोस्तके साथ भी बग़ैर किसी फ़र्क़के जारी रक्खेंगे.

ऐ आलीशान दोस्त, बहुतसा रंज और अफ़्सोस महाराणा साहिबके इन्तिक़ालके बाद उनकी नेकियां और ख़ूबियां याद करनेसे इस दोस्तकी ख़ातिरमें जम गया था, लेकिन अब इस ख़ुशख़बरीसे, कि वह दोस्त राज्य उदयपुरकी गद्दीपर बैठे हैं,

---

شجاعت وتهور دستگاه کپتان طامس الکسندر کابصاحب بهادر مرسل شده بود واینمعنے که آن مشفق پاس سررشتهٔ دوستي واتحاد مستوثقهٔ قدیمه فیمابین در حفظ لوازم مودت وصفوت جانبین بیش ازپیش مائل ومصروف خواهند بوده بادیگر مراتب الفت ویکرنگي وخورمی وخورسندي از خوبي وپاسداریهاے کپتان صاحب موصوف وصول مباهجت شمول گردیده مسرورموفور ومنشرح نامحصور ساخت ــ ارقام کلمات بهجت وانبساط بوصول خلعت مزبور واظهار مدارج موالفت ومصادقت مهارانا صاحب بیکنتهه باشي ملحوظ ومرعی داشتن پاس روابط خلت ووفاق دیرینه بیشتر ازبیشتر ازآثار سنیه مخالصت ومصافات باطنی آن مصدر لطف واحسان متصور شده ذریعهٔ کمال بهجت وانتعاش خاطر اخلاص مظاهر گشت* ایزد تعالے شانهٔ آن عالیشان را باینهمه حفظ شرایط یکجهتی وتواد سلامت با جمعیت داراد ــ مما نااندرینصورت اهالي نامدار این سرکار معدلت دثار لوازم صداقت ایتلاف نهجیکه بامهارانا صاحب کیلاس باشي مرعي ومسلوک داشتنده بلاتفاوت نسبت بآنمشفق ملحوظ ومطمح نظر خواهند داشت* عالیشانا هرقدر تالم وتحسر وتشتت وتکدر که بعد انتقال مهارانا صاحب بیاد محاسن وخوبیهاے آن رهگراے عالم بقا بخاطر اخلاص ماثر جاگرفته بوده بمثابه آن بل فزون ترازان از ادراک مژدهٔ بهجت آمادهٔ تمکن میمنت تضمن آن مهربان بر وسادهٔ راج اودےپور شادماني ونشاط وخورمی وانبساط بدل

बहुतसी खुशी मेरे दिलको हासिल हुई; इज़्ज़तदार और बुज़ुर्ग खुदा उस आलीशान दोस्तके मुबारक जुलूसको उस रियासत, उन दोस्त और ख़ैरख़्वाहों और दोस्तोंपर नेक और मुबारक करे. कप्तान कॉफ़ साहिबकी ख़ातिरदारी और दोस्ती वग़ैरहकी रस्मोंके मज्बूत क़ाइम रखनेकी बाबत, जो लिखा था, वह इस दोस्तके मन्शाके मुवाफ़िक़ था, इसलिये बहुतही खुशीका सबब हुआ. उम्मेद है, कि इस दोस्तको हमेशह अपनी ख़ैरियतका ख़्वाहिशमन्द जानकर मिहर्बानीके ख़तोंसे खुश करते रहें- ज़ियादह क्या लिखा जावे. (दस्तख़त)- विलिअम बेंटिंक.

(कागज़की पुश्तपर)
(दस्तख़त)- स्टर्लिंग,
सेक्रेटरी सर्कार अंग्रेज़ी.

——⊂∞✻∞⊃——

इन दिनों प्रधानेका काम महता रामसिंह करता था; इस प्रधानने वैकुण्ठ-वासी महाराणा (भीमसिंह) के समयमें प्रधानेका काम मिलनेके वक़् एक मुचल्का

دوستی منزل رونمود- حق عزوجل جلوس فرخندۂ مانوس آن عالیشان برراج مزبور بانمصد رلطف و احسان وجمیع اصدقاو احبامبارک ومهناگرداناد و انچه ازمصروفیت ودلدهی کپتان صاحب معزی الیه درترقی واستحکام مبانی مودت واستیناس فیمابین وخوبیهاے ایشان بخامۂ یکجهتی نگاردراوردہ بودند چون عین بروفق خواهش وحسب دلخواہ دوستی دوست است لهذا مسرت برمسرت افزود- ترصدکه مخلص را همواره خواهان مژدۂ خیریتهاے مزاج موالفت امتزاج خود انگاشته بارقام مهربانی نامجات توجه علامات مسرور ومحبور مینمودہ باشند- زیادہ چه برطرازد *

(sd.) W. Bentink.

(sd.) A. Stirling,
Secretary to Government.

अठारह शर्तोंका लिखकर उक्त महाराणाके नज़ किया था, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

मुचल्केकी नक़्ल (१).

॥ श्रीरामजी ॥

॥ सीध श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री अनदाताजी हजुर षानाजाद वणाया मनष म्हेता रामसीघको ध्रथी हाथ लगाऐ मुजरो मालम होये अप्रच, श्री हजुरमे अरज कराई स्यो षावद मन बदगी भलावे तो वदगी सामधरमासु कीया जाऊ, हजुर राजी रेह जीणी प्रमाणे चाकरी — —ऊ, ई मुदा मांड्या जीमे कसर पाडु, तो मने श्री अकलीगजीकी आण हे, ईमे कसर पाडु, तो षावद मुरजी व्हे जो कीजे——

१ साहेबकेर हजुरके दनभर दन दोसती बदे न गणा राजी रे न कणी बातकी मुरजी सवाऐ नी वे——

२ साहब लोगाको पईस्यो देणो जीकी तनषाव लगाऐ देणी न तनषाव वोठे न्ही षरचणी, साषकी साष पुछ नजर करणी, ऐक रपो चढा०णो नी, साहेबकी अरज ई तनषाव तावे हजुर आवे नी——

३ ज्मा वारु हे जी स्वाऐ वदा०णी, राजरा काम काजमे कसर पाडणी नही, छतीस ही कारषानारी वालीगी राषणी, आरी पुकार आवे नी, दन चढा०णा नी ही——

४ देसरो वंदोबसत राषणो षालस्यो बदा०णो——

५ हजुरसु अरज कीया बना हुकम टाल काई हरफ बोलणो नीही, नाव पथाव, वोर ही काई हुकम बना करणो नही——

६ कणी सु कस्यो राषणो न्ही——

७ नाव रुषरो नही करणो, सुष पाकरी नगे राषणी, आ चाल मेटणी, ई स्वाऐ मुडो आगो करे, तो जीनु सजा देणी——

(१) इस मुचल्केका अस्ल काग़ज़ कई जगहसे फटजानेके सबब बाज़ बाज़ शब्द और अख़ीरमें थोड़ासा मज़्मून व संवत् मिती जाते रहे हैं.

८ जनानी परची त्था सरदार परची पावे जाकी चढाण्णी नी ———

९ वना हुकम माथे करज करणो नही ———

१० भीः चाकरी कर वताण्णी न कसम कसर न्ही पडजु ———

११ ध्णीरो हुकम माथा ऊप्रे रापणो, कीरो सरोदो रापणो न्ही ———

१२ — — — — — — ऊप्र घर सर हाजर रेणो ———

१३ जुठी साची कई करणी न्ही, जीमे तगसीर होवे, तो साची दपाऐ देणी, पछे हुकम करे जो करणो ———

१४ जा ज्मी गई हे जो आणवो तो श्री ऐकलीगजीके हाथ हे, प्ण मेनत कर चाकरी कर — — — — ———

१५ अवारु देसको वदोवसत हे ज्णीसु वतो वदोवसत रापणो, ईमे कसर पाडणी न्ही ———

१६ काम कारपाना आगे हे जारे रहे, फेर मरजी होऐ जारे रापणा ———

१७ वारु परच हे जीमे गटाण्णो न्ही, कोई राज हे काम आऐ पडे, तो हुकम वाल रापणो ———

१८ — — — — — तनपाव लगाऐ देणी स्यो प — — — — — — — — — व. — — — — — माडा जीमे कसर पाडु तो श्री हजुरकी — — — — — — — — व ध्रमका सोग — — — — — सावध्रमा सु व — — — — — — — — — — — — — चाकरी करणी, ईमे कसर पाडु, तो ध्णीरी मरजी होऐ क्रे, धणीने दोस न्ही.
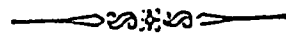
इस मुचल्केकी अक्सर क़लमोंका अमल दरामद न होनेके सबब लोगोंने चारों तरफ़से रामसिंहकी शिकायत करना शुरू किया, जिनमें सबसे बढ़कर शिकायत यह थी, कि गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके ख़िराजका सात लाख रुपया चढ़ गया, और उसकी बाबत पोलिटिकल एजेएटने भी बद इन्तिज़ामी ज़ाहिर करके ताकीद लिखी. इसपर महाराणाने महता रामसिंहको उन बातोंका बन्दोबस्त करनेके लिये हुक्म दिया, जिनसे रियासतमें बद इन्तिज़ामीकी शिकायत फैलरही थी. उक्त प्रधानने जवाब दिया, कि "ग्यारह लाखकी रियासती आमदनी और बारह लाखका ख़र्च है, इसलिये ख़र्चकी कमी हुए बिदून बन्दोबस्त होना कठिन है." तब प्रधानकी सलाहके मुवाफ़िक़ महाराणाने महासाणी बख़्ता, कायस्थ बिशननाथ, और पुरोहित रामनाथ को ख़र्च घटानेपर मुक़र्रर किया, और पहिले कोठारका ख़र्च कम करनेकी तज्वीज़ हुई. लेकिन् इन तीनों शख़्सोंने यह सोचकर, कि प्रधाना अर्थात् नियाबतका काम तो महता

रामसिंह करे, और बुराई व बदनामी हम लोगोंको मिले, जो हमारे हक़में ठीक नहीं है, अपनी बुराईके बचावके लिये शुरूमें अनुमानसे जमा ख़र्चकी एक फ़र्द बनाई, जिसमें बारह लाखकी सालानह आमदनी और ग्यारह लाखके ख़र्चका तख़्मीनह था, और महाराणासे ख़ानगी तौरपर निवेदन किया, कि हुजूरकी आज्ञानुसार कोठारका ढंग देखा गया, तो मालूम हुआ, कि हिमायती और ज़बर्दस्त लोगोंकी पावणा तो बन्द नहीं होसक्ती, सिर्फ़ बेवा और लावारिस बच्चोंका सीगह उन लोगोंसे अलग है, जिनका गला घोटनेसे बमुश्किल तीन चार हज़ार रुपया सालानहकी बचत हो सक्ती है; परन्तु ऐसा करनेमें हज़ारों ग़रीब हम लोगोंको गालियां और हुजूरको बद दुआ देंगे, जिसमें किसी तरहका फ़ायदह नज़र नहीं आता, आइन्दह जैसा हुजूर फ़र्मावें वैसा कियाजावे. यह सुनकर महाराणाने फ़र्माया, कि जमा ख़र्चका बन्दोबस्त करना तो बहुत ज़रूर है, इसकी तद्बीर जिस तरहपर होसके, करना चाहिये, तब उन लोगोंने वह काग़ज़ पेश किया, जिसमें एक लाख रुपया सालानहकी बचतका हिसाब था. इस फ़र्दसे महाराणा को प्रधानके फ़िरेबका यक़ीन होगया, और उन्होंने महता शेरसिंहको प्रधान बनानेकी ग़रज़से बुलाना चाहा, जो पहिले भागकर ग़ैर इलाक़हमें चलागया था. पैग़ामके पहुंचतेही विक्रमी १८८६ माघ कृष्ण ५ [हि० १२४५ ता० १९ रजब = ई० १८३० ता० १४ जैन्युअरी] को शेरसिंह महाराणाके पास हाज़िर होगया, लेकिन् कप्तान कॉफ़ साहिब रामसिंहका मददगार होनेके कारण शेरसिंहको प्रधाना मिलनेमें तअम्मुल हुआ, और रामसिंहको फ़िक्र हुई, कि रियासती बन्दोबस्त न कियाजानेसे अब मुझको भी ख़तरह है, इसलिये मुनासिब है, कि गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी सफ़ाई करके पोलिटिकल एजेण्टको मददगार बना लिया जावे. उसने सात लाख रुपयेमेंसे, जो गवर्मेण्टको देना वाजिब था, कॉफ़ साहिबकी मददसे दो लाख रुपया मुआफ़ करवाकर महाराणाको अपनी नौकरी व ख़ैरख़्वाही दिखाई, और कई लोगोंसे दंड व जुर्मानह वग़ैरह वुसूल करके जोड़ तोड़ लगाकर पांच लाख रुपया सर्कारी ख़िराजका अदा करदिया. इस कार्रवाईसे रामसिंहकी बहुतसे आदमियोंके साथ दुश्मनी बढ़कर ज़ियादह शिकायतें पैदा हुईं; और विक्रमी १८८७ माघ कृष्ण ८ [हि० १२४६ ता० २१ रजब = ई० १८३१ ता० ६ जैन्युअरी] को जब कप्तान कॉफ़ साहिब विलायत जानेके लिये महाराणासे रुख़्सत हुए, उसी वक़्से रामसिंहकी ताक़तमें फ़र्क़ आगया.

विक्रमी १८८८ द्वितीय वैशाख शुक्ल १ [हि० १२४६ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १८३१ ता० १२ मई] को रामसिंह क़ैद हुआ, और शेरसिंहको प्रधाने

का सरोपाव मिला. उसवक्त शेरसिंहने एक इक़ारनामह लिखकर पेश किया, जिसकी नक्ल नीचे लिखी जाती हैः-

महता शेरसिंहके इक़ारनामहकी नक्ल.

॥ श्रीनाथजी. ॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री प्रथीनाथ हजूर अरज षानाजाद कीधो मनप महता सेरसीघकी अरज मालम होऐ अप्रच ॥

सरव जंमो त्रस १ रो १०॥) साडा दसको हे जीमे कस्र न्ही, अप्र ज्मा सुदी मेनत कीदा ग्यारा वाराको वदे, सो बदावणो साडा दसमें तो कस्र पडे न्ही, ओ ज्मा अतो म्रजी होऐ जठे पूचाजे

वोर काम में हरकत पडे न्ही म्रजी प्रमाऐ रा ईमे बाद दे जीमे तफावज पडे न्ही

देसको वंदोवसत रापणो, चोरी चपारीको रापणो, हरकत पडे न्ही

साऐवका पूणीका तीन लाष जणीको जंमो जुदों तणषाव काड देणी, सो हुकम करे जठे वोर तालपे

फोज पूचरो जंमो जुदो काड देणो, वोर ऐकरे हात रहे श्री द्रबारका हुकमको

कोठारको जंमो जुदो वादणो, सो अनको धान नुद कोठार चडे

ईमे पजानाको जंमो वांद देणो, सो पजाने पडे, वोठे पूचाणो न्ही

ई प्रमाऐ श्री पावद वाद दे जीमे कस्र पाडु, तो श्री द्रबारकी आण हे- सं० १८८७ का वेसाष बुद १०.

इन्हीं दिनोंमें नाथद्वारे वालोंने मुखिया राधिकादासको एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके पास वकील बनाकर भेजा, और खुद मुस्तार बननेकी कोशिश की, लेकिन उस

वकीलको रिचर्ड कैविंडिशने, जो जवाब दिया उसकी नक़्ल ख़रीतहके साथ महाराणाके पास उक्त साहिबने भेजी, जिसका तर्जमह यहांपर मए ख़रीतहके तर्जमेके दर्ज किया जाता है:-

एजेण्ट गवर्नर जेनरल रिचर्ड कैविंडिश साहिबके ख़रीतहका तर्जमह,
ब नाम महाराणाजी श्री जवानसिंहजी,
ता० ३१ मई सन् १८३१ ई०.

मामूली अल्क़ाब व आदाब वग़ैरहके पीछे. एक ख़त पुजारी मन्दिर नाथद्वारेका यहांकी हाज़िरबाशीके लिये अपना वकील भेजनेके मज़्मूनसे मेरे नाम मए राधिकादास वकील नाथद्वाराके इन दिनोंमें पहुंचा था; जवाब उसका जो कुछ कि मेरी तरफ़से लिखा गया, उसकी नक़्ल वास्ते इत्तिला दर्बारके इस ख़रीतहके साथ भेजी है, सो उसका मज़्मून मुलाहज़ह करनेसे रौशन दिल दोस्ती भरे हुएके होगा, ज़ियादह दिन ख़ुशीका हमेशह हूजियो.

(दस्तख़त)- रिचर्ड कैविंडिश.

तर्जमह नक़्ल हुक्म बनाम राधिकादास
वकील नाथद्वारा.

(फ़ार्सीमें)
नक़्ल मुताबिक़ अस्ल,
अ़ब्दुल्अ़ह्मद मुहम्मद शफ़ीअ़,
मुन्शी एजेन्सी.

(अंग्रेज़ीमें)
(दस्तख़त)- रिचर्ड कैविंडिश.

हुक्म बनाम राधिकादास वकील पुजारी मन्दिर श्री नाथद्वाराके यह है, कि ख़त मालिक तुम्हारेका, जो बमुक़द्दमे भेजने तुमको उह्दे विकालतपर वास्ते हाज़िरबाशी यहांके था, सो हमारे पढ़नेमें आया. जोकि मक़ाम नाथद्वारा राज रियासत जुदा

नहीं है, इसवास्ते तुम्हारा नाथद्वारेकी तरफ़से यहां हाज़िर रहना ज़रूर नहीं, तुम्हारे मालिकको जो कुछ ज़रूरत कहने और लिखनेकी हमसे हो, उसका सवाल जवाब मारिफ़त दर्बार उदयपुरके करते रहें, नाथद्वारे वालोंके कहनेकी सुनवाई बिना वसीले दर्बार महाराणा साहिबके इस जगह नहीं होसक्ती है, क्यौंकि नाथद्वारा तअ़ल्लुक़ात रियासत मौसूफ़केसे है; अगर्चि लिखना जवाब ख़त तुम्हारे मालिकका उन्हींके नाम मन्ज़ूर था, परन्तु जोकि तुम्हारे मालिकका अल्क़ाब दफ़्तर उदयपुर तथा इस दफ़्तरमें नहीं पाया, इसवास्ते यह हाल तुम्हारे नाम लिखा गया; चाहिये. कि हमारे लिखे हुए इस तमाम हालकी इत्तिला अपने मालिकको करदेवें - फ़क़त, लिखा ५ मई सन् १८३१ ई०.

रामसिंहके क़ैद होने और शेरसिंहको प्रधाना मिलनेकी ख़बर कप्तान कॉफ़ साहिबने कलकत्तेमें सुनकर रामसिंहकी सिफ़ारिशके लिये एक ख़रीतह महाराणाके नाम भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है :-

कप्तान कॉफ़ साहिबके ख़रीतहकी

नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

(अंग्रेज़ीमें)
(दस्तख़त) - कॉफ़ साहिब.

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा बीराजमान लाऐक श्री माहाराजा धीराज माहाराणा साहेब श्री जुवानसीघजी एतान, कलकताका मुकामसु मेजर काफ साहेब लीषावता सलाम मालम हुवे, अठाका समीचार भला हे, आपका समीचार सदा कुसीका आवे तो हमारे ताई बोहोत कुसी होऐ, आप बडा हो, सीरदार हो, सदा क्रपा महेरवानगी राषो तीसु जादा रहे अप्रच ॥ आपको षलीतो अन्यात हुवो, समीचार बाच्या कुसी हुई, सरकारमे हमारा हाथकी फारगती सरकार कंपनीका रुप्याके बासते आपके हाथ आऐगई होगा, आजकी रोज हमकु षवर मीले पाच लाष रुप्या सके ऊदेपुरी सेठ जोरावरमलकी मारफत सरकार कंपनीका षजाना महे

पुछगया, अस परचका वोज आपके राज ऊपरेसे ऊठगया, आगेकी वात आपका हाथ महे है, ईस नोकरी करणेमहे महेता रामसीघजीकी ऊपरे हजारा दुसमण पेदा हुवा, अवे आपने काम ऊतारचा, अवे सव कोई आपणे रुप्या डंड वदले ईसकी ईजत ऊतारणेकी सला करेगा, आपके सीवाऐ ऊसके कसीका आसरा भरोसा हे नही, ऊसकी ईजत ज्यान आपके हाथ महे है. अगर आप ईसकी नोकरी आद करके ईजत वंचावे तो वचेगा, अर आप नही वचावेगा तो दुसमणीसे मारचा जावेगा. हमारी सलासे आपके दोऐ लाख रुप्या माफ कराया, ईन सवकु वेराजी कीया, ईस वासते हम आपकु तकलीप देते हे, ओर महेता मोतीराम हाथे कीताव १ अकवरावादका मुकामसु भेजी ही, पीछेसु मीमच हेड़ी साहेवके पास कीताव २ भेजी हे, हमकु भरोसा हे, ऐ तीनु कीताव आपके पास पुची होगा. आपके परसण महे हुवे कदी कदी आपकी कुसषवर ओर मेवाड़का ऐवालकी अन्याऐत करोगे, अठा लाऐक काम काज लिखावोगे, अठे हुकम आपको हे. सं० १८८७ (१) रा जेठ सुद १४ मास जुन ता० २४ सन १८३१ .ई०.

इसके वाद हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरल लॉर्ड बेंटिंक (Lord William Bentinck.) ने अजमेर आनेके इरादहसे महाराणाको भी अजमेरमें आकर मुलाक़ात करनेके लिये पोलिटिकल एजेण्ट की मारिफ़त कहलाया. इस वातपर उदयपुरके सर्दारों वग़ैरहमें वहुत कुछ सोच विचार और सलाह मश्वरा हुआ, कि उदयपुरके महाराणा पहिले दिल्लीके वादशाही दर्बारमें नहीं गये, तो इस वक़्त उनका अजमेर जाना किस तरह वाजिव समझा जासक्ता है ? इसपर पोलिटिकल एजेण्ट स्पीअर साहिवने कहा, कि मुसल्मान वादशाह अव्वल तो आप लोगोंके दुश्मन थे, दूसरे जो राजा उनके दर्बारमें जाते, उनकी इ़ज़्ज़त नौकरोंके दरजेपर होती थी, इसलिये अगले महाराणा साहिव उनके पास नहीं गये, लेकिन् वर्ख़िलाफ़ उसके ब्रिटिश गवर्मेण्ट आपकी दोस्त है, और गवर्नर जेनरल हिन्द और महाराणाकी जो मुलाक़ात होगी वह दोस्तोंके तरीक़ेपर होगी, इसलिये महाराणा साहिवका अजमेरमें चलकर गवर्नर जेनरलसे मुलाक़ात करना वेजा नहीं है. इन दोनों वाजिव वातोंसे महाराणा ला जवाव होगये, लेकिन् वहुतसे मुसाहिवोंने उनका अजमेर जाना ना मुनासिव वयान किया, तव महाराणाने कुल सर्दारों व अह्लकारों को फ़र्माया, कि अव्वल तो स्पीअर साहिवने, जो दोनों वातें कहीं उनमें किसी

(१) यहांपर श्रावण महीनेसे प्रारम्भ होनेके हिसावसे विक्रमी १८८७ लिखागया है, लेकिन् चैत्रके हिसावसे विक्रमी १८८८ होता है.

तरहका एतिराज़ या दलील नहीं होसक्ती. दूसरे मरहटोंके गृद्रके ज़मानेकी तक्लीफ़ें, जिनको मैं खुद श्री बड़े हुजूरके साथ रहकर उठा चुका हूं, इसी गवर्मेंएटकी मददसे दूर हुईं, इसलिये हमको हर सूरतमें उसके साथ दोस्तानह बर्ताव रखना लाज़िम है. तीसरे शाहपुराके फूलिया ज़िलेपर, जो अंग्रेज़ी पुलिस (ज़ब्ती) बैठी हुई है, वह भी लॉर्ड बेंटिंककी दोस्तीके बिना नहीं उठ सक्ती, और उसकी ज़ब्ती उठवाना ज़ुरूर है, क्योंकि वह ठिकाना हमारे रिश्तहदारोंमेंसे ख़ैरख़्वाह व फ़र्मांबर्दार राजाधिराज अमरसिंहका है, जिन्होंने इस रियासतकी नौकरी करते करते अभी उदयपुरमें वफ़ात पाई है. चौथे दाजीराज (वैकुण्ठवासी महाराणा) का गयाश्राद्ध करना भी मुझपर फ़र्ज़ है, जिसमें कई महीनोंका सफ़र मए लश्कर व सिपाहके अंग्रेज़ी .इलाक़हमें करना पड़ेगा, जो बिदून मदद ब्रिटिश गवर्मेंएटके नहीं होसक्ता; इसलिये हमको अजमेरमें जाकर लॉर्ड बेंटिंकसे मुलाक़ात करना ही बिह्तर है. तब सब लोगोंने महाराणाकी इस आक़िलानह सलाहको पसन्द किया; और महाराणाने कुल सर्दार व उमरावोंके नाम उदयपुर हाज़िर होनेका हुक्म भेजा. हुक्मनामे पहुंचते ही सब लोग हाज़िर होगये. इस सफ़रमें मेरा (कविराज श्यामलदासका) पिता और पुरोहित श्यामनाथ भी साथ थे. इन दोनोंकी ज़बानी इस सफ़रका हाल मैंने कई बार सुना है, उनका बयान था, कि महाराणाके लश्करमें उस वक्त पैदलोंके अलावह सवारोंकी संख्या दस हज़ार थी.

विक्रमी १८८८ माघ कृष्ण ५ [हि० १२४७ ता० १८ शअ्बान = .ई० १८३२ ता० २२ जैन्युअरी] को राजधानीसे लश्करका कूच होकर पहिला मक़ाम ग्राम गुडलीमें हुआ. माघ कृष्ण ६ को महाराणा दर्शनोंके लिये श्री एकलिंगेश्वरकी पुरीमें रहे. माघ कृष्ण ७ को ग्राम खेमलीमें क़ियाम किया, अष्टमीको ग्राम सनवाड़में पहुंचे, नवमीको गलूंडमें, दशमीको जोगए खेड़ीमें, एकादशी व द्वादशीको भीलाड़ेमें मक़ाम होकर त्रयोदशीको बनेड़ेमें पहुंचे, जहां राजा उदयसिंहने दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई वगैरहकी रस्म अदा करके बड़ी उम्दगीके साथ महाराणाकी ज़ियाफ़त की. माघ कृष्ण १४ को बीचमें एक मक़ाम होकर अमावास्याको सखराणीमें क़ियाम हुआ. अजमेर और मेवाड़की सर्हदपर ब्रिटिश गवर्मेंएटकी तरफ़से एक पोलिटिकल अफ्सर पेश्वाईको आया, माघ शुक्ल १ को नांदला ग्राममें ठहरकर द्वितीयाको अजमेर पहुंचे; दो कोसतक लॉकट (१) साहिब वगैरह ८ अंग्रेज़ी अफ़्सर महाराणाकी पेश्वाईको आये, और महाराणाको डेरोंमें पहुंचाकर रुख़्सत हुए. दूसरे रोज़ बूंदीके राव राजा

(१) राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल.

रामसिंहके अजमेरमें आने और मेवाड़की फ़ौजके दर्मियान होकर निकलनेके इरादेकी ख़बर मिली, इसपर महाराणाने महता शेरसिंह, रावत् जवानसिंह, रावत् दूलहसिंह और पुरोहित श्यामनाथ वगैरहको बुलाकर कहा, कि राजा रामसिंह हमारे दादाको मारने वाले दुश्मनका पोता है, इसका लश्करमें होकर निकलना हमारी बदनामी और हतकका बाइस होगा. तब रावत् जवानसिंह व दूलहसिंहने अर्ज़ की, कि इस वक्त सलाहकी बात कहना हम लोगोंका काम नहीं है, हमारी तो यही राय है, कि नक्कारे का हुक्म देदिया जावे, ताकि हम लोग लड़ाई करके बहादुरीके हाथ दिखलावें; और अगर मस्लिहतकी बात दर्याफ़्त करना हो, तो अहलकारोंसे पूछें. इसपर महता शेरसिंह ने कहा, कि लॉर्ड बेंटिंकको इत्तिला करने बाद लड़ाई करनेमें कोई हर्ज नहीं है, इसलिये अव्वल उनको इत्तिला होजानी चाहिये. लाला चिरंजीलाल, जो उस समय पोलिटिकल एजेएटके पास मेवाड़की तरफ़से वकील था, उक्त लॉर्डको इत्तिला करनेके लिये भेजा गया; वह लॉर्ड बेंटिंकके डेरेकी ड्योढ़ीपर जाकर कह आया, कि यदि बूंदीवाले मेवाड़के लश्करमें होकर निकलेंगे, तो तलवार चलेगी; लेकिन् लॉर्ड बेंटिंकने ऐसा बन्दोबस्त किया, कि अंग्रेज़ी अफ्सरोंको भेजकर राव राजा बूंदीको दूसरे रास्तेसे निकलवा दिया, जो मेवाड़की फ़ौजसे बहुत दूर था; और इस क़द्र दुश्मनी देखकर उक्त लॉर्डने दोनों रियासतोंके आपसमें मेल करादेनेकी बहुत कुछ कोशिश की, परन्तु महाराणाने उक्त लॉर्डकी सलाहको मन्जूर न किया.

विक्रमी माघ शुक्ल ४ [हि० ता० ३ रमज़ान = ई० ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा हाथीपर सवार होकर जुलूसकी सवारीसे लॉर्ड बेंटिंकके डेरेपर गये; डेरोंकी ड्योढ़ीतक पेश्वाई और दस्तापोशी करके उक्त लॉर्ड महाराणा तथा उन सिकत्तर वगैरह पांच अंग्रेज़ोंको, जो महाराणाको लेनेके लिये गये थे, अपने डेरेमें लेगये, और १९ तोपोंकी सलामी सर हुई; डेरेमें एक बड़ा तख़्त तय्यार था, जिसपर एक तरफ़ गवर्नर जेनरल हिन्द और उसके पास वाली कुर्सीपर गवर्नर बम्बई और दूसरी कुर्सियोंपर अंग्रेज़ अफ्सर, और तख़्तके दूसरी तरफ़ महाराणा और कुर्सियोंपर उनके सर्दार व अहलकार बैठे; फिर गवर्नर जेनरलकी तरफ़से सोने चांदीके सामान समेत २ घोड़े, मख़मली ज़रदोज़ी झूल व सामान समेत १ छोटा हाथी, सरोपाव और मोतियोंकी माला वगैरह ज़ेवर, पश्मीनेका १ शामियाना मए चांदीके बांसों व टाटबाफ़ी पर्दोंके, २ फ़र्शकी दरियां, २ ग़ालीचे, विलायती साज़ सहित १ तलवार, फ़ौलादी जड़ाऊ ढाल और १ दुनाली बन्दूक़ पेश हुई, जिनको महाराणाने ख़ुशीके साथ क़बूल किया. गवर्नर जेनरलने महाराणाको इत्र पान देने बाद पेश्वाईकी जगहतक पहुंचाकर रुख़्सत किया, जाते आते वक्त १९ तोपोंकी सलामी सर हुई.

विक्रमी माघ शुक्ल ५ [हि० ता० ४ रमज़ान = .ई० ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को महाराणाकी मुलाक़ातके लिये लॉकट साहिब लश्करमें आये. माघ शुक्ल ६ को जयपुर महाराजाकी तरफ़से टीकेका दस्तूर आया, और सप्तमी की सुब्हको साढ़े दस बजेके क़रीब गवर्नर जेनरल हिन्द महाराणाके डेरेपर तश्रीफ़ लाये. रावत् जवानसिंह, रावत् दूलहसिंह, महता शेरसिंह, महता सवाईराम, और महता मोतीराम वगैरह मुसाहिब गवर्नर जेनरलकी पेश्वाईको गये, ड्योढ़ीतक महाराणाने पेश्वाई की, और दस्ता पोशी करके खेमेमें लेगये. महाराणा और गवर्नर जेनरल हिन्द एक तख़्तपर और गवर्नर बम्बई कुर्सीपर और उनके बाद एक तरफ़ साहिब लोग और दूसरी तरफ़ सर्दार लोग कुर्सियोंपर बैठे; शौक़िया बातें होने बाद दूसरे खेमेमें गये, जहां लॉर्ड बेंटिंक, गवर्नर बम्बई, व लॉकट साहिब वगैरह चार अंग्रेज़, और महाराणा मए रावत् जवानसिंह, रावत् दूलहसिंह, महता शेरसिंह, महता सवाईराम, महता मोतीराम व पुरोहित श्यामनाथ वगैरहके तख़्लियेमें रहे; शुरूमें जावद, नीमच व गोड़वाड़ वगैरह पर्गनोंके मेवाड़के क़ब्ज़हसे निकल जानेकी बाबत ज़िक्र हुआ, जिसके बारेमें उक्त लॉर्डने शीरींकलामीके साथ जवाब दिया, लेकिन् कुछ मत्लब हासिल न हुआ, तब महाराणा ने कहा, कि मैं दो बातके लिये आपकी मुलाक़ातको यहां आया हूं- अव्वल तो यह, कि शाहपुरा व फूलियासे ज़ब्ती उठाली जावे, और दूसरे मुझको गयाश्राद्धके लिये जाना है, जिसमें आपकी मदद बहुत कुछ दर्कार होगी. गवर्नर जेनरलने इन दोनों बातोंको मन्ज़ूर करके शाहपुराकी ज़ब्ती उठानेका तो उसी वक्त हुक्म देदिया, और सफ़रके बन्दोबस्तका ज़िम्मह अपने ऊपर लेकर महाराणाका इत्मीनान करदिया. यह बात चीत होचुकने बाद फिर तख़्तपर आ बैठे; लॉर्ड साहिब व गवर्नर बम्बईको महाराणाने और बाक़ी अंग्रेज़ोंको अहल्कारोंने इत्र पान दिया, फिर कपड़ेकी किश्तियां ५१, सरसोभा १, मोतियोंकी माला १, पहुंचियां २, ढाल १, तलवार १, बन्दूक़ १, बुग्दा १, पेशक़ब्ज़ १, कटार १, ज़रदोज़ी ज़ीन सहित घोड़े २, और हाथी १ पेश किये गये, जिनको उक्त लॉर्डने खुशीके साथ क़ुबूल किया. इस के बाद पेश्वाईकी जगहतक महाराणा उनको पहुंचानेके लिये गये, आते जाते वक्त २१ तोपोंकी सलामी सर हुई.

इसी दिन घड़ी भर दिन रहे कोटाके महाराव रामसिंह मए अपने दीवान माधवसिंह झालाके महाराणाकी मुलाक़ातको आये, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात व ख़ातिर तवाज़ो होने बाद वापस गये.

विक्रमी माघ शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रमज़ान = .ई० ता० १० फ़ेब्रुअरी]

को जयपुरके महाराजा जयसिंह मुलाक़ातके लिये आये; पेश्वाई वग़ैरह सब रस्में दस्तूरके मुवाफ़िक़ अदा हुईं. इसी रोज़ महाराणा भी पिछला छः घड़ी दिन रहे हाथी सवार होकर जुलूसकी सवारीसे जयपुर महाराजाके डेरेपर तश्रीफ़ लेगये, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात करके वापस आये.

विक्रमी माघ शुक्ल १० [हि० ता० ९ रमज़ान = ई० ता० ११ फ़ेब्रुअरी] की शामको महाराणा कोटाके महाराव रामसिंहसे वापसीकी मुलाक़ात करनेको सिधारे, और द्वादशीको पुष्कर स्नान के लिये गये, वहां ब्राह्मणोंको दान दक्षिणा वग़ैरह देकर चतुर्दशीके दिन वापस अजमेरमें आये; पूर्णिमाके दिन नांदले, फाल्गुन् कृष्ण १ को मिणाय, और द्वितीयाको धनोप मक़ाम रहा, तृतीयाके दिन शाहपुरेमें दाख़िल हुए (१); राजाधिराज माधवसिंहने अपने क़द्रदान और पर्वरिश करने वाले मालिककी मिह्मानी व अदब आदाबमें किसी तरहकी ख़ामी न रक्खी. इस वक़ शाहपुराके लोग मारे ख़ुशीके बदनमें फूले नहीं समाते थे; क्योंकि पर्गनह फूलियासे अंग्रेज़ी पुलिसकी ज़प्ती उठजानेसे तो वे ख़ुशी मना ही रहे थे, महाराणाके शुभागमनने उसे दोचन्द बढ़ादिया. बड़े उत्साह व हर्षसे दो दिनतक महाराणाकी मिह्मानी हुई. फाल्गुन् कृष्ण ६ को महाराणा महुवे पहुंचे, और सप्तमी को बारिश आजानेके सबब वहीं मक़ाम रहा, अष्टमीको भीलाड़े, नवमीको गाडर-माले, दशमीको रास्मी, और एकादशीको सनवाड़ होते हुए, फाल्गुन् कृष्ण १२ के दिन चम्पाबागमें पहुंचे, और तमाम दिन वहीं आराम करके पिछला तीन घड़ी दिन रहे राजधानीके महलोंमें दाख़िल हुए.

दूसरे रोज़, याने फाल्गुन् कृष्ण १३ को बम्बईके गवर्नर अर्ल ऑफ़ क्लेअर (Earl of Clare.) अजमेरसे वापस लौटते हुए उदयपुरमें आये, दस्तूरके मुताबिक़ महाराणाने उनकी मुलाक़ात और मिह्मानी की.

---

(१) इस ठिकानेके अधिकारी हमेशह सच्चे दिलसे अपने स्वामीके फ़र्मांबर्दार बने रहे- महाराजा उम्मेदसिंह तो क्षिप्रा नदीपर उज्जैनकी लड़ाईमें महाराणाके अर्थ मारा गया; उसके प्रपौत्र भीमसिंहको महाराणा अरिसिंहने स्वामि भक्त सेवक समझकर पूर्ण अनुग्रहमें रक्खा, और भीमसिंहने भी मरहटोंके ग़द्रमें तन मनसे महाराणा भीमसिंहकी सेवा की; राजा अमरसिंहने उम्रभर अपने मालिककी नौकरीमें ही चित्त रक्खा, और विक्रमी १८८२ माघ कृष्ण ३ [हि० १२४१ ता० १७ जमादियुस्सानी = ई० १८२६ ता० २६ जैन्युअरी] को जब राजधानी उदयपुरमें डाका पड़ा, तो उन डाकुओंको मारकर गया हुआ माल वापस लाये, जिसके इन्आममें महाराणा भीमसिंहसे राजाधिराजका ख़िताब पाया. विक्रमी १८८४ [हि० १२४३ = ई० १८२७] में राजाधिराज अमरसिंहने राज्य सेवामें रहकर उदयपुर में ही इस दुन्याले कूच किया, और इसी तरह राजाधिराज माधवसिंहने भी पूर्ण स्वामिभक्त पनेसे अपने मालिककी सेवा की, जिसका बदला महाराणा जवानसिंहने उनको पूरे तौरपर दिया.

विक्रमी १८८९ आषाढ़ शुक्ल २ [हि० १२४८ ता० १ सफ़र = ई० १८३२ ता० ३० जून] को साह ज़ालिमचन्द भंवरने रु० १२७५०००) में कुल मेवाड़का एक सालके वास्ते ठेका लिया, जिसको महाराणाने मन्जूर फ़र्माया, और उसे मोतियोंकी माला व सरोपाव देकर महता शेरसिंह, महता सवाईराम व पुरोहित श्यामनाथ सहित बड़ी इज़्ज़तसे उसके मकानपर पहुंचाया, लेकिन् ज़ालिमचन्दको उस ठेकेमें बहुत नुक्सान रहा. इसी वर्षकी श्रावण शुक्ल २ [हि० ता० १ रबीउ़लअव्वल = ई० ता० २९ जुलाई] को रीवांके महाराज विश्वनाथसिंहकी बेटी महाराणी बाघेलीका इन्तिक़ाल हुआ, जिसका महाराणाके दिलपर एक सख़्त सद्मह पहुंचा. विक्रमी १८८९ चैत्र कृष्ण १२ [हि० १२४८ ता० २६ शव्वाल = ई० १८३३ ता० १८ मार्च] को महाराणाने कप्तान कॉफ़ साहिबकी सिफ़ारिश पहुंचनेके सबब महता रामसिंहको वापस बुलाया, जो क़ैदकी हालतमें उदयपुरसे भाग गया था; लेकिन् जब वह उदयपुरमें आया, तो उक्त महाराणाने यही कहा, कि इस तरहपर भागा हुआ शख़्स हमारा प्रधान बननेके लाइक़ नहीं है.

विक्रमी १८९० ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १२४९ ता० ७ मुहर्रम = ई० १८३३ ता० २७ मई] को महाराणाने अपने बड़े भाई अमरसिंहकी पत्नी चांपावतको अपनी माताके स्थानमें मानकर बड़े आदर भावसे बाईजीराजकी गद्दीपर बिठाया. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ११ [हि० ता० १० सफ़र = ई० ता० २८ जून] को ताणाके राज भैरवसिंहकी कन्याका विवाह बेदलाके राव तख़्तसिंहके साथ हुआ. महाराणा भी इस मौक़ेपर ताणेकी हवेली पधारे, लेकिन् दैव योगसे उसीवक़ महाराणी देवड़ीका इन्तिक़ाल होगया, और लोगोंने आकर महाराणाको ख़बर दी. यह ख़बर सुनकर उन्होंने फ़र्माया, कि इसवक़ इस बातको पोशीदह रखना चाहिये, क्योंकि मैंने राज भैरवसिंहसे उनके आख़री वक़्में यह वादह करलिया था, कि तुम्हारे बेटेकी पर्वरिश और तुम्हारी कन्याका विवाह मैं अपने हाथसे करूंगा, इसलिये चाहे कुछ ही हो, मैं अपने वाक्यको पूरा किये बिना महलोंमें नहीं आ सक्ता. महाराणाके ये शब्द सुनकर सब लोगोंके दिलोंपर ऐसा असर हुआ, कि यदि कोई मौक़ा आ पड़े, तो वे अपनी जानतक महाराणापर निछावर करनेमें कोताही न करें. आख़रकार उस रात्रिको कन्यादान वग़ैरहसे फ़ुर्सत पाने बाद महलोंमें पधारे, और सुबह होनेपर महाराणीकी यथोचित दग्ध क्रिया करवाई.

फिर तीर्थ यात्राकी तय्यारी करने लगे, और विक्रमी १८९० प्रथम भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० १२४९ ता० २ रबीउस्सानी = ई० १८३३ ता० १८ ऑगस्ट] को उदयपुरसे रवानह होकर चंपा बाग़में ठहरे, और प्रथम भाद्रपद शुक्ल ७ को चंपा बाग़से कूच करके श्री एकलिंगेश्वरकी पुरीमें पहुंचे, और वहांसे पलाणा, बनेड़िया, जूणदा, लाखोलां, गुरलां व भीलाड़े होते हुए विक्रमी द्वितीय भाद्रपद कृष्ण २ [हि० ता० १६ रबीउस्सानी = ई० ता० १ सेप्टेम्बर] को शाहपुरेमें दाखिल हुए; राजाधिराज माधवसिंहने पेश्वाई व पगमंडा वगैरहके साथ दस्तूरके मुवाफ़िक़ आतिथ्य किया. शाहपुरेसे कूच करके द्वितीय भाद्रपद कृष्ण ५ को ग्राम सांगेरे, कादेड़े, केकड़ी, बघेरे, राजमहल, हमीरपुर, गलोल, नवाई और दतवास होते हुए लालसोटमें पहुंचे, जहां जयपुरकी तरफ़से दुणीका राव जीवणसिंह और दीवान अमरचन्द महाराणाकी ख़िद्मतमें हाज़िर हुए, जिनको बहुत कुछ ख़ातिर तवाज़ोके बाद विदा किया गया. विक्रमी द्वितीय भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० ता० ८ जमादियुल्-अव्वल = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को डीगमें पहुंचे, वहां रियासत भरतपुरकी तरफ़से दीवान भोलानाथ व नन्दराम दर्बारमें आये, जिनको ख़िल्अ़त वगैरह देकर विदा किया. फिर वहांसे द्वितीय भाद्रपद शुक्ल १० को गोवर्द्धनगिरिपर पहुंचे, और वहांसे अपने मज़्हबी फ़र्ज़ अदा करने बाद रवानह होकर द्वितीय भाद्रपद शुक्ल १२ को वृन्दावनमें दाख़िल हुए. वहां जप, पूजा व दान पुण्य वगैरह, जैसाकि चाहिये, करके आश्विन कृष्ण २ को मथुरामें मक़ाम किया; वहां भी तीर्थ यात्रा अच्छी तरहपर की. विक्रमी आश्विन कृष्ण ५ [हि० ता० २० जमादियुलअव्वल = ई० ता० ४ ऑक्टोबर] को गोकुलमें पहुंचे और छठको वहांसे रवानह होकर विक्रमी आश्विन शुक्ल ५ [हि० ता० ३ जमादियुस्सानी = ई० ता० १७ ऑक्टोबर] को कानपुरमें दाख़िल हुए, और गंगा स्नान किया. आश्विन शुक्ल १५ को प्रयागमें पधारे, और त्रिवेणीका स्नान व यथोचित दान पुण्य वगैरह करके विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ [हि० ता० २१ जमादियुस्सानी = ई० ता० ४ नोवेम्बर] को वहांसे कूच हुआ, और अयोध्यामें लश्करके डेरे हुए. इस इलाक़हमें लखनऊ के बादशाह नसीरुद्दीन हैदरकी तरफ़से बहुत कुछ ख़ातिर हुई, और निहायत ही दोस्तीका बर्ताव ज़ाहिर किया गया. मैं (कविराज श्यामलदास) ने अपने दादा और पिताकी ज़बानी, जो सफ़रमें महाराणाके संग थे, सुना है, कि महाराणाकी ख़ूबसूरती और सरलता व ख़ानदानकी प्रसिद्धिसे हज़ारहा आदमियोंकी ज़बानी जिधर देखिये, यही शब्द सुनाई देते थे, कि " राजा रामचन्द्रजीकी गद्दीके वारिस एक अरसे दराज़के बाद अपनी राजधानी अयोध्याको देखनेके लिये आये हैं."

ता० १४ शव्वाल = .ई० ता० २४ फ़ेब्रुअरी] के दिन मिर्ज़ापुरमें पहुंचे, और विन्ध्यवासिनी देवीके दर्शन किये. यहांपर रीवांके महाराजकुमार विश्वनाथसिंह भी मए फ़ौजके आ मिले; फिर वहांसे लश्करका कूच होकर फाल्गुन शुक्ल १ को चित्रकोट में क़ियाम हुआ, और विक्रमी चैत्र कृष्ण ८ [हि० ता० २१ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १ एप्रिल] को वहांसे रवानह होकर दशमी को रीवांमें पहुंचे, महाराजा जयसिंहदेव अपने पुत्र व पौत्रों सहित पेश्वाईको आये, और बड़ी मुहब्बतके साथ हर्ष पूर्वक महाराणाका आदर सन्मान किया; लेकिन् जोकि पहिला विवाह महाराणाका महाराजा जयसिंहदेवकी कन्या सुभद्र कुमारीके साथ हुआ था, और उनका देहान्त होजानेसे महाराणाका दिल बहुत रंजीदह व उदास था, इसलिये उन्होंने शुरूमें रीवां पधारनेसे इन्कार किया, और दूसरा कारण यह था, कि रीवां वाले फिर दूसरी शादी करनेके लिये महाराणाको मज्बूर करते, जो उनको मन्ज़ूर न था, लेकिन् विश्वनाथ-सिंहने शादीकी बाबत ज़िक्र न करनेका इक़ार करके रीवां पधारनेके लिये अर्ज़ की; और उसी इक़ारके मुवाफ़िक़ चैत्र कृष्ण १४ को नीचे लिखा हुआ सामान नज़में दिया जाकर दस्तूरके मुताबिक़ महाराणा विदा किये गये.

महाराजा जयसिंहदेवकी तरफ़से हथनी १, घोड़े २, सरोपाव ६, बहुतसा गहना, तथा २१०००) हज़ार रुपया नक़्द कंठीका; राजकुमार विश्वनाथसिंहकी तरफ़से २ हाथी, ४ घोड़े, सरोपाव, गहना, २००००) बीस हज़ार नक़्द; दूसरे राजकुमार लक्ष्मणसिंहकी तरफ़से हथनी १, घोड़ा २, सरोपाव, ४०००) चार हज़ार नक़्द व गहना; और तीसरे राजकुमार बलभद्रसिंहकी तरफ़से हाथी १, और घोड़े २ मए सरोपाव व गहने वग़ैरहके नज़ हुए.

विक्रमी १८९१ चैत्र शुक्ल १ [हि० १२४९ ता० ३० ज़िल्क़ाद = .ई० १८३४ ता० ११ एप्रिल] को कूचकी तय्यारी होचुकी थी, कि महाराजा जयसिंह-देव महाराणाकी ड्योढ़ीपर आबैठे, और कहा, कि हमने इक़ारके मुवाफ़िक़ महाराणा को विदा करदिया, लेकिन् अब हम सम्बन्धकी बाबत अर्ज़ करनेको आये हैं, और बहुत कुछ स्नेह व नम्रताके साथ महाराणासे अर्ज़ मारूज़ की, जिससे लाचार होकर महाराणाको उक्त महाराजाकी आर्ज़ू पूरी करना पड़ा. फिर दूसरे दिन याने चैत्र शुक्ल २ को रीवांकी तरफ़से नारियल, हाथी व घोड़ा वग़ैरह टीकेका सामान पेश होकर सम्बन्ध स्वीकार कराया गया.

विक्रमी चैत्र शुक्ल ५ [हि० ता० ४ ज़िल्हिज = .ई० ता० १४ एप्रिल] को महाराजा जयसिंहदेवके छोटे राजकुमार लक्ष्मणसिंहकी कन्याके साथ महाराणाका विवाह हुआ. विवाहके उत्सवकी रस्में अदा होचुकनेपर चैत्र शुक्ल १२ को रीवांसे कूच हुआ, और

एक महीना आठ रोज़का सफ़र तै करके विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० १८५० ता० १७ मुहर्रम = .ई० ता० २८ मई] को कोटे पहुंचे; कोटाके महाराव रामसिंहने बड़ी मुहब्बत व उत्साहसे पेश्वाई वग़ैरह दस्तूरी रस्में अदा कीं. इन्हीं दिनोंमें वहांका दीवान माधवसिंह गुज़रगया था, इसलिये उसके बेटे मदनसिंहको महाराणाने तलवार बंधाई. ज्येष्ठ कृष्ण ९ को वहांसे कूच करके एकादशीको भैंसरोड़ पहुंचे, और रावत् अमरसिंह की तरफ़से मिह्मानी हुई; ज्येष्ठ कृष्ण १४ को भैंसरोड़से कूच हुआ, और अमावास्याके दिन बेगममें पधारे; रावत् किशोरसिंहने बहुत अच्छी तरह मिह्मानी की, और वहांपर महाराणा ने दो शेरोंका शिकार भी किया. इसके बाद ज्येष्ठ शुक्ल ३ को बेगमसे रवानह होकर पंचमीको चित्तौड़गढ़में मक़ाम किया, और विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १२ [हि० १२५० ता० १० सफ़र = .ई० ता० १८ जून] को उदयपुरमें दाख़िल हुए. यह तीर्थ यात्रा उक्त महाराणाने बड़ी धूम धामके साथ की, जिसमें क़रीब दस हज़ार आदमियोंकी फ़ौज उनके साथ रही. पहिले मुसल्मान बादशाहोंके ज़मानहमें उदयपुरके महाराणाओंको तो ऐसी तीर्थ यात्रा करना कठिन था ही, लेकिन् मरहटोंके ग़द्रके ज़मानहसे राजपूतानहके दूसरे राजाओंको भी यात्रा करना मुश्किल होगया था, जिसका रास्तह अंग्रेज़ी अ़मल्दारीके प्रभावसे पहिले पहिल इन्हीं महाराणाने खोला; और ब्रिटिश गवर्मेंएटके मुलाज़िमोंने भी सफ़रमें उनकी इस तरहपर ख़ातिरदारी की, कि महाराणा और उनके साथियोंको यह मालूम न हुआ, कि यह .इलाक़ह महाराणाका है, या गवर्मेंएट अंग्रेज़ीका.

विक्रमी १८९१ श्रावण कृष्ण ५ [हि० १२५० ता० १७ रबीउ़लअव्वल = .ई० १८३४ ता० २५ जुलाई] को सलूंबरके रावत् पद्मसिंहने महाराणाको अपनी हवेलीपर मिह्मान करके उनके साथ कुल रियासतके लोगोंको ज़ियाफ़त दी, और हाथी १, घोड़ा १, सिरसोभा १, मोतियोंकी माला १, सरोपाव ७ तथा १००००) रुपया नक़्द महाराणाके नज़ किया. इसी विक्रमीकी श्रावण शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रबी-उ़स्सानी = .ई० ता० १७ ऑगस्ट] को पीछोला तालाबके किनारेपर "जल निवास" नामके महल बनाये, जिसके उत्सवमें बहुतसा इन्आ़म इक्राम तक़्सीम किया गया, और गोठ हुई, याने सर्दार, उमराव, पासबानों तथा सर्कारी मुलाज़िमोंको खाना खिलाया गया.

विक्रमी १८९२ चैत्र शुक्ल १५ [हि० १२५० ता० १४ ज़िल्हिज = .ई० १८३५ ता० १३ एप्रिल] को शिवरतीके महाराजा सूरजमल्लका देहान्त हुआ. महाराणाको इनके इन्तिक़ालका बहुत रंज हुआ, क्योंकि अव्वल तो उक्त महाराजा महाराणाके नज़्दीकी रिश्तहदार थे, दूसरे उन्होंने महाराणा भीमसिंहकी तक्लीफ़ोंमें शरीक रहकर बड़ी

ख़ैरख़्वाही और फ़र्मांबर्दारीसे ख़िद्मत की थी. इसी वर्षकी वैशाख शुक्ल ६ [हि० १२५१ ता० ५ मुहर्रम = .ई० ता० ५ मई] को महाराणा भीमसिंहकी छत्रीकी प्रतिष्ठा हुई, जिसमें बहुत कुछ दान पुण्य व इन्आम इक्राम बांटा गया. विक्रमी १८९३ माघ शुक्ल ५ [हि० १२५२ ता० ४ ज़िल्क़ाद = .ई० १८३७ ता० १० फ़ेब्रुअरी] को बांकीके मगरेमें श्री महाकालिकाका मन्दिर संपूर्ण होनेपर उसकी प्रतिष्ठा हुई.

विक्रमी १८९३ माघ शुक्ल ९ [हि० १२५२ ता० ८ ज़िल्क़ाद = .ई० १८३७ ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को रावत् पद्मसिंहकी बेटी अनोपकुंवरकी शादी राजधानीके महलोंमें कोटाके महाराव रामसिंहके साथ हुई. इसलिये उसका संपूर्ण ख़र्च महाराणाकी तरफ़से हुआ. विां वाले फिर

विक्रमी १८९३ फाल्गुन कृष्ण ३ [हि० १२५२ ता था, लेकिन् द = .ई० १८३७ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को महाराणाने आबूकी यात्राकेधारनेके लिये से कूच किया, और गोगूंदे होकर पहाड़ी रास्तेसे आबूकी यात्रा कर हुआ सामान ११ को वापस उदयपुरमें आये.

यह ऊपर लिखा हुआ हाल मुल्की रवाज व मामूली बातें दिखल हुतसा गहना, तथा है, वर्नह तवारीख़में दर्ज करनेके क़ाबिल इसमें कोई रियासती २ हाथी, ४ घोड़े नहीं है. सिंहकी तरफ़

इन दिनोंमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीका किसी क़द्र ख़िरा की रहने सरे राजव ससे बाज़ बाज़ लोग, जो महता रामसिंहके तरफ़दार थे, उसको प्रध सज्ज हुए हदह दिलानेकी कोशिशमें लगे, और रामसिंहकी तरफ़से भी एक अर्ज़ी इक़ारना रिपर पेश हुई, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है :- = जय मह ीर

महता रामसिंहकी अर्ज़ीकी
नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

सीधश्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री अनदाताजी हजुर, षानाजाद म्हेता रामसीघ को ध्रथी हाथ लगाऐ मुजरो अरज मालम होये, श्री अनदाताजी ईस्वर छे अप्रच, आगे धणी मने बदगी भलाई, सो मे अरज करी ज्णी प्रमाणे धणी तो प्रवसती करी, पण मारी वे समालसे धणी वदगी मोकुब करी, ने अटक हुई, जदी मारी भोलप से,
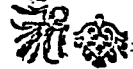
वे अकली से नीसर जावारी सला करी, सो या मे वडी वे अकली करी, धणी तो सारारी वरदास रापे है, तो हु तो धणारो कीयो मनप हु, तो मारी तो रापे ही रापे. अब धणी आगली भोलप सामो तो न्ही देपे, आपरा कीयारी पाल देप, मारी प्रतीत जाण सुनजर रापे, ज्णी में म्हारो नरभाव रहे, अव हु कठे वना मरजी काई सटपट करु, के कणीरी अरजरो पपत रापु, के धणी वना वोर कीने जाणु, तो मने श्री ऐकलीगजी पुहचे, के म्हारा असट भ्रम पुहचे, धणी मारी सला जत्री वना मरजीरी देपे, पकी साच जसी देपे, तो भलाई धणी मरजी हो ज्या सज्या दे, ज्णीरो धणीने दोस न्ही, ने मारी कोई अरज करे जणीने ई श्री ऐकलीगजीरी आण. या अरज मे मारा तन मनसु मालम कराऐ लपी सं० १८९४ साव्रण सद १०.
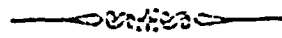
इस इक़ार नामहके साथ ही अंग्रेज़ी ख़िराज बाक़ी रहजानेकी बाबत महता शेरसिंहकी शिकायतें हुईं, लेकिन् महाराणाके दिलपर उन शिकायतोंका कुछ भी असर न हुआ; क्योंकि अव्वल तो अजमेरका जल्सह, और दूसरा तीर्थ यात्राका बड़ा सफ़र, जिनमें लाखों रुपया ख़र्च हुआ था, महता शेरसिंहकी बरिय्यतके लिये काफ़ी सुबूत थे; और शेरसिंह बहुत मुलाइम दिल व दोस्तीका पक्का होनेके कारण उसके बर्ख़िलाफ़ बहुत थोड़े आदमी थे, जब शिकायत होती, तो उसीके साथ सिफ़ारिश भी पहुंच जाती थी; और महता अगरचन्दकी ख़ैरख़्वाहियोंका असर भी महाराणाके दिलसे दूर नहीं हुआ था, इसलिये प्रधानेमें किसी तरहकी तब्दीली न होने पाई.

विक्रमी १८९४ कार्तिक कृष्ण ११ [हि० १२५३ ता० २४ रजब = ई० १८३७ ता० २५ ऑक्टोबर] को इंग्लिस्तानके तख़्तपर क्वीन विक्टोरियाकी मस्नदनशीनीकी ख़बर मिलनेपर जश्नका दर्बार किया गया, और हाथियोंकी लड़ाई तथा २१ तोपोंकी सलामी सर हुई.

विक्रमी १८९५ भाद्रपद शुक्ल ४ [हि० १२५४ ता० ३ जमादियुस्सानी = ई० १८३८ ता० २४ ऑगस्ट] की रात्रिका ज़िक्र है, कि महाराणा महलोंमें पौढ़े हुए थे, यकायक उनके सिर (खोपरी) में ऐसा दर्द मालूम होने लगा, कि मानो किसीने कील ठोकदी हो. इस दर्दका बहुत कुछ इलाज किया गया, परन्तु किसीसे कुछ फ़ायदह न हुआ, दिनपर दिन बढ़ता ही गया; और अख़ीरमें अष्टमीके दिनसे वह यहांतक बढ़ा, कि विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १० बृहस्पतिवार [हि० ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० ता० ३० ऑगस्ट] को महाराणाका परलोक वास होगया. इन नेक मिज़ाज महाराणाके देहान्तका मेवाड़

और राजपूतानहमें अत्यन्त शोक होनेके अलावह हिन्दुस्तानके कई दूसरे हिस्सोंमें भी बहुत कुछ रंज हुआ. नयपालके अमात्य व केटियां (दासी), जो कुछ दिनों पहिले वहांके महाराजाकी तरफ़से गजनायक हाथी वगैरह तुह्फ़े लेकर आये थे, वे भी इस शोकके सागरमें डुबकियां लेने लगे, और चारों ओर जहां देखिये, सिवा हाहाकारके और कुछ नहीं सुनाई देता था.

इन महाराणाका जन्म विक्रमी १८५७ मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० १२१५ ता० १ रजब = .ई० १८०० ता० १८ नोवेम्बर] को हुआ था. यह ३७ वर्ष ९ महीना ८ दिनकी उम्रमें परलोकको सिधारे. इनका मझला क़द, गेहुवां रंग, पुष्ट शरीर, चौड़ा सीना, गहरी और बड़ी डाढ़ी, सुर्ख़ी माइल सियाह और बड़ी आंखें, व बड़ी पेशानी थी, ख़ूबसूरत इस दरजेके थे, कि जिसकी तारीफ़ हरएक आदमीकी ज़बानसे इस वक़्तक जारी है. जैसे कि वह ख़ूबसूरत थे, वैसे ही हंसमुख और शीरीं कलाम भी थे; अलावह इन ख़ूबियोंके उनमें यह भी गुण था, कि अपने पिताकी तरह हरएक आदमीकी पुश्तैनी ख़िद्मतोंको याद करके उसकी पर्वरिश करते, किसी नौकरके मरनेपर उसका वारिस बच्चा रह जाता, तो कहते कि इसके पिता हम हैं, और उसी तरह उसकी पर्वरिश करते; नौकरोंको, ग़लती होने पर भी, बार बार नसीहतके तौरपर समझाते; आम लोगोंपर सख़्ती बिल्कुल नहीं करते थे, और रहम दिली तो गोया उनका एक ख़ास हिस्सह था, जो रियासत भरमें किसीको मुयस्सर न हुआ होगा. सब नौकर उनको इष्टदेवके मुवाफ़िक़ मानते थे. उक्त दोनों अधीशों अर्थात् महाराणा भीमसिंह व जवानसिंहको आजतक लोग ठंडी सांस भरकर याद करते हैं, और प्रातःकालके समय ईश्वरकी जगह उनका नाम लेकर उठते हैं. स्वामी सेवकोंका जैसा सम्बन्ध इनके ज़मानहमें रहा, यक़ीन है, कि उससे बढ़कर कभी न रहा होगा; ऐश, .इश्रत व शिकारकी तरफ़ इनकी तवज्जुह ज़ियादह थी, और रियासती प्रबन्धपर भी ध्यान रखते थे; लेकिन् उनका रियासतके जमा व ख़र्चको अपने हाथमें लेलेनेका विचार पूरा न होसका, मुम्किन था, कि कुछ अर्से बाद यह इरादह पूरा होजाता, परन्तु ईश्वरने उन्हें पहिले ही इस दुन्यासे उठालिया. इनके साथ महाराणी बड़ी भटियाणी, महाराणी बाघेली, पासवान जमुनाबाई, पासवान बाई ऊदां, पासवान बाई डाई, सहेली प्रवीणराय, सहेली हीरां, और सहेली मनभावन, आठ सतियां हुईं.

नयपालका इतिहास.

महाराणा जवानसिंहके समय नयपालके राजाकी तरफ़से कुछ आदमी और स्त्रियां मेवाड़के दर्बारका मर्दानी व ज़नानी ढंग तथा रीति रवाज दर्याफ्त करनेकी ग़रज़से उदयपुरमें आये थे, और उसी समयसे वहांके लोगोंका मेवाड़में आने जाने का सिल्सिलह जारी हुआ, इसलिये यह सम्बन्ध देखकर उक्त रियासतका कुछ थोड़ासा इतिहास इस जगहपर दर्ज कियाजाता है.

नयपालका जुग्राफ़ियह.

नयपालका राज्य हिमालय पर्वतके दर्मियानी हिस्सहके दक्षिणी ढालके किनारे ५१२ मीलकी लम्बाई और १२० मीलकी औसत चौड़ाईमें ८०° ६′ से ८८° १४′ पूर्व देशान्तर और २६° २५′ से ३०° १७′ उत्तर अक्षांशतक फैला हुआ है. इस राज्यके उत्तरमें हिमालय पर्वत और तिब्बत, पूर्वमें मेची नदी व सिकिम, दक्षिणमें हिन्दुस्तान का सूबह अवध तथा बंगालेके ज़िले, और पश्चिममें महाकाली नदी तथा सर्कार अंग्रेज़ी के कमाऊं व रुहेलखण्ड नामके ज़िले वाके हैं. इसका रक़बह ५४००० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमानसे ४० लाख (१) मनुष्योंकी समझी जाती है; क़वाइदी फ़ौजकी तादाद क़रीबन् बीस या बाईस हज़ार (२) है, जिसमेंसे १५००० पन्द्रह हज़ार ख़ास राजधानीमें, १५०० पन्द्रह सौ पाल्पा स्थानमें, ५०० पांच सौ ठाड़ामें, ५०० पांच सौ धनकुटामें, और ४००० चार हज़ार इलाक़हमें मुतफ़र्रक़ मक़ामातपर तईनात है. ख़ालिसहकी सालानह आमदनी १०००००००० एक करोड़ रुपयेके क़रीब और इसीके

(१) डॉक्टर हंटर यहांकी आबादी सिर्फ़ २० लाख लिखते हैं, और नयपाली लोग ५० लाखसे भी अधिक बतलाते हैं, लेकिन् यहांपर जो मूलमें ४० लाख दर्ज की गई है, वह हेन्री एम्ब्रोज़के लेखके अनुसार है.

(२) हेन्री एम्ब्रोज़ सन् १८८० ई० के हालमें लिखते हैं, कि आज कल इस रियासतमें लड़ाईके वक्त काम देनेवाली सेनाकी संख्या ५६५८० है, जिसमें क़वाइदी तोपख़ानह सहित २७११४ सवार व पैदलोंके सिवा २९४६६ हथियार बन्द लोग दूसरे हैं, जिनकी संख्या सिपाहियोंमें नहीं समझी जाती; और ३६ बड़ी तथा ८ कई प्रकारकी छोटी छोटी तोपें हैं; लेकिन् मूलमें जो फ़ौजकी तादाद दर्ज है, वह नयपालके रहनेवाले पंडित टंकनाथके ज़बानी बयानके मुताबिक़ लिखी गई है.

लगभग ख़र्च समझा जाता है. सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से राज्यकी सलामी २१ तोपके अलावह वज़ीरकी सलामी १९ तोप, कमाण्डरइञ्चीफ़की १७, चार कमांडिङ्ग जेनरलोंकी पन्द्रह पन्द्रह तोप, और इनके सिंवा दूसरे जेनरलोंकी भी सलामी १३ से ११ तोपतक है. ये ऊपर लिखे हुए .उहूदेदार वज़ीरोंके ख़ानदानमेंसे होते हैं.

हेनूरी एम्ब्रोज़ अपने बनाये हुए नयपालके इतिहासमें लिखते हैं, कि विक्रमी १८७२ [हि० १२३० = .ई० १८१५] के पहिले नयपालका राज्य बहुत ही बड़ा था, और कमाऊं व सतलज नदीतक कुल पहाड़ी ज़मीन इसमें शामिल थी, लेकिन् डेविड ऑक्टरलोनी साहिबने उन सूबोंको गोरखा लोगोंसे छीन लिया, और विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = .ई० १८१६] में सर्कार अंग्रेज़ी व नयपालके मुल्ककी दर्मियानी सीमा महाकाली नदी क़रार पाई.

देशके कुद्रती हिस्से व सूरत- नयपालके राज्यकी कुल भूमि पहाड़ी और ऊंची नीची है, जगह जगह गहरी घाटियां और ऊंची पहाड़ियां नज़र आती हैं. पहाड़ियोंके भीतर पश्चिममें कमाऊंसे पूर्वकी ओर सिकिमतक नयपालके राज्यको बहुत बड़े और ऊंचे पहाड़, जो नन्ददेवी, धवलगिरि, गुसाईंस्थान और किंचिंजिंगा पहाड़ोंकी ऊंची चोटियोंमेंसे क्रमसे निकले हैं, तीन बड़े कुद्रती हिस्सोंमें तक्सीम करते हैं, जो क़रीब क़रीब चारों ओर पहाड़ोंसे घिरे हुए हैं; इन सब का ढाल दक्षिणकी तरफ़ है, और उनमेंसे पहिला करनाली अर्थात् घाघरा नदीका पहाड़ी खाल, दूसरा बीचका हिस्सह या गंडक नदीका पहाड़ी खाल, और तीसरा पूर्वी हिस्सह अथवा कोशी नदीका पहाड़ी खाल कहलाता है. इन तीन बड़े हिस्सोंके अलावह एक चौथा छोटा हिस्सह अथवा ज़िला अलग है, जिसमें वर्तमान राज्यकी राजधानी है. राज्यके दक्षिणी भागमें पालपा और बटव पहाड़ियोंके नीचे तथा उरेका नदीसे पूर्व मेची नदीके किनारेतक बाहिरी पहाड़ियों व अंग्रेज़ी सर्हदके बीचकी नीची ज़मीन, जिसका विस्तार २०० मीलसे अधिक है, नयपालकी तराई कहलाती है, जहां यूरोप तथा अन्य देशोंके सैर करनेवाले प्रतिष्ठित लोग, जो हिन्दुस्तानकी यात्राको आते हैं, अक्सर शिकारके लिये जाकर वहां क़ियाम करते हैं. तराईके ऊपर अर्थात् उत्तरको, दस दस बारह बारह कोसतक पहाड़ हैं, उन पहाड़ोंको तै करने बाद बड़ी बड़ी लम्बी चौड़ी दूनें मिलती हैं, जिनमें कोसोंतक सिवा मिट्टीके पत्थर नज़र नहीं आता, और उनसे आगे बढ़कर उत्तरकी तरफ़ बर्फ़िस्तानी हिमालय पहाड़ है. पहाड़ियोंके नीचे कहीं कहीं जंगलमें और कहीं कहीं नदियोंके तीरपर, जहां जंगल कटकर खेड़े तथा गांव बसगये हैं, छोटे छोटे

खेत फैले हुए हैं. मोरंगको छोड़कर तराईकी ज़मीन अक्सर अधिक सेराब व उपजाऊ है, जिसमें वालू, काली मिट्टी और चिकनी मिट्टी पाई जाती है; हर क़िस्मका अनाज, ऊख, अफ्यून, और तम्बाकू वग़ैरह चीज़ें इस ज़मीनमें अच्छी तरह पैदा होती हैं.

पहाड़—इस राज्यके उत्तर ओर हिमालय पहाड़ सिलसिलेवार बहुत दूरतक फैला हुआ है, जो नयपाल और चीनी सूबोंके दर्मियान एक क़ुद्रती सीमा है; हिमालय पर्वतके उस भागकी ऊंचाई, जो नयपालकी ओर झुका हुआ है, १६००० फ़ीट से लेकर २८००० फ़ीटतक है; यह हमेशह वर्फ़से ढका रहता है, और जगह जगहसे पानीके झरने जारी रहते हैं; इसकी सबसे ऊंची चोटियों अथवा शिखरोंमेंसे गुसाईंस्थान और मुक्तिनाथ अथवा धवलगिरि पहाड़ तो नयपालकी सीमामें हैं, और नन्ददेवी. तथा किंचिंजिङ्गा कुछ फ़ासिलेपर वाक़े हैं. गुसाईंस्थान और मुक्तिनाथका पहाड़ २४००० फ़ीटसे भी अधिक ऊंचे हैं.

गुसाईंस्थान पहाड़ धवलगिरिसे १८० मील पूर्वकी ओर नयपालकी घाटीके उत्तरमें वाक़े है.

धवलगिरि या मुक्तिनाथका पर्वत नन्ददेवीसे २०० मीलके अनुमान पूर्वकी तरफ़ गोरखपुरके उत्तरमें वाक़े है.

नन्ददेवी नामका पहाड़ नयपालसे सम्बन्ध रखनेवाले हिमालयके भागकी पश्चिमी सीमापर कमाऊंके अंग्रेज़ी सूबेके बीचमें है. इस पर्वतसे वह धारें निकलती हैं, जिनके संयोगसे काली नदी बनी है.

किंचिंजिंगा पर्वत गुसाईंस्थान पहाड़से १३० मील पूर्व दिशामें नयपाली हिमालयकी सबसे पूर्वी चोटी है; यह पहाड़ सिकिम देशके ऊपर और किसी क़द्र नयपालके चन्द पूर्वी सूबोंपर भी झुका हुआ है; इसके दक्षिणी ओरसे निकलने वाली शाखा सिकिम और नयपालके बीचकी सीमाका एक भाग है.

जंगल—यह इलाक़ह पहाड़ी और सेराब होनेके सबब चारों ओर जंगलसे ढका हुआ है, आबादी बहुत कम हिस्सोंमें पाई जाती है, जंगलोंमें जहांपर बर्फ़ गिरता है, देवदारू व निगाला (छोटी गांठों वाला बांसकी क़िस्मका एक वृक्ष) आदि वृक्ष और बर्फ़के नीचे वाले जंगलोंमें साल (साखू), चीढ़, साग, सेमल, चंपा, आम, महुवा, जामुन और कहीं कहीं बड़, पीपल, नीम, खनाया और खसरता (१), बांस, बकायन, सीताफल और भिलामा वग़ैरह बहुतसी क़िस्मके दरख़्त होते हैं. तराई अर्थात् कजलीवनमें, जिसका ज़िक्र पहिले भी होचुका है, साल, शीशम, साग आदि अनेक प्रकारके दरख़्तोंका गुंजान जंगल फैला हुआ है, कहीं कहीं

(१) नयपालके लोग इन दरख़्तों को काटकर गाय, भैंसोंको खिलाते हैं.

नींबू, नारंगी और दो प्रकारके जंवीर (१) भी पाये जाते हैं. जंगली जानवरोंमेंसे ऐसे जानवर वहुत ही कम होंगे, जो इस .इलाक़हके जंगलोंमें न पाये जाते हों. हरिण, थार, सांभर, चीता, सिंह, रीछ, वुवासा (२), ख़रगोश और चीतल वग़ैरह जानवर चारों ओर फिरते दिखाई देते हैं. वर्फ़िस्तानके आस पास कस्तूरिया हरिण, मुश्कबिलाई और नाहर पायेजाते हैं. तराईके जंगलमें हाथी अधिक होनेके अलावह अरना भैंसा, नील गाय, और गौरी गाय वग़ैरह सब तरहके जानवर रहते हैं. गौरी गायके सींगोंसे नयपाली लोग शिवके लिये जलहरी बनाते हैं; यह जानवर मनुष्यको मारनेके लिये बहुत पीछा करता है, यहांतक, कि अगर आदमी दरख़्तपर भी चढ़जावे, तो तीन तीन दिनतक उसी वृक्षके नीचे घूमा करता है. पक्षियोंमें बाज़, बहरी, मैना, पट्टू, चकोर, तीतर, मोर व जंगली मुर्ग़ वग़ैरह जानवर देखनेमें आते हैं, और बर्फ़िस्तानी मक़ामातमें मुहनाल नामका बहुत ख़ूबसूरत और मोरसे कुछ छोटा लाल रंगका एक पक्षी पायाजाता है, जिसके कुल शरीरपर सिफ़ेद व हरे छींटे होते हैं. नयपाली लोग नर पक्षीको 'डांफे' और मादहको 'मुहनाल' नामसे पुकारते हैं.

धातुकी खानें- इस राज्यमें राजधानी काठमांडूसे दस बारह कोसके फ़ासिलेपर इलाक़हमें पश्चिमकी तरफ़ तांबेकी बहुतसी खानें और उत्तर पश्चिम कोणमें क़रीबन् १८ कोस की दूरीपर गंधककी एक खान है. लोहेकी खानें यहां बहुतसी जगह पाई जाती हैं, और राजधानीसे कुछ दूर एक शोरेकी खान तथा .इलाक़हके बाज़ बाज़ स्थानोंमें सीसे, रांगे, हरिताल, और सिंदूरकी खानें भी हैं.

नदियां- महाकाली या सरजू नदी, करनाली या घाघरा नदी, राप्ती, सप्त गंडकी और सप्त कोशी इस राज्यकी प्रसिद्ध नदियां हैं, जिनका मुफ़स्सल हाल मए उनकी सहायक धाराओंके नीचे लिखा जाता है :-

महाकाली या सरजू नदी- यह नदी नन्ददेवी पहाड़के पूर्व तरफ़ बहती हुई पहाड़ियोंके भीतर ९० मीलके क़रीब दक्षिण दिशामें जाती और नयपालके राज्यको सर्कार अंग्रेज़ीके सूबह कमाऊंसे जुदा करती है. यह रेतीले पहाड़की एक घाटीमें होकर मैदानमें

(१) यह फल सूरत, शक्ल व रंगमें नारंगीसे बहुत कुछ मिलता जुलता और स्वादमें उससे बढ़कर होता है.

(२) यह जानवर क़दमें कुत्तेसे किसी क़द्र बड़ा और सूरतमें सूअरके समान होता है, इसके पंजों व पूंछके सिरेपर, याने अख़ीरमें गुच्छेदार बाल होते हैं. इसकी निस्वत कहा जाता है, कि यह हरएक चौपायेके पेटसे आंतें निकालकर उसे मार डालता है, और वही उसकी ख़ुराक है.

पहुंचनेके बाद दक्षिण और पूर्वकी ओर गुज़रती हुई ५० मीलतक नयपाल और अंग्रेज़ी सूबह रुहेलखण्डकी दर्मियानी सीमा क़ाइम करती है, और वहांसे हिन्दुस्तानके सूबह अवधमें दाख़िल होकर घाघरा या करनाली नदीमें शामिल होजाती है.

करनाली या घाघरा नदी - इसका पहिला नाम ख़ासकर उस हिस्सहका है, जो पहाड़ियोंके दर्मियान होकर गुज़रता है, और जब खुले हुए मैदानमें दाख़िल होती है, तो वहां घाघरा नामसे पुकारी जाती है. इसकी सबसे बड़ी शाखा करनाली वर्फ़के पहाड़के उत्तर मानसरोवर झीलके पाससे निकलती है, और तकलखर घाटीमें होकर नयपालके राज्यमें प्रवेश करती है, यहांसे नयपालकी कई छोटी छोटी नदियों और नालोंका पानी लेती हुई पहाड़ियोंके बाहर गुज़रकर चौड़े मैदानोंमें दाख़िल होती है, और वहांपर बहुत छोटे नदी नाले और काली तथा राप्ती नदियों को अपने शामिल लेती हुई दीनापुरसे कुछ ऊपरकी तरफ़ चौड़े पाटसे गंगा नदी के साथ जा मिलती है.

राप्ती नदी - यह धवलगिरि पर्वतके पश्चिमी ढालसे निकलकर करनालीकी ओर आजाती है, और आसपासकी पहाड़ियों व भीतरी पहाड़ी सिलसिलेसे निकली हुई बहुतसी नदियोंको अपने शामिल करती हुई पहाड़ियोंमेंसे गुज़रकर अवधके उत्तर पूर्व कोणको पार करती और वहांसे गोरखपुरके ज़िलेमें होकर घाघरा नदीसे जा मिलती है.

गंडक नदी - जो सप्त गंडकीके नामसे भी प्रसिद्ध है, हिमालय पहाड़से निकल-कर रियासत नयपालके मध्य भागमें बहती है, और १ - बरीगर, २ - नारायणी या शालिग्रामी, ३ - श्वेत गंडकी, ४ - मरस्यंगदी, ५ - दर्मदी, ६ - गंडी, और ७ - त्रिशूल गंगा नामकी सात नदियोंको साथ लेती हुई, जो वर्फ़ या आस पासकी पहाड़ियोंके मुतफ़र्रिक़ मक़ामातसे निकलकर मैदानकी तरफ़ आती हुई एक दूसरीके निकट चली आती हैं, और जिनसे इसका नाम सप्त गंडकी मश्हूर है, गंडक घाटीमें होकर पहा-ड़ियोंसे बाहिर निकलती है, और यहांसे पूर्व तथा दक्षिणकी तरफ़ बहकर सारनके अंग्रेज़ी सूबहमें बहती हुई पटना नगरके साम्हने हरिहर क्षेत्रमें गंगाके शामिल होजाती है. इस नदीकी शाखाओंमेंसे बरीगर नदी धवलगिरि पर्वतके पूर्वी ढालसे निकलकर दक्षिण और पूर्वकी तरफ़ सूबह खांची और इसके दक्षिण ओर गुल्मीके ज़िलेको सूबह मलीबूसे जुदा करती हुई नारायणी नदीमें जा मिलती है. नारायणी नदी धवलगिरि पहाड़में कई धाराओंसे निकलती है, जिनमें मुख्य और सबसे बड़ी सहायक धारा या तो मुक्तिनाथपर अथवा इससे कुछ दूर उत्तरकी ओर मुस्तांको जानेवाली

सड़कपर निकलती है, इस नदीको शालिग्रामी इस कारण कहाजाता है, कि इसके पेटमें और ख़ासकर उस स्थानके पास जहांसे, वह निकली है, शालिग्रामकी मूर्तियां अर्थात् छोटे छोटे गोल क़ीमती पवित्र पत्थरके टुकड़े पाये जाते हैं; इस नदीका बालू धोनेसे कुछ सोना भी निकलता है. ये दोनों नदियां मिलकर काली गंडकके नामसे दक्षिण तथा पूर्वकी तरफ़ बहती हुई पाल्पा सूबहकी दक्षिणी सीमा क़ाइम करती हैं, और इसको गढ़-हून ज़िलेसे जुदा करती हुई चितवनकी घाटीतक पहुंचकर देवघाटपर दूसरी गंडकोंके संगमसे जा मिलती है. श्वेत अथवा सेती गंडकी नदी मुस्तां घाटीके पूर्व तरफ़ मछिया पूंछर (मछलीकी पूंछ) नामी पहाड़के बर्फ़से निकलती है, और ठीक दक्षिणमें बहती हुई देवघाटके निकट कैफ़ुलघाटपर त्रिशूल गंगासे मिलजाती है. मरस्यंगदी नदी बर्फ़िस्तानी पहाड़के रुईभोट डूंगरमें लमजुंके उत्तर और गोरखाके पश्चिमोत्तर लक्वाबसियारी स्थानसे निकलकर दक्षिणकी ओर श्वेत गंगा नदीके बराबर बहती और गोरखा सूबहकी पश्चिमी हद क़ाइम करती हुई देवघाटके निकट त्रिशूल गंगासे जा मिलती है. दर्मदी नदी टाकू पहाड़पर माला पर्वतके पश्चिम और गोरखाके उत्तर बर्फ़मेंसे निकलकर, और दक्षिणकी तरफ़ गोरखा सूबहमें बहने बाद धरबङ्ग घाटपर गंडी नदीसे मिलजाती है. गंडी नदी माला नामी पहाड़से निकलकर गोरखा सूबहमें गुज़रतीहुई दर्मदी नदीसे मिलने बाद त्रिशूल गंगामें मिलती है, और त्रिशूल गंगा, जो गंडककी शाखाओंमेंसे सबसे पूर्वी है, गुसाईंस्थान पर्वतके बहुत ऊंचे शिखरोंके नीचे वाली एक घाटीके बाईस झील या कुंडोंमें सबसे बड़े झीलसे निकल कर पश्चिम और दक्षिणकी तरफ़ बहने बाद नयपालसे गोरखा सूबह और लमजुंव तनहुं ज़िलोंको अलग करती है. इस नदीका भी बालू धोकर सोना निकालते हैं; इसमें रसूआ नामकी एक नदी शामिल हुई है, जो केरुं घाटीके पाससे निकलती है, रमचा स्थानके नीचे यह बड़ी गंडकसे जा मिली है, और उस शहरसे ३ या ४ मील नीचे हटकर तादी या सूरजवती नदी इसमें गिरती है, जो त्रिशूल गंगाके निकाससे २ या ३ मीलकी दूरीपर गुसाईंस्थानकी बाईस झीलोंमेंसे सूर्यकुण्ड नामके सबसे पूर्वी झीलसे निकली है. तादी नदी पहिले कुछ कुछ पूर्वकी ओर बहती है, और बाद इसके पश्चिमको फिरकर जिबजिबियाके दक्षिणी आधारको तर करती और अपनी मददगार लिखू तथा सिंदूरिया नदियोंको साथ लेती हुई नुवाकोटकी घाटीमेंसे गुज़रकर देवीघाट मक़ामपर त्रिशूल गंगासे जा मिलती है. तादी और त्रिशूल गंगाके संगमसे ३ या ४ मीलके फ़ासिलेपर एक लकड़ीका पुल त्रिशूलीपर बना है, जिसपर होकर काठमांडूसे गोरखाको सड़क गई है; इस पुलपर रियासतकी तरफ़से सिपाहियोंका पहरा रहता है, जबतक कि कोई मुसाफ़िर गोरखाका हो अथवा

नयपालका हो, राज्यसे पर्वानह हासिल न करले, इसको पार नहीं कर सक्ता. वर्सातके मौसममें त्रिशूली तथा तादीका पानी बहुत जल्द बढ़ता और बड़े वेगसे बहता है, यहांतक, कि बड़े बड़े पत्थर और चटानोंके टुकड़े उसके साथ देवीघाटतक टकराते हुए बहकर चले आते हैं.

ऊपर बयान की हुई नदियोंके अलावह और भी कई छोटी पहाड़ी नदियां गंडक नदीमें मिलती हैं, जिनमेंसे राप्ती नदी, जो भीमफेदीके पाससे निकलकर हथवाराके पास और चितवनकी घाटीमें होती हुई पश्चिमकी तरफ़ सोमेश्वर पहाड़से १५ मील उत्तर गंडक नदी में गिरती है, अधिक प्रसिद्ध है.

सप्त कोशी नदी- यह नदी नयपालके उस पहाड़ी भागसे निकली है, जो हिमालय पर्वतके ऐवरेस्ट नामी शिखरके पश्चिममें वाके है. इसमें उन सात मुख्य नदियों अर्थात् मिलम्ची, भोटे कोशी, तांबा कोशी, लिखू, दूध कोशी, अरुण और तमोर के सिवा, जिनके मिलनेसे इस नदीका नाम सप्त कोशी रक्खा गया है, कई छोटी नदियां और भी गिरती हैं. ऊपर लिखी हुई तमाम नदियां बर्फ़िस्तानी पहाड़ोंसे निकलकर पहाड़ियोंके दर्मियान एक दूसरीके बराबर बहती हुई नीचेकी तरफ़ बाराह क्षेत्र स्थानके पास आपसमें मिलजाती हैं, जहांसे इन सबका पानी एक बड़ी नदी बनकर मैदानमें दाख़िल होता है. पहाड़ियोंके बाहिर निकलने बाद कोशी नदी अपने दाहिने किनारेकी तराईको बाएं किनारे परके मोरंग नामी नयपाली सूबहसे जुदा करती, और बाद उसके इलाक़ह अंग्रेज़ीमें दाख़िल होकर पुर्निया ज़िलेमें बहती हुई बगलीपुरके कुछ नीचे तथा राजमहल पहाड़ियोंके पूर्वोत्तरी कोणके साम्हने गंगा नदीमें गिरती है. मिलम्ची नदी गुसाईंस्थान पर्वतके पूर्व तरफ़ जिवजिवियासे निकलती और पहाड़ियों तथा घाटियोंमें बहती हुई दौलतघाट मक़ामपर भोटे कोशीसे संगम करती है. भोटे कोशी नदी तिब्बतमें टिंगरी मैदानसे निकलकर एक घाटी में बहने बाद मिलम्चीसे जा मिलती है, और वहांसे दोनों एकत्र होकर सुन् कोशी नामसे बाराह क्षेत्र घाटपर अरुण और तमोरके संगमसे मिलजाती हैं. तांबा कोशी, लिखू और दूध कोशी, ये तीनों कुती और हथिया घाटियोंके दर्मियानी बर्फ़के पर्वतसे निकलती और दक्षिण पश्चिमकी तरफ़ एक दूसरीसे समानान्तर रेखापर बहती हुई सुन् कोशी नदीमें दाख़िल होती हैं, जो इसी तरहपर ज़िलेकी पांच नदियोंका पानी लेती हुई कोशीमें जा मिलती है. अरुण नदी सप्त कोशीकी सबसे बड़ी सहायक नदी है. इसके कई निकास हैं, जिनमेंसे चन्द बर्फ़िस्तानी पहाड़के उत्तरी अथवा तिब्बतकी तरफ़ और चन्द दक्षिणकी तरफ़ हैं, परन्तु मुख्य निकास भोटे कोशीके

निकाससे निकट ही है, जहांसे यह निकलकर हथिया घाटीमें होती हुई नयपालमें प्रवेश करती है, और .इलाक़हकी कई छोटी नदियोंका पानी लेकर मैदानमें दाख़िल होनेसे पहिले बीजापुर नगरसे २० मील पश्चिमोत्तर कोणपर वाराह क्षेत्र घाटके पास सुनू कोशीसे जा मिलती है. तमोर नदी, किंचिंजिंगा पहाड़के पश्चिमी ढाल तथा सींगीलैला पहाड़से निकलती, और दक्षिण पश्चिम तरफ़ वहकर वाराह क्षेत्र घाटपर अरुण व कोशी नदियोंमें जा गिरती है.

झील या तालाव—नयपालके राज्यमें मुख्य तीन झील हैं, जो काठमांडूसे ४६ कोस पश्चिम पोखरा नामी क़स्वहके आसपास दो दो तीन तीन कोसके फ़ासिलेपर एक ही जगह हैं, जिनमें सबसे बड़ा फेवा ताल है, जिसका घेरा अनुमान तीन कोस के समझा जाता है, और दूसरे दो भी इसीके लगभग अथवा कुछ कम लम्बे चौड़े हैं; इनके सिवा और कोई कुद्रती झील या बांधा हुआ प्रसिद्ध ताल नहीं है. क़रीब क़रीब कुल मुल्क पहाड़ी और बर्फ़िस्तानी होनेके सबब झरनोंके छोटे छोटे कुंड अल्बत्तह हरएक जगह कस्रतसे दिखाई देते हैं.

आब हवा व बारिश—पहाड़ी आब हवा यहांकी अच्छी है, और ख़ासकर उन स्थानों की, जहां वर्फ़ गिरता है; वहांके रहनेवाले लोग बहुत कम बीमार होते हैं, बल्कि अन्तकाल के समयसे पहिले बीमार ही नहीं होते; पहाड़ोंके बीच बीच व्यासी (खोल या खादरे) में, जहांपर चावल वग़ैरह पैदा होते हैं, आब हवा बिल्कुल ख़राब है. इस जगह "अवल" नामक एक प्रकारका बुख़ार इस कस्रतसे होता है, कि अगर मनुष्य एक रात भी वहां रहजावे, तो बुख़ार ज़रूर उसको लिपट जाता है. कहते हैं, कि इस ज्वरका रोगी या तो पांच दस रोज़में मर ही जाता है, या छः महीनेसे तीन वर्ष तक बराबर कष्ट भोगता है; यह बीमारी आठ महीने, याने चैत्रसे कार्तिकतक बड़े ज़ोर शोरके साथ रहती है, केवल चार महीनेके लिये लोगोंको आराम लेने देती है.

नयपालके चितवन नाम एक स्थान (जंगल) में यह बुख़ार अपना इसक़द्र ज़हरीला असर करता है, कि गत समयमें यदि नयपालके राज्यमें किसी अपराधीको मौतकी सज़ा देना होता, तो उस मनुष्यको उक्त जंगलमें लेजाकर दही व चिवड़ा खिलाने बाद वृक्षोंके हरे पत्तोंपर सुलाकर ऊपरसे पत्ते ढक देते थे; थोड़ी देर बाद उस बुख़ार (अवल) का अपराधीके शरीरपर ऐसा तेज़ असर होता था, कि मानो हुक्म होते ही जल्लादने काम तमाम किया हो, एक ही रातमें मनुष्य मरजाता था; परन्तु यह रवाज हालमें बन्द है. तराईके बाशिन्दे थारू (किसान जाति) इस रोगके मारे एक बुरी शक्लके

और हमेशह बीमार रहते हैं, उनके हाथ पैर पतले और पेट बड़ा होजाता है, आंखें और बदन बिल्कुल ज़र्द दिखाई देने लगता है. इसी ज्वरके भयसे ब्यासी (खादरों) में तो चावल आदि की खेती करनेके अलावह कोई शख़्स दिन या रातको वहां नहीं रहता; इस बीमारीका हमलह नींदकी हालतमें एक दम होता है, इस कारण ऐसे स्थानोंमें किसान लोग भी रातको नहीं रहते. सप्त कोशी व सप्त गंडकी नामी नदियोंकी धाराओंके किनारे चालीस पचास क़दमके फ़ासिलेतक तो सोने बैठनेमें कुछ हर्ज नहीं, क्योंकि वहांपर इस ज्वरका असर नहीं होता. नयपाल राज्यके सब स्थानों (ब्यासी) में पहाड़ोंकी ऊंचाईपर पाव कोसतक अवल अपना पूरा पूरा असर करता है, जहां सर्दीके दिनोंमें पहरभर दिन चढ़ेतक सूर्य नहीं दीख पड़ता, केवल धुंध छाया रहता है. वर्फ़के स्थानोंमें सदैव थोड़ी बहुत वर्षा होती रहती है, बाक़ी मक़ामातपर वर्षा ऋतुमें मेह खूब बरसता है, और वैशाख महीनेमें भी अवश्य एक दो बार पानी अच्छा होजाता है, बल्कि यों कहना चाहिये, कि आश्विन महीनेसे पौषके अख़ीरतक केवल चार मास छोड़कर बाक़ी आठ महीनोंमें थोड़ा बहुत पानी बराबर बरसता रहता है, और यही कारण वहांपर अकाल कम पड़नेका है. नयपालकी तराईमें वर्षा ऋतुमें मामूली तौरपर पानी बरसता है. इस मुल्कके पहाड़ी ग्रामोंमें कुएं नहीं हैं, वहांके निवासी झरनोंसे काम चलाते हैं, अल्बत्तह नयपालके बड़े शहरों काठमांडू, भदगांव व पाटण आदिमें अक्सर हरएक शख़्सके घरमें इंदार (कुएं) हैं, जिनमें ज़ियादहसे ज़ियादह दस हाथकी गहराईपर पानी पाया जाता है.

पैदावार- यहांकी मुख्य पैदावारी चीज़ें चावल, मक्का, कोदूं, उड़द, मूंग, चवला, कुछ कम जवार, गेहूं, जव, तिल, कपास, दो प्रकारका मटर, तीन चार प्रकारका सांठा (ऊख), और आलू, पिंडालू, मूली, बैंगन, खुरसानी (लाल मिर्च), धनिया, हल्दी, अजवाइन, सौंठ, बड़ी इलायची, सरसों, राई, पाट (सण), पियाज़ व लहसुन, वग़ैरह कुल चीज़ें थोड़ी बहुत होती हैं. तराईमें चना, मसूर, अरहड़, तम्बाकू, अफ़्यून और किसीक़द्र कुसुम भी पैदा होता है. भंग, गांझा, और चरस कस्रतसे निपजता है.

ज़ात और फ़िर्क़े- इस देशमें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ जातियोंके मनुष्य रहते हैं:-

ब्राह्मण- पूर्विया और कुर्मांचली ब्राह्मणोंके सिवा, जो अस्लमें कान्यकुब्ज हैं, नयपालमें चन्द महाराष्ट्र और मैथिल ब्राह्मण भी रहते हैं. जैसी (गोलक) जातिके ब्राह्मण, जो इस देशमें विशेष पायेजाते हैं, अस्लमें ब्राह्मण नहीं हैं, बल्कि वह एक दोगली नस्ल है, अर्थात् पतिके मरजाने बाद जब कोई विधवा ब्राह्मणी किसी दूसरे ब्राह्मणसे

संगम करती है, और उससे जो सन्तान उत्पन्न होती है, वह जैसी (गोलक) कहलाती है.

क्षत्रियोंमेंसे, जिनको नयपालके देशमें ठकुरी कहते हैं, सिंह, साही, मल्ल, शेन और चन आदि जातियोंके लोग पहाड़ी और वहांके प्राचीन बाशिन्दे तथा उत्तम राजपूत समझेजाते हैं. इनके सिवा हमाल नामकी एक और जाति है, जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण जातिके पुरुष और क्षत्री जातिकी कन्यासे बतलाते हैं. इन सबके आपसमें सम्बन्ध होते हैं.

खस भी एक प्रकारके क्षत्री हैं, ये लोग पांडे, थापा, बोहरा, पन्थ, बस्न्यात, कारकी, विष्ट, अधिकारी, बानिया, घरती, कंवर, भंडारी, और मांझी आदि पदसे पुकारेजाते हैं, इन सबके आपसमें विवाह शादी होते हैं. जो सन्तान ब्राह्मण पुरुष और दूसरे किसी अन्य वर्णकी स्त्रीसे उत्पन्न होती है, वह यहांपर खत्री जातिके नामसे प्रसिद्ध है. तीन पीढ़ीतक खत्रियोंका विवाह सम्बन्ध खत्रियोंमें ही होता है, और इसके बाद वे खसोंमें मिलजाते हैं.

सिपाहगरीका पेशह इस राज्यमें मुख्य सात जातिके लोग करते हैं, अर्थात् ठकुरी, खस, मगर, आगरी, गुरुं, लिम्बू, और किरांती. भाट, सन्यासी, जोगी कंवर, खवास, चेपांग और लामा जातिके लोगोंके हाथका जल ब्राह्मणतक पीलेते हैं. सारकी, कामी, दमाई और गांयने जातिके लोग ओछी क़ौममें समझे जाते हैं, इनके हाथका जल उच्च जातिवाले नहीं पीते. ये ऊपर लिखी जातिवाले पर्वते कहलाते हैं.

नेवार-नेवारोंमें दो फ़िर्क़े हैं- १-शिवमार्गी, और २- बौद्धमार्गी; इन दोनोंमें परस्पर बेटी व्यवहार नहीं होता, और जो श्रेष्ठ समझे जाते हैं, उनके यहांका जल ब्राह्मण आदि लोग पीते हैं. शिवमार्गी नेवारोंमें श्रेष्ठ, जोसी, और आचार्य नामकी तीन जातियां हैं. ये लोग पूजा, महाजनी व्यापार, मुन्शीगरी और वैद्यका काम करते हैं.

बौद्धमार्गियोंमें बांड़ा, और उदास शामिल हैं, उनका पेशह महाजनी व्यापार, दस्तकारी तथा हिसाबी काम है. इन लोगोंमें जब कोई मर्द या औरत मरती है, तो उसे मरनेसे कुछ काल पहिले सबसे ऊंचे मकानमें लेजाते हैं, और जब वह मरजाता है, तो उसके कुटुम्ब तथा रिश्तहके लोग शामिल होकर दो तीन दिनतक मुर्देके आगे बाजा बजाते, और पूजन तथा भोजन करते हैं. तीन दिन बाद मुर्देको एक खट (विमान) पर कपड़े पहिनाकर बिठा देते हैं, और पूजा करके बाजा बजाते, दीप धूप देते, और पाठ करते हुए उसको श्मशानमें लेजाकर ज़लादेते हैं. सातवें दिन ऊपर लिखी हुई रीतिसे भात देते, और अपने जातिवालोंको भोजन कराते हैं; इसी दिन उनके यहां सूतकसे शुद्धि होना माना जाता

है. नीची जातिके नेवार, पुतुवार, ज्यापू, सालमी और नाऊ (नाई) हैं, जिनके हाथका पानी सब लोग पीते हैं. क़साई, कुशल्ये और कूलू कनिष्ठ जातिके नेवार हैं, जिनमेंसे क़साईका काम मांस बेचना, कुशल्येका काम देवालयोंमें बाजा बजाना तथा कपड़ा सीना, और कूलूका पेशह ढोल, डफ़ आदि बाजोंपर खाल मंढ़ने का है. सबसे नीच जातिके नेवार, जिनसे दूसरी जातियोंके लोग स्पर्श नहीं करते, पोढ़े और च्यामाखलक हैं. इनमेंसे पहिली जातिवाले जल्लाद और श्मशानके चांडालका काम करते हैं, और दूसरी जातिका पेशह भंगीका कर्म है.

ऊपर लिखी जातियोंके सिवा पहाड़ी, कुम्हाले (कुम्हार), दनुवार, मांझी, ब्राह्मू, दर्री, मुरमी, कुसुंडा (भिल्ल), मुसलमान, धोबी और कई पेशहवाले लोग आबाद हैं.

भिल्लोंकी बाबत कहा जाता है, कि ये लोग हमेशह जंगलमें रहते और जंगली जानवरों तथा कन्द मूल आदिपर अपना निर्वाह करते हैं, वे गांवोंमें बहुत कम आते हैं, और सात दिनसे ज़ियादह एक जगह नहीं रहते.

हेनूरी एम्ब्रोज़ अपनी पुस्तकमें लिखते हैं, कि नयपालके नेवार लोगोंमें एक तिहाई हिस्सह तो शिवकी पूजा करनेवाला और बाक़ी, याने दो तिहाई, बौद्ध मज़्हब को माननेवाला है, अर्थात् इस देशमें ज़ियादह तर बौद्ध मज़्हब माना जाता है. शिवमार्गी नेवारोंमें उक्त साहिबके बयानके मुवाफ़िक़ नीचे लिखे हुए चौदह भेद हैं:-

१- उपाध्याय पुजारी, अर्थात् सबसे ऊंची जातिके ब्राह्मण, जिनको तलेजूके मन्दिरमें जानेका अधिकार है; २- लवरजू, यह भी ब्राह्मण और पुजारी हैं, परन्तु उपाध्यायसे उतरते हुए समझे जाते हैं; ३- देवभाजू ब्राह्मण, जो वहांके लोगोंको बीमारीकी हालतमें आत्मा सम्बन्धी शिक्षा करते हैं, लेकिन् वह वैद्यका कार्य नहीं करते, अर्थात् औषधि नहीं देते.

४- थकूजू या मल्ल, क्षत्री जो वहांके अस्ली राजाओंकी जातिके हैं; उनमेंसे अक्सर लोग पहिले पल्टनोंमें सिपाहगरी करते थे, लेकिन् वे सौदागरी और दूसरे लोगोंकी नौकरी कभी नहीं करते; ५- निक्खू क्षत्री, जो चन्द धर्म सम्बन्धी लीलाओंकी चित्रकारी करते और देवताओंकी मूर्तियोंको रंगते हैं, लेकिन् वे आम दरजहके चित्रकार नहीं हैं; ६- शियाग़ू क्षत्री, और ७- शरिस्ता क्षत्री, जो पल्टनोंमें सिपाहगरीकी नौकरी करते थे. इन सब जातियोंमें परस्पर भोजन व्यवहार तथा बेटी व्यवहार होता है.

८- जोशी वैश्य, जो न ब्राह्मण हैं और न पुजारी, उनका काम शास्त्र समझानेका है; ९- आचार्य वैश्य, जिनका कार्य काठमांडू और भदगांवके तलेजू के मन्दिरोंमें पूजन करना है, लेकिन् ये ब्राह्मण नहीं हैं; १०- भन्नी वैश्य, जो तलेजूके मन्दिरोंमें देवताओंके लिये नैवेद्य तय्यार करते हैं; ११- गावक आचार्य वैश्य, जो केवल छोटे मन्दिरोंके पुजारी हैं, वे ऐसे मन्दिरोंमें श्राद्ध इत्यादि कर्मोंके सर्बराहकार होते हैं, लेकिन् मुख्य श्राद्ध कर्मोंसे हक़ीक़तमें कुछ सम्बन्ध नहीं रखते.

१२- मांखी शूद्र, आम दरजेके रसोईदार, अर्थात् खाना पकाने और खिलाने वाले लोग हैं; १३- लखिपर शूद्र, ये भी मांखियोंसे मिलते हुए, लेकिन् उनसे कुछ घट कर हैं, इनका काम घरेलू नौकरी है, उत्तम जातिके कुल हिन्दू लोग इनके हाथका छुआ हुआ खाना खाते हैं; और १४- वाघोशा शूद्र, जो रसोईका काम छोड़कर कुल आम काम करने वाले नौकर हैं.

ऊपर लिखे हुए १४ जातिके हिन्दू आपसमें एकठा नहीं खाते, और न इनमें परस्पर बेटी व्यवहार होता है, कुल १४ जातियोंमें पहिली ३ ब्राह्मण, ४ क्षत्री, ४ वैश्य और अख़ीरकी ३ शूद्र समझी जाती हैं.

बौद्धमार्गी नेवारोंके तीन बड़े दरजे, याने १- सच्चे बंध्य या बंघड़, २- सच्चे बौद्ध, जो उदास भी कहलाते हैं, और ३- वे लोग, जो बौद्ध और शिव दोनोंको मानते हैं. इन तीनों जातियोंमें प्रथक प्रथक कई उपजाति अथवा भेद हैं, और हरएकका ख़ास पेशह है.

सच्चे बंध्य या बंघड़ोंकी ९ उपजाति हैं- १- घूगरजू, जिनमें सबसे ऊंचे दरजहके पुजारी, अर्थात् वज्राचार्य (बौद्ध मन्दिरोंके पुजारी) होते हैं; लेकिन् ये लोग केवल पूजा करनेके वास्ते ही बद्ध नहीं हैं, बल्कि इनमेंसे जो कम लिखे पढ़े हैं, वे खेती, नौकरी और दस्त-कारीका पेशह करते हैं, २- बर्हजू, ३- बिक्खू, ४- भिक्षु (१); और ५- नेभर. पिछली चारों जातिके लोग सुनारका काम करते हैं. ६- निभर भरही, जिनका पेशह पीतल और लोहेके बर्तन, देवताओंकी धातुकी मूर्तियां बनाना और बर्तनोंपर क़लई करना है; ७- टकरमी, अर्थात् भरावे, जो लोहे पीतल या दूसरे धातुकी तोपें और बन्दूक़ें बनाते हैं; ८- गंगस भरही और ९- चिवर भरही; इन दोनों जातिके लोग खाती और सिलावट, याने मकानों वगैरहपर चूना और आराइश लगानेका काम करते हैं.

ऊपर लिखे हुए ९- जातिके बंघड़ आपसमें विवाह शादी करते और एक दूसरे के साथ खाते पीते हैं.

(१) इनका मुख्य ख़ानदानी पेशह सोने चांदीका काम बनाना है, लेकिन् छोटे दरजे वाले लोग पुजारीका काम भी करते हैं.

सच्चे बौद्धोंमें ७ भेद हैं– १– उदास, याने महाजन (१) और विदेशी सौदागर, जो ख़ासकर तिब्बत तथा भूटानमें सौदागरी करते हैं; २– कसारे या ठठेरे; ३– लोहार कर्मी, अर्थात् संगतराश, जो पत्थरकी मूर्तियां, मन्दिर व मकानात बनाते हैं; ४– शिकर्मी या बढ़ई; ५– थम्वत– पीतल, तांबा और जस्तेके बर्तन वग़ैरह बनानेवाले; ६– अवाल, याने खपरेल (केलू) बनानेवाले; ७– मधकर्मी, रोटी बनानेवाले. ये सातों जातिवाले आपसमें खाते पीते और शादी विवाह करते हैं, बंधड़ लोगोंके हाथका ये सब खालेते हैं, लेकिन् बंघड़ोंको इनके हाथके बनाये हुए भोजनसे पर्हेज़ है, और वे इनके साथ सम्बन्ध भी नहीं रखते.

छोटे दरजहके बौद्ध, जो आम तौरपर शिव और बौद्ध दोनोंको पूजते हैं, उन में नीचे लिखे हुए ३८ फ़िर्क़े हैं:–

१– मू, अर्थात् एक प्रकारके माली; २– डूंगल, याने ज़मीन नापने वाले; ३– ज्यापू (किसान); ४– कुम्हार; ५– करवुझा (मृत कर्मोंमें बाजा बजाने वाले); और ६– वोनी याने खेत जोतने वाले.

ऊपर लिखी हुई ६ जातियोंमेंसे हरएक जातिवाले थोड़ी बहुत खेतीबाड़ी अवश्य करते, और आपसमें भोजन तथा बेटी व्यवहार रखते हैं.

७– चित्रकार; ८– भट्ट, अर्थात् ऊनी कपड़ोंपर रंगत करनेवाले; ९– छीपा; १०– कव्वा या नकर्मी, अर्थात् तलवार छुरी आदि लोहेके हथियार बनानेवाले; ११– नाई; १२– सालमी (तेली); १३– टिप्या, याने शाक भाजी बोनेवाले; १४– पुलपुल, जो मृत कर्मोंमें मशुअ्‌ल जलाते हैं; १५– कौसा (शीतलाका टीका लगानेवाले); १६– कोनार (केवल चरखा बनानेवाले खाती); १७– गढठो (माली); १८– कठार (जर्राह); १९– ताती (कफ़नके वास्ते कपड़ोंमें रूई भरने वाले); २०– बलहेजी, और २१– यूगवार. ये दोनों एक प्रकारके खाती हैं; २२– वाल्ला; २३– लांमू (पालकी उठानेवाले कहार); २४– दल्ली, एक प्रकारके सिपाही; २५– पीही टोकरी (गांछे); २६– गौवा; २७– नन्द-गोवा; ये दोनों चर्वाहे हैं, और आपसमें भोजन तथा बेटी व्यवहार रखते हैं; २८– बल्लहमी, लकड़ी काटनेवाले; २९– गवकव, और ३०– नल्ली. ये तीस प्रकारके बौद्ध अगर्चि बंघड़ों और सच्चे बौद्धोंसे घटकर हैं, तोभी उत्तम समझेजाते हैं, और प्रत्येक हिन्दू इनके हाथका जल पीलेता है.

---

(१) बनियोंकी इस देशमें कोई ख़ास क़ौम नहीं है, जो कोई व्यापारका पेशह करता है, उसीको महाजन कहते हैं,

नीचे लिखे हुए ८ प्रकारके मिलेहुए नेवार सबसे नीची जातिके समझेजाते हैं, अर्थात् उनके हाथका जल कोई हिन्दू नहीं पीता:-

३१-क़साई, जिनको वहांके लोग नय्या कहते हैं; ३२-जोगी, और ३३- धूंत नेवार (त्यवहारोंमें वाजा वजानेवाले); ३४- धैवी, याने लकड़ी काटने और कोयला बनानेवाले; ३५- कूलू (चमड़ेका काम बनानेवाले); ३६- पूरिया, जिनका पेशह मछली पकड़ना और जल्लादका काम है; ३७- च्यामाखलक (भंगी); और ३८- संघर (धोबी).

ऊपर लिखी हुई ज़ातोंमें, सिवा महाराष्ट्र ब्राह्मणोंके, जो वहांके अस्ली बाशिन्दे नहीं हैं, बरन थोड़े अरसहसे नयपाल देशमें जाबसे हैं, कुल जातियोंके मनुष्य मांस खाते हैं, परन्तु ब्राह्मण और क्षत्री आदि उच्च क़ौमोंमें मद्यपान बिल्कुल नहीं होता, और नेवार लोग मांस व मदिरा, दोनों वस्तु खाते पीते हैं; उनमें भैंसेका मांस खानेका भी रवाज है. नयपालके राज्यमें सन्यासी, कुशल्या और जोगी कंवर लोगों के सिवा, जिनके मुर्दे गाड़ेजाते हैं, बाक़ी कुल शिवमार्गी अथवा बौद्धमार्गी ज़ातोंमें मुर्दह ज़लायाजाता है.

ब्राह्मण, क्षत्री आदि पहाड़ी क़ौमोंमें जन्मसे मरण तककी कुल रस्में शास्त्रोक्त विधिसे होती हैं, लेकिन् हिन्दुस्तानियों और उन लोगोंकी रस्मोंमें बहुत कुछ भेद रहता है. इन लोगोंमें विवाहके समय जब दूल्हा दुलहिनके दर्वाज़ेपर पहुंचता है, तो उसका श्वसुर, साले, और नज़्दीकी रिश्तहदार आदि लोग कलस बंधाकर दूल्हेकी आरती करते हैं, और अक्षत, रोली, दही और ताज़ह मछलीको दूल्हा व बरातियोंपर डाल देते हैं. इन जातियोंमेंसे जब किसीके यहां मृत्यु होजाती है, और उसकी पुछारी (मातमपुर्सी) को कोई रिश्तहदार जाता है, तो अपने घरसे एक पाथी (१) चावल और उसीके अनुमानसे घी, खांड और कुछ अदरख लेजाता है; और नेवारोंमें ऐसे अवसरपर मिठाई लेजानेका दस्तूर है. नेवारोंकी श्रेष्ठ, ज़ोसी और आचार्य आदि कुल क़ौमोंमें विवाहकी एक अनोखी रीति है, जो यह है, कि दूल्हा विवाह करनेके लिये दुलहिनके घर नहीं जाता, केवल उसके रिश्तहदार और बराती लोग ही कन्याको उसके घरसे लेआते हैं. जब दुलहिन दूल्हेके घर पहुंचती है, तो उसकी सास व ननद अपनी रीतिके अनुसार उसको दर्वाज़हसे घरमें लेजाती हैं; इसके बाद चन्द महीनोंतक इस उत्सवकी खुशी और खाना वग़ैरह होता रहता है. इन लोगोंमें

(१) यह तोलमें क़रीब चार सेरके होता है.

स्त्री विधवा कभी नहीं होती, क्योंकि शुरूमें वह एक वृक्षके फलके साथ, जिसको बीला कहते हैं, व्याही जाती है; और पुनरविवाहका भी इस क़ौममें रवाज है. दनुवार जातिमें, जिसका बयान ऊपर होचुका है, सगाई सम्बन्ध अजीब तौरपर होता है, याने शुरूमें जब बेटेवाला कन्याके घर सम्बन्ध करनेकी ग़रज़से जाता है, और कन्यावालेको सम्बन्धके लिये कहता है, तो वह उसे उसके साथियों सहित बहुतसी गालियां देकर घरसे बाहिर निकाल देता है. जब वे दूसरी बार आते हैं, तो उनको बेपर्वाईके साथ घरके किसी स्थानमें बैठनेकी इजाज़त देता है, और जब तीसरी बार आते हैं, तो उन्हें आदर सन्मानके साथ भोजन कराता है, और तब वह सम्बन्ध पक्का माना जाता है. यदि कन्याका पिता लड़के वालेको शुरूमें जाते ही आदर सत्कारके साथ भोजन करादे, तो जानना चाहिये, कि लड़की वालेने उस सम्बन्धको स्वीकार नहीं किया. उनके यहां ऊपर बयान किया हुआ पहिला तरीक़ह सम्बन्धको स्वीकार करनेका चिन्ह मानते हैं.

नयपाल राज्यके आम लोगोंका पहिराव पायजामह, अंगरखा और टोपी है, बाज़े पंडित लोग धोती भी पहिनते हैं, लेकिन् बांड़ा व उदास लोगोंमें ज़ियादहतर जांघियेका रवाज है. नेवार जातिकी स्त्रियां चोटी गुंथानेके एवज़ बालोंका जूड़ा बांध लेती हैं, और आम औरतोंका पहिराव फरिया (१), साड़ी व अंगिया है, किसी किसी क़ौममें फरिया के एवज़ घेरदार पायजामह भी पहिनती हैं.

राज्यप्रबन्ध – नयपालके राज्यका मुल्की व माली कुल इन्तिज़ाम वज़ीरके हाथमें है, महाराजाधिराज किसी राज्य प्रबन्धसे सरोकार नहीं रखते, केवल सरिश्तह के काग़ज़ात व अर्ज़ियों वग़ैरहमें उनका नाम मात्र रहता है. प्रजा आदि लोगोंमेंसे, जब कोई मनुष्य राजाको अर्ज़ी देता है, तो उसमें श्री ५ महाराजाधिराज करके लिखता है, और वज़ीरको श्री ३ महाराजाके पदसे अर्ज़ी दीजाती है. इन दोनों लिखावटोंमें जितना कुछ फ़र्क़ है, उससे जानलेना चाहिये, कि नयपालके वज़ीर वहांके नाइब राजा या कुल राजसी कारबारके मालिक हैं. इस समय वज़ीरके उहदहपर खस जातिके महाराजा जंगबहादुर (जो गत समयमें रियासत नयपालका एक बड़ा नामवर वज़ीर हुआ) के छोटे भाई धीरशमशेरजंगके पुत्र बीरशमशेरजंग नियत हैं.

रियासती इन्तिज़ामके लिये ख़ास राजधानी काठमांडूमें मुख्य पांच कचहरियां हैं :-

१ – कोटिलिंग, अर्थात् दीवानीकी एक शाखा, जिसमें भाई बट या किसी दूसरी क़िस्म

(१) इसको नयपालकी औरतें घाघरेकी एवज़ पहिनती हैं, और यह पन्द्रह गज़से लेकर एक हज़ार गज़तक लम्बा होता है.

की स्थावर जंगम जायदादके हिस्सहकी बाबत मुक़द्दमातका फ़ैसलह होता है, और मुआ़फ़ीदारों व ख़ालिसहके दर्मियानी सर्हद्दी मुक़द्दमोंके फ़ैसले भी यहांसे ही होते हैं. अ़दालतका आला अफ़्सर सूबह कहलाता है, जिसको सोलहसे पच्चीससौ रुपयेतक सालानह तन्ख़्वाह मिलती है. सूबहके मातह्त दो बड़े अह्लकार सरिश्तहदार और नाइब सरिश्तहदारके तौरपर रहते हैं, जिनको वहांके लोग डिट्ठा और विचारी कहते हैं; परन्तु ये दोनों सिवा ज़बानी तह्क़ीक़ात और बात चीत करनेके लिखा पढ़ीका काम बिल्कुल नहीं करते. तह्रीरी कार्रवाईकी निगरानी रखनेवाले अह्लकारोंको ख़रीदार और मुखिया कहाजाता है, और बाक़ी अह्लकार नौशिंदह (नवीसिन्दह) कहलाते हैं. डिट्ठाको ६०० से १००० तक, विचारीको ५००, ख़रीदारको ३००, नाइब मुखियाको २४०, तह्वीलदारको २००, और नवीसिन्दोंको १०८ रुपया सालानहके हिसाबसे तन्ख़्वाह मिलती है. हरएक कचह्रीके मुतअ़ल्लिक़ बीस या पच्चीस सिपाही मए तीन अफ़्सरों सूबहदार, जमादार व हवाल्दारके रहते हैं.

२- फ़ौज्दारी, जिसको नयपाली लोग ईटा चपली कहते हैं, मुक़द्दमात फ़ौज्दारीकी समाअ़तके लिये एक अ़दालत नियत है, जिसमें ख़ून व मारपीट तथा चोरीके अ़लावह जाति सम्बन्धी बहुतसे मुक़द्दमात हर साल दाइर होते हैं. यहां भी कोटिलिंगकी तरह अफ़्सर आला सूबह और उसके तह्तमें डिट्ठासे लेकर नवीसिन्दोंतक १५ अह्लकार काम देते हैं, और २५ के अनुमान सिपाही तईनात हैं.

३- धनसार (एक प्रकारका हदबस्ती महकमह)- यहां ख़ालिसहके सर्हद्दी मुक़द्दमे फ़ैसल होते हैं. सूबह, अर्थात् अफ़्सर आलाके तह्तमें १० या १२ अह्लकार और २५ सिपाही रहते हैं.

४- टकसार- जहां लेनदेनके दीवानी मुक़द्दमोंकी समाअ़त होती है. इस कचह्रीमें भी धनसारके मुवाफ़िक़ अह्लकार और सिपाही मुक़र्रर हैं.

५- ठाना (थाणा), जिसको हमारे यहांकी पुलिस कहना चाहिये; इस महकमहके तह्तमें जेल आदिकी निगरानी और सफ़ाईका काम भी है. कचह्रीका मुख्य अधिकारी कर्नेल अथवा कप्तान होता है, जिसको तन्ख़्वाह फ़ौजी सीग़हसे मिलती है, और उसके तह्तमें डिट्ठा, विचारी व नवीसिन्दह आदि १० या १२ अह्लकार तथा २०० चपड़ासी और २५ सिपाही रहते हैं.

ऊपर लिखी हुई पांच अ़दालतोंके सिवा नयपालके राज्यमें कौन्सिल नामका एक मुख्य न्यायालय है, जिसका अफ़्सर ख़ास वज़ीर ही समझा जाता है; उसके तह्तमें अ़दालती

कार्रवाईके वास्ते १० अथवा १२ अह्लकार और सिपाही आदि लोग नियत हैं. वज़ीर व अह्लकारोंके अलावह जेनरल, कर्नेल वगै़रह अफ्सर और रियासतके कई दूसरे प्रतिष्ठित लोग भी मुक़द्दमातके पेश होने व फ़ैसल होनेके समय बतौर मेम्बरोंके इस न्यायालयमें बैठा करते हैं. मुक़द्दमातके दाइर व फ़ैसल होनेका यह क़ाइदह है, कि जब किसी शरूस को किसी प्रकारकी नालिश फ़र्याद करना हो, तो वह महाराजाधिराजके नाम अपने मुफ़स्सल अह्वालका इज़्हार (अर्ज़ी) लिखकर कौन्सिलमें पेश करता है, और वहांसे वह इज़्हार (अर्ज़ी), जिस सीग़ह या अदालतसे तअ़ल्लुक़ रखता हो, उसमें भेज दिया जाता है; और उस अदालतका हाकिम पूरी तह्क़ीक़ात करने और मुद्दआ़अ़लैहके इज़्हार लेने बाद मुक़द्दमहको फ़ैसल करता है. अगर्चि ऊपर लिखी हुई पांचों अदालतोंका अपील कौन्सिलमें होता है, परन्तु वहांपर अपील करनेकी नौबत बहुतही कम पहुंचती है; क्योंकि उक्त अदालतोंमें रियासती क़ाइदह के अनुसार गवाहों वगै़रहके इज़्हार लेने और सरिश्तहकी कार्रवाई कीजाने के अलावह डिट्ठा व विचारियोंके द्वारा ज़बानी तह्क़ीक़ात ज़ियादह होती है, और मुद्दई व मुद्दआ़अ़लैहकी रूबकारीमें ज़बानी तौरपर मुक़द्दमह बिल्कुल फ़ैसल किया जाकर ज़बान बन्दी और क़ाइल नामह (फ़ैसलह) लिखाजाता है, जिसको अदालतका सूबह मए मिस्ल और मुद्दई व मुद्दआ़अ़लैहोंके अफ्सर कौन्सिलके पास लेजाकर क़ानूनके मुवाफ़िक़ समझादेता है, और बाद उसके मुज्रिमको वहांके आईनके मुवाफ़िक़ सज़ा दीजाती है. अलावह संगीन मुक़द्दमोंके ख़फ़ीफ़ मुआ़मलातमें मामूली सज़ा होती है, और क़त्लके जुर्ममें मुज्रिमको सिर काटेजानेकी सज़ा (१) दीजाती है, लेकिन् ब्राह्मण और जोगीको

---

(१) हेन्री एम्ब्रोज़ने एक अपराधीको क़त्लकी सज़ा देनेका आंखों देखा हाल, जो अपने बनाये हुए नयपालके इतिहासमें बयान किया है, उसमें वह लिखते हैं, कि नयपालमें क़त्लकी सज़ा मंगल या शनिवारके दिन, जो वहां अशुभ मानेजाते हैं, दीजाती है. क़त्ल कियेजानेके समय अपराधीके कुल कपड़े, सिवा एक लंगोटके उतार लिये जाते हैं, और उसको घुटनोंके बल बिठाकर उसके हाथ पीछेकी तरफ़ कसकर बांधने बाद दो आदमी उसे मज़्बूत पकड़े रहते हैं, ताकि वह जल्लादके तलवार मारनेके समय आगेको न झुक जावे. अपराधीके अज़ीज़ रिश्तहदारों या नौकरोंमें से बाज़ लोग उसके सिरको काटेजानेके समय अपने हाथोंसे पकड़ लेते हैं, क्योंकि उनका यह विश्वास है, कि जब कोई बेगुनाह आदमी इस तरहपर अन्यायसे माराजाता है, तो उसका सिर पकड़ने वाले दोस्त दूसरी दुनयामें हमेशहके वास्ते मोक्षको प्राप्त होते हैं. सिर काटे जानेके बाद अपराधीकी लाश वहीं छोड़दी जाती है, जिसको गीदड़, गृध्र और कुत्ते बहुत जल्द खाजाते हैं; लाशको गाड़ने या जलानेका हुक्म नहीं है. लेकिन् जबसे वज़ीर जंगबहादुर इंग्लिस्तान होकर वापस आया, तबसे क़त्ल बहुत कम होता है, और मनुष्यहिंसाके लिये अपराधीको बहुत सज़ा मिलती है.

मौतकी सज़ा नहीं होती, वे क़त्ल किये जानेके एवज़ जन्म क़ैद कियेजाते हैं. हेनूरी एम्ब्रोज़ लिखते हैं, कि ब्राह्मणको बड़ा दण्ड अर्थात् मौतकी सज़ा कभी नहीं दीजाती; उसका सिर मूंडकर सूअरका मांस व जूठा खिलाने तथा मदिरापान करानेके बाद देशसे निकालदिया जाता है. . औरतें क़त्ल नहीं कीजातीं, वे क़ैद कीजाती और दाग़ीजाती हैं, और जाति बाहिर कीजाकर या तो गुलामकी तरह बेचदी जाती हैं, अथवा देशसे निकालदी जाती हैं.

पर्वतिये लोगोंमें जाति सम्बन्धी मुक़द्दमे, जो खासकर व्यभिचार आदि कर्मोंसे सम्बन्ध रखते हैं, इस राज्यमें अधिक दाइर होते हैं, और उनकी सज़ा भी बनिस्बत दूसरे देशोंके बहुत ही सख़्त दीजाती है; इस अपराधका हाल यदि लिखा जाये, तो बहुत कुछ लम्बा चौड़ा है, परन्तु तवालतके ख़यालसे मुख़्तसर तौरपर यहां लिखाजाता हैः-

यदि कोई पुरुष अपनी स्त्रीको किसी दूसरे मनुष्यके साथ संगम करते देख ले, तो उसे अपराधीको स्वयं जीवसे मारडालनेका अधिकार रहता है, और स्त्री जातिसे अलग करदी जाती है; अगर उसपर किसी शख़्ससे व्यभिचारिणी होनेका शुब्ह होगया हो, तो उसका पति उससे दर्याफ़्त करके लिखालेने बाद व्यभिचारीको मारडालता और स्त्रीको घरसे बाहिर निकाल देता है. यदि उस देशका कोई शख़्स चाहे, कि व्यभिचारको छिपा लेवे, तो ऐसा हर्गिज़ नहीं होसक्ता, क्योंकि वहांके व्यभिचारका भेद छिपानेवालेको भी रवाजके मुवाफ़िक़ पूरी पूरी सज़ा दीजाती हैं. वहां प्रत्येक जातिमें इस अपराधपर बहुधा मनुष्योंको दण्ड मिलता है, और वे जातिसे बाहिर निकाल दियेजाते हैं. हालमें ऐसा दस्तूर है, कि जब किसी मनुष्यको किसी स्त्रीकी निस्बत व्यभिचारका शुब्ह पैदा हो जाता है, तो वह फ़ौरन् उसकी इत्तिला सर्कारी अफ़्सरसे करता है, जिसकी तह्क़ीक़ात होने बाद उस मनुष्यको, जो स्त्रीको पहिले-पहिल व्यभिचारिणी बनानेमें अपराधी ठहरता है, मारनेके वास्ते स्त्रीके पतिको आज्ञा दीजाती है, इसके बाद उसको इख़्तियार हैं, कि चाहे वह उसे मारे, या न मारे. भेद छिपाने वालों तथा व्यभिचारिणी जाने बिना दूसरी या तीसरी बार व्यभिचार करने वालोंपर दण्ड होता है, अर्थात् ब्राह्मण जातिकी स्त्रीको किसी ब्राह्मण पुरुष अथवा क्षत्री या शूद्र आदि दूसरी जातिके पुरुषसे व्यभिचार करना जान लिया, और उसका भेद प्रकट न किया, तो मालूम होजानेपर वह मनुष्य उसी नीची जातिके शामिल कियाजावेगा, जिस जातिके पुरुषसे उसने स्त्रीको व्यभि-चारिणी जाना हो. यदि कोई ब्राह्मण, ब्राह्मण जातिके पुरुषके साथ उसी जातिकी

स्त्रीको व्यभिचारिणी होना जान जावे, और उस भेदको छिपावे, तो व्यभिचारी और व्यभिचारिणीकी तरह वह भी जैसी (गोलक) जातिमें शामिल करदिया जाता है; और अपनी जातिसे उच्च वर्णका भेद गुप्त रखनेपर दण्डकी सज़ा दीजाती है. ब्राह्मण और क्षत्री आदि उत्तम जाति वालेसे संगम करनेपर स्त्री जातिसे बाहिर कीजानेके अलावह व्यभिचार छिपाकर जातिवालोंको अपने हाथसे रोटी खिलानेके जुर्ममें छः महीने तक क़ैद रक्खी जाती है; और नीच जातिके पुरुषसे, जिसके हाथका जल उत्तम क़ौमवाले नहीं पीते, जार कर्म करनेका भेद छिपाकर अपने हाथसे पानी पिलानेके अपराधमें बीस महीनेंकी क़ैद भुगतने बाद (१) घर व जातिसे बाहिर निकालदी जाती है; इसके बाद उसे इख्तियार है, कि वह चाहे जहां रहे. और इसी प्रकार नीच जातिकी स्त्रीसे व्यभिचार करनेपर उच्च जातिके पुरुषको सर्कारसे सज़ा मिलती है. स्त्रीके घरवालों तथा उन लोगोंको, जिन्होंने उसके हाथका भोजन खाया अथवा पानी पीया हो, धर्म शास्त्रके अनुसार प्रायश्चित्त करना पड़ता है. क्षत्री आदि दूसरी जातिकी स्त्री अपनी ख़ास जातिवाले एक ही पुरुष के पास जानेसे जाति बाहिर नहीं कीजाती, उसको वह जार पति, यदि जीता बचे तो, अपने पास रख सक्ता है, और यदि क़ाइदहके मुवाफ़िक़ मारा गया, और स्त्रीने फिर दूसरा पति नहीं किया, तो वह जातिमें रह सक्ती है, परन्तु उसका ख़ास पति उसे अपने घरमें नहीं रखता.

अगर कोई स्त्री विवाह होनेसे पहिले ही बिगड़ जावे, तो जार कर्म करने वाला पुरुष उस भेदको विवाहके पहिले ज़ाहिर करदेता है, और कदाचित् उसने स्त्रीका विवाह होनेसे पहिले ज़ाहिर नहीं किया, और वह भेद पीछे मालूम हुआ, तो उस व्यभिचारी पुरुष और स्त्रीको ऊपर लिखी हुई रीतिके अनुसार ही सज़ा दीजाती है. ब्राह्मण पुरूषको, उसी जातिकी स्त्रीके साथ व्यभिचार करके भेद छिपानेपर सर्कारसे २॥ वर्ष क़ैद और नीच जातिके पुरुषको ६ वर्ष क़ैदकी सज़ा होती है.

नेवार जातिमें व्यभिचारकी विशेष सज़ा नहीं है, इन लोगोंमें व्यभिचारी पुरुषको ६०) रुपया जुर्मानह और ६०) रुपया स्त्रीके पतिको विवाह ख़र्चका देना पड़ता है.

डाकू लोगोंको भी इस राज्यमें सख़्त सज़ा (२) दीजाती है, और इसी कारण वहां पर बनिस्बत हिन्दुस्तानी रियासतोंके इस क़िस्मकी वारिदातें बहुतही कम होती हैं. पहाड़ी मक़ामातमें चोर व उचक्के भी कम हैं.

---

(१) स्त्रीके चिह्रेपर जिस जातिसे उसने संगम किया हो, उसी जातिका चिन्ह करदिया जाता है.

(२) महाराजा सुरेन्द्र विक्रमशाहके समयमें, जहां कहीं जितने डाकू लोग पाये जाते, वे सब जानसे मारडाले जाते थे, इस कारण उस वक़्से अब नयपालमें डाका नहीं पड़ता.

उन महकमोंके अलावह, जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, राजधानी काठमांडूमें और भी कई कचहरियां अथवा कारख़ाने हैं, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

सद्र दफ़्तरख़ानह, जिसको महकमह माल कहना चाहिये; इसमें रियासतके माल सम्बन्धी हिसाब किताबका काम होता है, और इसका हाकिम सूबह है.

तोशहख़ानह, अर्थात् ख़ज़ानह, जिसमें महाराजाधिराजके कुल ख़र्च व आमद वग़ैरहका हिसाब रहता है. महकमहके आला अफ़्सर ख़ज़ानचीको ५५०० रुपये सालानह तन्ख़्वाह मिलती है.

कोट भंडार या रसोड़ा- यह भी राज्यका एक बड़ा कारख़ानह है, जहां राजा और राणियों आदिके लिये खाना बनता है; इसका अफ़्सर कबरदार कहलाता है, और उसे १२००) से ४०००) रुपयेतक सालानह तन्ख़्वाह मिलती है.

किताबख़ानह- इस महकमहमें कुल रियासतके नौकरोंके नाम, उनकी बहालीके समय लिखे और मौकूफ़ीके वक्त काटदिये जाते हैं. यहांका हाकिम ख़रीदार ६००) रुपये सालानह तन्ख़्वाह पाता है.

भनसार (साइर) का हाकिम १२००) रुपये सालानह तन्ख़्वाहका एक कप्तान है, जिसके मातह्त सद्र और इलाक़हमें दाण (साइर) की चौकियोंपर बहुत से अह्लकार और सिपाही हैं.

कुमारी चौक, अर्थात् हिसाब दफ़्तर- यह एक बहुत बड़ी कचहरी है, जिसमें क़रीबन् २०० अह्लकार काम करते हैं; यहां राज्यके कुल जमा ख़र्चका नामह समझा जाता है. महकमहके हाकिमकी तन्ख़्वाह, जो काजी कहलाता है, ६४००) रुपये सालानह है, और उसका नाइब सूबह कहलाता है.

मूठ तह्वील- यह बाक़ियात वुसूल करनेका महकमह है, जिसका अफ़्सर ख़रीदार १०००) रुपये सालानह पाता है.

मुल्की खान या ख़ज़ानह- यहांपर राज्यकी आमदनीका रुपया जमा होता है, और यहांसे ही तन्ख़्वाहदारों तथा दूसरे ख़र्चोंके लिये रुपया दिया जाता है. हाकिम, जिसको सर्दार कहते हैं, ३६००) रुपये सालानह पाता है.

गूठी कचहरी, अर्थात् महकमह देवस्थान- यहां सदावर्त्त आदि धर्म पुण्यका काम होता है. महकमहके हाकिम कप्तानकी तन्ख़्वाह १२००) रुपये सालानह है.

महकमह फ़ौज, एक बड़ी कचहरी है, जिसका हाकिम सूबह है; इस कचहरीके तअ़ल्लुक़ फ़ौजी या जंगी मुलाज़िमोंकी तन्ख़्वाहका इन्तिज़ाम है. सेना सम्बन्धी सीग़ह नयपालकी रियासतमें बहुत बड़ा है; क्योंकि यहां साधारण

सिपाहियोंको, जिन्हें मिलसिया कहते हैं, छोड़कर २०००० से अधिक क़वाइदी फ़ौज है, जिन सबका कुल हिसाब किताब इसी फ़ौजी दफ्तरमें रहता है. क़वाइदी सेनामें हर एक पल्टनके साथ १ जेनरल, १ कर्नेल, १ मेजर कप्तान, १ कप्तान, १ मेजर अजीटन, १ अजीटन, १० सूबहदार, १० जमादार, ४० हवाल्दार, ४० अमलदार; और अहलकारी कामके लिये १ खरीदार, १ राइटर, और एक बहीदार नियत हैं. एक पल्टनमें कुल ५०० से ७०० तक सिपाही गिने जाते हैं. मेग्ज़िनके मातहत ८००० पीपा (कुली) राजधानी काठमांडूमें रहते हैं, जिनका काम सामान वगैरह उठाना, धरना या लाना लेजाना है, और इनमें पचास पचास मनुष्योंपर "कोत्या" पदका एक एक अफ्सर नियत है. वज़ीरसे लेकर सिपाही तक ऊपर बयान किये हुए कुल फ़ौजी व अदालती अफ्सरों वगैरहको मुख्तलिफ़ शरह पर तन्ख्वाहें मिलती हैं, और हरएकके लिये एक खास क़िस्मकी वर्दी (१) नियत है.

---

(१) नयपालके राज्यमें वज़ीरसे लेकर अदना अहलकारों तक नीचे लिखे अनुसार सालानह तन्ख्वाह पाते हैं:-

वज़ीरको १०००००रुपया सालानह नक्द और खानगी खर्च, कमांडरइन्चीफ़को ५०००० रुपया, कमांडिंग जेनरलोंको ३६००० से ४५००० तक, जेनरलोंको १५००० से २०००० तक, कर्नेलोंको ५००० से ७००० तक, मेजर कप्तानको २००० से ३००० तक, कप्तान, और मेजर अजीटनको ९०० से १८०० तक, लेफ्टिनेण्ट और खरीदारको ६०० से ९०० तक, सूबहदार और राइटरको २०० से ५०० तक, जमादारको ८० से ४०० तक, हवाल्दारोंको ७० से २०० तक, सिपाहीको ६० से १५० तक, पीपाको ५० रुपया. काजी, सूबह, डिट्ठा, विचारी और नवीसिन्दों आदिके अलावह, जिनकी सालानह तन्ख्वाहका ज़िक्र महकमोंकी तफ्सीलके साथ मूलमें हो चुका है, और भी कई उहदहदार व खिदमतगार मुतफ़र्रक़ शरहसे तन्ख्वाह पाते हैं.

वज़ीरसे लेकर कुल छोटे बड़े उहदहदारों व अहलकारोंके लिये अलहदह अलहदह एक खास तौरकी वर्दी भी मुक़र्रर है- वज़ीरकी वर्दीमें जड़ाऊ टोपीके ऊपर काली पघड़ी, जिसपर पन्ना व माणिक जड़ित मोतियोंकी सेली, आगेकी तरफ़ हीरेके तीन चांद, जिनमें पन्ना लटका हुआ, और बीचवाले चांदमें हुमाकी कल्गी, और हीरेका पर्तला व चपड़ास है. जेनरलसे लेकर वज़ीरके भाई बेटों व कर्नेलोंतक सबोंके हीरेका एक चांद होता है, बाक़ी कुल आभूषण उसी प्रकारका रखते हैं, जो वज़ीरकी वर्दीमें दर्ज है, लेकिन् कर्नेलके हीरेका चांद तथा काली पघड़ीपर सोनेका तोड़ा बंधा रहता है. मेजर कप्तानके सोनेमें जड़ाहुआ तीन हीरों और एक पन्नेका जड़ाऊ चांद, तथा सोनेका तोड़ा. कप्तान व मेजर अजीटनके एक हीरे और पन्नेका जड़ाऊ चांद और सोनेका तोड़ा. लेफ्टिनेण्ट, खरीदार और दारोगहके एक पन्नेका सोनेमें जड़ा हुआ चांद और सोनेका तोड़ा. कर्नेलसे लेफ्टिनेण्टतकके साधारण कल्गी होती है. सूबहदार, राइटर तथा कोत्याके सोनेका चांद और चांदीका तोड़ा. जमादार और हवाल्दारके अर्द्ध चन्द्राकार

कचह्रियों व इलाक़हके पर्गनातमें, जो सिपाही वगैरह रहते हैं, तथा वे लोग जो प्रजामेंसे इलाक़हके मुतफ़र्रक़ मक़ामातपर तीन महीने (१) तक क़वाइद सिखानेके लिये रक्खे जाते हैं, उनका तअ़ल्लुक़ महकमह फ़ौजसे नहीं है, उसमें केवल क़वाइदी जंगी सेनाका ही काम होता है.

कंडेल चौक- सेना सम्बन्धी एक कारख़ानह है, जिसमें सिपाहियोंके टूटे फूटे तमगे दुरुस्त किये जाते हैं, इसका हाकिम एक कप्तान है.

पुस्तकालय- रियासत नयपालमें एक पुस्तकालय भी है, जिसको वहांके लोग पुस्तक ख़ानह कहते हैं; इस महकमहका हाकिम ख़रीदार कहलाता है.

फ़र्राशख़ानह- यहां भी पुस्तक ख़ानहकी बराबर तन्ख़्वाह पाने वाला डिट्ठा नामी एक अफ़्सर मए चन्द मातह्तोंके मुक़र्रर है.

टकशाल- जहां रुपये (२) व पैसे वगैरह सिक्के बनते हैं; यहांका अफ़्सर सूबह कहलाता है.

चांदमें सोनेका गिलट होता है. बहीदारके सोनेके गिलट वाला चांदीका चन्द्रमा और चांदीका तोड़ा; और कुल सिपाहियोंके काली पघड़ीपर चांदीका चन्द्रमा तथा चांदीका तोड़ा है. वज़ीरसे लेकर कर्नेलतकके चन्द्रमामें ध्वजा पकड़े हुए सिंहकी तस्वीर रहती है, और बाक़ी पल्टनोंमें, जो पल्टन जिस देवताके नामसे प्रसिद्ध है, उसीकी मूर्तिका चिन्ह चन्द्रमामें भी रहता है. वज़ीरसे लेकर जमादारतक वर्दीमें तलवार और किरच रखते हैं, और हवाल्दारसे सिपाहीतकका शस्त्र बन्दूक़ व खुकुड़ी (एक प्रकारका लम्बा और चौड़ा छुरा) है. काजीकी वर्दीमें सिफ़ेद पघड़ी, ताशका कोट, पायजामह, और दुशाला तथा शस्त्रोंमें खुकुड़ी है. सर्दारकी वर्दीमें सिफ़ेद पघड़ी, कमख़ावका कोट व पायजामह और दुशाला व खुकुड़ी; सूबहकी वर्दीमें सिफ़ेद पघड़ी, कमख़ावकी नीमास्तीन व पायजामह और दुशाला तथा खुकुड़ी. द्वारे (ड्योढ़ीवान) और मुन्शीकी पघड़ी लाल व सिफ़ेद होती है, और उनका कोट गहकुचिन नामके चीनी रेशमी कपड़ेका, गरारेदार पायजामह और अंगरखा तथा दुशाला सिफ़ेद रंगका होता है; खुकुड़ी ये भी रखते हैं. डिट्ठा और मुखियाकी पघड़ीका रंग क़िर्मिज़ी होता है; और विचारी, व नवीसिन्दोंकी पघड़ी लाल होती है, इनके पास भी ऊपर लिखे दूसरे उह्दहदारोंकी तरह खुकुड़ी शस्त्र रहता है. जंगी सेनाकी कुल वर्दी अफ़्सरों सहित अंग्रेज़ी ढंगकी है.

(१) तीन मासके लिये भरती कियेजाने वाले लोगोंको, जिनकी संख्या क़रीब ५००,०० के प्रति वर्ष होजाती है, तीन मासतक ३।।) रुपया मासिक वेतन मिलता है. इन लोगोंके भरती होनेका यह क़ाइदह है, कि इलाक़हकी प्रजामेंसे १६ वर्षसे लेकर ४५ वर्ष उम्रतकके आदमी साल भरमें तीन महीनेके लिये बारी बारीसे हरएक ज़िलेके मुख्य स्थानोंमें क़वाइद सीखनेके लिये आते हैं, जिनसे ज़रूरतके वक़्त लड़ाईमें काम लिया जाता है.

(२) नयपालका रुपया, जिसको "महेन्द्र मलि" कहते हैं, कल्दार रुपयेसे अनुमान ॥।✓ का होता है. यहां की टकशालमें पहिलेसे अठन्नी ही बनाई जाती है, लेकिन अभी थोड़े अरसहसे कुछ रुपया भी बनने लगा है.

डाकख़ानह- नयपालके राज्यमें दो डाकख़ाने हैं, जिनमेंसे पहिला ख़ास राजधानी काठमांडूके महलों (जैसी कोठा) में और दूसरा महलसे पौन कोसके फ़ासिलह पर अंग्रेज़ी रेज़िडेंसीकी कोठीपर है. हिन्दुस्तान आदि दूसरे देशोंकी चिट्ठियां वग़ैरह राज्यके डाकख़ानहकी मारिफ़त आती जाती हैं; और कुल इलाक़हमें राज्यकी डाक है.

मद्रसह- इस राज्यमें कोई मद्रसह अथवा अंग्रेज़ी ढंगका स्कूल प्रजाकी शिक्षाके लिये नहीं है, अल्बत्तह पट्शास्त्र विद्या तथा वेदका पठन पाठन करनेके लिये एक देशी पाठशाला है.

शिफ़ाख़ानह या हॉस्पिटल- नयपालमें पहिले कोई शिफ़ाख़ानह नहीं था, केवल एक देशी वैद्यख़ानह था, जो इस वक़्तक मौजूद है; लेकिन् हालमें विक्रमी १९४७ श्रावण कृष्ण ८ [हि० १३०७ ता० २१ ज़िल्क़ाद = ई० १८९० ता० ९ जुलाई] को राजधानी काठमांडूमें वहांके लोगोंके लिये एक हॉस्पिटल खोलागया है.

जेलख़ानह- राजधानी काठमांडूमें दो बड़े जेलख़ाने हैं, जिनमेंसे एक उक्त राजधानीसे पूर्वकी तरफ़ मर्दोंके लिये, और दूसरा पश्चिमकी तरफ़ पौन कोसके फ़ासिलह पर स्त्रियोंके लिये है. इनके सिवा पाल्पा और धनकुटा ज़िलोंमें कम मीआदी क़ैदी रखनेके लिये स्थान नियत हैं, परन्तु ज़िलेके जन्म क़ैदी यहांपर नहीं रक्खे जाते, वे काठमांडूके जेलको चालान करदिये जाते हैं. क़ैदी लोगोंमें मर्दोंसे केवल रास्ते वग़ैरह साफ़ करनेका, और औरतोंसे बारूद पीसनेका काम लिया जाता है; इन कामोंके सिवा सर्कारमें उनसे और कोई काम नहीं लिया जाता. जो लोग ऊनी मोज़ा वग़ैरह बना जानते हैं, उनको अपने तौरपर बनाने व बेचनेका इख़्तियार है, सर्कारमें इन चीज़ोंकी क़ीमत जमा नहीं होती. जेलख़ानहका दारोग़ह अर्ज़बेगी कहलाता है.

ज़मीनका क़ब्ज़ह व महसूल वग़ैरह- इस राज्यमें किसानोंसे हासिल वुसूल करनेका यह क़ाइदह है, कि जिस ज़मीनमें चावल नहीं बोये जाते, उसका हासिल उन किसानोंसे, जो बैलोंकी जोड़ी रखते हैं, सालानह १) एक रुपया घर प्रति लिया जाता है, ज़मीनकी कुछ तादाद नहीं है, जितनी बोई जा सके, बोवें. अगर पचास जोड़ी बैल हों, तो भी वही एक रुपया देना पड़ेगा, जिस किसानके घरमें सिर्फ़ एक ही बैल हो, उससे ॥।) बारह आना सालानहके हिसाबसे हासिल वुसूल किया जाता है. और जिसके यहां बैल बिल्कुल नहीं होते, और वह दूसरों के मांगे हुए बैलोंसे अपनी ज़मीन हांकता बोता है, उसको केवल ॥) आठ आना ही देना पड़ता है. इन तीन प्रकारके ज़मींदारोंमेंसे पहिले हल, दूसरे पाटे और तीसरे कुदाले कहलाते हैं. इसके अलावह दो आने सालानह सावन्या और फागू नामसे देने पड़ते हैं; और एक आना सर्व चन्द्रायण नामका लगता है, जिसका यह तरीक़ह है, कि महाराजाधिराजकी तरफ़से एक धर्माधिकारी पंडित नियत है, जो कुछ

कागज़ों (१) पर छाप लगाकर और एक श्लोक (२) तथा प्रायश्चित्तका विधान और सांसर्गिक पापसे शुद्ध होना लिखकर गांवों व मुहल्लोंमें भेजदेता है, जिनको वहां वाले एक एक आना देकर लेलेते हैं. यह धर्माधिकारी उन लोगोंसे भी, जो व्यभिचारिणीके हाथका भोजन खालेते हैं, वही कागज़ देकर, जिसमें व्यभिचारका व्यवरेवार हाल दर्ज होता है, ३॥) रुपये, और इनके हाथसे खाने वाले दूसरे लोगोंसे १॥।) रुपये और तीसरे लोगोंसे चौदह आने लेता और उन्हें शुद्ध करदेता है. जिन लोगोंका स्पर्श किया हुआ पानी नहीं पीया जाता, उनके साथ संगम करने वाली स्त्रीके हाथका जल पीनेके दोषपर ऊपर लिखी हुई शरहका आधा आधा रुपया लेने बाद प्रायश्चित्तकी शुद्धिका कागज़ देता है. यदि किसीकी गाय बंधनमें मरजावे, तो बांधने वालेसे १॥।) पौने दो रुपया लेकर शुद्धि पत्र दिया जाता है, और इनके अलावह और भी कई कारणोंमें इसका रवाज है; जबतक अपराधी या दूषित लोग इस कागज़को हासिल नहीं करलेते, तबतक वे खाने पीनेमें जातिके शामिल नहीं समझे जाते हैं. चावल बोई जानेवाली ज़मीनका मह्सूल आध बटाईके हिसाबसे लियाजाता है, और इसके सिवा महाराजाधिराजके पाटवी पुत्रके यज्ञोपवीत धारण करनेके उत्सवपर तथा गद्दी बैठनेके समय हल, पाटे और कुदाले किसानोंसे १) एक रुपया, ।।।) बारह आना और ॥) आठ आना क्रमसे लिया जाता है; ज्येष्ठ पुत्रीके विवाहमें भी उन्हें इसीके अनुसार रुपया देना पड़ता है. जब नया राजा गद्दीपर बैठता है, तो वहांके नाज नापनेके पैमानोंपर, जिनको ढक, पाथीं, कुरुवा, और माना कहते हैं, नई छाप लगाई जाती है, और इस दस्तूरका प्रति घर आठ आना रअय्यतसे लिया जाता है. अगर्चि मुआफ़ीदारों और महाजनोंसे भी ऊपर लिखे हुए मौक़ोंपर रुपया वुसूल होता है, लेकिन् उनके लिये कोई ख़ास शरह मुक़र्रर नहीं है, वह सिर्फ़ वज़ीरकी तज्वीज़पर ही मुन्हसर है; और सर्व साधारण रअय्यतसे, चाहे सर्कारी नौकर हो अथवा नहीं, घर प्रति ॥) आठ आना लिया जाता है. जब कभी लड़ाई होती है, तो उस मौक़ेपर रसदके नामसे हल किसानोंसे सोलह पाथी, याने डेढ़ मनसे कुछ ऊपर, पाटोंसे बारह पाथी या सवा मन, और कुदालोंसे आठ पाथी या पौन मन अन्न घर प्रति ड्यौढ़े भाव से रुपया देकर लिया जाता है, और वह अन्न उन्हीं लोगोंको, जिस स्थानपर

---

(१) इस कागज़को नयपाल वाले पतिया कहते हैं.

(२) श्लोक- श्री मद्गोरक्ष भूपेन्द्र प्रेरितं स्मृति संमतम्॥ दुरित छेदनो पायम् प्रायश्चित्तं समाचर॥१॥

लेजानेका हुक्म हो, पहुंचाना पड़ता है. जिस किसानके खेतमें दो सौ मन चावल पैदा होते हैं, उससे पांच मन चावल लिया जाता है; और इसी तरह सब किसान लोग देते हैं. मुआफ़ीकी ज़मीन वालोंको पैदावारके तिहाई हिस्सेका रुपया देना पड़ता है, जिसमें विर्त्ता, वेख, फिकडार, मर्वट, ज्यूनि, मानाचामल, पेटिया और छाप नामकी ज़मीन दाख़िल है. जो ज़मीन ताम्रपत्रपर दस्तावेज़ लिखकर ब्राह्मणको दी जाती है, उसको विर्त्ता, और क्षत्री आदि लोगोंको बख़्शी जाने वाली भूमिको वेख कहते हैं; ब्राह्मणों तथा क्षत्रियोंके सिवा जिस ज़मीनका पट्टा शूद्रोंको करदिया जाता है, वह फिकडार कहलाती है, जिसका कारण यह है, कि महाराजाधिराज भूमिके पट्टेपर पानका पीक अर्थात् थूक डाल देते हैं. सर्कारी नौकरीमें जानसे मारे जाने वाले शख़्सकी सन्तानको बख़्शी जानेवाली ज़मीनको मर्वट कहते हैं. ऊपर लिखी हुई चारों प्रकारकी ज़मीन कोई राजा किसी समयमें वापस नहीं लेसक्ता, वह उन्हीं लोगोंकी सन्तानके क़बज़हमें पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है, जिन्होंने उसको हासिल किया था; और उनको उसे बेचनेका भी अधिकार है. जो ज़मीन किसी शख़्सको जीवनभरके लिये दीजाती है, वह ज्यूनि नामसे, और जो खाने पहिरने आदि ख़र्चके लिये दीजाती है, वह मानाचामलके नामसे प्रसिद्ध है; इस प्रकारकी भूमिके पट्टेमें ख़र्च वग़ैरहकी तफ़्सील दर्ज रहती है. पेटिया ज़मीन वह है, जो विदेशी लोगोंको खान पानके लिये, राज्यसे मिलती है, और छाप वह जो .इज़्ज़तदार लोगोंको बख़्शी जावे. महाजन याने व्यापारी लोगोंसे लड़ाईके शुरूमें कर नहीं लिया जाता, लेकिन् ज़रूरतके वक़ उनसे भी उनकी हैसियतके मुवाफ़िक़ रुपया वुसूल किया जाता है; और कुल स्थानोंकी प्रजासे १६ पाथी अथवा डेढ़ मन चावल प्रति घर हुक्मके मुवाफ़िक़ वुसूल किये जाकर उन्हींके द्वारा स्थानों स्थानोंपर पहुंचाये जाते हैं. अगर्चि इन लोगोंको रुपयेके मालके .एवज़ ग्यारह अथवा बारह आना क़ीमतके तौर मिल जाते हैं, परन्तु रसदको दूर दूर पहाड़ी स्थानोंमें अपनी पीठपर लादकर पहुंचाना उनके लिये एक भारी दुःख है, क्योंकि विकट पहाड़ी स्थानोंमें सिवा आदमीके घोड़े, टट्टू या किसी दूसरे जानवरका गुज़र नहीं होसक्ता; अलावह इसके जहां कहींसे सर्कारी सामान लाया या लेजाया जाता है, उसको भी उन्हें गांव दर गांव पहुंचाना पड़ता है.

बड़े बड़े नगरोंके आस पासकी ज़मीनका हासिल, चाहे उसमें किसी प्रकार का अन्न बोया जावे, पैदावारकी आध बटाईके हिसाबसे लिया जाता है, और तराईकी ज़मीनका हासिल फ़ी बीघा ५ रुपये से २ रुपये तक ज़मीनकी हैसियतके

अनुसार वुसूल होता है; सिवा सर्वचान्द्रायणके ऊपर लिखा हुआ सर्व प्रकारका कर वहांके किसानों व प्रजाको भी देना पड़ता है, लड़ाईके अवसरपर वहां वालोंसे अन्न आदि रसद वुसूल करनेके क़ाइदहमें केवल इतनाही भेद है, कि वह वज़ीरकी तज्वीज़के अनुसार ली जाती है.

नयपालकी रियासत शुरूसे खुद मुरूतार है, वहांके राजा किसी बादशाह या सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज नहीं देते; राजधानी काठमांडूमें सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से एक रेज़िडेन्ट बतौर वकीलके रहता है, लेकिन् वह वहांके राजसी मुआमलों तथा प्रबन्धमें दरूल देनेका कुछ अधिकार नहीं रखता; और इसी तरह एक शरूस रियासत नयपालकी तरफ़से कलकत्तेमें रहता है. इन दोनोंको तन्रूवाह वग़ैरह खर्च अपनी अपनी सर्कारोंसे मिलता है. अल्बत्तह विक्रमी १८४९ [हि० १२०६ = ई० १७९२] की लड़ाईके समयसे, जो नयपाल और चीन वालोंसे हुई, सुलह होनेपर एक सन्धि दोनों राज्योंके दर्मियान क़ाइम होकर आभूषण, वस्त्र, तथा शस्त्र वग़ैरह कुछ सौग़ात हर पांचवें साल चीनके बादशाहको भेजा जाना क़रार पाया, तबसे उस सन्धिके अनुसार वह सौग़ात हर पांचवें साल वहां भेजी जाती है, जिसका मुफ़स्सल हाल तवारीख़में मौक़ेपर दर्ज किया जायेगा; और चीनसे भी ऊपर लिखे अनुसार समयपर खिल्अतके तौर सरोपाव वग़ैरह, जिसको वहांके लोग तुह्फ़ह कहते हैं, महाराजाधिराजके लिये यहां आता है.

तह्सील व पर्गनह- नयपालके पहाड़ी मुल्ककी तह्सीलों, पर्गनों और ग्रामोंका कुछ ठीक ठीक शुमार हमको नहीं मिला, क्योंकि वहां पहाड़ोंमें जहां कहीं आबादीके क़ाबिल ज़मीन मिलगई है, उसी जगह दो दो चार चार अथवा इससे कुछ अधिक तादादमें क़रीब क़रीब घर बसे हुए हैं, और उनमें मुख़्तलिफ़ मक़ामातपर बहुतसे छोटे छोटे पर्गने नियत किये जाकर मौक़े और ज़रूरतके मुवाफ़िक़ प्रबन्ध कर्ता लोग रख दियेगये हैं. अल्बत्तह तराईमें, जहांकी ज़मीन बराबर है, १- परसा, २- बारा, ३- रौतड़, ४- जलेश्वर, ५- सरलइया, ६- हनुमान नगर, और ७- मोरंग नामके सात बड़े ज़िले, और इनके अलावह पाल्पामें चार छोटे ज़िले जुदे हैं, जिनको वहांके लोग टप्पा कहते हैं. तराईके हर एक ज़िलेमें तह्सीलदार या नाज़िमके तौरपर एक एक मेजर कप्तान अथवा सूबह रहता है, और टप्पोंमें कप्तान नियत हैं, जिनको पहिले दीवानी व फ़ौज्दारी वग़ैरह कुल मुआमलातका इरूतियार था, लेकिन् हालमें फ़ौज्दारीका काम अलग करदिया गया है.

मश्हूर मक़ामात.

काठमांडू- यह शहर राजाके रहनेका मुख्य स्थान अर्थात् राजधानी है, जिसमें कई राजसी महल हैं. पहिले यहांकी आबादी अनुमान १८००० घरोंके समझी जाती

थी, लेकिन् हालमें उनकी तादाद क़रीब २४००० के है. राजधानीके महलोंमेंसे बसन्तपुर नामी सात मंज़िला महल सबसे ऊंचा और बड़ा है, जिसके ऊपरसे कुल शहर (काठमांडू) दिखाई देता है; यह रणबहादुरशाहका बनवाया हुआ है. महलोंके मुख्य दर्वाज़हका नाम हनुमान ढोका है, जिसपर सुवर्णके पतरे लगे हुए हैं. दर्वाज़हके बाहिर वीरआसनसे बैठी हुई क़रीब १० फ़ुट ऊंची हनुमानकी एक मूर्ति है; और इससे कुछ आगे बढ़कर पचास क़दमके फ़ासिलहपर बाज़ारमें एक बहुत बड़ा नक़ारह अनुमान ४५ फ़ुट घेरेका है, जो पहिले ज़मानहमें सुब्हके वक़्त पिछली पांच घड़ी रात रहे बजाया जाता था, लेकिन् अब उसके एवज़ तोप चलती है; नक़ारेके पास वाले गुम्बदमें दो ढाई सौ मन वज़नका एक बहुत बड़ा घंटा भी है. ये दोनों चीज़ें महाराजा रणबहादुरशाहके समयकी बनी हुई हैं. प्राचीन समयमें यहांके अक्सर महल सुवर्णके पत्रोंसे जड़े हुए थे, लेकिन् हालमें वे सब गिराये जाकर उनके स्थानमें अंग्रेज़ी ढंगकी इमारत तय्यार कराली गई है.

काठमांडूमें निम्न लिखित प्रसिद्ध मकानात हैं:-

महलोंमें एक बहुत बड़ा और ऊंचा प्राचीन मन्दिर तलेजू (तुलजा) देवीका है, जिसको नेवार जातिके किसी राजाने बनवाया था. इस देवीका पूजन आचार्य (नेवार जातिके) लोग करते हैं, और इसके खान पान व सेवा सामग्रीके लिये उसी समयसे कुछ जागीर नियत है.

काला भैरव- महलोंके दर्वाज़हके बाहिर दाहिनी तरफ़ चबूतरेपर केवल एक खड़ी हुई मूर्ति अनुमान २० फ़ुट ऊंची है, जिसकी सेवा नेवार जातिवाले करते हैं, जब किसी मनुष्यको किसी न्यायपर शपथ दिलाना हो, तो इसी भैरवकी मूर्तिके चरण छुवाकर उससे धर्म उठवाया जाता है.

महलोंके पीछे दक्षिण पूर्व तरफ़ झुकता हुआ शहरके दर्वाज़हसे बाहिर २०० फ़ुट ऊंचा धरारा नामका एक स्थान कीर्तिस्तंभके ढंगपर महाराजा रणबहादुरशाहका बनवाया हुआ है. जब कभी कोई ज़ुरूरतका काम पड़ता है, तो उसपर चढ़कर बिगुल बजानेसे पांच पांच सात सात कोसकी दूरीके मनुष्य एकट्ठे होजाते हैं, इसके चारों ओर एक बहुत बड़ा इहातह खिंचा हुआ है.

धराराके पास ही सुन्धारा नामका एक स्थान है. ये जल धारा बड़े अंदाज़से बनी हुई हैं, जिनमें नलोंके द्वारा पहाड़ोंमेंसे पानी लाया गया है; और जिस स्थानमें, वे गिरती हैं वहां पांचों धाराओंके मुंहपर डेढ़ फ़ुट मोटे सुनहरे नल पर्वतसे चार चार फ़ुट बाहिरकी तरफ़ निकले हुए हैं. यह जलाशय एक चौकोर कुण्डकी तरह पचास साठ क़दमके अनुमान चौड़ा और लम्बा बना हुआ है, जिसके तीन तरफ़ सीढ़ियां और अन्दरको बहुत साफ़ पत्थर जड़े

हुए हैं. इसमें एक तरफ़ पांच धाराओंमें होकर पानी गिरता है, और दूसरी तरफ़से निकलकर ज़मीनके भीतर होता हुआ बागमतीमें जा मिलता है. शहरके बाहिर पूर्व तरफ़ टूंडीखेल नामका एक बड़ा मैदान आध मील लम्बा और पाव मीलके अनुमान चौड़ा सेनाकी क़वाइदके लिये है, जिसके पास सर्कारी मेगज़िन और तोपखानह भी है. शहरसे पश्चिम तरफ़ सिपाहियोंकी परेडके लिये एक दूसरा मैदान क़रीब आध मील लम्बा और है, जिसे छावनी कहते हैं. प्राचीन देवालयोंमेंसे स्तम्भूनारायण, वैकुण्ठनारायण, अटकनारायण, ईखनारायण, लुमड़ीदेवी, कंकेश्वरीदेवी, नटदेवी और शोभा भगवती नामक देवताओंके आठ मन्दिर उसी समयके बने हुए हैं, जबकि शहर काठमांडू आवाद हुआ था. इनके सिवा कुमारीदेवी, पचली भैरव, मरुगणेश, मछेन्द्रनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ), महंकाल भैरव, संकटा देवी और नृसिंह आदि और भी कई प्रसिद्ध देवस्थान हैं. कुमारी देवीकी यात्रा अथवा मेलेमें, जो भाद्रपद शुक्ल १२ से शुरू होता है, प्रथम दिन (भाद्रपद शुक्ल १२ को) राज्य महलोंके सामने इन्द्रध्वज नामका एक बड़ा भारी निशान खड़ा कियाजाता है, जिसके मूलमें सुवर्णकी बनी हुई इन्द्रकी छोटी मूर्ति पूजन करके रखदी जाती है. इस उत्सवपर महाराजाधिराज बड़े जुलूसके साथ राज्यके मन्त्री तथा कुल अफ्सरों सहित सवारी करके उस स्थानपर आते हैं. द्वादशीके दिनसे ८ दिनतक बराबर मेला रहता है, हरएक मुहल्लेमें इन्द्र और भैरवकी मूर्तियां स्थापित कीजाकर उनका पूजन होता है. मेलेके शुरूसे अख़ीरतक रात्रिके समय हर रोज़ नगरमें रौशनी होती है, और सन्ध्या समयसे आधी रात गयेतक हरएक क़िस्मके नाच व राग रंग हुआ करते हैं, नाचने वालोंको सर्कारसे इन्आम मिलता है, इसमें एक स्वांग भी होता है, याने रात्रिके समय भकू (भूत) नामके एक मनुष्यके मुंहपर भैरवका चिह्रा बांधकर उसके हाथमें खड्ग देदिया जाता है, और उसके साम्हने एक भैंसेको मद्य पिलाकर छोड़ देते हैं, जिसे वह खड्गसे मारकर उसका खून पीलेता है. द्वादशीकी रात्रिको तमाम नगरके स्त्री व पुरुष हाथोंमें धूप लेलेकर नगर प्रदक्षिणा करते हैं; चतुर्दशीको कुमारी देवीकी रथयात्रा होती है, और उसी दिन महाराजाधिराज भी फ़ौज सहित जुलूसकी सवारी करते हैं. जब यह रथ नगर प्रदक्षिणा करके महलोंमें पहुंचता है, उस समय महलके बाहिर एक बड़े चबूतरेपर महाराजाधिराज सिंहासन पर विराजमान होकर एक बड़ा दर्बार करते हैं, जिसमें नगरके कुल महाजन लोग राजाके दर्शनोंको आते हैं. इसी रात्रिको नेवार जातिकी लड़कियां नगरके कुल देवताओंके स्थानोंपर दीपक जलाती हैं. आश्विन कृष्ण ४ के दिन फिर रथयात्रा होती है, और रात्रिके समय ऊपर बयान किया हुआ इन्द्रध्वज गिराया जाकर

बागमती नदीमें बहादिया जाता है. और पचली भैरवका मेला आश्विन शुक्ल ५ को होता है. काठमांडूके गिर्द शहरपनाह नहीं है; नेवार जातिके राजा लक्ष्मणसिंहका बनवाया हुआ काष्ठका एक बहुत बड़ा मकान शहरके बीचमें है, जिसके कारण वह काठमांडू नामसे प्रसिद्ध हुआ; इस मकानकी निस्बत बयान किया जाता है, कि यह ३०० वर्ष पहिले याने, विक्रमी १६४३ [हि० ९९४ = ई० १५८६] में तय्यार कराया गया था.

पाटण- यह शहर काठमांडूसे २ मील फ़ासिलहपर दक्षिण पूर्व कोणमें क़रीब २०००० वीस हज़ार घरोंकी बस्तीका है, जहां चार पल्टनें और एक जेनरल रहता है. यहांपर अगले नेवार राजाओंके बनवाये हुए तथा लाल मछेन्द्रनाथ व श्रीकृष्णके मन्दिर हैं. लाल मछेन्द्रनाथकी यात्रा सालमें वैशाखसे आषाढ़के महीनेतक होती है, इनका पूजन बौद्ध लोग करते हैं. मूर्तिको वैशाख कृष्ण १ के दिन स्नान कराने बाद वैशाख शुक्ल १ को रथमें बिठाकर मन्दिरसे बाहिर लाते, और प्रति दिन एक एक मुहल्लेमें फिराकर "जावलाखेल" नामक मैदानमें लेजाते हैं. यह रथ (१) बहुत बड़ा है, जिसको बैलों वग़ैरहकी एवज़ आदमी रस्सोंसे खेंचते हैं, और वह बड़ी मुश्किलसे कई दिनोंमें नगरके भीतर घूमकर मैदानमें पहुंचता है. यह स्थान पाटण शहरके बाहिर दक्षिण ओर आध मीलके फ़ासिलहपर मए एक छोटे तालाबके वाक़े है, इस मैदानमें यात्राकी समाप्तिके दिन राजा भी काठमांडूसे सेना समेत सवारी करके आते हैं. फिर लाल मछेन्द्रनाथका एक बहुत पुराना कुर्ता, जो मन्दिरमें रहता है, मैदानमें रथके ऊपरसे सब लोगोंको दिखाया जाता है, और बाद उसके मूर्तिको खट (विमान) में बिठाकर बुंगमती नामके ग्राममें, जो पाटणसे १ मील पूर्व रुख़को वाक़े है, लेजाते हैं, जहांपर एक मन्दिर बना हुआ है, उसमें उस मूर्तिको लेजाकर स्थापित कर देते हैं और छः महीनेतक वहां रखने बाद खट (विमान) पर बिठाकर पाटणके मन्दिरमें लेआते हैं. ग्यारह वर्ष पर्यन्त इसी तरहपर यात्रा होती रहती है, बारहवें वर्ष सालभरके लिये इस मूर्तिको बुंगमतीके मन्दिरमें ही रहने देते हैं, और वैशाख शुक्ल १ को खट (विमान) में बिठाकर रीतिके अनुसार शहरके अन्दर घुमाने तथा "जावलाखेल" मैदानमें लेजाने बाद वापस उसी (बुंगमतीके) मन्दिरमें लेआते हैं.

भदगांव- काठमांडूसे ६ मील पूर्व १२००० घरोंकी बस्तीका एक बड़ा नगर है; जहां चार पल्टनें व एक जेनरल रहता है. इसमें नेवार राजाओंके महलोंके अलावह दत्तात्रेय स्वामीका एक बहुत बड़ा सुन्दर और प्रसिद्ध देवालय और आकाश-भैरवका एक मन्दिर है. इस स्थानपर सालभरमें एक बार मेष संक्रांतिको बिसक्याट

(१) नयपालमें कुल देवताओंके रथोंको यात्राके समय आदमी ही खेंचते हैं.

यात्राके नामसे एक प्रसिद्ध मेला भरता है, जिसमें नयपालके राजा भी जुलूसकी सवारीसे आते हैं. भैरवकी पूजा आचार्य (नेवार) लोग करते हैं; यात्राके प्रारंभसे एक दिन पहिले मन्दिरके बाहिर वाले मैदानमें, जहां एक लम्बा काठका स्तम्भ गाड़ दिया जाता है, पंडे लोग भैरवकी मूर्तिको रथमें विठाकर लेजाते हैं, और उस स्तम्भको गिराने बाद, जो मेलेका चिन्ह है, मूर्तिको रथमें विठाकर वापस मन्दिरमें लेआते हैं.

कीर्तिपुर - पहाड़की एक छोटी टेकरीके ऊपर काठमांडूसे १ कोस दक्षिण, अनुमान ७०० घरोंकी आबादी है, जहां बाग भैरवका एक प्रसिद्ध मन्दिर है.

ठीमी- काठमांडूसे पूर्व तरफ़ दो कोसके फ़ासिलहपर ७००० घरोंकी वस्तीका एक छोटा क़स्बह है, जहां वालकुमारी नामक देवीका एक प्रसिद्ध देवालय है; इस देवीकी खटयात्रा मकर संक्रांतिकी रात्रिको होती है, जिसमें यहांके सर्व साधारण लोग जलती हुई मशॅ़अ़लें हाथोंमें लिये हुए देवीको खटमें विठाकर वस्तीके भीतर घुमाते हैं.

देव पाटण- काठमांडूसे दो मील पूर्वोत्तरको किरांति वंशी राजाओंके समय नयपालके देवपाल नामी क्षत्रीका वसाया हुआ एक छोटासा ग्राम है; यहांपर पशुपतिनाथ महादेव (१) का एक बहुत बड़ा लिंग और प्रसिद्ध मन्दिर है, जिसकी पूजा दक्षिणी महाराष्ट्र लोग करते हैं. इस देवस्थानकी यात्रा (त्रिशूल यात्रा) में, जो आषाढ़ महीनेमें होती है, नेवार जातिके बहुत से लोग एकट्ठे होते हैं, और अपनी जातिके तीन छोटे बालकोंको एक तख़्तमें त्रिशूलोंके ऊपर सीधे लिटाकर वस्तीमें घुमाते हैं. इसके सिवा शिवरात्रिपर एक बड़ा भारी मेला होता है. जिसमें बहुत दूर दूर स्थानोंके यात्री आते हैं.

गुह्यकाली देवी- यह स्थान पशुपतिनाथ महादेवसे पाव मीलके फ़ासिलहपर वाक़े है; यहां कोई मूर्ति नहीं है, सिर्फ़ मन्दिरके भीतर बहुत सकड़े मुंहका एक अथाह गहरा कुण्ड है, जिसमें हाथका पंजा समा सके. कहते हैं, कि यह हमेशह भरा रहता है, और इसके पानीमें एक प्रकारका उबाल आता रहता है. कुण्डके आसपास मन्दिरमें सुवर्णके पतरे जड़े हुए हैं, और मूर्तिकी जगह कुण्डकी पूजा होती है.

---

(१) बौद्धोंके समयमें यह ज़ियादह प्रख्यात नहीं थे, लेकिन् पीछेसे शंकराचार्यने इनको अधिक प्रसिद्ध किया, और दक्षिणसे महाराष्ट्र लोगोंको बुलाकर उनकी सेवाके लिये नियत किया, उस समयसे अभीतक वहां यही दस्तूर चला आता है, कि जब कोई पुजारी मरजाता अथवा किसी कारणसे पूजन करनेके अयोग्य समझा जाता है, तो दक्षिणी हिन्दुस्तानसे ही नया पुजारी बुलाया जाता है, नयपालमें उत्पन्न होनेवाली सन्तानको पूजनका काम नहीं सौंपा जाता.

सांखू- काठमांडूसे चार कोस उत्तर पूर्व एक छोटा ग्राम है. इस ग्रामके पास ही पूर्वोत्तर कोणमें एक पहाड़के ऊपर आध कोस चढ़कर बद्रजोगिनी देवीका मन्दिर है, जहां चैत्र शुक्ल १५ को खट यात्रा होती है. इस यात्रामें दो तीन दिनतक कोई मनुष्य जूता पहिरकर नहीं जासक्ता.

नयपालके सूर्यवंशी खानदानके ग्यारहवें राजा हरिदत्त वर्मनके बनाये हुए चांगूनारायण, शिखनारायण, इचंगूनारायण और विशंखूनारायणके चार मन्दिर काठमांडूसे चारों दिशाको वाके हैं; इनमेंसे चांगूनारायणका मन्दिर काठमांडूसे पूर्वोत्तर कोणमें ३ कोसके फ़ासिलहपर एक अति प्रसिद्ध स्थान है, जहां डेढ़ सौ अथवा दो सौ घरोंकी आबादी है. वर्सातके दिनोंमें काठमांडूके मैदानके तालाबों तथा नदियोंके दहोंमेंसे जो एक प्रकारका धूआं सर्पकी तरह बल खाता हुआ निकलता है, वह चांगूनारायणके मन्दिरके ऊपर होकर ऊंचा चले जाने बाद दिखाई नहीं देता (१). प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल ११ को नयपालके निवासी एक दिनमें ऊपर लिखे हुए चारों स्थानोंके दर्शन करते हैं, जिसमें उनको बीस या बाईस कोसका सफ़र करना पड़ता है.

बालाजी - काठमांडूसे एक कोसके फ़ासिलहपर पचास क़दम लम्बा चौड़ा एक कुण्ड है, जिसमें सर्कारी पाली हुई मछलियां रहती हैं. यहांका पानी २२ धाराओंमें होकर निकलता, और अख़ीरमें विष्णुमती नदीसे जामिलता है. इस कुण्डके पास ही पूर्वकी तरफ़ एक छोटासा दूसरा कुण्ड है, जिसके बीचमें जलशाईनारायण (बालाजी) की एक सोती हुई चतुर्भुज मूर्ति रक्खी है.

बूढ़ा नीलकण्ठ - काठमांडूसे उत्तर तीन कोसकी दूरीपर अनुमान १०० घरोंकी बस्तीका एक छोटा गांव है, यहां दश पन्द्रह हाथ लम्बी एक चतुर्भुज मूर्ति एक कुण्डके बीचमें आड़ी रक्खी हुई है; लेकिन् इस स्थानपर किसी कारणसे नयपालके राजा नहीं जाते, इसलिये उक्त जलशाई मूर्तिकी एक छोटीसी नक़्ली प्रतिमा बनाकर बालाजीके कुण्डमें जलके अन्दर शयन करादी गई है.

ये ऊपर लिखे हुए स्थान चारों तरफ़ पहाड़ोंसे घिरे हुए एक बड़े मैदानमें, जिसकी लम्बाई १५ मील और चौड़ाई १३ मील है, क़रीब क़रीब वाके हैं, और

(१) चांगू नारायणके मन्दिरमें विष्णुकी रीतिके अनुसार गरुड़की मूर्ति भी है. लोग कहते हैं, कि इन तलाइयोंमेंसे गरुड़ सर्पको लेजाता है, जो धुएंकी मानिन्द दीख पड़ता है, उस वक़ गरुड़की मूर्तिपर पसीनेकी तरह पानी निकलने लगता है, जिसको वहांके लोग वस्त्रसे पूंछ लेते हैं. ऐसा भी कहते हैं, कि जहां कहीं वह वस्त्र रहता है वहां सर्पका भय नहीं होता.

इनके आस पास होकर बागमती, विष्णुमती, रुद्रमती अथवा धोबीखोला और मनोहरा आदि कई छोटी बड़ी नदियां बहती हैं.

नवाकोट- यह काठमांडूसे उत्तर पश्चिम दस कोसके फ़ासिलहपर अनुमान एक हज़ार घरोंकी आबादीका छोटा क़स्बह है; यहां एक भैरवी देवीका प्राचीन मन्दिर है, जिसकी सेवा नेवार जातिकी उपजातियोंमेंसे ज्यापू लोग करते हैं. इसकी यात्रा हर साल चैत्र शुक्ल १५ को होती है, जिसमें वहांके मुख्य पुजारी या भोपा, जिनको नयपालमें धामी कहा जाता है, अपने मुंहपर एक चिह्रा (देवीका) बांध लेते हैं. इन धामी (भोपा) लोगोंमें जब कोई पुरुष मरजाता है, तो उसके साथ एक सती भी ज़रूर होती है; ये लोग हमेशह नंगे सिर रहते हैं, और राजा अथवा किसी अन्य मनुष्यको सलाम कभी नहीं करते.

गोरखा- काठमांडूसे २६ कोस पश्चिममें, पांच सौ या छः सौ घरोंकी बस्ती है. यहांपर गोरखनाथ, महाकाली और मनोकामना देवीके प्रसिद्ध मन्दिर हैं, जिनकी यात्राके लिये नयपाल देशके सैकड़ों यात्री प्रति साल एकत्र होते हैं. मनोकामना की यात्रामें बकरोंका बलीदान अधिक होता है.

गुसाईंस्थान - काठमांडूसे उत्तर तरफ़ २५ कोसकी दूरीपर एक पहाड़ी शिखर है, जिसके दक्षिणी विभागमें एक स्थानसे जलकी तीन धारा निकलकर उस कुण्डमें गिरती हैं, जो त्रिशूली (१) नदीका निकास है. इस कुण्डको गुसाईं कुण्ड (नीलकण्ठका कुण्ड) कहते हैं. पहाड़की चोटीपर ज़ियादहतर बर्फ़ जमा रहता है, जिसके कारण वहां कोई मनुष्य नहीं जासक्ता. श्रावण शुक्ल १५ को महादेवकी यात्रापर यहां बहुतसे लोग एकट्ठे होते हैं.

मुक्तिनाथ- काठमांडूसे पश्चिम अनुमान ६५ कोसके फ़ासिलहपर पहाड़में शिवका एक प्रसिद्ध स्थान है, जिसकी यात्राके लिये हर साल बहुतसे देशी व विदेशी लोग आते हैं. कृष्णा गंडकी नदी भी इसी स्थानसे निकली है.

पाल्पा (तानसेन)- राजधानी काठमांडूसे पश्चिम, ६१ कोसके फ़ासिलहपर १००० घरोंकी बस्ती है, जहां १५०० सिपाही तथा एक जेनरल रहता है. यह नगर एक ऊंचे पहाड़के ऊपर बसाहुआ है, यहांके सिपाही वग़ैरह लोग सर्दीके मौसममें नीचेकी तरफ़ बटोल स्थानमें आकर रहते हैं.

---

(१) इसकी निस्बत नयपाली लोग कहते हैं, कि जब महादेवने ज़हर पीया था, तब इस पहाड़ में त्रिशूल खोंसा, और उसके गाड़नेसे जो जलकी तीन धारा उत्पन्न हुईं उनके नीचे शयन करके उन्होंने ज़हरकी तापको बुझाया, और इसी सबबसे इसका नाम त्रिशूली नदी पड़ा.

वटोल- काठमांडूसे ६८ कोसकी दूरीपर तानसेनके नीचे एक छोटासा ग्राम है. यहां आबादी नहीं है, सिर्फ़ सर्दीके दिनोंमें तानसेनकी फ़ौज और वहांके दूकानदार वग़ैरह आकर निवास करते हैं.

प्यूठाना- राजधानी काठमांडूसे ८६ कोसके अनुमान पश्चिम रुख़को, राज्यके ख़ास बड़े मेगज़िन्का स्थान है, जहां एक कप्तान चालीस या पचास जवानों सहित रहता है.

सल्ल्याना- यह क़स्बह राजधानी काठमांडूसे क़रीब ११० कोसके फ़ासिलह पर पश्चिमकी तरफ़ वाक़े है, जिसमें १ कम्पनी और कर्नेल रहता है.

शिलगढ़ी- राजधानीसे १७० कोस दूर, पहाड़के ऊपर एक गढ़ी है, जहां १ कर्नेल और १०० जवान रहते हैं, परन्तु यह फ़ासिलह केवल पहाड़ी रास्तहके घुमावके सबबसे है.

देवघाट- यह काठमांडूसे दक्षिण, चितवनकी झाड़ीके पास अनुमान ३० कोस के फ़ासिलहपर, जिस जगहमें होकर त्रिशूल गंगा निकली है, वाक़े है. यहां हर साल मकर संक्रांतिपर एक बड़ा मेला होता है, जिसमें नयपालके बहुतसे यात्री लोग त्रिशूल गंगाका स्नान करनेको आते हैं. यह मेला एक महीनेतक बराबर रहता है, इसमें किसीक़द्र हिन्दुस्तानी व पहाड़ी मालकी ख़रीद व फ़रोख़्त भी होती है, याने कपड़ा व बर्तन वग़ैरह हिन्दुस्तानसे और कम्मल, खुकुड़ी (छुरा) तथा लोहेके बर्तन पहाड़ी मक़ामातसे आते हैं. इस मेलेमें राजा और वज़ीर भी अक्सर आते हैं. देवघाटमें राज्यकी तरफ़से एक सूबह मए सिपाहियों वग़ैरहके रहता है.

धनकुटा- काठमांडूसे पूर्व, ७७ कोसपर ४०० घरोंकी आबादी है, यहां ५०० सिपाही और एक जेनरल रहता है.

इलाम- राजधानीसे पूर्व, ९० कोसकी दूरीपर एक छोटासा ग्राम है, जहां ५०० सिपाही और एक कर्नेल रहता है.

उदयपुर गढ़ी- जो राजधानीसे पूर्व ८० या ८५ कोस दूर एक पहाड़ीके ऊपर वाक़े है, यहां १ कर्नेल और १०० सिपाही रहते हैं.

सींधुली गढ़ी- यह एक छोटी गढ़ी है, जो राजधानीसे २४ कोस पूर्व दिशाको वाक़े है; यहां एक कर्नेल और २०० सिपाही राज्यकी तरफ़से नियत हैं.

चीसापानी- यह भी एक मुख्य गढ़ी है, जो राजधानीसे ९ कोस दक्षिण उस सड़कपर वाक़े है, जो हिन्दुस्तानकी तरफ़ आती है. यहां २०० सिपाही, दो अथवा तीन तोप और एक मेजर कप्तान रहता है. इनके सिवा और कई छोटी छोटी गढ़ियां और बहुतसे स्थान हैं, जहां अक्सर सर्कारी सिपाही वग़ैरह ज़ाबितहके वास्ते नियत हैं.

सिम्भू - राजधानीसे १ मील पश्चिम, एक छोटी टेकरीके ऊपर बौद्धका मन्दिर है. इस मन्दिरमें एक दीपक घृतका हमेशह जलता रहता है, जिसकी बाबत वहांके लोग कहते हैं, कि इसको एक अरसह गुज़रा, जबसे यह जलाया गया है, इस वक्तक बीचमें कभी नहीं बुझा.

पोखरा - यह स्थान काठमांडूसे ४६ कोस पश्चिमकी तरफ़ श्वेतगंडकी नदीपर सतहुं और तनहुंके बीच एक बड़ा शहर है, जहां एक कर्नेल मए ५०० सिपाहियोंके रहता है. इस मकामपर प्रति वर्ष एक बड़ा मेला होता है, जिसमें तांबेकी बनी हुई उम्दह कारीगरीकी चीज़ें और उनके अलावह ज़िलेकी अन्न आदि पैदावारी वस्तुएं बेची जाती हैं. यह क़स्बह गोरखा लोगोंके क़ब्ज़हमें आनेसे पहिले उन छोटी छोटी २४ स्वाधीन रियासतोंकी राजधानियोंमेंसे एक था, जो प्राचीन समयमें सप्त-गंडकी नदीके सबसे बड़े भागपर फैली हुई थीं. इसका नाम पोखरा रक्खे जानेकी वज्ह यह है, कि नयपाली भाषामें पोखरा शब्दका अर्थ एक तालाब या बांधा हुआ पानीका झील है, और जोकि इस स्थानके पास घाटीमें बहुतसी झीलें हैं, इसलिये घाटी और स्थान, दोनों पोखरा नामसे प्रसिद्ध हैं.

मश्हूर मेले - इस देशमें पोखरा व देवघाटके सिवा और कोई ऐसा मेला नहीं होता, जिसमें किसी क़िस्मकी ख़रीद व फ़रोख़्त होती हो, अल्बत्तह जहां जहां प्रसिद्ध देवालय आदि हैं, वहां हर एक जगह नियत समयपर यात्राके लिये देश वासियोंकी एक बड़ी भीड़ जमा होती है.

व्यापार - नयपालमें कपड़ेके सिवा, जो हिन्दुस्तानसे जाता है, दूसरे देशोंकी और किसी चीज़का व्यापार नहीं होता, अल्बत्तह तिब्बतसे कस्तूरी, सोना, चमर और चाय वगैरह चीज़ें आती हैं, जो हिन्दुस्तानमें आकर बिकती हैं; तिब्बतके टांगन और घोड़े केवल नयपालतक आते हैं, आगे नहीं बढ़ते, परन्तु नयपालकी तराईसे जो हाथी पकड़े जाते हैं, वे हिन्दुस्तानमें लाये जाकर पटना और हरिहरक्षेत्र मकामोंपर बिकते हैं. हिन्दुस्तानमें ज़ियादहतर हाथी दांत इसी जगहसे आता है, और चीन वाले भी हाथी दांत व मोरपंख यहांसे ही ले जाते हैं. उदयपुरगढ़ीके गिर्द व नवाहमें बड़ी इलायची पैदा होती है, जिसके बन्दोबस्तके लिये उदयपुरगढ़ी व पटनामें, जो इस व्यापारकी आड़तके मुख्य स्थान हैं, एक एक कर्नेल राज्यकी तरफ़से रहता है. इन इलायचियोंकी आमदसे एक बड़ी रक़म नयपालके ख़ज़ानहमें ज़मा होती है.

सड़कें व रास्ते - नयपालके मुख्य रास्तोंमेंसे पहिली सड़क नयपालसे सीधी पश्चिमी ओर महाकाली (सरजू) नदीके झूल घाटपर निकली है; दूसरी नयपालसे पूर्व

दार्जिलिंगके पास निकलती है; और तीसरी हिन्दुस्तानसे आने जानेकी मुख्य सड़क है, जो चीसापानी गढ़ीसे उतरकर पश्चिम तरफ़ हेटोंड़ा और सीमरावास स्थानोंमें होकर अंग्रेज़ी अमल्दारीमें आदापुरके पास निकलती है. इसके सिवा हिन्दुस्तानसे आने जानेका कोई दूसरा मुख्य रास्तह नहीं है, लेकिन् वहांके देशी लोग पूर्व तरफ़ सींधुली गढ़ी, और पश्चिमी तरफ़ पाल्पा व बटोलके रास्तोंसे भी आ जा सक्ते हैं. उत्तर दिशामें तिब्बत और चीनकी तरफ़से आने जानेके दो रास्ते हैं, जिनमेंसे पहिला रास्तह कुती स्थानके पास और दूसरा केरुंकी तरफ़ होकर गुज़रता है.

नयपालका प्राचीन इतिहास.

नयपालके देशमें वर्तमान ख़ानदानसे पहिले कई मुख़्तलिफ़ ख़ानदानोंके राजा जुदा जुदा इलाक़ोंमें राज्य करते थे, जिनके कुर्सीनामे और किसी क़द्र तवारीख़ी हालात, पंडित भगवानलाल इन्द्रजी और डॉक्टर बूलरने, उन चन्द पुस्तकोंसे चुनकर, जिनमें नयपालके प्राचीन राजाओंकी वंशावली दर्ज है, और जो उनको वहांके पुस्तकालयोंमें मिली हैं, इंडियन ऐन्टिकेरीकी तेरहवीं जिल्दके ४११ एष्ठसे ४२८ तक में दर्ज करवाये हैं, उन्हींके अनुसार संवतोंको छोड़कर केवल राजाओंके नाम और उनका किसी क़द्र तवारीख़ी हाल मुख़्तसर तौरपर यहां भी दर्ज किया जाता है. संवतोंको छोड़-देनेका कारण यह है, कि उनका कुछ ठीक पता नहीं लगता, बल्कि उक्त पंडित और साहिबको भी उनके सहीह होनेपर विश्वास नहीं है. इस वंशावलीके बहुत से नाम, जिस क्रमसे नयपालके लेखमें दर्ज हैं, उसी तरह मिलते हैं, इससे मालूम होता है, कि वंशावली बनाने वालेके पास ऐतिहासिक साधन होंगे, परन्तु साल संवतों वगैरहमें राजपूतानहकी तवारीख़ोंके मुवाफ़िक़ ही हेर फेर हुआ है.

नम्बर १- माता तीर्थका गोपाल वंशः-

१-भुक्तमानगत, २-जयगुप्त, ३-परमगुप्त, ४-हर्षगुप्त, ५-भीमगुप्त, ६-मणिगुप्त, ७-विष्णुगुप्त और ८- यक्षगुप्त, जो लावलद मरा.

नम्बर २- अहीर वंश (हिन्दुस्तानका):-

१- वरसिंह, २- जयमतिसिंह, और ३- भुवनसिंह, जिसको पूर्व (किरांति) वालोंने जीता.

नम्बर ३- किरांति खानदान, जो गोकरणमें काबिज़ रहाः-

१- यलम्बर; २- पवी; ३- स्कंधर; ४- वलम्ब; ५- हती; ६- हूमति; ७- जितेदस्ती; ८- गली; ९- पुष्क; १०- सूयर्म; ११- पर्व; १२- थुंक, जिसको राइट साहिबने "बंक" लिखा है; १३- स्वनन्द; १४- स्थुंको; १५- गिघ्री (गिध्री); १६- नने; १७- लुक; १८- थोर; १९- थोको; २०- वर्म; २१- गुज; २२- पुष्कर; २३- केसू; २४- सुन्स, जिसको राइट साहिबने सुग लिखा है; २५- सम्मू, जिसका नाम राइट साहिबने सन्स, और किर्कपैट्रिक साहिबने जुश लिखा है; २६- गुणन; २७- खिम्भू; २८- पटुक, जिसपर सोमवंशी राजाओंने हमलह किया था; और २९- गस्ती, जिसने सोमवंशियोंके मुक़ाबलहसे भागकर गोदावरीके पास पुलोच्छा नामी मक़ामपर एक नया क़िला बनाया, और अख़ीरमें इस खानदानका राज्य सोमवंशियोंके हाथमें गया.

नम्बर ४- सोम वंशीः-

१- निमिष; २- मनाक्ष, जिसको राइट साहिब मताक्ष पढ़ते हैं; ३- काकवर्मन्; ४- पशुप्रेक्षदेव, इसने पशुपतिनाथके मन्दिरका जीर्णोद्वार कराया था; और ५- भास्कर वर्मन्, जिसने संपूर्ण भारतवर्षपर विजय पाई, और देवपाटण नगरको बढ़ाकर पशुपतिनाथके पूजनके नियम ताम्रपत्रपर खुदाकर चारुमती विहारमें रखवाये; इसके कोई सन्तान नहीं हुई, इसलिये इसने सूर्य वंशी खानदानके पहिले राजाको गोद लिया.

नम्बर ५- सूर्य वंशी या लच्छवीः-

१- भूमि वर्मन्, इसने वाणेश्वरको अपनी राजधानी बनाया; २- चन्द्र वर्मन्; ३- जयवर्मन्; ४- वर्पवर्मन्; ५- सर्ववर्मन्; ६- पृथ्वीवर्मन्; ७- ज्येष्ठवर्मन्; ८- हरिवर्मन्; ९- कुवेरवर्मन्; १०- सिद्धिवर्मन्; ११- हरिदत्तवर्मन्, जिसने चांगूनारायण, शिखनारायण, इचंगूनारायण, और विशंखूनारायण नामी चार देवताओंके मन्दिर और बूढ़ा नीलकण्ठमें जलशयनका मन्दिर बनवाया; १२- वसुदत्तवर्मन्; १३- पतिवर्मन्; १४- शिववृद्धिवर्मन्; १५- वसन्तवर्मन्; १६- शिववर्मन्; १७- रुद्रदेववर्मन्; १८- वृषदेववर्मन्; इसने कई विहार बनवाये, और लोकेश्वर आदि बौद्ध देवताओंकी मूर्तियां स्थापन कीं; इसका भाई बालार्चन भी बौद्ध था. इसी वृषदेवके वक़्तमें शंकराचार्यने दक्षिणी हिन्दुस्तानसे नयपालमें आकर, बौद्ध धर्मका नाश किया. १९- शंकरदेववर्मन्, इसने पशुपतिनाथमें एक त्रिशूल बनवाया; २०- धर्मदेव; २१- मानदेव, जिसने चक्र विहार बनवाया, और कोई कहते हैं, कि इसने खासा चैत्य बनवाया था; २२- महीदेव, जिसको राइट और किर्कपैट्रिक महादेव

लिखते हैं; २३- वसन्तदेव; २४- उदयदेव वर्मन्; २५- मानदेव वर्मन्; २६- गुणकामदेव वर्मन्; २७- शिवदेव वर्मन्, जिसने देवपाटणको एक बड़ा शहर बनाकर उसे अपनी राजधानी क़रार दिया, और शाक्त धर्मका पुनरोद्धार करके आप भिक्षू बना, इसके बेटे पुण्यदेव वर्मन्ने भी अपने बापका अनुकरण किया; २८- नरेन्द्रदेव वर्मन्; २९- भीमदेव वर्मन्; ३०- विष्णुदेव वर्मन्; और ३१- विश्वदेव वर्मन्, जिसने अपनी बेटी ठकुरी वंशके राजा अंशु वर्मन्को व्याही.

नम्बर ६- ठकुरी खानदानः-

१- अंशु वर्मन्, जो सूर्य वंशके आख़री राजा विश्व वर्मन्का दामाद (जमाई) था; २- कीर्ति वर्मन्; ३- भीमार्जुन; ४- नन्ददेव; ५- वीरदेव; ६- चन्द्रकेतुदेव; ७- नरेन्द्रदेव; ८- वरदेव; ९- शंकरदेव; १०- वर्धमानदेव; ११- बलिदेव; १२- जयदेव; १३- बालार्जुनदेव; १४- विक्रमदेव; १५- गुणकामदेव; १६- भोजदेव; १७- लक्ष्मीकामदेव; और १८- जयकामदेव; इस राजाके औलाद न होनेसे नवाकोटके ठकुरी खानदान वाले राज्यके मालिक बने.

नम्बर ७- नवाकोटका ठकुरी खानदानः-

१- भास्करदेव; २- बलदेव; ३- पद्मदेव; ४- नागार्जुनदेव; और ५ शंकरदेव, जिसके मरजानेपर अंशु वर्मन्के वंश वालोंमेंसे वामदेव नामी पुरुषने ललितपट्टन और कांतिपुरके सर्दारोंकी मददसे नवाकोटके ठकुरी खानदान वालोंको निकालकर अपना अमल जमाया.

नम्बर ८- अंशु वर्मन्का दूसरा ठकुरी खानदानः-

१- वामदेव; २- हर्षदेव; ३- सदाशिवदेव; ४- मानदेव, यह राजा चक्रविहारमें यति होगया था; ५- नरसिंहदेव; ६- नन्ददेव; ७- रुद्रदेव; ८- मित्रदेव; ९- अरिदेव, जिसने अपने पुत्रको मल्लका ख़िताब दिया; १०- अभयमल्ल; ११- जयदेवमल्ल, जिसने कांतिपुर और ललितपट्टनमें राज्य किया; इसके छोटे भाई १२- आनन्दमल्लने भक्तपुर (भदगांव) बनेपा, पनौती, नाला, धुलीखेल, खंडपू, चौकोट और सांगा नामके आठ शहर बसाये, और भदगांवमें रहना इख़्तियार किया. इन दोनों भाइयोंके अह्द हुकूमतमें दक्षिणी हिन्दुस्तानके कर्णाटक प्रान्तसे चन्द लोग नयपालमें आये, और इसी समयसे उस देशमें उनका जमाव हुआ.

नम्बर ९- कर्णाटक खानदानः-

१- नान्यदेव, जिसने नयपालका कुल मुल्क जीतकर दूसरे ठकुरी वंशके आख़री

राजा जयदेवमल्ल व आनन्दमल्लको तिरहुतकी तरफ़ भगादिया, और आप राज्यका मालिक बना; २- गंगदेव; ३- नरसिंहदेव; ४- शक्तिदेव; ५- रामसिंहदेव; और ६- हरिदेव, जिसने काठमांडूको अपनी राजधानी बनाया, और पाटन (ललितपट्टन) का लश्कर बाग़ी होजानेके समय वहांसे भागकर ठमेलमें पनाह ली. कहते हैं, कि हरिदेवने मगर जातिके एक पुरुषको नौकरीसे बर्तरफ़ करदिया था, इस अदावतके सबब वह (मगर) मुकुन्दसेन नामी एक राजाको काठमांडूपर चढ़ा लाया, जिसके सिपाहियोंने कई वहांकी पवित्र मूर्तियोंको तोड़ डाला, और वे मछेन्द्रनाथके मन्दिरमेंसे भैरवकी मूर्तिको उठाकर पाल्पामें लेगये; लेकिन् नयपाल वालोंके एतिक़ाद और दन्त कथाके अनुसार, जिसको पण्डित भगवानलाल और डॉक्टर बूलरने भी इंडियन एन्टिक्वेरीमें दर्ज कराया है, पशुपतिनाथके कोपसे मुकुन्दसेनका सारा लश्कर हैज़ेमें आकर तबाह होगया, और वह (मुकुन्दसेन) भी योगीके वेषमें निकलकर देवीघाटपर जाकर मरगया.

इसके बाद ७ या ८ वर्षतक नयपालमें लगातार बद इन्तिज़ामी फैलती रही और यह मौक़ा पाकर नवाकोटके बैस ठकुरी ख़ानदान वालोंने मुल्कपर दोबारह क़ाबिज़ होनेकी तय्यारियां कीं; ललितपट्टनके हरएक टोल (शहरके मुहल्ले) में अलहदह अलहदह राजा बन बैठे, और कान्तिपुर (काठमांडू) में एकही समय बारह राजा राज्य करने लगे. भद्गांवपर भी ठकुरी वंश वालोंने अपना क़बज़ह जा जमाया, और वहां बौद्ध मज़्हबके बहुतसे मन्दिर तथा विहार बनवाये. इसके बाद सूर्य वंशके राजा हरिसिंहदेवने, जो मुसल्मानोंके हाथसे निकाला जानेके कारण अयोध्या छोड़कर तराईमें आबसा था, नयपालमें दाख़िल हुआ, और उसने भद्गांवपर अपना अमल दख़्ल जमाया. नयपाली दन्त कथामें ऐसा मशहूर है, कि उसको तुलजा भवानी देवीकी तरफ़से इस देशमें आनेका हुक्म हुआ था.

नम्बर १०- भद्गांवका सूर्य वंशी ख़ानदानः-

१- हरिसिंहदेव; २- मतिसिंहदेव; ३- शक्तिसिंहदेव; और ४- श्यामसिंहदेव, जिसकी बेटी तिरहुतके मल्ल ख़ानदानमें ब्याही गई थी, और उसके मरने बाद तीसरे ठकुरी ख़ानदानका राज्य क़ाइम हुआ.

नम्बर ११- तीसरा ठकुरी ख़ानदानः--

१-जयभद्रमल्ल; २-नागमल्ल; ३-जयजगत्मल्ल; ४- नागेन्द्रमल्ल; ५- उग्रमल्ल; ६- अशोकमल्ल, जिसने बैस ठकुरियोंको पाटनसे निकाला, और स्वयंभूनाथके पास काशीपुर नामका शहर बसाया; ७-जयस्थितिमल्ल, इसने जाति तथा स्त्रियोंके लिये क़ानून बनाये और बहुतसी मूर्तियां स्थापन कीं, और कई मन्दिर भी तय्यार कराये; ८- यक्षमल्ल, इसने भद्गांवकी शहर पनाह तय्यार करवाई, और उसके मुख्य दर्वाज़हमें एक प्रशस्ति

काइम की, जिसमें नयपाली संवत् ५७३ = विक्रमी १५१० [हि० ८५७ = .ई० १४५३] है. इसके तीन बेटे थे, जिनमेंसे सबसे बड़े और सबसे छोटेने तो भदगांव और काठमांडूमें क्रमसे राज्य जमाया, और दूसरा बेटा बनेपा नामके शहरका राजा बना.

तीसरे ठकुरी खानदानके आठवें राजा यक्षमल्लका बेटा ९- जयरायमल्ल भदगांवका राजा हुआ; और उसके बाद १०- सुवर्णमल्ल; ११- प्राणमल्ल; १२- विश्वमल्ल; १३- त्रैलोक्यमल्ल; १४- जगज्ज्योतिर्मल्ल (जयज्योतिर्मल्ल); १५- नरेन्द्रमल्ल; १६- जगत्प्रकाशमल्ल; १७- जितामित्रमल्ल; १८- भूपतीन्द्रमल्ल; और १९- रणजीतमल्ल, जिसके वक़में गोरखा राजा नरभूपालशाहने नयपालपर चढ़ाई की; क्रमसे राज्य करते रहे, और इसी आखरी राजा (रणजीतमल्ल) के मरनेपर भदगांवके वंशका खातिमह हुआ.

ऊपर लिखे हुए आठवें राजा (यक्षमल्ल) का सबसे छोटा बेटा १- रत्नमल्ल था, जिसने काठमांडूमें राज्य किया, और कांतिपुरके ठकुरी खानदानवाले बारह राजाओंको मारकर नवाकोटके ठकुरी राजाओंपर फ़त्ह पाई; इसीके वक़में मुसल्मानोंने नयपालपर हमलह किया था. २- अमरमल्ल; ३- सूर्यमल्ल; ४- नरेन्द्रमल्ल; ५- महीन्द्रमल्ल, जिसने भदगांवके त्रैलोक्यमल्ल राजासे दोस्ती की; ६- सदाशिवदेव, जो अपनी प्रजाके हाथसे निकाला जाकर भदगांवकी तरफ़ गया, और वहां पहुंचने बाद क़ैद किया गया. सदाशिवके बाद उसका छोटा भाई ७- शिवसिंहमल्ल राज्यका मालिक बना; इसके दो बेटे हुए, जिनमेंसे बड़े बेटे लक्ष्मीनरसिंहमल्लने कांतिपुरमें राज्य किया, और छोटे हरिहरसिंहने अपने बापकी मौजूदगीमें ललितपट्टन पाया; ८- लक्ष्मीनरसिंहमल्ल, इसके वक़में गोरखनाथका एक काष्ठका मन्दिर तय्यार कराया-जाकर उसका नाम काठमांडू रक्खा गया, और उसी समयसे शहर कांतिपुर भी काठमांडू नामसे प्रसिद्ध हुआ; ९- प्रतापमल्ल, जिसको कविताका अधिक शौक़ था, और खुद भी कवि था; १०- महीन्द्रमल्ल; ११- भास्करमल्ल, यह राजा बे औलाद मरगया, तब उसकी राणीने अपने पतिके एक दूरवाले रिश्तहदार जगज्जयमल्लको गद्दीपर बिठाया; १२- जगज्जयमल्ल, जिसके राजेन्द्रप्रकाश, जयप्रकाश, राज्यप्रकाश, नरेन्द्रप्रकाश, और चन्द्रप्रकाश नामके पांच बेटे हुए, उनमेंसे १३- जानशीन जयप्रकाशको नयपाली संवत् ८८८ = विक्रमी १८२५ [हि० ११८१ = .ई० १७६८] में गोरखा राजा पृथ्वीनारायणशाहने गद्दीसे खारिज किया.

काठमांडूके राजाओंमेंसे सातवें राजा शिवसिंहका छोटा बेटा, जिसने अपने बापकी मौजूदगीमें ललितपट्टन पाया, पहिला राजा हरिहरसिंह हुआ, २- सिद्धिनृसिंह; ३- श्री निवासमल्ल, इसको काठमांडूके राजा प्रतापमल्लसे लड़ना पड़ा; ४- योगनरेन्द्रमल्ल, जो अपने पुत्रके मरनेसे संसारको छोड़कर विरक्त होगया; ५- महिपतीन्द्र या महीन्द्रमल्ल (काठमांडूका); ६- जययोगप्रकाश; ७- विष्णुमल्ल,

जो इसी शाखाके चौथे राजा योगनरेन्द्रमल्लकी बेटीका लड़का था; ८- राज्यप्रकाश, जो काठमांडूके राजा जगज्जयमल्लका तीसरा बेटा था, और जिसको राजा विष्णुमल्लने राजा बनाया था, लेकिन् प्रधान लोगोंने इसको अन्धा बनाकर एक वर्षके बाद राज्यसे ख़ारिज करदिया; ९- जयप्रकाश, जो पहिले काठमांडूका राजा था, यह भी दो वर्षतक राज्य करने बाद प्रधानोंकी मिलावटसे निकाला गया; १०- विश्वजितमल्ल, जो सातवें राजा विष्णुमल्लकी बेटीका बेटा था, और प्रधानोंके हाथसे मारा गया; ११- दलमर्दन शाह (१), जो नवाकोटसे बुलाया जाकर विश्वजितमल्लके बाद राजा बनाया गया, परन्तु चार वर्ष बाद प्रधानोंने इसे भी निकाल दिया; और इसके पीछे दशवें राजा विश्वजितमल्लके वंशमेंसे १२- तेजनरसिंहको, गद्दीपर बिठाया, यह तीन वर्ष राज्य करने पाया था, कि उसी अ़रसहमें पृथ्वीनारायण शाहने नवाकोटसे आकर मुल्कको जीत लिया.

वर्तमान ख़ानदानका इतिहास.

नयपाल देशके वर्तमान राजा सूर्य वंशी सीसोदिया राजपूतों, याने मेवाड़के महाराणाओंके ख़ानदानमेंसे गिने जाते हैं, परन्तु इनका प्राचीन इतिहास पृथ्वीनारायण-शाहसे पहिलेका बिल्कुल नहीं मिलता, अल्बत्तह पृथ्वीराजरहस्य नामक ग्रंथसे जाना गया है, कि रावल समरसिंहके कनिष्ठ पुत्र कुम्भकरणकी औलादमें इस ख़ानदानके राजा हैं, जो उज्जैन वग़ैरह स्थानोंमें होते हुए उत्तरा खंडकी ओर गये; उनके नाम और किसीक़द्र हाल, जो हमको मिला, यहांपर दर्ज किया जाता हैः-

रावल समरसिंहके कनिष्ठ पुत्र १- कुम्भकरण थे, जिनके वंशमें २- अयुत, ३- वरावर्म, ४- कविवर्म, ५- यशवर्म, ६- उदम्बरराय, ७- भट्टराय, ८- जिल्लराय, ९- अजलराय, १०- अटलराय, ११- तुत्थाराय, १२- भीमसीराय, १३- हरिराय, १४- यृह्मनिकराय, १५- मन्मथराय, १६- भूपालखान, जिसके खाचा और मीचा नामके दो बेटे हुए, उनमेंसे खाचाने मगर लोगोंको मारकर ढोर, गरहुं, सतहुं, और भीरकोट स्थानोंमें अपना अमल किया, और १७- मीचाख़ानने नवाकोटको अपनी राजधानी बनाया, जिसका पुत्र, १८- जयन्तखान, १९- सूर्यखान, २०- मीयांखान, २१- विचित्रखान, २२- जगदेवखान, २३- कुलमण्डनशाह, जिसने कास्कीका राज्य और दिल्लीके बादशाहसे शाहका ख़िताब हासिल किया. कुलमण्डनशाहके सात बेटोंमें

(१) यह पृथ्वीनारायण शाहका छोटा भाई था, और उसीका भेजा हुआ ललित पट्टनमें आया था.

से बड़ा तो अपने पिताके पीछे काश्कीका राजा बना, और छोटोंमेंसे कालूशाहको लमजुंके लोग अपना हाकिम बनानेके लिये कुलमंडनशाहके पाससे मांगकर लेगये, लेकिन् कुछ दिनोंतक अपना मालिक मानने बाद उसे शिकारके बहानेसे एक ऊंचे पहाड़पर लेजाकर मारडाला, और दोबारह कुलमण्डनशाहके पास आकर बहुत कुछ अर्ज़ मारूज़ करने व मुआफ़ी चाहने बाद इक़ार करके दूसरे बेटे २४-असोवन शाहको लेजाकर लमजुंका राजा बनाया. असोवनशाहके दो बेटोंमेंसे पहिला नरहरिशाह लमजुंका मालिक रहा, और दूसरे २५-द्रव्यशाह (१) ने गोरखाकी तरफ़ क़दम बढ़ाकर खस जातिके एक राजाको, जो उस समय वहांकी हुकूमत करता था, मारकर उसके राज्यको अपने क़ब्ज़हमें करलिया; इसी समयसे इस खानदानका नाम गोरखाली मश्हूर हुआ. इस ज़मानहमें वर्तमान नयपाल राज्यकी सीमाके भीतर नेवार आदि भिन्न भिन्न जातिके कई बड़े छोटे खुद मुरूतार राजा थे.

द्रव्यशाहके पीछे २६- पुरन्दरशाह गद्दीपर बैठा, जिसके बाद २७- पूर्णशाह और उनके पीछे उनका छोटा भाई २८-रामशाह अपने मातह्त राज्यका मालिक कहलाया, इसने इलाक़हमें ऐसा उत्तम बन्दोबस्त किया, कि जो अबतक रामशाहका स्थित प्रबन्ध कहलाता है; इनके बाद २९- डम्बरशाह, ३०-श्री कृष्णशाह, ३१- पृथ्वीपतिशाह, ३२-वीरभद्रशाह, और ३३- नरभूपालशाह क्रमसे एक छोटी रियासतके राजा बने. नरभूपालशाहके मरने बाद उनका बेटा, ३४- पृथ्वीनारायणशाह बारह वर्षकी उमरमें गोरखाके राज्य सिंहासनपर बैठा. इस ज़मानहमें गोरखाका राज्य बहुत छोटा था.

३४- पृथ्वीनारायणशाह.

३४- पृथ्वीनारायणशाहने गद्दीपर बैठकर अपने इलाक़हको बढ़ाना और इसी ग़रज़ से आसपासके दूसरे राजाओंपर चढ़ाई करना शुरू किया, यहांतक, कि रफ़्तह रफ़्तह वह धादिंके राजाको मारकर नयाकोटका भी मालिक बनगया. पाटणकी राजधानीमें उस समय प्रधान लोगोंका ऐसा ज़ोर था, कि उन्होंने नेवार जातिके कई राजाओंको लगातार गद्दीसे खारिज व क़त्ल करदिया; आख़िरकार पृथ्वीनारायणशाहका भेजा हुआ उसका छोटा भाई दलमर्दनशाह पाटणका राजा माना गया, परन्तु वह भी चार वर्ष बाद खारिज कियाजाकर उसके बाद अगले राजाओंके वंशमेंसे तेजनरसिंहशाह गद्दीपर बिठाया गया.

विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] में पृथ्वीनारायणशाहने

(१) इनकी निस्बत ऐसा भी सुनाजाता है, कि इनको शालिवाहनी शक १४८१ = वि० १६१६ [हि० ९६६ = ई० १५५९] के लगभग गोरखनाथ मिले थे, और इसी सालमें गोरखाका राज्य उनके क़ब्ज़हमें आया.

काठमांडूके राज्यपर चढ़ाई की, और कुछ अरसहतक लड़ने बाद नयपाली लोगों की मददसे सेना समेत काठमांडूमें पहुंचकर वहांके राज्य सिंहासनपर बैठ-गया, जिसवक्त कि वहांका पहिला राजा (नेवार जातिका) तलेजू देवीके स्थानमें पूजन कररहा था (१). अगर्चि नेवार राजाको इनके आनेकी ख़बर होगई थी, परन्तु पूजन करते समय नियमके अनुसार मन्दिरसे बाहिर न निकल सका, और पूजन समाप्त होने बाद अपनेमें मुक़ाबलह करनेकी ताक़त न देखकर वहांसे भाग गया. पृथ्वीनारायणशाहने काठमांडूपर क़ाबिज़ होकर पाटण और भक्तपुर (भदगांव) का राज्य छीन लिया; वहांके राजाओंने भी काठमांडू वालेकी तरह बिल्कुल मुक़ाबलह नहीं किया, अल्बत्तह कीर्तिपुरकी रअय्यत कुछ अरसहतक इनकी हुकूमतको न मानकर बाग़ी रही, और कई हमले होते रहे, जिनमें पृथ्वीनारायणशाहका भाई दलमर्दनशाह व प्रधान कालू पांडे मारा गया, और मुसाहिबीके कामपर कालू पांडेका बेटा दामोदर पांडे नियत हुआ. आख़रकार पृथ्वीनारायणशाहने कीर्तिपुरको, जो बाक़ी रहगया था, जीतकर शहरके बाशिन्दोंमेंसे बारह वर्षसे अधिक अवस्था वाले कुल आदमियोंकी, मुक़ाबलह करनेके अपराधमें, नाकें कटवा डालीं, और नयपालके तीनों राज्योंको अपने अधिकारमें लेने बाद गोरखा व नयपालका राज्य शामिल करके एक बहुत बड़े मुल्कका मालिक बनगया.

इस (सूर्यवंशी गोरखाली) ख़ानदानमेंसे नयपालका मूल पुरुष या पहिला राजा पृथ्वीनारायणशाहको ही समझना चाहिये, जिसने बहादुरी और हौसिलहको काममें लाकर मुल्कके एक छोटेसे हिस्सहको इतना बढ़ाया, कि उसकी सीमामें कोशी नदीके पार वाला किरांति देश भी अपने राज्यमें मिला लिया, लेकिन् तो भी राज्य-सीमाके अन्दर कई छोटे छोटे खुद मुरूतार रईस बाक़ी रहगये थे, जिनको भी वह अपना मातहत बनाने या राज्यसे निकाल देनेकी फ़िक्र और कोशिशमें लग रहा था; परन्तु विक्रमी १८२८ [हि० ११८५ = ई० १७७१] में यह बहादुर राजा नवा-कोटके जंगलमें शिकार खेलते समय एक शेरके हमलह करनेसे ज़ख़्मी होकर, थोड़ी देर ज़िन्दह रहने बाद उसी दिन इन्तिक़ाल करगया. पृथ्वीनारायणशाहके दो बेटे, सिंहप्रतापशाह और बहादुरशाह थे, जिनमेंसे सिंहप्रतापशाह गद्दीपर बैठा.

---
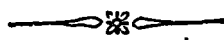
(१) काठमांडूमें भाद्रपद शुक्ल १४ को श्री कुमारीकी रथयात्राके दिन नेवार राजा अपने हाथसे तलेजू देवीका पूजन करते, और महलके आगे राज्य सिंहासन बिछाया जाकर देवीका पूजन करने बाद उसपर बैठते थे, जिसके अनुसार वर्तमान ख़ानदानके राजा भी रथयात्राके दिन उसी जगह सिंहासनपर विराजकर दर्बार करते हैं.

३५- सिंहप्रतापशाह.

३५- सिंहप्रतापशाह भी बड़ा बहादुर और जवांमर्द था, जिसने अपने पिताकी मौजूदगीमें तनहूं व सोमेश्वर आदि कई ज़िलोंको नयपालमें शामिल किया. इस राजाने गद्दीनशीन होने बाद किसी सबबसे अपने छोटे भाई बहादुरशाहको कैद करदिया था, जो कुछ दिनों पीछे राज्यगुरु गजराज मिश्रकी ज़मानतपर छोड़ाजाकर देशके बाहिर निकालदिया गया. सिंहप्रतापशाहके दो बेटे, रणबहादुरशाह और शेरबहादुरशाह थे, जिनमेंसे दूसरेकी पैदाइश नेवार जातिकी एक स्त्रीसे थी. विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = .ई० १७७५] में जब सिंहप्रतापशाहका परलोक वास हुआ, उस समय रणबहादुरशाह, जो बहुत कम .उम्र, याने दूध पीता बच्चा था, नयपालका राजा बनाया गया.

३६- रणबहादुरशाह.

३६- रणबहादुरशाहके बालक होनेके सबब बहादुरशाह, जो नयपालसे निकाला हुआ बेतियामें रहता था, सिंहप्रतापशाहके मरनेकी ख़बर सुनकर फ़ौरन् नयपालकी राजधानी काठमांडूमें आया, और अपने छोटी उम्र वाले भतीजे रणबहादुरशाहको गादी पर बिठाकर आप राज्यमंत्रीके तौर रियासतका काम करने लगा; परन्तु सिंहप्रतापशाहकी राणी (रणबहादुरशाहकी माता) राजेन्द्रलक्ष्मीसे, जो बड़ी बुद्धिमान थी, हमेशह नाइत्तिफ़ाक़ी रहनेके कारण कुछ अरसह पीछे वह दोबारह क़ैद कियाजाकर देशसे निकाला गया, और राज्यका कारबार राजाकी माता राजेन्द्रलक्ष्मी चलाने लगी. यह महाराणी राजनीतिमें बड़ी होशियार थी, इसने सेनाका प्रबन्ध बहुत उत्तम रीतिसे किया, और गोरखा राज्यके पश्चिमी तरफ़ पाल्पा व काश्की आदि कई छोटी छोटी रियासतोंको जीतकर नयपालके राज्यमें शामिल करलिया; परन्तु कुछ दिनों बाद राजेन्द्रलक्ष्मीका भी इन्तिक़ाल होगया. तब बहादुरशाहने तीसरी बार फिर नयपालमें आकर कुल राज्य प्रबन्धको अपने हाथमें लिया, और हर हालतमें रणबहादुरशाहका ख़बरगीर या शिक्षक बना रहा.

बहादुरशाहने अपने प्रबन्धमें नयपालके राज्यको बहुत कुछ तरक़्क़ी दी, इन्होंने पहाड़ी जातिके क्षत्रियोंकी कई छोटी छोटी रियासतोंको, जो पश्चिमकी ओर गोरखा राज्यसे मिली हुई और पहिले ज़मानहमें जुमलाके राजाकी ख़िराज गुज़ार थीं, फ़त्ह करके नयपालके राज्यमें शामिल किया; और वहांके रईसोंसे नयपाल राज्यकी नौकरी तथा अपने ख़ानदानके साथ विवाह शादी आदि राह व्यवहार रखना स्वीकार कराकर, गुल्मीवाले राजाकी कन्यासे रणबहादुरशाहका विवाह करादिया. इसी ज़मानहमें बेतियाकी तराईका मुल्क, जिसको विक्रमी १८२४ [हि० ११८१ = .ई० १७६७] में गोरखा ख़ानदानका क़बज़ह

होनेसे पहिले कप्तान किनूलॉक साहिबने नयपालके प्राचीन राजाओंसे जीतकर अंग्रेज़ी राज्यमें मिला लिया था, वापस नयपालके राज्यमें शामिल हुआ, और सर्कार अंग्रेज़ीके साथ व्यापारकी बाबत विक्रमी १८४९ [हि० १२०६ = ई० १७९२] में पहिला अह्दनामह क़ाइम हुआ, जिसमें दोनों तरफ़से आने जाने वाले मालपर सैकड़ा पीछे २।।) रुपया मह्सूल लिया जाना क़रार पाया, परन्तु उसपर अमल दरामद न हुआ.

रणबहादुरशाहके गद्दीनशीन होने बाद नयपालके राज्यमें भीरकोट, गहुँकोट, मूसीकोट, धूरकोट, पर्वत, पाल्पा, थलाहार, बाजूरा, जुम्ला, अछाम, बझां, जाजरकोट और सल्ल्याना आदि स्थान शामिल होजानेके अलावह गोरखा लोगोंने सिकिमके इलाक़हको लिम्बुवान् ज़िलेतक अपने तह्तमें करके तिब्बतके लामा राजापर, जो चीनका हिमायती था, चढ़ाई की, और अपनी सीमासे पन्द्रह सोलह मंज़िल डिगर्चा नामी नगरको जा लूटा. तब तिब्बत वालोंकी मददपर चीनकी तरफ़से वहांके वज़ीर तुंथाङ्की मातह्तीमें ७०००० के अनुमान सेना गोरखोंके मुक़ाबलह को रवानह हुई, जिसने विक्रमी १८४९ आश्विन [हि० १२०७ सफ़र = ई० १७९२ सेप्टेम्बर] में उनको शिकस्त देकर वेत्रवती नदीके पार उतार दिया. यहांपर भी एक बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसमें नयपालकी बहुतसी सेना क़त्ल व ज़ख़्मी हुई. लड़ाईके बाद वज़ीर दामोदर पांडे व चौतरिया बम्ह्शाहकी तज्वीज़से वेत्रवती नदीका पुल तोड़कर नदीके किनारे वाली पहाड़ी श्रेणीपर रस्सोंके आधारसे बड़े बड़े पत्थर रखवा दिये गये, और नयपाली सेनाको, जो बाक़ी रही थी, नदीके किनारों पर इधर उधर जंगलमें छिपा दिया. जब चीनी फ़ौज नदीके किनारेपर आ पहुंची, तो फ़ौरन रस्से काट दिये गये, उसवक़ इधर तो एकदम पहाड़परसे पत्थर गिरने लगे, और उधर छिपी हुई सेनाने तीर, बन्दूक़ व तोप आदिसे हमलह करदिया, जिससे चीनी सेनाका भी किसीक़द्र नुक्सान हुआ; कई आदमी पत्थरोंके गिरने तथा शस्त्रोंसे मारे गये, परन्तु इस मारिकहके अख़ीरमें गोरखा लोगोंको हर पांचवें वर्ष ख़िराजके तौरपर तुह्फ़ह भेजना मन्जूर करके सुलह करनी पड़ी (१).

---

(१) सुलह होनेके समयसें अब हर पांचवें वर्ष इक़ारके मुवाफ़िक़ नयपालकी रियासतसे चीनके बादशाहके पास मोरपंख, मोती, मूंगा, हाथीदांत, कम्ख़ाब, बानात, अफ्यून और खड्ग आदि शस्त्र, जिन सबकी क़ीमत अनुमान बीस हज़ार रुपयेके होती है, लेकर राज्यके चन्द अफ्सर, ख़िद्मतगार व सिपाही आदि कुल २० या २५ मनुष्य चीनको भेजे जाते हैं, उनको सवारी और ख़ुराक आदि ख़र्च तिब्बतकी सीमामें दाख़िल होनेसे वापस नयपालकी सीमामें आनेतक चीनके बादशाहकी तरफ़से मिलता है. चीनमें पहुंचने बाद नयपाली अफ्सर सिर्फ़ दो बार, याने तुह्फ़ह नज़ होने व रुख़्सत पानेके वक़, बादशाहसे सलाम करने

चीनी सेनासे लड़ाई होनेके समय नयपाल वालोंने सर्कार अंग्रेज़ीसे मदद लेना चाहा था, परन्तु लॉर्ड कॉर्नवालिसने उनकी दर्ख्वास्तको मन्जूर नहीं किया, इस सबबसे जब विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] में कम्पनीका पहिला एल्ची किर्कपैट्रिक साहिब नयपालके राजाके साथ व्यापार सम्बन्धी अहदनामह क़ाइम करने और सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से नयपालमें एक रेज़िडेण्ट रक्खा जाना मन्ज़ूर करानेकी ग़रज़से वहां भेजा गया, तो गोरखा लोगोंने उसकी किसी बातपर ध्यान नहीं दिया, और उक्त साहिबको नाकाम्याब होकर वापस लौट आना पड़ा.

जब रणबहादुरशाह होश्यार हुआ, तो उसने राज्यमें अपना हुक्म व रोब जमानेके लिये बहादुरशाहको गर्मीके मौसममें क़ैद करके चितवनकी भाड़ीको भेजदिया, जहां उसे दही व चिवड़ा खिलायाजाकर किसी ऐसे वृक्षके ताज़ह पत्तोंपर सुलवादिया गया और उन्हींसे ढक दिया गया, कि जिससे वह उसी रातको, एक क़िस्मका सख़्त बुख़ार (अवल) पैदा होजानेके सबब, मरगया. इसके मारेजाने बाद विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = ई० १७९५] में रणबहादुरशाह स्वतन्त्र राज्य करने लगा, लेकिन् पांच वर्षसे कुछ अधिक समय गुज़रा होगा, कि उन्होंने अपनी एक महाराणीका इन्तिक़ाल होजानेके सबब, जिससे उनको ज़ियादह मुहब्बत थी, राज्य छोड़कर काशीवास करना चाहा; और विक्रमी १८५७ [हि० १२१५ = ई० १८००] के क़रीब अपने दो बेटों गीर्वाणयुद्धविक्रमशाह और रणोद्योतशाहमेंसे पहिलेको, जो मृतक महाराणीसे पैदा हुआ था, राज्यका मालिक बनाने बाद अपनी दूसरी राणी रणोद्योतशाहकी माता

पाते हैं. जब वे लोग सलामके लिये बादशाहके सामने पहुंचते हैं, तो उन्हें ज़मीनपर लम्बे पड़कर धोक देना पड़ता है, जैसा कि हिन्दुस्तानमें हिन्दू लोग अपने मज़्हबी देवताओंके सामने करते हैं; और बाद उसके बादशाहके हुक्म देनेपर खड़े होते हैं. चीनसे भी हर पांचवें वर्ष ख़िल्अ़तके तौर नयपालवाले महाराजाके लिये किसीक़द्र रेशमी कपड़ा, सुवर्ण और ब्योफ़ी (एक प्रकारका चूहा) की खालका कुड़ता (कोट) वग़ैरह क़रीब बीस हज़ार रुपये क़ीमतका सामान आता है, उस वक़ उसकी पेशवाईके लिये नयपालकी सर्हदतक कुछ फ़ौज भेजी जाती है, और राजधानीके निकट पहुंचनेपर चीनी लोगोंको बड़े आदर सत्कारके साथ शहरके बाहिर ठहराया जाता है. फिर दर्बारके दिन कई नयपाली अफ्सर और नगरके बाशिन्दे नाच व रौशनी आदि उत्सवके साथ रास्तहमें धूप जलाते व पुष्प उछालते हुए दोबारह पेशवाई करके चीनी लोगोंको ख़िल्अ़त समेत दर्बारमें लाते हैं, महलकी ड्योढ़ीतक वज़ीर पेशवाई करता है; महाराजाके सामने पहुंचकर चीनी अफ्सर भी नयपाली अफ्सरोंकी तरह लम्बे पड़कर सलाम करने बाद राजाके हुक्मसे उठकर कुर्सियोंपर बैठ जाते हैं. महाराजा सिंहासनपर खड़े होकर ख़िल्अ़त लेते, और उसे सिरसे लगाकर रख देते हैं, उस वक़ २१ तोपोंकी सलामी सर होती है.

तथा दामोदर पांडे वज़ीरकी संभालमें राज्यका कुल कारोबार छोड़कर आप काशीको चले आये. कुछ दिनों काशीमें ठहरनेके पीछे इनका विचार हुआ, कि नयपालको फिर देखें, और इसी इरादहपर अपने साथियों समेत वहांसे रवानह हुए, लेकिन् जब वे नयपालकी सीमापर पहुंचे, तो दामोदर पांडे (वज़ीर) उनका देशमें वापस आना अपने हक़में नामुनासिब समझकर उन्हें रोकनेके लिये सेना समेत मए शेरबहादुरके सीमापर गया. ज्योंही कि सेना महाराजाके समीप पहुंची, उन्होंने बेख़ौफ़ लश्करमें आकर कहा, कि "ऐ मेरे वीर गोरखा लोगो तुममेंसे कौन शाहकी ओर और कौन पांडेकी ओर है!" यह बात सुनतेही कुल सवार व पैदल, महाराजाको नयपालमें आनेसे रोकनेके बदले शेरबहादुर सहित उनकी ख़िदमतमें हाज़िर होगये. इसके बाद भीमसेन थापाकी सलाहके मुवाफ़िक़ महाराजाने दामोदर पांडेको क़ैद करके काठमांडूकी तरफ़ कूच किया, और वहां पहुंचते ही दामोदर पांडेको उसके दो बेटों रणकेसर व गजकेसर सहित गिरिफ़्तार करके विष्णुमती नदीके पास खुट्याड़ स्थानमें भेजदिया, जहां उन तीनोंके सिर कटवा डाले गये.

रणबहादुरशाहने दोबारह नयपालमें आकर गद्दीपर तो गीर्वाणयुद्धविक्रमशाहको ही रक्खा, लेकिन् रियासतका कुल कारोबार अपने हाथमें लेकर भीमसेन थापाको वज़ीर नियत करदिया (१), जिसने महाराजाके नयपालमें वापस आनेके समय रास्तह रोकनेवाली नयपाली सेनाके मुक़ाबलहमें उम्दह कारगुज़ारी दिखाई थी.

उक्त महाराजाने काशीमें निवास करनेके समय सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से अपनी ख़बरगीरीपर कप्तान नौक्स पोलिटिकल एजेण्टके नियत कियाजाने, और बड़ी ख़ातिरदारीके साथ रक्खेजानेसे ख़ुश होकर, नयपालमें दोबारह क़ाबिज़ होजानेकी शर्तपर वहां अंग्रेज़ी रेज़िडेण्ट रखनेका वादह करलिया था, और विक्रमी १८५८ [हि० १२१६ = ई० १८०१] में व्यापार सम्बन्धी एक अ़ह्दनामह भी आपसमें क़रार पाया; लेकिन् जब काठमांडूमें पहुंचगये और कप्तान नौक्स वहां आया, तो उसका आदर सत्कार करनेके सिवा अ़ह्दनामहके मुवाफ़िक़ कुछ भी अ़मलदरामद न किया, इसलिये उक्त कर्नेलको नाकामीके साथ वापस लौट आना पड़ा.

हेन्‌री एम्ब्रोज़ साहिब, जो कुछ अ़र्सहतक नयपालमें एजेन्सी सर्जन रहे थे, अपनी

---

(१) रणबहादुरशाहके काशीवास करनेके समय भीमसेन भी उनके साथ था. एक दिनका ज़िक्र है, कि मणिकर्णिका घाटके क़रीब महाराजा नाव सवार होकर सैर कररहे थे, कि अचानक कमरसे तलवार निकलकर गंगामें गिर गई, भीमसेन भी उसके साथ ही फ़ौरन् पानीमें कूदा और तलवारको निकाल लाया, जिसके धन्यवादमें उसको वज़ीरका पद मिला,

किताबमें लिखते हैं, कि रणबहादुरशाह अपनी राणीका इन्तिक़ाल होजाने बाद कुछ दीवानह होगये थे, अगर्चि उनके चन्द राणियां और भी थीं, परन्तु उनसे उनको बिल्कुल मुहब्बत न थी. इन महाराजाने देवालय आदि मज़्हबी स्थानोंकी बहुत कुछ बे इज़्ज़ती की, और विक्रमी १८६२ [हि० १२२० = .ई० १८०५] में ब्राह्मणोंको दिया हुआ कुल दत्त ख़ालिसह करलिया. इसी वर्षमें उनकी ज़ियादहतर सख़्तियोंसे तंग आकर राज्यके कई लोगोंने उन्हें रियासती कारोबारसे अलग करनेके लिये शेरबहादुरशाहसे सलाह की, जो रणबहादुरशाहके काशी जाने बाद राजसी मुआमलातमें महाराणीका सलाहकार रहा था. यह ख़बर रणबहादुरशाहको मिली, जिसपर उन्होंने शेरबहादुरशाहको उस सेनामें जानेका हुक्म दिया, जो पश्चिमी .इलाक़हके रईसोंको तावे करनेके लिये भेजी गई थी. शेरबहादुरशाहने सख़्तीके साथ जवाब देकर हुक्मकी तामील करनेसे इन्कार किया, तब रणबहादुरशाहने उसको जानसे मरवा डालनेका हुक्म दिया, लेकिन् शेरबहादुरशाहने गुस्सहमें आकर फ़ौरन् मियानसे तलवार निकाली, और महाराजाके पेटमें ऐसी मारी, कि जिससे उनका वहीं काम तमाम होगया, और उसी जगह जंगबहादुरके पिता काजी बालनृसिंह कुंवरके हाथकी तलवार लगनेसे शेरबहादुर भी मारागया.

३७- गीर्वाणयुद्धविक्रमशाह.

३७- गीर्वाणयुद्धविक्रमशाह, जिनका जन्म विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = .ई० १७९५] में हुआ था, गद्दीपर तो अपने पिताकी मौजूदगीहीमें बैठचुके थे, परन्तु गद्दीनशीनीके वक़ कम उम्र होने और अपने पिताके काशीसे वापस आकर हुकूमत करनेके सबब राज्यके कामोंसे बिल्कुल बे ख़बर थे, और इस वक़ भी उनकी अवस्था केवल १० वर्षकी ही थी, इसलिये राज्यका कुल काम रणबहादुरशाहकी महाराणी (त्रिपुरासुन्दरी) दीवान भीमसेन थापाकी सलाहसे करती रही.

गोरखाली लोगोंको ऊपर बयान किया हुआ बहुत बड़ा .इलाक़ह हाथ आजानेपर भी सब्र न आया, और वे पश्चिम तरफ़ लगातार बढ़ते ही गये, यहांतक, कि इस वक़ (गीर्वाणयुद्ध विक्रमशाहके राजा माने जाने बाद) भी मंडी, टिह्री और कोटकांगड़ाकी तरफ़ वाला मुल्क फ़त्ह करनेके लिये भीमसेन थापाका भाई काजी नैनसिंह थापा बहुतसी सेना समेत नियत था, जिसने कोटकांगड़ेकी सीमातक कुल मुल्क जीतकर नयपालके राज्यमें शामिल करलिया, जबकि वहां (कोटकांगड़ा) का राजा संसारचन्द्र था. संसारचन्द्रने मुल्क छीने जानेके भयसे अपनी लड़की महाराजाको ब्याह देने, और हमेशहके

लिये ख़िराज गुज़ार बननेका इक़ार किया, लेकिन् नयपाली मुसाहिबोंने यह बात मन्ज़ूर नहीं की, और नेनसिंहको लड़ाई करनेका दोबारह हुक्म मिला.

नेनसिंह थापा बड़ा दिलेर और आज़मूदहकार मनुष्य था, हुक्म पहुंचते ही युद्ध करनेको सेना साजकर तय्यार होगया, और कोटकांगड़ाके इलाक़ह सालकांगड़ाकी सीमामें पहुंचकर राजा संसारचन्द्रके सेनापति कीर्तिसिंहसे उसका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें कीर्तिसिंहके मारेजाने बाद उसकी सेना भाग निकली, और सालकांगड़ापर क़बज़ह करने के लिये नेनसिंह शहरमें दाख़िल हुआ, लेकिन् अन्दर पहुंचनेपर कीर्तिसिंहकी स्त्री (१) ने अपने पतिका एवज़ लेनेकी ग़रज़से अपने मकानमेंसे उसके एक ऐसी गोली मारी, कि जिससे थोड़ी देर बाद उसका दम निकलगया, और नयपाली सेना सालकांगड़ा छोड़कर अपनी पहिली हदपर आ जमी. नयपाल वालोंने यह ख़बर पाकर नेनसिंहकी जगह पाल्पा (बटोल) की हुकूमतपर उसके बेटे वज़ीरसिंहको, जो क़रीब पन्द्रह वर्ष उम्रका था, और लड़ाईके कामपर काजी अमरसिंह थापाको मुक़र्रर करके भेजदिया. अमरसिंह भी बड़ा बहादुर था, इसने लश्करमें पहुंचकर सालकांगड़ाको अपने क़बज़हमें करलेनेके अलावह राजा संसारचन्द्रको निकालकर कोटकांगड़ामें भी अपना अमल दख़्ल करलिया. राजा संसारचन्द्र भागकर लाहौरके राजा रणजीत-सिंहके पास पहुंचा, और कुछ दिनों बाद उससे फ़ौजी मदद लेकर वापस कोटकांगड़ेकी तरफ़ आया; रणजीतसिंहकी दीहुई फ़ौजके मुक़ाबिल छः महीनेतक बराबर लड़ाई करके शिकस्त पाने बाद अमरसिंहको वहांसे हटकर सेना समेत सालकांगड़ामें वापस आजाना पड़ा. सिक्खोंने यहां भी उसका पीछा करके मुक़ाबलह किया, परन्तु अख़ीरमें सइ मक़ामपर उन्हें शिकस्त नसीब हुई, और सुलह होकर सालकांगड़ेतक नयपाली सीमा क़ाइम होगई.

---

(१) जब यह औरत गिरिफ़्तार होकर नेनसिंहके सामने लाई गई, तो नेनसिंहने उसकी बहादुरानह कार्रवाईपर खुश होकर कहा, कि मैं तुम्हारे वास्ते महाराजाको सिफ़ारिश लिख देताहूं, मुनासिब है, कि तुम नयपाल जाना मन्ज़ूर करो, वहां तुम्हारे वास्ते खान पानका अच्छी तरह बन्दोबस्त होजावेगा; लेकिन् उस नेकबख़्तने इस बातको मन्ज़ूर न करके उसके जवाबमें यह कहा, कि मैंने अपने पतिके एवज़ तुम्हारे बन्दूक़ मारी है, अब तुम भी अपने प्राणके बदले मुझे मारडालो, कि इसीमें मेरा उद्धार है, क्योंकि मैं पतिके बिना स्त्रीका जीना ठीक नहीं समझती. उस पतिव्रता स्त्रीकी इन दिलेरानह बातोंपर नेनसिंह और भी प्रसन्न हुआ, और उसे अपना दिली मन्शा ज़ाहिर करनेको कहा, जिसपर उक्त स्त्री बोली, कि यदि आप मुझपर प्रसन्न हुए हैं, तो मेरे पतिका मृतक शरीर मंगवाकर मुझे उसके साथ जल जानेकी आज्ञा दीजिये. नेनसिंहने उसकी दरख़्वास्तके मुवाफ़िक़ कीर्तिसिंहकी लाश मंगवा-दी, और उसे बहुतसा द्रव्य दानपुण्य करनेके लिये दिया, जिसको वह ख़ैरातमें लुटाकर अपने पतिके साथ सती होगई.

संसारचन्द्रसे सुलह होजाने बाद अमरसिंहने दक्षिणी सीमाकी बाबत अंग्रेज़ोंसे लड़ाई करना चाहा. उसवक़ मरहटा लोगोंने हिन्दुस्तानमें बल्वा मचा रक्खा था, इस कारण सर्कार कम्पनीने ऐसे वक़्में एक नया बखेड़ा पैदा होजाना नामुनासिब समझकर हर तरहसे सुलह क़ाइम करनेके लिये अमरसिंह थापाके पास अपना एल्ची भेजा, परन्तु गोरखाली लोगोंने सुलह करना स्वीकार न करके कम्पनीकी सर्हदी सेनासे लड़ाई करना शुरू करदिया. तब तो अंग्रेज़ोंको भी लाचार होकर मुक़ाबलह करना पड़ा, और जेनरल ऑक्टरलोनी साहिब ७०००० सत्तर हज़ार सेना सहित मुक़ाबलहके लिये मुक़र्रर हुए. इन्होंने किसीक़द्र फ़ौज साथ देकर जेनरल जलेस्पी साहिबको, जो इनके मातहत थे, पाल्पाकी तरफ़, जहां वज़ीरसिंह था, भेजा, और आप अमरसिंहसे मुक़ाबलह करनेके लिये सालकांगड़ाकी ओर गया. अगर्चि वज़ीरसिंहकी .उम्र बहुत कम थी, लेकिन् अक्ल व जवांमर्दीमें वह अपने पितासे भी बढ़कर था; उसने जेनरल जलेस्पी साहिबके मुक़ाबलहमें बड़ी बहादुरी और बुद्धिमानीका काम किया, कि जिससे कम्पनीकी सेनाने शिकस्त पाई, और सैकड़ों फ़ौजी सिपाहियों सहित जेनरल जलेस्पीके जानसे मारेजानेके अलावह कई अफ्सर व सिपाही वग़ैरह नयपाली सेनाकी क़ैदमें पड़ने बाद बाक़ी फ़ौज भागकर ऑक्टरलोनीसे जा मिली, और बटोलमें वज़ीरसिंहने अपना क़बज़ह करलिया.

जेनरल ऑक्टरलोनीने सालकांगड़ाके क़रीब अमरसिंहसे मुक़ाबलह किया, यहां भी कम्पनीकी सेनाको शिकस्त नसीब हुई, और उक्त साहिबको कई एक जगह छोटी छोटी लड़ाइयां करने बाद फ़ौज कम होजानेके सबब मुक़ाबलह छोड़कर अंग्रेज़ी सीमामें वापस लौट आना पड़ा, लेकिन् कुछ दिनों पीछे सर्कार कम्पनीकी तरफ़से एक दूसरी सेना तय्यार कीजाकर उक्त साहिबकी मातहतीमें दोबारह नयपालपर भेजी गई. जेनरल ऑक्टरलोनीने इस वक़ बड़ी होश्यारीका काम किया, कि चन्द अफ़्सरोंको थोड़ी थोड़ी फ़ौज देकर अलहृदह अलहृदह स्थानोंको घेरने और लड़ाई करनेके लिये मुक़र्रर करके आप बहुतसी फ़ौज समेत अमरसिंहकी तरफ़ बढ़ा, और वहां जाकर बड़ी बहादुरीके साथ नयपाली सेनाको शिकस्त दी. अंग्रेज़ी फ़ौजने इस समय नयपाल-वालोंका यहांतक पीछा किया, कि अमरसिंहको सालकांगड़ा छोड़कर महाकाली (सरजू) नदीतक हट जाना पड़ा, और बहुतसी नयपाली सेना मारी गई.

इसवक़ अमरसिंहका इरादह हुआ, कि चीनसे मदद लेकर मुक़ाबलह करे, लेकिन् यह ख़बर नयपालमें पहुंचनेपर भीमसेन थापा वग़ैरह कई सर्दारोंने गीर्वाण-युद्धविक्रमशाहकी कम .उम्रीके सबब लड़ना नामुनासिब समझकर सुलह करलेना

चाहा, परन्तु अंग्रेज़ोंने उसको मन्जूर नहीं किया, क्योंकि नयपाली लोग तो अपने जीते हुए मुल्कके अलावह तराईका इलाक़ह (१), जो इस वक्त नयपालके राज्यमें शामिल है, लेना चाहते थे, और अंग्रेज़ोंको यह बात मन्जूर नथी, इसलिये फिर लड़ाई शुरू हुई.

इस लड़ाईके दोबारह शुरू होनेपर बटोल आदि दश ग्यारह स्थानोंमें बड़े बड़े मुक़ाबले हुए. आख़रकार जेनरल ऑक्टरलोनी मए फ़ौजके काठमांडूसे १८ कोस इसतरफ़ चिरवा घाटीके पार जा पहुंचा, और वहांपर सर्दार रणवीरसिंह थापासे उसका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें नयपाली सेनाके शिकस्त पानेपर गोरखाली सर्दारोंने हरतरह सुलह करना ही मुनासिब समझा और उसके लिये अंग्रेज़ी लश्करमें पैग़ाम भेजा; अंग्रेज़ लोग भी इसवक्त मरहटोंके ग़द्रके सबब सुलह करना चाहते थे, बहुत कुछ बहस होने बाद महाकाली (सरजू) नदीसे पश्चिम सालकांगड़ातकका पहाड़ी .इलाक़ह, जो अनुमान सौ डेढ़ सौ कोस लम्बा और पच्चीस या तीस कोस चौड़ा है, सर्कार कम्पनीने अपने क़बज़ेमें रखकर तराई का ज़िला गोरखाली लोगोंको देदिया. यह लड़ाई विक्रमी १८७१ [हि॰ १२२९ = .ई॰ १८१४] से शुरू होकर विक्रमी १८७३ [हि॰ १२३१ = .ई॰ १८१६] में ख़त्म होनेपर वज़ीर भीमसेन थापाके भाई रणवीरसिंहकी मारिफ़त जेनरल ऑक्टरलोनीसे सुलह होकर सौ वर्षके लिये बाहमी दोस्तीका एक अह्दनामह क़रार पाया, और वर्तमान सीमा क़ाइम कीजाकर अंग्रेज़ी रेज़िडेण्ट नयपालमें व नयपाली वकील कलकत्तेमें रहना तय पाया. नयपालमें सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से पहिला रेज़िडेण्ट गार्डनर साहिब मुक़र्रर हुआ. इन महाराजाके वक्तमें प्रुशिया (जर्मनी) का शाह-ज़ादह (२) सैर करनेके लिये नयपालमें आया था. लड़ाई ख़त्म होनेके पीछे कुछ दिनों

---

(१) इस तराईपर नयपाल वाले इस सबबसे दावा करते थे, कि यह मुल्क नयपाल राज्यकी सीमाके भीतर वाले प्राचीन राजाओंके क़बज़हमें था, परन्तु गोरखाली लोगोंने जब उन राजाओंको रियासतोंसे बे दख़्ल किया, और उनके पहाड़ी .इलाक़हमें अपना अमल दख़्ल क़ाइम करके नावाक़िफ़ियतसे तराईको छोड़दिया, इसलिये वहां अंग्रेज़ोंने दख़्ल करलिया था.

(२) इस शाहज़ादहका ठीक हाल मालूम नहीं हुआ, कि उसका क्या नाम था. नयपाल निवासी पंडित टंकनाथकी ज़बानी सिर्फ़ इतना मालूम हुआ है, कि यह शाहज़ादह फ़ौजका प्रबन्ध व युद्ध सम्बन्धी क़वाइद सिखानेके लिये अपने साथियोंमेंसे चार जेनरल नयपालमें छोड़ गया था, जिन्होंने एक एक हज़ार जवानोंकी आठ पल्टनें और एक हज़ार जवान तोपख़ानह के लिये मुक़र्रर कराकर उनको क़वाइद वग़ैरह कुल काम सिखाया. कुछ दिनों बाद वे चारों जेनरल भी वापस चले गये.

ज़िन्दह रहकर इसी वर्षमें शीतलाकी बीमारीसे गीर्वाणयुद्धविक्रमशाहका परलोक वास होगया (१), जब कि उसकी .उम्र केवल २१ वर्षकी थी.

इन महाराजाका जन्म होनेके समय ज्योतिषी लोगोंने लिखदिया था, कि इन को शीतलाका भय है, इस कारण महाराजा रणबहादुरशाहने इस बातका बहुत कुछ बन्दोबस्त किया, यहांतक कि जब किसीके बालक पैदा होता, तो उसे उसकी माता समेत नयपालके बाहिर भिजवादेते, और शीतला निकलनेतक वह राजधानीके भीतर, बल्कि आसपासके ग्रामों (पहाड़के बीच) में भी नहीं रहने पाता था, परन्तु भावी प्रबल है, उसमें किसीका वश नहीं चलता; आख़रकार वही बीमारी इन महाराजाकी मृत्यु का कारण हुई. उक्त महाराजाके राजेन्द्रविक्रमशाह नामका एक ही पुत्र था, जिस की उम्र महाराजाका देहान्त होनेके समय दो वर्षके अनुमान थी.

३८- राजेन्द्रविक्रमशाह.

राजेन्द्रविक्रमशाहके गद्दीनशीन होने बाद राज्यका काम गीर्वाणयुद्धविक्रमशाहकी सौतेली माताके हुक्मके मुवाफ़िक़ भीमसेन थापा ही एक अरसहतक करता रहा; इसके वक़में थापा लोगोंका बहुत कुछ ज़ोर बढ़ गया था. यह एक बड़ा लाइक़ व होश्यार मनुष्य था, जिसने बहुत अरसहतक राज्यका काम उत्तम रीतिके साथ चलाया, बल्कि राज्यकी आमद और सेनाको भी अच्छे प्रबन्धके साथ बहुत कुछ तरक़्क़ी दी. महाराणी (त्रिपुरासुन्दरी) ने अपने नाती (राजेन्द्र-विक्रमशाह) के दो विवाह अपने हाथसे किये; इसके बाद विक्रमी १८८८ चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० १२४७ ता० २९ शव्वाल = .ई० १८३२ ता० १ एप्रिल] को उक्त महाराणीका इन्तिक़ाल होगया, और इसी समयसे थापा लोगोंके इख़्तियार में भी फ़र्क़ आने लगा, क्योंकि त्रिपुरासुन्दरीका देहान्त होनेके वक़ राजेन्द्रविक्रमशाह १८ वर्षके थे, जो कम हौसिलह होनेके अलावह राणियोंके कहनेमें अधिक चलते थे; ऐसा भी सुना जाता है, कि राजेन्द्रविक्रमशाहकी बड़ी महाराणी पांडे लोगोंकी सहायक और छोटी भीमसेन आदि थापा लोगोंकी मददगार थी.

ईश्वरकी कृपासे छोटी अवस्थामें इन महाराजाके पांच बेटे पैदा हुए, जिनमेंसे तीनका जन्म बड़ी महाराणीसे और दोका छोटी महाराणीसे हुआ था. इस कारण महाराजाको राज्यके दूसरे ख़र्चोंमें कमी करके अपनी औलादके लिये बचत निकालने की ज़रूरत हुई, और इसी विचारके अनुसार हर एक अफ़्सरकी तन्ख़्वाह वग़ैरहमें

(१) गीर्वाणयुद्धविक्रमशाहके साथ सिर्फ़ एक महाराणी सती हुई.

कमी होने लगी. विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = .ई० १८३७] में भीमसेन थापाके कई एक रिश्तहदार निकाले जाकर रणजंग पांडे (१) महाराजा का सलाहकार मुक़र्रर हुआ, और उसीका एक रिश्तहदार भाई रणदल पांडे गोरखाकी हुकूमतपर भीमसेनके भतीजे माथवरसिंह थापाकी जगह नियत हुआ. अवतो थापा लोगोंका इख़्तियार बिल्कुल घटकर एक अरसहके बाद पांडे लोगों का सितारह चमकने लगा, और विक्रमी १८९४ आषाढ़ [हि० १२५३ रबीउस्सानी = .ई० १८३७ जुलाई] में महाराजाने रणजंग पांडेको उसके पिताका कुल मर्तबह व जागीर भी देदी. थोड़ेही दिनों बाद बड़ी महाराणीके तीन बेटोंमेंसे छोटा बेटा अचानक मरगया, जिसकी बाबत यह मश्हूर किया गया, कि भीमसेन थापाने बड़ी महाराणीको ज़हर दिलवाया था, लेकिन् वह ज़हरीली चीज़ महाराणीको खाने वग़ैरहमें खिलाईजानेके .एवज़ छोटे कुंवरको देदी गई, जिससे वह मरगया. इस अपराधमें भीमसेनने अपने भाई, भतीजों आदिके अलावह कई दूसरे रिश्तहदारों समेत क़ैद होकर बड़ी सख़्तियां उठाईं. इन लोगोंका कुल माल अस्बाब ज़ब्त करलिया गया, और उनकी स्त्रियां, बच्चे व नौकर वग़ैरह बड़ी बेइ़ज़्ज़तीके साथ शहरसे निकाले गये; इनके सिवा वैद्य आदि कई मनुष्योंको, जो थापा लोगोंके हिमायती समझे जाते थे, बड़ी बड़ी सज़ाएं दीगईं, बल्कि नेवार जातिका एक वैद्य बड़ी बेरहमी के साथ मारा भी गया.

महाराजाका यह हाल था, कि कभी तो वह बड़ी महाराणीकी इच्छानुसार राज्य सम्बन्धी कार्रवाई कराते, और कभी छोटी महाराणीसे प्रसन्न होकर बड़ी महाराणीके विरुद्ध वर्ताव करने लगते; इससे बड़ी महाराणीने नाराज़ होकर एक दफ़ह महाराजासे किनारह करके पशुपतिनाथ महादेवकी धर्मशालामें रहना इख़्तियार किया, लेकिन् कुछ दिनों बाद वापस महलोंमें आगईं.

विक्रमी १८९४ चैत्र कृष्ण पक्ष [हि० १२५३ ज़िल्हिज = .ई० १८३८ मार्च] में मौक़ा पाकर माथवरसिंह क़ैदसे निकल भागा; और विक्रमी १८९६ आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० १२५५ ता० ८ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८३९ ता० २० जुलाई] को भीमसेनने अपनी ज़ियादह बे .इज़्ज़ती होनेके भयसे गलेमें छुरी मारली, और वह उसी ज़ख़्मसे नव रोज़ बाद मरगया, जिसकी लाश विष्णुमती नदीके किनारेपर फिकवा दीगई. हेन्‌री एम्‌ब्रोज़ लिखते हैं, कि यह अपराध भीमसेनका ख़ातिमह करनेके लिये झूठा लगाया गया था.

---

(१) यह दामोदर पांडेका तीसरा बेटा था, जो महाराजा रणबहादुरशाहके समयमें अपने पिता व दो भाइयोंके क़त्ल किये जानेके वक़्त निरा बच्चा होनेके सबब बचगया था.

थापा लोगोंके बाद दोबारह पांडे लोगोंका भी कुछ अरसहतक खूब दौर दौरह रहा, यहांतक कि रियासतके कुल कामोंपर रणजंग पांडेके रिश्तहदार करवीर पांडे, कुलराज पांडे, जगत्‌वम् पांडे, और दलवहादुर पांडे आदि नियत थे.

विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = .ई० १८३९] में रणजंग पांडे विज़ारतका पूरा इख्तियार हासिल करके वज़ीर कहलाने लगा. इसने अपनी सहायक बड़ी महाराणीकी सलाहसे रुपया एकट्ठा करनेके लिये रियासती लोगोंपर ज़ुल्म व ज़ियादती करना शुरू किया, और कितने ही लोगोंका माल व अस्वाव ज़ब्त करके उस ज़ुल्मका कारण महाराजाको ठहराया, इस मन्शासे, कि सब लोग महाराजाके विरुद्ध होजावें और वह राज्यसे खारिज करदियेजावें.

रणजंग पांडे (वज़ीर) ने सिपाहियोंकी शरह घटाकर, तन्ख्वाहकी कमीका हुक्म सुनानेके लिये विक्रमी १८९७ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० १२५६ ता० २० रबीउस्सानी = .ई० १८४० ता० २१ जून] के दिन कुल सेनाको टूंडीखेल मैदानमें एकट्ठा किया; सिपाही लोगोंने पहिलेसे ही इस हुक्मकी वावत सुन लिया था, उन्होंने इस तज्वीज़से नाखुश होनेके कारण एक साथ हथियार ज़मीनपर रखदिये, और अपनी अगली पिछली बहुतसी तक्लीफ़ें ज़ाहिर करके इन्साफ़ कियेजानेकी दर्ख्वास्त की, परन्तु उसपर कुछ गौर व तवज्जुह न हुई, तब राजधानीके आसपासकी कुल सेना (अनुमान ६०००) ने एक मत होकर उन कई सर्दारोंके घर जा लूटे, जो उन दिनों सभाके मेम्बर और पांडे लोगोंके सलाहकार थे, और दूसरे दिन राज्य महलमें जमा होकर महाराजाको तंग करना चाहा. उक्त महाराजा कई वार बुलायेजानेपर सेनाके सामने आये, और उसवक्त उन्होंने सिपाहियोंकी कुल तक्लीफ़ें दूर करनेका इक़ार करलिया. इन दिनों महाराजा तो बिल्कुल बड़ी महाराणीके आधीन होरहे थे; और उस (महाराणी) की वज़ीरसे यह सलाह हो चुकी थी, कि किसी रीतिसे यह महाराजा रियासतसे बेदख़्ल किये जायें. महाराणीने सेनाकी तन्ख्वाह कम करनेके लिये महाराजाको बहुत कुछ बहकाया, और इसी विक्रमीकी आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ रबीउस्सानी = .ई० ता० २३ जून] को खुद महाराजाके साथ रहकर सेनाकी परेड जमवाने बाद उनकी ज़बानसे यह कहलाया, कि "मुझे अंग्रेज़ोंके साथ लड़ना है, लेकिन् लड़ाईके लिये ख़ज़ानहमें रुपया नहीं है, इसलिये तुम लोग कुछ दिनोंके वास्ते कम तन्ख्वाहपर नौकरी करो, कि जिससे कुछ रुपया एकट्ठा करके लड़ाईका बन्दोबस्त किया जावे." इसके जवाबमें फ़ौजी लोगोंने अर्ज़ की, कि आपको लड़ाईके लिये रुपया जमा करनेकी कोई ज़ुरूरत नहीं है, अगर ऐसा विचार है, तो हुक्म दीजिये, कि पहिले अंग्रेज़ी रेज़िडेएटका काम तमाम करें, और बाद उसके कमाऊं व

सिकिमके ज़िले, जो अस्लमें अपने (नयपालके) हैं, वापस मिलनेके वहानेसे लड़ाई शुरू करदें, और लड़ाईका ख़र्च लखनऊ व पटना वगैरहकी लूटसे चलजायेगा. इसपर महाराजाने कुछ भी जवाब नहीं दिया, और ख़ामोश होरहे.

थोड़े दिनों बाद महाराजाने अंग्रेज़ोंसे लड़ाई करनेका विचार करके हिन्दुस्तानके रईसोंसे भी अपने एल्ची भेजकर सलाह लेना चाहा, और रामनगरके ज़िलेका कुछ हिस्सह ज़बर्दस्ती नयपालके राज्यमें मिला लिया; परन्तु इसी विक्रमीके आश्विन [हि० शव्वाल = ई० ऑक्टोबर] में सर्कार अंग्रेज़ीने कर्नेल ऑलिवरको उसकी मातह्तीमें कुछ पल्टन, तोपख़ानह और रिसालह देकर मुल्ककी हिफ़ाज़त व नयपालियोंको हटानेके लिये भेजा. इसवक्त महाराजाने वह हिस्सह, जो रामनगरके ज़िलेसे छीन लिया था, वापस देकर सुलह करली.

सुनाजाता है, कि रणजंग पांडे मिज़ाजका बहुत अच्छा था, लेकिन् विज़ारत मिलनेके कुछ दिनों पीछे वह दीवानह होगया; उसके रिश्तहदार कुलराज पांडे व करबीर पांडे वगैरह इस बातको पोशीदह रखकर महाराणीकी सलाहसे रियासतका काम करने लगे; और इन्हीं लोगोंके ज़ालिम मिज़ाज होनेसे रियासती लोगोंपर कई तरहके ज़ुल्म और सख्तियां हुईं. इन लोगोंने अनुमान तीन वर्षतक किसीपर यह बात ज़ाहिर न होने दी, कि वज़ीर दीवानह होगया है, लेकिन् वह कब छिपी रहसक्ती थी; अख़ीरमें ज़ाहिर होनेपर रणजंग पांडे विज़ारतसे बर्तरफ़ किया गया, और राज्यका काम रघुनाथ पंडित व फ़त्हजंग चौतरिया (१) की सलाहसे होने लगा. कुछ दिनों पीछे दलभंजन पांडे और अभिमान राणा भी उन लोगोंके शामिल किये गये.

विक्रमी १८९८ द्वितीय आश्विन [हि० १२५७ रमज़ान = ई० १८४१ ऑक्टोबर] में बड़ी महाराणी काशीकी यात्राके लिये हिन्दुस्तानमें आनेके समय हिंतौड़ा मक़ामपर बुख़ार (अवल) की बीमारीसे मरगई, जिसकी निस्बत ऐसा मश्हूर हुआ, कि महाराजाने उसे ज़हर दिलाकर मरवाडाला. हेन्री एम्ब्रोज़ लिखते हैं, कि यह ख़बर किसी हिन्दुस्तानी अख़्बारमें भी दर्ज होगई थी, जिसके वास्ते महाराजाने ख़ुद रेज़िडेन्सीमें जाकर वहांके रेज़िडेएटकी मारिफ़त गवर्नर जेनरल हिन्दके नाम बहुत कुछ तूल तवील तह्रीर करवाई, इस ग़रज़से, कि वह इस झूठी ख़बर छपवाने वालेको दर्याफ़्त करके सख़्त सज़ा दिलवावें.

फ़त्हजंग चौतरिया व रघुनाथ पंडित वगैरह लोगोंकी मुसाहिबी में महाराजा व महा-

---

(१) नयपाल राज्यमें ख़ास महाराजा के ख़ानदानी रिश्तहदार चौतरिया कहलाते हैं.

राजकुमार सुरेन्द्रविक्रमशाहके दस्ल देनेके सबब, जिनकी .उम्र १२ वर्षकी थी, राज्य-प्रबन्धमें बदइन्तिज़ामी ही रही; क्योंकि महाराजाको राज्य सम्बन्धी कार्योंमें अच्छी तरह अभ्यास नहीं था, और महाराजकुमार बड़े सख्त मिज़ाज होनेके अलावह ज़ाहिरा पांडे लोगों से सलाह किया करते थे; कुछ अरसह पीछे इन्होंने महाराजाको बेदख्ल करके कुल कारोबार अपने हाथमें लेना चाहा. इन्हीं बातोंसे नयपाली सर्दार तंग आकर राज्यका उत्तम प्रबन्ध करनेकी तज्वीज़ सोचने लगे. इस वक्त पालपाके सूबह गुरुप्रसादशाह ने बड़ी ख़ैरख्वाही व वफ़ादारी ज़ाहिर की, किसलिये कि यह शख्स महाराजाका रिश्तहदार होनेके कारण इस बातसे डरता था, कि कहीं युवराज भी राज्यसे महरूम न रहजावें, या छोटी महाराणी कारोबारकी मुख्तार बनजावे; क्योंकि इन दिनों रघुनाथ पण्डित उक्त महाराणीका सहायक बन रहा था. गुरुप्रसादशाहने राज्यके कुल सर्दारोंको एकठा करके एक बड़ी सभा की, जिसमें आम लोगोंकी तरफ़से यह विचार मालूम हुआ, कि महाराजकुमारकी तरफ़से उनपर बड़ा जुल्म होता है, और उसके जुल्मको रोकनेके लिये महाराजा कुछ उपाय नहीं करते, इसलिये अब हम लोग राजा और युवराज, दोनोंको नहीं मानेंगे. इन बातोंपर किसीक़द्र सोच विचार होने बाद, यह बात क़रार पाई, कि कुल रियासतके लोगोंकी तरफ़से चन्द बातें लिखकर महाराजा के सामने इस ग़रज़से पेश कीजावें, कि वह प्रजाके जान व मालकी रक्षा और राज्यका मुनासिब तौरपर उत्तम प्रबन्ध करें. महाराजा यह चाहते थे, कि खुद नयपालमें रहकर अपनी मौजूदगीमें ही युवराजको महाराजा बनादेवें, और आप भी राज्य सम्बन्धी कार्यमें दख्ल देनेका इख्तियार रक्खें; परन्तु यह बात रियासती लोगोंने मन्ज़ूर नहीं की, और दूसरी सभामें चन्द शर्तें लिखकर विक्रमी १८९९ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि॰ १२५८ ता॰ ४ ज़िल्क़ाद = ई॰ १८४२ ता॰ ७ डिसेम्बर] को उनपर महाराजासे भी मन्ज़ूरीके दस्तख़त करालिये. इन शर्तोंके अनुसार कुछ अधिकार महाराणीको मिला, परन्तु मुसाहिबीका काम चौतरिया फ़तहजंगशाह वग़ैरह लोगोंके ही सुपुर्द रहा. उक्त चौतरिया सर्दार मिज़ाजका सीधा सादा होनेके सबब राज सम्बन्धी काम उसके भाई गुरुप्रसादशाह की सम्मतिसे होता था, जिसके साथ महाराणी द्वेष रखती थी. महाराजाने ज़ाहिरा तौरपर तो विज़ारतका कुल काम चौतरिया फ़तहजंगशाहके सुपुर्द करदिया, परन्तु महाराणीके कहनेके मुवाफ़िक़ पोशीदह तौरसे माथबरसिंहके पास शिमला (१) मक़ामपर

---

(१) माथबरसिंह विक्रमी १८९५ [हि॰ १२५४ = ई॰ १८३८] में नयपालसे निकलकर गोरखपुरमें आ रहा था, और इन दिनों शिमलाकी तरफ़ चला गया, जहां उसको पेन्शनके तौर एक हज़ार रुपया माहवार ख़र्चके लिये सर्कार अंग्रेज़ीसे मिलता था,

बुलावेका पैग़ाम भेजा. इस पैग़ामके साथ महाराजाने माथवरसिंहसे यह इक़ार भी करलिया था, कि तुमको विज़ारत मिलनेके सिवा, तुम्हारे रिश्तहदारों तथा सलाहकार लोगोंको पुराने उहदे और उनका कुल माल अस्वाब, जो ज़ब्त होगया है, वापस दिलादिया जावेगा. महाराजाने चौतरिया लोगोंको भी विज़ारतका पूरा इख्तियार इसी मन्शासे दिया था, कि जिसमें रियासती लोग उनके मुख़ालिफ़ बनजावें, और वह आसानीके साथ कामसे अलह्दह कियेजाकर विज़ारतका काम माथवरसिंहके सुपुर्द करदिया जाये; लेकिन् महाराणीका भीतरी विचार कुछ और ही था, वह यह चाहती थी, कि किसी रीतिसे युवराज राज्यके हक़से ख़ारिज कियाजाकर, वर्तमान महाराजाके पीछे मेरे दो पुत्रोंमेंसे बड़ा महाराजाधिराज कहलावे.

माथवरसिंह महाराजाके मिज़ाजसे अच्छी तरह वाक़िफ़ था, कि वह अपनी बुद्धि से कोई बात नहीं करसक्ते हैं, शायद इस वक़ मुझको किसी और विचारसे धोखा देकर बुलाने का पैग़ाम भेजा है. वह पहिली बार बुलानेपर एक साथ नयपालमें नहीं आया, बल्कि महाराजा और रियासती लोगोंके अन्दरूनी विचार मालूम करनेके लिये शिमले से रवानह होकर नयपाली सीमाके पास ही गोरखपुर स्थानमें आ ठहरा, जहांसे कि नयपाल का हाल अच्छी तरह मालूम होसके. माथवरसिंहके गोरखपुरमें आजानेकी ख़बर सुनकर महाराजाने विक्रमी १८९९ माघ [हि० १२५९ मुहर्रम = ई० १८४३ फ़ेब्रुअरी] में चन्द सर्दारोंको अपनी ख़ास लाल मुहर (१) का पर्वानह देकर उसे नयपालमें लानेके लिये भेजा. ये लोग गोरखपुरमें पहुंचे, और माथवरसिंहको दिलजमई करके राजधानीमें ले आये.

विक्रमी १९०० वैशाख कृष्ण ३ [हि० १२५९ ता० १६ रबीउ़लअव्वल = ई० १८४३ ता० १७ एप्रिल] को माथवरसिंह काठमांडूमें दाख़िल हुआ, और महाराजाके सामने हाज़िर होकर उसने अपने चचा भीमसेनके बदलेमें उन लोगोंको सज़ा दिलाना चाहा, जिन्होंने उसपर महाराजकुमारको ज़हर दिलानेका झूठा अपराध लगाया था. माथवरसिंह की इच्छानुसार इस बातकी तह्क़ीक़ात शुरू हुई और थापा लोगोंके मुख़ालिफ़ोंके लिये सज़ा तज्वीज़ करनेको एक सभा कीगई, जिसमें पांडे लोगोंसे यह मन्ज़ूर करालिया गया, कि हमने भीमसेनपर झूठा अपराध लगाया था. इसपर महाराजाने कुल सभाके लोगोंकी सम्मतिके अनुसार पांडे लोगोंको उनके मददगार या सलाहकार लोगों समेत क़त्ल करवाने और थापा लोगोंका ज़ब्त किया हुआ कुल माल व अस्बाब वापस दिलानेका हुक्म लिखा दिया. इस हुक्मके अनुसार करवीर पांडे व कुलराज पांडे आदि कितने एक मनुष्योंको बड़ी बेरह्मीके साथ भाचाकुशीमें लेजाकर उनके सिर कटवाडाले गये,

(१) यह लाल मुहर ख़ास राजाकी आज्ञा व मन्ज़ूरीका चिन्ह है.

और रणजंग पांडेके वास्ते भी यही हुक्म दियागया, लेकिन् वह बहुत सख़्त बीमारीकी हालतमें होनेके सबब वापस अपने मकानको लौटा दियागया, और कुछ देर ज़िन्दह रहकर मरगया. बहुतसे आदमियोंको नाक कान काटे जाने वग़ैरह कई तरहकी सज़ाएं दीगई, और थापा लोगोंको उनका कुल माल अस्बाब, जो ज़ब्त हुआ था, वापस मिला; लेकिन् माथबरसिंहको विज़ारत मिलनेमें कई कारणोंसे देरी हुई, तोभी वह महाराजाका बड़ा सलाहकार माना गया.

महाराजाने सोचा, कि अगर चौतरिया फ़त्हजंगशाहको मौकूफ़ करके माथबरसिंहको इसी वक़ एकदम बा इख़्तियार वज़ीर बनादिया जावे, तो मुम्किन है, कि शायद यह महाराणीका तरफ़दार होनेके कारण उसकी इच्छानुसार युवराजको राज्यके हक़से ख़ारिज कराकर महाराणीको राजसी कारोबारकी मुख़्तार और उसके पुत्रको युवराज बनानेकी कोशिश करे; और माथबरसिंह भी पूरे तौरपर मज्बूती कराये बिना वज़ीर बनना नहीं चाहता था. ग़रज़कि आठ महीनेतक विज़ारतका काम फ़त्हजंगशाहके ही हाथमें रहा, और माथबरसिंह थापा व उसके रिश्तहदार वग़ैरह लोग अपनी ज़मीन, जायदादपर क़ाबिज़ होकर केवल महाराजाके सलाहकार बने रहे.

विक्रमी पौष शुक्ल ५ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = ई० ता० २५ डिसेम्बर] के दिन माथबरसिंहको पूरे इख़्तियारके साथ विज़ारतका काम मिला, लेकिन् थोड़े दिनों बाद उसने महाराजा और युवराज, दोनोंकी हुकूमतसे नाराज़गी ज़ाहिर की और काम छोड़कर वापस अंग्रेज़ी अमल्दारीमें चलाजाना चाहा, मगर महाराजाने इसवक्त उसको तसल्ली देकर रोकलिया. इन दिनों युवराजका यह हाल था, कि वह अपने पिताको भी बेदख़्ल करके राज्यका कुल काम अपने आधीन करलेनेकी कोशिश करने लगा, परन्तु वह अपना मन्शा पूरा न होनेके कारण यह बात ज़ाहिर करके, कि जबतक महाराजा राज्य नहीं छोड़ेंगे, मैं हर्गिज़ वापस नहीं आऊंगा, किसीक़द्र फ़ौज और अपने चन्द सलाहकारोंके साथ राजधानीको छोड़कर तराईमें चलागया.

महाराणीका मुख्य सलाहकार गगनसिंह नामी एक ख़वास और उसका मित्र अभिमान राणा था. ये लोग चाहते थे, कि अगर कुल रियासती प्रबन्ध महाराणीके इख़्तियारमें आजावे, तो वज़ीर वग़ैरह सबको अलग करके हम लोग हुकूमत करें. लेकिन् उन लोगोंके ये विचार माथबरसिंहको मालूम होगये, इसलिये वह महाराजाको गद्दी पर रखकर युवराजको कारोबारी बनादेना और महाराणीको रियासती मुआमलातसे बेदख़्ल करदेना अपने दिलमें तज्वीज़ करके महाराजा व कुछ सेना समेत युवराजको लानेके

लिये तराईकी तरफ़ रवानह हुआ. हिटौंडा मक़ाममें युवराजके पास पहुंचनेपर माथवरसिंह के कहनेके अनुसार कुल लोग महाराजासे बाग़ी होकर सुरेन्द्रविक्रमशाहसे मिलगये. आख़रकार वज़ीरकी इच्छानुसार उसी जगह १६ मनुष्य, जो थापा लोगोंके विरोधी थे, क़त्ल किये जाकर युवराजको वापस राजधानीमें ले आये, और उन्हींकी सम्मतिसे राज्यका काम होने लगा; इसके बाद फ़त्‌हजंगशाह चौतरिया तीर्थ यात्राका बहाना करके हिन्दुस्तानमें चला आया.

युवराजके राजधानीमें वापस लायेजानेपर महाराणी माथवरसिंहसे द्वेष रखने लगी. महाराजाका तो यह स्वभाव था, कि थोड़ीसी बातमें इधरके उधर होजाते थे, इसवक़ उन्होंने महाराणीके कहनेमें आकर माथवरसिंहका माराजाना मन्ज़ूर कर लिया, और जब यह बात निश्चय होचुकी, तो महाराणीने एक रोज़ काजी बालनरसिंहके बेटे काजी जंग-बहादुर (१) को अपने पास बुलाया और उसे माथवरसिंहके मारडालनेके लिये कहा, जिसको उसने मन्ज़ूर करलिया, और शस्त्र लेकर दोचार आदमियों समेत महाराणीकी इच्छा पूरी करनेके वास्ते उसके पास आ मौजूद हुआ. विक्रमी १९०२ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२६१ ता० १० जमादियुलअव्वल = ई० १८४५ ता० १७ मई] की रातको क़रीब ग्यारह बजेके वक्त महाराणीने अपना सीढ़ीसे गिरजाना और चोट लगना ज़ाहिर करके माथबरसिंहको बुलवाया. जब वह ख़बर पंहुचते ही महलमें आया, और उसने महाराणीके सोनेके मकानमें पहुंचकर पलंगके पास (२) सलाम करनेके लिये सिर झुकाया, तो अचानक एक पर्देकी ओटसे चन्द बन्दूकें चलीं, और एक साथ तीन चार गोलियां लगजानेसे वह उसी जगह मरगया. जंगबहादुरने उसीवक़ महलसे बाहिर आकर माथबरसिंहके बाल बच्चोंको मए माल व अस्बाबके उनके घरसे अपने पास बुलवा लिया, और रातभर अपने मकानपर रखने बाद सुबह होते ही भगा दिया.

दूसरे दिन जब माथबरसिंहकी लाश खिड़कीके रास्तेसे निकाली जाकर उसके रिश्तह-दारोंको सौंपी गई, तो उस वक़ युवराज और बहुतसे फ़ौजी लोग उसके मारने वालेसे बदला

---

(१) जंगबहादुर माथबरसिंहका भानजा था, और उसको माथबरसिंहने ही एक छोटे दरजेसे १८०००) रुपया सालियानह पानेवाला काजी बनाया था; परन्तु जंगबहादुर, माथबरसिंहके हुक्मसे अपने एक चचेरे भाई भैरवबहादुरके बे कुसूर क़त्ल किये जानेके कारण उसके साथ दिलमें ईर्षा रखता था.

(२) इसवक़ राणीको चोट नहीं लगी थी, और न वह सीढ़ीसे गिरी थी, सिर्फ़ माथबरसिंहको धोखा देनेकी ग़रज़से यह कार्रवाई कीगई थी. जब वह मकानसे आया, तो पलंगके ऊपर कुछ कपड़ा वग़ैरह रखकर उसको रज़ाई उढ़ा दी गई, और महाराजा व महाराणी महलके एक झरोखेमें बैठे हुए इस माजरेको देखते रहे.

लेनेके इरादहपर वहां जमा होगये, लेकिन् फ़साद बढ़ता हुआ देखकर महाराजा महलसे बाहिर आये, और उन्होंने सब लोगोंको यह सुना दिया, कि कोई बल्वा मत करो, माथबरसिंहको मैंने मारा है. यह सुनकर सब ख़ामोश हो रहे. इसके बाद एक मुद्दत तक क़ातिलकी तलाश होती रही, मगर उसका कुछ पता न लगा.

माथबरसिंहके मारेजाने बाद मुसाहिबीके लिये चौतरिया फ़त्हजंगशाह काशी से बुलाया गया, और उसके पहुंचनेतक जंगबहादुर ही काम करता रहा. जब फ़त्हजंगशाह व अभिमान राणा वगैरह काठमांडूमें आ पहुंचे, तो महाराजाने विक्रमी भाद्रपद [हि० रमज़ान = .ई० सेप्टेम्बर] में मुख्य मंत्री फ़त्हजंगशाहको नियत करके गगनसिंह ख़वास, अभिमान राणा, और जंगबहादुरको उसका सलाहकार व मददगार मुक़र्रर किया, और इन लोगोंको अलह्दह अलह्दह काम भी बांट दिये गये. इनके प्रबन्धमें एक वर्षतक बराबर सुभीतेके साथ काम होता रहा, मगर इन दिनों कुल काम महाराणीकी रायके मुवाफ़िक़ होनेके कारण युवराजका दख्ल बिल्कुल उठ गया था. अगर्चि उक्त मुसाहिब लोग ज़ाहिरा तौरपर बड़े मेलके साथ काम करते रहे, परन्तु दिलोंमें एक दूसरेके रंज भरा हुआ था.

महाराणीको गगनसिंहपर बहुत कुछ भरोसा था, बल्कि ऐसा कहाजाता है, कि वह उसीके कहनेके अनुसार कुल काम करती थी, इस कारण महाराजा उससे नाराज़ रहने लगे. हेनूरी एम्ब्रोज़ लिखते हैं, कि महाराजाने युवराज सुरेन्द्रविक्रमशाह और दूसरे कुंवर उपेन्द्रविक्रमशाहसे यह बात ज़ाहिर की, कि महाराणी गगनसिंहसे स्नेह रखती है, इसलिये उस (गगनसिंह) को क़त्ल करानेका विचार करना चाहिये. यह हाल उपेन्द्र-विक्रमशाहने फ़त्हजंगशाह आदि चौतरिया लोगोंपर ज़ाहिर किया, और गगनसिंहके मारनेको एक मनुष्य मुक़र्रर किया गया; ग़रज़ कि विक्रमी १९०३ आश्विन कृष्ण ९ [हि० १२६२ ता० २२ रमज़ान = .ई० १८४६ ता० १४ सेप्टेम्बर] की रातको १० बजेके वक़, जब कि गगनसिंह अपने मकानमें बैठाहुआ था, सामनेसे किसी शख़्सने आकर गोली मारी, और उसका वहीं काम तमाम होगया. यह ख़बर उसके पुत्र कप्तान वज़ीरसिंहने महाराणीके पास पहुंचाई.

महाराणी गगनसिंहका माराजाना सुनतेही उसके मकानपर पहुंची, और उसकी स्त्रियों आदिको तसल्ली देने बाद उसने वापस लौटकर गोली मारनेवालेकी तह्क़ीक़ात करने की ग़रज़से एक सभा एकत्र करनेको बिगुल बजवाया, जिसकी आवाज़ सुनतेही जंगबहादुर अपने भाइयों व तीन पल्टनों समेत आकर हाज़िर हुआ. महाराणीने उसको गगनसिंहके क़ातिलकी तह्क़ीक़ात करनेका हुक्म दिया. जंगबहादुरने अर्ज़ की, कि चौतरिया आदि लोग बड़े बड़े रुत्बेके सर्दार हैं, और मैं इसक़द्र हैसियत नहीं

रखता, कि उनके वर्खिलाफ़ रहकर तह्क़ीक़ात करसकूं; अगर सब सर्दारोंको न्यायकी जगहमें विना शस्त्र आनेका हुक्म हो, तो अल्वत्तह कुछ कार्रवाई कर सक्ताहूं. महाराणीने उसकी अर्ज़ मन्ज़ूर की, और आप एक ऊंचे मकानकी खिड़कीमें जावैठी.

जंगवहादुर अपनी तीन पल्टनोंका वाड़ा बांधकर आप तो महाराणीके पास बैठ-गया, और पल्टनोंके बीचमें अपने भाई बम्बहादुर, बदरीनरसिंह, कृष्णबहादुर, रणो-द्दीपसिंह, जगत्शम्शेरजंग और धीरशम्शेरजंग वगैरहको तह्क़ीक़ातके लिये बिठादिया. महाराणीके हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़त्हजंग चौतरिया वगैरह सर्दार लोग अपनी मातह्त पल्टनोंको कुछ फ़ासिलहपर खड़ी रखकर विना शस्त्र न्यायकी जगहमें दाखिल हुए. तह्क़ीक़ात शुरू होनेपर बम्बहादुर व कृष्णबहादुरने कहा, कि गगनसिंहको चौतरिया लोगोंने मारा या मरवाया होगा; इसपर फ़त्हजंगशाहके बेटे खड्गविक्रमशाहने गुस्सहमें आकर कृष्णबहादुरपर छुरेका एक वार किया, जिससे उसके हाथकी दो अंगुलियां कटगईं. खड्गविक्रमशाहने उसी छुरेसे एक वार बम्बहादुरपर और दूसरा जंगबहादुरकी पल्टनके एक सिपाहीपर भी किया, जिसमें सिपाही तो जानसे मारागया, और बम्बहादुरके सिरमें किसी-क़द्र ज़स्म आया, इसके बाद एक दम हल्ला होगया. यह देखकर जंगबहादुरने खड्गविक्रम-शाहको मारनेके लिये धीरशम्शेरजंगको इशारह किया, उसने फ़ौरन् छुरीसे उसका काम तमाम किया. जंगबहादुरने महाराणीसे इजाज़त लेकर उन कुल चौतरिया आदि लोगोंको, जो तह्क़ीक़ात कीजानेके लिये बुलाये गये थे, एकदम क़त्ल करडालनेका हुक्म अपने भाइयों तथा दूसरे लोगोंको देदिया. फिर तो जंगबहादुरके लोगोंने फ़त्हजंगशाह चौतरिया, काजी दलभंजन पांडे, काजी रणजोरसिंह थापा, और अभिमान राणा आदि २७ बड़े बड़े अफ्सरोंके सिवा बहुतसे दूसरे आदमी भी मारे. ग़रज़कि गगनसिंहके साथ ही उसी रातमें जंगबहादुर की मंडलीके सिवा कुल रियासतके मुसाहिबों व उनके सलाहकारोंका काम तमाम होगया, और उसी क़त्लकी हालतमें महाराणीने जंगबहादुरको राज्यमंत्री बनादिया.

दूसरे दिन सुब्ह होते ही महाराणी जंगबहादुर समेत महलमें आई, और जंगबहादुर विज़ारतका नज़ानह करनेके लिये महाराजाके पास गया. इस वक़्त महाराजाने क्रोधित होकर इस अन्यायका कारण पूछा, तो उसने साफ़ कहदिया, कि यह क़त्ल महाराणीके हुक्मसे हुआ है. यह बात सुनते ही महाराजा तुरन्त महाराणीके पास गये, और उससे इस क़त्लका सबब दर्याफ़्त किया. इसपर महाराणीने जवाब दिया, कि जबतक मेरे दो पुत्रोंमेंसे एकको गद्दी न मिलेगी, तबतक इसी तरह क़त्ल होता रहेगा. महाराणी का यह कलाम सुनकर महाराजाके दिलमें भय उत्पन्न हुआ, और वह सर्दार भवानीसिंह व

वीरध्वज विश्न्यातको साथ लेकर पाटणमें चले आये, परन्तु जंगबहादुरने अपने भाईको भेजकर उन्हें रातके वक्त पीछा महलमें बुलवा लिया.

महाराजाके पास सर्दार भवानीसिंह रहा करता था, उसकी निस्बत वीरध्वज ने महाराणीसे कहा, कि वह महाराजासे पोशीदह तौरपर सलाह करता है. इस शुब्हमें महाराणीके हुक्मसे भवानीसिंह भी क़त्ल करायागया.

फिर महाराणीने युवराज सुरेन्द्रविक्रमशाह और उनके छोटे भाई उपेन्द्रविक्रमशाहको क़ैद करके उन कुल लोगोंका, जो क़त्ल करायेगये थे, माल व अस्बाब ज़ब्त कराकर उनके बाल बच्चोंको देशसे बाहिर निकलवा दिया, और फ़त्हजंगशाहके भाई गुरुप्रसादशाह व माथबरसिंह थापाके चचेरे भाई तिलविक्रम थापाको भी, जो पाल्पामें क़ैद थे, मारनेके लिये कुछ फ़ौज भेजी, लेकिन् तिलविक्रमको इस बातकी खबर फ़ौजके पहुंचनेसे पहिले ही मिलगई, इसलिये वे दोनों जो कुछ माल अस्बाब हाथ लगा, लेकर वहांसे भागगये.

इस मारिकहके बाद जंगबहादुरने वज़ीर बनकर कुल उह्दोंपर अपने रिश्तहदारोंको नियत करदिया, परन्तु वह दिलसे महाराणीकी इच्छा पूरी करना न चाहकर पोशीदह तौरपर युवराजकी जान बचानेके उपायमें लगा रहा. यह बात वीरध्वज विश्न्यातने महाराणीसे कही, कि जंगबहादुर बहुत दिनोंसे युवराजके साथ मिला हुआ है, वह कभी उनको नहीं मारेगा; मुनासिब है, कि अव्वल जंगबहादुरका काम तमाम करदिया जावे. इसपर महाराणीने जंगबहादुरके मारनेका उपाय करनेके लिये वीरध्वजको पोशीदह तौरपर विज़ारत देकर मुस्तइद किया. वीरध्वजने गगनसिंहके बेटे वज़ीरसिंह और कई दूसरे लोगोंसे इस विषयमें सलाह ली, जिनमें विजयराज पंडित भी शरीक था, उसने यह कुल हाल जंगबहादुरको जा कहा. वह भी बड़ा होश्यार था, सावधान होकर अपनी और युवराजकी रक्षाके लिये उद्योग करने लगा.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को सुबह होते ही महाराणीके हुक्मके मुवाफ़िक़ वज़ीरसिंहने अपने चन्द मातह्त हथियारबन्द सिपाहियोंको पोशीदह तौरपर कोतमें लाकर एक मकानके अन्दर छिपा दिया, और महाराणीने जंगबहादुरको बुलानेके लिये आदमी भेजा, परन्तु वह न आया, तब वीरध्वज भेजा गया. यह रास्तह ही में था, कि जंगबहादुर अपने रिश्तहदारों व साथियों समेत तलवार व बन्दूक़ वग़ैरह हथियारोंसे आरास्तह होकर महलकी तरफ़ आता हुआ दिखाई दिया. वीरध्वजने नज़्दीक पहुंचकर बड़ी नम्रताके साथ कहा, कि महाराणीने आपको अभी कोतमें बुलाया है,

जंगबहादुरको उनका विचार पहिलेसे मालूम होगया था,' उसने जवाब दिया, कि वज़ीर तो तुम नियत हुए हो, हमारी क्या ज़रूरत है ! यह सुनते ही वीरध्वज मारे डर के कांपने लगा, और कुछ न बोल सका, और उसी जगह जंगबहादुरके इशारहके मुवाफ़िक़ कप्तान रणमिहर अधिकारीके हाथसे मारा गया.

जंगबहादुरने महलमें पहुंचकर महाराजा और युवराजके पैरोंमें अपनी पघड़ी रखदी, और अर्ज़ किया, कि या तो हुजूर मुझे नालाइक़ समझकर मौकूफ़ करदें, या युवराजके शत्रुओंका नाश करनेके लिये आज्ञा देवें. इसपर महाराजा और युवराजने उसको अपने शत्रुओंकी सज़ादिही और राज्यकी रक्षाके लिये उत्तम प्रबन्ध करनेका हुक्म देदिया. यह हुक्म पाकर जंगबहादुरने पहिले वीरध्वजकी मण्डलीके लोगोंको क़त्ल करवाया, और शामके वक्त महाराणीके पास पहुंचकर उसे युवराजकी तरफ़से यह हुक्म सुनाया, कि वह अपने दोनों बेटों समेत देशसे बाहिर निकल जावे. महाराणीसे इस वक्त और तो कुछ भी उपाय न बन पड़ा, लेकिन् उसने महाराजाको बहकाकर अपने साथ चलनेके लिये तय्यार करलिया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्र ५ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = ई० ता० २३ नोवेम्बर] को महाराजा और महाराणी मए अपने दोनों बेटोंके काशीकी तरफ़ रवानह हुए, और युवराज सुरेन्द्रविक्रमशाह राज्यके मालिक माने जाकर जंगबहादुर उनके सामने साबिक़ दस्तूर पूरे इख्तियारातके साथ विज़ारतका काम करने लगा.

उक्त महाराजा काशीकी यात्रा करने बाद वापस नयपालमें जानेके इरादहसे महाराणी और उसके दोनों पुत्रोंको काशीमें छोड़कर (१) विक्रमी १९०४ चैत्र शुक्र ९ [हि० १२६३ ता० ७ रबीउस्सानी = ई० १८४७ ता० २५ मार्च] को सींगोली मक़ामपर पहुंचे, और महाराणी समेत नयपालमें पहुंचनेकी कोशिश करने लगे.

---

(१) महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाह काशी जानेके समय बहुतसा नक्द और जवाहिरात साथ लेगये थे, जो उनके वापस आनेके वक्त महाराणीके पास रहा; उसमेंसे बहुतसा तो महाराणी और उसके पुत्रोंने बर्बाद करदिया, और बाक़ी नक्द व ज़ेवर जो बचा, वह सर्कार अंग्रेज़ीने अपने क़बज़हमें लेकर ६००००० छः लाखसे कुछ अधिक रुपया ५) रुपये सैकड़ेके सूदपर रखवा दिया, और महाराणीके खर्च वगैरहका बन्दोबस्त बनारसके कमिश्नरको सौंपा गया. विक्रमी १९०७ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में जंगबहादुरने विलायतसे लौटकर वापस आनेके समय काशी मक़ामपर दोनों महाराजकुमारोंको नयपालमें चलनेके लिये कहा, परन्तु उन्होंने इन्कार किया, तब उसने उस कुल नक्द व जिन्सके तीन हिस्से कराकर उसका सूद दोनों कुंवरों और महाराणीको जुदा जुदा मिलते रहनेका प्रबंध करदिया था. इसके कुछ अरसह बाद दोनों कुंवरोंका इन्तिक़ाल काशीमें ही होगया.

युवराज व जंगबहादुरने कई मर्तबह महाराजाको अर्ज़ी भेजी, कि आप अकेले राजधानीमें चलेआवें; परन्तु महाराजाने इस बातको मन्जूर न किया, और गुरुप्रसादशाह चौतरिया वगैरह नयपालसे निकले हुए लोगोंको एकट्ठा करके जंगबहादुरको मरवाडालनेकी कोशिश करने लगे. आख़रकार गुरुप्रसादशाह और जगत्वम् पांडेकी सलाहके मुवाफ़िक़ एक शख़्सके हाथ नयपाली अफ्सरों व सेनाके नाम इस मज़्मूनका ख़त लिखकर भेजागया, कि वे जंगबहादुरको मारडालें, जिसपर महाराजाकी मुहर भी लगाई गई थी; लेकिन् ख़त लेजाने वाला आदमी नयपालमें पहुंचनेपर पकड़ा गया, और वह पर्वानह जंगबहादुरके हाथ लगा. उक्त वज़ीरने कुल फ़ौजको एकट्ठा करके पर्वानह सुनाया, और कहा, कि तुम्हारे नाम महाराजाका हुक्म मुझे मारनेके लिये आया है, और मैं इस वक्त तुम्हारे सामने मौजूद हूं, इसमें जैसा तुम मुनासिब समझो करो. उस समय कुल रियासती लोगोंने एक मत होकर यह जवाब दिया, कि अब महाराजाका हुक्म एतिबारके क़ाबिल नहीं समझा जाता, मुनासिब है, कि देशकी रक्षाके लिये युवराज गादीपर बिठादिये जावें. यह सलाह ठहरकर महाराजाको पकड़नेके लिये कप्तान सनकसिंह किसी क़द्र फ़ौज समेत भेजा गया.

कुछ दिनोंतक कई झगड़े बखेड़े होने बाद महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाह ,इलाक़ह नयपालके अलौ नामी ग्राममें उक्त कप्तानके हाथसे पकड़े जाकर विक्रमी श्रावण कृष्ण १३ [हि० ता० २६ शअ्बान = .ई० ता० ८ ऑगस्ट] को राजधानीमें लायेगये, और गुरुप्रसादशाह वगैरह लोगोंमेंसे, जो इनसे काशी तथा दूसरे स्थानोंमें मिले थे, चन्द शख़्स मारे जाने बाद बाक़ी लोगोंने भागकर जान बचाई. जब राजेन्द्रविक्रमशाह काठमांडूमें पहुंचे, तो उनकी सलामी वगैरह ताज़ीमी बातोंमें तो कुछ भी कमी न कीगई, परन्तु राज्यगद्दीपर युवराजके स्थापित करदिये जानेसे राज्याधिकार उनके हाथमें न रहा, और उसी दिन वह भद्गांवके महलोंमें पहुंचा दियेगये, फिर कुछ अरसह बाद काठमांडूमें वापस बुलाये गये, लेकिन् मरण पर्यन्त राज्य सम्बन्धी कामोंमें उनका कुछ भी दख़्ल न रहा.

महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहने अपनी हुकूमतके दिनोंमें चन्द मोतमदों तथा केटियों (दासी) को महाराणा जवानसिंहके समय रियासती रीति रवाज दर्याफ़्त करनेके लिये उदयपुरमें भेजा था. इन महाराजाका देहान्त गादीसे ख़ारिज कियेजानेके बहुत अरसह पीछे विक्रमी १९३८ के श्रावण [हि० १२९८ रमज़ान = ई० १८८१ जुलाई] में हुआ.

३९- महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाह.

महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाह विक्रमी १९०४ प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १३ [हि० १२६३ ता० २६ जमादियुलअव्वल = .ई० १८४७ ता० १२ मई] को अपने पिताकी मौजूदगीमें जंगबहादुर वज़ीर तथा दूसरे रियासती लोगोंकी सम्मतिसे गादीपर बिठा दिये गये थे. इन महाराजाके वक्तमें जंगबहादुरका रियासतमें बहुत कुछ इख़्तियार बढ़ा, और कुल काम उसीके हुक्मके मुवाफ़िक़ होता रहा, महाराजा सिर्फ़ नामके लिये ही राजा माने गये थे; अल्बत्तह कुछ अरसहतक सुरेन्द्रविक्रमशाहके छोटे भाई उपेन्द्रविक्रमशाह, जो मायला साहिब कहलाते थे, राज्यका काम करते रहे. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २१ ज़िल्हिज =.ई० ता० ३० नोवेम्बर] को उक्त महाराजाके बड़ी महाराणीसे महाराजकुमार त्रैलोक्य विक्रमशाहका जन्म हुआ. विक्रमी १९०५ पौष [हि० १२६५ मुहर्रम = .ई० १८४८ डिसेम्बर] में उन्हीं महाराणीके एक दूसरा पुत्र पैदा हुआ, परन्तु एक साल बाद उसका इन्तिक़ाल होगया.

विक्रमी १९०६ वैशाख [हि० जमादियुलअव्वल = .ई० १८४९ एप्रिल] में लाहौरके महाराजा रणजीतसिंहकी राणी चन्द्रकुंवर, जो चुनारगढ़में नज़रबन्द थी, वहांसे भागकर नयपालकी राजधानी काठमांडूमें पहुंची, जिसको महाराजाने भोजन आदिके सिवा ८०० रुपया माहवार हाथ ख़र्चके लिये मुक़र्रर करदिया.

विक्रमी १९०६ माघ शुक्ल २ [हि० १२६६ ता० १ रबीउलअव्वल = .ई० १८५० ता० १५ जैन्युअरी] को वज़ीर जंगबहादुर मए कर्नेल् जगत्शम्शेरजंग, कर्नेल् धीरशम्शेरजंग, कप्तान रणमिहरसिंह अधिकारी, काजी करबीर खत्री, काजी दिल्लीसिंह बिश्न्यात, काजी हिमदलसिंह थापा, लेफ़्टिनेण्ट लालसिंह खत्री, लेफ़्टिनेण्ट करबीर खत्री, लेफ़्टिनेण्ट भीमसेन राणा, और चक्रपाणि नेवार वैद्य वग़ैरह लोगों समेत महाराजा की तरफ़से महाराणी विक्टोरियाकी ख़िदमतमें मित्रता प्रगट करनेके लिये इंग्लिस्तानकी तरफ़ रवानह हुआ, और इसी समयसे महाराजाने सर्कार अंग्रेज़ीके साथ दोस्ती बढ़ाना शुरू किया.

विक्रमी १९०७ वैशाख शुक्ल १४ [हि० ता० ११ रजब = .ई० ता० २४ मई] को महाराणी विक्टोरियाकी सालगिरहपर २१ तोपकी सलामी सर कराई गई. जंगबहादुरके विलायत जानेसे वापस आनेतक रियासतका काम उपेन्द्रविक्रमशाहकी मातहतीमें बम्बहादुर (जंगबहादुरका छोटा भाई) करता रहा. इसी विक्रमीके आश्विन [हि० ज़िल्हिज = .ई० ऑक्टोबर] में महाराजाकी बड़ी महाराणी (त्रैलोक्य-

विक्रमशाहकी माता) का इन्तिकाल होगया, जिसका शोक महाराजाने एक साल तक रक्खा.

विक्रमी १९०७ माघ शुक्ल ५ [हि० १२६७ ता० ४ रबीउस्सानी = ई० १८५१ ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को जंगबहादुर अपने साथियों समेत विलायतसे वापस आया, और एक सन्मानपत्र महाराणी विक्टोरियाकी तरफ़से महाराजाके नाम लाया, जिसको उक्त महाराजाने दर्बार करके बड़े सत्कारके साथ लिया, उस वक्त २१ तोपकी सलामी सर हुई. इसके बाद जंगबहादुर अपना विज़ारतका काम मामूली तौरपर करने लग गया. थोड़े दिनों पीछे कप्तान करबीर खत्रीने महाराजाके छोटे भाई उपेन्द्रविक्रमशाह, जंगबहादुरके छोटे भाई बदरीनरसिंह तथा उसके चचेरे भाई जयबहादुरको कहा, कि जंगबहादुरने इंग्लिस्तानमें अंग्रेज़ोंके हाथका छुआ हुआ मांस व मद्य खाया पीया है, और इसके सिवा धर्मके विरुद्ध और भी कई अनाचार करके वह जाति भ्रष्ट होगया है. इस बातपर उपेन्द्रविक्रमशाहकी सम्मतिके अनुसार जंगबहादुरको मरवाडालने और विज़ारतके कामपर उसके छोटे भाई बम्बहादुरको नियत कियेजानेकी तज्वीज़ होकर यह हाल बम्बहादुरको कहा गया, लेकिन् उसने यह कुल माजरा जंगबहादुरसे ज़ाहिर करदिया. इसपर उपेन्द्रविक्रमशाह (महाराजाके भाई), बदरीनरसिंह, और जयबहादुर गिरिफ़्तार किये गये, और तहक़ीक़ात होनेके बाद तीनों पांच वर्षके लिये अंग्रेज़ोंके सुपुर्द होकर विक्रमी १९०८ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० ता० २३ शअ्बान = ई० ता० २४ जून] को प्रयागके जेलख़ानह (क़िले) में भेजदिये गये (१), और इन लोगोंके खान पान आदिका कुल ख़र्च तथा उस अफ़्सरकी तन्ख़्वाह, जो सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से उनकी निगरानीपर नियत कियागया, नयपालके राज्यसे दियाजाना मन्ज़ूर हुआ. कप्तान करबीर खत्री बड़ा चालाक था, इसलिये अगर्चि उसपर यह क़ुसूर पूरे तौरसे साबित न होसका, तोभी जंगबहादुरने उसको दमाई जातिके एक मनुष्यसे निरादर कराकर जाति भ्रष्ट करादिया, परन्तु वह कुछ अ़रसह बाद वापस अपनी जातिमें शामिल करलियागया.

विक्रमी आश्विन कृष्ण १२ [हि० ता० २५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को महाराजाकी छोटी महाराणीसे एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका नाम नगेन्द्रविक्रमशाह रक्खा गया. महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहके दो लड़कियां भी

(१) जयबहादुर तो हिन्दुस्तानमें ही मरगया, और उपेन्द्रविक्रमशाह व बदरीनरसिंह मीआद पूरी होने बाद वापस नयपालमें बुलालिये गये; इसके बाद उपेन्द्रविक्रमशाह राजधानीमें और बदरीनरसिंह पाल्पामें रहा.

थीं, जिनमेंसे पहिलीका विवाह उन्होंने जंगबहादुरके बड़े बेटे जगत्‌जंगके साथ और दूसरीका छोटे जीतजंगके साथ किया (१).

विक्रमी १९११ [हि० १२७० = .ई० १८५४] में नयपालके एक सौदागरसे तिव्वतकी राजधानी लासामें वहांके किसी व्यापारीके साथ लेनदेनकी बावत कुछ तक्रार हुई, जिसमें नयपाली सौदागरोंका बहुतसा माल व अस्बाव लूटे जानेके अलावह एक दो शख़्स जानसे भी मारे गये, परन्तु तिव्वतमें उसका कुछ इन्साफ़ न हुआ, बल्कि इस बारेमें तिव्वतके चीनी अम्बान (एजेण्ट या वकील) की मारिफ़त लिखा पढ़ी होनेपर भी तिव्वत वालोंने कुछ ख़याल न किया, तब नयपालकी रियासतने बदला लेनेकी ग़रज़से तिव्वतके साथ लड़ाई करना विचारा, और उस देशके रास्तोंपर हर एक जगह मुनासिब फ़ौज तईनात करदी. इन्हीं दिनोंमें याने विक्रमी १९११ फाल्गुन [हि० १२७१ जमादियुलअव्वल = .ई० १८५५ फ़ेब्रुअरी] में क़ैदियोंके लेनदेनकी बावत सर्कार अंग्रेज़ीके साथ एक नया अह्दनामह क़रार पाकर उसपर महाराजा, वज़ीर, और रेज़िडेण्टके मुहर व दस्तख़त हुए.

तिव्वत वालोंने महाराजा नयपालका इरादह लड़ाई करनेका देखकर सुलह होजानेकी ग़रज़से एल्चीके तौर अपने एक लामाको नयपालमें भेजा था, जिसने सुलह क़ाइम रखनेकी बावत वज़ीर (जंगबहादुर) से बातचीत की, लेकिन् उसको यह जवाब मिला, कि अगर तुम्हारा राजा एक करोड़ रुपया देना मन्ज़ूर करे, तो लड़ाई मौक़ूफ़ रक्खी जावे, वर्नह केरंग और कुतीके पारवाले ज़िले, जो क़दीमसे नयपालके हैं, वापस लेलेनेके अलावह मुक़ाबलह होनेकी हालतमें डिगरचा और लासा भी लूट लिये जायेंगे.

लेकिन् तिव्वतके राजाकी तरफ़से इसका कुछ उत्तर न मिला, तब विक्रमी चैत्र कृष्ण ३ [हि० ता० १६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ६ मार्च] को पैदल पल्टनों व तोपख़ानह समेत सर्दार बमबहादुर केरंगकी तरफ़ रवानह हुआ. तिव्वतकी सीमामें पहुंचनेके समय अनुमान ५००० भोटियोंने नयपालकी दो पल्टनोंको, जो धीरशम्शेरजंगके साथ कुती मक़ामको जाती थीं, चूसन गांवके पास रोका, और इस जगह कुछ लड़ाई भी हुई, जिसमें भोटिया लोग शिकस्त पाने बाद अपने कितनेही मुर्दों तथा ज़ख़्मी लोगोंको छोड़कर भाग गये. गोरखाली सेना सिर्फ़ १००० के क़रीब थी, लेकिन् इन लोगोंने ऐसी होश्-

---

(१) जगत्‌जंगका विवाह विक्रमी १९११ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२७० ता० १० शअ्‌बान = .ई० १८५४ ता० ८ मई] को और जीतजंगका विक्रमी १९११ फाल्गुन शुक्ल ८ [हि० १२७१ ता० ६ जमादियुस्सानी = .ई० १८५५ ता० २४ फ़ेब्रुअरी] को हुआ था.

यारीसे काम किया, कि उनमेंसे कोई शख़्स ज़रूमीतक न होने पाया. इन लोगोंने भोटियोंका पीछा करना चाहा, परन्तु बर्फ़के सबब आगे न बढ़ सके, और दूसरे दिन कुती घाटीको अपने क़बज़हमें लेलिया. इस फ़तूहकी ख़बर नयपालमें पहुंचनेपर २१ तोपोंकी सलामी सर हुई. केरंग घाटीकी तरफ़ जो फ़ौज गई थी, उसने विना मुक़ाबलह किये उस मक़ामको छीन लिया. इसके बाद जगत्शम्शेरजंगने विक्रमी १९१२ वैशाख शुक्ल १० [हि० ता० ८ शअ़्बान = ई० ता० २६ एप्रिल] को अपनी हम्राही फ़ौज समेत झूंगा गढ़ीपर, जहां बहुतसे तिब्बती लोग जमा थे, जाकर हमलह किया, नौ दिनतक भोटियोंने गोरखा लोगोंके हमलोंको बड़ी तक्लीफ़ोंके साथ रोका, और आख़रकार गढ़ी छोड़कर भाग गये; इस मुक़ाबलहमें नयपाली सिपाहियोंमेंसे सिर्फ़ पांच आदमी मारे गये, और ४५ ज़रूमी हुए. इस समय किसीक़द्र नमक वगै़रह क़रीब २०००० बीस हज़ार रुपयेका माल नयपाली सेनाके हाथ लगा.

धीरशम्शेरजंगने कुतीसे चार पांच कोस आगे बढ़कर सोना गुम्बाके (१) शहर और गढ़को लेलिया. यहांपर क़रीब २५०० सिपाही तिब्बतवालोंके थे, जिनमेंसे ४०० के अनुमान मारेजाने तथा ज़रूमी होनेके अलावह २० आदमी नयपाली सेनाकी क़ैदमें आये. बम्बहादुरके नयपालकी तरफ़ लौट आनेपर उसकी जगह कृष्णबहादुर और कई दूसरे लोग भेजे गये.

जंगबहादुर रियासतका काम बम्बहादुरके सुपुर्द करके आप अपनी मातहत पल्टन समेत विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ६ [हि० ता० १९ शअ़्बान = ई० ता० ७ मई] को तिब्बतकी तरफ़ रवानह हुआ. इस वक्त उन कुल नयपाली आदमियोंकी तादाद, जो लड़ाईके मौक़ेपर जमा किये जासकें, ५६००० से अधिक समझी गई थी. जंगबहादुरने झूंगा गढ़ी और सोना गुम्बाका मुनासिब बन्दोबस्त करने बाद उस मौसममें आगे बढ़ना उचित न समझा, और तिब्बतके सेंठ्या काजी वगै़रह अफ़्सरोंकी अर्ज़पर सुलह करनेके लिये अपना एक एल्ची शिकर्जुनमें भेजा. इसके बाद वह नयपाली सेनाको बड़ी सावधानीके साथ उक्त स्थानों (केरंग और कुती) में रहने और उनकी हिफ़ाज़त रखनेका हुक्म देकर मए जगत्शम्शेरजंग और धीरशम्शेरजंगके नयपालमें चला आया.

---

(१) तिब्बती लोग मन्दिरको गुम्बा कहते हैं, जो बौद्ध लोगोंका पवित्र स्थान या लामा लोगोंके रहनेकी जगह होती है; लामा लोग बौद्धोंके पूजनीय (फ़क़ीर) समझे जाते हैं, तिब्बतका राजा भी लामा ही होता है, जिसका शादी विवाह वगै़रह नहीं किया जाता, राजा लासामें रहता है, और उसके मातहत चार काजी राज्यका काम करते हैं.

नयपाली एल्चीने शिकर्जुनमें पहुंचकर चीनी अम्बान व तिब्बती सर्दारोंसे जंगबहादुरके कहनेके मुवाफ़िक़ बात चीत की, लेकिन् नयपाल वालोंके मन्शाके मुताबिक़ कोई बात क़रार न पाई, और वह चीनी अम्बानके भेजे हुए एक चीनी अफ्सर तथा कई तिब्बती सर्दारों समेत काठमांडूमें लौट आया. उसवक़ चीनी अफ्सर व तिब्बती सर्दारोंको महाराजाकी तरफ़से यह जवाब मिला, कि नये जीते हुए मुल्कपर हमारा क़बज़ह रहे, और १०००००० रुपया फ़ौज ख़र्चका मिले, तो सुलह क़ाइम होसक्ती है. यह सुनकर तिब्बती लोग वापस लौटे और उनके साथ महाराजाकी तरफ़से कर्नेल तिलविक्रम थापा (१) एक पत्र लेकर, जिसमें ऊपर बयान किया हुआ आशय था, चीनी अम्बानके पास भेजा गया. जब वह तिब्बतमें पहुंचा और अम्बान से मिला, तो कुछ बातचीत होने बाद अम्बानने यह जवाब दिया, कि अगर गोरखा लोगोंको सुलह करना मन्ज़ूर है, तो २००००० दो लाख रुपया फ़ौज ख़र्चकी बाबत उन्हें दिया जाकर आइन्दहके लिये नयपाली सौदागरोंके मालपर महसूल मुआफ़ करदिया- जायेगा, और यदि यह मन्ज़ूर न हो, तो इस लड़ाईका हाल चीनके बादशाहको ज़ाहिर करके वहांसे जंगी सेना मंगाई जावेगी, जो नयपालमें लूटमार करने और देश छीन लेनेके अलावह गोरखाली राजाको भी गिरिफ़्तार करके पेकिन (चीनकी राजधानी) में लेजावेगी; क्योंकि तिब्बतका मुल्क चीनी सर्कारने लामा लोगों और बौद्धके मठों (गुम्बों) को पुण्यार्थ दे रक्खा है, इसपर और किसीका कुछ इख्तियार नहीं है. यह वृत्तान्त पत्र द्वारा लेकर तिलविक्रम काठमांडूमें आया, जिसका जवाब महाराजा की तरफ़से वज़ीर जंगबहादुरने बड़ी नर्मी और किसीक़द्र सख़्तीके साथ विक्रमी भाद्रपद [हि० १२७२ मुहर्रम = .ई० सेप्टेम्बर] में यही भेजा, कि जीता हुआ मुल्क कभी नहीं छोड़ा जायेगा; यदि चीनी सेनाकी चढ़ाई होगी, तो गोरखा लोग भी अपनी शक्तिके मुवाफ़िक़ आख़री दमतक लड़ेंगे.

विक्रमी कार्तिक [हि० रबीउलअव्वल = .ई० नोवेम्बर] के शुरू में तिब्बती भोटिया लोगोंने कुतीकी मुहाफ़िज़ नयपाली सेनापर, जो तादादमें ढाई हज़ारसे कम न थी, अचानक धावा किया, जिसमें नयपाली सेनाके बहुतसे आदमी मारेजाकर बाक़ी बचे हुए १३०० सिपाही लिस्तीकी तरफ़ भाग आये. यह ख़बर नयपाल में पहुंची, और वहांसे पांच पल्टनें धीरशम्शेरजंगकी मातहतीमें लिस्तीकी तरफ़ तथा पांच पल्टनें सनकसिंहकी मातहतीमें केरंगकी ओर भेजी गईं.

---

(१) यह वह शख़्स है, जो पाल्पासे गुरुप्रसादशाहके साथ भागा था, और जिसको जंगबहादुरने वापस बुलाकर कर्नेल बना दिया था.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल १० [हि० ता० ८ रबीउलअव्वल = .ई० ता० १९ नोवेम्बर] को काठमांडूमें यह ख़बर पहुंची, कि भोटिया लोगोंने रातके वक्त झूंगापर हमलह किया, जिसमें उनके क़रीब १००० एक हज़ार आदमी मारे जाने व घायल होने बाद बाक़ी लोग भाग गये; नयपाली मददगार फ़ौजने नियत स्थानोंपर पहुंचकर उनके आस पास कई जगह भोटिया लोगोंसे मुक़ाबले किये, जिनमें सैकड़ों मुख़ालिफ़ और भी मारे गये, और उन तोपों वग़ैरह सामानमेंसे, जो भोटिया लोगोंने कुटी मक़ामके पास अचानक हमलह करके नयपालियोंसे छीन लिया था, बहुतसा सामान वापस हाथ लगा. इन लड़ाइयोंमें क़रीबन् २०० गोरखा और १८०० तिब्बती भोटिया मारे गये. आख़रकार तिब्बत वालोंने जान व मालका बहुत कुछ नुक़्सान उठानेसे लाचार होकर सुलह करली, और उसी समयसे उन्होंने १०००० दस हज़ार रुपया सालानह नयपालके महाराजाको देना, नयपाली सौदागरोंसे अपने इलाक़हमें किसी मालपर कुछ भी महसूल न लेना, और व्यापारियोंके मुक़द्दमे फ़ैसल करनेके वास्ते तिब्बतमें नयपाली रेज़िडेण्ट रक्खा जाना मन्ज़ूर किया.

विक्रमी १९१३ श्रावण शुक्ल १ [हि० १२७२ ता० २९ ज़िल्क़ाद = .ई० १८५६ ता० १ ऑगस्ट] को जंगबहादुरने विज़ारतका काम अपने छोटे भाई बम्बहादुरको सौंप दिया, और उसका सबब अपनेमें रियासती कारोबारकी निगरानी और मुल्की मुआमलातमें परिश्रम करनेकी शक्ति न होना ज़ाहिर किया. महाराजाने जंगबहादुरके मन्शाके मुवाफ़िक़ विज़ारतका उहदह बम्बहादुरको देकर कुछ दिनों बाद जंगबहादुरको महाराजा का ख़िताब, और एक लाख रुपया सालानह आमदनीके काश्की और लमजुं नामी दो सूबे जागीरमें बख़्श दिये (१).

विक्रमी १९१४ ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० १२७३ ता० १ शव्वाल = .ई० १८५७ ता० २५ मई] को बम्बहादुर मरगया (२). इसके बाद जंगबहादुरने

(१) इसवक़ महाराजाने जंगबहादुरको बहुत कुछ इख़्तियारातके साथ एक सनद लिखदी थी, जिनमेंसे अव्वल तो उसको अपनी जागीरमें मुजिमोंको मौतकी सज़ा देने, दूसरे अपने विरोधीको ख़ास अपनेही इख़्तियारसे रियासत नयपालके हर एक स्थानमें जहां चाहे सज़ा देनेका इख़्तियार था; तीसरी शर्त यह थी, कि चीनी तथा अंग्रेज़ी सर्कारोंसे, जो बर्ताव जारी है, उसमें किसी तरहकी कमी बेशी उसकी रायके बिदून महाराजा या वज़ीर न करसकें, परन्तु इस बातको अंग्रेज़ी रेज़िडेण्टने मन्ज़ूर नहीं किया; और चौथे यह, कि नयपालके राज्यमें उसीके भाइयों तथा बेटोंमेंसे क्रमशः एकके बाद दूसरा विज़ारतका .उहदह पाता रहे.

(२) इससे पहिले नयपालके कुल वज़ीर किसी न किसी कारण शस्त्र वग़ैरहसे मारे गये; लेकिन् सिर्फ़ यही एक वज़ीर हुआ, जो विना मारे मौतसे मरा.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ४ [हि० ता० २ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २५ जून] को महाराजाके बड़े पुत्र त्रैलोक्यविक्रमशाहके साथ अपनी बड़ी लड़कीका विवाह करदिया. यह शादी आनन्द व उत्साहके साथ बड़ी धूमधामसे हुई, जिसमें अंग्रेज़ी रेज़िडेएट मिह्मानके तौरपर शामिल हुए, और जल्सह देखनेके लिये जंगबहादुरने रेज़िडेन्सीसे मेम लोगोंको भी अपने मकानपर बुलाया.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २८ जून] को बम्बहादुरके मरनेका शोक और युवराजकी शादीका जल्सह ख़त्म होने बाद जंगबहादुरने महाराजा और अपने रिश्तहदारोंके कहनेपर दोबारह विज़ारतका काम अपने हाथमें लिया.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें जंगबहादुरने सर्कार अंग्रेज़ीको मदद देनेके लिये फ़ौज तय्यार की, लेकिन् गवर्मेएटने कुछ दिनोंतक, याने जबतक कि बाग़ी लोगोंको शिकस्त न हुई, मदद लेना मन्ज़ूर नहीं किया; क्योंकि अव्वल तो अंग्रेज़ लोग हिन्दुस्तानियोंको यह बात दिखलाना चाहते थे, कि सर्कार अंग्रेज़ी अपनी ताक़तसे ही इस फ़सादको दूर कर सक्ती है, और दूसरे जंगबहादुरने मदद देनेके एवज़ अम्न क़ाइम होजाने पर अवधके सूबहमेंसे कुछ मुल्क मांगा था. जब दिल्ली व लखनऊ वगैरह स्थानोंमें गवर्मेएट अंग्रेज़ीका क़बज़ह होगया, तब ग़द्रको रफ़ा करनेके लिये उक्त गवर्मेएटने गोरखाली लोगोंसे मदद लेना सिर्फ़ इस शर्तपर मंज़ूर किया, कि जो आदमी मारेजावेंगे उनके बालबच्चों को पेन्शन दी जायेगी, और जो ज़ख़्मी होंगे उनको इन्आमके तौरपर रुपया मिलेगा, और इसके सिवा गोला, बारूद वगैरह मुतफ़र्रक़ ख़र्च भी दिया जायेगा. जंगबहादुर ख़ास अपने फ़ायदेके लिये अंग्रेज़ोंको हर हालतमें मदद देना मुनासिब समझकर ख़ुद फ़ौज समेत हिन्दुस्तानकी तरफ़ आनेके लिये तय्यार हुआ, कि इसी अरसहमें गगनसिंह ख़वासके बेटेकी ज़बानी कई लोगोंकी निस्बत जंगबहादुरको उसके भाइयों व दूसरे सलाहकारों समेत मारडालनेका इरादह ज़ाहिर हुआ, जिसपर दस बारह आदमी गिरिफ़्तार होकर क़त्ल कराये गये.

इसके बाद जंगबहादुर मए रणोद्दीपसिंह व धीरशम्शेरजंगके क़रीब ११००० फ़ौज साथ लेकर अंग्रेज़ोंको मदद देनेके लिये नयपालसे रवानह हुआ; यह फ़ौज थोड़े दिनों तक सींगोली व बिसोलियामें ठहरकर विक्रमी पौष शुक्ल १३ [हि० १२७४ ता० ११ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २९ डिसेम्बर] को गंडक नदीके पार गोरखपुरके रास्तहपर पहुंची, जहां जेनरल मैकग्रैग साहिबसे जंगबहादुरकी मुलाक़ात हुई, और उक्त जेनरलके कहनेके मुवाफ़िक़ जंगबहादुरकी सेनाने सर्कार अंग्रेज़ीको

मदद दी, जिसका मुफ़स्सल हाल कप्तान ट्रौटर साहिबकी किताब "ब्रिटिश एम्पाइर इन इण्डिया" में लिखा है.

जंगबहादुरने रियासतका प्रबन्ध बहुत .उम्दह तौरपर किया, और सेनाकी तादाद भी किसीक़द्र बढ़ाई. इसके सिवा धर्मशास्त्रके अनुसार एक क़ानून (ऐन) बनवाकर कुल राज्यभरमें जारी किया, जिसमें मुल्की मुआमलातके प्रबन्ध और मुक़द्दमात वग़ैरहकी तफ्सील व सज़ाओंका तरीक़ह बयान किया गया है. इस क़ानूनके जारी होनेसे पहिलेकी बनिस्बत इस वक्त मुज्रिमोंकी सज़ादिहीमें बहुत कुछ कमी होगई है, और ज़मींदारोंके पाससे इज़ाफ़ह करनेपर भी किसी दूसरेको ज़मीन नहीं दिलाई जाती.

विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = .ई० १८६१] के क़रीब जंगबहादुरकी दूसरी लड़कीका विवाह युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाहके साथ हुआ; और कुछ अरसह बाद अपनी तीसरी लड़कीकी भी शादी उक्त वज़ीरने इन्हीं महाराजकुमारके साथ करदी.

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = .ई० १८७२] में महाराजकुमार त्रैलोक्य-विक्रमशाहके दूसरी महाराणीसे एक कुंवर उत्पन्न हुआ, जिसका बड़ा भारी उत्सव माना गया. लाखों रुपये नक़द, ज़ेवर व ज़मीन वग़ैरह बहुतसे लोगोंको इन्-आममें दीगई, और कुल रियासतके नौकरोंके अलावह रेज़िडेण्टकी सेनाको भी सरोपाव दिये गये. छठीके जलसहमें महाराजकुमारने रेज़िडेण्टको मिह्मान किया; परन्तु अफ्सोस, कि वह कुंवर एक महीनेका होकर इन्तिक़ाल करगया. इसके बाद विक्रमी १९३२ श्रावण शुक्ल ७ [हि० १२९२ ता० ६ रजब = ई० १८७५ ता० ८ ऑगस्ट] के दिन इन्हीं महाराणीके गर्भसे पृथ्वीवीरविक्रमशाहका जन्म हुआ. इनके सिवा त्रैलोक्यविक्रमशाहके दो तीन लड़कियां भी निज महाराणियोंसे पैदा हुईं, जिनमेंसे सिर्फ़ एक बाक़ी रही. उक्त युवराजके महाराणियोंके अलावह कई एक ख़वासें भी थीं, जिनसे ६ लड़के पैदा हुए.

विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = .ई० १८७६] की शरद ऋतुमें जंग-बहादुर अपने भाई जगत्शम्शेरजंगके बेटे जेनरल अमरजंग व कई राणियों और ख़वासों समेत शिकारके लिये तराईमें आया था, जहां नयपालसे चालीस कोस दूर बाघमती नदीके किनारे पत्थरघटा मक़ामपर कुछ दस्त लगजानेसे विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १२ [हि० १२९४ ता० ११ सफ़र = .ई० १८७७ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को उक्त वज़ीरका इन्तिक़ाल होगया, और एक राणी व दो ख़वासोंने उसके साथ सती होनेकी इच्छा प्रगट की. यह ख़बर अमरजंगने नयपालमें अपने पिता व चचा (जंगबहादुरके छोटे भाई) रणोद्दीपसिंह व धीरशम्शेरजंगके पास भेजी. जब दूसरे रोज़ यह हाल इन लोगोंको मालूम हुआ, तो इन्होंने वज़ीरके देहान्तको छिपाकर

पहिले राजधानीका कुल बन्दोबस्त किया, और इसके बाद रातके वक्त धीरशम्शेरजंगने युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाहके पास जाकर अर्ज़ किया, कि जंगबहादुर बहुत बीमार हैं, इसलिये आपको महाराणियों समेत बहुत जल्द वहां पधारकर उन्हें दर्शन देना चाहिये, मैं भी आपके हम्राह चलता हूं. धीरशम्शेरजंगके कहनेके मुवाफ़िक़ युवराज उसी वक्त महाराणियों समेत तय्यार होगये, तब विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० ता० १२ सफ़र = ई० ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को पिछली नौ घड़ी रात बाक़ी रहे धीरशम्शेरजंगने जंगबहादुरके बेटे जगत्जंग, जीतजंग, पद्मजंग और रणवीरजंग आदि (१) को भी कहलाया, कि जंगबहादुर सख़्त बीमार हैं, इस सबबसे महाराजकुमार वहां पधारते हैं, अगर तुम लोगोंको भी चलना हो, तो चलो; लेकिन् उनमेंसे कोई चलनेके लिये तय्यार न हुआ. आख़रकार युवराज अपनी तीनों महाराणियों तथा धीरशम्शेरजंग, बम्बहादुरके बेटे बम्विक्रम, जीतजंग और रणवीरजंग समेत नयपालसे रवानह होकर विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० ता० १३ सफ़र = ई० ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को पत्थरघटा मक़ामपर पहुंचे, और उसी रोज़ उक्त वज़ीरका दाह कर्म हुआ. इस वज़ीरके साथ एक राणी और दो ख़वासें सती हुईं.

जंगबहादुरके भाइयोंने युवराजको जंगबहादुरके बीमार होनेकी ख़बर इस विचारसे दी थी, कि कहीं ऐसा न हो, कि युवराज, जंगबहादुरके मरनेकी सहीह ख़बर सुनकर उसके बेटे जगत्जंगको, जो अपने पिताकी आज्ञानुसार उसकी मौजूदगीमें ही रियासती कारोबारमें एक बड़ा सलाहकार माना जाता था, वज़ीर बनानेकी कोशिश करें, या हम लोगोंके ख़ानदानको बिल्कुल विज़ारतसे ख़ारिज करादें; इसलिये अस्ल हाल ज़ाहिर नहीं किया. उन्होंने यह सोचा, कि त्रैलोक्यविक्रमशाह नयपालसे रवानह होजावेंगे, तब महाराजासे अर्ज़ करके रणोद्दीपसिंहके नामपर विज़ारत कराली जावेगी. युवराजके नयपालसे रवानह होने बाद प्रभात होते ही ये लोग महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहके पास पहुंचे, और उनसे वज़ीरका मरना ज़ाहिर करके विज़ारतका काम रणोद्दीपसिंहके नाम करालिया. इस वक्त आम लोगों व जंगबहादुरके बेटों जगत्जंग आदिको मालूम हुआ, कि जंगबहादुर मरगये, और उनकी जगह रणोद्दीपसिंह वज़ीर बनाये गये हैं.

रणोद्दीपसिंहने विज़ारतका उह्दह पानेसे पहिले ही जगत्जंगके भयसे इस क़द्र बन्दोबस्त करा दिया था, कि राजधानीके चारों तरफ़ पल्टनें तईनात करदेनेके

---

(१) जंगबहादुरके बहुतसी राणियां और ख़वासें थीं, जिनके गर्भसे कई लड़के व लड़कियां उत्पन्न हुईं, लेकिन उसके मरनेके वक्त कुल ९ बेटे और १५ बेटियां बाक़ी रही थीं.

सिवा जंगबहादुरके बेटोंमेंसे किसीको महाराजाके पासतक नहीं जाने दिया. जब युवराज (त्रैलोक्यविक्रमशाह) जंगबहादुरका दाह कर्म कराकर विक्रमी चैत्र कृष्ण १ [हि० ता० १४ सफ़र = ई० ता० २८ फ़ेब्रुअरी] के दिन वापस राजधानीमें आ पहुंचे, और उन्होंने रणोद्दीपसिंहका नज़ानह लेलिया, तब पल्टनें वगैरह बन्दोबस्त उठाया गया.

महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहके मिज़ाजका हाल तो पाठक लोग उनके बचपनकी आदतोंसे मालूम करही सके हैं, कि वह सिवा वाहियात खेल तमाशों व हर एकपर जा बेजा सख़्ती करनेके राज्य प्रबन्ध सम्बन्धी कामोंपर कुछ भी ख़याल नहीं करते थे, और राज्यका कुल काम महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहके राज्यसे ख़ारिज होने व इनके गादीपर बिठाये जानेके पहिलेसे जंगबहादुर ही ख़ास अपनी तज्वीज़के मुवाफ़िक़ करता था; जबतक यह वज़ीर जीता रहा, राज्यमें किसी तरहकी ख़राबी पैदा न होने पाई; क्योंकि जंगबहादुरको प्रथम तो महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहने काशी जाते वक़्त राज्यका पूरा इख़्तियार देदिया था; दूसरे उस वक़्त सुरेन्द्रविक्रमशाह बालक होनेके अलावह अव्वल दरजेके बद चलन थे, जो इस वक़्ततक केवल नामके लिये राजा रहे; और तीसरे युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाह उक्त वज़ीरके साथ अपना एक नज़्दीकी रिश्तह होजानेके सबब उसका बहुत कुछ लिहाज़ रखते थे. इन कारणोंसे जंगबहादुरने नयपालके राज्यपर एक अरसहतक ख़ुद मुख़्तारीके साथ हुकूमत की, इसकी विज़ारतके वक़्तमें अगर कोई बन्दिश उसके बर्ख़िलाफ़ हुई, तो फ़ौरन् ज़ाहिर होकर मुख़ालिफ़ोंको सज़ा दीगई.

रणोद्दीपसिंह अपने भाई जंगबहादुरके वक़्तमें एक बड़ा अफ़्सर या नाइब वज़ीर माना जाता था, लेकिन् कुछ अरसहसे रियासती काम काजमें ज़ियादहतर जगत्जंग दख़्ल देने लगगया था. अब युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाहको धोखा देकर उनके मन्शाके बर्ख़िलाफ़ रणोद्दीपसिंहको उसके भाइयोंने वज़ीर बना दिया, और राज्यका काम जंगबहादुरके इख़्तियारके मुवाफ़िक़ रणोद्दीपसिंह, जगत्शम्शेरजंग व धीरशम्शेरजंग करने लगे, इनके अलावह युवराजने भी किसी किसी बातमें दख़्ल देना शुरू किया, जिसके लिये वज़ीरने कई बार उनको रोका, बल्कि एक मर्तबह वह सख़्त कलामीसे भी पेश आया, और कहा कि तुमको हर्गिज़ किसी मुआमलेमें दख़्ल न देना चाहिये. यह बात महाराजकुमारको बहुत ही नागुवार गुज़री, और इसी नाराज़गीपर उन्होंने वज़ीरके ख़ानदान व उनके साथियोंका बिल्कुल ख़ातिमह करादेनेके लिये बहुतसे मनुष्योंको भी एक मत करलिया था, परन्तु अख़ीरमें कुछ नतीजह न निकलने पाया, याने विक्रमी १९३४ चैत्र कृष्ण १२ [हि० १२९५ ता० २५ रबीउ़लअव्वल = ई० १८७८ ता० ३० मार्च] को उक्त महाराजकुमार, एक रातभर शरीरमें जलन रहकर, प्रभात होतेही यकायक इस दुन्यासे इन्तिक़ाल करगये.

त्रैलोक्यविक्रमशाहके बाद रणोद्दीपसिंहने उनके सलाहकार लोगोंके उहदोंमें कमी और कई प्रकारसे उनका अपमान करना शुरू किया, जिसपर बहुतसे आदमियोंने महाराजाके छोटे कुंवर नगेन्द्रविक्रमशाहसे सलाह लेकर थापा लोगोंमेंसे श्रीविक्रम या अमरविक्रम (१) को वज़ीर बनाने और रणोद्दीपसिंह आदिको मारडालनेका विचार निश्चय करलिया. इस सलाहमें जंगबहादुरका बेटा पद्मजंग भी शामिल था, लेकिन् उसको यह बात नहीं जतलाई गई थी, कि विज़ारतका पद थापा लोगोंको दिया जायेगा. नगेन्द्रविक्रमशाहके सलाहकारोंने यह सलाह ठहराई, कि जिस वक्त रणोद्दीपसिंह अपने कुल सलाहकारों व रिश्तहदारों समेत कचहरीमें बैठे, उस वक्त एकदम सब लोग वहां क़त्ल करडाले जावें. इसी अरसहमें, याने विक्रमी १९३७ मार्गशीर्ष [हि० १२९८ मुहर्रम = ई० १८८० डिसेम्बर] में युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाहकी महाराणियां तीर्थ यात्राका मनोर्थ प्रगट करके हिन्दुस्तानकी तरफ़ रवानह हुईं, और उनके साथ रणोद्दीपसिंह भी चला गया. उक्त महाराणियां जगदीश, रामेश्वर और द्वारिका तीन धामकी यात्रा करके बम्बईमें पहुंची थीं, कि उसी मक़ाम पर महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहके सख्त बीमार होनेकी ख़बर उनको मिली, जिससे कुल लश्कर एकदम सीधा नयपालकी तरफ़ रवानह होकर विक्रमी १९३८ के वैशाख [हि० १२९८ जमादियुलअव्वल = ई० १८८१ एप्रिल] में राजधानीके अन्दर दाख़िल हुआ; और विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रजब = ई० ता० १२ जून] को क्षई रोगसे महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहका इन्तिक़ाल होजानेपर नयपाल राज्यकी रीतिके मुवाफ़िक़ वर्तमान महाराजाधिराज पृथ्वीवीरविक्रमशाह गादीके मालिक बनाये जाकर मृतक महाराजाका दाह कर्म कियागया.

४०- महाराजा पृथ्वी वीरविक्रमशाह.

महाराजा पृथ्वीवीरविक्रमशाह, जिनका जन्म विक्रमी १९३२ श्रावण शुक्ल ७ [हि० १२९२ ता० ६ रजब = ई० १८७५ ता० ८ ऑगस्ट] को हुआ था, ७ वर्षकी उम्रमें अपने पितामह (दादा) के देवलोक होनेपर गद्दी नशीन कियेगये; इनका राज्याभिषेकोत्सव छः महीने पीछे विक्रमी १९३८ मार्गशीर्ष [हि० १२९९ मुहर्रम = ई० १८८१ नोवेम्बर] में हुआ. इन महाराजाके कम उम्र होनेके कारण राज्यका कुल काम रणोद्दीपसिंह वग़ैरह लोग करते थे; और नगेन्द्रविक्रमशाह, ऊपर लिखे मुवाफ़िक़, दूसरा

(१) श्रीविक्रम माधवरसिंहका पोता, और अमरविक्रम तिलविक्रमका बेटा था.

वज़ीर नियत करनेकी कोशिश कर रहे थे, जो इस समयतक प्रगट नहीं हुई. कुछ दिन हुए, कि वर्तमान महाराजाधिराजके गद्दी बैठने बाद, जब रणोद्दीपसिंह शिकारके लिये तराईमें आया, और जगत्शम्शेरजंगके कुछ अरसह पहिले मरजानेके सबब नियावतका काम धीरशम्शेरजंग करने लगा, तब रणोद्दीपसिंहके मुख़ालिफ़ोंने पुख़्तह सलाह करके उसको क़त्ल करनेका दिन नियत करलिया था.

विक्रमी पौष [हि० सफ़र = ई० डिसेम्बर] में ऊपर बयान कीहुई सलाहके मुवाफ़िक़ नगेन्द्रविक्रमशाहके फ़िर्क़े वाले लोगोंने यह इरादह किया, कि शुक्रवारके दिन धीरशम्शेरजंग आदि लोगोंको तो एकदम यहींपर (राजधानीमें) क़त्ल करदिया जावे, और यह ख़बर पहुंचनेपर रणोद्दीपसिंहको अमरविक्रम थापा (जो रणोद्दीपसिंहके साथ था) सफ़रमें मारडालेगा. इस विचारमें रियासतके बहुतसे आदमी शामिल थे, जिनमेंसे गगनसिंह ख़वासके पोते उत्तरध्वजने यह कुल माजरा धीरशम्शेरजंगसे ज़ाहिर करदिया; इसपर बहुतसे आदमी गिरिफ़्तार हुए, और १५ रोज़तक तह्क़ीक़ात होने बाद रणोद्दीपसिंहके काठमांडूमें पहुंचनेके दूसरे दिन, याने विक्रमी माघ कृष्ण १४ [हि० ता० २७ सफ़र = ई० १८८२ ता० १८ जैन्युअरी] को इस इरादहके जुर्ममें कर्नेल् श्रीविक्रम थापा, कर्नेल् अमरविक्रम थापा, कर्नेल् इन्द्रसिंह, मेजर कप्तान शम्शेरजंग थापा, मेजर कप्तान संसारविक्रम थापा, मेजर कप्तान संग्राम सूर विष्ट, कप्तान समरविक्रम थापा, कप्तान बख़्तवार शाही, कप्तान रणध्वज अधिकारी, इनसेन रणध्वज कारकी, सूबहदार पहलवानसिंह कारकी, कप्तान कैल्या विष्ट, महाकोत्या सेते विष्ट, और सूबहदार चौबा पाण्डे आदि बीस मनुष्य क़त्ल कराये गये; और तह्क़ीक़ात बदस्तूर जारी रही, जिसमें त्रैलोक्यविक्रमशाहके समयतककी बन्दिशका हाल ज़ाहिर होगया. आख़िरकार विक्रमी माघ शुक्ल १४ [हि० ता० १२ रबीउ़लअव्वल = ई० ता० २ फ़ेब्रुअरी] को कर्नेल् अमृतसिंह अधिकारी, कर्नेल् विर्मानसिंह विश्न्यात और सूबहदार लोकबहादुर थापा, तो क़त्ल हुए, और ख़ज़ान्ची शिवप्रसाद, सूबह दिग्विजय, मुखिया टंकनाथ, सूबह होमनाथ (१), और भट्ट श्यामविलास जातिके ब्राह्मण होनेके सबब क़त्लसे बचकर पाल्पामें क़ैद किये गये. इनके अलावह कई मनुष्य छः वर्षकी मीआ़दके लिये नयपालमें क़ैद हुए.

---

(१) टंकनाथ और होमनाथ दोनों, महाराजकुमार त्रैलोक्यविक्रमशाहके धायभाई हैं, जो पाल्पामें क़ैद थे, और वहांसे भागकर हिन्दुस्तानमें आने बाद अरसह सात आठ वर्षसे वर्तमान समय विक्रमी १९४७ [हि० १३०८ = ई० १८९०] पर्यंत रियासत उदयपुरमें ठहरे हुए हैं, जिनको खानपान आदिका ख़र्च उदयपुरके दर्बारसे मिलता है.

महाराजाके चचा नगेन्द्रविक्रमशाह, जेनरल बम्‌विक्रम, और जेनरल पद्मजंगमेंसे, जो ऊपर बयान किये हुए बखेड़ेकी बुन्‌याद डालनेवाले समझे गये थे, नगेन्द्रविक्रमशाह और बम्‌विक्रम तो तीन वर्ष क़ैद रहनेके लिये हिन्दुस्तानमें भेजे गये, और पद्मजंग छः महीनेतक नवाकोटमें क़ैद रहा. मीआद पूरी होजाने बाद नगेन्द्रविक्रमशाह गोरखामें, बम्‌विक्रम धनकुटामें रक्खे गये, और पद्मजंग पीछा अपने .उह्‌देपर नियत किया गया. त्रैलोक्यविक्रमशाहके समयकी बन्दिशमें शामिल होनेका जुर्म जंगबहादुरके बेटे जगत्‌जंगपर भी साबित हुआ था, जो उन दिनों हिन्दुस्तानमें होनेके सबब उस समय सज़ासे बचगया, लेकिन् रणोद्दीपसिंहने कुछ दिनों बाद तसल्लीका पर्वानह भेजकर उसे धोखेसे बुलाया, और जब वह नयपालकी सीमामें पहुंचा, तो फ़ौरन् बेड़ी डालकर क़ैदी बनालिया गया. रणोद्दीपसिंहकी स्त्री जगत्‌जंगको बचपनसे पुत्रके समान चाहती थी, इस सबबसे राजधानीमें पहुंचने बाद कुछ अ़रसहतक वह क़ैद रहकर रिहा करदिया गया. इसके बाद एक अ़रसहतक रणोद्दीपसिंहने बा इख़्तियार विज़ारतका काम किया.

अब रणोद्दीपसिंहने विज़ारतका काम जगत्‌जंगको दिलाकर तीर्थ यात्राके लिये हिन्दुस्तानमें आनेकी तय्यारी की. यह बात महाराजाकी माताको नागुवार गुज़री, और उसने धीरशम्‌शेरजंगके बेटे वीरशम्‌शेरजंग तथा खड्‌गशम्‌शेरजंगसे सलाह करके रणोद्दीपसिंह आदिको मरवाडालना चाहा. वीरशम्‌शेरजंगने विज़ारतके लालचसे विक्रमी १९४२ के मार्गशीर्ष [हि० १३०३ रबीउ़लअव्वल = .ई० १८८५ डिसेम्बर] में रणोद्दीपसिंहको यात्राकी रवानगीसे एक दिन पहिले अपने भाई खड्‌गशम्‌शेरजंग तथा दूसरे कई मनुष्यों समेत उसके मकानपर जाकर खड्‌गशम्‌शेरजंगके हाथसे मरवा डाला, और जगत्‌जंगके मकानपर सिपाही वग़ैरह भेजकर उसका भी उसके बेटे युद्धप्रतापजंग समेत काम तमाम कराया.

रणोद्दीपसिंहके मारेजाने बाद विज़ारतका काम वीरशम्‌शेरजंगके सुपुर्द हुआ, और नियाबतका काम खड्‌गशम्‌शेरजंग करने लगा. कुछ अ़रसह बाद खड्‌गशम्‌शेरजंगने महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहके दूसरे बेटे उपेन्द्रविक्रमशाहके बेटेकी स्त्री कान्छीमय्यासे सलाह लेकर उसके बेटेको गादी बिठाने और वर्तमान महाराजा पृथ्वीवीरविक्रमशाहको किसी तरहपर राज्यसे अलग करनेकी सलाह की, परन्तु यह हाल ज़ाहिर होगया, और वज़ीर वीरशम्‌शेरजंगने मुज्रिमोंको राजधानीसे निकलवाकर खड्‌गशम्‌शेरजंगको पाल्पामें, कान्छी मय्याको लेंगलेंगमें, और कर्नेल् केसरसिंह थापाको प्यूठानामें भिजवा दिया. वर्तमान महाराजाधिराजके समयमें विज़ारतका काम वीरशम्‌शेरजंग करता है.

शेषसंग्रह.

नयपालमें पशुपतिके मन्दिरके पश्चिमी दर्वाज़हका लेख

(इण्डियन ऐंटिक्वेरीकी जिल्द ९ के पृष्ठ १७८-८० तक).

अक्षस्त्रय्यव्ययात्मा त्रिसमयसदृशास्त्रिप्रतीतस्त्रिलोकीत्राता त्रेतादिहेतुस्त्रिगुणमयतया त्र्यादिभिर्वर्णितोलं ॥ त्रिस्त्रोतोधौतमूर्धा त्रिपुरजिदजितोनिर्व्विबन्ध त्रिवर्गो य [स्योत्तुङ्ग] स्त्रिशूल स्त्रिदशपतिनुतः - - - तापनोभूत् ॥ १ ॥ राजद्रावणमूर्द्धपङ्क्तिशिखरव्यासक्तचूडामणिश्रेणीसङ्गतिनिश्चलात्मकतयालङ्काम्पुनानाः-पुरीं ॥ - - द्व (न्ध्यपराक्रमा) - - - - - - - - णिसङ्गताः श्रीबाणासुरशेखराः पशुपतेः पादाएवः पान्तु वः ॥ २ ॥ सूर्याद्ब्रह्मप्रपौत्रान्मनुरथ भगवाञ्जन्म लेभे ततोभूदिक्ष्वाकुश्चक्रवर्ती नृपतिरपि ततः श्रीविकुक्षि (र्बभूव) ॥ जात - - - - - - - - - - विदितोभूमिपः सार्व्वभौमोभूतोस्माद्विश्वगण्वः प्रबल निजबलव्याप्तविश्वान्तरालः ॥ ३ ॥ राजाष्टोत्तरविंशति क्षितिभुजस्तस्माद्व्यतीत्यक्रमात्संभूतः सगरः पतिः - - - - - - (साग) रायाः क्षितेः ॥ जातो स्मादसमंजसो नरपतिस्तस्मादभूदंशुमान्स श्रीमन्तमजीजनन्नरवरो भूपं दिलीपाव्हयं ॥ ४ ॥ भेजे जन्म ततो भगीरथइति ख्यातो नृपोत्रान्तरे भूपाला - - - - - - - - - (जातो) रघोरप्यजः ॥ श्रीमत्तुङ्गरथस्ततो दशरथः पुत्रैश्चपौत्रैस्समं राज्ञोष्टावपरान्विहाय परतः श्रीमानभूल्लिच्छविः ॥ ५ ॥ अस्त्येव क्षितिमंडनैकतिलको लोकप्रतीतो महाना - - - - - प्रभावमहताम्मान्यः सुराणामपि ॥ स्वच्छं लिच्छविनामबिभ्रदपरो वंशप्रवृत्तोदयः श्रीमच्चन्द्रकलाकलापधवलो गङ्गाप्रवाहोपमः ॥ ६ ॥ तस्माल्लिच्छवितः परेण नृपतीन्हित्वाप - - - रं श्रीमान्पुष्पपुरे कृतिः क्षितिपतिर्जातस्सुपुष्पस्ततः ॥ साकं भूपतिभिस्त्रिभिः क्षितिभृतां त्यक्त्वान्तरे विंशतिं ख्यातः श्रीजयदेवनामनृपतिः प्रादुर्बभूवापरः ॥ ७ ॥ एकादशक्षिति - - - - - - - - (त्य) क्त्वान्तरे विजयिनो जयदेवनाम्नः ॥ श्रीमान्बभूव वृषदेव इति प्रतीतो राजोत्तमः सुगतशासनपक्षपाती ॥ ८ ॥ अभूत्ततः शंकरदेवनामा श्रीधर्मदेवो प्युदपादि तस्मात् ॥ श्रीमानदेवो नृपतिस्ततोभूत्ततो महीदेव इति प्रसिद्धः ॥ ९ ॥ वसन्त इव लोकस्य कान्तः शान्तारिविग्रहः ॥ आसीद्वसन्तदेवोस्माद्दान्तसामन्तवन्दितः ॥ १० ॥ अस्यान्तरे प्युदयदेव इति क्षितीशाज्जातास्त्रयोदश (तत) श्च नरेन्द्रदेवः ॥ मानोन्नतो नतसमस्तनरेन्द्रमौलिमालारजो निकरपांशुलपादपीठः ॥ ११ ॥ दाता सद्द्रविणस्य भूरिविभवो जेता द्विषत्संहतेः

कर्ता बान्धवतोपणस्य यमवत्पाता प्रजानामलं ॥ हर्त्ता संश्रितसाधुवर्गविपदां सत्यस्य वक्ता ततो जातः श्रीशिवदेव इत्यभिमतो लोकस्य भर्ता भुवः ॥ १२ ॥ देवी बाहुबलाढ्यमौखरिकुलश्रीवर्मचूडामणिख्यातिह्रेपितवैरिभूपतिगणश्रीभोगवर्मोद्भवा ॥ दौहित्री मगधाधिपस्य महतः श्र्यादित्यसेनस्य या व्यूढा श्रीरिव तेन सा क्षितिभुजा श्रीवत्सदेव्यादरात् ॥ १३ ॥ तस्माद्भूमिभुजो प्यजायत जितारातिरजय्यः परै राजश्रीजयदेव इत्यवगतः श्रीवत्सदेव्यात्मजः ॥ त्यागी मानधनो विशालनयनः सौजन्यरत्नाकरो विद्व (न्सक्त) चिराश्रयो गुणवतां पीनोन्नवक्षस्थलः ॥ १४ ॥ मायद्दन्तिसमूहदन्तमुसलक्षुण्णारिभूभृच्छिरो गौडोड्रादिकलिङ्गकोसलपतिश्रीहर्षदेवात्मजा ॥ देवी राज्यमती कुलोचितगुणैर्युक्ता प्रभूता कुलैर्येनोढा भगदत्तराजकुलजा लक्ष्मीरिव क्ष्माभुजा ॥ १५ ॥ अङ्गश्रिया परिगतोजितकामरूपः काञ्चीगुणाढ्यवनिताभिरुपास्यमानः ॥ कुर्वन्सुराष्ट्रपरिपालनकार्यचिन्तां यः सार्वभौमचरितं प्रकटीकरोति ॥ १६ ॥ राज्यं प्राज्यसुखोर्जितद्विजजनप्रत्यर्पिताज्याहुतिज्योतिर्ज्वालशिखाविजृंभणजिताशेषप्रजापद्रुजं ॥ विभ्रत्कण्टकवर्जितं निजभुजावष्टंभविस्फूर्जितं शूरत्वात्परचक्रकाम इति योनाम्ना परेणान्वितः ॥ १७ ॥ सश्रीमाञ्जयदेवास्यो विशुद्धहृदन्वयः ॥ लब्धप्रतापः संप्राप्तबहुपुण्यसमुच्चयः ॥ १८ ॥ मूर्तिरष्टाभिरष्टौ महयितुमतुलैः स्वैर्दलैरष्टमूर्तेः पातालादुत्थितं किं कमलमभिनवं पद्मनाभस्य नाभेः ॥ देवस्यास्यासनायोपगतमिह चतुर्वक्त्रसादृश्यमोहाद्विस्तीर्णं विष्टरं किं प्रविकसितसिताम्भोजमम्भोजयोनेः ॥ १९ ॥ कीर्णा किम्भूतिरेषा सपदि पशुपतेर्नृत्यतोत्र प्रकामं मौलीन्दोः किम्मयूखाः शरदमभिनवां प्राप्य शोभामुपेताः ॥ भक्त्या कैलासशैलाद्विमनिचयरुचः मानवः किं समेतादुग्धाब्धेरागतः किं गलगरसहजप्रीतिपीयूषराशिः ॥ २० ॥ राज्ञः ॥ देवं वन्दितुमुद्यतोद्युतिमतो विद्योतमानद्युतिः किं ज्योत्स्नाधवलाफणावलिरियं शेषस्य संदृश्यते ॥ अन्तर्भूरसातलाश्रितगतैर्देवप्रभावश्रिया (:) किं क्षीरस्तपत्तं विधातुमुदिताः क्षीरार्णवस्योर्म्मयः ॥ २१ ॥ विष्णोः पातालमूले फणिपतिशयनाक्रान्तिलीलासुखस्थादाज्ञां प्राप्योत्पतन्त्या त्रिपुरविजयिनोभक्तितोन्यत्रनाथ ॥ लक्ष्म्याः संलक्ष्यते प्राक्करतलकलितोत्फुल्ललीलासरोजं किं वेतीत्थं वितर्कास्पदमतिरुचिरं मुग्धसिद्धांगनानाम् ॥ २२ ॥ नालीनालीकमेतन्नखलुसमुदितं राजतो राजतोहं पद्मापद्मासनाञ्जेक्यमनुहरतोमानवामानवाभे ॥ पृथ्व्यां पृथ्व्यात्तमादृग्भवतिहतजगन्मानसे मानसे वा भास्वान्भास्वान्विशेषं जनयतिनहिमे वासरोवासरोवा ॥ २३ ॥ इतीवचामीकरकेसरालीसिन्दूररक्तद्युतिदन्तपङ्क्त्या ॥ राजीवराजीन्प्रति

जीवलोके सौन्दर्यदर्प्पादिवसप्रहासं ॥ २४ ॥ एषा भाति कुलाचलैः परिवृताप्राले-यसंसर्ग्गिभिर्व्वेदी मेरुशिलेव काञ्चनमयी देवस्य विश्रामभूः ॥ शुभ्रैः प्रान्त वि-कासिपंकजदलैरित्याकलय्य स्वयं रौप्यं पद्ममचीकरत्पशुपतेः पूजार्थमत्युज्वलम् ॥ २५ ॥ राज्ञः ॥ यं स्तौति प्रकटप्रभावमहिमा ब्रह्माचतुर्भिर्म्मुखैः यञ्चश्लाघयति प्रणम्य चरणे पड्भिर्मुखैः षण्मुखः ॥ यन्तुष्टाव दशाननोपि दशभिर्व्वक्त्रैः स्फुरत्कंधरः सेवां यस्य करोति वासुकिरलं जिव्हासहस्रैः स्तुवन् ॥ २६ ॥ ख्यात्या यः परमेश्वरोपि वहते वासोदिशां मंडलं व्यापी सूक्ष्मतरश्च शङ्करतयाख्यातोपि संहारकः ॥ एकोप्यष्ट-तनुः सुरासुरगुरुर्व्वीतत्रपोनृत्यति स्थाणुः पूज्यतमो विराजति गुणैरेवं विरुद्धैरपि ॥ २७ ॥ राज्ञः ॥ तस्येदं प्रमथाधिपस्य विपुलं ब्रह्माब्जतुल्यं शुभं राजद्राजत पङ्कजं प्रविततं प्रान्तप्रकीर्णैर्द्दलैः ॥ पूजार्थं प्रविधाप्य तत्पशुपतेयत्प्रापि पुण्यम्मया भक्त्या तत्प्रतिपाद्यमातरि पुनः संप्राप्नुयान्निर्वृतिम् ॥ २८ ॥ राज्ञः ॥ किं शंभोरुपरिस्थितं ससलिलं मंदाकिनीपङ्कजं स्वर्ग्गोद्भिन्नवाम्बुजेक्षणधिया-सम्प्राप्तमम्भोरुहम् ॥ देवानां किमियं शुभा सुकृतिनां रम्या विमानावली पद्मं किङ्करुणा करस्य करतो लोकेश्वरस्यागतम् ॥ २९ ॥ राज्ञः ॥ स्रोतः स्वर्गापगायाः किमिद-मवतरल्लोलकल्लोलरम्यं किं ब्रह्मोत्पत्तिपद्मं तलकमलवरप्रेक्षणायोपयातम् ॥ संप्रा-प्तञ्चन्द्रमौलेरमलनिजशिरश्चन्द्रविम्वं किमत्रेत्येवं यद्वीक्ष्य शङ्कां वहति भुवि जनो विस्मयोत्फुल्लनेत्रः ॥ ३० ॥ श्रीवत्सदेव्यानृपतेर्जनन्या समं समन्तात्परिवारपद्मैः ॥ रौप्यं हरस्योपरि पुण्डरीकं तदादरैः कारितमत्युदारम् ॥ ३१ ॥ पुण्यं पुत्रेण दत्तं श-शिकरविमलं कारयित्वाब्जमुख्यं प्राप्तं शुभ्रं शुभञ्च स्वयमपि रजतैः पद्मपूजां-विधाय ॥ सर्व्वं श्रीवत्सदेवी निजकुल धवलाञ्चित्तवृत्तिन्दधाना प्रादात् कल्याणहेतो-श्चिरमवनिभुजे स्वामिने स्वर्ग्गताय ॥ ३२ ॥ कः कुर्य्यात्कुलजः पुमान्निजगुणश्ला-घामनिर्व्वाञ्छया राज्ञा सत्कविनापि नो विरचितं काव्यं स्ववंशाश्रयं ॥ श्लोकान्पञ्च विहाय साधु रचितान्प्राज्ञेन राज्ञा स्वयं स्नेहाद्भूभुजिवृद्धकीर्तिरकरोत्पूर्व्वामपूर्वा-मिमाम् ॥ ३३ ॥ योगक्षेमविधानवन्धुरभुजस्संवर्द्धयन्बान्धवान् स्निह्यत्पुत्रकलत्रभृत्य-सहितो लब्धप्रतापो ॥ नृपः दीर्घायुर्न्नितरान्निरामयवपुर्न्नित्यप्रमोदान्वितः पृथ्वीम्पा-लयतु प्रकामविभवस्फीतानुरक्तप्रजाम् ॥ ३४ ॥ संवत् (१) १५३ कार्तिक शुक्ल नवम्याम्.

---
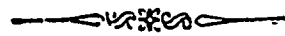
(१) कॉर्पस इन्स्क्रप्शनम् इंडिकेरम्की जिल्द तीसरीके पृष्ठ १८४ में फ़्लीट साहिबने लिखा है, कि यह हर्ष संवत् है, और इसके मुताबिक़ .ईसवी ७५८ ता० १६ ऑक्टोबर होता है.

त्रोटक छन्द.

शिवलोक हि भीम दिवान गये । सब शोक निमग्न जु लोक भये ॥
जिनके सुत रान जवान बली । नृप आसन बैठिय भांति भली ॥ १ ॥
जिनके दृग दान, दयादि भरे । पितु पुत्र दुहूं प्रज इष्ट करे ॥
शुभ नीति रु रीति सुराज कियो । भुवि भारतको यश लूट लियो ॥ २ ॥
निज देश बिनीतिं बयान करी । अंगरेजन नीति जु रीति भरी ॥
सुबिधान प्रधानन फूट परी । अपने अपने हित व्यूह करी ॥ ३ ॥
नृप गे अजमेर बिचार मतै । मिलि लारड बैंएिटक प्रीति रतै ॥
फिर तीरथके हित नीति करी । जिहिंते रजवारन रीति परी ॥ ४ ॥
जयसिंह बघेल सुता परनी । शिवरूप महीप शिवा घरनी ॥
फिर अब्बुव आदिक सैर करी । शिवलोक प्रयान जवान हरी ॥ ५ ॥
इतिहास लिख्यो नयपाल जितो । हम जानत ग्रंथन मान इतो ॥
यह खण्ड जवान नृपाल भयो । नृप सज्जन आशय जान लयो ॥ ६ ॥
फतमाल सुशासन सीस लियो । कविराज सु श्यामलदास कियो ॥
यह ग्रन्थ सुपन्थ चिरायु रहो । कवि पाठक वंश विधान कहो ॥ ७ ॥